हृदन्तरज्ञान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीड्यम्। त्रिकालदर्शी प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्ड-पञ्चांग' मिदं प्रकाशतु ॥

श्री शंकरः शं करोतु।

भारतीय एवं पाश्चात्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

पंचांग-प्रवर्तकः

आयुसाधन विशेषांक

अखिल भारतोपयोगी

विक्रम संवत् २०६९, शक संवत् १९३४
सन् २०१२-२०१३, जय हिन्द संवत् ६५-६६

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते ॥
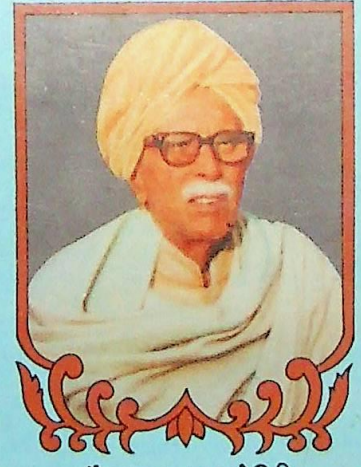
दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व॰ पं॰ श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा शुक्र

मंत्री शुक्र

पञ्चांगप्रवर्तक

अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व॰ पं॰ श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल

श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त

दृक्सिद्धान्तभास्कर डॉ॰ शक्तिधर शर्मा M.Sc, Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त

ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

गौरवशाली 85 वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित संवत् १९८४

प्रकाशक : रुचिका पब्लिकेशन्स
टाइटल पर होलोग्राम लगा हुआ देखकर ही पंचांग खरीदें।

मूल्य
८४.००

इस पञ्चाङ्ग के पाठकों के लिए आवश्यक निर्देशन

(i) इस पञ्चाङ्ग का निर्माण चण्डीगढ़ (U.T.) के रेखांश पू. 76° 52´, अक्षांश उ. 30° 44´ के आधार पर किया गया है। अतः विशेष निर्देश न किया गया हो तो सूर्योदय, सूर्यास्त से हमारा अभिप्राय यहां सर्वत्र इसी स्थल के सूर्योदय, सूर्यास्त से रहता है।

(ii) यहां सूर्योदय, सूर्यास्तकाल किरणवक्रीभवन संस्काररहित (Free from Refraction) है, जो सूर्यबिम्बकेन्द्र का क्रमशः पूर्वापरक्षितिज से वास्तविक सम्पर्कक्षण है। सूर्य के इस उदयास्तकाल को **ज्योतिषशास्त्रीय उदयास्तकाल** कहा जाता है। लग्नादि–साधनार्थ इष्टकालादि–ज्ञान के लिए इसी को प्रयोग में लाया जाता है। इन्हें दृश्य (लोकव्यवहारोपयोगी) बनाने के लिए इनमें (उदय एवं अस्तकाल में) लगभग 3½ मि. क्रमशः घटाने या जोड़ने होंगे।

(iii) भारतीय ज्योतिषानुसार यहां वार की प्रवृत्ति स्थानीय सूर्योदयकाल से मानी गई है, अतः यह जान लेना चाहिए कि– यहां रवि, चन्द्र आदि वार स्थानीय सूर्योदय से प्रारम्भ होकर परवर्ती सूर्योदय पर समाप्त होने वाले वार हैं। भारतीय ज्योतिषशास्त्र एवं धर्मशास्त्र में इसी वार का प्रयोग होता है। **ध्यान रहे–** सामान्य लोकव्यवहार में सर्वत्र प्रयोग में आने वाला वार, जो पाश्चात्त्य ज्योतिषानुसारी है, तो अंग्रेज़ी (Gregorian) तारीख के साथ रात्रि के 24घं 00मि. (क्षेत्रीय स्टैं.टा.) पर ही बदल जाता है।

(iv) पंचांगगत सभी गणना ऋषियों, आचार्यों द्वारा अनुमोदित दृक्तुल्यपद्धति से की गई है।

(v) सर्वत्र निरयणगणना है। जहां कहीं सायनगणना का प्रयोग है, वहां इसका निर्देश कर दिया गया है। चित्रापक्षीय स्पष्ट (धूननसंस्कृत) अयनांशों को प्रामाणिक माना गया है।

(vi) यहां प्रयुक्त भा.स्टैं.टा. (I.S.T.) 82° 30´ पूर्व रेखांशीय स्थल का स्थानीय मध्यमकाल (L.M.T.) है।

(vii) यहां दी गई दैनिक लग्नसारणियां निरयण लग्नों का समाप्तिकाल बतलाती हैं।

(viii) यहां प्राचीन परम्परानुयायी दैवज्ञों के लिए चैत्र शुक्लादि 24 पक्षों वाला तिथ्यादि पंचांग घटी–पलों में तथा सामान्य जनों के व्यवहारार्थ नवीन प्रणाली वाला **'जनवरी, फरवरी'** आदि मासानुसारी तिथ्यादि पंचांग घंटा–मिनटों (भा.स्टैं.टा.) में दिया गया है। घटी–पलात्मक वाले पंचांगभाग में तिथ्यादि समाप्ति, ग्रहराशि–नक्षत्र प्रवेश आदि सभी काल घटी–पलों में दिए गए हैं, जो चण्डीगढ़ के सूर्योदय से व्यतीत घटी–पलात्मक काल बतलाते हैं। **किञ्च–** घण्टा–मिनटात्मक वाले पंचांगभाग में तिथ्यादि समाप्ति आदि सभी काल भा.स्टैं.टा. में हैं। यहां यह भी स्पष्ट हो जाना चाहिए कि– घण्टा–मिनटात्मक, जो काल रात्रि के 24घं–00मि. के बाद पड़ता है, उसे पंचांग में 24 घं. जोड़कर उसी भारतीय ज्योतिषानुसारी वार में लिखा गया है, जो परवर्ती सूर्योदय तक रहता है। इसलिए ऐसे स्थलों पर दिए गए समय के घण्टा–मिनटों में से 24 घं. घटाकर शेष घं. मि. को सामान्य व्यवहार में प्रचलित (पाश्चात्त्य ज्योतिषानुसारी) परवर्ती वार का काल समझना चाहिए। **जैसे–** मान लीजिए– पंचांगानुसार एकादशी तिथि 10 मई शुक्रवार को 26 घं. 35 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर समाप्त हो रही है। इसका अभिप्राय है– यह तिथि प्रचलित व्यवहारानुसारी 11 मई, शनिवार को रात्रि के 2 घं. 35 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर समाप्त होगी।

(ix) घटी–पलात्मक पंचांगभाग वाले (24 पक्षों वाले) पृष्ठों पर नीचे की ओर बाईं और दाईं ओर लगभग साप्ताहिक (अष्टमी, अमा, पूर्णिमा के आसन्न दिनों के) प्रातः 5 घं. 30 मि. भा.स्टैं.टा. कालिक सूर्यादि स्पष्टग्रह दिए गए हैं। इनके नीचे इनकी कलादि दैनिक गति, इसके नीचे मा. (= मार्गी), व.(= वक्री), इसके नीचे उ. (= उदित), अ.(= अस्त) तथा सबसे नीचे इन ग्रहों के तात्कालिक नक्षत्रचरण निर्दिष्ट हैं।

(x) घटी–पलात्मक पंचांगभाग में करण केवल सूर्योदयव्यापी ही दिए गए हैं। यहां क्षीण तिथि–नक्षत्र–योगों के समाप्तिकाल ही दिए हैं, प्राचीन– पंचांग प्रणाली की तरह इनके पूर्ण भोगकाल नहीं– **यह ध्यान रहे।**

(xi) जहां जिस तिथि–नक्षत्र व योग के आगे घटी–पलात्मक में 60 घ. 00 प. और घण्टा–मिनटात्मक में ––(डैश) लिखा गया है, उसकी वहां वृद्धि समझनी चाहिए और उसका घटी–पलात्मक तथा घण्टा–मिनटात्मक समाप्तिकाल परवर्ती वार में देखिए।

(xii) यहां दिए गए ग्रहों के भोगांश तथा शर भूकैन्द्रिक (Geo-centric) हैं।

इस पञ्चांग में प्रयुक्त सांकेतिक शब्द

अ.	–अस्त।
अं	–अंश।
उ.	–उदित, उत्तर।
क.	–कला।
कृ.	–कृष्णपक्ष, कृत्तिका(नक्षत्र)।
क्रां.सा.	–क्रान्तिसाम्य (महापात)।
गोधू.	–गोधूलि (लग्न)।
ति.	–तिथि।
द.	–दक्षिण।
दा.	–दानपूजन।
दि.	–दिन।
दि.ल.	–दिन का लग्न।
प्रा.	–प्रारम्भ।
भ.	–भद्रा।
मा.	–मार्गी।
मि.	–मिनट।
रा.	–राशि।
ल.	–लग्न।
व.	–वक्री।
वा.	–वार।
वि.	–विकला।
वै.	–वैष्णवों के लिए।
स.	–व्रत सबके लिए।
शु.	– शुक्लपक्ष, शुक्रवार, – शुक्र (ग्रह)।
सं.	–संक्रान्ति, संवत्।
सां.का.	–साम्पातिक काल।
स्मा.	–स्मार्तों के लिए।

इस पंचांग की तिथ्यादि, ग्रहभोगांश, शर, क्रान्ति, राशि–नक्षत्र–नक्षत्रचरण प्रवेश, उदयास्त, लोप–दर्शन तथा ग्रहण आदि की गणित "**प्रो. प्रियव्रत शर्मा, M.A. अभिजित् प्रकाशन, 59/6, P.O पंचकूला(हरियाणा), Pin-134 109** के निर्देशन में सम्पादित Computer Program द्वारा की जाती है।

Computer Program द्वारा की जाती है।

हृदन्तरज्ञान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीड्यम्। 卐 त्रिकालदर्शि प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्ड पञ्चांग' भिद चकास्तु ॥

श्री शंकरः शं करोतु।

भारतीय एवं पाश्चात्त्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

पंचांग-प्रवर्तकः

आयुसाधन विशेषांक

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥

विक्रम संवत् २०६९, शक संवत् १९३४
सन् २०१२-२०१३, जय हिन्द संवत् ६५-६६

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व० पं० श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा शुक्र

पञ्चांगप्रवर्तक

अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व० पं० श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल

श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त

दृक्सिद्धान्तभास्कर डॉ० शक्तिधर शर्मा M.Sc., Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त

ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

प्रकाशक : रुचिका पब्लिकेशन्स
459, खारी बावली, दिल्ली -6 फोन : 23977110

मूल्य
८४.००

विशेष नोट : टाइटल पर होलोग्राम देखकर ही पंचांग खरीदें।

संक्षिप्त विषयसूची (सं. २०६९ वि.)

इसवर्ष की नई विशेष सामग्री

आयुसाधन विशेषांक*

*इस विशेषांक की विस्तृत विषयसूची के लिए पृष्ठ 265 देखें।

'अभिजित् प्रकाशन',

Kothi No. 59, Sector 6,
Panchkula (HARYANA)

की अब तक प्रकाशित पुस्तकों एवम् आगामी प्रकाशनों के विस्तृत विज्ञापन अन्तिम पृष्ठों पर देखें।

अनन्त श्रीविभूषित श्रीकांचीकामकोटि- पीठाधिपति, जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जी का शुभाशीर्वाद

(मुद्रा)

श्रीमत्परमहंस – परिव्राजकाचार्यवर्य्य – श्रीमच्छंकर– भगवत्पाद – प्रतिष्ठित – श्रीकांचीकामकोटिपीठाधिप -- जगद्गुरु – श्रीमच्चन्द्रशेखरेन्द्र – सरस्वती – श्रीपादैः क्रियते नारायणस्मृतिः।

श्रीसदाशिव आप्टे- महोदयस्य शिष्यैः श्रीमुकुन्दवल्लभशर्मभिः प्रवर्तितम् अधुना श्रीप्रियव्रतशर्म– श्रीशक्तिधरशर्म– श्रीमदिन्दुशेखर– शास्त्रिभिः तन्त्रद्वारा शुद्ध– स्फुट– गणितरीत्या परिशोध्य स्वीकृतया दृग्गणितपद्धत्या सम्पाद्यते। एतत्पञ्चांगं धर्मशास्त्रसम्मतैकमात्र– दृग्गणितपद्धत्यनुसारि– व्रत–पर्वादि – धार्मिक – कृत्यानुष्ठाने धार्मिकैः प्रयोज्यम्–इति सम्मन्यामहे। एतस्य सम्पादकः डॉ.शक्तिधरशर्मा ज्योतिष– गणितादि–विषयेषु महत्प्रागल्भ्यं भजते, इति अस्माभिः सः सप्रसादं " दृक्सिद्धान्तभास्करः ' इति विरुदेन पूर्वमेव सभाजितः। अधुना श्रीमार्त्तण्ड– पंचांगमेतत् स्वर्णजयन्ती–महोत्सवमनुभवत्, अशेषास्तिक– लोकोपकारकं सत् श्रीचन्द्रमौलीश – कृपया प्रचुरं प्रचारं प्राप्नुयादित्याशास्महे।

काञ्चीक्षेत्रम् नारायणस्मृतिः
'अनल' चैत्रामावस्या (सन् १९७६ ई.)

आगामी वर्ष (सं. 2070 वि.) का विशेषांक– हमारे पाठक वर्षों से **आयुसाधन विशेषांक** की व्याकुलता से प्रतीक्षा कर रहे थे। स्वास्थ्य ठीक न रहने के कारण इसका प्रकाशन न चाहते हुए भी आगे सरकता गया। अब उचित स्वास्थ्यलाभ होने पर इस विशेषांक का कुछ भाग पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर पाया हूं। विश्वास दिलाता हूँ– इसी विशेषांक के शेष भाग में अगले वर्ष (सं. 2070 वि. में) आयुसाधन के सभी प्रकारों का विस्तृत, विशद एवम् सरल विवेचन होगा।

हूं। विश्वास दिलाता हूँ– इसी विशेषांक के शेष भाग में अगले वर्ष (सं. 2070 वि. में) आयुसंधान के सभी प्रकारों का विस्तृत, विशद एवं सरल विवेचन होगा।

प्रमुख–प्रमुख व्रत–पर्व (1 जनवरी, सन् 2012 ई. से 10 अप्रैल, सन् 2013 ई. तक)

(प्रो. प्रियव्रत शर्मा द्वारा रचित पुस्तक " व्रत–पर्व विवेक" पर आधारित)

व्रत–पर्व	तिथि	वार
जनवरी (सन् 2012 ई.)		
इंग्लिश नववर्ष 2012 ई. प्रारम्भ	1 जन.	र.
माघस्नान प्रारम्भ	9 जन.	चं.
संकष्ट(गणेश) चतुर्थी	12 जन.	गु.
लोहड़ी (पं.)	13 जन.	शु.
मकर–संक्रान्ति	14 जन.	श.
मौनी अमावस	23 जन.	चं.
गौरी तृतीया (गोंतरी)	26 जन.	गु.
वरद–तिल–कुन्द चतुर्थी	26 जन.	गु.
श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी	28 जन.	श.
लक्ष्मी, सरस्वती पूजा	28 जन.	श.
रथसप्तमी (आरोग्य सप्तमी) (पूर्वारुणोदय वाली)	30 जन.	चं.
भीष्माष्टमी	31 जन.	मं.
फरवरी (सन् 2012 ई.)		
भीष्म द्वादशी	4 फर.	श.
माघस्नान समाप्त	7 फर.	मं.
माघी पूर्णिमा	7 फर.	मं.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	20 फर.	चं.
मार्च (सन् 2012 ई.)		
होलाष्टक प्रारम्भ	1 मार्च	गु.
गोविन्द द्वादशी	5 मार्च	चं.
होलिकादहन (प्रदोष में)	7 मार्च	बु.
होलाष्टक समाप्त	8 मार्च	गु.
वसन्तोत्सव	9 मार्च	शु.
महाविषुवदिन	20 मार्च	मं.
वारुणीपर्व	20 मार्च	मं.
चान्द्र संवत् 2068 वि. पूर्ण	22 मार्च	गु.
चान्द्र संवत् 2069 वि. प्रा.	23 मार्च	शु.
वासन्त नवरात्र प्रारम्भ	23 मार्च	शु.
वर्षफलश्रवण	23 मार्च	शु.
तैलाभ्यंग/ध्वजारोहण	23 मार्च	शु.
गौरी तृतीया (गणगौर)	25 मार्च	र.
आन्दोलन तृतीया	25 मार्च	र.
श्री (लक्ष्मी) पंचमी	27 मार्च	मं.
नागपंचमी	27 मार्च	मं.
हयव्रत	27 मार्च	मं.
स्कन्द षष्ठी	29 मार्च	गु.
श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी	31 मार्च	श.
अप्रैल (सन् 2012 ई.)		
श्रीरामनवमी	1 अप्रै.	र.
वासन्त नवरात्र समाप्त	1 अप्रै.	र.
नवरात्र–व्रतपारणा	2 अप्रै.	चं.
दोलोत्सव	3 अप्रै.	मं.
विष्णुदमनोत्सव	4 अप्रै.	बु.
अनंग त्रयोदशी	4 अप्रै.	बु.
शिवदमनोत्सव	5 अप्रै.	गु.
श्रीमहावीर जयन्ती	5 अप्रै.	गु.
वैशाख–स्नान प्रारम्भ	6 अप्रै.	शु.
वैशाखी (पंजाब)	13 अप्रै.	शु.
श्रीपरशुराम जयन्ती	24 अप्रै.	मं.
अक्षय तृतीया	24 अप्रै.	मं.
श्रीगंगा जन्म	28 अप्रै.	श.
श्रीजानकी जयन्ती	30 अप्रै.	चं.
मई (सन् 2012 ई.)		
श्रीकूर्मजयन्ती	5 मई	श.
श्रीबुद्ध पूर्णिमा	6 मई	र.
श्रीबुद्ध जयन्ती	6 मई	र.
वैशाखी पूर्णिमा	6 मई	र.
वैशाख–स्नान समाप्त	6 मई	र.
भद्रकाली एकादशी (पं.)	16 मई	बु.
वट सावित्री व्रत (अमापक्ष)	20 मई	र.
भावुका अमावस	20 मई	र.
सूर्यग्रहण (भारत के पूर्वी छोर पर दृश्य,	21 मई	र.
रम्भा तृतीया (पूर्वविद्धा)	23 मई	बु.
अरण्य षष्ठी	27 मई	र.
विन्ध्यवासिनी पूजा	27 मई	र.
श्रीगंगा दशहरा	31 मई	गु.
निर्जला एकादशी व्रत	31 मई	गु.
जून (सन् 2012 ई.)		
वट सावित्री व्रत (पूर्णिमा-पक्ष)	4 जून	चं.
रथयात्रा (पुरी)	21 जून	गु.
कुमार षष्ठी	25 जून	चं.
विवस्वत् सप्तमी	26 जून	मं.
विष्णुशयनोत्सव	30 जून	श.
जुलाई (सन् 2012 ई.)		
गुरु पूर्णिमा (व्यासपूजा)	3 जुला.	मं.
कोकिला व्रत	3 जुला.	मं.
शिवशयनोत्सव	3 जुला.	मं.
चातुर्मास्य व्रत–नियमादि प्रा.	3 जुला.	मं.
हरियाली अमावस	19 जुला.	गु.
मधुस्रवा तृतीया, संधारा तीज	22 जुला.	र.
नागपंचमी	23 जुला.	चं.
श्रीदुर्गाष्टमी	26 जुला.	गु.
अगस्त (सन् 2012 ई.)		
ऋक् उपाकर्म	2 अग.	गु.
शुक्ल–कृष्ण–यजु उपाकर्म	2 अग.	गु.
रक्षाबन्धन (राखी)	2 अग.	गु.
श्रावणी पूर्णिमा	2 अग.	गु.
यजु उपाकर्म	2 अग.	गु.
बहुला चतुर्थी, संकष्ट चतुर्थी	5 अग.	र.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त=गृहस्थियों के लिए)	9 अग.	गु.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव=संन्यासियों के लिए)	10 अग.	शु.
गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव)	10 अग.	शु.
श्रीगुग्गा नवमी	11 अग.	श.
कुशोत्पाटिनी अमावस	17 अग.	शु.
पिठोरी अमावस	17 अग.	शु.
सितंबर (सन् 2012 ई.)		
साम उपाकर्म	17 सितं.	चं.
हरितालिका तृतीया	18 सितं.	मं.
गौरी तृतीया	18 सितं.	मं.
कलंक चतुर्थी	19 सितं.	बु.
सिद्धिविनायक व्रत	19 सितं.	बु.
ऋषि पंचमी	20 सितं.	गु.
सूर्य षष्ठी व्रत	21 सितं.	शु.
श्रीराधाष्टमी	23 सितं.	र.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ	23 सितं.	र.
श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय)	24 सितं.	चं.
श्रीवामन जयन्ती	26 सितं.	बु.
अनन्त चतुर्दशी	29 सितं.	श.
प्रोष्ठपदी श्राद्ध	29 सितं.	श.
पूर्णिमा श्राद्ध	29 सितं.	श.
महालय श्राद्ध, श्राद्ध प्रारम्भ	30 सितं.	र.
अक्तूबर (सन् 2012 ई.)		
चन्द्रषष्ठी व्रत	6 अक्तू.	श.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त	8 अक्तू.	चं.

प्रमुख–प्रमुख व्रत–पर्व

(1 जनवरी, सन् 2012 ई. से 10 अप्रैल, सन् 2013 ई. तक)

व्रत–पर्व	तारीख	वार
महालय श्राद्ध समाप्त	15 अक्तू.	चं.
शारद नवरात्र प्रारम्भ	16 अक्तू.	मं.
उपांगललिता व्रत	19 अक्तू.	शु.
सरस्वती आवाहन्	20 अक्तू.	श.
सरस्वती पूजन	21 अक्तू.	र.
सरस्वती के लिए बलिदान	22 अक्तू.	चं.
दुर्गाष्टमी, महाष्टमी	22 अक्तू.	चं.
सरस्वती विसर्जन	23 अक्तू.	मं.
महानवमी (उपवास, पूजा एवं बलिदान के लिए)	23 अक्तू.	मं.
नवरात्र समाप्त	23 अक्तू.	मं.
विजयादशमी (दशहरा)	24 अक्तू.	बु.
भरत मिलाप	25 अक्तू.	गु.
कोजागर व्रत	29 अक्तू.	चं.
शरत्पूर्णिमा	29 अक्तू.	चं.
महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	29 अक्तू.	चं.
कार्तिकस्नान प्रारम्भ	29 अक्तू.	चं.
नवम्बर (सन् 2012 ई.)		
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	2 नवं.	शु.
अहोई अष्टमी (पं.)	7 नवं.	बु.
गोवत्स द्वादशी	10 नवं.	श.
धन त्रयोदशी	12 नवं.	चं.
श्रीहनुमान् जयन्ती (उ. भा.)	12 नवं.	चं.
नरक चतुर्दशी (पूर्व अरुणोदय वाली)	13 नवं.	मं.
दीपावली, श्रीमहालक्ष्मीपूजा	13 नवं.	मं.
अन्नकूट, गोवर्धनपूजा	14 नवं.	बु.
बलिपूजा, गोक्रीड़ा	14 नवं.	बु.
यमद्वितीया, भाई दूज	15 नवं.	गु.
श्रीविश्वकर्मा पूजा	15 नवं.	गु.
सूर्यषष्ठी (बिहार)	19 नवं.	चं.
गोपाष्टमी	20 नवं.	मं.
अक्षय नवमी	21 नवं.	बु.
कूष्माण्ड नवमी	21 नवं.	बु.
हरिप्रबोधोत्सव	24 नवं.	श.
तुलसी विवाह	24 नवं.	श.
भीष्म पंचक प्रारम्भ	24 नवं.	श.
चातुर्मास्य व्रत–नियमादि–समाप्त	25 नवं.	र.
वैकुण्ठ चतुर्दशी	26 नवं.	चं.
कार्तिक पूर्णिमा	28 नवं.	बु.
श्री गुरुनानक जयन्ती	28 नवं.	बु.
कार्तिकस्नान समाप्त	28 नवं.	बु.
भीष्म पंचक समाप्त	28 नवं.	बु.
त्रिपुरोत्सव	28 नवं.	बु.
दिसंबर (सन् 2012 ई.)		
श्रीकालाष्टमी (भैरवाष्टमी)	6 दिसं.	गु.
स्कन्द–गुह षष्ठी	18 दिसं.	मं.
चम्पा षष्ठी	18 दिसं.	मं.
मित्र सप्तमी	19 दिसं.	बु.
श्रीगीता जयन्ती	23 दिसं.	र.
श्रीदत्त जयन्ती	27 दिसं.	गु.
जनवरी (सन् 2013 ई.)		
इंग्लिश नववर्ष 2013 ई. प्रारम्भ	1 जन.	मं.
लोहड़ी (पं.)	12 जन.	श.
मकर–संक्रान्ति	13 जन.	र.
माघस्नान प्रारम्भ	27 जन.	र.
पौषी पूर्णिमा	27 जन.	र.
संकष्ट(गणेश) चतुर्थी	30 जन.	बु.
फरवरी (सन् 2013 ई.)		
महोदययोग	9 फर.	श.
मौनी अमावस	10 फर.	र.
महाकुम्भ प्रयाग–प्रमुखस्नान	10 फर.	र.
गौरी तृतीया (गोंतरी)	13 फर.	बु.
वरद–तिल–कुन्द चतुर्थी	13 फर.	बु.
श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी	14 फर.	गु.
लक्ष्मी, सरस्वती पूजन	14 फर.	गु.
रथसप्तमी (आरोग्य सप्तमी) (पूर्वारुणोदय वाली)	17 फर.	र.
भीष्माष्टमी	18 फर.	चं.
भीष्म द्वादशी	22 फर.	शु.
माघी पूर्णिमा	25 फर.	चं.
माघस्नान समाप्त	25 फर.	चं.
मार्च (सन् 2013 ई.)		
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	10 मार्च	र.
होलाष्टक प्रारम्भ	19 मार्च	मं.
महाविषुव दिन	20 मार्च	बु.
गोविन्द द्वादशी	24 मार्च	र.
होलिका–दहन (प्रदोष में)	26 मार्च	मं.
होलाष्टक समाप्त	27 मार्च	बु.
वसन्तोत्सव	28 मार्च	गु.
अप्रैल (सन् 2013 ई.)		
वारुणीपर्व	7 अप्रै.	र.
चान्द्र संवत् 2069 वि. पूर्ण	10 अप्रै.	बु.

प्रमुख–प्रमुख व्रत–पर्व

आगामी वर्ष (वि. सं. 2070) के लिए

नाम मेला/पर्व	तारीख
(सन् 2013 ई.)	
वासन्त नवरात्र प्रारम्भ	11 अप्रै.
श्रीदुर्गाष्टमी	18 अप्रै.
श्री रामनवमी	19 अप्रै.
श्री महावीर जयन्ती (जैन)	24 अप्रै.
मेष संक्रान्ति (वैशाखी)	13 अप्रै.
श्री परशुराम जयन्ती	12 मई
श्री बुद्ध जयन्ती	25 मई
श्री गंगा दशहरा	18 जून
गुरु पूर्णिमा	22 जुला.
रक्षाबन्धन	20 अग.
संकष्ट चतुर्थी	24 अग.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (स्मा.)	28 अग.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	28 अग.
श्राद्ध प्रारम्भ	19 सितं.
शारद नवरात्र प्रारम्भ	5 अक्तू.
श्री दुर्गाष्टमी	12 अक्तू.
दशहरा (विजयादशमी)	13 अक्तू.
शरत् पूर्णिमा	18 अक्तू.
श्री वाल्मीकि जयन्ती	18 अक्तू.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	22 अक्तू.
दीपावली	3 नवं.
भाई दूज	5 नवं.
श्री गुरु नानक जयन्ती	17 नवं.
श्री भैरवाष्टमी	25 नवं.
(सन् 2014 ई.)	
मकर संक्रान्ति	14 जन.
वसन्त पंचमी	4 फर.
श्री गुरु रविदास जयन्ती	14 फर.
श्री महाशिवरात्रि व्रत	27 फर.

वर्गीकृत व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2012 ई. से 10 अप्रैल, सन् 2013 ई. तक)–(प्रो. प्रियव्रत शर्मा)

एकादशी व्रत

(सन् 2012 ई.)	
पौष शुक्ल	5 जन.
माघ कृष्ण	19 जन.
माघ शुक्ल	3 फर.
फाल्गुन कृष्ण (स्मा.)	17 फर.
फाल्गुन शुक्ल	4 मार्च
चैत्र कृष्ण	18 मार्च
चैत्र शुक्ल	3 अप्रै.
वैशाख कृष्ण (स्मा.)	16 अप्रै.
वैशाख शुक्ल	2 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	16 मई
ज्येष्ठ शुक्ल (स्मा.)	31 मई
आषाढ़ कृष्ण	15 जून
आषाढ़ शुक्ल	30 जून
श्रावण कृष्ण (स्मा.)	14 जुला.
श्रावण शुक्ल	29 जुला.
प्र. भाद्रपद कृष्ण	13 अग.
प्र. (अ.) भाद्रपद शुक्ल	27 अग.
द्वि.(अ.) भाद्रपद कृष्ण	12 सितं.
द्वि.(शुद्ध) भाद्रपद शुक्ल	26 सितं.
आश्विन कृष्ण	11 अक्तू.
आश्विन शुक्ल	25 अक्तू.
कार्तिक कृष्ण	10 नवं.
कार्तिक शुक्ल	24 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण (स्मा.)	9 दिसं.
मार्गशीर्ष शुक्ल (स्मा.)	23 दिसं.
पौष कृष्ण (सन् 2013 ई.)	8 जन.
पौष शुक्ल	22 जन.
माघ कृष्ण	6 फर.
माघ शुक्ल	21 फर.
फाल्गुन कृष्ण (स्मा.)	7 मार्च
फाल्गुन शुक्ल	23 मार्च
चैत्र कृष्ण	6 अप्रै.

(स्मा. = स्मार्तों का व्रत)

वैष्णवों का व्रत स्मार्तों के व्रत के दिन से दूसरे दिन होता है। जिसके आगे "स्मा." नहीं लिखा है, वह व्रततिथि स्मार्त और वैष्णव दोनों के लिए है।

पक्षों का प्रारम्भ

(सन् 2012 ई.)	
माघ कृष्ण	10 जन.
माघ शुक्ल	24 जन.
फाल्गुन कृष्ण	8 फर.
फाल्गुन शुक्ल	22 फर.
चैत्र कृष्ण	9 मार्च
चैत्र शुक्ल	23 मार्च
वैशाख कृष्ण	7 अप्रै.
वैशाख शुक्ल	22 अप्रै.
ज्येष्ठ कृष्ण	6 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	21 मई
आषाढ़ कृष्ण	5 जून
आषाढ़ शुक्ल	20 जून
श्रावण कृष्ण	4 जुला.
श्रावण शुक्ल	20 जुला.
प्र. भाद्रपद कृष्ण	3 अग.
प्र. (अधिक) भाद्रपद शुक्ल	18 अग.
द्वि.(अधिक) भाद्रपद कृष्ण	1 सितं.
द्वि.(शुद्ध) भाद्रपद शुक्ल	16 सितं.
आश्विन कृष्ण	1 अक्तू.
आश्विन शुक्ल	16 अक्तू.
कार्तिक कृष्ण	30 अक्तू.
कार्तिक शुक्ल	14 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	29 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	14 दिसं.
पौष कृष्ण	29 दिसं.
(सन् 2013 ई.)	
पौष शुक्ल	12 जन.
माघ कृष्ण	28 जन.
माघ शुक्ल	11 फर.
फाल्गुन कृष्ण	26 फर.
फाल्गुन शुक्ल	12 मार्च
चैत्र कृष्ण	28 मार्च

उत्तरी भारत में कृष्णादि एवं दक्षिणी भारत में शुक्लादि मासों का प्रचार है। ऊपर दिए गए पक्ष कृष्णादि हैं।

श्रीसत्यनारायण व्रत

(सन् 2012 ई.)	
पौष	8 जन.
माघ	7 फर.
फाल्गुन	7 मार्च
चैत्र	6 अप्रै.
वैशाख	6 मई
ज्येष्ठ	3 जून
आषाढ़	3 जुला.
श्रावण	1 अग.
प्र. भाद्रपद	31 अग.
द्वि. भाद्रपद	29 सितं.
आश्विन	29 अक्तू.
कार्तिक	28 नवं.
मार्गशीर्ष	27 दिसं.
पौष (सन् 2013 ई.)	26 जन.
माघ	25 फर.
फाल्गुन	26 मार्च

दशावतार जयन्तियां (सन् 2012 ई.)

श्रीमत्स्य जयन्ती	25 मार्च
श्रीरामनवमी	1 अप्रै.
श्रीपरशुराम जयन्ती	24 अप्रै.
श्रीनृसिंह जयन्ती	4 मई
श्रीकूर्म जयन्ती	5 मई
श्रीबुद्ध जयन्ती	6 मई
श्रीकल्कि जयन्ती	24 जुला.
⊗ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	9 अग.
श्रीवराह जयन्ती	18 सितं.
श्रीवामन जयन्ती	26 सितं.

⊗ अर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी के दिन ही श्रीकृष्णजन्माष्टमी का व्रत करना चाहिए। श्रीमद्भागवत एवं स्कन्द – विष्णु पुराण आदि इसी का समर्थन करते हैं ।

श्रीगणेशचतुर्थी व्रत

(सन् 2012 ई.)	
माघ (संकष्ट चतुर्थी)	12 जन.
फाल्गुन	11 फर.
चैत्र	11 मार्च
वैशाख	9 अप्रै.
ज्येष्ठ	9 मई
आषाढ़	7 जून
श्रावण	6 जुला.
प्र. भाद्रपद (संकष्ट चतुर्थी)	5 अग.
द्वि. भाद्रपद	4 सितं.
आश्विन	3 अक्तू.
कार्तिक	2 नवं.
मार्गशीर्ष	2 दिसं.
(सन् 2013 ई.)	
पौष	1 जन.
माघ (संकष्ट चतुर्थी)	30 जन.
फाल्गुन	1 मार्च
चैत्र	30 मार्च

श्रीसिद्धिविनायक चतुर्थी व्रत

(2012 ई.)	
माघ	26 जन.
फाल्गुन	25 फर.
चैत्र	26 मार्च
वैशाख	25 अप्रै.
ज्येष्ठ	24 मई
आषाढ़	23 जून
श्रावण	22 जुला.
प्र. भाद्रपद	21 अग.
द्वि. भाद्रपद	19 सितं.
आश्विन	18 अक्तू.
कार्तिक	17 नवं.
मार्गशीर्ष	16 दिसं.
(सन् 2013 ई.)	
पौष	15 जन.
माघ	13 फर.
फाल्गुन	15 मार्च

प्रदोष व्रत

(सन् 2012 ई.)	
पौष शुक्ल	6 जन.
माघ कृष्ण	20 जन.
माघ शुक्ल	5 फर.
फाल्गुन कृष्ण	19 फर.
फाल्गुन शुक्ल (भौम)	6 मार्च
चैत्र कृष्ण (सोम)	19 मार्च
चैत्र शुक्ल	4 अप्रै.
वैशाख कृष्ण	18 अप्रै.
वैशाख शुक्ल	3 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	18 मई
ज्येष्ठ शुक्ल (शनि)	2 जून
आषाढ़ कृष्ण (शनि)	16 जून
आषाढ़ शुक्ल	1 जुला.
श्रावण कृष्ण (सोम)	16 जुला.
श्रावण शुक्ल (सोम)	30 जुला.
प्र. भाद्रपद कृष्ण	15 अग.
प्र. (अ.) भाद्रपद शुक्ल	29 अग.
द्वि.(अ.) भाद्रपद कृष्ण	13 सितं.
द्वि.(शुद्ध) भाद्रपद शुक्ल	27 सितं.
आश्विन कृष्ण (शनि)	13 अक्तू.
आश्विन शुक्ल (शनि)	27 अक्तू.
कार्तिक कृष्ण	11 नवं.
कार्तिक शुक्ल	25 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण (भौम)	11 दिसं.
मार्गशीर्ष शुक्ल (भौम)	25 दिसं.
(सन् 2013 ई.)	
पौष कृष्ण	9 जन.
पौष शुक्ल	24 जन.
माघ कृष्ण	8 फर.
माघ शुक्ल (शनि)	23 फर.
फाल्गुन कृष्ण (शनि)	9 मार्च
फाल्गुन शुक्ल	24 मार्च
चैत्र कृष्ण	7 अप्रै.

वर्गीकृत व्रत–पर्व (1 जनवरी, सन् 2012 ई. से 10 अप्रैल, सन् 2013 ई. तक)

मासिक शिवरात्रिव्रत (सन् 2012 ई.)

मास	तिथि
माघ	21 जन.
फाल्गुन(श्रीमहाशिवरात्रि)	20 फर.
चैत्र	20 मार्च
वैशाख	19 अप्रै.
ज्येष्ठ	19 मई
आषाढ़	17 जून
श्रावण	17 जुला.
प्र. भाद्रपद	15 अग.
द्वि. भाद्रपद	14 सितं.
आश्विन	13 अक्तू.
कार्तिक	12 नवं.
मार्गशीर्ष	11 दिसं.
(सन् 2013 ई.)	
पौष	10 जन.
माघ	8 फर.
फाल्गुन(श्रीमहाशिवरात्रि)	10 मार्च
चैत्र	8 अप्रै.

पूर्णिमा व्रत (सन् 2012 ई.)
(स्नान–दानार्थ, उदयव्यापिनी पूर्णिमा में)

मास	तिथि
पौष	9 जन.
माघ	7 फर.
फाल्गुन	8 मार्च
चैत्र	6 अप्रै.
वैशाख	6 मई
ज्येष्ठ	4 जून
आषाढ़	3 जुला.
श्रावण	2 अग.
प्र. भाद्रपद	31 अग.
द्वि. भाद्रपद	30 सितं.
आश्विन	29 अक्तू.
कार्तिक	28 नवं.
मार्गशीर्ष	28 दिसं.
पौष (सन् 2013 ई.)	27 जन.
माघ	25 फर.
फाल्गुन	27 मार्च

संक्रान्तियां (सन् 2012 ई.)

मास	तिथि
माघ	14 जन.
फाल्गुन	13 फर.
चैत्र	14 मार्च
वैशाख	13 अप्रै.
ज्येष्ठ	14 मई
आषाढ़	14 जून
श्रावण	16 जुला.
भाद्रपद	16 अग.
आश्विन	16 सितं.
कार्तिक	16 अक्तू.
मार्गशीर्ष	15 नवं.
पौष	15 दिसं.
(सन् 2013 ई.)	
माघ	13 जन.
फाल्गुन	12 फर.
चैत्र	14 मार्च

अमावस्याएं (स्नान--दानार्थ)(2012 ई.)

मास	तिथि
माघ (सोम)	23 जन.
फाल्गुन (भौम)	21 फर.
चैत्र	22 मार्च
वैशाख (शनैश्चरी)	21 अप्रै.
ज्येष्ठ	20 मई
आषाढ़ (भौम)	19 जून
श्रावण	19 जुला.
प्र. भाद्रपद	17 अग.
द्वि. भाद्रपद	16 सितं.
आश्विन (सोम)	15 अक्तू.
कार्तिक (भौम)	13 नवं.
मार्गशीर्ष	13 दिसं.
(सन् 2013 ई.)	
पौष	11 जन.
माघ	10 फर.
फाल्गुन (सोम)	11 मार्च
चैत्र	10 अप्रै.

मासिक श्रीदुर्गाष्टमी व्रत (2012 ई.)

मास	तिथि
पौष	1 जन.
माघ	31 जन.
फाल्गुन	1 मार्च
चैत्र	31 मार्च
वैशाख	29 अप्रै.
ज्येष्ठ	29 मई
आषाढ़	27 जून
श्रावण	26 जुला.
प्र. भाद्रपद	24 अग.
द्वि. भाद्रपद	23 सितं.
आश्विन	22 अक्तू.
कार्तिक	20 नवं.
मार्गशीर्ष	20 दिसं.
(सन् 2013 ई.)	
पौष	19 जन.
माघ	18 फर.
फाल्गुन	20 मार्च

मासिक कालाष्टमी व्रत (2012 ई.)

मास	तिथि
माघ	16 जन.
फाल्गुन	14 फर.
चैत्र	14 मार्च
वैशाख	13 अप्रै.
ज्येष्ठ	12 मई
आषाढ़	11 जून
श्रावण	11 जुला.
प्र. भाद्रपद	9 अग.
द्वि. भाद्रपद	8 सितं.
आश्विन	8 अक्तू.
कार्तिक	7 नवं.
मार्गशीर्ष	6 दिसं.
पौष (सन् 2013 ई.)	5 जन.
माघ	3 फर.
फाल्गुन	4 मार्च
चैत्र	3 अप्रै.

अरुणाय त्रयोदशी
(श्रीसंगमेश्वर महादेव अरुणाय (पिहोवा) के शिवत्रयोदशी पर्व) (उदयव्यापिनी कृष्ण त्रयोदशी)

(2012 ई.)

मास	तिथि
माघ	21 जन.
फाल्गुन	19 फर.
चैत्र	20 मार्च
वैशाख	19 अप्रै.
ज्येष्ठ	18 मई
आषाढ़	17 जून
श्रावण	17 जुला.
प्र. भाद्रपद	15 अग.
द्वि. भाद्रपद	14 सितं.
आश्विन	13 अक्तू.
कार्तिक	12 नवं.
मार्गशीर्ष	11 दिसं.
पौष (सन् 2013 ई.)	10 जन.
माघ	8 फर.
फाल्गुन	9 मार्च
चैत्र	8 अप्रै.

आश्विन कृष्णपक्ष के श्राद्ध (सन् 2012 ई.)

श्राद्ध	तिथि
प्रोष्ठपदी / पूर्णिमा	29 सितं.
प्रतिपदा	30 सितं.
द्वितीया	1 अक्तू.
तृतीया	2 अक्तू.
भरणी श्राद्ध	3 अक्तू.
चतुर्थी	4 अक्तू.
पंचमी	5 अक्तू.
षष्ठी	6 अक्तू.
सप्तमी	7 अक्तू.
अष्टमी	8 अक्तू.
*नवमी	9 अक्तू.
दशमी	10 अक्तू.
एकादशी	11 अक्तू.
✳ द्वादशी / संन्यासियों का श्राद्ध	12 अक्तू.
त्रयोदशी / मघा श्राद्ध	13 अक्तू.
✕ चतुर्दशी	14 अक्तू.
अमावस, सर्वपितृ पूर्णिमा एवं अज्ञात मृत्युतिथि वालों का महालय श्राद्ध	15 अक्तू.

*सौभाग्यवती स्त्री का श्राद्ध सर्वदा नवमी में ही किया जाता है, भले ही उसकी मृत्युतिथि कोई भी हो।

✳ संन्यासी का श्राद्ध हमेशा द्वादशी में ही किया जाता है, भले ही उसकी मृत्युतिथि कोई भी क्यों न हो।

✕ शस्त्र–विष आदि से मृतों (अपमृत्यु वालों) का श्राद्ध चतुर्दशी के दिन होता है, भले ही उनकी मृत्युतिथि कोई भी हो। चतुर्दशी में सामान्य मृत्यु वालों का महालय श्राद्ध अमावस्या में करना चाहिए।

नोट– 3 अक्तूबर को कोई भी श्राद्धतिथि घटित नहीं हुई है (देखें पृष्ठ 106)।

क्रिश्चियन त्योहार (सन् 2012 ई.)

त्योहार	तिथि
नया साल प्रारम्भ	1 जन.
गुड फ्राई डे	6 अप्रै.
ईस्टर सण्डे	8 अप्रै.
क्रिसमस डे	25 दिसं.
(सन् 2013 ई.)	
नया साल प्रारम्भ	1 जन.

वर्गीकृत व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2012 ई. से 10 अप्रैल, सन् 2013 ई. तक)

जैन व्रतपर्व

(सन् 2012 ई.)	
श्रीमेरुत्रयोदशी	21 जन.
मर्यादा महोत्सव	30 जन.
आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण	1 अप्रै.
श्रीजैन महावीर जयन्ती	5 अप्रै.
श्रीमहावीर केवलज्ञान दिवस	1 मई
श्रीमहावीर च्यवन दिवस	25 जून
तेरापन्थ स्थापना दिवस	3 जुला.
चातुर्मास्य व्रत-नियम आदि प्रारम्भ	3 जुला.
श्रीजयाचार्य निर्वाण दिवस	14 अग.
पर्युषण पर्व प्रारम्भ	15 अग.
संवत्सरी महापर्व	20 सितं.
श्रीकालू निर्वाण दिवस	21 सितं.
आचार्य श्रीतुलसी पट्टारोहण	24 सितं.
आचार्य भिक्षु निर्वाण दिवस	28 सितं.
श्रीमहावीर निर्वाण दिवस	13 नवं.
आचार्य श्रीतुलसी जन्म	15 नवं.
ज्ञानपंचमी	18 नवं..
चातुर्मास्य व्रत-नियमादि-समाप्त	28 नवं.
श्रीमहावीर दीक्षा दिवस	8 दिसं.
(सन् 2013 ई.)	
आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा दिवस	2 जन.
जन्म श्रीपार्श्वनाथ जी	7 जन.
श्रीमेरुत्रयोदशी	8 फर.
मर्यादा महोत्सव	17 फर.

महापुरुषों के जन्मदिन

(सन् 2012 ई.)	
स्वामी विवेकानन्द	15 जन.
श्रीरामानन्दाचार्य	15 जन.
श्रीनेता जी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन.
योगिराज बा. श्रीलालदयाल	25 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
श्रीगुरु रविदास जी	7 फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	16 फर.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	23 फर.
श्रीचैतन्य महाप्रभु	8 मार्च
डॉ. अम्बेडकर	14 अप्रै.
श्रीवल्लभाचार्य	16 अप्रै.
श्रीछत्रपति शिवाजी	23 अप्रै.
आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य	26 अप्रै.
श्रीरामानुजाचार्य (उ.भा.)	27 अप्रै.
श्रीरवीन्द्रनाथ टैगोर	7 मई
श्रीमहाराणाप्रताप	24 मई
लो. मा. बालगंगाधर तिलक	23 जुला.
गोस्वामी तुलसीदास जी	25 जुला.
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितं.
श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तू.
श्रीलालबहादुर शास्त्री	2 अक्तू.
महाराज अग्रसेन जी	16 अक्तू.
स्वामी रामतीर्थ	22 अक्तू.
श्रीमाध्वाचार्य	24 अक्तू.
श्रीजवाहर लाल नेहरु	14 नवं.
भगवान् श्रीसत्यसाई बाबा	23 नवं.
श्रीवीर वैरागी	26 नवं.
(सन् 2013 ई.)	
श्रीनेता जी सुभाशचन्द्र बोस	23 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
स्वामी विवेकानन्द	3 फर.
श्रीरामानन्दाचार्य	3 फर.
योगिराज बा. श्रीलालदयाल	12 फर.
श्रीगुरु रविदास जी	25 फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	7 मार्च.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	13 मार्च
श्रीचैतन्य महाप्रभु	27 मार्च.

मुस्लिम त्योहार

(सन् 2012 ई.)	
चेहल्म	14 जन.
आखिरी चहार शम्बा	18 जन.
शहादत-ए-इमाम हसन	23 जन.
ईद-ए-मिलाद	5 फर.
ईद-ए-मौलाद	10 फर.
फतिहायज़दहुम	5 मार्च
जन्म श्री हज़रत अली	4 जून
शब-ए-मिराज	18 जून
शब-ए-बरात	6 जुला.
रमज़ान का पहला दिन	21 जुला.
शहादत-ए-हज़रत अली	10 अग.
शब-ए-कद्र	16 अग.
जमतुल विदा	17 अग.
ईद-उल-फित्र	20 अग.
इदुलज्जुहा	27 अक्तू.
मुहर्रम (ताज़िया)	25 नवं.
(सन् 2013 ई.)	
चेहल्म	3 जन.
आखिरी चहार शम्बा	9 जन.
शहादत-ए-इमाम हसन	11 जन.
ईद-ए-मिलाद	25 जन.
ईद-ए-मौलाद	30 जन.
फतिहायज़दहुम	22 फर.

सूचना

सभी मुस्लिम त्योहार चन्द्र- दर्शन (नया चाँद दिखाई देने) पर ही निर्भर करते हैं। कई बार स्थानभेद या आकाशीय वातावरण के कारण चन्द्रदर्शन की तारीख आगे-पीछे हो जाने पर इन मुस्लिम त्योहारों के दिन में एक दिन का अन्तर संभव है।

क्या किससे पूछें ?

'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' गत विषयों से सम्बद्ध अपनी शंकाओं का समाधान ऐसे प्राप्त करें।

'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' में सिद्धान्त, गणित, फलित, मुहूर्त, व्रतपर्व, तेज़ी-मन्दी आदि अनेक विषयों का समावेश रहता है। इन विषयों से सम्बद्ध शंकाएं हमारे जिज्ञासु पाठकों के मस्तिष्क में कई बार उत्पन्न होती हैं, जिनके समाधानार्थ वे ठीक से समझ नहीं पाते कि किससे सम्पर्क साधा जाए। किस विषय की शंका के समाधानार्थ किससे सम्पर्क करना उचित है- यह हम यहां स्पष्ट किए देते हैं-

(i) तिथ्यादि पंचांग, ग्रहभोगांश, शर, क्रान्ति, राशि-नक्षत्र-नक्षत्रचरणप्रवेश, वक्रता-मार्गिता, उदयास्त, लोप-दर्शन, ग्रहण, ग्रहयुति आदि खगोलीय चमत्कार, अयनांश, अक्षांश, रेखांश, लग्न, सन्दिग्ध व्रतपर्व-निर्णय, विवाहादि मुहूर्त तथा अन्य सभी सिद्धान्त-गणित-फलित-सम्बन्धी जिज्ञासाओं के शान्त्यर्थ मुझसे सम्पर्क करें।

उत्तर के लिए मुझे जवाबी पत्र या Postal Stamps आदि न भेजें। आपकी उचित शंकाओं का निवारण मैं अपने व्यय से ही करुंगा। लेकिन मैं इसके लिए किसी भी तरह से बाधित नहीं हूँ-यह ध्यान में रखें।

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, M.A., 'अभिजित् प्रकाशन, 59/6,
P.O. पंचकूला- 134 109, Phone-0172-2565 303

(ii) राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय घटनाचक्र, राजनैतिकदलों के चुनावचक्र में जय-पराजय, राजनेताओं का उत्थान-पतन, पाक्षिक-मासिक-वार्षिक फलादेश, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र-रहस्य, वृष्टि, वायुमण्डल, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, बाढ़, भूकम्प आदि दैवी एवं प्राकृतिक आपदा तथा विश्वशान्ति-विप्लव आदि से सम्बद्ध पंचांगगत भविष्यवाणियों के विषय में तथा जन्मकुण्डली, टेवा, प्रश्नलग्न आदि के निर्माण एवं इनकी फीस वग़ैरह की जानकारी एवम् वायदा-हाज़र बाज़ार के चांस, सोना, चान्दी, कॉपर आदि मैटल्स, चना, गेहूं, ग्वार आदि अनाज; तिल, सरसों, बिनौला आदि तिलहन तथा रुई, कपास, ऊन आदि जिन्स की पंचांग में प्रकाशित वार्षिक-मासिक-पाक्षिक-दैनिक तेज़ी-मन्दी- सम्बन्धी पूछताछ के लिए हम से सम्पर्क कीजिए-

पं. इन्दुशेखर शर्मा, शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,
पं. संयमी शर्मा, M.A., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,
श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, कुराली,
ज़िला मोहाली (पंजाब), PIN 140 103,
PHONE: 0160-2641 277, FAX- 0160-2641 577

इसके अतिरिक्त पंचांग में प्रकाशित अन्य किसी लेख आदि के विषय में अपनी शंकाओं के निवारणार्थ उसके लेखक से ही सम्पर्क करना चाहिए।

—सम्पादक मण्डल

सिक्ख पर्व (सं. 2069 वि.) (सन् 2012–13 ई.)

नाम श्रीगुरु साहिबान	पुरातन परम्परा अनुसार तारीख			सिक्ख पर्व संशोधित नानकशाही कैलेण्डर अनुसार (2012 ई.)			
	ता. प्रकाश दिवस	ता. गुरयाई मिली	ता. जोतीजोत समाए	ता. प्रकाश दिवस	ता. गुरयाई मिली	ता. जोतीजोत समाए	संक्रान्ति*
श्री गुरु नानकदेव जी	28 नवं., 2012 ई.	अवतार दिन से	10 अक्तू., 2012 ई.	28 नवम्बर	अवतार दिन से	22 सितम्बर	*शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी, श्री अमृतसर की ओर से प्रकाशित मासिक-पत्रिका 'गुरुमत प्रकाश' (अप्रैल, 2010 ई.) के पृष्ठ 89 के अनुसार तारा अंकित पर्व और संक्रान्ति अब पुरातन परम्परा (विक्रमी) के अनुसार ही हुआ करेंगे।
श्री गुरु अंगददेव जी	22 अप्रै., 2012 ई.	5 अक्तू., 2012 ई.	26 मार्च, 2012 ई.	18 अप्रैल	18 सितम्बर	16 अप्रैल	
श्री गुरु अमरदास जी	5 मई, 2012 ई.	23 मार्च, 2012 ई.	30 सितं., 2012 ई.	23 मई	16 अप्रैल	16 सितम्बर	
श्री गुरु रामदास जी	31 अक्तू., 2012 ई.	28 सितं, 2012 ई.	18 सितं., 2012 ई.	9 अक्तूबर	16 सितम्बर	16 सितम्बर	
श्री गुरु अर्जुनदेव जी	12 अप्रै., 2012 ई.	17 सितं., 2012 ई.	25 मई, 2012 ई.	2 मई	16 सितम्बर	25 मई*	
श्री गुरु हरगोबिन्द जी	5 जून, 2012 ई.	13 मई, 2012 ई.	28 मार्च, 2012 ई.	5 जुलाई	11 जून	19 मार्च	
श्री गुरु हरिराय जी	23 फर., 2013 ई.	8 अप्रै., 2013 ई.	8 नवं., 2012 ई.	31 जनवरी	14 मार्च	20 अक्तूबर	
श्री गुरु हरकिशन जी	12 जुला., 2012 ई.	8 नवं., 2012 ई.	5 अप्रै., 2012 ई.	23 जुलाई	20 अक्तूबर	16 अप्रैल	
श्री गुरु तेग़बहादुर जी	11 अप्रै., 2012 ई.	5 अप्रै., 2012 ई.	17 दिसं., 2012 ई.	18 अप्रैल	16 अप्रैल	24 नवम्बर	
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	18 जन., 2013 ई.	15 दिसं., 2012 ई.	18 नवं., 2012 ई.	18 जनवरी, 2013*	24 नवम्बर	18 नवं., 2012 ई.*	
खालसापंथ साजना दिवस	वैशाख 1, मुताबिक	13 अप्रैल, 2012 ई.		13 अप्रैल, 2012 ई.*			
प्रथम प्रकाश गुरुग्रन्थ साहिब जी	भाद्र. शुक्ल 1, मुताबिक	16 सितंबर, 2012 ई.		1 सितंबर, 2012 ई.			
गुरुग्रन्थ साहिब जी को गुरयाई मिली	कार्तिक शुक्ल 2, मुताबिक	15 नवंबर, 2012 ई.		15 नवंबर, 2012 ई.*			

भारत सरकार के अवकाश (1 जनवरी, सन् 2012 ई. से 10 अप्रैल, सन् 2013 ई. तक)

(सूचना :– अवकाश की इस सूची को भारत सरकार के गज़ट की सूची से मिला लेना चाहिए।)

						(सन् 2013 ई.)	
इंग्लिश नववर्ष (2012 ई.) प्रारम्भ	1 जन.	वैशाखी (पंजाब)	13 अप्रै.	जन्म श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तू.	इंग्लिश नववर्ष (2013 ई.) प्रारम्भ	1 जन.
*अ. दि. श्रीगुरु गोबिन्दसिंह जी	5 जन.	विशु (केरल)	13 अप्रै.	श्रीदुर्गाष्टमी	22 अक्तू.	*अ. दि. श्रीगुरु गोबिन्दसिंह जी	18 जन.
मकर संक्रान्ति (बंगाल)	14 जन.	श्रीबुद्ध जयन्ती	6 मई	दशहरा	24 अक्तू.	मकर संक्रान्ति (बंगाल)	14 जन.
पोंगल	15 जन.	जन्म श्रीहजरत अली	4 जून	इदुलज्जुहा	27 अक्तू.	पोंगल	14 जन.
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन.	रथयात्रा (पुरी)	21 जून	श्रीवाल्मीकि जयन्ती	29 अक्तू.	ईद–ए–मिलाद	25 जन.
ईद–ए–मिलाद	5 फर.	रक्षाबन्धन (राखी)	2 अग.	दीपावली	13 नवं.	भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन.
जन्मदिन श्री गुरु रविदास जी	7 फर.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	10 अग.	भाई दूज	15 नवं.	जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी	25 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	20 फर.	भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अग.	बलि. दि. श्रीगुरु तेग़बहादुर जी	24 नवं.	श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	10 मार्च
गुड़ी पड़वा	23 मार्च	जमतुलविदा	17 अग.	मुहर्रम (ताज़िया)	25 नवं.	* श्रीगुरु गोबिन्दसिंह जी का अवतारपर्व संशोधित नानकशाही Calander के अनुसार पौष शुक्ल सप्तमी को ही मनाया जाना चाहिए।	
श्रीराम नवमी	1 अप्रै.	इदुल–फित्र	20 अग.	श्रीगुरुनानक जयन्ती	28 नवं.		
श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)	5 अप्रै.	ओणम (केरल)	29 अग.	क्रिसमस डे	25 दिसं.		
गुड फ्राई डे	6 अप्रै.	श्रीगणेश चतुर्थी	19 सितं.				

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू–काश्मीर व उ.प्र. के मेले (1 जन., सन् 2012 ई. से 10 अप्रैल, 2013 ई. तक)

नाम मेला/पर्व (सन् 2012 ई.)	तारीख
जनवरी 2012 ई.	
लोहड़ी, दांऊ(मोहाली), (पं.)	14 जन.
लोहड़ी, बिंदरख (रोपड़), (पं.)	14 जन.
मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी (रिरु साहिब) प्रा.	20 जन.
ब. सं. बा. बख्शीश सिंह जी	26 जन.
वसन्त पंचमी	28 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी, (मस्तुआणा) (पं.) प्रा.	30 जन.
फरवरी 2012 ई.	
ज. दि. गुरु हरिराय जी, सिंहपुरा–कुराली (पं.)	5 फर.
बलिदान दिवस बाबा दीप सिंह जी शहीद सोलखियां (रोपड़–पं.)	10 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	20 फर.
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी–गढ़वाल)	20 फर.
मार्च 2012 ई.	
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	9 मार्च
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	12 मार्च
श्री वीरमदास, बघौछी (पटियाला)	13 मार्च
ज. दि. सं. बा. अतर सिंह जी, (नानकसर चीमा) प्रा.	15 मार्च
शीतला माता (कुराली) पं.	15 मार्च
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	21 मार्च
ज. दि. सं. बा. निधान सिंह जी, (श्री हजूर साहिब वाले) ढींडसा (लुधि.)	25 मार्च
माइसर खाना (पं.)	29 मार्च
नरीसैंभरी, मथुरा (उ.प्र.)	31 मार्च
श्री मनसादेवी (हरि.)	31 मार्च
बहुफोर्ट (जम्मू–काश्मीर)'	31 मार्च
ज्वालामुखी (हरचोवाल, गुरदासपुर)(पं.)	31 मार्च

नाम मेला/पर्व (सन् 2012 ई.)	तारीख
अप्रैल, 2012 ई.	
माता कांसादेवी (कांसल, मोहाली) प्रा.	5 अप्रै.
मेला माता नैनादेवी, दाचर (करनाल)	5 अप्रै.
देवी मेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	5 अप्रै.
कशाधा, नहयाणी सह (कुल्लू) प्रा.	15 अप्रै.
पिंजौर (हरि.)	21 अप्रै.
पीपल जातर (कुल्लू) प्रा.	28 अप्रै.
समागम (8 दिन) हरिहरघाट, मणिकर्ण (हि.प्र.) प्रा.	30 अप्रै.
मई 2012 ई.	
आनी आऊटर सिराज (कुल्लू) प्रा.	7 मई
ज. दि. सं.बा. तेजा सिंह जी, बदरीपुर पांवटा सा. (हि.प्र.) प्रा.	14 मई
ढूंगरी जातर (मनाली) प्रा.	14 मई
बंजार (कुल्लू) प्रा.	14 मई
साढ़ी जातर, नगर (हि.प्र.) प्रा.	18 मई
सूर्यग्रहण (भारत के पूर्वीछोर पर दृश्य)	21 मई
पुण्यतिथि साईं टेऊँ राम जी,	26 मई
क्षीर भवानी (जम्मू–काश्मीर)	29 मई
श्रीगंगा दशहरा	31 मई
सपोर यात्रा– धारलदा (उधमपुर)	31 मई
जून 2012 ई.	
नमाणी एकादशी, नौवें गुरु, बरहे (बठि.) पं.	1 जून
पीपलू , ऊना (हि.प्र.)	1 जून
शुद्ध महादेव यात्रा (उधमपुर)	4 जून
पाण्डवों का बाड़ी मेला (सरयांझ) सोलन	14 जून
भून्तर (कुल्लू) प्रा.	14 जून
जयन्ती सत्गुरु साईं टेऊँराम जी सप्त सरोवर भूपतवाला, हरिद्वार	25 जून

नाम मेला/पर्व (सन् 2012 ई.)	तारीख
यादगारी दिवस बीबी शरण कौर जी, गु. श्रीअमरगढ़ साहिब, श्रीचमकौर साहिब	28 जून
शरीक भवानी (जम्मू–काश्मीर)	28 जून
जुलाई 2012 ई.	
ब. सं. बा. तेजा सिंह जी, नानकसर चीमा (पं.)/बडू साहिब (हि. प्र.) प्रा.	1 जुला.
मेला पीरभीखनशाह (घड़ाम,पटियाला) प्रा.	2 जुला.
गुरु पूर्णिमा, नदीपार आश्रम (कुराली), पं.	3 जुला.
मुड़िया पूनौ (गोवर्धन), मथुरा (उ.प्र.)	3 जुला.
ब.बा. सन्तोख सिंह जी/भा. दर्शन सिंह गुरुद्वारा जन्मस्थान नानकसर, चीमा प्रा.	9 जुला.
नागपंचमी (जैत), मथुरा (उ.प्र.)	24 जुला.
श्रीनयना देवी (हि. प्र.)	26 जुला.
श्री चिन्तपूर्णी (हि. प्र.)	26 जुला.
अगस्त 2012 ई.	
श्री अमरनाथ यात्रा (काश्मीर)	2 अग.
ब. सं. बा. निधान सिंह जी, ढींडसा (लुधि.)	4 अग.
ज. दि. सं. बा. ईशर सिंह जी (राड़ा सा. वाले), आलोवाल, पटियाला	5 अग.
बरसी सं. बाबा प्यारा सिंह जी, (झाड़ साहिब वाले) चमकौर साहिब प्रा.	5 अग.
श्रीकृष्णजन्माष्टमी, मथुरा (उ.प्र.)	10 अग.
कैलाशयात्रा (काश्मीर) प्रा.	15 अग.
ब. सं. बा. हरचन्द सिंह लौंगोवाल	20 अग.
ब.सं.बा. ईशर सिंह जी (राड़ा सा. वाले) प्रा.	24 अग.
सितंबर 2012 ई.	
श्रीगोसाईंआणां, कुराली (पंजाब)	17 सितं.
श्रीगणेशोत्सव (मण्डी, ऊना) हि.प्र. प्रारम्भ	19 सितं.
मेला पट्ट (काश्मीर) प्रारम्भ	20 सितं.

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू–काश्मीर व उ.प्र. के मेले (1 जन., सन् 2012 ई. से 10 अप्रैल, 2013 ई. तक)

नाम मेला/पर्व (सन् 2012 ई.)	तारीख
श्रीगर्गाचार्य जयन्ती	20 सितं.
मेला श्रीबलदेव छठ, पलवल, हरियाणा	21 सितं.
गरुणगोविन्द (छटीकरा, मथुरा) (उ.प्र.)	23 सितं.
श्रीवामन द्वादशी (अम्बाला, पटियाला)	26 सितं.
बाबा सोढल (जालन्धर)	29 सितं.
छपार (पं.)	29 सितं.
श्रीगोईंदवाल साहिब (तरनतारन) पं.	30 सितं.
अक्तूबर 2012 ई.	
उर्स माणकपुर शरीफ (मोहाली) प्रारम्भ	1 अक्तू.
श्री आशापति यात्रा (काश्मीर) प्रा.	14 अक्तू.
मेला फल्गु (पिहोवा–हरियाणा)	15 अक्तू.
श्रीज्वालामुखी (हि.प्र.)	22 अक्तू.
श्रीतारादेवी (हि.प्र.)	22 अक्तू.
ज्वालामुखी (हरचोवाल,गुरदासपुर) पं.	22 अक्तू.
ब. सं. बा. गुरुचरण सिंह जी, गु. अमरगढ़ साहिब, चमकौर साहिब	24 अक्तू.
दशहरा (कुल्लू) प्रा.	24 अक्तू.
मेला माता नयनादेवी, दाचर (करनाल)	28 अक्तू.
श्रीशाकम्भरी देवी (उ.प्र.)	28 अक्तू.
देवीमेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	28 अक्तू.
नवंबर 2012 ई.	
भण्डारा श्री हरिओम् जी (माणकपुर शरीफ)	9 नवं.
दीपावली (अमृतसर)	13 नवं.
बाल मेला	14 नवं.

नाम मेला/पर्व (सन् 2012 ई.)	तारीख
बाबा रुद्रानन्द, नारी (ऊना, हि.प्र.) प्रा.	24 नवं.
रेणुका (नाहन) हि.प्र.	24 नवं.
ज. दि. श्रीवीर वैरागी (नकोदर) (पं.)	26 नवं.
मेला बग्गीदेहरी कुण्डे लालोवाल (गुरदासपुर) प्रा.	27 नवं.
श्रीरामतीर्थ (अमृतसर, पं.)	28 नवं.
कपालमोचन (हरि.)	28 नवं.
श्रीपुष्करराज (राज.)	28 नवं.
दिसम्बर 2012 ई.	
ब. बा. विसाखा सिंह, दुदेहर सा.(तरनतारन)	4 दिसं.
पुरमण्डल, देविकास्नान (जम्मू)	12 दिसं.
ब. सं. बा. राम सिंह/ बूटा सिंह, नानकसर चीमा	22 दिसं.
ब. बीबी तेज कौर जी, मानपुर,फतेहगढ़ सा.	23 दिसं.
ज. दि. सं. बा. किशन सिंह जी, (राड़ा सा. वाले) मसीतां,(सिरसा–हरि.)	24 दिसं.
जोड़मेला श्री फतेहगढ़ साहिब, (पं.) प्रा.	26 दिसं.
संगीत मेला बाबा हरवल्लभ (जालन्धर) प्रा.	27 दिसं.
ब. सं. बा. किशन सिंह जी, गु. कर्मसर साहिब, राड़ा साहिब (लुधि.)प्रा.	30 दिसं.
जनवरी सन् 2013 ई.	
लोहड़ी दांऊ (मोहाली) (पं.)	13 जन.
लोहड़ी बिंदरख (रोपड़,) (पं.)	13 जन.
मुक्तसर (पंजाब)	13 जन.

नाम मेला/पर्व (सन् 2013 ई.)	तारीख
ब. सं. बा. अतर सिंह जी (रेरु साहिब) प्रा.	19 जन.
ब. सं. बा. बख्शीश सिंह जी	25 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी, (मस्तुआणा) (पं.) प्रा.	29 जन.
फरवरी 2013 ई.	
बलिदान दिवस बाबा दीप सिंह जी शहीद सोलखियां (रोपड़–पं.)	10 फर.
वसन्त पंचमी	14 फर.
ज. दि. गुरु हरिराय जी, सिंहपुरा–कुराली (पं.)	23 फर.
मार्च 2013 ई.	
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	10 मार्च
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी–गढ़वाल)	10 मार्च
ज. दि. सं. बा. अतर सिंह जी, (नानकसर चीमा) प्रा.	15 मार्च
नगर कीर्तन होला महल्ला, चमकौर साहिब	22 मार्च
ज. दि. सं. बा. निधान सिंह जी, (श्री हज़ूर साहिब वाले) ढींडसा (लुधि.)	25 मार्च
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	28 मार्च
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	31 मार्च
अप्रैल 2013 ई.	
श्री वीरमदास, बधौछी (पटियाला)	2 अप्रै.
शीतला माता (कुराली) पं.	4 अप्रै.
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	9 अप्रै.

यदि आप चाहते हैं कि– आपके नगर/ ग्राम में होने वाले मेलों आदि को इस पृष्ठ पर प्रकाशित सूची में प्रविष्ट किया जाए तो तिथि, प्रविष्टा या अंग्रेजी तारीख, जिसके अनुसार उसे मनाया जाता हो– पूर्ण विवरणसहित लिख भेजें– धन्यवाद। – सम्पादक

श्रीगणेशचतुर्थी एवम् श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत

भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों के लिए चन्द्रोदय (संवत् 2069 वि.) (भा. स्टैं. टा.)

स्थान	श्रीगणेशचतुर्थी चन्द्रोदय (सूर्यास्त बाद) (I.S.T.)													श्रीकृष्णजन्माष्टमी चन्द्रोदय (I.S.T.) स्मार्त	श्रीकृष्णजन्माष्टमी चन्द्रोदय (I.S.T.) वैष्णव
	09 अप्रै., 2012 ई. घं. मि.	09 मई, 2012 ई. घं. मि.	07 जून 2012 ई. घं. मि.	06 जुला. 2012 ई. घं. मि.	05 अग. 2012 ई. घं. मि.	04 सितं. 2012 ई. घं. मि.	03 अक्तू. 2012 ई. घं. मि.	02 नवं., 2012 ई. घं. मि.	02 दिसं., 2012 ई. घं. मि.	01 जन., 2013 ई. घं. मि.	30 जन., 2013 ई. घं. मि.	01 मार्च, 2013 ई. घं. मि.	30 मार्च, 2013 ई. घं. मि.	9 अग., 2012 घं. मि.	10/11 अग.,'12 घं. मि.
अजमेर	09 55	10 40	10 08	09 24	09 09	08 54	08 10	08 23	08 52	09 29	09 16	10 06	10 01	23 36	00 19
अमृतसर	10 06	10 50	10 15	09 27	09 07	08 47	08 00	08 11	08 43	09 25	09 15	10 12	10 10	23 26	00 07
अलवर	09 50	10 35	10 01	09 17	09 01	08 45	08 01	08 13	08 42	09 21	09 08	09 59	09 55	23 26	00 09
अलीगढ़	09 44	10 29	09 56	09 11	08 55	08 38	07 54	08 06	08 36	09 14	09 02	09 53	09 50	23 20	00 02
अहमदाबाद	09 57	10 43	10 11	09 30	09 19	09 07	08 25	08 38	09 06	09 40	09 24	10 10	10 04	23 51	00 34
आगरा	09 43	10 28	09 55	09 10	08 55	08 39	07 55	08 07	08 37	09 15	09 02	09 53	09 48	23 21	00 03
इलाहाबाद	09 23	10 09	09 36	08 53	08 40	08 26	07 43	07 55	08 24	09 00	08 46	09 35	09 29	23 08	23 51
उज्जैन	09 45	10 30	09 59	09 17	09 06	08 54	08 12	08 25	08 53	09 27	09 11	09 58	09 51	23 38	00 21
उदयपुर(रा.)	09 56	10 41	10 09	09 26	09 14	09 01	08 18	08 31	08 59	09 35	09 20	10 08	10 02	23 44	00 26
ऊना	09 59	10 44	10 09	09 22	09 01	08 41	07 55	08 05	08 37	09 19	09 09	10 06	10 04	23 21	00 02
कपूरथला	10 03	10 48	10 12	09 25	09 05	08 45	07 59	08 09	08 41	09 23	09 13	10 09	10 07	23 25	00 06
करनाल	09 52	10 37	10 03	09 17	08 59	08 40	07 55	08 06	08 37	09 18	09 06	10 00	09 57	23 21	00 03
कांगड़ा	10 01	10 45	10 10	09 22	09 01	08 40	07 54	08 04	08 36	09 19	09 10	10 06	10 05	23 20	00 01
कानपुर	09 31	10 17	09 44	09 00	08 46	08 31	07 47	07 59	08 29	09 06	08 52	09 42	09 37	23 13	23 55
कुरुक्षेत्र	09 54	10 39	10 04	09 18	08 59	08 41	07 55	08 07	08 38	09 18	09 07	10 01	09 59	23 21	00 03
कुल्लू	09 57	10 42	10 06	09 19	08 58	08 37	07 51	08 01	08 33	09 16	09 06	10 03	10 01	23 17	23 58
कोटा	09 48	10 33	10 01	09 18	09 05	08 51	08 08	08 21	08 49	09 25	09 11	09 59	09 54	23 34	00 16
कोलकाता	08 51	09 36	09 06	08 24	08 14	08 03	07 21	07 34	08 02	08 35	08 19	09 04	08 58	22 47	23 30
गुरदासपुर	10 04	10 49	10 13	09 26	09 04	08 44	07 57	08 08	08 40	09 23	09 13	10 10	10 08	23 23	00 04
ग्वालियर	09 40	10 26	09 53	09 09	08 55	08 40	07 57	08 09	08 38	09 15	09 01	09 51	09 46	23 22	00 05
चण्डीगढ़	09 55	10 40	10 05	09 19	08 59	08 40	07 54	08 05	08 36	09 18	09 07	10 02	10 00	23 20	00 01
चम्बा	10 02	10 47	10 11	09 23	09 01	08 40	07 53	08 04	08 36	09 19	09 10	10 07	10 06	23 19	00 00
चूरु	09 58	10 43	10 09	09 24	09 07	08 51	08 06	08 18	08 48	09 27	09 15	10 07	10 03	23 32	00 14
चेन्नई	09 08	09 54	09 27	08 51	08 49	08 47	08 08	08 24	08 48	09 14	08 52	09 28	09 17	23 34	00 19
जम्मू	10 08	10 53	10 16	09 28	09 07	08 45	07 58	08 09	08 41	09 24	09 15	10 13	10 12	23 24	00 05
जयपुर	09 51	10 37	10 03	09 19	09 04	08 49	08 05	08 17	08 47	09 24	09 11	10 02	09 57	23 31	00 13
जालन्धर	10 02	10 47	10 11	09 24	09 04	08 44	07 58	08 09	08 41	09 23	09 12	10 08	10 06	23 24	00 05
जोधपुर	10 02	10 47	10 14	09 30	09 16	09 01	08 17	08 30	08 59	09 36	09 23	10 12	10 08	23 43	00 26
दरभंगा	09 08	09 53	09 21	08 37	08 23	08 08	07 25	07 37	08 06	08 43	08 29	09 19	09 14	22 51	23 33
दिल्ली	09 49	10 34	10 01	09 15	08 58	08 41	07 56	08 08	08 38	09 18	09 06	09 58	09 55	23 22	00 04

श्रीगणेशचतुर्थी एवम् श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत

भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों के लिए चन्द्रोदय (संवत् 2069 वि.) (भा. स्टैं. टा.)

स्थान	श्रीगणेशचतुर्थी चन्द्रोदय (सूर्यास्त बाद) (I.S.T.)													श्रीकृष्णजन्माष्टमी चन्द्रोदय (I.S.T.)	
	09 अप्रै., 2012 ई. घं. मि.	09 मई, 2012 ई. घं. मि.	07 जून 2012 ई. घं. मि.	06 जुला. 2012 ई. घं. मि.	05 अग. 2012 ई. घं. मि.	04 सितं. 2012 ई. घं. मि.	03 अक्तू. 2012 ई. घं. मि.	02 नवं., 2012 ई. घं. मि.	02 दिसं., 2012 ई. घं. मि.	01 जन., 2013 ई. घं. मि.	30 जन., 2013 ई. घं. मि.	01 मार्च, 2013 ई. घं. मि.	30 मार्च, 2013 ई. घं. मि.	स्मार्त 9 अग., 2012 घं. मि.	वैष्णव 10/11 अग.,'12 घं. मि.
देहरादून	09 49	10 34	10 00	09 13	08 54	08 36	07 50	08 01	08 32	09 13	09 02	09 57	09 54	23 16	23 57
नागपुर	09 27	10 12	09 42	09 01	08 52	08 42	08 01	08 14	08 42	09 14	08 57	09 41	09 34	23 27	00 10
नाहन	09 53	10 38	10 03	09 16	08 57	08 38	07 52	08 03	08 34	09 16	09 05	10 00	09 58	23 18	00 00
पटना	09 18	10 04	09 31	08 48	08 34	08 20	07 37	07 49	08 18	08 55	08 40	09 29	09 24	23 03	23 45
पटियाला	09 55	10 41	10 06	09 20	09 01	08 42	07 57	08 08	08 39	09 20	09 09	10 03	10 01	23 22	00 04
पठानकोट	10 04	10 48	10 12	09 25	09 03	08 42	07 56	08 06	08 38	09 21	09 12	10 09	10 08	23 22	00 03
पुणे	09 44	10 29	10 00	09 21	09 15	09 07	08 27	08 41	09 07	09 38	09 19	10 00	09 52	23 52	00 36
फगवाड़ा	10 01	10 46	10 10	09 23	09 03	08 43	07 57	08 08	08 40	09 22	09 12	10 07	10 05	23 23	00 04
फिरोज़पुर	10 05	10 50	10 14	09 28	09 08	08 49	08 03	08 14	08 45	09 27	09 16	10 12	10 09	23 29	00 10
बंगलोर	09 19	10 05	09 38	09 02	09 01	08 58	08 20	08 35	08 59	09 25	09 03	09 39	09 28	23 45	00 30
बिलासपुर(हि.प्र.)	09 57	10 42	10 06	09 19	08 59	08 39	07 53	08 04	08 35	09 17	09 07	10 03	10 01	23 19	00 00
बीकानेर	10 04	10 49	10 16	09 31	09 14	08 53	08 13	08 25	08 55	09 34	09 22	10 13	10 10	23 39	00 21
बून्दी	09 49	10 34	10 02	09 19	09 05	08 51	08 08	08 21	08 50	09 26	09 12	10 01	09 55	23 34	00 17
भटिण्डा	10 02	10 47	10 12	09 26	09 07	08 48	08 03	08 14	08 45	09 26	09 15	10 09	10 07	23 29	00 10
भरतपुर	09 45	10 30	09 57	09 13	08 57	08 42	07 58	08 10	08 39	09 17	09 04	09 55	09 51	23 23	00 06
मण्डी	09 57	10 42	10 06	09 19	08 58	08 38	07 52	08 02	08 34	09 16	09 07	10 03	10 01	23 18	23 59
मथुरा	09 45	10 30	09 57	09 12	08 57	08 41	07 56	08 08	08 38	09 16	09 03	09 55	09 51	23 22	00 04
मुम्बई	09 49	10 34	10 05	09 25	09 18	09 11	08 30	08 44	09 11	09 41	09 23	10 05	09 57	23 56	00 40
रोपड़	09 57	10 42	10 07	09 20	09 01	08 41	07 55	08 06	08 37	09 19	09 09	10 04	10 02	23 21	00 02
रोहतक	09 52	10 37	10 03	09 18	09 01	08 43	07 58	08 10	08 40	09 20	09 08	10 01	09 57	23 24	00 06
लखनऊ	09 30	10 15	09 42	08 58	08 43	08 28	07 44	07 56	08 25	09 03	08 50	09 40	09 36	23 10	23 52
लुधियाना	10 00	10 45	10 09	09 23	09 03	08 43	07 58	08 08	08 40	09 21	09 11	10 06	10 04	23 23	00 05
वाराणसी	09 18	10 04	09 32	08 49	08 35	08 22	07 38	07 51	08 20	08 56	08 41	09 30	09 25	23 04	23 47
शिमला	09 55	10 40	10 04	09 18	08 58	08 38	07 52	08 03	08 34	09 16	09 06	10 01	09 59	23 18	23 59
श्रीनगर (का.)	10 11	10 56	10 19	09 30	09 06	08 43	07 56	08 06	08 39	09 24	09 16	10 15	10 15	23 22	00 02
संगरूर	09 58	10 43	10 08	09 22	09 03	08 45	07 59	08 10	08 41	09 22	09 11	10 06	10 03	23 25	00 06
सहारनपुर	09 51	10 36	10 01	09 15	08 56	08 38	07 53	08 04	08 35	09 15	09 04	09 58	09 56	23 18	00 00
सीकर	09 56	10 41	10 07	09 23	09 07	08 51	08 06	08 18	08 48	09 27	09 14	10 05	10 01	23 32	00 14
हरिद्वार	09 48	10 33	09 58	09 12	08 54	08 35	07 50	08 01	08 32	09 12	09 01	09 55	09 53	23 16	23 57
हिसार	09 56	10 41	10 07	09 22	09 04	08 46	08 01	08 13	08 43	09 23	09 12	10 05	10 02	23 27	00 09
होशियारपुर	10 01	10 46	10 10	09 23	09 03	08 42	07 56	08 07	08 39	09 21	09 11	10 07	10 05	23 22	00 03

होशियारपुर	10 01	10 46	10 10	09 23	09 03	08 42

गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ एवम् समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2012 से 10 अप्रैल, सन् 2013 ई. तक)

प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त	
2012 ई.	घं. मि.	2012 ई.	घं. मि.	2012 ई.	घं. मि.	2012 ई.	घं. मि.	2012 ई.	घं. मि.	2012 ई.	घं. मि.	2012–13 ई.	घं. मि.	2012–13 ई.	घं. मि.
1 जन.	12 41	3 जन.	18 42	29 अप्रै.	17 42	1 मई	17 24	25 अग.	10 33	27 अग.	8 06	21 दिसं.	9 48	23 दिसं.	14 45
11 जन.	5 15	13 जन.	4 02	8 मई	0 11	9 मई	19 44	3 सितं.	7 29	5 सितं.	11 53	31 दिसं.	10 07	2 जन.	12 58
19 जन.	19 10	21 जन.	16 51	17 मई	0 35	19 मई	6 32	13 सितं.	4 23	15 सितं.	3 52	9 जन.	7 24	11 जन.	2 11
28 जन.	21 07	31 जन.	2 55	26 मई	23 59	29 मई	0 50	21 सितं.	16 02	23 सितं.	13 31	17 जन.	17 40	19 जन.	21 47
7 फर.	13 47	9 फर.	11 30	4 जून	11 04	6 जून	6 00	30 सितं.	15 13	2 अक्तू.	19 36	27 जन.	16 29	29 जन.	18 41
16 फर.	0 53	17 फर.	23 32	13 जून	7 00	15 जून	12 50	10 अक्तू.	13 41	12 अक्तू.	13 54	5 फर.	15 19	7 फर.	11 35
25 फर.	5 20	27 फर.	10 55	23 जून	5 30	25 जून	6 35	18 अक्तू.	23 19	20 अक्तू.	19 34	14 फर.	2 59	16 फर.	6 03
5 मार्च	23 49	7 मार्च	21 15	1 जुला.	20 59	3 जुला.	16 23	27 अक्तू.	21 45	30 अक्तू.	2 28	24 फर.	0 16	26 फर.	1 53
14 मार्च	6 30	16 मार्च	4 54	10 जुला.	14 32	12 जुला.	19 55	6 नवं.	21 53	8 नवं.	23 28	4 मार्च	20 57	6 मार्च	18 13
23 मार्च	12 34	25 मार्च	18 08	20 जुला.	11 40	22 जुला.	12 08	15 नवं.	9 18	17 नवं.	4 02	13 मार्च	12 21	15 मार्च	14 53
2 अप्रै.	9 35	4 अप्रै.	7 51	29 जुला.	4 44	31 जुला.	1 19	24 नवं.	3 31	26 नवं.	8 37	23 मार्च	9 04	25 मार्च	10 48
10 अप्रै.	14 11	12 अप्रै.	11 11	6 अग.	22 58	9 अग.	3 46	4 दिसं.	4 25	6 दिसं.	7 08	1 अप्रै.	2 39	2 अप्रै.	23 34
19 अप्रै.	18 45	22 अप्रै.	0 31	16 अग.	19 21	18 अग.	19 02	12 दिसं.	20 48	14 दिसं.	14 54	9 अप्रै.	20 21	— —	— —

पंचकों का प्रारम्भ एवम् समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2012 से 10 अप्रैल, सन् 2013 ई. तक)

प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त	
2012 ई.	घं. मि.	2012 ई.	घं. मि.	2012 ई.	घं. मि.	2012 ई.	घं. मि.	2012-13 ई.	घं. मि.	2012-13 ई.	घं. मि.	2013 ई.	घं. मि.	2013 ई.	घं. मि.
— —	— —	2 जन.	15 39	13 मई	6 02	18 मई	3 27	27 सितं.	0 03	1 अक्तू.	17 10	10 फर.	16 44	15 फर.	4 09
25 जन.	3 39	29 जन.	23 53	9 जून	13 59	14 जून	9 46	24 अक्तू.	5 34	28 अक्तू.	23 55	10 मार्च	1 32	14 मार्च	13 18
21 फर.	11 54	26 फर.	7 57	6 जुला.	23 22	11 जुला.	17 0	20 नवं.	11 39	25 नवं.	5 53	6 अप्रै.	7 59	10 अप्रै.	21 29
19 मार्च	18 18	24 मार्च	15 12	3 अग.	8 55	8 अग.	1 05	17 दिसं.	19 54	22 दिसं.	12 01				
15 अप्रै.	23 48	20 अप्रै.	21 31	30 अग.	17 22	4 सितं.	9 24	14 जन.	6 12	18 जन.	19 24				

रविवार कैलेण्डर (1 जनवरी, सन् 2012 से 10 अप्रैल, सन् 2013 ई. तक)

2012 ई.	रविवार की तारीखें					2012 ई.	रविवार की तारीखें					2012 ई.	रविवार की तारीखें					2013 ई.	रविवार की तारीखें				
जनवरी	1	8	15	22	29	मई	6	13	20	27	—	सितंबर	2	9	16	23	30	जनवरी	6	13	20	27	—
फरवरी	5	12	19	26	—	जून	3	10	17	24	—	अक्तूबर	7	14	21	28	—	फरवरी	3	10	17	24	—
मार्च	4	11	18	25	—	जुलाई	1	8	15	22	29	नवंबर	4	11	18	25	—	मार्च	3	10	17	24	31
अप्रैल	1	8	15	22	29	अगस्त	5	12	19	26	—	दिसंबर	2	9	16	23	30	अप्रैल	7	14	21	28	—

कुम्भमहापर्व प्रयागराज (10 फरवरी, 2013 ई.)

[कुम्भपर्व का उद्गम, माहात्म्य एवं स्नानतिथियां आदि] –प्रियव्रत शर्मा,

हिन्दुओं के सभी प्राचीन उत्सव धार्मिक आधार लिए हुए हैं। वे मनोरंजन के साथ–साथ मानव के चरित्र को आवश्यक विधियों की ओर प्रवृत्त और निषेधों से निवृत्त कर एक ऐसे अनुशासन में निबद्ध करते हैं, जिससे मानव ऐहलौकिक और पारलौकिक अभ्युदय एवं निःश्रेयस् प्राप्त करता है। वे शारीरिक स्वास्थ्य और आत्मिक शुद्धि पर समानरूपेण बल देते हैं। इन उत्सवों में चार कुम्भपर्वों का स्थान विशालता और अलौकिक माहात्म्य की दृष्टि से वस्तुतः मूर्धन्य है। ये धार्मिक पर्व अपने अद्वितीय माहात्म्य के कारण प्रत्येक तीन–तीन वर्षों के अन्तर पर हरिद्वार, उज्जैन, प्रयाग, नासिक में अपार जनसमूह को आकृष्ट करने के लिए भारत में ही नहीं, समस्त विश्व में विख्यात हैं । यदि हम इन्हें विश्व के सबसे बड़े 'जनसंगम' कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। अन्य सभी हिन्दु पर्वोत्सवों की भांति ये कुम्भपर्व भी ग्रहों की राशि–नक्षत्रों में विशेष स्थितियों से सम्बद्ध हैं। इन कुम्भपर्वों की तिथियों का निर्धारण सूर्य, गुरु और चन्द्र की विभिन्न स्थितियों पर निर्भर करता है।

कुम्भपर्व क्यों मनाए जाते हैं ?

समुद्रमन्थन से प्राप्त अमृतकलश को इन्द्र का पुत्र जयन्त राक्षसों से दूर देवताओं की अनुमति से लेकर भागा तो राक्षसों और देवताओं के मध्य अमृतप्राप्ति के लिए बारह दिव्य दिन (बारह सौर वर्ष) तक घमासान युद्ध हुआ। इस युद्ध के दौरान अमृतकलश को राक्षसों से बचाने के लिए कभी प्रयाग, कभी उज्जैन, कभी हरिद्वार और कभी गोदावरी तट पर नासिक (त्र्यम्बक)में छुपाया गया। इसलिए इन चारों स्थलों पर बारह सौर वर्षों में एक एक बार कुम्भपर्व मनाया जाता है। इस अमृतकलश को देवासुरसंग्रान के दिनों में सूर्य ने फूटने से बचाया और गुरु (बृहस्पति) ने इसकी देखभाल (सुरक्षा) की एवम् चन्द्रमा ने भी राक्षसों को इससे वंचित रखने के लिए पूरा प्रयास किया । यही कारण है कि– इन तीनों की विशेष राशियों में स्थिति के समय इन चार स्थलों पर कुम्भपर्व मनाए जाते हैं। कहीं ऐसा भी लिखा है कि– दैत्य–देवों की छीना–झपटी में अमृतकलश से अमृत की चार बूंदें हरिद्वार आदि इन चार तीर्थस्थलों में गिर गई थीं, इसलिए इन स्थलों पर कुम्भपर्व मनाए जाते हैं।

प्रयाग (इलाहाबाद) का कुम्भपर्व, जो विशाल जनसमूह को आकृष्ट करने में विश्व के किसी भी धार्मिक या अन्य मेले से कहीं आगे है, वृषस्थ गुरु और मकरस्थ सूर्य के काल में माघी में अमा के दिन मनाया जाता है–

"मकरस्थे दिवानाथे वृषराशिगते गुरौ।
प्रयागे कुम्भयोगो वै माघमासे विधुक्षये।।"

सं. 2069 वि. में माघी अमा रविवार, (10 फरवरी, सन् 2013 ई.) को सूर्य मकर में और गुरु वृष में होगा। अतः इस दिन प्रयागराज में कुम्भपर्व का योग है। उत्तर प्रदेश तथा केन्द्रीय सरकार ने इस कुम्भ मेले के लिए करोड़ों रुपये व्यय करके धार्मिक श्रद्धालुओं के आवास, स्नान, स्वास्थ्य, सुरक्षा, सुविधा आदि की विस्तृत व्यवस्था की है। मेले के आयोजक अधिकारियों का अनुमान है कि– इसवर्ष प्रयागराज–कुम्भमहापर्व पर एक करोड़ से भी अधिक व्यक्ति सम्मिलित होंगे। आध्यात्मिक और आधिभौतिक दुःखों से मुक्ति के इच्छुक लोग इस मेले में लाखों वीतराग, आत्मज्ञ महात्माओं के दर्शन और उपदेशों द्वारा अपने आपको कृतकृत्य कर सकेंगे। यह कुम्भ मेला लगभग एकमास (पूरा माघ मास) चलता है, क्योंकि तीर्थस्थान पर विशेषतः 'त्रिवेणी संगम' पर 'माघस्नान माहात्म्य' की शास्त्रों में भारी चर्चा है। यहां हम श्रद्धालु पाठकों के लिए इस कुम्भपर्व के उद्गम, माहात्म्य, स्नानदिन तथा कुम्भपर्व के अवसर पर किए जाने योग्य दानादि धर्मकृत्यों पर विस्तृत प्रकाश डालेंगे।

प्रयाग–कुम्भपर्व (10 फर., 2013 ई.) की स्नानतिथियां

पौष शुक्ल एकादशी से माघ शुक्ल एकादशी, पौषी पूर्णिमा से माघी पूर्णिमा (पूरा चान्द्र माघ मास) अथवा मकरसंक्रान्ति से कुम्भसंक्रान्ति(पूरा सौर माघ मास) प्रतिदिन प्रातः किसी भी नदी, तालाब, तीर्थ पर नियम से स्नान किया जाए तो उसका शास्त्रों में बहुत माहात्म्य लिखा है–

"माघमासे च यः स्नायान्नैरन्तर्येण भारत।
पौण्डरीक–फलं तस्य दिवसे दिवसे भवेत्।।"

गंगा, यमुना एवं सरस्वती जैसी पावन नदियों के संगम (त्रिवेणी) में तो माघस्नान का माहात्म्य ही अलौकिक है। इस मासावधि चलने वाले माघस्नान की कुछ तिथियां तो विशेष योगों के संबंध से बहुत ही पवित्र मानी गई हैं। कुम्भ

प्रयाग (इलाहाबाद) का कुम्भपर्व, जो विशाल जनसमूह को आकृष्ट

कुछ तिथियां तो विशेष योगों के संबंध से बहुत ही पवित्र मानी गई हैं। कुम्भ

मेले में एक मास तक प्रयागवास करने वाले श्रद्धालुओं को इन तिथियों में त्रिवेणीसंगम पर स्नान करने से विशेष पुण्यलाभ होगा। यहां हम उन सभी तिथियों का विवरण दे रहे हैं, जो विशेष योग या योगों के कारण इस प्रयाग कुम्भ पर त्रिवेणीसंगम में स्नान के लिए विशेष माहात्म्य रखती हैं। इस कुम्भपर्व की ये स्नानतिथियां इस प्रकार हैं–

(i) पौष शुक्ल द्वितीया, रविवार (13 जनवरी, 2013 ई.) को मकरसंक्रान्ति होगी। इसदिन त्रिवेणी में स्नान करना परम पुण्यदायक है। सौरमास की दृष्टि से यह माघस्नान की पहली तिथि है।

(ii) पौष शुक्ल तृतीया, चन्द्रवार (14 जनवरी, 2013 ई.) को सारादिन प्रातः से सूयास्त तक मकरसंक्रान्ति का पुण्यकाल होगा। इसदिन प्रातः त्रिवेणी में स्नान का माहात्म्य 13 जनवरी, सन् 2013 ई. वाले स्नान से कहीं अधिक है। इसदिन पहला शाही स्नान होगा।

(iii) पौष शुक्ल एकादशी, मंगलवार (22 जनवरी, 2013 ई.) को एकादशी में स्नान, दान पुण्यप्रद होगा। एक परम्परा के अनुसार माघस्नान का आरम्भ इसी तिथि से किया जाता है।

(iv) पौषी पूर्णिमा, रविवार (27 जनवरी, 2013 ई.) के दिन भी त्रिवेणी में स्नान से पुण्यलाभ होगा। पूर्णिमा तिथि स्नान–दानादि के लिए विशेष पुण्यप्रदा मानी गई है; क्योंकि चान्द्रगणनानुसार माघ मास के स्नान का आरम्भ इसी दिन होता है। शास्त्र कहते हैं कि– अपनी परम्परा के अनुसार पौष शुक्ल एकादशी या पूर्णिमा को माघस्नान आरम्भ करना चाहिए।

(v) माघ कृष्ण चतुर्दशी, शनिवार (9 फरवरी, 2013 ई.) को 15 घं. 19 मि. से सूर्यास्त तक महोदययोग बन रहा है, जो प्रयाग जेसे तीर्थस्थल पर दुर्लभ है। इस योग में स्नानदान, जप आदि का विशेष माहात्म्य धर्मशास्त्रों में लिखा है।

(vi) **कुम्भपर्व की प्रमुख स्नानतिथि** – माघी अमावस, रविवार (10 फरवरी, 2013 ई.) के दिन गुरु वृष में और सूर्य मकर में होगा। इसलिए इसदिन प्रयागराज में कुम्भपर्व का योग बन रहा है। यह इस कुम्भमहापर्व की प्रमुख (शाही) स्नानतिथि है, जिसदिन द्वितीय (प्रमुख) शाही स्नान होगा। इस दुर्लभ महापर्व में त्रिवेणीसंगम पर स्नान करने से परम पुण्यलाभ होगा। इसी दिन पुण्यदर्शन मठाधीशों, शंकराचार्यों एवं संत–महात्माओं का भी प्रमुख स्नान होगा। शास्त्रों का कहना है कि– इस कुम्भयोग में त्रिवेणीसंगम पर स्नान–दान से जन्म–मरण के चक्र से मुक्ति मिलती है और विगत कल्पपर्यन्त (4,32,00,00,000 वर्षों) में किए गए सभी पाप नष्ट हो जाते हैं–

" काश्याः शतगुणं प्रोक्तं गंगा–यामुनसंगमे।
सहस्रगुणिता सापि भवेत्पश्चिमवाहिनी।।
पश्चिमाभिमुखी गंगा कालिन्द्या सह संगता।
हन्ति कल्पकृतं पापं सा माघे नृप दुर्लभा।।"

इस परमपावन महापर्व पर त्रिवेणी में स्नान करके महापुण्य अर्जित किया जा सकता है। यदि भीड़ के कारण इस योग की कालावधि में त्रिवेणी में स्नानावसर न मिल सके तो अन्यत्र गंगा–यमुना आदि में भी स्नान–दानादि से इस योग के माहात्म्य का लाभ उठाया जा सकता है।

(vii) माघ शुक्ल द्वितीया, मंगलवार (12 फरवरी, 2013 ई.) को सूर्य कुम्भराशि में प्रवेश करेगा। इसदिन संक्रान्तिपुण्यकाल मध्याह्न बाद सूर्यास्त तक रहेगा। अतः इस दिन त्रिवेणीसंगम में स्नान–दानादि करना परम पुण्यप्रद माना गया है।

(viii) माघ शुक्ल चतुर्थी, गुरुवार (14 फरवरी, 2013 ई.) को वसन्तपंचमी–दिन। इस दिन तीसरा (अन्तिम) शाही स्नान होगा।

(ix) माघ शुक्ल सप्तमी रविवार, (17 फरवरी, 2013 ई.) को त्रिवेणीसंगम में स्नान करके दानादि पूर्वक पुण्यलाभ करें; यह तिथि रथसप्तमी/आरोग्य सप्तमी" के कारण पुण्यदायक मानी गई है। इस दिन सूर्योदय से पहले अरुणोदयवेला में स्नान–दान से करोड़ों सूर्यग्रहणों के समय किए गए स्नानादि से उत्पन्न पुण्य के समान पुण्य की प्राप्ति होती है, ऐसा शास्त्र कहते हैं–

"अरुणोदयवेलायां शुक्ला माघस्य सप्तमी।
प्रयागे यदि लभ्येत कोटिसूर्यग्रहैः समा।।"

धर्मशास्त्र के इस वचन के अनुसार 17 फरवरी को सूर्योदय से पूर्व अरुणोदयवेला में रथसप्तमी के समय त्रिवेणी में अवगाहन करके महापुण्य–संचय किया जा सकता है।

(x) माघ शुक्ल अष्टमी, चन्द्रवार (18 फरवरी, 2013 ई.) को भीष्माष्टमी। इस दिन सायन मीनार्क–संक्रान्ति के कारण इस स्नान का माहात्म्य और अधिक माना गया है।

(xi) माघ शुक्ल एकादशी, गुरुवार (21 फरवरी, 2013 ई.) को एकादशी की पुण्यतिथि में भी त्रिवेणी में स्नान–दान पुण्यप्रद माना गया है। कुछ लोग परम्परानुसार इसी तिथि में माघस्नान समाप्त मानते हैं।

(xii) माघ शुक्ल द्वादशी, शुक्रवार (22 फरवरी, 2013 ई.) को भीष्मद्वादशी।

(xiii) माघी पूर्णिमा, चन्द्रवार (25 फरवरी, 2013 ई.) को तीर्थस्थल पर माघी पूर्णिमा के दिन स्नान–दान का शास्त्रों में विशेष माहात्म्य वर्णित है। इसका विशेष लाभ उठाना चाहिए। एक परम्परा चान्द्रमास के अनुसार माघी पूर्णिमा को माघस्नान की अंतिम तिथि मानती है।

(xiv) फाल्गुन कृष्ण एकादशी, शुक्रवार (8 मार्च, 2013 ई.) को त्रिस्पृशा महाद्वादशी।

(xv) फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी, रविवार (10 मार्च, 2013 ई.) को श्रीमहाशिवरात्रि–व्रततिथि है। इसदिन तीर्थस्थल प्रयागराज पर स्नान–दान करना परमपुण्यप्रद माना गया है।

(xvi) फाल्गुन अमा, चन्द्रवार (11 मार्च, 2013 ई.) को सोमवती अमा है। इस पवित्र तिथि में इस कुम्भमहापर्व प्रयागराज का अन्तिम स्नान होगा। इसदिन त्रिवेणी पर अन्तिम स्नानवेला में स्नान–दान–जप आदि द्वारा विशेष पुण्यलाभ प्राप्त करने से श्रद्धालु जनता को चूकना नहीं चाहिए। इस स्नान के साथ ही प्रयागराज का कुम्भमेला भी आगामी बारह वर्षों के लिए श्रद्धालु यात्रियों के साथ ही प्रयाग से विदाई ले लेगा।

ऊपर हमने छोटी–बड़ी सभी स्नानतिथियों की चर्चा की है। इन स्नानतिथियों के अतिरिक्त माघ कृष्ण तृतीया, बुधवार (30 जनवरी, 2013 ई.) को संकष्टचतुर्थी एवं सभी एकादशी–व्रतों के दिनों को भी त्रिवेणी में स्नान करना पुण्यदायक होगा। संभव हो तो उपरोक्त सभी स्नानतिथियों के दिन त्रिवेणीसंगम–स्थल पर स्नान करने का प्रयत्न करना चाहिए। जो लोग इस कुम्भपर्व पर एक मास तक प्रयाग में वास करेंगे, वे पूरा माघमास प्रतिदिन त्रिवेणी में स्नान करेंगे ही।

जो प्रयागराज न जा सकें, वे पुण्यलाभ कैसे करें ?

जो श्रद्धालु लोग प्रयाग न जा सकें तो वे केवल माघमास में अथवा केवल कुम्भपर्व के दिन किसी भी समीपस्थ महानदी के संगम पर; वहां भी न जा सके तो किसी महानदी में; वहां भी न पहुंच सके तो किसी छोटी नदी में; वहां भी संभव न हो तो किसी समीपस्थ तालाब, बावड़ी में स्नान करे। यदि शारीरिक दुर्बलता के कारण बावड़ी आदि तक जाना भी संभाव न हो तो घर पर ठण्डे पानी से, यदि रुग्णादि अवस्था में शीतल जल से भी स्नान करना कठिन हो तो गर्म जल से भी स्नान करके माघस्नान का फल प्राप्त किया जा सकता है। ऐसे दयालु शास्त्रकारों द्वारा सर्वविध असमर्थ श्रद्धालुओं को भी माघस्नान का यथासंभव फल प्राप्त कराने के लिए उदार विकल्प दिए हैं। उल्लिखित असमर्थता की स्थिति में माघस्नान मन्त्र का उच्चारण करते हुए प्रयागराज (त्रिवेणीसंगम) का ध्यान करके जहां–कहीं भी स्नान करना चाहिए। समुद्रतटवर्ती लोगों को इस माघमास में समुद्रस्नान करना चाहिए; क्योंकि शास्त्रों में माघ में समुद्रस्नान को अतिप्रशस्त लिखा है–

"यत्र कुत्रापि यो माघे प्रयाग–स्मरणान्वितः।
करोति मज्जनं तीर्थे स लभेत परम पदम्।।"

स्नान का काल

स्नान का सर्वोत्तम काल अरुणोदयकाल है, (सूर्योदय से पहले पूर्वीक्षितिज में जो प्रकाश नज़र आता है, उसे अरुणोदयकाल कहते हैं।) अरुणोदयकाल में भी स्नान के लिए वह समय सर्वोत्कृष्ट है जब तारे दिखाई पड़ रहे हों, इसके बाद सूर्योदय तक का काल, जब तारे छुप चुके हों, अपेक्षाकृत कुछ कम महत्त्व का है। सूर्योदय के बाद प्रातःकाल स्नान के लिए सामान्य माना गया है–

"उत्तमं तु सनक्षत्रं लुप्ततारं तु मध्यमम्।
सवितर्युदिते भूप ततो हीनं प्रकीर्तितम्।।"

नारदपुराण में तो सूर्योदयानन्तर स्नान का भी माहात्म्य लिखा है–

"सम्प्राप्ते माघमासे तु तपस्विजनवल्लभे।
क्रोशन्ति सर्ववारीणि समुद्गच्छति भास्करे।।
पुनीमस्तस्य पापानि त्रिविधानि न संशयः।"

कुम्भपर्व के प्रमुखस्नान के दिन (10 फरवरी, 2013 ई.) को तो अरुणोदयकाल से लेकर सारा दिन सूर्यास्त तक त्रिवेणी में कभी भी स्नान किया जा सकता है; क्योंकि कुम्भयोग के कारण वह पूरादिन पवित्र माना जाता है। स्नान करते समय पद्मपुराण के इस मंत्र का जाप भी करना चाहिए–

"दुःखदारिद्र्यनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च।
प्रातःस्नानं करोम्यद्य माघे पापविनाशनम्।।
मकरस्थे रवौ माघे गोविन्दाच्युत माधव।
स्नानेनानेन मे देव यथोक्तफलदो भव।।"

इस मन्त्र को मन ही मन जपते हुए श्रीविष्णु का ध्यान करते हुए स्नान करें। स्नान के समय बातचीत न करें।

दान– त्रिवेणी में माघस्नान करके प्रतिदिन निर्धनों को तिल और शक्कर (चीनी) दान करें। इसमें तीन भाग तिल और चौथा भाग शक्कर होनी चाहिए। इस विषय में **नारदपुराण** का वाक्य है–

"अहन्यहनि दातव्यास्तिलाः शर्करयान्विताः।
त्रिभागस्तु तिलानां हि चतुर्थः शर्करयान्वितः।।"

इस समय तिल–शक्कर के लड्डू या तिल से बने खाद्य पदार्थ भी दान करें। इस पुण्यप्रद अवसर पर दान की भारी महिमा है। तिल, शक्कर के अलावा निर्धनों एवं संत–महात्माओं को श्रद्धापूर्वक तिलनिर्मित मिठाई; गर्म, रेशमी आदि वस्त्र; अन्न, सुवर्ण आदि का भी यथाशक्ति दान करें। यह दान कुम्भपर्व योग के दिन (10 फरवरी, 2013 ई. को) तो विशेषरूप से करना चाहिए। कुम्भयोग में कलशदान का भी माहात्म्य है।

कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य– माघस्नान के दिनों में इन्द्रियों को संयत रखकर नियमपूर्वक रहना चाहिए। काम, क्रोध और लोभ से दूर रहें। किसी भी प्रकार के पाप की ओर प्रवृत्ति से बचें। माघ–स्नानावधि में मूली, गाजर, शलगम आदि के प्रयोग का शास्त्रकारों ने निषेध लिखा है–

"माघे यत्नेन सन्त्याज्यं मूलकं मदिरोपमम्।
पितृणां देवतानां च मूलकं नैव दापयेत्।।"

माघस्नान के दिनों में एक मास तक शीत से बचने के लिए अग्नि का सेवन न करें। अग्नि का सेवन केवल होम (यज्ञ) के लिए ही किया जाना चाहिए– ऐसा शास्त्रादेश है–

" न वह्निं सेवयेत् स्नातो ह्यस्नातोऽपि वरानने।
होमार्थं सेवयेद् वह्निं शीतार्थं न कदाचन।।"

इस प्रकार शास्त्रोक्त विधि–निषेधों का अनुसरण करते हुए स्नान–दानादि द्वारा सर्वथा शुद्ध, निष्पाप एवं पुण्य अन्तरात्मा लिए हुए श्रद्धालुओं को प्रयागराज से लौटकर भविष्य में किसी प्रकार का मानसिक, वाचिक एवं शारीरिक पाप करने से सर्वथा विमुख रहने का पूरा प्रयत्न करना चाहिए, ताकि कुम्भ जैसे महापर्व पर स्नान, जप, दान आदि से अर्जित महान् पुण्यसंचय बिखर न जाए–

यत्नेन सञ्चितौ रक्षन् धर्मार्थौ नावसीदति।

कुम्भपर्व पर त्रिवेणीसंगम में स्नान एवम् पूजनविधि

(प्रियव्रत शर्मा द्वारा रचित– व्रतपर्वविवेक से उद्धृत)

प्रमुखस्नान (10 फरवरी, 2013 ई.) के दिन प्रातः अरुणोदयकाल में दैनिक स्नान–सन्ध्यादि से निवृत्त होकर स्नानकर्ता यह संकल्प करे–

त्रिवेणीस्नानसंकल्प :– ओम् विष्णुः विष्णुः विष्णुः, अद्य ब्रह्मणो वयसो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराह–कल्पे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे विश्वावसुनाम–संवत्सरे मकरस्थे सूर्ये वृषस्थे गुरौ माघमासे अमायां तिथौ रविवासरे अमुकगोत्रः अमुकनामाऽहम् अद्यावधि बोधाबोधपूर्वं कृतानां पापानां मार्जनाय जन्म–मरणावर्त्तान्मुक्तये च भगवत्याः त्रिवेण्याः गंगा– यमुना– सरस्वती –त्र्य्याः शिव–धर्मराज–ब्रह्मणां च षोडशोपचारपूजां विधाय प्रयागतीर्थेऽस्मिन् त्रिवेणीपावनसंगमे स्नानमाचरिष्यामि।

उपरोक्त संकल्पानुसार गंगा–यमुना–सरस्वती का एकत्र एवं शिव–धर्मराज–ब्रह्मा का एकत्र (अथवा सभी का पृथक्–पृथक्) षोडशोपचारपूजन करके त्रिवेणी में पुष्पांजलिपूर्वक स्नान करते हुए यह मन्त्र पढ़ें–

"ओम् त्रिवेणि पापजातं मे हर मुक्तिप्रदा भव।"

स्नानानन्तर त्रिवेणी तट पर बैठ श्रीगंगा, यमुना और सरस्वती के स्तोत्र आदि का पाठ करे।

आगे दिए जा रहे श्रीगंगाष्टक, यमुनाष्टक और सरस्वतीस्तोत्र के अतिरिक्त श्रीशिव, धर्मराज एवं ब्रह्मा के स्तोत्रादि का पाठ करना भी इस दिन अभीष्ट फलप्रद माना जाता है।

श्रीगङ्गाष्टकम्

(महर्षि वाल्मीकिकृत)

मातः शैलसुतासपत्नि वसुधाशृङ्गारहारावलि
स्वर्गारोहणवैजयन्ति भवतीं भागीरथि प्रार्थये।
त्वत्तीरे वसतस्त्वदम्बु पिबतस्त्वद्वीचिषु प्रेङ्खत–
स्त्वन्नाम स्मरतस्त्वदर्पितदृशः स्यान्मे शरीरव्ययः ।।१।।

त्वत्तीरे तरुकोटरान्तरगतो गङ्गे विहङ्गो वरं
त्वन्नीरे नरकान्तकारिणि वरं मत्स्योऽथवा कच्छपः।
नैवान्यत्र मदान्धसिन्धुरघटा–सङ्घट्टघण्टारण–
त्कारत्रस्त–समस्तवैरिवनितालब्धस्तुतिर्भूपतिः ।।२।।

उक्षा पक्षी तुरग उरगः कोऽपि वा वारणो वा
वारीणः स्यां जननमरणक्लेशदुःखासहिष्णुः ।
न त्वन्यत्र प्रविरलरणत्कङ्कणक्वाणमिश्रं
वारस्त्रीभिश्चमरमरुता वीजितो भूमिपालः ॥ ३॥

काकैर्निष्कुषितं श्वभिः कवलितं गोमायुभिर्लुण्ठितं
स्रोतोभिश्चलितं तटाम्बुलुलितं वीचीभिरान्दोलितम् ।
दिव्यस्त्रीकरचारु–चामर–मरुत्संवीज्यमानः कदा
द्रक्ष्येऽहं परमेश्वरि त्रिपथगे भागीरथि स्वं वपुः ॥ ४॥

अभिनवबिसवल्ली पादपद्मस्य विष्णो–
र्मदनमथनमौलेः मालतीपुष्पमाला ।
जयति जयपताका काप्यसौ मोक्षलक्ष्म्याः
क्षपितकलिकलङ्का जाह्नवी नः पुनातु ॥ ५॥

एतत्ताल–तमाल–सालसरल–व्यालोलवल्लीलता–
च्छन्नं सूर्यकरप्रतापरहितं शङ्खेन्दु–कुन्दोज्ज्वलम्।
गन्धर्वामर–सिद्ध–किन्नरवधूतुङ्ग– स्तनास्फालितं
स्नानाय प्रतिवासरं भवतु मे गाङ्गं जलं निर्मलम् ॥ ६॥

गाङ्गं वारि मनोहारि मुरारिचरणच्युतम् ।
त्रिपुरारिशिरश्चारि पापहारि पुनातु माम् ॥ ७॥

पापापहारि दुरितारि तरङ्गधारि
शैलप्रचारि गिरिराजगुहाविदारि।
झङ्कारकारि हरिपादरजोऽपहारि
गाङ्गं पुनातु सततं शुभकारि वारि ॥ ८॥

गङ्गाष्टकं पठति यः प्रयतः प्रभाते
वाल्मीकिना विरचितं शुभदं मनुष्यः ।
प्रक्षाल्य गात्र– कलिकल्मष– पङ्कमाशु
मोक्षं लभेत्पतति नैव नरो भवाब्धौ ॥ ९॥

श्रीयमुनाष्टकम्

(श्रीशंकराचार्यविरचित)

मुरारिकाय–कालिमाललामवारिधारिणी
तृणीकृत–त्रिविष्टपा त्रिलोक–शोकहारिणी।
मनोऽनुकूल–कूल–कुञ्ज–पुञ्जधूत–दुर्मदा
धुनोतु मे मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा॥१॥

मलापहारि–वारिपूर– भूरिमण्डितामृता
भृशं प्रपातक–प्रवञ्चनातिपण्डितानिशम्।
सुनन्द–नन्दनाङ्गसंग–रागरञ्जिता हिता
धुनोतु मे मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा॥२॥

लसत्तरङ्गसङ्गधूत–भूतजातपातका
नवीन–माधुरीधुरीण–भक्तिजात–चातका।
तटान्तवास–दासहंससंसृता हि कामदा
धुनोतु मे मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा॥३॥

विहाररास–खेद–भेदधीरतीरमारुता
गता गिरामगोचरे यदीय नीरचारुता।
प्रवाहसाहचर्यपूत–मेदिनीनदीनदा
धुनोतु मे मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा॥४॥

तरङ्गसङ्गसैकताञ्चितान्तरा सदासिता
शरन्निशाकरांशु–मञ्जु–मञ्जरी–सभाजिता।
भवार्चनाय चारुणाम्बुनाधुना विशारदा
धुनोतु मे मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा॥५॥

जलान्त–केलिकारि–चारुराधिकाङ्ग –रागिणी
स्वभर्तुरन्य–दुर्लभाङ्गसङ्गतांशभागिनी।
स्वदत्तसुप्त–सप्तसिन्धु–भेदनातिकोविदा
धुनोतु मे मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा॥६॥

मोक्षं लभेत्पतति नैव नरो भवाब्धौ ॥९॥

धुनोतु मे मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा॥६॥

जलच्युताच्युताङ्ग – रागलम्पटालिशालिनी
विलोल–राधिकाकचान्त–चम्पकालिमालिनी।
सदावगाहनावतीर्ण– भर्तृभृत्यनारदा
धुनोतु मे मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा॥७॥

सदैव–नन्द–नन्दकेलि–शालि–कुञ्ज–मञ्जुला
तटोत्थ–फुल्ल–मल्लिका–कदम्ब–रेणुसूज्ज्वला।
जलावगाहिनां नृणां भवाब्धि– सिन्धुपारदा।
धुनोतु मे मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा॥८॥

श्रीसरस्वतीस्तोत्रम्

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥१॥

आशासु राशीभवदङ्गवल्ली–
भासैव दासीकृतदुग्धसिन्धुम्।
मन्दस्मितैर्निन्दितशारदेन्दुं
वन्देऽरविन्दासनसुन्दरि त्वाम्॥२॥

वीणाधरे विपुलमङ्गलदानशीले
भक्तार्तिनाशिनि विरञ्चिहरीशवन्द्ये।
कीर्तिप्रदेऽखिलमनोरथदे महार्हे
मोक्षप्रदायिनि सरस्वति नौमि नित्यम्॥३॥

श्वेताब्जपूर्णविमलासन–संस्थिते हे
श्वेताम्बरावृतमनोहरमञ्जुगात्रे ।
उद्यन्मनोज्ञसितपङ्कज–मञ्जुलास्ये
मोक्षप्रदायिनि सरस्वति नौमि नित्यम् ॥४॥

मातस्त्वदीय–पदपङ्कज–भक्तियुक्ता
ये त्वां भजन्ति निखिलानपरान्विहाय।
ते निर्जरत्वमिह यान्ति कलेवरेण
भूवह्निवायुगगनाम्बु–विनिर्मितेन ॥५॥

मोहान्धकारभरिते हृदये मदीये
मातः सदैव कुरु वासमुदारभावे।
स्वीयाखिलावयव–निर्मलसुप्रभाभिः
शीघ्रं विनाशय मनोगतमन्धकारम् ॥६॥

ब्रह्मा जगत् सृजति पालयतीन्दिरेशः
शम्भुर्विनाशयति देवि तव प्रभावैः।
न स्यात्कृपा यदि तव प्रकटप्रभावे
न स्युः कथञ्चिदपि ते निजकार्यदक्षाः ॥७॥

लक्ष्मीर्मेधा धरा पुष्टिर्गौरी तुष्टिः प्रभा धृतिः।
एताभिः पाहि तनुभिरष्टाभिर्मां सरस्वति ॥८॥

सरस्वत्यै नमो नित्यं भद्रकाल्यै नमो नमः।
वेद– वेदान्त– वेदाङ्ग– विद्यास्थानेभ्य एव च ॥९॥

शुक्ले, तेऽनाविलं नीरं पावनमात्म–देहयोः।
अलभ्यं कल्पनाऽऽचान्तमपि देयात् परं पदम्॥
पातालरन्ध्रगायास्ते युगं क्रान्तं शुभेऽधुना।
क्षालय पावनैः क्षीरैः दुर्वृत्तैः दूषितां क्षितिम्॥

– प्रियव्रत शर्मा

ग्रहण-विवरण (सं. 2069 वि.)

—प्रियव्रत शर्मा,

वि. सं. 2069 में ये तीन ग्रहण भूगोल पर दृश्य होंगे—

(i) कंकण सूर्यग्रहण (21 मई, 2012 ई.)
(ii) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (4 जून, 2012 ई.)
(iii) खग्रास सूर्यग्रहण (14 नवम्बर, 2012 ई.)

इनके अतिरिक्त एक चन्द्र का मान्द्यग्रहण, जिसे वास्तव में ग्रहण नहीं माना जाता, भी 28 नवम्बर, 2012 ई. को होगा।

इन ग्रहणों में से केवल 20/21 मई, 2012 ई. वाला कंकण सूर्यग्रहण ही भारत के पूर्वोत्तरी छोर के कुछ नगरों में खण्डग्रास के रूप में अत्यल्पकाल के लिए ग्रस्तोदय दीखेगा। 28 नवम्बर, 2012 ई. वाला चन्द्रमान्द्यग्रहण तो भारत के दक्षिण–पश्चिमी भाग में दिखाई पड़ेगा। शेष दोनों ग्रहण भारत में अदृश्य हैं।

भारत में अदृश्य (दिखाई न देने वाले) ग्रहणों का संक्षिप्त विवरण

(i) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (4 जून, 2012 ई.) –

यह ग्रहण ज्येष्ठ पूर्णिमा, चन्द्रवार (4 जून, 2012 ई.) को भा.स्टैं.टा. अनुसार 15 घं. 29 मि. से प्रारम्भ होकर 17 घं. 37 मि. पर समाप्त हो जाएगा। इस अवधि में चन्द्रमा भारत में क्षितिज से नीचे रहेगा, जिसके कारण यह ग्रहण यहां (भारत में) दिखाई नहीं पड़ेगा। इस दिन चन्द्रमा 18 घं. 50 मि. (भा. स्टैं. टा.) तक पृथ्वी की उपच्छाया में रहेगा, अतः भारत के उन सभी स्थलों पर जहां चन्द्रोदय 18 घं. 50 मि. से पहले होगा, वहां सर्वत्र चन्द्रबिम्ब 18 घं. 50 मि. तक कुछ धुंधला दीख पड़ेगा।

यह ग्रहण उत्तरी एवं दक्षिणी अमेरिका, कोरिया, ताइवान , कनाडा, जापान, इण्डोनेशिया, सिंगापुर, थाइलैण्ड, हांगकांग एवं पेसिफिक समुद्र में दिखाई देगा।

(ii) खग्रास सूर्यग्रहण (14 नवम्बर, 2012 ई.) –

यह ग्रहण कार्तिक अमा, मंगलवार को 14 नवम्बर, 2012 ई. के दिन भा.स्टैं.टा. अनुसार 1 घं. 08 मि. के समय भौगोलिक अक्षांश द. 4°–5′, रेखांश पू. 149°–8′पर प्रारम्भ होकर अक्षांश द. 22°–2′, रेखांश प. 97°–8′ पर 6 घं. 15 मि. (भा. स्टैं. टा.) के समय समाप्त हो जाएगा। यह ग्रहण ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैण्ड, द. अमेरिका, द. ध्रुवस्थान, पेसिफिक सागर (प्रशान्त महासागर) में दिखाई पड़ेगा। इस की खग्रास आकृति उत्तरी ऑस्ट्रेलिया तथा पेसिफिक सागर में दिखाई देगी।

भारत में दृश्य एकमात्र ग्रहण का विस्तृत विवरण

कंकण सूर्यग्रहण – (21 मई, 2012 ई. चन्द्रवार *) –

[* यह ग्रहण 21 मई को क्यों ? इसकी जानकारी के लिए आगे 23 पृष्ठ पर दिया लेख " ज्येष्ठी अमा वाला यह सूर्यग्रहण रविवार को या चन्द्रवार को ?" पढ़िए।]

यह ग्रहण ज्येष्ठ अमा, चन्द्रवार को भूगोल के अक्षांश उ. 11°–0′, रेखांश पू. 130°–6′ स्थल पर 21 मई, 2012 ई. को 2 घं. 26 मि.(भा.स्टैं.टा.)पर प्रारम्भ होकर अक्षांश उ. 22°–9′, प. रेखांश 124°–4′ पर 21 मई को ही भा.स्टैं.टा. 8 घं. 19 मि. पर समाप्त हो जाएगा। भारत में यह खण्डग्रास के रूप में मणिपुर, मेघालय, मिज़ोरम, त्रिपुरा, आसाम, प. बंगाल में 21 मई को प्रातः कुछ ही मिन्टों के लिए ग्रस्तोदय दिखाई देगा। यह ग्रहण भारत में खण्डग्रास के रूप में ही दीखेगा। पृ. 22 पर मानचित्र देखिए–इससे स्पष्ट हो जाता है यह ग्रहण भारत के किस भाग में दिखाई पड़ेगा, किस भाग में नहीं। पृष्ठ 22 पर दिया गया भूगोलचित्र बतलाता है–यह ग्रहण भूगोल के किन–किन देश–प्रदेशों में दिखाई देगा और कहां इसकी कंकण आकृति दीखेगी। यहां भूगोल के विभिन्न स्थलों पर ग्रहण का स्पर्शकाल (भा. स्टैं. टा.) भी दिया गया है। नीचे कोष्ठक में पूर्वी भारत के राज्यों के, जहां इस ग्रहण का केवल मोक्ष ही दिखाई देगा, कुछ नगरों में स्पर्श, मध्य, मोक्ष–काल (भा. स्टैं. टा.) दिया गया है–

नगर	21 मई, 2012 ई.			
	स्पर्श घं. मि.	मध्य घं. मि.	मोक्ष (प्रातः) घं. मि.	परमग्रास (प्रतिशत)
अगरतला	2 58	3 51	4 49	78
इम्फाल	2 56	3 50	4 49	78
ऐज़ावल	2 57	3 50	4 48	79
कोहिमा	2 57	3 51	4 49	76
गंगटोक	3 04	3 56	4 52	69
गुवहाटी	3 00	3 53	4 50	74
चेरापूंजी	2 58	3 50	4 48	79
जोरहाट	2 56	3 50	4 49	78
डिब्रूगढ़	2 58	3 52	4 50	73
दार्जिलिंग	3 04	3 56	4 52	70
शिलांग	2 59	3 52	4 50	75
सिलिगुड़ी	3 04	3 56	4 52	71

ऑस्ट्रेलिया तथा पेसिफिक सागर में दिखाई देगी।

[illegible]	2 59	3 52	4 50	75
सिलिगुड़ी	3 04	3 56	4 52	71

ध्यान दें– इन नगरों में ग्रहण के स्पर्श और मध्यकाल के समय सूर्य क्षितिज से नीचे रहेगा, जिससे वहां ग्रहण का स्पर्श और मध्य तथा मध्यकालीन परमग्रास भी नहीं देखा जा सकेगा। वहां केवल मोक्ष ही दिखाई पड़ेगा।

ग्रहण का सूतक–इस ग्रहण का सूतक 20 मई, 2012 ई. को सायं 4 बजे ही प्रारम्भ हो जाएगा। ध्यान रहे– इस ग्रहण का सूतक और स्नान–दान आदि का माहात्म्य भी उन्हीं मणिपुर आदि उत्तर–पूर्वी प्रदेशों में माना जाएगा, जहां यह ग्रहण दृश्य होगा; अन्यत्र नहीं।

ग्रहण का राशिफल– यह ग्रहण कृत्तिका नक्षत्र एवं वृषराशि में घटित हो रहा है; अतः विशेषतः कृत्तिका नक्षत्र एवं वृषराशि वाले व्यक्तियों के लिए यह कंकण सूर्यग्रहण कष्टप्रद रहेगा।

विभिन्न राशि वाले व्यक्तियों के लिए इस ग्रहण का फल नीचे कोष्ठक में दिया जा रहा है –

जन्म/नाम राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	हानि	घात	हानि	लाभ	सुख	अपमान	महाकष्ट	स्त्री/पतिकष्ट	सुख	चिन्ता	कष्ट	धनलाभ

ग्रहण का अन्यफल :– यह ग्रहण पूर्वीभारत के मणिपुर आदि राज्यों में 21 जनवरी को सूर्योदयव्यापिनी अमावस, सोमवार, कृत्तिका नक्षत्र, अतिगण्ड योग एवं वृषस्थ चन्द्र के समय घटित होगा।

अयनफल :– यह ग्रहण उत्तरायण में घटित हो रहा है, अतः आगामी मासों में सवर्ण (ब्राह्मण–क्षत्रिय–वैश्य) लोगों को राजनैतिक परेशानी रहे। गोजाति पर निर्दयतापूर्ण व्यवहार हो। चना, गेहूं, जौ एवं दालवाना मंहगे हों।

पर्वस्वामी–फल :– इस कंकण सूर्यग्रहण का स्वामी अग्नि होने से वर्षा श्रेष्ठ, फसलें अच्छी हों, रोगभय–शान्त्यर्थ शासक सचेष्ट रहें।

मास फल :– यह ग्रहण ज्येष्ठ में घटित होने से वर्षा की कमी रहे, खड़ी फसलों को हानि पहुंचे, लेकिन आगामी वर्ष शुभ रहे–

" ज्येष्ठे वर्षण–धान्य–नाशनकरं स्याद् भाविवर्षे शुभम्।"

ग्रहण का वारफल :– पूर्वीभारत में सूर्योदयव्यापिनी अमा सोमवार (21 मई) को होने से ग्रहणवार सोनवार ही माना जाएगा। अतः सोमवार का ग्रहण अनाजों, दालों में भारी तेज़ी बनाएगा। तेल, तिलहन आदि में भी भारी तेज़ी से लाभ मिलेगा– "चन्द्रवारे रवेर्ग्रहणे घृतान्नस्य महर्घता। लाभस्तैलघृतादिभ्यो सोमे वर्षाभयं भवेत्।।" कहीं अतिवर्षण से हानि भी हो।

ग्रहण का नक्षत्रफल– यह ग्रहण कृत्तिका नक्षत्र में घटित होगा। अतः सोना, चान्दी, मूंगा, मणि, मोती का स्टॉक करने पर नौ महीने में व्यापारी भारी लाभ प्राप्त करें–

" कृत्तिकायां हेमरूप्य–प्रवाल–मणि–मौक्तिकम्।
सञ्चितं नवमे मासे लाभदं निश्चितं मतम्।।"

इस ग्रहणवेला में बुध–गुरु अस्त हैं। गुरु, शुक्र और केतु के साथ सूर्य होने से एवं राहु से सूर्य सप्तम होने से मुस्लिम राष्ट्रों में भारी अराजकता, उपद्रव एवं शासकीय अस्थिरता रहेगी। किसी प्राकृतिक आपदा से भारी जनधनहानि आगामी दो मासों में सम्भव है।

योगफल– पूर्वीभारत में यह कंकण सूर्यग्रहण अतिगण्ड योग में घटित होगा। अतः रोग– चौरभय, अग्नि आदि उपद्रवों से हानि हो।

नोट– पूर्वी भारत के मणिपुर आदि राज्यों में जहां यह ग्रहण दिखाई देगा, वहां अमावस 21 मई चन्द्रवार को सूर्योदय के बाद समाप्त होगी। अतः मणिपुर आदि पूर्वी भारत में यह ग्रहण सूर्योदय के बाद 21 मई, सोमवार को प्रातः दिखाई देगा। स्पष्ट है– उत्तरभारतीय जनता को 20/21 मई को अमावस का निर्देश करने से भ्रान्त नहीं होना चाहिए।

चन्द्रमा का मान्द्यग्रहण (28 नवम्बर, 2012 ई.)– कार्तिक पूर्णिमा (28 नवम्बर, 2012 ई.) को चन्द्रमा का मान्द्यग्रहण होगा। यह ग्रहण इस दिन भा. स्टैं. टा. के अनुसार 17 घं. 42 मि. से 22 घं. 23 मि. तक रहेगा। ध्यान रहे– मान्द्यग्रहण को वास्तवग्रहण नहीं माना जाता। चन्द्रमा जब पृथ्वी की उपच्छाया में प्रविष्ट होता है, तब उपच्छाया ग्रहण (**Penumbral Eclipse**) होता है। उपच्छाया ग्रहण के समय चन्द्रबिम्ब काला नहीं पड़ता, वह यत्किंचित् धुंधला–सा पड़ जाता है। इस तथाकथित ग्रहण का कोई किसी प्रकार का स्नान, दान, जपादि का माहात्म्य नहीं माना जाता।

यह उपच्छाया ग्रहण भारत के पश्चिमी तट पर तथा पाकिस्तान, यूरोप, अरबदेश, अफ्रीका, कनाडा, उ. अमेरिका व मेक्सिको में दिखाई पड़ेगा।

कंकण सूर्यग्रहण (21 मई, 2012 ई.)
(पूर्वी भारत के कुछ ही भाग में दृश्य)

A
लहासा
नेपाल
पोखारा
काठमांडू
भूटान
अरुणाचल
असम
उ. प्रदेश
मोतीहारी
उत्तरी लखीमपुर
जोरहाट
लखनऊ
प. बंगाल
गुआहाटी
कोहिमा
मुजफ्फरपुर
बिहार
मेघालय
इम्फाल
मिर्ज़ापुर
पटना
गया
बंगलादेश
मध्यप्रदेश
राजशाही
अगरतला
मणिपुर
धनबाद
छत्तीसगढ़
ढाका
म्यांमार
गोरखपुर
आसनसोल
जमशेदपुर
खुलना
चिट्टागांग
कोलकाता
राजगढ़
B

शीर्ष
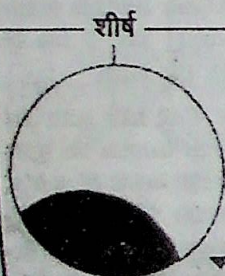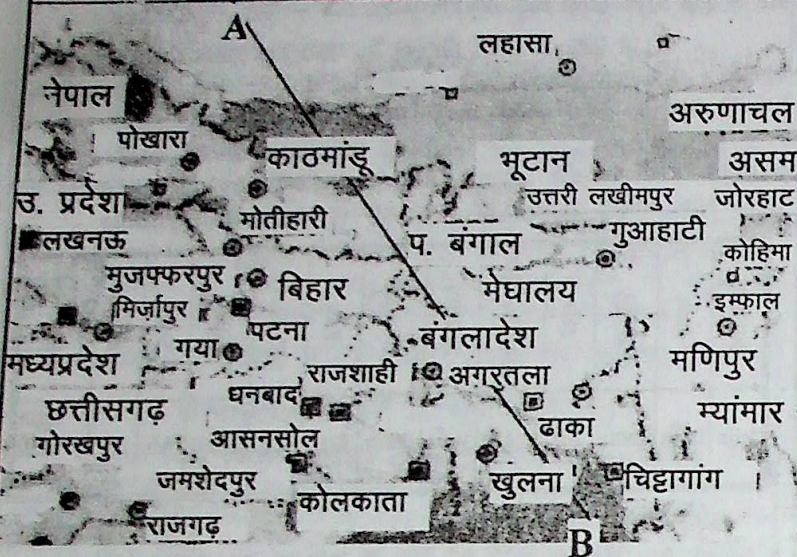
A-B रेखा से बाईं ओर स्थित भारतीय भाग में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा। दाईं ओर स्थित भाग में यह सूर्योदय के समय कुछ ही मिनटों के लिए खण्डग्रास के रूप में दिखाई पड़ेगा।

A-B रेखा पर स्थित नगर–ग्रामों में यह ग्रहण सूर्योदय के समय समाप्त हो जाएगा।

(डिब्रूगढ़ (आसाम) में सूर्योदय के समय ग्रास)

कंकण सूर्यग्रहण (21 मई, 2012 ई.)
(भूमण्डलीय स्थिति)

उत्तर
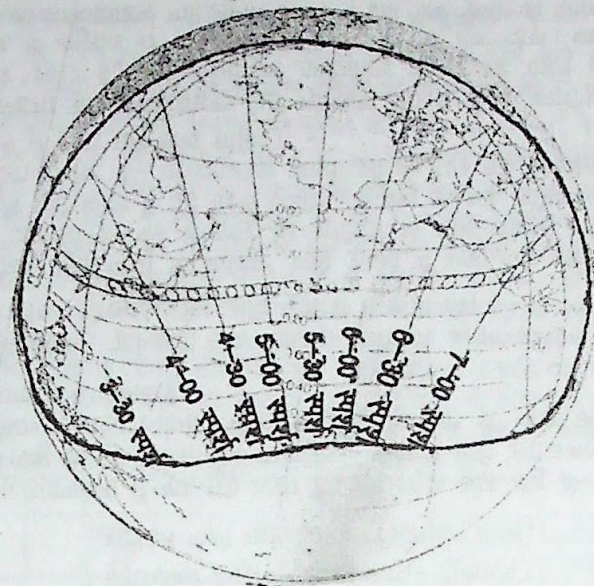
दक्षिण

(i) मोटी काली रेखा से घिरे देश–प्रदेशों में ही यह ग्रहण दिखाई देगा।

(ii) बाएं से दाईं ओर जाने वाली छोटी पट्टी में स्थित स्थलों पर इस ग्रहण की कंकण आकृति दिखाई देगी।

(iii) यहां दिया गया स्पर्श(ग्रहणारम्भ)काल भा. स्टैं. टा. में है।

ज्येष्ठी अमा (सं. 2069 वि.) वाला सूर्यग्रहण रविवार को या चन्द्रवार को ?

सामान्य जन को यह भ्रान्ति हो सकती है कि इसवर्ष (सं. 2069 वि.) में ज्येष्ठी अमा को घटित होने वाला सूर्य ग्रहण हमने 21 मई को चन्द्रवार के दिन क्यों दर्शाया है, जबकि तिथ्यादि पंचांग वाले पृष्ठों (पृष्ठ 112 और पृष्ठ 139) पर ज्येष्ठी अमा की समाप्ति रविवार को दिखाई गई है। उनकी इस भ्रान्ति का निराकरण इस प्रकार है –

भारतीय ज्योतिषानुसार वार का प्रारम्भ स्थानीय सूर्योदय पर हुआ करता है– यह तो पाठक जानते ही हैं। इसवर्ष (सं. 2069 वि. में) ज्येष्ठी अमा 21 मई, 2012 ई. को प्रातः 5 घं. 17 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर समाप्त हो रही है– यह भी स्पष्ट है। अब सामने दिया आलेख (Diagram) देखिए।

इस आलेख में दी गई 'क ख' रेखा से बाईं ओर पंजाब, दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू–काश्मीर, राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात आदि प्रदेशों में 21 मई को सूर्योदय 5 घं. 17 मि. (भा.स्टैं.टा.) के बाद होगा, जिससे ज्येष्ठी अमा की समाप्ति इन प्रदेशों में सूर्योदय से पूर्व भारतीय ज्योतिषानुसारी वार रविवार में होगी; यानी यहां ज्येष्ठी अमा की समाप्ति के समय इन प्रदेशों में रविवार होगा। लेकिन इस रेखा के दाईं ओर स्थित आसाम, बिहार, बंगाल, सिक्किम, मेघालय, अरुणाचल, नागालैण्ड, मिज़ोरम, मणिपुर आदि में इस दिन सूर्योदय 5 घं. 17 मि. से पहले ही हो जाएगा [अर्थात् वहां 5 घं. 17 मि. (भा.स्टैं.टा.) से पहले ही चन्द्रवार प्रारम्भ हो जाएगा।] जिसके परिणामस्वरूप इन प्रदेशों में ज्येष्ठी अमा की समाप्ति 5 घं. 17 मि. के समय चन्द्रवार में होगी। दूसरे शब्दों में यूं समझिए इन प्रदेशों से प्रकाशित होने वाले पंचांगों में ज्येष्ठी अमा की समाप्ति रविवार के दिन " 29 घं. 17 मि. (भा.स्टैं.टा.)" पर नहीं, अपितु चन्द्रवार के दिन "5 घं. 17 मि. (भा.स्टैं.टा.)" पर लिखी होगी। क्योंकि यह सूर्यग्रहण मेघालय, अरुणाचल आदि प्रदेशों में 21 मई को ज्येष्ठी अमासमाप्ति वाले दिन चन्द्रवार में ही दिखाई पड़ेगा, इसीलिए हमने इसे 21 मई, 2012 ई. को चन्द्रवार के ही दिन दर्शाया है।

यह ग्रहण रविवार को होगा या चन्द्र को, इसका निर्णय इस आलेख (Diagram) को देखकर तुरन्त किया जा सकता है।

21 मई को सूर्योदय 'क–ख' रेखा से बाईं ओर 5 घं. 17 मि. (I.S.T.) के बाद और दाईं ओर इससे पहले होगा।

शनि की साढेसाती (बृहत्कल्याणी), ढैय्या (लघुकल्याणी) और गुरु–राहु का गोचरफल (सं. 2069 वि.)

जन्मकुण्डली में शनैश्चर का शुभ ग्रह से सम्बन्ध हो अथवा महादशा का अंतर शुभ चल रहा हो तो ढैय्या और साढेसाती का अशुभफल कम होता है। यदि चन्द्र, शनि जन्म में अशुभ ग्रहों से युक्त हों तो साढेसाती व ढैय्या महान् अशुभ, चिंता, अवनति, धनहानि, झगड़ा, कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी, व्यर्थ कलह एवं रोग, पशु–पीड़ा आदि का कारण बनती है। यदि जन्मकुण्डली में शनि अष्टमेश या मारकेश हो तो भी ढैय्या, साढेसाती विशेष अनिष्ट फलप्रद होती है। यदि जन्म में शनि लग्नेश, पंचमेश, नवमेश होकर 3, 6, 11 में स्थित हो तो सुख–सम्पत्ति मिलती है, व्यापारादि में लाभ होता है। शनि के अष्टकवर्ग में अधिक रेखाएं हों तो शुभ, कम रेखाएं हों तो अशुभ फल निश्चित होता है।

साढेसाती में प्रत्येक राशि के लिए शनि का अशुभ फल इस प्रकार है–

मेष राशि वालों को बीच के अढाई वर्ष खराब हैं। वृष को पहिले अढाई वर्ष, मिथुन को अंत के अढाई वर्ष, कर्क को बीच के अढाई वर्ष, सिंह को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष खराब हैं। कन्या को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। तुला को आखिर के अढाई वर्ष, वृश्चिक को अंतिम 5 वर्ष नेष्ट हैं, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। धनु को प्रारंभ के अढाई वर्ष, मकर को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी पहिले अढाई वर्ष विशेष खराब हैं। कुंभ को आदि एवं अन्त के पांच वर्ष, विशेषतः अन्त के अढाई वर्ष अधिक अशुभ हैं। मीन को पूरे साढेसात वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी अन्त के अढाई वर्ष विशेष अशुभफल देने वाले होते हैं।

संवत् 2068 वि. में 15 नवम्बर, सन् 2011 ई. को आर्द्रा नक्षत्र एवं मिथुनस्थ चन्द्र के समय 10 घं. 11 मि. पर शनिदेव कन्याराशि को छोड़कर तुलाराशि में प्रविष्ट हुए हैं और 15 मई 2012 ई. तक शनिदेव तुलाराशि में ही रहेंगे।

16 मई, सन् 2012 ई. को उ.भा. नक्षत्र एवं मीनस्थ चन्द्र के समय वक्रगति से शनिदेव पुनः 6 घं. 35 मि. पर कन्याराशि में आकर 3 अगस्त, सन् 2012 ई. तक कन्याराशि में ही संचरण करेंगे।

तुला राशिस्थ शनि की साढेसाती एवं ढैय्या का फल

(15 नवम्बर, सन् 2011 से 15 मई, 2012 ई. तक के लिए)

राशि	ढैय्या या साढेसाती	पाद	साढेसाती		फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
कर्क	ढैय्या	लौह	– –	– –	शरीरपीड़ा, रक्तपित्त–विकार, घर में कलह–संघर्ष, राजभय, व्यापार में हानि, पशुहानि, सन्ततिकष्ट, स्त्रीकष्ट।
कन्या	साढेसाती	ताम्र	पाद	उतरती	अचानक धनलाभ, स्त्री–पुत्र–सुख, सम्पत्तिलाभ, प्रगति के मार्ग प्रशस्त हों, स्वास्थ्य ठीक रहे।
तुला	साढेसाती	रजत	हृदय	– –	घरेलू झंझट तो बने रहेंगे, लेकिन व्यापार बढ़े, धन–धान्य–सम्पत्ति–लाभ हो, प्रभावक्षेत्र बढ़े, राजपक्ष से सम्मान मिले।
वृश्चि.	साढेसाती	लौह	मस्तक	चढ़ती	सेहत खराब रहे, दैनिक जीवन में संघर्ष–तनाव, रक्तपित्त–विकार, घरेलू झंझट बढ़े, स्त्री–पुत्र–कष्ट, व्यापार में हानि, राजपक्ष से भय।
मीन	ढैय्या	लौह	– –	– –	सेहत बिगड़े, संघर्षमय जीवन, रक्तपित्त–विकार, घरेलू उलझनें बढ़ें, स्त्री–पुत्र–कष्ट, कारोबार कमजोर, सरकार की तरफ से हानिभय।

कन्या राशिस्थ शनि की साढेसाती एवं ढैय्या का फल

(16 मई से 3 अगस्त, सन् 2012 ई. तक के लिए)

राशि	ढैय्या या साढेसाती	पाद	साढेसाती		फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
मिथुन	ढैय्या	ताम्र	– –	– –	व्यापार में उत्तम लाभ किंवा अचानक धनप्राप्ति, स्त्री–पुत्रसुख, सम्पतिलाभ, प्रगति के मार्ग प्रशस्त हों, स्वास्थ्य ठीक रहे।
सिंह	साढेसाती	लौह	पाद	उतरती	शारीरिक कष्ट, रक्त–पित्तविकार, स्त्रीकष्ट, पशु एवं संतान को कष्ट, व्यापारहानि, राजभय।
कन्या	साढेसाती	ताम्र	हृदय	– –	धन–धान्यसमृद्धि, स्त्री– पुत्रसुख, सम्पत्तिलाभ, कारोबार में प्रगति, शारीरिक सुख।
तुला	साढेसाती	सुवर्ण	मस्तक	चढ़ती	निजीजन–विरोध, शत्रुवृद्धि, गृहक्लेश, अनेकविध रोगों से परेशानी, वृथाव्यय, धननाश।
कुम्भ	ढैय्या	रजत	– –	– –	व्यापार में प्रगति, धन–धान्यसमृद्धि, प्रभाववृद्धि, सम्मानप्राप्ति, सुख–सम्पत्तिलाभ, घर में मांगलिक कार्य हों।

कमज़ोर, सरकार की तरफ से हानिभय।

संवत् 2069 वि. में 4 अगस्त, सन् 2012 ई. को 08 घं. 49 मि. पर शतभिषा नक्षत्र और कुम्भ राशिस्थ चन्द्र के समय शनिदेव मार्गी गति से तुला राशि में पदार्पण कर सं. 2069 वि. के अन्त तक तुलाराशि में ही विचरण करते रहेंगे।

तुला राशिस्थ शनि की साढ़ेसाती एवं ढैय्या का फल

(4 अगस्त, सन् 2012 ई. से सं. 2069 वि. के अन्त तक के लिए)

रशि	ढैय्या या साढ़ेसाती	पाद	साढ़ेसाती		फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
कर्क	ढैय्या	लौह	– –	– –	शरीरपीड़ा, रक्त–पित्त–विकार, स्त्रीकष्ट, पशु एवं संतान–हानि, व्यापारहानि, राजभय।
कन्या	साढ़ेसाती	सुवर्ण	पाद	उतरती	निजीजन–विरोध, शत्रुवृद्धि, गृहक्लेश, अनेकविध रोगों से परेशानी, वृथाव्यय, धनहानि।
तुला	साढ़ेसाती	रजत	हृदय	– –	व्यापार में प्रगति, धन–धान्यसमृद्धि, प्रभाववृद्धि, सम्मान–प्राप्ति, सुख–सम्पत्तिलाभ, घर में मंगलकार्य हों।
वृश्चि.	साढ़ेसाती	लौह	मस्तक	चढ़ती	शरीरपीड़ा, रक्त–पित्त–विकार, स्त्रीकष्ट, पशु एवं संतान–हानि, व्यापारहानि, राजभय।
मीन	ढैय्या	लौह	– –	– –	शरीरकष्ट, रक्त–पित्त विकार, स्त्रीकष्ट, पशु एवं संतान–हानि, व्यापारहानि, राजभय।

नोटः– ऊपर दिए गए तीनों कोष्ठकों में जिन राशियों का निर्देश (ज़िक्र) नहीं किया गया है; उन राशि वाले जातकों के लिए इस साल कन्या–तुलाराशिस्थ शनि की समयावधि में साढ़ेसाती या ढैय्या नहीं है,– यह समझ लें।

शनि–जन्य नेष्टफल–शान्त्यर्थ शास्त्रीय उपाय

शनि की साढ़ेसाती/ढैय्या के नेष्टफल की शान्ति के लिए शनि के बीज मन्त्र या वैदिक मन्त्र का 23,000 की संख्या में विधिपूर्वक जाप करें। तदुपरान्त दशांश हवनादि करें। शनिवार के दिन सतनाजा दान, लौहपात्र में तैलदान, शनिस्तोत्र का पाठ करना/कराना भी श्रेयस्कर रहता है। इसके अतिरिक्त शुभवेला में 'नीलम' रत्न एवं 'शनियन्त्र' धारण करना भी आश्चर्यजनक रूप से लाभप्रद रहता है। परन्तु रत्नधारण करने से पूर्व शनि के अंशादि का अध्ययन करवाकर किसी दैवज्ञ का परामर्श ले लेना श्रेयस्कर रहेगा।

शनि का बीज मन्त्र– "ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः"।

प्रतिदिन 3 माला मन्त्रजाप करें। मन्त्रजाप से पहले "अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, शनैश्चर–नेष्टफलशान्त्यर्थम् शनि–मन्त्रजापमहं करोमि"– इस प्रकार संकल्प करके शनि–मन्त्रजाप करें।

शनिवारी अमावस वाले दिन सूर्यास्तसमय (गोधूलि वेला में) शनि–मन्त्रजाप, स्तोत्रपाठ करें एवं तेल में मुंह देखकर, उसमें एक लौंग डालकर पीपल के नीचे दीपक जलाएं।

मन्त्रजाप की विधि– अनुष्ठान शनिवार को शुरु करें। सूर्यास्तसमय स्नान करके कम्बलासन पर बैठकर पश्चिमाभिमुख होकर (पश्चिम की तरफ मुंह करके) लोहे के खुले बर्तन में जौ, लौंग एवं काले तिल प्रत्येक 200 ग्राम लेकर एक अञ्जलिभर चावल और 7 सुपारी रखें। मौली–धूप–लालचन्दन, दो अपूप (पूड़े) भी सामने रख लें। मिट्टी के बर्तन में तेल का दीपक प्रज्वलित करें एवं एक स्टील का लोटा तेल से भरकर सामने रखकर " ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः"– इस मन्त्र का कुल 23 हजार जाप करें। मन्त्रजाप पूर्ण होने के बाद सारी सामग्री, जो सामने रखी थी, को जलप्रवाह कर दें। तेलभरी गड़वी (लोटे) में लौंग डालकर शनि वाले डकौत को दें। सामग्री को जलप्रवाह करते समय निम्नांकित मन्त्र का उच्चारण करें :–

" ॐ नमः कृष्णाय नीलाय शिति–कण्ठनिभाय च।
नमः कालाग्नि–रूपाय कृतान्ताय च ते नमः।।"

इस मन्त्रोच्चारण के बाद "दूर जाते हुए शनि को पृष्ठभाग" से नमस्कार करके घर को जाएं। किसी अच्छे विद्वान्, दैवज्ञ के परामर्श से (कुण्डली दिखाकर) नीली नग या नीलम धारण करना भी ठीक रहेगा।

शनि का वैदिक मन्त्र– "ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये, शंय्योरभिस्रवन्तु नः, शं ॐ"।

शनिजन्य नेष्टफल–शान्त्यर्थ शनैश्चर–स्तोत्र

पिप्पलाद उवाच–

"ॐ नमस्ते कोण–संस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तु ते। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तु ते।।
नमस्ते रौद्र – देहाय नमस्ते चांतकाय च। नमस्ते यम–संज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।।
नमस्ते मन्द – संज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च।।"

इस स्तोत्र को प्रातः पढ़ने से साढ़ेसाती व ढैय्या की दुःखद पीड़ा नहीं होती– अनुभूत है।

संवत् 2069 वि. में गुरुसंचार का शुभाशुभ फल

8 मई, सन् 2011 ई. को 14 घं. 12 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर पुनर्वसु नक्षत्र, धृतियोग एवं मिथुनस्थ चन्द्र के समय गुरुदेव मेषराशि में प्रविष्ट होकर 16 मई, 2012 ई. तक मेष राशि में ही रहेंगे।

मेष-राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल
(8 मई, सन् 2011 से 16 मई, 2012 ई. तक के लिए)

राशि →	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	भय	आधि-व्याधि	प्रगति	धनहानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीरकष्ट	धनलाभ

17 मई, सन् 2012 ई. को 9 घं. 34 मि. पर रेवती नक्षत्र, प्रीती योग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय गुरुदेव वृषराशि में प्रविष्ट होकर संवत् 2069 वि. के अन्त तक वृषराशि में ही रहेंगे।

वृष-राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल
(17 मई, सन् 2012 ई. से संवत् 2069 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि →	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	धनलाभ	भय	आधि-व्याधि	प्रगति	धनहानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीरकष्ट

गुरुग्रह नेष्टफलप्रद हो तो :- गुरुवार को (विशेषतः गुरुवारी अमावस वाले दिन) केले के वृक्ष को सींचना चाहिए। पीली वस्तु (चना, पीला फल, हल्दी) को पीले कपड़े में बांधकर दान करें। सोना, गुड़-शर्करा, लड्डू आदि द्वारा वृद्ध ब्राह्मण का यथाशक्ति सम्मान करें। गुरुग्रह के बीजमन्त्र का 19 हजार जाप करें। गुरु का जपनीय बीजमन्त्र यह है:- " ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।" केसर किंवा हल्दी का तिलक धारण करें। पीला पुखराज 5/7 रत्ती तर्जनी अंगुली में धारण करें।

राहु के संचार का शुभाशुभ फल (सं. 2069 वि.)

गत सं. 2068 वि. में 6 जून, 2011 ई. को 23 घं. 40 मि. पर पुष्य नक्षत्र, ध्रुव योग एवं कर्कस्थ चन्द्र के समय राहु वृश्चिकराशि में प्रविष्ट हुआ था और यह संवत् 2069 वि. में 22 दिसंबर, 2012 ई. तक वृश्चिक राशि में ही रहेगा।

वृश्चिक-राशिस्थ राहु का शुभाशुभ फल
(6 जून, सन् 2011 से 22 दिसंबर, 2012 ई. तक के लिए)

राशि →	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	धननाश	राजभय	महासुख	धननाश	अपमान	सौभाग्य	कलह	भय	विनाश किंवा भारी कष्ट	धनलाभ	कलह	दुःख-परेशानी

संवत् 2069 वि. में 23 दिसंबर, सन् 2012 ई. को 18 घं. 7 मि. पर भरणी नक्षत्र, शिवयोग एवं मेषस्थ चन्द्र के समय राहु तुलाराशि में प्रविष्ट होकर संवत् 2069 वि. के अन्त तक तुलाराशि में ही संचरण करेगा।

तुला-राशिस्थ राहु का शुभाशुभ फल
(23 दिसंबर, सन् 2012 ई. से संवत् 2069 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि →	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	राजभय	महासुख	धनक्षय	अपमान	सौभाग्य	कलह	भय	विनाश	धनलाभ	कलह	दुःख	धनहानि

राहु जन्माङ्ग में या गोचर में नेष्ट फलप्रद हो तो कम्बल, तिल-तैल, नारियल, लौंग एवम् काले या भूरे रंग के वस्त्र में सतनाजा बांधकर दक्षिणा-सहित सायंकाल के समय दान करें। साथ ही कम्बलासन पर बैठकर राहु का बीजमन्त्र ("ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः") का 18 हजार की संख्या में जाप करें। शान्ति रहेगी। दैवज्ञ के परामर्श से राहु-शान्त्यर्थ गोमेद 5/7 रत्ती धारण कर सकते हैं।

में धारण करें।

आकाशी कौंसिल का विचार (सं. 2069 वि.)

(ग्रहपरिषद् एवं ग्रहगोचर के आधार पर विश्व की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति का सर्वेक्षण)

- ❖ **संवत् 2069 वि. का राजा एवं मन्त्री– ये दोनों पद शुक्र को प्राप्त हैं, अतः राष्ट्रविशेष में आन्तरिक अशान्ति एवं प्राकृतिक प्रकोप से भारी हानि के योग बनते हैं।**
- ❖ **21 जून, सन् 2012 ई. से 13 सितंबर तक शनि–मंगल की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार महानगरों किंवा किसी प्रान्तविशेष में उग्रवादजन्य अशान्ति का साम्राज्य विकरालरूप धारण करे। इसी समयावधि में भयंकर भूकम्प, समुद्रीतूफान (सुनामी)से भारी विनाशलीला उपस्थित होने का भय भी है।**
- ❖ **बंगलादेश, पाकिस्तान, चीन एवं नेपाल– सीमावर्ती क्षेत्रों में वातावरण अशान्त बने, शत्रुकृत कुचाल से सेना को सतर्क रहना होगा।**
- ❖ **फरवरी/मार्च में पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, हिमाचलप्रदेश आदि प्रान्तों की राजनैतिक प्रक्रिया में काफी जोश नज़र आएगा, परिणाम आश्चर्यजनक होंगे।**
- ❖ **केन्द्रीय शासनसत्ता किंवा प्रमुख नेताओं को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।**
- ❖ **जून से सितम्बर तक अनेकत्र बाढ़ से भारी हानि, कहीं सूखे से कृषकवर्ग परेशान।**
- ❖ **राजनैतिक अप्रिय घटनाचक्र में आकस्मिक पद–परित्याग/रिक्त होने से किसी पार्टी को भारी हानि झेलनी पड़ेगी।**
- ❖ **सूर्य–चन्द्र की स्थिति किंवा शुक्र–सूर्यवेध से मुस्लिम राष्ट्रविशेष में राजनैतिक उथल–पुथल होने के योग।**
- ❖ **अमेरिका की शासनसत्ता में विशेष परिवर्तन; भारतीय शासनतन्त्र में पारदर्शिता एवं निर्वाचनशैली में संशोधनात्मक कार्यक्रम बनें।**
- ❖ **देश–विदेश में घटित घटनाक्रम पर ज्योतिषदृष्ट्या चर्चा एवं भारत के साथ प्रमुख देशों की नीति का विश्लेषण।**

अज्ञात–अलौकिक शक्ति के परिचायक अनन्तकोटि तारों एवं ग्रहों के अदृश्य संकेत से संचालित ब्रह्माण्ड में कभी भूकम्प, समुद्री–बर्फानी तूफान, ज्वालामुखी–विस्फोट एवं जनजीवन में उग्र–विनाशक घटनाएं स्पष्ट अनुभव की गई हैं।

ये सभी शुभाशुभ घटनाएं मनुष्य की पहुंच से बाहिर समझी जाती हैं, लेकिन जो रहस्य साधारणतः इन्द्रियों की पहुंच से बाहर हैं अथवा भूत–भविष्य के गर्भ में निहित हैं, वे ज्योतिषशास्त्र द्वारा प्रत्यक्ष जान लिए जाते हैं। हमारे ऋषियों ने उसी ज्योतिष–शास्त्र की रचना की है, जोकि भारत के लिए गौरव की बात है;–

"ज्योतिषामयनं साक्षाद् यत्तद्ज्ञानमतीन्द्रियम्।
प्रणीतं भवता येन पुमान् वेद परावरम्।।" – (श्रीमद्भागवतपुराण)

इस प्रकार जगत्पिता की अदृश्य अलौकिक शक्ति ग्रहों के आकर्षण–विकर्षण के आधार पर ब्रह्माण्ड को प्रभावित करती है, संचालित करती है। ग्रहगतिजन्य इस परिणाम को हम "भवितव्यता" किंवा "ईश्वरेच्छा" कहकर स्वीकार करते हैं।

ग्रहगतिजन्य प्रभाव से प्रताड़ित समस्त समाज, व्यक्ति किंवा देश की स्थिति ठीक उस तिनके की भान्ति ही अनुभव की गई है, जो वायुवेग से प्रताड़ित होकर अपने अस्तित्व को खोकर इधर–उधर भागता फिरता है। नैषधचरित में स्पष्ट लिखा है–

"अवश्य भव्येष्वनवग्रह ग्रहा यया दिशा धावति वेधसः स्पृहा।
तृणेन वात्येव तयानुगम्यते लोकस्य चित्तेन भृशाऽवशात्मनः।।"

यह बात भी नितांत सत्य है, कि– ग्रहों की प्राकृतिक व्यवस्था में तनिक भी रूपान्तरण होने से दिग्दाह, उल्कापात, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, युद्ध, महामारी, अराजकता आदि उपद्रवों से संसार त्रस्त हो जाता है। अतः स्पष्ट है कि– आकाशीय

पिण्डों (ग्रहों) का विश्वजनीन घटनाचक्र से कुछ सम्बन्ध अवश्य है – इस तथ्य को वैज्ञानिक, विचारक एवं बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग स्पष्ट स्वीकार करता है।

इस पृथ्वी पर जो कुछ भी घटित होता अनुभव करते हैं, वह सब ग्रहों के वक्र–मार्ग आदि का ही परिणाम है। इस ग्रहगतिजन्य संकेत के आधार पर ही अपनी मति के अनुसार विश्व में जो भी प्रतिवर्ष घटित होता है, " श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " के माध्यम से प्रिय पाठकों के समक्ष उपस्थित करते रहते हैं और यह इस प्रकाशन का 85वां गौरवपूर्ण वर्ष प्रारम्भ हो रहा है।

श्री वि. संवत् 2069 की ग्रहस्थिति के अनुसार विश्वजनीन घटनाओं की भविष्यवाणी प्रस्तुत करने से पहिले हम अपने विद्वान्, प्रबुद्ध पाठकों का आभार व्यक्त कर देना उचित समझते हैं, जिन्होंने लगातार 84 वर्षों तक हमारी भविष्यवाणियों का सही मूल्यांकन करके हमें आज 85 वें वर्षप्रवेश पर भी इस बारे में कुछ लिखने को प्रोत्साहित किया है। पाठको ! आपका यह पंचांग अपनी सर्वांगशुद्ध गणित, समस्या समाधान, प्रामाणिक ग्रहणगणित, शोधपूर्ण लेखों एवं आश्चर्यजनक भविष्यवाणियों के लिए भारत में ही नहीं, विदेशों में भी विश्रुत हो चुका है।

आपके इस लोकप्रिय पंचांग में प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली आश्चर्यजनक, अव्यभिचरित भविष्यवाणियों में साधारणवर्ग के व्यक्ति से लेकर भारतरत्न श्री जवाहरलाल नेहरु, श्रीमती इन्दिरा गांधी, प्रथम राष्ट्रपति डॉ.राजेन्द्र प्रसाद एवं अन्य गण्यमान्य प्रतिष्ठित ऐतिहासिक महापुरुषों की अभिरुचि रही है। आज भी यह पंचांग अपनी सफल, आश्चर्यचकित कर देने वाली भविष्यवाणियों के कारण तथा ग्रहण आदि पंचांगगणित की सूक्ष्मता एवं शुद्धि के कारण भारत में ही नहीं, विदेशों में भी लोकप्रिय है और भारत में अग्रणी स्थान प्राप्त कर चुका है।

[भारत–पाकविभाजन; बंगलादेश का अस्तित्व में आना; श्री जवाहरलाल नेहरु, श्रीलालबहादुर शास्त्री, श्रीमती इन्दिरागांधी के शासन का अंत एवं मृत्यु की सूचना; भारत–पाकयुद्ध; भारत–चीनयुद्ध; विदेशों में घटित होने वाले महत्त्वपूर्ण घटनाचक्र; समय–समय पर भारत की राजनीति में विशेष परिवर्तनों एवं अन्य घटनाचक्र की सूचना किंवा ऐतिहासिक भूकम्प; गुजराल सरकार का अपदस्थ होना, भाजपा सरकार के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पारित होना; पाक में श्री नवाज़शरीफ की सरकार का तख्तापलट; अमेरिका में वर्ल्डट्रेड सेंटर एवं पेंटागन पर उग्रवादियों का हमला, अमेरीका की कोलम्बिया आन्तरिक शटलयान दुर्घटना; इराक पर अमरीकी हमला और सद्दाम हुस्सैनशासन का अन्त; नेपाल में माओवाद से अशान्ति एवं राजशाही का अन्त; अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री रीगन की मृत्यु; संवत् 2061 वि. में भाजपा एवम् N.D.A. शासन का तख्तापलट एवम् भारत के लोकसभानिर्वाचनों में त्रिशंकु शासनसत्ता की भविष्यवाणी के अतिरिक्त 26 दिसंबर 2004 ई. को तामिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश एवं अण्डेमान–निकोबार में समुद्री सुनामी लहरों से प्रलयंकारी तबाही की सटीक भविष्यवाणी, 30 अगस्त, 2004 ई. को अमरीका में भूकम्प एवम् अन्य अनेकों अवाक् कर देने वाली सफल भविष्यवाणियां कर देने का शीर्षस्थ स्थान केवल 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' को ही प्राप्त हुआ है ।]

संवत् 2063 वि. में इराक के तानाशाह की फांसी की घोषणा; 20 दिसम्बर, 2006 ई. को समुद्रीतूफान, जहाज डूबा, 865 यात्री मारे गए– इस घटना की भविष्यवाणी; भारत–अमेरिका परमाणुकरार में बाधा एवम् प्रधानमन्त्री श्रीमनमोहन सिंह जी के निर्णय में बाधक स्थिति की सूचना; मई से जुलाई 2007 ई. के मध्य पाक आदि मुस्लिम राष्ट्रों में घटित घटनाओं का चित्रण; 30 जून, 2007 ई. को देहली के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री श्रीसाहिब सिंह के दुर्घटनाग्रस्त होने की भविष्यवाणी, 16 अगस्त, 2007 ई. को पीरु के भयंकर भूकम्प; 21 अगस्त, 2007 ई. में मैक्सिको के भयंकर तूफान; 12 सितम्बर, 2007 को सुमात्रा–इण्डोनेशिया में 7.9 स्केल के भूकम्प; *संवत् 2064 वि.* की भविष्यवाणी के अनुसार उत्तर प्रदेश में बसपा सरकार की स्थापना, नेपाल में माओवादियों के प्रभाव की घोषणा; 27 दिसम्बर, 2007 ई. को पाक में श्रीमती बेनज़ीर भुट्टो की हत्या की भविष्यवाणी; 12 मई, 2008 ई. को चीन में भयंकर भूकम्प; 3 मई, 2008 ई. को म्यांमार में भूकम्प; सं. 2065 वि. में मुंबई स्थित ताज होटल पर सब से बड़े उग्रवादी हमले की भविष्यवाणी; 14 नवम्बर, 2008 ई. को चन्द्रमा पर भारत का तिरंगा फहराणा एवं भारत के विश्व की चौथी शक्ति के रूप में उदय की भविष्यवाणी; *सं. 2066 वि. में नेपाल में राजतन्त्र की समाप्ति एवम् गणतन्त्र की स्थापना, सं 2066 वि. में अमरीका में बराक ओबामा के राष्ट्रपति बनने की भविष्यवाणी, श्री मनमोहन सिंह जी का पुनः प्रधानमन्त्री बनना; 12/13 जनवरी, 2010 ई. को हैती के विनाशकारी भूकम्प की भविष्यवाणी; 10/11 अगस्त 2010 को जापान एवं चीन में भयंकर भूकम्प की भविष्यवाणी* एवम् अन्य अवाक् कर देने वाली सहस्रों सफल भविष्यवाणियों का श्रेय "श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग" को ही जाता है।

इस प्रकार अव्यभिचरित भविष्यवाणियों के लिए यह एकमात्र प्रामाणिक 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' सम्पूर्ण भारत में ही नहीं किंवा विदेशों में भी ख्यातनामा हो चुका है।

विगत सभी स्तब्ध कर देने वाली भविष्यवाणियों की चर्चा करना तो स्थानाभाव के कारण यहां संभव नहीं है, लेकिन सं. 2069 वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर भावी घटनाओं पर विचार करने से पूर्व गत दो–तीन वर्षों की कुछ भविष्यवाणियों की चर्चा करना प्रासंगिक समझते हैं, ताकि फलितशास्त्र की प्रामाणिकता को स्थापित किया जा सके।

(1) भविष्यवाणी– "13 जनवरी, 2010 ई. से संवत् के अन्त तक शनि–मंगल वक्री रहेंगे। यह समय अघटित घटनाओं वाला सिद्ध होगा। धार्मिक–सांप्रदायिक झगड़े, हत्याकाण्ड, कहीं भूकम्प, समुद्री तूफान आदि प्राकृतिक आपदाओं का सामना इस देश को जनवरी, 2010 से मार्च, 2010 तक करना पड़ेगा।"

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2066 वि., पृ. 43, कॉलम 2)

(i) **" Deadly quake jolts Chile"- Daily Tribune, Chandigarh-dated 28/2/2010.** चिल्ली में 8.8 magnitudes के भयंकर भूकम्प से 27 फरवरी, 2010 ई. को 147 से अधिक व्यक्तियों की मृत्यु। सुनामी अलर्ट।

(ii) 17 जनवरी, 2010 ई. को सम्माननीय ज्योतिवसु स्वर्ग सिधारे, जोकि भारतीय राजनीति के एक युगपुरुष थे। भारतीय राजनीति में यह एक भारी दुःखद घटना रही है।

(iii) 15 मई, 2010 ई. को महामहिम पूर्व उपराष्ट्रपति श्री भैरों सिंह शेखावत जी स्वर्ग सिधारे- यह घटना भी भारतीय राजनीति के क्षेत्र में एक भारी दुःखद घटना के रूप में जानी जाती है।

इस प्रकार संवत् 2066 वि. के अन्तिम चरण में शनि-मंगल के वक्रत्व के फल की भविष्यवाणी स्पष्टतः सत्य सिद्ध हुई।

(2) भविष्यवाणी- 24 जुलाई को गुरु वक्री होगा। आगे श्रावण चान्द्रमास में (27 जुलाई से 24 अगस्त तक) 5 मंगलवार होने से अगस्त के दूसरे सप्ताह में कहीं भयंकर भूकम्प, तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधनहानि संभव है।

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2067 वि., पृ. 39, कॉलम 1)

(i) लेह (लद्दाख) में 5/6 अगस्त की रात्रि में भयंकर 'बादल-विस्फोट' की घटना में जो जनधनहानि हुई है, वह भारी दुःखद एवं अविस्मरणीय प्राकृतिक प्रकोप के रूप में जानी गई है। हवाई अड्डा ध्वस्त हुआ, अनगिनत लोग मारे गए।

(ii) इसी दौरान (27 जुलाई से 24 अगस्त के मध्य) पाकिस्तान एवं चाइना में भयंकर बाढ़ से हज़ारों व्यक्तियों के मरने, लाखों के बेघर होने की सूचना भी समाचारपत्रों में प्रकाशित और टी. वी. पर प्रसारित हुई है।

ये दोनों घटनाएं उल्लिखित भविष्यवाणी की सत्यता को अक्षरशः प्रमाणित करती हैं।

(3) भविष्यवाणी- संवत् (2067 वि.) की नववर्ष प्रवेशकालीन कुण्डलीगत ग्रहस्थिति के अनुसार लग्नेश गुरु तृतीय भाव में शनि के क्षेत्र में है। शनि कन्याराशि में वक्रस्थिति में है एवम् गुरु के साथ षडष्टकयोग बना रहा है। इस समय नीचस्थ मंगल भी गुरु के साथ षडष्टकयोग बना रहा है। स्पष्ट है कि- कुछ माओवादी माकपा एवम् अन्य ग्रुप, जो लोकतांत्रिक प्रक्रिया में विश्वास नहीं रखते, वे भी सुरक्षाबलों पर प्रहार कर सकते हैं। ये पार्टियां देश के आधादर्जन से भी अधिक राज्यों को दूषित कर रही हैं। इसवर्ष छत्तीसगढ़, बिहार, झारखण्ड, उड़ीसा, महाराष्ट्र, आसाम आदि में भारी उपद्रव होंगे। इन उपद्रवों को कानूनव्यवस्था के नज़रिये से हल करने की नीति असफल रहेगी। जम्मू- काश्मीर भी सरकार के लिए सिरदर्द रहेगा। इसलिए तेज़ी से बढ़ रही माओवादी किंवा सभी प्रकार की हिंसा पर कन्ट्रोल करने के लिए स्पष्ट व प्रभावशाली कार्यवाही में देरी करना भारी भूल सिद्ध होगी।

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2067 वि., पृ. 38, कॉलम 1)

गत वर्ष 7 अप्रैल, 2010 ई. को छतीसगढ़ के दन्तेवाड़ा में 'नक्सलियों के कहर' से C.R.P.F. के 83 जवान शहीद हुए। 8 जवान घायल एवं 150 जवान लापता रहे। इस हमले में प्रैस अनुसार 1,000 (एक हज़ार) नक्सली शामिल हुए। दन्तेवाड़ा की सीमा महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश एवं उड़ीसा से लगती है।

गतवर्ष सं. 2067 वि. में जम्मू-काश्मीर में जो विस्फोटक स्थिति रही है, अमरनाथ यात्रा के दौरान जो मुस्लिम काश्मीरियों की मानसिकता अनुभव की गई है, उससे एवं उल्लिखित नक्सली घटनाओं से भविष्यवाणी की सत्यता को स्वीकार करना ही पड़ेगा। उल्लिखित भविष्यवाणी की सत्यता पर अनेकों पत्र बिहार, असम, उत्तरप्रदेश से हमें प्राप्त हुए। ये सब फलितशास्त्र की वैज्ञानिकता के साक्षी हैं।

(4) भविष्यवाणी- 16 मार्च से 14 अप्रैल तक सूर्य-शनि का समसप्तकयोग बनेगा। दोनों प्रबल शत्रुग्रह हैं। नक्सली अपनी शक्तिसत्ता का विस्तार करेंगे। भारत के आसाम-त्रिपुरा-नागालैण्ड- झारखण्ड आदि में इनकी शक्ति को नज़र अन्दाज़ करना आगे चलकर भयानक परिणामों वाला सिद्ध होगा। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार अप्रैल, सन् 2010 ई. में धार्मिक स्थलों की सुरक्षा पर विशेष ध्यान रखना होगा, क्योंकि इस समय उग्रवादजन्य किसी घटना किंवा किसी दुर्घटना से जनधनहानि के योग बनते हैं।

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2067 वि., पृ. 34, कॉलम 1)

(i) "14 अप्रैल, 2010 ई. को तिब्बत के पठार में 7.1 रिएक्टर के भूकम्प से भारी तबाही ।"- *'दैनिक भास्कर '*

इस भूकम्प में 400 से अधिक लोगों की मृत्यु हुई, 10,000 से अधिक घायल हुए।

(ii) 14 अप्रैल, 2010 ई. को हरिद्वार में अन्तिम शाहीस्नान के समय "सूखी नदी पर बने पुल की रेलिंग टूटी।"

भगदड़ में सात व्यक्ति मारे गए एवं 17 श्रद्धालु घायल हुए।

(iii) 10 अप्रैल, 2010 ई. को पोलैण्ड के राष्ट्रपतिसहित 96 लोग विमानदुर्घटना में मरे।

(iv) 13/14 अप्रैल को रात्रि में 40 मिनट चले भयंकर तूफान से बिहार, पश्चिमी बंगाल एवं असम में भारी जनधनहानि हुई। तूफान से उत्तरी दिनाजपुर ज़िले में 50,000 घर गिर गए। बिहार में अरिया, असम में धुबरी, जोरहाट, तिनसुकिया, शिवसागर व कामरूप ज़िलों में भारी विनाशलीला देखी गई।

सं. 2067/2068 वि. की कुछ प्रसिद्ध किंवा अवाक् कर देने वाली कुछ और भविष्यवाणियों की चर्चा हम संक्षेपतः कर रहे हैं :–

(1) " 3 जनवरी को ऑस्ट्रेलिया में भीषण बाढ़ से तबाही। लाखों लोग बेघर हुए।" इस भविष्यवाणी की सत्यता का आलेख पढ़ें सं. 2067 वि. के श्रीमार्त्तण्ड पंचांग में पृ. 118 पर " लोकभविष्य " जिसमें स्पष्ट लिखा है – "(पौष कृष्ण) अमावस (4 जन. 2011 ई. को) मंगलवारी है, अतः कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो।"

" मिश्र में बग़ावत, सऊदी अरब में बगावत, 23 जनवरी को ट्यूनेशिया में बगावत, जॉर्डन–यमन में बगावत, 12 फरवरी को पाक में गिलानी–मन्त्रिमंडल भंग, बहरीन में हालात बिगड़े " –

इन सारी घटनाओं का संकेत " श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " सं. 2067 वि. की आकाशी कौंसिल पृ. 33, कॉलम 1 में स्पष्टरूप से पहले ही निम्न शब्दों में कर दिया गया था– पढ़ें :–

" पाकिस्तान एवं अन्य मुस्लिमराष्ट्रों के नायकों के लिए भी यह संवत् 2067 संकटापन्न स्थितियों को लेकर उपस्थित हो रहा है। उग्रवादजन्य हत्याकाण्ड, विस्फोट कुछ राष्ट्रों की शान्ति को भंग करेंगे। प्रधान नेतृत्व के लिए यह योग विशेष चिन्ताकारक हैं।"

(2) 21 फरवरी, 2011 ई. सोमवार को लगातार 42 वर्ष तक लीबिया पर शासन करने वाले तानाशाह कर्नल गद्दाफी को लीबिया छोड़कर भागना पड़ा। संसद व सरकारी भवनों को आग लगा दी गई, सैंकड़ों लोग मारे गए।

इस घटनाक्रम को स्पष्टरूप से " श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " संवत् 2068 वि. की आकाशी–कौंसिल में पृ. 30 पर ' मुस्लिम राष्ट्र " शीर्षक के अन्तर्गत इन शब्दों में चिरकाल पहले ही लिख दिया था; –

"मुस्लिमराष्ट्रों में उग्रवाद एवम् आन्तरिक अशान्ति से जनधनहानि के योग बनते हैं। यहां के विशिष्ट व्यक्तियों के जीवन को खतरा है। इन्हें अपने सुरक्षाप्रबन्धों को सुदृढ़ करना होगा। सेना किंवा सुरक्षात्मक पंक्ति में भी आई. एस. आई. के एजेंट स्थानीय नेतृत्व को परेशानी में डाल सकते हैं। दिसम्बर, 2010 ई. से विशेषतः 15 फरवरी से संवत् 2068 वि. के अन्त तक शनि–मंगल की स्थिति किसी मुस्लिमराष्ट्र की शासनसत्ता में अचानक परिवर्तन ला सकती है। यहां के शासकों के लिए ग्रहस्थिति काफी चिन्तनीय मालूम देती है।"

इस भविष्यवाणी के अनुसार–

(i) मिश्र में 30 साल के तानाशाह शासनकाल का अन्त; राष्ट्रपति मुबारक का इस्तीफा, सेना के हाथ सत्ता।

(ii) ट्यूनिशिया के राष्ट्रपति के विरुद्ध बगावत, त्यागपत्र देकर इन्हें देश छोड़कर भागना पड़ा।

ये भी इस उपरोक्त भविष्यवाणी की सत्यता को स्पष्ट कह रहे हैं।

(3) 11 मार्च, 2011 ई. को जापान में अब तक इस सदी के भयंकर विनाशकारी भूचाल एवं सुनामी से जो विनाश हुआ था, उसका उल्लेख सं. 2067 वि. के " श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " में स्पष्टरूप से कर दिया गया था, देखें पृ. 122 "लोकभविष्य"–

" इस चान्द्रमास में पांच शनिवार होने से अमरीका, जापान एवं अन्य देशविशेष में भूकम्प, समुद्री तूफान, अग्निकाण्ड व ज्वालामुखी–विस्फोट से जनधनहानि के संकेत मिलते हैं।"

इस भयंकर जापानी दुर्घटना को The Times of India ने इस प्रकार लिखा था–" **Quake, Tsunami Pummel Japan, 8.9 Temblor Triggers Wall of water, Many fires, Houses, cars Tossed Ground like Toys.**"

दैनिक पंजाब केसरी ने इस घटना को– "महाभूकम्प/महासुनामी" रूप में घोषित किया।

समाचारपत्रों के अनुसार यह 140 वर्षों में सबसे भयानक भूकम्प था, इसमें 1,000 लोग मारे गए। इस सुनामी का प्रभाव फिलिपीन्स एवं अमरीका में भी देखा गया।

(4) "Terror Back in Mumbai"- Hindustan Times, dated 14th July, 2011;-

" मुम्बई में उग्रवादियों द्वारा पुनः 13/7/2011 को कहर बरपाया गया" इस वारदात की भविष्यवाणी पढ़ें " श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " संवत् 2068 वि. पृ. 29, कॉलम 1 में–

12 जून से मंगल वृषराशि में आकर सूर्य, शुक्र एवं केतु के साथ मेल करेगा। पहले ही 7 जून को राहु वृश्चिक एवं केतु वृष में प्रविष्ट होकर दोनों संवत 2068 के अन्त तक इन्हीं राशियों में चलेंगे। इसी मध्य अघटित घटनाचक्र चलेगा। उग्रवादी विदेश एवं स्वदेश के महानगरों में कहर बरपाएंगे। जानी–माली नुक्सान से

ग्रहस्थिति काफी चिन्तनीय मालूम देती है।"

उग्रवादी विदेश एवं स्वदेश के महानगरों में कहर बरपाएंगे। जानी–माली नुक्सान से

विश्व में अशान्ति व्याप्त होगी। कहीं समुद्री तूफान, यानदुर्घटना एवं वरिष्ठ व्यक्ति–विशेष के निधन किंवा हत्या से जनजीवन अस्त–व्यस्त होगा।

(5) 2 मई को आतंकवादी नेता लाडेन की हत्या कर दी गई– " श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " संवत् 2068 वि. पृ. 29, कॉलम 1 में पढ़ें–

" विश्व के यावनराष्ट्रों एवं अमेरिका, भारत आदि राष्ट्रों में उग्रवादजन्य घोर अशान्ति, विस्फोट आदि से जनधनहानि एवं किसी व्यक्ति के हत्याकाण्ड की घटना शनि–मंगल के समसप्तक के कारण होगी। शनि–मंगल का यह समसप्तक 2 मई, 2011 ई. तक प्रभावी रहेगा।"

(6) " हम तीसरे सबसे शक्तिशाली देश " – दैनिक भास्कर, दिनांक 22/10/2010, यह समाचार अमेरीका की सरकारी रिपोर्ट ग्लोबल गवर्नेंस 2025 में खुलासा किया गया।

इस सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण भविष्यवाणी " श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " संवत् 2068 वि. के पृ. 31, कॉलम 1 में इस प्रकार की गई–

" स्वतन्त्र भारत के 64वें वर्ष का उदय मिथुन लग्न में हो रहा है। लग्नेश बुध मुन्था के क्षेत्र में लग्न से तृतीयस्थ है। तृतीयेश सूर्य मुन्थेश होकर द्वितीय स्थान में गुरु से दृष्ट है। ग्रहगति से स्पष्ट संकेत मिलता है कि– आगामी समय में एशियन देशों में भारत तेज़ी से आर्थिक प्रगति की ओर अग्रेसर होगा। भारत द्वारा सभी क्षेत्रों में विकास, बचत की बढ़ती दर प्रगतिशील देशों को आश्चर्यचकित कर सकती है। दूसरे देशों द्वारा पूंजीनिवेश विशेषरूप से भारत में होगा और देश प्रगतिपथ पर आगे बढ़ेगा। लेकिन 64वें वर्ष की स्वतन्त्र भारत की कुण्डली में चतुर्थ भावस्थ शनि–मंगल एवम् नीच शुक्र कन्या नामराशि वाले किंवा मीन, मेष, वृश्चिक राशि वाले देशों में से किसी देशविशेष (पाक, चीन या नेपाल आदि) के साथ सीमांप्रान्तों पर अशान्ति बनेगी। सीमा मुद्दा गरमाएगा, सम्बन्ध तनावपूर्ण होंगे।"

इस भविष्यवाणी का सत्यापन दैनिक भास्कर ने इस प्रकार किया है–

" दुनिया में हमारी बढ़ती ताकत को स्वीकार करते हुए अमेरिका की एक सरकारी रिपोर्ट में भारत को दुनिया का तीसरा सबसे शक्तिशाली देश घोषित किया है। यह सम्भावना भी जताई गई है कि– भारत की ताकत 2025 तक और बढ़ जाएगी।

2010 के सबसे ताकतवर देशों की सूची में भारत को अमेरिका और चीन के बाद तीसरा सबसे शक्तिशाली देश बताया गया।"

पाक–चीन दोनों देशों की सीमाओं पर गतिविधि भारत सरकार के लिए चिन्ताजनक ही बनी हुई है– यह सर्वविदित है।

(7) सं. 2068 वि. में 15 अगस्त से श्री अन्नाहज़ारे (समाजसेवक) ने भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने एवं 'लोकपाल विधेयक' में संशोधनार्थ किए गए सत्याग्रह (आमरण अनशन) के कारण 15 अगस्त से ही केन्द्रीय शासनतन्त्र को विशेष संकट स्थिति का सामना करना पड़ रहा है।

इस स्थिति का स्पष्ट निर्देश ग्रहस्थिति के आधार पर " श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " संवत् 2068 वि. के पृ. 32, कॉलम 2 एवं पृ. 33 कॉलम 2 पर इस प्रकार कर दिया गया था–

" मुंथेश एवं लग्नेश बुध 65वें वर्षलग्न की कुण्डली में व्ययस्थान में है; जोकि प्रशासनिक कार्यक्षेत्र में भारी रुकावटों का संकेत देता है। लेकिन बुध (लग्नेश) पर बृहस्पति की विशेषदृष्टि है, अतः सुयोग्य नेतृत्व के कारण विषम स्थिति पर भी नियन्त्रण पाना संभव होगा। इस 65वें स्वतन्त्र भारत की वर्षकुण्डली में लग्नस्थ शनि पर मंगल की विशेष दृष्टि है। शनि–मंगल का यह दशम– चतुर्थदृष्टिसम्बन्ध 8 सितम्बर, सन् 2011 ई. तक प्रभावी रहेगा। इस समय वर्षकुण्डली में शनि पंचमेश एवं षष्ठेश होकर अष्टमेश एवं तृतीयेश मंगल के साथ दृष्टिसम्बन्ध बना रहा है। यह ग्रहस्थिति भारत के राजनीतिज्ञों एवं राजनैतिक पार्टियों में विशेष हलचल बना सकती है, विशेषतः केन्द्रीय शासनतन्त्र, पंजाब, बिहार, बंगाल, केरल, महाराष्ट्र, तामिलनाडु एवम् उत्तरप्रदेश की राजनीति में विशेष हलचल हो सकती है। इस समय जम्मू–काश्मीर एवं सीमाप्रान्तीय भारतभूभाग के उग्रवादजन्य आपदा किंवा भारी प्राकृतिक प्रकोप का शिकार होने के योग हैं। अगस्त से सितम्बर, 2011 ई. तक का समय प्रत्येक दृष्टि से भारत के विशिष्ट राजनीतिज्ञों के लिए परीक्षा की घड़ी सिद्ध होगा।

" इस संवत् 2068 वि. के मध्य ग्रहस्थिति के चिन्तन से मालूम होता है कि– सरकार को अनेक संकटों का इसवर्ष सामना करना ही पड़ेगा। राजनैतिक अनिश्चितताओं से घिरी सरकार तथा दौर्भाग्यपूर्ण राजनैतिक सहयोगी दलों के बीच विभिन्न विचारों में टकराव की स्थिति पैदा होगी। वामपन्थीदल एवं भाजपा केन्द्रशासित सरकार के लिए सिरदर्द बन सकते हैं।"

पाठको ! श्रीमार्त्तण्ड पंचांग के माध्यम से की गईं या की जा रही भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय जो आप हमें दे रहे हैं, वह सब पूर्वाचार्यों एवं ज्योतिषशास्त्र के मर्मज्ञ गुरुचरणों की कृपा ही है या जनताजनार्दन के सौहार्द का परिणाम। हम उन पाठकों के भी आभारी हैं, जो विभिन्न प्रान्तों किंवा विदेशों से पत्राचार द्वारा भविष्यवाणियों की सफलता पर बधाई भेजकर हमें भावी वर्षों में ग्रहगतिजन्य संकेतों के आधार पर कुछ न कुछ लिखने के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

जयतु संस्कृतम् जयतु भारती

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थान-द्वारा

(मानितविश्वविद्यालय, भारतसरकार, नई दिल्ली)

सञ्चाल्यमानस्य अनौपचारिकसंस्कृतशिक्षणप्रमाणपत्रीयपाठ्यक्रमस्य

उद्घाटन-समारोहः

कार्यक्रमः-

तिथिः - **विक्रमी २०६९ द्वि० भाद्रपदकृष्णः १४ शनिवासरः**

15 सितम्बर 2012 ई0 15.00 वादनेऽपराह्णे

मुख्यातिथिः - **श्री कू०वेंकटेशमूर्त्तिः (सहायकाचार्यः)**

मुक्तस्वाध्यायपीठम्, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, जनकपुरी, नई दिल्ली।

अध्यक्षः - **श्री राजवीर सिंह (प्राचार्यः)**

राजकीय व० माध्यमिक बाल विद्यालयः नं०३, नजफगढ़, नई दिल्ली।

उपर्युक्तकार्यक्रमानुसारं श्रीमतां समुपस्थितिः सम्प्रार्थनीया ।

डॉ० रमाकान्तशुक्लः	डॉ० कीर्त्तिकान्तः शर्मा	श्री दिनेशचन्द्रचतुर्वेदी
संरक्षकः	केन्द्रसंयोजकः	केन्द्राध्यक्षः

समारोहस्थानम्-

वेदाचार्य-रामजीलाल-पालीवाल-सांगवेद-विद्यालयः,

46, संगमविहार, गली- 10, नजफगढ़, नई दिल्ली-४३ दूर०-9868589976

जयतु संस्कृतम् जयतु भारती

संवत् 2069 वि. की ग्रहपरिषद् के अधिकारियों का विश्व पर प्रभाव

विज्ञान 'कार्य–कारण के सिद्धान्त' पर आधारित है। परन्तु असंख्य घटनाएं ऐसी हैं, जिनका कारण समझने एवं समझाने में चोटी के वैज्ञानिक अपने आपको सर्वथा असमर्थ पा रहे हैं। अतः सिद्धांतो के व्यभिचारमात्र से ज्योतिषशास्त्र की वैज्ञानिकता का प्रतिवाद नहीं किया जा सकता। ज्योतिष चिरन्तन सत्य–सिद्धांतों पर आधारित एक विज्ञान है, जिसमें अभी अत्यधिक अनुसंधान की आवश्यकता है।

जिस तरह पृथ्वी पर लोकतांत्रिक राज्य की स्थापना के लिए प्रधानमंत्री आदि के चुनाव होते हैं और उन निर्वाचित व्यक्तियों के गुण–कर्म–स्वभाव–योग्यता का प्रभाव उनके अधिकृत क्षेत्रों एवम् शासनतंत्र पर पड़ता है, उसी प्रकार अखिलेश्वर प्रभु की इच्छा से निर्मित आकाशीय शिशुमार चक्रस्थ ग्रहों की परिषद् में संसारचक्र को चलाने के लिए प्रतिवर्ष दिव्य एवं अद्भुत शक्तिमती 'आकाशी कौंसिल' का निर्माण होता है। इस आकाशीय कौंसिल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुकूल संसार में जो उलट–फेर एवं अघटित घटनाएं घटित होती हैं; इस घटनाचक्र को त्रिकालज्ञ दैवज्ञों द्वारा लिखित ग्रन्थों के आधार पर वि. सं. 2069 की ग्रहस्थिति के अनुसार कुछ लिखने की चेष्टा कर रहे हैं।

संवत् 2069 वि. का राजा एवं मन्त्री–दोनों पद इसवर्ष शुक्रग्रह को प्राप्त हैं। इस संवत् की ग्रहपरिषद के निर्वाचन में 6 पद क्रूर ग्रहों को प्राप्त हुए हैं एवं 4 पद शुभ ग्रहों के अधिकार क्षेत्र में आए हैं।

इस संवत् का राजा एवं मन्त्री– ये दोनों पद शुक्र के पास होने से यह संवत् स्त्री–शासन से प्रेरित एवं प्रभावित रहेगा।

" स्वयं राजा स्वयं मन्त्री अग्नि–चौरादिजं भयम्"– प्रमाणानुसार इस संवत् में उग्रवादजन्य विस्फोट किंवा ज्वालामुखी–विस्फोट, भीषण अग्निकाण्ड, अनेक प्रान्तों में भयंकर बाढ़ आदि प्राकृतिक आपदाओं एवं चोरी आदि अनैतिक गतिविधियों से जनता में परेशानी बढ़ेगी।

यह ' विश्वावसु ' नामक संवत्सर है, यह संवत् देश के लिए आर्थिक संकट वाला रहेगा। वर्षा अच्छी; चावल, गेहूं, जौ, ज्वार एवं दालवाना की फसल उत्तम रहेगी। सोना, चान्दी आदि धातुओं के भाव निरन्तर बढ़ते जाएंगे।

संवत् का राजा शुक्र होने से राजस्थान (मारवाड़ आदि) में भी अच्छी वर्षा से किसान अच्छी उपज प्राप्त करेंगे। ध्यान दें– इसवर्ष वर्षा अधिक होने से चावल आदि बहुजलीय अनाजों की उपज काफी होगी। मन्त्री भी शुक्र होने से जनता शासकीय कार्य–संचालन एवं जनहितार्थ किए जा रहे कार्यों एवं सुविधाओं से लाभ प्राप्त करेगी।

सन् 2012 ई. के पूर्वार्ध में किसी देशविशेष में कहीं शासनसत्ता में आकस्मिक परिवर्तन का संकेत मिलता है।

इस संवत् में महाक्रूर ग्रह शनि को धान्याधिपति पद प्राप्त है। अतः कुछ प्रान्तों में भयंकर बाढ़ आदि प्राकृतिक आपदाओं के कारण शासकों को कठिन परिस्थिति एवं आर्थिक संकट का सामना करना पड़ेगा। देश में राजनैतिक दल शक्तिपरीक्षणार्थ अन्तर्मन से तैयारी में सन्नद्ध मालूम देंगे। केन्द्रीय सत्तारूढ़ दल के लिए कई प्रश्नचिह्न उपस्थित होंगे, जिसका हल सहज संभव न मालूम देगा।

इसवर्ष का रसेश मंगल होने से शासकों का व्यवहार जनमानस को आकृष्ट न कर सकेगा।

इसवर्ष के मेघेश–फलेश एवं दुर्गेश – ये तीनों पद गुरु ग्रह को प्राप्त हैं, जोकि राजा एवं मन्त्री –शुक्र ग्रह का विरोधी है। अतः इसवर्ष केन्द्रीय शासनतन्त्र में विशेष तालमेल न होने पर भी स्थिति को गुरु ग्रह कन्ट्रोल में रखेगा। सैनिक एवं रक्षातन्त्र में संशोधन होगा, सैनिकसत्ता की मज़बूती पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

संवत् 2069 वि. के नीरसेश एवं धनेश– ये दो पद सूर्यदेव को प्राप्त हैं, सूर्य–गुरु–मंगल एवं चन्द्र परस्पर मित्र हैं, लेकिन शुक्र के ये शत्रु हैं। अतः यह ग्रहपरिषद् संकटापन्न स्थिति का संकेत देती है।

सं. 2069 वि. की गोचर ग्रहस्थिति–अनुसार यह संवत् प्रतिष्ठित व्यक्ति किंवा कुछ वरिष्ठ नेताओं के लिए काफी संघर्षपूर्ण एवं संकटापन्न स्थिति का संकेत देता है। कोई दौर्भाग्यपूर्ण घटना घटित हो सकती है– भगवान् रक्षा करें।

संवत् 2069 वि. की गोचर ग्रहस्थिति एवं जगत्लग्नकुण्डली के अनुसार विश्वजनीन घटनाओं पर एक नज़र

सं. 2069 वि. में जगत्लग्न का शुभारम्भ तुला लग्न में हो रहा है। लग्नस्थ उच्च शनि का उच्च सूर्य एवं गुरु के साथ समसप्तकयोग बन रहा है। वर्षेशकुण्डली में धनेश मंगल एवं आयेश सूर्य का राशिव्यत्यय होने से विश्व के प्रभुसत्तासम्पन्न देशों की आर्थिक स्थिति में भारी उठापटक होने से सभी देश प्रभावित होंगे। वर्षेशकुण्डली में शनि–सूर्य का समसप्तक होने से यूरोप के सशक्त देशों का ऋणसंकट

वर्षेश(जगत्)लग्नकुण्डली

13 अप्रैल, 2012 ई. 19 घं. 19 मि.(I.S.T.)

गहरा सकता है, जिससे कुछ प्रमुख देशों में आर्थिक संकट गहराएगा। जर्मनी–फ्रांस आदि देश व्यापारक्षेत्र में निवेशकों को आश्वस्त न कर सकने से व्यापारिक जगत् में अर्थसंकट विकटरूप धारण कर सकता है, क्योंकि इस संवत् की ग्रहपरिषद् में धनेश का पद सूर्य को ही प्राप्त है। लग्नस्थ शनि, चतुर्थेश एवं पंचमेश भी है, साथ ही शनि की दशमभाव (जलराशि)पर विशेष दृष्टि होने से अनेकत्र प्राकृतिक प्रकोप किंवा उग्रवादजन्य भयंकर आपदा से भारी हानि के संकेत भी मिलते हैं, जिससे भारी संकटापन्न स्थिति का सामना करने के लिए प्रमुख समर्थ देश सहायतार्थ उपस्थित होंगे। इस संवत् में किसी देशविशेष के बहुचर्चित किंवा प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन किंवा हत्या से स्तब्ध रह जाने की ग्रहस्थिति बन रही है। वैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण, भाद्रपद, कार्तिक एवं फाल्गुन मास विश्व के प्रतिष्ठित देशों के राजनीतिज्ञों के लिए नेष्ट हैं। इन मासों में प्राकृतिक आपदाएं भी घातक सिद्ध हो सकती हैं।

वर्षेशकुण्डली के अनुसार सं. 2069 वि. में किसी विशिष्ट धार्मिक सम्प्रदाय के गण्यमान्य गुरुदेव के निधन से शोक व्याप्त होगा एवं संस्थाविशेष में कुछ उपद्रव भी सम्भव है। क्योंकि वर्षेशकुण्डली में चन्द्र से दशमस्थ उच्च शनि पर उच्च सूर्य एवं मेषस्थ गुरु की दृष्टि भी है; अतः देश–विशेष में सुधारात्मक प्रक्रिया ज़ोर पकड़ेगी एवं नए राजनैतिक परिवर्तन के योग भी बनते हैं।

यह वि. सं. 2069 विश्वावसु नाम से जाना गया है। इसका फल 'मेघमहोदय' में इस प्रकार लिखा है :–

"सर्वत्र जायते क्षेमं सर्वसस्य–महर्घता।
निष्पत्तिः सर्वसस्यानां वृष्टिश्च प्रबला पुनः।।
विश्वावसौ सुवृष्टिश्च काष्ठलोह–महर्घता।"

स्पष्ट है :– इस संवत् 2069 वि. में महंगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी, जनसाधारण महंगाई से त्रस्त रहेगा। शासन की जनतोषण–नीति निष्क्रिय मालूम देगी। प्राकृतिक प्रकोप से अनेकत्र भारी हानि होगी। स्वर्णादि सभी धातुएं अप्रत्याशित रूप से महंगी होंगी।

इस संवत् का राजा एवं मन्त्री– दोनों पद स्त्रीग्रह शुक्र को प्राप्त हैं। वैधानिक दृष्टि से स्त्रीजाति एवं अन्य कुछ महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में स्त्रीजाति का वर्चस्व बढ़ेगा। अनेक क्षेत्रों में स्त्री–प्रतिनिध्य का महत्त्व सरकार द्वारा निश्चित किया जाएगा।

सं. 2069 वि. की जगत्लग्न–कुण्डली में वर्षेश एवं मन्त्री शुक्र अपनी राशि वृष में है एवं शुक्र का मित्रग्रह धान्येश शनि भी शुक्र के क्षेत्र तुला में है। अतः आगे राजनैतिक छवि को ठीक करने के लिए शासकवर्ग भरसक प्रयत्न करेगा। लेकिन वर्षेश–कुण्डली में कर्मेश चन्द्र शनि (शत्रु) के क्षेत्र में होकर कर्मस्थान को देख रहा है, जोकि कुछ स्थानों पर भारी बाढ़ से खड़ी फसलों को इसवर्ष भारी हानि पहुंचाएगा।

सं. 2069 वि. की वर्षेश–कुण्डली में चन्द्र–शुक्र–शनि एवं मंगल की स्थिति व गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार इसवर्ष इण्डोनेशिया, जापान, चीन, अमेरिका, भारत के समुद्रतटवर्ती भूभाग महाराष्ट्र, गुजरात एवं पर्वतीय क्षेत्रों तथा कुछ अन्य देशों/क्षेत्रों में कहीं विनाशकारी भूकम्प, समुद्री तूफान, सुनामी किंवा ज्वालामुखी–विस्फोट से भारी जनधनहानि के योग बनते हैं।

यूरोप के देश

यूरोपीय देशों की कुण्डली (1)
1 जनवरी, 2012 ई.
(मध्यरात्रि 0 घं. 00 मि.)

यूरोपीय देशों की कुण्डली (2)
1 जनवरी, 2013 ई.
(मध्यरात्रि 0 घं. 00 मि.)

यूरोपीय देशों की कुण्डली (1)– की ग्रहस्थिति के अनुसार मंगल–शुक्र का षडष्टक, शनि–गुरु का समसप्तक यूरोपीय राष्ट्रों में अनेकत्र सुख–सम्पदा/ अभिवृद्धि के साथ राष्ट्रनायकों के लिए सुखद प्रतीत नहीं होता।

23 जनवरी, 2012 को मंगल वक्रगति से चलना शुरु होगा व आगे 7 फरवरी को शनि का वक्री होना यूरोप के प्रधाननायकों के लिए कठिन परिस्थितियों वाला है। कहीं उग्रवादजन्य पुरोगमों की असफलता, कहीं विशिष्ट व्यक्ति की हत्या किंवा समुद्रतटवर्ती देशों में कहीं भूकम्प, सुनामी, वायुयान–दुर्घटनाओं एवम् ज्वालामुखी–विस्फोट आदि घटनाओं से जनधनहानि एवम् भारी परेशानी 14 अप्रैल, 2012 ई. तक संभावित है।

संवत् 2069 वि. के प्रारम्भ में मंगल, बुध, शनि, राहु, केतु– ये पांच ग्रह वक्री हैं। बुध वक्री होकर पिछली (कुम्भराशि) में जा रहा है।

6 अप्रैल के लगभग गुरु अतिचारी होकर लगभग 15 जून तक अतिचारी ही रहता है। U.K..(ब्रिटेन), अमेरिका आदि महत्त्वपूर्ण देशविशेष के प्रधान नायकों के लिए एवं किसी राजतन्त्र–वंश के प्रधान व्यक्तिविशेष के लिए विघातक किंवा भारी कष्टप्रद ग्रहस्थिति है। जापान, जर्मनी, ऑस्ट्रिया एवं कुछ प्रमुख यूरोपीय राष्ट्रों में तुला,

वृश्चिक, मेष, सिंह राशि वाले देशों एवं समुद्रतटवर्ती भूभाग पर समुद्री तूफान, भयावह भूकम्प किंवा उग्रवादजन्य–हत्याकाण्डों से कहीं भारी जनधनहानि के योग बनते हैं।

7 अप्रैल, सन् 2012 ई. को वैशाख कृष्ण प्रतिपदा एवं अमावस (21 अप्रैल)– दोनों शनिवारी होने से खप्परयोग किसी विशिष्ट व्यक्ति की हत्या किंवा निधन से शोक व्याप्त होने का संकेत देता है।

13 अप्रैल से 14 मई तक शनि, सूर्य का समसप्तक एवं 21 जून से 27 सितंबर सन् 2012 ई. तक शनि–मंगल का एकराशिसम्बन्ध एवं इसी मध्य शुक्र–राहु का समसप्तक भी यूरोपीय देशों एवं राष्ट्रनायकों के लिए भारी कठिन परिस्थितियों को लेकर उपस्थित होगा। ध्यान दें– चान्द्रमास श्रावण एवं कार्तिक (4 जुलाई से 2 अगस्त, 2012 ई. तक एवं अक्तूबर से नवम्बर, 2012 ई. तक) की ग्रहस्थिति विश्व के राष्ट्रों के लिए भारी आपदाओं को लेकर उपस्थित हो रही है। सितम्बर तक की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार अलकायदा के बड़े विनाशकारी हमले से सितम्बर तक भारी जनधनहानि को नकारा नहीं जा सकता, जिसके लिए यूरोपीय देशों को इस वर्ष विशेष सावधान रहना चाहिए। इस समयावधि में राजनैतिक उलटफेर, उग्रवादियों द्वारा विध्वंस व हत्याकाण्ड, सूर्य–चन्द्र की गतिजन्य भूकम्प/सुनामी–स्थिति भारी विघातक होगी। कहीं किसी विशिष्ट व्यक्ति का औहदा खाली होने से शोक भी व्याप्त होगा।

यूरोपीय देशों की कुण्डली (2) के अनुसार जनवरी, 2013 ई. में मंगल अतिचारी है। लगभग 19 मार्च, 2013 ई. तक मंगल का अतिचार चलेगा। शान्ति के नए कार्यक्रम, नई योजनाएं, अनेकत्र नए शासनाध्यक्ष बनेंगे।

1 जनवरी, 2013 ई. की यूरोपीय देशों की कुण्डली के अनुसार धनस्थान में शनि–राहु की स्थिति होने से वैश्विक अर्थव्यवस्था के सुधार के लिए प्रयास होंगे। नवमेश शुक्र एवं कर्मेश बुध की अपने–अपने भाव पर दृष्टि होने से कुछ अप्रत्याशित कार्यक्रम लागू होंगे। महान् छवि वाले देशों की अर्थव्यवस्था में बिगाड़ आने से अन्यदेश प्रभावित होंगे। जिससे महंगाई भयंकर रूप धारण करेगी और शासनतन्त्र एवं प्रशासकों की छवि बिगड़ेगी।

इस संवत् 2069 वि. में धनुसंक्रान्ति शनिवारी, मकरसंक्रान्ति रविवारी एवं कुम्भसंक्रान्ति मंगलवारी होने से यहां 'खप्पर योग' बन रहा है, जोकि प्रधान नेताओं के लिए कष्टप्रद किंवा कहीं विशिष्टनेता के लिए विघातक भी है।

18 फरवरी, 2013 ई. को शनि वक्री होकर संवत् के अन्त तक वक्र राहु के साथ एकराशिसम्बन्ध बना रहा है। इस समयावधि में यानदुर्घटना किंवा भीषण प्राकृतिक प्रकोप से भारी हानि के योग बनते हैं, भगवान् रक्षा करें।

मुस्लिम राष्ट्र

कुण्डली (1) की ग्रहस्थिति के अनुसार मुस्लिमराष्ट्र पाक की प्रभावराशि के विचार से तुलास्थ किंवा चित्रानक्षत्र का शनि उग्रवादजन्य भयंकर विस्फोटों से जनधनहानि करेगा। कहीं किसी राष्ट्रविशेष को शासनसत्ता में नाटकीय परिवर्तन से अवाक् रहना होगा–

" तुलास्थे सूर्यपुत्रे तु अग्न्युपद्रवमादिशेत्।"

किञ्च– " यदा चित्रांगतः सौरिश्छत्रभंगो भवेत्तदा।"

आगे नवंबर–दिसंबर, 2011 ई. के मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष में तिथिक्षय भी कहीं छत्रभंग, शासनपरिवर्तन एवं रक्तक्रान्ति का संकेत देता है। पाकिस्तान, अफग़ानिस्तान, इराक एवं अन्य मुस्लिमराष्ट्रों में 11 दिसंबर से 24 दिसंबर, 2011 ई. तक एवं 23 जनवरी सन् 2012 ई. से आगे विशेषतः 7 फरवरी से लेकर 25 जून, सन् 2012 ई. तक की ग्रहस्थिति राजनैतिक दृष्टि एवं प्राकृतिक आपदा (भूचाल आदि), उग्रवादजन्य हत्याकाण्ड, सीमाप्रान्तों पर सैन्य हलचल से अशान्त वातावरण, प्रतिष्ठित व्यक्तिविशेष

कुम्भसंक्रान्ति मंगलवारी होने से यहाँ खर्पर योग बन रहा है, अतः प्रधानमंत्रीजी के लिए कष्टप्रद किंवा कहीं विशिष्टनेता के लिए विघातक भी है।

हत्याकाण्ड, सीमाप्रान्तों पर सैन्य हलचल से अशान्त वातावरण, प्रतिष्ठित व्यक्तिविशेष

की हत्या आदि अवांछनीय घटनाक्रम को जन्म देगी। इससे पहले 16 मई, 2012 ई. को शनि के वक्रगति से पाकिस्तान की राशि (कन्याराशि) में आने से पाकिस्तान के शासकों को आन्तरिक स्थिति को सुलझाना कठिन होगा। अन्ततः शनि 4 अगस्त को तुलाराशि में आकर 14 अगस्त से 27 सितम्बर, 2012 ई. तक चीन व किसी अन्य राष्ट्रविशेष के प्रोत्साहन से सीमाप्रान्तों पर भारी अशान्ति का कारण बन सकता है। इस समय प्रतिवेशी (पड़ौसी) देश को सतर्क रहना अनिवार्य होगा। बलूचिस्तान किंवा अन्य किसी प्रान्तविशेष में भारी अशान्ति के योग भी इसवर्ष मंगल के वृश्चिक में आने पर (राहु–मंगल के मेल के समय) 8 नवम्बर तक गहरे हो सकते हैं। इसवर्ष शनि–मंगल एवं शनि–राहु की स्थिति के अनुसार चीन की दोस्ती पाक के पड़ौसी देश के लिए भयावह रहेगी। मुस्लिमराष्ट्र पाक, सऊदी अरब, लिबनान, इराक, ईरान, टर्की, अफग़ानिस्तान, बंगलादेश आदि राष्ट्रों में एकता की बात से यूरोपीय देशों के खिलाफ विश्वव्यापी संगठन बनाने के योग नज़र आएंगे।

कुण्डली (2) – मुस्लिमराष्ट्रों की कुण्डली (2) की ग्रहस्थिति के अनुसार लग्नेश शुक्र योजनास्थान में नीच है, योजनास्थान का मालिक बुध सूर्य और राहु के साथ वृश्चिकराशि में बृहस्पति से दृष्ट है। इस समय गुरु वक्रगति से चल रहा है एवं शुक्र के क्षेत्र में है। संकेत मिलता है कि – बहुचर्चित मुस्लिमराष्ट्र में कहीं सत्ताहस्तान्तरण हो। कहीं विस्फोट आदि उग्रवादजन्य गतिविधि से जनधनहानि हो। 28 जनवरी से संवत् 2069 वि. के अन्त तक शनि–राहु की स्थिति मुस्लिम राष्ट्रों की कुनीति से इन्हें भयावह स्थिति में लाकर खड़ा कर देगी।

संवत् 2069 वि. की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत एवं भारत–सरकार में घटित होने वाले घटनाचक्र का आकलन

"संसार का प्रत्येक परमाणु एक निर्धारित नियम से विलग नहीं हो सकता। एक सूक्ष्मतम परमाणु में यदि तनिक अव्यवस्था किंवा अनुशासनहीनता आ जाए तो विराट् ब्रह्माण्ड एक क्षण के लिए भी न टिक सके। एक क्षणिक विस्फोट से अनन्त प्रकृति अग्नि– ज्वालाओं से अतिरिक्त कुछ न रहे।" इस प्रकार समस्त घटनाचक्र एवं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को संचालित करने वाला ग्रहपुञ्ज प्रकृति किंवा ईश्वर के अनुशासित कार्यक्रम का एक निदर्शन है, जोकि– गोचर ग्रहगति के संकेतानुसार हमें प्रतिवर्ष कुछ लिखने को प्रेरित करता है।

स्वतन्त्र भारत का 65वां वर्ष

पाठक ध्यान दें कि– संवत् 2068 विक्रमी (गतवर्ष) के पंचांग में स्वतन्त्र भारत की 65वें वर्ष की कुण्डली जोकि 15 अगस्त, 2011 ई. को वर्ष– प्रवेश प्रदर्शित करती है के फलादेश में मोटे अक्षरों में पृ. नं. 31, कॉलम नं. 2 पर स्पष्ट घोषणा की गई थी कि–

"अगस्त से सितम्बर, 2011 ई. तक का समय प्रत्येक दृष्टि से भारत के विशिष्ट राजनीतिज्ञों के लिए परीक्षा की घड़ी सिद्ध होगा।"

स्वतन्त्र भारत का 65 वां वर्ष
15 अग., 2011 ई. (9 घं. 46 मि. A.M.)

7		5 बु.
8 रा.	मुंथा 6 श.	4सू.शु.
9		3 मं.
10	12	2 के.
11 चं.		1 गु.

ठीक, इस भविष्यवाणी के अनुसार श्री अन्नाहज़ारे महाभाग की 15 अगस्त से प्रारम्भ 'अगस्त क्रान्ति' से केन्द्रीय–शासन एवं सभी राजनीतिज्ञों को पारदर्शिता–नीति किंवा सुधारात्मक जनलोकपाल बिल पास करने के लिए परीक्षा की घड़ी में से गुजरना पड़ रहा है।

स्वतन्त्र भारत के 65वें वर्ष (15 अगस्त, 2011 से आगे) की ग्रहस्थिति के अनुसार दशमेश (कर्मेश) बुध व्ययस्थान में है एवं नवमेश (भाग्येश) शुक्र आयस्थान में सूर्य के साथ अस्त है। यह ग्रहस्थिति केन्द्रीय शासनसत्ता में भारी विकृतियों (कमज़ोरियों / घोटालों) के साथ राजनीतिज्ञों की मनमानी एवं प्रशासनिक व्यवस्था में सुधारात्मक आन्दोलनों को प्रज्वलित करेगी, जिससे कई केन्द्रीय प्रतिष्ठित / बहुचर्चित नेताओं की छवि खराब होगी। लेकिन सुयोग्य नेतृत्व किंवा किसी उदीयमान नए युवानेतृत्व के दखल से सितम्बर, 2011 तक स्थिति नियन्त्रण में आ सकेगी।

गतवर्ष के पंचांग में पृ. 31, कॉलम 2 पर भविष्यवाणी की गई थी कि "इसवर्ष (सं. 2068 वि. में) भारत की आर्थिक स्थिति को कमज़ोर करने के विरोधी राष्ट्र के प्रयास भी बनेंगे। जाली करंसी एवं तस्करी के व्यापार से सुरक्षित रखने के लिए सीमाप्रान्तों को सुरक्षित बनाना होगा।" ज़ाहिर है कि– जाली करंसी को भारत में लाने वाले नेपाल, पाकिस्तान के कई एजेन्ट पकड़े गए हैं एवं पकड़े जा रहे हैं।

इस भविष्यवाणी को उद्धृत करके हम सरकारी तन्त्र को पुनः आगाह कर देना उचित समझते हैं कि– आगामी वर्ष 2012 ई. में भी फेक करंसी / नकली नोटों का

प्रचलन अधिक ज़ोर पकड़ सकता है, जिससे सरकार एवं बैंक–समुदाय को कठोर अप्रत्याशित पग उठाने पर मजबूर होना पड़ेगा।

स्वतन्त्र भारत की 65वें वर्ष की ग्रहस्थिति का परिशीलन करने से संकेत मिलता है कि– 15 नवंबर से तुला राशिस्थित शनि एवं 30 नवम्बर से दिसम्बर, 2011 ई. तक गुरु के वक्रत्वकाल में नेपाल, चीन, बंगलादेश एवं पाकिस्तान के सीमाप्रान्तों पर भारतीय सेना को सुसन्नद्ध रहना होगा। अरुणाचल, आसाम, बिहार, महाराष्ट्र एवं उ.भारत के कुछ भागों को उग्रवादजन्य भारी विनाशक प्रहारों का सामना करना पड़ेगा। नवम्बर से दिसम्बर तक तथा 7 फरवरी, 2012 ई. से शनि के वक्र होने एवं शनि–मंगल के एकराशिसमबन्ध के समय 27 सितम्बर, 2012 ई. तक की ग्रहस्थिति अघटित घटनाचक्र को लेकर उपस्थित होगी। इस समयावधि में केन्द्रीय शासनतन्त्र में कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन के कारण बनेंगे। शनि–मंगल का एकराशिसम्बन्ध सीमाप्रान्तों पर असुरक्षात्मक भय बनाएगा। कोई अप्रत्याशित दुर्घटना किंवा प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त होना भी सम्भव है। फरवरी से सितम्बर 2012 ई. तक की ग्रहस्थिति में भयंकर प्राकृतिक आपदा से किंवा उग्रवादसंभव विनाशात्मक कृत्य से भारी जनधनहानि के योग बनते हैं।

स्वतन्त्र भारत का 66वां वर्ष

स्वतन्त्र भारत के 66वें वर्षलग्न के अनुसार मुंथेश शुक्र अस्त है, शुक्र चन्द्रमा के साथ मिथुनराशि में है। शुक्र, चन्द्र का शत्रु है। यह 66वां वर्ष भारतीय रूलिंग पार्टी के लिए भारी कठिनाइयों वाला है।

पाठक नोट करें– 66वें स्वतन्त्र–भारत के वर्षलग्न में लग्नेश–गुरु, छठे भाव में वृषराशिस्थ केतु के साथ राहु एवं मंगल की दृष्टि में है। अतः यह वर्ष 12 अगस्त, 2012 ई. से अप्रैल, 2013 ई. तक केन्द्रीय शासनतन्त्र में भयंकर गतिरोध वाला है। शासनतन्त्र जनता का विश्वास प्राप्त करने का भरसक प्रयास करने पर भी लाचार मालूम देगा। परिणाम दूरगामी मालूम देते हैं। भारत की वर्षकुण्डली में नवमेश सूर्य एवं दशमेश–बुध पर शनि की दृष्टि होने से यह वर्ष वरिष्ठ–नेतृत्व एवं वंशानुगत राजनैतिक सदस्यों व प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञों के लिए भारी उलझनपूर्ण एवं भयावह सिद्ध होगा।

स्वतन्त्रभारत की 66वें वर्ष की कुण्डली में उच्चस्थ–शनि के साथ मंगल का एकराशि– सम्बन्ध, एवं आगे वृश्चिक राशि में राहु–मंगल का गोचर में एकराशिसम्बन्ध भी देश में प्राकृतिक व उग्रवाद से भारी जनधनहानि के योग बनाता है। (यह समय नवम्बर, 2012 ई. तक अधिक नेष्टरूप से प्रभावी रहेगा।)

9 नवम्बर से 17 दिसम्बर, 2012 ई. तक शनि की मंगल पर दृष्टि भी सीमाप्रान्तों पर विशेषरूप से अशान्ति का कारण बनेगी। इस समय चीन–पाकिस्तान की कुनीति से देश की रक्षा हेतु सतर्क रहना आवश्यक है। इससे आगे की ग्रहस्थिति राजनीतिज्ञों एवं पार्टियों में मतभेद पैदा करने वाली है।

भारतीय गणतन्त्र का 63वां वर्ष

भारतीय गणतन्त्र के 63वें वर्ष की कुण्डली के अनुसार लग्नेश शनि उच्चस्थ कर्मक्षेत्र में है। धनस्थान में शनि का मित्र कर्मेश शुक्र बैठा है। धनेश–लग्नेश शनि पर बृहस्पति की दृष्टि भी है। स्पष्ट है, भारत की अर्थव्यवस्था आगामी 8/10 वर्षों में कई गुणा सुदृढ़ हो जाएगी। विदेशी पूंजीनिवेश एवं उपभोक्ताव्यय में वृद्धि की दृष्टि से घरेलू उत्पादन में अप्रत्याशित वृद्धि होने से विश्व के समृद्ध देशों में "भारत" नाम अवश्य होगा। आगामी दस वर्षों में यह भविष्यकथन का सत्यापन संभव होगा।

लेकिन इस संवत् 2069 वि. में जगत्लग्नकुण्डली एवं भारतीय गणतन्त्र–कुण्डली के विचार से भारत की कमज़ोर वित्तीय नीति से आर्थिक सुधारों को आगे ले जाने में भारतीय नेतृत्व अभी कुछ अशक्त रहेगा। वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए अभी और उलझनें आने वाले योग हैं। कर्ज–संकट पूरे यूरोप को चपेट में ले लेगा। भारत में भी राजस्व घाटे और उच्च मुद्रास्फीति के कारण आर्थिक सुधार–प्रक्रिया पर बुरा असर पड़ने के योग हैं।

इस संवत् की गणतन्त्र–कुण्डली के अनुसार 'बुधादित्य योग', शनि–शुक्र का 'राशिव्यत्यय' एवं शनि–गुरु का समसप्तक भारतीय गणतन्त्र की सम्प्रभुता को गरिमा प्रदान करेगा। सूर्य शासक है, गुरुदृष्ट शनि–मंगल मज़दूरवर्ग के प्रतिनिधि हैं। मुंथेश–शुक्र मित्रक्षेत्र में धनस्थ है– इस प्रकार की ग्रहस्थिति में शासक एवं शासित का तालमेल भारतीय गणतन्त्र "जनता का शासन, जनता के द्वारा, जनता के लिए" ही बना रहेगा।

इसवर्ष 16 मई, 2012 ई. से 28 सितंबर तक का समय भारतीय गणतन्त्र के लिए राजनैतिक दृष्टि, प्राकृतिक प्रकोप एवं उग्रवादजन्य विभीषिका की दृष्टि से भयावह

स्वतन्त्रभारत की 66वें वर्ष की कुण्डली में उच्चस्थ–शनि के साथ मंगल का एकराशि– सम्बन्ध, एवं आगे वृश्चिक राशि में राहु–मंगल का गोचर में एकराशिसम्बन्ध

इसवर्ष 16 मई, 2012 ई. से 28 सितंबर तक का समय भारतीय गणतन्त्र के लिए राजनैतिक दृष्टि, प्राकृतिक प्रकोप एवं उग्रवादजन्य विभीषिका की दृष्टि से भयावह

घटनाओं को लेकर उपस्थित हो रहा है। सरकार को इस समयावधि में विशेषरूप से सजग रहना होगा।

नोट करें – सन् 2012 किंवा 2013 ई. की प्रारम्भिक ग्रहगति के अनुसार शनि–राहु एवं शनि–मंगल और सूर्य की पोज़ीशन से भयंकर सुनामी की आशंका को नकारा नहीं जा सकता, जिससे भयंकर समुद्री तूफान, भूचाल आने के योग हैं। संचारव्यवस्था ठप्प हो सकती है। एक प्रलयंकारी दृश्य उपस्थित हो सकता है। यह घटना चीन, ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, रूस एवं समुद्रतटवर्ती क्षेत्रों को प्रभावित करेगी। भारत भी अछूता नहीं रहेगा।

संवत् 2069 वि. की गोचर ग्रहस्थिति का भारत पर प्रभाव

सम्पूर्ण विश्व 'कार्य–कारण सिद्धान्त' पर अपनी गतिमत्ता बनाए हुए है। ज्योतिषशास्त्र 'ग्रहस्थिति' को कारण मानकर सम्पूर्ण विश्व में संचालित घटनाचक्र का आकलन करता है।

'श्रीमद्भागवतपुराण' के चतुर्थ स्कन्ध के 11वें अध्याय के श्लोक नं. 17 में स्पष्टरूप से घोषित किया है कि–निर्गुण परमात्मा तो संसारचक्र को संचालित करने में क़ेवल निमित्तमात्र है। उसी के आश्रय से कार्य–कारणात्मक जगत् उसी प्रकार भ्रमण करता है, जिस प्रकार चुम्बक के प्रभावक्षेत्र में रहता हुआ लौहखण्ड चुम्बक के अनुरूप इधर–उधर संचलित होने पर विवश होता है–

" निमित्तमात्रं तत्रासीन्निर्गुणः पुरुषर्षभः।
व्यक्ताव्यक्तमिदं विश्वं यत्र भ्रमति लौहवत्।।"

संवत् 2069 वि. की नववर्ष प्रवेशकुण्डली

22 मार्च, सन् 2012 ई.
(20 घं. 7 मि. I.S.T.)

शुभसंवत् 2069 वि. का शुभारम्भ कन्या–लग्न में हो रहा है। अमावस गुरुवार (22 मार्च, 2012 ई.) को उ.भा. नक्षत्र एवं मीनस्थ चन्द्र के समय, 20 घं. 7 मि. पर नवसंवत् का प्रवेशकाल है।

नववर्ष–प्रवेशकालीन कुण्डली में लग्नेश बुध छठे भाव में सूर्य की सन्निधि में वक्री एवं अस्त है। यह ग्रहस्थिति इस संवत् में आकस्मिक एवं विक्षोभपूर्ण घटनाओं को जन्म देने वाली है। इस नववर्ष प्रवेशकालीन कुण्डली पर यदि गहराई से चिन्तन करें तो स्पष्ट है कि– इस कुण्डली में अष्टमेश एवं तृतीयेश–मंगल, लग्नेश एवं सरकारी तन्त्र (दशम–भाव) का स्वामी बुध तथा योजना एवं विरोधी ग्रुप (पंचम–छठे भाव) का स्वामी शनि– ये तीनों महत्त्वपूर्ण ग्रह वक्री हैं। शुक्र–गुरु ये दोनों परस्पर शत्रुभाव वाले ग्रह अष्टम भाव में एकत्र हैं– यह ग्रहस्थिति भारत के सत्तारूढ़–दलीय प्रधान नेताओं के लिए अग्निपरीक्षा की है। स्पष्ट है कि– सत्तारूढ़ कांग्रेस पार्टी बहुत शीघ्र अल्पकाल में ही एक कठिन चक्रव्यूह में फंस सकती है, जिससे बाहिर निकलना बहुत कठिन मालूम देता है। सत्तारूढ़ दल के संघटक–दल साथ छोड़ने पर मजबूर होने लगेंगे। सं. 2069 वि. के पूर्वार्ध से पहले ही 15 नवंबर 2011 ई. से प्रारम्भ शनि–गुरु का समसप्तकयोग एवं सं. 2069 वि. की प्रारम्भिक अवस्था में लगभग 20 मई, 2012 ई. तक गुरु का अतिचारी होना तथा वैशाख कृष्ण प्रतिपदा एवं अमावस (7 अप्रैल एवं 21 अप्रैल, 2012 ई.) शनिवारी होने से खप्परयोग का बनना कहीं मन्त्रिमण्डल में अप्रत्याशित रदोबदल होने का संकेत देते हैं। कहीं राष्ट्रपतिशासन की घोषणा भी संभव है।

16 मई को शनि वक्रगति से चित्रा नक्षत्र के द्वितीय चरण एवं पुनः कन्या राशि में प्रवेश करके नववर्ष प्रवेशकालीन कुण्डली के लग्न में आकर पराक्रम स्थानस्थ राहु को प्रभावित करेगा; साथ ही सत्तासीन व्यक्ति के मनोबल को कमज़ोर करेगा। कहीं नाटकीय ढंग से सत्तापरिवर्तन संभव है– "यदा चित्रां गतः सोरिशछत्रभंगो भवेत्तदा।।"

21 मई से 4 जून, 2012 ई. तक सूर्य–बुध–गुरु–शुक्र एवं केतु– ये पांचों ग्रह वृषस्थ रहेंगे। इस समय शुक्र–शनि वक्री हैं। अतः महंगाई के कारण शासकों के विरुद्ध आवाज़ उठेगी। 2 जून को शुक्र अस्त हो जाता है। देश में महंगाई से साधारणजन परेशान रहेगा। कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी, कहीं तूफान से हानि होगी। कहीं महाराष्ट्र आदि में महावृष्टि से जनधनहानि के योग भी बनते हैं–

" शुक्रस्यास्तंगमाज्ज्येष्ठे महावृष्टिः प्रजाक्षयः।"

शास्त्रानुसार शुक्लपक्ष में जब शुक्र का उदय या अस्त होता है, तो कहीं सीमाप्रान्तों पर भारी अशान्ति होती है। कहीं भयंकर युद्ध का सूत्रपात होना लिखा है। हमारे विचार से यावनराष्ट्रों में यह फल सम्भव है। कहीं उग्रवादियों से भी जनधनहानि के योग हैं– "शुक्ल पक्षे यदा शुक्रो समुदेत्यस्तमेति वा। राजपुत्र–सहस्राणां मही पिबति शोणितम्।।"

आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा (5 जून) एवं अमावस (19 जून) को– दोनों मंगलवारी होने से जून मास में कहीं भारी प्राकृतिक–प्रकोप से हानि होगी।

11 जून, 2012 ई. को शुक्र का उदय मनुष्यगण में हुआ है, जोकि सौराष्ट्र में कहीं उपद्रव, उग्रवाद से हानि, मारवाड़ में बाढ़ या अवर्षण से दुर्भिक्ष करेगा। घी, अनाज महंगे हों। सोना, चान्दी, कपास, रुई, सूत एवं पशुधन भी महंगे हों। ऐसा फल शुक्रोदय का मनुष्यगण के फलादेश में लिखा है।

21 जून, 2012 ई. को मंगल कन्या राशि में आकर 3 अगस्त तक शनि के साथ एकराशि–सम्बन्ध बनाकर देश में यानदुर्घटना से जनधनहानि करे एवं उग्रवादजन्य

अपराधों में वृद्धि से अराजकता जैसा वातावरण बन सकता है। भ्रष्टाचार, कालेधन के केस–घोटाले उजागर होंगे। प्रजातन्त्र की रक्षा करने में असमर्थ शासनतन्त्र निष्क्रिय एवं अकर्मण्य मालूम देगा। सत्तारूढ़ शासकों की चाल, चरित्र एवं चेहरा बेनकाब होने का समय दूर नहीं।

जुलाई मास में आश्लेषा नक्षत्र के बुध एवं मंगल के हस्त नक्षत्र में प्रवेश से कहीं भयंकर प्रलयकारी बाढ़ एवं किसी क्षेत्र में सूखा रहने से दुर्भिक्ष की स्थिति बन सकती है। सरकार को इस ओर ध्यान देना होगा।

श्रावण चान्द्रमास (4 जुलाई से 2 अगस्त, 2012 ई. तक की अवधि) में पांच गुरुवार होने से पश्चिमी देशों एवं प्रान्तों में भारी कष्टमय एवं उग्रवादजन्य गतिविधियों से संकटमय स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। आसाम, गुजरात, उड़ीसा, महाराष्ट्र एवं बंगाल की ओर शासकों को सीमाप्रान्तों पर शत्रुकृत गतिविधि एवं उग्रवादियों की मारधाड़ से बचाव के लिए जनसाधारण की रक्षा के लिए सचेत रहना होगा।

ध्यान दें– श्रावण शुक्लपक्ष (20 जुलाई से 2 अगस्त तक) में छठ तिथि का क्षय होने से कार्तिक मास में किसी विशिष्ट व्यक्ति का पद रिक्त होने का योग है–

" श्रावणे शुक्लपक्षे च क्षीणा काऽपि तिथिर्भवेत्।
तदा वै कार्तिके मासे छत्रभंगो भवेद् ध्रुवम्।।"

14 अगस्त से 27 सितंबर, 2012 ई. तक तुलाराशि में शनि–मंगल का एकराशि–सम्बन्ध बना रहेगा। यह समय लीबिया आदि मुस्लिम–राष्ट्रों एवं उनके शासकों के लिए भारी पड़ेगा। यह (14 अगस्त से 27 सितंबर, 2012 ई. तक) की अवधि का समय कुछ प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञों के लिए भी कष्टप्रद एवं चुनौतीपूर्ण घटनाओं को लेकर उपस्थित होगा। इस समय भारत के नेतृत्व को समझ लेना होगा कि– जिन नेताओं की राष्ट्र की समस्याओं को पहिचानने, चुनौतियों को समय पर हल करने की समझ है, वे ही पार्टी का नेतृत्व कर सकेंगे और शासन को चला सकेंगे। क्योंकि आगामी निर्वाचनों में भ्रष्टाचार को समाप्त करने, सत्यनिष्ठा एवं नैतिकता को धर्म मानकर शासन करने का बिगुल बजाने के लिए जनता कृतनिश्चय है।

तुला राशि के शनि में भारी प्राकृतिक प्रकोप एवं प्रलयकारी भूकम्प से शहरी एवं ग्रामीण सम्पदा की हानि तथा अनेक क्षेत्रों में अकाल की स्थिति बनने के योग भी हैं;–

" धान्यानां वै महर्घं नरपुर नगराः क्लेश–पूर्णाश्च देशाः
पृथिव्यां कम्पमाप्ता सकल–मुनिवरे देहपीड़ापि नित्यम्।
सर्वे ते यान्ति नाशं नरपुर–नगरास्त्वम्बुदोप्यल्प एव
चक्रावातो जनानां सुख–धन–रहितः सूर्यपुत्रे तुलास्थे।।"

अगस्त से अक्तूबर, 2012 ई. के मध्य गोचर ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है कि– आगामी लोकसभा चुनाव यथासमय न होकर आश्चर्यजनक रूप से हटकर ही घटित हो सकते हैं और संसद में नए युवा चेहरे आगे बढ़कर राजनीति को नई दिशा दे सकेंगे। कन्या किंवा तुला राशि के व्यक्ति को प्रतिष्ठित पद के योग्य मानकर राष्ट्र आगे बढ़ेगा।

शनि–मंगल के एकराशि में रहने पर आगामी वर्ष 2012–13 ई. में चीन पाकिस्तान से गठजोड़ करके भारत में जंग के हालात बना सकता है। चीनी गतिविधि तिब्बत, सिक्किम एवं नेपाल की ओर से भयावह स्थिति को पैदा करेगी। उधर कन्याराशिप्रधान पाकिस्तान काश्मीर–क्षेत्र में से सैन्यबल को सन्नद्ध करके चीनीसेना को योगदान दे सकेगा। राजस्थान के जैसलमेर से गुजरात के कच्छ के रण तक विस्तृत पश्चिमी सीमा पर पाकिस्तान व चीन से भारत के लिए खतरे की घण्टी आगामी 2/3 वर्षों में कभी भी बज सकती है, क्योंकि सन् 2014 ई. में शनि के वृश्चिक राशि में आने पर 2012/13 ई. की ग्रहस्थति के आधार पर पनप रही युद्धविभीषिका को बल मिलेगा। इस दृष्टि से हमें भारतीय सैन्यबल को सुव्यवस्थित एवं सतर्क करना नितान्त आवश्यक है–

" तुलावृश्चिकचापेषु यदा याति शनैश्चरः।
त्रिभागशेषा पृथिवी मांस–शोणित–कर्दमैः।।"

28 सितम्बर, सन् 2012 ई. को मंगल वृश्चिक राशि में आकर राहु के साथ एकराशिसम्बन्ध बनाएगा। इसी दिन दैत्यगुरु शुक्र सिंह राशि में आकर जनजीवनोपयोगी वस्तुओं विशेषतः खाने–पीने की चीज़ों में महंगाई बनाएगा। जनता का आक्रोश शासन के विरुद्ध बढ़ेगा। ध्यान दें– इस समय सोना–चान्दी आदि के मूल्यों में अप्रत्याशित तेज़ी बनेगी– "दैत्यगुरुर्यदासिंहे हेमरत्नं चतुष्पदः। धान्यानि महर्घाणि नाशं यान्ति चतुष्पदा।।" इस समय देश के किसी भाग में अवर्षण से भारी हानि के योग भी हैं।

3 से 21 अक्तूबर तक मंगल–राहु एकराशि एवं एक ही नक्षत्र (अनुराधा) में चलेंगे। अतः कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति से राजनीतिज्ञों को चिन्तित रहना होगा। महंगाई उत्तरोत्तर बढ़ने से शासनतन्त्र विवश मालूम देगा;–

" राहुरंगारकश्चैक–राशि–ऋक्षगतौ यदा।
महाभयं च सस्यानां न च वृष्टिः प्रजायते।।"

4 अक्तूबर को देवगुरु बृहस्पति वक्रगति से चलना शुरु करता है। इस समय गुरु पर मंगल–राहु की दृष्टि है तथा 29 जनवरी, 2013 ई. तक गुरु ग्रह वक्रगति से ही चलता रहेगा। इस समय शनि–गुरु का षडष्टकयोग चल रहा है। शनि भी वक्रगति से 10 अक्तूबर तक चलता रहेगा। इस समयावधि में किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त होगा। उग्रवादजन्य विभीषिकाओं से आसाम, बिहार, गुजरात, महाराष्ट्र, झारखण्ड आदि में जनजीवन त्रस्त रहेगा। अक्तूबर से जनवरी, 2013 ई. तक की समयावधि में तुला राशि में सूर्य–शनि, मंगल–राहु एवं बृहस्पति की गोचर स्थिति से कहीं भयंकर भूकम्प, समुद्रतटवर्ती भूभाग पर सुनामी किंवा ज्वालामुखी विस्फोट से भयंकर जनधनहानि किंवा प्रलयकारी दुःखद घटनाएं घटित होने के योग बन रहे हैं।

इस समय किसी प्रतिष्ठित वयोवृद्ध व्यक्ति के निधन से राजनीति में क्षोभ भी रहेगा।

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष में दशमी तिथि का क्षय एवं वृश्चिक राशि में सूर्य–राहु–शुक्र एवं बुध की स्थिति राजनीति के क्षेत्र में असामयिक एवं अप्रत्याशित घटनाक्रम को उपस्थित कर सकती है। शासनतन्त्र निष्क्रिय एवं घटनाचक्र के अनुसार असहाय मालूम देगा एवं विशेष राजनैतिक परिवर्तन आगे जल्दी ही दिखाई देंगे। विशिष्ट नेता के अस्वस्थ किंवा अचानक पद रिक्त होने से राजनीति में विशेष परिदृश्य उपस्थित होने के योग भी हैं–

" मार्गशीर्षादि मासेषु कृष्णपक्षे तिथिक्षयः।
दुःस्वास्थ्यं छत्रभंगोऽपि जायते राजविग्रहः।।"

पाठक ध्यान दें कि– 9 नवंबर से 17 दिसंबर तक शनि की मंगल पर दृष्टि रहेगी। उसके बाद मकर राशि का मंगल 27 मार्च, 2013 तक अतिचारी रहेगा। इसी मध्य शनिवारी धनुसंक्रान्ति, रविवारी मकरसंक्रान्ति एवं मंगलवारी कुम्भसंक्रान्ति होने से 'खप्परयोग' बन रहा है। यह राजनीतिज्ञों के लिए बहुत गम्भीर परिस्थितियों को जन्म देगा। महंगाई उत्तरोत्तर बढ़ती जाएगी, शासनतन्त्र की नीति से जनता का विश्वास क्षीण होगा। विरोधी राजनीतिकदल शासनतन्त्र के विरुद्ध आवाज़ उठाकर राजनैतिक लाभ उठाने का प्रयास करेंगे।

23 दिसंबर से संवत् के अन्त तक शनि–राहु का तुला राशि में रहना एवं फरवरी से संवत् के अन्त तक शनि का वक्रत्व कहीं जलीय दुर्घटना किंवा उग्रवादजन्य घटनाचक्र से कहीं जनधनहानि का संकेत देता है। इस समयावधि में तीर्थस्थानों पर सरकार को विशेष ध्यान देना होगा। ग्रहस्थिति से अनिष्ट का संकेत मिलता है।

शनिग्रह की दृष्टिविचार से 15 नवंबर, 2011 से 15 मई, 2012 ई. तक, 4 अगस्त, 2012 से संवत् 2069 वि. के अन्त तक शनि की दृष्टि पश्चिम दिशा की ओर रहेगी। इस समय की अवधि में भारत के पश्चिमी प्रान्तों एवं पश्चिमी देश–विशेष में कहीं समुद्री तूफान, भूकम्प (सुनामी) एवं कहीं मुस्लिम देशों में सत्ता–परिवर्तन के योग हैं। इस समयावधि में हवाई दुर्घटनाएं, कहीं उग्रवादियों द्वारा भयंकर जनधनहानि भी सम्भव है।

आगे ध्यान दें– 16 मई, 2012 ई. से 3 अगस्त, सन् 2012 ई. तक शनि कन्या राशि में चलेगा। इस समय शनि की दृष्टि दक्षिण दिशा की तरफ रहेगी। दक्षिणी प्रान्तों के सीमावर्ती इलाकों में विस्फोट, उग्रवादजन्य अपराधों से त्रास, हत्याकाण्ड एवं मुस्लिम राष्ट्र में कहीं सत्ता–हस्तान्तरण आदि घटनाएं घटित होंगी। प्राकृतिक–प्रकोप, तूफान आदि से भी जनधनहानि के योग हैं। लेकिन ये सभी घटनाएं प्रकृति के नियमानुसार घटित होती ही रहती हैं,– सर्वरक्षक तो प्रभु ही हैं।

भारत के प्रमुख राजनैतिक दल

कांग्रेस– कांग्रेस पार्टी के बारे में की गई भविष्यवाणी सं. 2068 वि. के पंचांग में पृ. 35 पर पढ़ें :–" संवत् 2068 वि. की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार अनेक राजनैतिक विकट समस्याओं में उलझे रहने पर भी कांग्रेस पार्टी सत्ता का केन्द्रबिन्दु रहेगी। इस संवत् की प्रारम्भिक ग्रहस्थिति के अनुसार मीनस्थ मंगल– बुध–गुरु–शुक्र के साथ कन्याराशिस्थ शनि का समतसप्तक कांग्रेस पार्टी (केन्द्रस्थ सत्तारूढ़ प्रधानदल) को भारी कठिनाइयों में उलझा देगा।"

इस अवाक् कर देने वाली भविष्यवाणी की सफलता जगज़ाहिर है। सत्तारूढ़दल केन्द्रस्थ कांग्रेस को 'अन्ना हज़ारे ' की अगस्त–क्रान्ति एवं घोटालों में फंसे कांग्रेसी नेताओं के कारण पार्टी को जिस भारी कठिनाई का सामना करना पड़ा है– यह सारा देश जानता है। इस भविष्यवाणी पर जिन्होंने श्रीमार्त्तण्ड पंचांग को प्रशंसा–संदेश भेजे हैं, हम उनके आभारी हैं।

सं. 2069 वि. की ग्रहस्थिति के अनुसार एशिया में चीन–पाक की कुटिल नीति पर भारत सरकार (कांग्रेस पार्टी) को विशेष ध्यान देना होगा। 21 जून, 2012 ई. से 3 अगस्त तक तथा 14 अगस्त से 27 सितंबर तक शनि–मंगल का एकराशि–सम्बन्ध कांग्रेस पार्टी के प्रमुख नेताओं के लिए भारी संकटापन्न स्थिति वाला है। इस समयावधि में पड़ौसी देशों से फेक करंसी के समावेश के कारण भारत की आर्थिक स्थिति एवं करंसी में विशेष परिवर्तक एवं सुधारात्मक–परिवर्तन करने पड़ेंगे। सीमाप्रान्तों पर शत्रुकृत गतिविधि से भी सावधान रहना होगा।

9 नवंबर, 2012 ई. से 17 दिसंबर, 2012 ई. तक शनि की मंगल पर विशेष दृष्टि रहेगी। इस समयावधि में सत्तारूढ़ दल को कुछ प्रान्तों में अपनी छवि सुधारने के लिए विशेष प्रयास करने होंगे। कांग्रेस किंवा अन्य किसी पार्टी के प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त होने के योग हैं। इस समयावधि में कांग्रेसनेतृत्व इस बात पर विचार करने पर मजबूर हो जाएगा कि– 'पार्टी–महासचिव ' पार्टी को सशक्त बनाने पर ध्यान दें। आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी में विशेष रद्दोबदल के योग भी बनते हैं।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार केन्द्र में सत्तारूढ़ कांग्रेस शक्तिशाली लोकपाल की स्थापना का नाम देकर भी हमारे नेता एवं नौकरशाही पर निगरानी नहीं रख सकेंगे।

आगामी निर्वाचनों में भ्रष्ट–दागदार बाहुबली व्यक्तियों को निर्वाचन क्षेत्र में उतारने पर पार्टियों में अन्तर्द्वन्द बनेगा, जिसमें कांग्रेस भी भागीदार होगी। इस वर्ष भी कांग्रेस पार्टी के कुछ बहुचर्चित मन्त्री (जोकि अपनी वकालत के ज़रिए कांग्रेस पार्टी को सर्वप्रिय बनाने का प्रयास करते रहे हैं, लेकिन कांग्रेस की छवि को धूमिल ही कर सके हैं, वे) जनाक्रो का भाजन बनेंगे एवं परिणाम दूरगामी होंगे। लोकपाल–विधेयक पर सत्तारूढ़ दल की कोई विशेष–प्रतिबद्धता नज़र नहीं आएगी। क्योंकि– भ्रष्टाचाररूपी खौफनाक शेर की पूंछ को पकड़कर उसे पिंजरे में डालना तब तक सरकार के लिए संभव नहीं होगा, जब तक वह लोकतन्त्र की आत्मा को देशभक्त नेताओं को समर्पित नहीं करती।

भारतीय जनता पार्टी– गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भाजपा पार्टी का भविष्य गतवर्ष की अपेक्षा गरिमामय मालूम देता है। भाजपा की 'स्थापना कुण्डली' के अनुसार नवमेश शनि एवं कर्मेश गुरु–दोनों 15 नवम्बर, 2011 ई. को शनि के उच्चस्थान (तुलाराशि) में आने पर गुरु–शनि का समसप्तकयोग (भाग्येश–कर्मेश का परस्पर दृष्टिसम्बन्ध) इस पार्टी के अभ्युदय का योग बना रहा है।

केन्द्रीय शासन सत्ता लकवाग्रस्त जैसी छवि के कारण आगामीवर्ष में नवम्बर, 2013 ई. से मार्च, 2014 तक की ग्रहस्थिति इस पार्टी को कुछ राहत देगी। वैसे भी, इस पार्टी की कुण्डली में शनि, गुरु, राहु की दृष्टि नवमभाव पर होने से इस पार्टी का अस्तित्व बना रहेगा। लेकिन शनि, मंगल, राहु (ये खलत्रयी) एकसाथ होने से इस पार्टी के प्रधानपद को सर्वसम्मति से स्वीकार करने में एकराय का न होना पार्टी के हित में नहीं जाता। गतवर्ष के पंचांग में भाजपा की कुण्डली पर लिखते हुए हमने स्पष्ट किया था कि– "स्त्री–नेता के वर्चस्व से यह पार्टी पुनः उदय की ओर बढ़ेगी।" ठीक ही है कि– इसवर्ष सम्मान्या श्रीमती सुषमा स्वराज के नेतृत्व में यह पार्टी उदय की ओर अग्रेसर रही है।

बहुजन समाज पार्टी– गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार इस दल के कार्यक्षेत्र का विस्तार होगा। उत्तर प्रदेश के अतिरिक्त अन्य प्रान्तों में भी इस पार्टी की जानकारी लोगों को होगी। आगामी निर्वाचनों में इस पार्टी का प्रभाव-क्षेत्र स्पष्टतः स्वीकरणीय रहेगा।

कुछ प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञ

श्रीमती सोनिया गांधी– जन्मकालिक ग्रहस्थिति के अनुसार बुध की महादशा में शनि का अन्तर अगस्त, सन् 2012 ई. तक चलेगा। बुध तृतीयेश एवं व्ययेश होकर योजना (पंचम) भाव में सूर्य के साथ क्षीण है, शनि सप्तमेश–अष्टमेश (मारकेश) होकर लग्न में दशम (कर्मस्थान)भाव को देखता है। यह ग्रहस्थिति सेहत एवं राजनैतिक–प्रतिष्ठा के लिए भयावह है। इन्हें अपनी सुरक्षाव्यवस्था को सुदृढ़ रखना चाहिए एवं राजनैतिक छवि को सुधारने के लिए भारी–भरकम प्रयत्न करने होंगे। आगे केतु की महादशा भी इनके स्वास्थ्य एवं राजनैतिक जीवन के लिए कठिन परिस्थितियों वाली ही है।

21 जून, 2012 ई. से 3 नवम्बर तक एवं 23 दिसम्बर से सं. 2069 वि. के अन्त तक की ग्रहस्थिति श्रीमती सोनिया गांधी के लिए कुछ शुभद घटनाओं को लेकर नहीं आ रही;– गोचर ग्रहस्थिति से ऐसा ज्ञात होता है– सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।

प्रधानमन्त्री डॉ. मनमोहन सिंह– हमने गतवर्ष के पंचांग में पृ. 36 पर सम्मान्य प्रधानमन्त्री श्री मनमोहन सिंह जी की ग्रहदशा के अनुसार कर्मक्षेत्र को प्रभावित करने वाली कठिन परिस्थितियों का निर्देश किया था, पढ़ें –

"डॉ. मनमोहन सिंह जी की जन्मकालिक ग्रहस्थिति के आधार पर गोचर में कन्या राशि का शनि इनके कर्मक्षेत्र को प्रभावित कर रहा है। जन्मकालिक सूर्य के साथ शनि का यह मेल कठिन परिस्थितियों का संकेत देता है। " समाजसेवी अन्ना हजारे महाभाग की अगस्त–क्रान्ति से जिन कठिन परिस्थितियों में से गुज़रना पड़ा है, यह सर्वविदित है।

अब श्री मनमोहन सिंह महाभाग राहु की महादशा के प्रभाव में चल रहे हैं। राहु में सूर्यान्तर एवं चन्द्रान्तर–मंगलान्तर आपके स्वास्थ्य के लिए विशेष कष्टप्रद हैं। जन्मकालिक ग्रहस्थिति एवं गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार सन् 2013 ई. के अन्तिम चरण

स्वीकरणीय रहेगा।

जन्मकालिक ग्रहस्थिति एवं गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार सन् 2013 ई. के अन्तिम चरण

में श्रीमन्त की सेहत की दृष्टि से ठीक नहीं। आगामी ग्रहस्थिति राजनीति से संन्यास लेने के लिए बाधित कर सकती है।

श्रीप्रणव मुखर्जी– यथालब्ध जन्मतारीख 11 दिसम्बर, सन् 1935 ई. के अनुसार इस समय केतु की महादशा में बृहस्पति का अन्तर 20 अक्तूबर, 2012 ई. तक प्रभावी रहेगा। इन्हें कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व की प्रमुख कड़ी के तौर पर जाना जाएगा। दिसम्बर, 2013 के बाद 18 जून, 2014 ई. तक की ग्रहस्थिति श्रीप्रणव मुखर्जी के लिए विशेष पदाप्ति का योग बनाती है। इन्हें 30 अक्तूबर, 2012 से 9 दिसंबर, 2013 ई. तक अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

श्रीराहुल गान्धी– कांग्रेस पार्टी के महासचिव उदीयमान युवा नेता श्री राहुल गांधी जी की जन्माङ्गगत ग्रहस्थिति के अनुसार 28 जनवरी, 2012 ई. से 28 अगस्त, 2013 ई. की ग्रहस्थिति (चन्द्र में शनि का अन्तर) राजनैतिक दृष्टि से कुछ अनुकूल नहीं। कठिन परिस्थितियां राजनैतिक जागृति में बाधक रहेंगी। कांग्रेस की छवि को सुधारने के लिए भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। इस समय अपनी सुरक्षाव्यवस्था को सुदृढ़ रखना अनिवार्य है।

ध्यान रहे– शनि–गुरु का जन्मकालीन समसप्तक एवं 2014 ई. में गोचरस्थ मिथुनराशि का गुरु इनके राजनैतिक जीवन में जागृति पैदा करने वाला है और इन्हें पार्टी का बहुमत से नेतृत्व करने का अवसर भी प्रदान कर सकता है। लेकिन आगे सन् 2016 ई. में इनकी गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार इन्हें देश का नेतृत्व करने का सुअवसर सुनिश्चित है।

गतवर्ष के पंचांग पृ. 36, कॉलम 1 पर श्री राहुल गान्धी शीर्षक के अन्तर्गत स्पष्ट घोषित किया था कि– **" कांग्रेस–सदस्यों को सुधारवादी प्रक्रिया से देश एवम् पार्टी को नई सोच एवम् नई जैनरेशन को जागृत करने पर पार्टी एवम् नेतृत्व को लाभ होगा। इस समय चन्द्रमहादशा में 28 जनवरी, सन् 2012 ई. तक प्रान्तीय क्षेत्रों में श्री राहुल गान्धी पार्टी को नई जागृति प्रदान करेंगे।"**

श्री अन्ना हजारे जी की अगस्त–क्रान्ति समस्या हल करने के पीछे इनका परामर्श ही कांग्रेस पार्टी के संकटमोचन के तौर पर जाना जाता है, यह समाचारपत्रों से विदित है। स्पष्ट है कि– श्रीराहुल गांन्धी को, देश एवं अपनी पार्टी के उत्थान के लिए गौरवान्वित करने का अवसर प्राप्त होगा।

श्री लालकृष्ण आडवानी– भाजपा के लब्धप्रतिष्ठित नेता श्री लालकृष्ण आडवानी जी की जन्मकालिक ग्रहस्थिति एवं गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार 15 नवम्बर, 2011 ई. को शनि तुला राशि में आकर जन्मकालिक मंगल, सूर्य एवं बुध के साथ व्ययस्थान में एकराशि–सम्बन्ध बनाएगा। यह ग्रहस्थिति इनके स्वास्थ्य के लिए एवं राजनैतिक जीवन के लिए शुभ नहीं। जन्मकालिक–दशा के अनुसार 22 सितंबर, 2011 ई. से 9 फरवरी, 2012 ई. तक शनि की महादशा में बुधान्तर चलेगा। बुध आयेश एवं अष्टमेश होकर व्ययस्थान में सूर्य के साथ क्षीण है। यह ग्रहस्थिति इनके स्वास्थ्य को अचानक चिन्ताजनक स्थिति में ला सकती है। पुनरपि, गोचर में उच्चस्थ शनि का गुरु के साथ समसप्तकयोग इनके राजनैतिक जीवन को भाजपा के लिए पूर्णरूप से समर्पित रखेगा। श्रीमती सुषमा स्वराज को इनका राजनैतिक–मार्गदर्शन पार्टी के लिए उज्वल परिणाम वाला ही रहेगा। भाजपा के इन वयोवृद्ध नेतृत्व का अनुभव पार्टी के लिए निस्सन्देह हितकर सिद्ध होगा। लेकिन इन्हें अपने स्वस्थ्य का विशेष ध्यान रखना चाहिए क्योंकि शनि–मंगल का मारकेश बुध के साथ व्ययस्थान में योग कभी दुर्घटनाभय से भी कष्टप्रद देखा गया है।

भारत के कुछ प्रान्त

पंजाब–इस प्रान्त की प्रभावराशि मीन एवं नामराशि कन्या है। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार 7 फरवरी, 2012 ई. को शनि वक्री होगा। 13 अप्रैल तक शनि–मंगल दोनों वक्रगति से चलेंगे। मंगल सिंह राशि में एवं शनि तुला राशि में होकर इस प्रान्त की नामराशि (कन्या) को घेरे हुए हैं, जोकि यहां की राजनीतिक स्थिति में आश्चर्यजनक परिवर्तन ला सकते हैं। 15 नवंबर, 2011 ई. से अकालीदल एवं कांग्रेस में एक दूसरी पार्टी के कार्यकर्ताओं को तोड़ने की प्रतिस्पर्धा जोर पकड़ेगी। विभिन्न पार्टियों के मेल से गठबन्धन के नए रिश्ते बनेंगे, जिससे पार्टियों की निर्वाचनक्षमता मार्च तक नया रंग लाएगी। सन् 2012 ई. के निर्वाचनों में अकालीदल या कांग्रेस की सत्ता में पुनः वापसी अकेली पार्टी के तौर पर संभव नहीं, क्योंकि गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार इस प्रान्त में तीसरामोर्चा भी पैर पसारेगा, जिससे यहां की राजनीति गठबंधन की ओर बढ़ेगी। यहां त्रिशंकु विधानसभा के ही योग हैं। संवत् 2068 वि. के अन्तिम–मासों की ग्रहस्थिति के अनुसार पंजाब के सत्ताधारी गठजोड़ के लिए भारी निराशाओं एवं कठिनाइयों वाला रहेगा।

16 मई, 2012 ई. से विशेषतः 21 जून, 2012 ई. से 13 अगस्त तक कन्या राशि में शनि–मंगल का सम्बन्ध मीनराशि (पंजाब की प्रभावराशि) को प्रभावित करेगा, जोकि यहां अनैतिक–तत्वों की वृद्धि से वातावरण को दूषित करेगा। सरकार को इस दृष्टि से सं. 2069 वि. में सावधान रहना होगा। यहां औद्यौगिक–सामाजिक एवं आर्थिक

स्थिति पर ग्रहस्थितिजन्यविपरीत प्रभाव पड़ सकता है। 14 अगस्त से 27 सितंबर तक तुला राशि में शनि–मंगल का योग भी सीमाप्रान्तों पर सुरक्षा की दृष्टि से सावधानी का ही है।

हरियाणा– इस प्रान्त की प्रभाव राशि मीन और नामराशि मिथुन है। इसवर्ष कन्याराशिस्थ शनि–मंगल का 21 जून से 27 सितंबर, 2012 ई. तक एक साथ रहना इस प्रान्त के शासकों एवं राजनैतिक पार्टियों के समक्ष भारी कठिनाइयों को लेकर उपस्थित हो रहा है। जुलाई से सितंबर तक किसी प्राकृतिक आपदा से किसानवर्ग एवं जनसाधारण को हानि पहुंचने के योग हैं। श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा महाभाग की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार समय राजनैतिक दृष्टि से सत्ता में बने रहने का योग मालूम देता है, लेकिन विपक्षी नेता श्री ओमप्रकाश चौटाला महाभाग की जन्मकालिक ग्रहस्थिति के अनुसार कर्मेश बुध की महादशा यहां सत्तारूढ़ दल के लिए भारी चुनौती एवं राजनैतिक दृष्टि से काफी आक्रामक मालूम देती है। तीसरी पार्टी श्री कुलदीप बिशनोई जी के साथ यदि चौटाला जी का कुछ राजनैतिक गठजोड़ हो तो वर्तमान सत्तारूढ़ पार्टी को सत्ता में रह पाना संभव न होगा।

9 नवंबर, 2012 ई. से संवत् 2069 वि. के अन्त तक की ग्रहस्थिति प्रतिष्ठित नेताओं के लिए कठिन परिस्थिति वाली है। इस अवधि में आश्चर्यजनक घटनाओं से जनजीवन परेशान रहेगा।

हिमाचल प्रदेश– इस प्रान्त की नामराशि कर्क एवं प्रभावराशि मीन है। प्रभावराशि का स्वामी गुरु संवत् 2069 वि. के प्रारम्भ में अतिचारी है, जोकि लगभग मई तक अतिचारी चलेगा। संवत् के प्रारम्भ से पहले ही नवंबर, 2011 ई. से लेकर मार्च, 2012 ई. के मध्य की ग्रहस्थिति यहां सत्तारूढ शासनतन्त्र के लिए चुनौतीभरी है। यहां भाजपा एवं कांग्रेस– दोनों प्रधान दलों को चुनौती देने के लिए तीसरा विकल्प खड़ा होने पर भी निष्क्रिय ही रहेगा। गोचर ग्रहस्थिति से स्पष्ट है कि– भाजपा एवं कांग्रेस– केवल ये ही दो विकल्प सत्ताप्राप्ति के लिए भिड़ेंगे। लेकिन कुछ तीसरे क्षेत्रीयदल भाजपा एवं कांग्रेस की नींद हराम कर सकते हैं, क्योंकि – संवत् के आरम्भ में गुरु (मीनराशि का स्वामी) अतिचारी है। सन् 2012 ई. के प्रारम्भिक मास सत्तारूढ दल के लिए कठिन अवश्य हैं, लेकिन श्री प्रेमकुमार धूमल के शासनकाल की उपलब्धियां एवं प्रान्तीय प्रगति को मद्देनज़र रखते हुए इन्हें जनता पुनः प्रान्त के हित में प्रतिष्ठापित करना चाहेगी।

16 मई से 4 अगस्त, 2012 ई. तक वक्र शनि–मंगल का कन्याराशि में रहना इस प्रान्त में भूकम्प, भूस्खलन, बादल फटना आदि प्राकृतिक आपदाओं से भारी जनधनहानि का कारण बनेगा। तत्पश्चात् 14 अगस्त से 27 सितंबर, 2012 ई. तक भी शनि–मंगल की गोचर स्थिति इस प्रान्त के लिए भयावह परिस्थितियों को बना सकती है; जिससे प्रधान नेतृत्व को कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा। इस समयावधि में यानदुर्घटना किंवा अन्यविध प्राकृतिक आपदा से हानि के योग भी हैं। गतवर्ष के पंचांग में पृ. 37, कॉलम 1 पर स्पष्ट घोषणा की गई थी कि–" सत्तारूढ शासक श्री प्रेमकुमार धूमल जी को यहां प्रगति, उत्तम प्रशासन एवम् नई–नई योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए विशेष अधिमान प्राप्त होगा।" ठीक इस भविष्यवाणी के अनुसार हि. प्र. एवं श्री धूमल जी को जो सम्मान प्राप्त हुआ है, यह राजनैतिकक्षेत्र में सर्वविदित है।

इस वर्ष गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार नए मण्डल की स्वीकृति, पेयजल–समस्या का समाधान, आर्थिक विकास एवं पर्यावरण–संरक्षण की दृष्टि से नेतृत्व को एवं प्रशासकीय वर्ग को यश प्राप्त होगा।

जम्मू–काश्मीर– इस प्रान्त की प्रभावराशि तुला एवं नामराशि मकर है। 14 अगस्त से 27 सितंबर, 2012 ई. तक शनि–मंगल का तुलाराशि में एकसाथ चलना यहां भारी आपदाओं को आमन्त्रित करना है। यहां मुस्लिम–बहुलक्षेत्र काश्मीर में उग्रवाद की विभीषिका विकरालरूप धारण करेगी एवं यहां के शासक क्षेत्रीय स्वायत्तता को प्रस्तुत करेंगे। इसवर्ष काश्मीरी भूभाग एवं संल्लग्न–सीमाप्रान्तों पर पाक–चीन आदि शत्रुदेशों की कुनीति के कारण भारी संकट की स्थिति बनने के योग हैं। सीमाप्रान्तों पर भारत–सैन्यबल को सतर्क रहना नितान्त आवश्यक है। पाक–अधिकृत काश्मीर गिलगित चीन को देकर भारत एवं अमेरिका के लिए भयावह स्थिति बना सकता है। संवत् 2069 वि. में शनि–मंगल, शनि–राहु एवं अन्य गोचर ग्रहस्थिति का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि– भारत के लिए सन् 2012 एवं 2013 (संवत् 2069 वि.) काश्मीर की ओर से काफी चिन्तनीय परिस्थिति बनाने वाला है।

पाठको ! प्रभुकृपा से भूत–भविष्य में जो कुछ (ग्रहगोचरवश) अनुभव किया, आपके सामने रख दिया है। जो घटित हो चुका, वह आपने देख लिया। जो भविष्य है, उस पर आप भूतानुसन्धान के आधार पर विश्वास करें–

"समस्तमेतद् गतमागतं तथा भविष्यमप्यक्षरशो यथोत्तरम्।
निबोधितं शास्त्र–परम्परावशाद् भवादृशां भारतवासिनां पुरः।।"

लेख पूर्ण होने की तिथि–
2 सितम्बर, सन् 2011 ई.
(ऋषिपंचमी)

शुभचिन्तक–

इन्दुशेखर शर्मा, संयमी शर्मा,
श्रीमार्त्तण्ड भवन, मु.पो. कुराली,
अजीत नगर (मोहाली), (पंजाब)।
PIN - 140 103,
PHONE – 0160-2641277 FAX-2641577

में यानदुर्घटना किंवा अन्यविध प्राकृतिक आपदा से हानि के योग भी हैं। गतवर्ष के पंचांग में पृ. 37, कॉलम 1 पर स्पष्ट घोषणा की गई थी कि–" सत्तारूढ़ शासक

संवत् 2069 वि. में भारत की जलवायु एवं वर्षा–विचार

– संयमी शर्मा,

" जल एवं वायु "– ये संवत् के प्रमुख स्तम्भों में से हैं। इन्हीं के आधार पर "अन्न स्तम्भ" की कल्पना की जा सकती है। जलवायु के बिना प्राणियों के जीवनाधायक अन्न की भी उपज संभव नहीं। अतः सं. 2069 वि. के जलवायु का ग्रहयोग के आधार पर यहां संक्षिप्त निर्देश नीचे दे रहे हैं। आशा करते हैं कि– यह संक्षिप्त लेख किसानों/ बाग़वानी वालों के लिए एक दिशा–निर्देशक सिद्ध होगा।

आर्द्रा नक्षत्र में सूर्य के प्रविष्ट होने के लगभग से ही भारत के प्रान्तों में वर्षा का आगमन माना जाता है। आर्द्राप्रवेश कुण्डली में चन्द्रमा अपनी कर्क राशि (जलराशि) में है। रात्रि में सूर्य आर्द्रा में एवं चन्द्र कर्कराशि में प्रवेश कर रहा है। अतः इसवर्ष महावृष्टि–योग बन रहा है–

सूर्य आर्द्राप्रवेश कुण्डली
(21 जून, 2012 ई., 22 घं. 18 मि.)

11, 9, 12, 10, 8 रा., 1, 7, गु.शु. 2 के., 4 बु. चं., 6 श., 3 सू., 5 मं.

"सूर्य-चन्द्र-समायोगो यदि स्याद्रात्रिसंभवः।
महावृष्टिकरो योगः कीर्तितोऽयं पुरातनैः।।"

आर्द्राप्रवेश के समय पुनर्वसु नक्षत्र एवम् ध्रुव योग के आधार पर भी यह वर्ष किसानों/बाग़वानी करने वाले लोगों के लिए वर्षा–जलवायु के विचार से अच्छा लाभप्रद रहेगा।

लेकिन इसवर्ष नवमेघ एवं चतुर्मेघ विचार से ' आवर्त ' नामक मेघ होने से चावल, जौ, गेहूं,चना आदि अनाजों, कपास, सरसों आदि तिलहन की फसलों को कहीं वर्षा की कमी या कहीं अतिवर्षा से हानि होने के योग भी बनते हैं। अतः व्यापारी लोग समय से पहले(Advance) सौदे न करें।

इसवर्ष रोहिणी का वास पर्वत पर होने से सेब आदि की बाग़वानी करने वालों को पर्याप्त जलवायु की कमी के कारण किंवा फलों की फसलों में रोग लगने से हानि पहुंचेगी–

"रोहिणीनाम नक्षत्रं पर्वतस्थं यदा भवेत्।
वृष्टिहानिरतदा ज्ञेया सर्वसस्य–विनाशना।।"

संवत् 2069 वि. में जलस्तम्भ 35 प्रतिशत होने से राजस्थान के मारवाड़ आदि क्षेत्रों में वर्षा की कमी रहेगी, लेकिन महाराष्ट्र, उड़ीसा, तामिलनाडु आदि में, समुद्री क्षेत्रों में तूफान, सुनामी आदि से भारी हानि के योग हैं। उत्तर भारत में वर्षा पर्याप्त हो। दक्षिण भारत में वर्षा एवं वायुवेग (समुद्री तूफान) से हानि के भी योग बनते हैं।

सं. 2069 वि. में वायुस्तम्भ का अभाव होने से पृथ्वी की अन्दरूनी पर्त में उष्णताजन्य "सीस्मोग्राफिक" तरंगो से आंधी–तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप (भूकम्प आदि) से भारत के विशिष्ट क्षेत्रविशेष में भारी जनधनहानि के योग भी बनते हैं, सरकार भारी आपदाग्रस्त अनुभव करेगी।

अब हम नीचे गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार वर्षाविचार लिख रहे हैं– यहां जिन तारीखों में हमने वर्षा का निर्देश किया है, उन तारीखों में वर्षा यत्र–तत्र अवश्य होगी। स्थानविशेष के लिए वर्षा का विचार करने हेतु सूक्ष्मविचार की आवश्यकता होती है, जोकि समयाभाव के कारण संभव नहीं है।

मार्च/अप्रैल– मार्च 26, 28, 29, 30; अप्रैल 2, 4, 5, 6, 8 से 15, 18, 19, 25, 26 एवम् 27 को आसाम, पश्चिमी राजस्थान, उ.प्र के कुछ भागों, पूर्वी उड़ीसा, भूटान, विन्ध्यप्रदेश, सिक्किम, मुम्बई में कहीं वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि एवं कहीं बादलचाल रहे। ध्यान दें– इस मास में गुरु अतिचारी है एवं शनि वक्रगति से चल रहा है, अतः उत्तर भारत में आगे वर्षा की कमी रहेगी–

"अतिचारंगते जीवे शनौ वक्रत्वमागते।
न पश्यामि तोयं वै यद्धरां धारयिष्यति।।"

मई– मई 2, 3, 5, 6, 10, 11, 13, 15, 16, 17, 18, 21, 24, 26, 29 एवं 31 मई को उड़ीसा, भूटान, शिलांग, काठमाण्डु, जम्मू–काश्मीर में वायुवेग के साथ अच्छी वर्षा हो। इन दिनों गुजरात, मुम्बई, उड़ीसा आदि में कहीं भारी वर्षा जनधनहानि–कारक होगी। उ.प्र., म.प्र., हि.प्र, हरियाणा एवं पंजाब में गर्मी पड़े, वायुवेग से कहीं हानि भी हो। कहीं आंधी–तूफान एवं खण्डवृष्टि भी सम्भव है। 16 मई के लगभग गुजरात, महाराष्ट्र में भारी वर्षा के योग हैं। यहां वैशाख (चान्द्रमास) में पांच रविवार होने से उ.भारत में बादल होकर भी वायुवेग से वर्षाकारक नहीं होंगे–

"पंचार्कयोगो वैशाखे वृष्टि–गर्भविनाशकः।"

जून– 1 से 4, 7, 8, 11 से 22, 24, 25, 26, 27, 28 एवं 29 जून को पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., उ.प्र., जम्मू–काश्मीर, चण्डीगढ़, दिल्ली, महाराष्ट्र एवं उड़ीसा में अनेकत्र वायुवेग के साथ अच्छी वर्षा के योग हैं। इन दिनों कहीं आकाशी बिजली गिरने से हानि के भी योग बनते हैं। ध्यान दें– 21 जून को मंगल कन्या राशि में आकर शनि के साथ

के साथ मेल करेगा, जो कहीं भारी वर्षा से विनाश तो, कहीं सूखा से खड़ी फसलों को भारी हानि पहुंचा सकता है।

जुलाई– जुलाई 5, 8, 9, 11, 12, 13, 15, 16, 17 एवम् 19 से 31 को पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., उ.प्र., राजस्थान, म.प्र., उड़ीसा, महाराष्ट्र, दिल्ली, चण्डीगढ़ आदि में अच्छी वर्षा के योग हैं। अनेकत्र वायुवेग के साथ वर्षा संभव है। कुछ प्रान्तों में शनि, मंगल एवं आश्लेषा नक्षत्र का बुध बाढ़ का दृश्य भी उपस्थित कर सकते हैं–

"आश्लेषायां महावृष्टिस्तु धान्यप्रदायिका।"

अगस्त– अगस्त 2 से 16, 19, 21, 22, 24, 26 एवं 28 को हि.प्र., जम्मू–काश्मीर, पंजाब, हरियाणा, उ.प्र., दिल्ली, उड़ीसा, गुजरात, महाराष्ट्र, चण्डीगढ़ आदि में व्यापक वर्षा के योग हैं। ध्यान दें– अगस्त 4/5, 14/15 एवं 28/29 के लगभग कहीं बिजली गिरने एवं आंधी–तूफान आदि से हानि के योग हैं। 14 अगस्त से आगे मंगल के तुलाराशि में आने पर एवं आगे बुध के अतिचारी होने से प्राकृतिक आपदा से कष्ट के योग बनते हैं।

सितम्बर– 1, 4, 5, 8, 11, 12, 13, 16, 17, 25, 26 एवम् 29 को उत्तरी भारत में अनेकत्र बादलचाल व कहीं खण्डवृष्टि हो। आसाम, बंगाल, नेपाल, भूटान, हि. प्र., काश्मीर में कहीं वायुवेग के साथ वर्षा हो। उ.भारत में तापमान गिरेगा। 28 सितम्बर के लगभग वायुवेग के साथ अनेकत्र वर्षा हो।

अक्तूबर– अक्तूबर 1, 3, 4, 5, 6, 8 से 11, 15, 16, 20 से 24, 26 एवम् 31 को जम्मू–काश्मीर, पंजाब, हि. प्र., एवं उ. प्र. के कुछ भागों में वायुवेग के साथ हल्की बौछारें सम्भव हैं। उत्तर भारत में शीत का प्रभाव बढ़ने लगेगा। ध्यान दें– मंगल, राहु के इस मास में वृश्चिक राशि में होने से प्रायः वर्षा का अवरोध रहेगा–

"राहुरंगारकश्चैकराशि – ऋक्षगतौ यदा।
महाभयं च सस्यानां न च वृष्टिः प्रजायते।।"

नवम्बर– 2 नवम्बर को कहीं कुछ बादल रहें। नवम्बर 6, 8, 9, 11, 15 से 19, 22, 24 एवं 26 को हिमाचल प्रदेश, जम्मू–काश्मीर में हिमपात हो। हरियाणा, पंजाब, उ.प्र. आदि में शीतलहर ज़ोर पकड़ने लगे। इन दिनों अनेकत्र वायुवेग के साथ वर्षा हो। अनेकत्र धुन्ध के वातावरण से यातायात अवरुद्ध हो।

दिसम्बर– दिसम्बर 2, 3, 6, 7, 8, 11, 14, 15, 18, 19, 23, 24, 26, 27, 28 एवम् 31 को उत्तरी भारत भयंकर शीतलहर की चपेट में आ जाएगा। धुन्ध के कारण अनेकत्र यातायात अवरुद्ध होगा। हिमाचल प्रदेश, जम्मू–काश्मीर हिमपात के कारण उत्तरी भारत से कटा–सा महसूस होगा। इन दिनों 17 से 19 दिसंबर तक कहीं वायुवेग से वर्षा भी संभव है।

जनवरी (सन् 2013 ई.)– जनवरी 4, 5, 10, 13 से 17, 21, 23, 25, 26, 28, 29 एवम् 30 को उत्तरी भारत में शीतलहर जारी रहे। मंगल के अतिचारी होने से 25/26, जन. के लगभग कहीं खण्डवृष्टि, कहीं धुन्ध का वातावरण रहे। पर्वतों के उन्नत शृंगों पर हिमपात हो।

फरवरी (सन् 2013 ई.)– फरवरी 2, 5, 6, 10, 12, 14, 15, 18, 19, 23, 24, 25, एवं 26 को मध्यप्रदेश, बंगाल, लंका के पूर्वी छोर, शिलांग व अन्य कुछ भागों में बादलचाल व बूंदाबांदी के योग हैं। उ. भारत में हवा का ज़ोर एवं वसन्त ऋतु का आगमन, ऋतु–परिवर्तन अनुभव होगा। फरवरी 18, 23, 25 को वायुवेग के साथ मौसम खुशगवार रहे।

मार्च/अप्रैल (सन् 2013 ई.)– मार्च 4, 5, 8, 9, 12, 13, 17, 18, 19, 20, 22, 24, 26 एवं 30 और अप्रैल 1, 9, 10 को बंगाल, आसाम एवम् मध्यप्रदेश में कहीं वायुवेग के साथ बादलचाल व खण्डवृष्टि हो। उत्तरी भारत में आसमान साफ रहे। गर्मी अनुभव होने लगे।

ध्यान दें– 4 मार्च के लगभग मीनराशि का मंगल वर्षाकारक है, लेकिन 8 मार्च को उ.भा. का मंगल बादल होने पर भी वर्षा नहीं होने देता–

"दुर्भिक्षमेवोत्तर–भद्रिकायां वर्षा न मेघोन्नयनेऽपि किञ्चित्।"

व्यापार–विमर्श (संवत् 2069 वि.)

(संवत् 2069 वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं एवं शेयर बाज़ारों में आने वाली तेज़ी एवम् मन्दी का मासिक विवरण)

लेखक :– इन्दुशेखर शर्मा–संयमी शर्मा,

संसार के सभी पदार्थों पर ग्रहों का नियंत्रण है, सभी पदार्थों का समावेश बारह राशियों में है। जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशिभोग करता है, तो उस राशि में समाहित सभी व्यापारिक वस्तुएं ग्रह की प्रकृति के अनुसार प्रभावित होती रहती हैं। प्रभावित वस्तुओं में परिवर्तन आते हैं और इन्हीं परिवर्तनों से बाज़ारों में घटाबढ़ी होती है, जिसे हम ' तेज़ी–मंदी ' कहते हैं। 'तेज़ी–मन्दी'– इन दो शब्दों से व्यापारी अपने भाग्य को आजमाता है। परन्तु मनुष्य का भाग्य कर्मफल किंवा ग्रहचाल के मुताबिक आर्थिक स्थिति को कभी बिगाड़ता है तो कभी सुधारता है। रथ के पहिए में लगे आरों की भांति मनुष्य को समाज में कभी ऊपर उठाता है तो कभी नीचे गिराता है – "चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः"। कहने का तात्पर्य यह है कि, जो व्यक्ति आज व्यापार में घाटा खा चुका है, वह सदा के लिए डूबा ही रहेगा--यह धारणा भ्रामक है। व्यापार में बहुत ही आश्चर्यजनक उतार–चढ़ाव आते हैं, न जाने आपको कब शीघ्र उत्तम धनलाभ हो जाए। जो व्यक्ति धनाढ्य होकर सट्टे का काम विचारपूर्वक नहीं करते, वे शीघ्र ही डूब सकते हैं । इस विज्ञान के युग में समस्त संसार का गठबन्धन हो चुका है। किसी भी राष्ट्र की क्रान्ति या राजनैतिक गतिविधि का प्रभाव तत्काल दूसरे राष्ट्र किंवा विश्वजनीन व्यापारक्षेत्र पर अमूमन देखा गया है। आजकल व्यापार के दो भाग महत्त्वपूर्ण हैं; पहला वायदा (सट्टा) एवम् दूसरा हाज़र। अमेरिकी या विश्व के किसी भी बाज़ार या घटनाओं से विशेषतः सोना, चान्दी, पैट्रोलियम आदि सभी प्रकार के बाज़ारों में जब उठापटक होती है, तो लाखों रुपयों का नफा–नुक्सान मिनटों में होता है। इसप्रकार प्रत्येक प्रमुख देश की राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक ग्रहगोचर को अच्छी तरह आंक कर ही हम इस व्यापार–विमर्श में कुछ व्यापारिक तेज़ी–मन्दी लिखने का प्रयास कर रहे हैं।

खुलकर व्यापार करने से पहिले अप्रत्याशित हानि से बचने के लिए अपनी व्यक्तिगत ग्रहचाल को ध्यान में रखना सतर्कता है । हानिप्रद ग्रह से सम्बन्धित वस्तु का व्यापार न करें। वर्ष में जो ग्रह लाभप्रद हैं, उन ग्रहों के अधिकारक्षेत्र में आने वाली वस्तुओं का ही व्यापार करें, तभी आप लाभ ले सकेंगे। हाज़र एवम् वायदा व्यापारी जो अपने व्यापारिक जीवन से निराश हो चुके हैं, उनके लिए हम यहां 'व्यापार–विमर्श' में ग्रहों का पूर्ण अध्ययन करके तेज़ी–मन्दी का मशवरा देते हैं। व्यापारियो ! निराश न हों। हमसे प्रत्यक्ष मिलें, आपकी उलझी हुई व्यापारिक समस्या का समाधान हम करेंगे ।

संवत् 2069 में गुरु, शनि, राहु, मंगल, यूरेनस, नेप्च्यून और प्लूटो आदि के चार एवम् युति–प्रतियुति के आधार पर यह स्पष्ट घोषणा की जाती है कि, इस साल जगत् में विशेष लम्बे तेज़ी एवम् मन्दे के रिएक्शन्ज़ आएंगे। इस वर्ष गुड़, खाण्ड, घी, तेल, तिलहन एवम् सोना, चान्दी, तांबा में विशेष लाभ के चांस हैं, तुरन्त फीस भेजकर टेलीफोन से सम्पर्क स्थापित करें । विदेशी व्यापारी पत्र द्वारा या टेलीफोन द्वारा सम्पर्क स्थापित करें, उत्तर मिलेगा।

संवत् 2069 वि. में व्यापारिक बन्धु दालवाना, गुड़, ग्वार, सोना, चान्दी आदि धातु; चावल, गेहूं, जौ, चना आदि अनाज; तेल, तिलहन, घी के व्यापार से धनाढ्य बन सकेंगे– यह हम इसवर्ष के योगायोगों के आधार पर घोषणा कर देना चाहते हैं। अतः प्रत्यक्ष मिलकर या वर्षभर की फीस भेजकर टेलीफोन के जरिये समय–समय पर ताजा परामर्श प्राप्त करके उत्तम लाभ प्राप्त करें। 'व्यापार–विमर्श' लेख में जिस जगह हम ताजा मशवरा हासिल करने की बात लिखते हैं, वहां व्यापारी अगर प्रत्यक्ष मिलकर मशवरा लें, तो अच्छा रहेगा । 'व्यापार–विमर्श 'लेख में हम ग्रहचाल के मुताबिक सभी व्यापारियों को प्रतिवर्ष बाज़ारों के उतार–चढ़ाव से सावधान करते रहे हैं।

संवत् 2068 वि. में वायदा व्यापारी एवम् हाजर का काम करने वाले व्यापारी रुई, दालवाना, सरसों, ग्वार, सोना, चान्दी एवम् तांबा में भयंकर तेज़ी से और आश्चर्यजनक मन्दे के Reactions से भरपूर लाभ हमारे ताजा मशवरे से उठा चुके हैं। *व्यापारी सज्जनो ! 1 जनवरी, सन् 2012 ई. से यदि आप प्रतिमास किसी भी जिन्स की दैनिक तेजी–मन्दी या वायदा–हाजर बाजार का चांस अर्थात् सोना, चान्दी, कॉपर आदि मैटल्ज़; चना, ग्वार आदि अनाज; तिल, तेल, सरसों किंवा बिनौला आदि तिलहन; जीरा, धनिया,*

हल्दी, लाल–कालीमिर्च, रुई एवम् कपास में से किसी भी जिन्स की मासिक लिखित रिपोर्ट, चाहते हैं तो फीस 5000/– (पांच हज़ार रु.) प्रतिमास, प्रतिजिन्स के हिसाब से भेजकर Advance Report प्राप्त करें। एकवर्ष की प्रतिजिन्स फीस Rs. 50,000/– (पचास हज़ार रु.) है।

Note- व्यापारियों से निवेदन है, कि वे अपनी ग्रहचाल के अनुकूल होने पर ही व्यापार करें। व्यापार में किसी प्रकार की हानि के लिए सम्पादक/लेखक जिम्मेदार न होंगे।

ध्यान दें– किसी प्रकार के नुक्सान (हानि) की जिम्मेदारी हम नहीं लेते, अर्थात् व्यापार में हानि होने पर हम जिम्मेदार न होंगे ।

संवत् 2069 वि. में ग्रहस्थिति के अनुसार तेज़ी–मन्दी का आकलन

संवत् 2069 वि. में तेज़ी–मन्दी का विस्तृत विवरण देने से पहिले हम इस संवत् के नाम, वर्ष के राजा, मन्त्री, सस्येश, धान्येश, मेघेश आदि ग्रहपरिषद् का व्यापार पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? – इसका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर देना प्रासंगिक समझते हैं, जोकि निम्नांकित है;–

संवत् 2069 वि. **'विश्वावसु'** नामक संवत्सर है। इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है–

"सर्वत्र जायते क्षेमं सर्वसस्य– महर्घता।
निष्पत्तिः सर्वसस्यानां वृष्टिश्च प्रबला पुनः।।
विश्वावसौ सुवृष्टिश्च काष्ठलौह–महर्घता ।।"

किञ्च– "अब्दे विश्वावसौ शश्वद् घोर–रोगाकुला धरा।
सस्यार्घ–वृष्टयो मध्या भूपाला नातिभूतयः।।"

अर्थात्– देश में सर्वत्र कल्याण रहे। सभी अनाज चावल, गेहूं, जौ, चना एवं दालवाना आदि में तेज़ी रहे। वर्षा पर्याप्त हो; लकड़ी, सोना, चान्दी, तांबा एवं लौह–निर्मित वस्तुओं में भी तेजी से लाभ मिले।

पृथ्वी पर रोगों से जनता परेशान हो, शासकवर्ग जनता से कर वसूली करु कर सकें, आर्थिक संकट गहराए।

संवत् 2069 वि. का राजा एवं मन्त्रीपद (दोनों पद) 'शुक्र' ग्रह को प्राप्त हैं। अधिक जलीय धान्य चावल आदि की उपज ठीक हो एवं चावल, सोना, चान्दी के व्यापारी इस वर्ष विशेष लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

इसवर्ष का सस्येश 'चन्द्र' होने से वर्षा पर्याप्त हो। दूध, घी, गुड़ पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हों। देश में धन–धान्य समृद्धि रहे।

इस वर्ष धान्येश 'शनि' होने से शासक वर्ग को विशेष परिस्थितिवश आर्थिक संकट का सामना करना पड़े। राजनीतिज्ञ शक्तिपरीक्षण के लिए उद्यत हों। कुछ प्रान्तों में वर्षा की कमी से अनेकत्र पशुचारा एवं अनाजों की फसल को हानि पहुंचे। महंगाई ज़ोर पकड़े। लेकिन **'मेघेश' गुरु** होने से प्रायः वर्षा उत्तम ही रहेगी।

इसवर्ष **चतुर्मेघ** एवं **नवमेघ** विचार से चावल, जौ, गेहूं , चना आदि अनाज, सरसों आदि तिलहन की फसलों को कहीं अवर्षण किंवा अतिवर्षण से हानि पहुंचेगी। अतः इसवर्ष अनाजों एवम् तेल–तिलहन के व्यापारी तेज़ी से विशेष लाभ प्राप्त करेंगे।

इसवर्ष रोहिणी का वास पर्वत पर होने से जल बहुत क्षीण है, जल–वायु स्तम्भ का अभाव होने से यह वर्ष देश के लिए आंधी–तूफान एवं अन्य प्रकार की भयंकर समुद्रीतूफान आदि प्राकृतिक आपदाओं को लेकर आ रहा है। शासनतन्त्र को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।

शरत्सस्यजातक–कुण्डली के अनुसार मक्का, बाजरा, ज्वार एवं गुड़ के स्टॉक से आगे अच्छा लाभ मिलेगा।

ग्रीष्मसस्यजातक–कुण्डली के अनुसार गेहूं, जौ एवं दालवाना में विशेष तेज़ी के योग बनते हैं। ज़ीरा, चावल, धनिया, मिर्च में भी इसवर्ष तेज़ी से लाभ मिलेगा।

व्यापारी ध्यान दें– संवत् 2069 वि. में *ग्रहों के वक्र–मार्ग, युति–प्रतियुति के अनुसार इस वर्ष चावल, गेहूं, चना, ग्वार आदि अनाज, गुड़, दालवाना, रुई, कपास, नरमा, मैंथा, तेल एवम् सरसों आदि तिलहन, लाल–कालीमिर्च, जीरा, लौंग में तेज़ी– मन्दी के भयंकर रिएक्शन्ज़ आएंगे।* **दूर–दराज से आने वाले व्यापारी टेलीफोन से समय निश्चित करके आएं** या सोना, चान्दी, कॉपर आदि मैटल्ज़ में से किसी भी

तांबा एवं लौह–निर्मित वस्तुओं में भी तेज़ी से लाभ मिले।

पृथ्वी पर रोगों से जनता परेशान हो, शासकवर्ग जनता से कर वसूली

आएंगे। दूर–दराज से आने वाले व्यापारी टेलीफोन से समय निश्चित करके आएं या सोना, चान्दी, कॉपर आदि मैटल्ज़ में से किसी भी

जिन्स/धातु की लिखित रिपोर्ट प्राप्त करने के लिए एक मास की फीस 5000/– (पांच हज़ार रु.) प्रति जिन्स/ प्रतिधातु के हिसाब से भेजकर आगामी मास की दैनिक तेज़ी–मन्दी की रिपोर्ट प्राप्त करें।

अप्रैल (सन् 2012 ई.)

[संवत् के आरम्भ से पहले की ग्रहस्थिति के अनुसार मार्च 24 से 28 तक तिलहन, तेल, दालवाना, जौ, चावल, रुई, कपास, हींग, में मन्दे का झोंका आएगा; सोने–चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बनेगी। 29/30 मार्च के लगभग गेहूं, चना, तिल, घी, पाट, हैसियन एवं लालमिर्च में तेज़ी बनेगी।]

1 अप्रैल को बाज़ार स्थिर रहेंगे। 2 अप्रैल को बुध वक्री पोज़ीशन में मीन राशि में स्थित सूर्य को छोड़कर कुम्भ राशि में दाखिल होगा। इस समय बुध मंगल की दृष्टि में है। इस समय घी, तेल, गुड़, खाण्ड, अनाज एवं तिलहन में तेज़ी का झटका आएगा। सोना–चान्दी में मन्दे का रुख बन कर तेज़ी बनेगी।

4 अप्रैल को बुध मार्गी गति से चलना शुरु करेगा और गुरु भरणी के तीसरे चरण में प्रवेश करेगा। इस समय बाज़ारों में अचानक मन्दा आ सकता है। सोना, चान्दी, रुई, अनाज, दालवाना, गुड़ एवं तिलहन मन्दे रहें।

6 अप्रैल को बुध मीन राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। इस समय शुक्र वृष राशि में अतिचारी एवं केतु के साथ मेल कर रहा है। शनि–मंगल वक्री भी हैं। अतः "क्रूरा वक्रा यदा काले सौम्या शीघ्रास्तु चागताः। अनावृष्टिश्च दुर्भिक्षं नृपराष्ट्र–भयंकराः।।"–प्रमाणानुसार इस समय राजनैतिक एवं किसी विशेष घटनाक्रम के अनुसार बाज़ारों में उलटफेर होगा। चान्दी, सोना तेज़; रुई, गुड़, खाण्ड, चावल एवं दालवाना में तेज़ी बने।

[मासारम्भ में शेयर बाज़ार मन्दे रहेंगे। 6 से 7 अप्रैल के लगभग तेज़ी से शेयरों में लाभप्रद स्थिति बनेगी।]

8 से 12 अप्रैल तक रोहिणी नक्षत्र का शुक्र चीनी, सोना, चान्दी, तांबा, अलसी, एरण्ड, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, दाख, छुहारा, सुपारी, नारियल में अच्छी मन्दी का झटका ला सकता है। यदि इन दिनों मन्दा आए तो स्टॉक करें, जल्दी ही लाभ मिलेगा।

13 अप्रैल को सूर्य अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में प्रवेश करेगा। इसी दिन बुध भी उ.भा. नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। अलसी, एरण्ड, घी, तिल, तेल, सोना, चान्दी, तांबा, लालचन्दन, नारियल, सुपारी, हींग, सूत, कपड़ा, मेथी, लौंग, इलायची एवं अनाज तेज़ होंगे। गुड़, खाण्ड, शक्कर में भी तेज़ी ही रहेगी।

14 अप्रैल को मंगल मार्गी होकर अतिचारी गुरु की दृष्टि में आ जाता है, अतः काली–लाल मिर्च, सूत, सोना, चान्दी, ताम्बा, जस्ता, पीतल एवं अनाजों में तेज़ी रहे। रुई में ज़ोरदार मन्दे का योग है। यह तेज़ी का दौर 17 अप्रैल तक चलेगा। 21 अप्रैल को शनैश्चरी अमा भी बाज़ारों में तेज़ी का इशारा करती है।

22 अप्रैल को रविवारी चन्द्रदर्शन होगा। चान्दी, सोना, रुई, मजीठ, नमक, कुसुम्भ एवम् सरसों, अलसी आदि तिलहन तेज़ रहेंगे। ध्यान दें– संवत् के आरम्भ से ही लगभग 20 मई तक गुरु अतिचारी है एवं शनि वक्री चल रहा है, जोकि कहीं प्राकृतिक आपदा, राजनैतिक उलटफेर से व्यापार को प्रभावित करेगा। ज़ोरदार तेज़ी या मन्दी से भारी लाभ मिलेगा।

24 अप्रैल के लगभग सोना–चान्दी के व्यापारी सावधानी से काम करें। मंगलवारी अक्षयतृतीया सोने–चान्दी में ज़ोरदार मन्दा या तेज़ी का रिएक्शन लाएगी– बाज़ार का रुख देखकर काम करें।

25 अप्रैल के लगभग मृगशिरा नक्षत्र का शुक्र गेहूं, चना, ज्वार में कुछ मन्दा बनाए; गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेज़ी बनेगी।

[13 से 17 एवम् 22 से 25 अप्रैल तक शेयर बाज़ार तेज़ रहेंगे। अप्रैल 14, 18, 26 को शेयर बाज़ार ऊपर–नीचे चलेंगे।]

26 अप्रैल को रेवती नक्षत्र का बुध एवं 27 अप्रैल को भरणी नक्षत्र का सूर्य केसर, कुसुम्भ, मजीठ, लालचन्दन, लालमिर्च, सोना, चान्दी, तांबा, मूंगा, पीतल, गेहूं, जौ, चना, चावल, मोठ, अलसी, रुई, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी में तेज़ी करेगा।

मई (सन् 2012 ई.)

मासारम्भ में बाज़ार तेज़ रहेंगे। लेकिन 2 मई को रुई एवं शेयर बाज़ारों में झटके की तेज़ी बनकर तुरन्त मन्दा आ सकता है, सावधानी से काम करें। सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड में 3 मई को तेज़ी से लाभ मिलेगा।

5 मई को बुध अश्विनी नक्षत्र एवं मेषराशि में दाखिल होकर सूर्य एवं अतिचारी गुरु के साथ मेल करेगा। इस समय इन पर शनि की पूरी नज़र है। नोट– यद्यपि मेष राशि का बुध बाज़ारों में मन्दा लाता है, लेकिन इस समय

शनि–सूर्य का समसप्तक मन्दे की जगह तेज़ीकारक ही मालूम देता है, फिर भी सावधानी से काम करें।

हमारे विचार से इस समय गेहूं, ज्वार, बाजरा, जौ, चना, अलसी, मूंग, मोठ, सोना, चान्दी आदि धातु एवम् तिल, तेल, सरसों, रुई, कपास, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दी–तेज़ी के अच्छे रिएक्शन्ज़ आएंगे। ध्यान दें– इस समय चान्दी में विशेष मन्दे का झटका आएगा। बाज़ार की यह हालत 9 मई तक चलेगी।

10 मई को पू.फा. नक्षत्र का मंगल, कृत्तिका नक्षत्र का सूर्य एवं 13 मई को भरणी नक्षत्र का बुध तिल, तेल, सरसों, मूंगफली, अलसी आदि तिलहन, घी, गुड़, खाण्ड, नमक, रुई, सोना, चान्दी, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, चावल में तेज़ी बनाएगा।

[5 से 13 मई तक शेयर बाज़ार काफी नीचे जा सकते हैं– सावधानी से काम करें।]

14 मई को सूर्य वृष राशि में आकर शुक्र–केतु के साथ मेल करेगा। यह योग अच्छी तेज़ी का है। सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रुई, सूत, बादाम, सुपारी, नारियल, तिल, तेल, सरसों आदि तिलहन में अच्छी तेज़ी बनेगी। वायदा व्यापारी तुरन्त लाभ लें तो अच्छा है, अन्यथा लाभ हाथ से निकल सकता है।

15 मई को शुक्र वृष राशि में वक्रगति से चलने लगेगा। इस समय स्वभावतः उल्टी गति से चलने वाले राहु के साथ शुक्र का समसप्तकयोग बन रहा है। शुक्र वक्री होकर बाज़ार की दिशा को बदल देता है, लेकिन मौजूदा ग्रहचाल के मुताबिक यहां हमें विशेष मन्दा मालूम नहीं देता। समझ से काम करें। हमारे विचार से घी, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं , जौ, चना, रुई एवं तिलहन में अच्छी तेज़ी से लाभ मिलेगा। फिर जल्दी ही बाज़ार मन्दे की तरफ बढ़ेंगे, तुरन्त लाभ लेने में ही अक्लमन्दी है।

16 मई का दिन अपनी डायरी में नोट कर लें। 16 मई को शनिग्रह चित्रा नक्षत्र के दूसरे चरण में प्रवेश करके फिर से कन्या राशि में दाखिल होगा। इसी दिन (16 मई को ही) बुध पूर्व में अस्त हो रहा है। ध्यान रहे– इस समय किसी विशेष राजनैतिक घटना या भयंकर प्राकृतिक प्रकोप से शेयर बाज़ार भयंकर रूप से ऊपर–नीचे होंगे; बहुत संभलकर काम करें। क्योंकि कन्या राशि हमारे देश को विशेषरूप से प्रभावित करती है, अतः भारतीय बाज़ारों में भारी उथल–पुथल की सम्भावना को नकारा नहीं जा सकता। हमारे विचार से इस समय रुई में ज़ोरदार तेज़ी रहेगी। गुड़, खाण्ड, नमक, अनाज में अच्छी तेज़ी बनकर जल्दी ही 3/4 दिन में भारी मन्दा बनेगा। पहले ही बेचें तो ठीक रहेगा। तेल, तिलहन एवं दालवाना तेज़ रहें। कन्या राशि में शनि महाक्रूर एवं अशुभ माना गया है। यह भयंकर महंगाई और पैदावार में भारी कमी कर देता है।

17 मई को गुरु कृत्तिका नक्षत्र के द्वितीय चरण एवं वृष राशि में दाखिल होकर सूर्य–शुक्र–केतु के साथ एकराशिसम्बन्ध बना लेगा। इस समय शुक्र–शनि वक्री हैं। अतः गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी के बाज़ारों में मामूली घटाबढ़ी चले। वर्षा से किसान सुखी हों।

[16 से 20 मई तक शेयर बाज़ारों में अच्छी तेज़ी बनेगी। तुरन्त लाभ लें।]

19 मई को उ.भा. में यूरेनस एवं 20 मई को कृत्तिका नक्षत्र में सूर्य एवं सूर्यग्रहण का प्रभाव बाज़ारों पर पड़ेगा। 8 दिन में चान्दी, अफीम में खास घटाबढ़ी होकर मन्दी हो। रुई तेज़ एवं अनाज का रुख भी तेज़ रहे।

21 मई को बुध वृष राशि में आकर सूर्य–गुरु–शुक्र–केतु के साथ एकराशि-सम्बन्ध बनाएगा। गेहूं, जौ, चना, चावल, मटर, रुई, कपास, सूत, अफीम, तिल, तेल आदि के भावों में तेज़ी से लाभ मिलेगा। रुई में मन्दी होकर तेज़ी बने। इस समय बुध–गुरु अस्त हैं एवं शनि वक्री है। अतः सोना–चान्दी के बाज़ारों में उठापटक चलेगी।

22 मई को मंगलवारी चन्द्रदर्शन अनाजों एवं वायदा बाज़ारों में तेज़ी करे। रुई, सोना, चान्दी में घटाबढ़ी चले।

24 मई के लगभग रोहिणी नक्षत्र में सूर्य एवं 25 मई को रोहिणी नक्षत्र का बुध सूत, सोना, चान्दी, कपास, तिल, तेल, सरसों अलसी, एरण्ड, घी, गेहूं, जौ, चना, ज्वार, ऊन, सुपारी, मिर्च, राई, चावल, गुड़, खाण्ड में तेज़ी करेंगे। लेकिन रुई में पहले तेज़ी, बाद में मन्दी करेंगे।

29 मई को गुरु उदित होगा। चान्दी, चावल, चना, दालवाना एवं सोना में मन्दी बने। इस समय तेल, तिलहन भी मन्दे हो सकते हैं।

31 मई को गुरु कृत्तिका के तीसरे चरण में प्रवेश करेगा। ध्यान दें– गुरु के उदय एवं कृत्तिका नक्षत्र में प्रवेश के समय पंचग्रही योग बन रहा है। अतः गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी के बाज़ार कुछ मन्दे होकर तेज़ी पकड़ सकते हैं। सावधानी से काम करें।

[मई 21, 22, 24 को शेयर बाज़ार तेज़ एवं 29, 30 मई के लगभग बाज़ार नीचे जा सकते हैं।]

समय रुई में ज़ोरदार तेज़ी रहेगी। गुड़, खाण्ड, नमक, अनाज में अच्छी तेज़ी बनकर जल्दी ही 3/4 दिन में भारी मन्दा बनेगा। पहले ही बेचें तो ठीक रहेगा।

[मई 21, 22, 24 को शेयर बाज़ार तेज़ एवं 29, 30 मई के लगभग बाज़ार नीचे जा सकते हैं।]

जून (सन् 2012 ई.)

[ध्यान दें– एक ही पक्ष (ज्येष्ठ शुक्ल) में गुरु उदय एवं शुक्र अस्त हो रहे हैं, जो कि कहीं प्राकृतिक प्रकोप एवं वायुवेग के साथ भारी वर्षा या अवर्षण से हानि का संकेत देते हैं, जिससे व्यापार प्रभावित होगा।]

मासारम्भ में बुध मृगशिरा नक्षत्र में आ रहा है, इस समय बुध अतिचारी है।

अतिचारी बुध का विशेष प्रभाव तिलहन बाज़ारों पर विशेषरूप से अनुभव किया गया है। इस समय बुध के साथ सूर्य, गुरु, शुक्र, केतु– ये ग्रह एकत्र हैं। गेहूं, तिलहन, तेल, उड़द, रुई, चान्दी, सोने में तेज़ी बनेगी।

2 जून को शुक्र पश्चिम में अस्त होगा। इस समय बुध भी अस्त है। शुक्र एवम् बुध– ये दो ग्रह अस्त हैं। यह योग बाज़ारों में ज़ोरदार मन्दा भी बना सकता है; समझ से काम करें। हमारे विचार से सोना, चान्दी, गुड़, सूत, कपड़ा, घी, तेल, अलसी, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली आदि तिलहन मन्दे बन सकते हैं, रुई तेज़ रहे।

3 जून को वक्री शुक्र रोहिणी में आकर 12 दिन में चान्दी, सोना आदि धातुओं, अलसी, एरण्ड, सरसों, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, दाख, छुहारा, सुपारी, नारियल एवं ऊन में मन्दा कर सकता है।

4 जून को बुध मिथुन राशि में आकर शनि की विशेष नज़र में आ जाता है। इस समय बुध अतिचारी भी है। ध्यान दें– इस स्थिति में बुध का प्रभाव ज्यादातर तिलहन बाज़ारों पर होता है। मिथुन राशि तेल–तिलहन की ही राशि है। अतः इस समय सभी प्रकार के खाद्य तेल, एरण्ड, मूंगफली, सरसों, बिनौला, तिल, सोयाबीन आदि में अच्छी तेज़ी बन सकती है। सोना–चान्दी के बाज़ार कुछ कमज़ोर रहें। 6 जून तक तेज़ी का प्रभाव उत्तम–मध्यमरूप से होगा।

7 जून को बुध मिथुन राशि में उदित होगा। रुई, वस्त्र एवं शेयर बाज़ारों में 15 दिन में अच्छी मन्दी बने। इसी दिन रात्रि में सूर्य मृगशिरा एवं बुध आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। इसका प्रभाव 10/11 जून को बाज़ारों पर पड़ेगा। गेहूं, तिल, उड़द, जौ, चना, मूंग, मोठ, सोना–चान्दी, रुई, सूत, रेशम, सण, कपूर, कस्तूरी, चन्दन में सामान्य तेज़ी के बाद मन्दी बने।

11 जून को शुक्र पूर्व में उदित होगा। रुई, सूत, चान्दी, चावल, घी एवं सोना तेज़ हों।

14 जून को सूर्य मिथुन राशि में आकर बुध के साथ एकराशि सम्बन्ध बनाएगा, जिससे यहां बुध तेज़ीकारक हो जाता है। पाट, बारदाना, रेशम, सूत, कपास, रुई, लोहा, सोना, चान्दी, सरसों, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, मूंग, उड़द, गेहूं, चना, चावल आदि में अच्छी तेज़ी से लाभ मिले।

14 जून को ही मंगल उ.फा. नक्षत्र में प्रविष्ट एवं गुरु उदित हो रहा है, जोकि गुड़, खाण्ड, शक्कर, ज्वार, गेहूं, जौ, चना, मसूर, सरसों, तिल, तेल, घी, नमक, शहद, सोंठ, मिर्च, पीपल, रुई, सूत, वस्त्रों में मन्दी बनाएगा।

15 जून को बुध पुनर्वसु में आएगा, जोकि 8 दिन में चान्दी, रुई, कपास, सूत, सण में काफी मन्दा करेगा।

[4 से 6 जून तक शेयर बाज़ार तेज़, 7 से 10 तक मन्दे और फिर 14, 15 जून को शेयर बाज़ार तेज़ रहें।]

17 जून को राहु अनुराधा–2 एवं केतु कृत्तिका–4 में आकर मिर्च, कपूर, चन्दन, गुड़, तेल, नमक एवं कपास में तेज़ी करेंगे। 19 जून को भौमवती अमावस भी बाज़ारों को तेज़ी की ओर ले जाएगी। 20 जून तक तेज़ी से लाभ लें।

21 जून को सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में, मंगल कन्याराशि में एवं इसी दिन बुध कर्क राशि में आ रहा है। ध्यान दें– मंगल कन्या राशि में आकर शनि के साथ एकराशि–सम्बन्ध बनाएगा। इस समय सरकारी पॉलिसी के कारण बाज़ारों में तेज़ी बन सकती है। सूत, कपास, खल, अलसी, एरण्ड, मोती, गेहूं, चावल, चना, जौ तेज़ रहें। रुई में 15 टका की मन्दी, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी हो। गुड़, खाण्ड, घी, दूध, तेल, मूंगफली, सरसों पहले कुछ तेज़, बाद में मन्दे रहें। कन्याराशि के मंगल का प्रभाव 22/23 जून तक चलेगा। रुई, चान्दी, सोना, सूती एवं ऊनी वस्त्र, अलसी, गेहूं, मक्का, गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं लालमिर्च में अच्छी तेज़ी सम्भव है।

24 जून को पुष्य नक्षत्र का बुध बाज़ारों को मन्दे की तरफ ले जा सकता है। हमारे विचार से 10 दिन में सोना, चान्दी, रुई में झटके की मन्दी व्यापारियों को परेशान कर सकती है। इस समय माल खूब स्टॉक करें। यह मन्दे की चाल 25 से 30 जून तक चल सकती है। सावधानी से काम करें।

[जून 17 से 23 तक शेयर बाज़ार तेज़ रहें। 24 से 30 जून तक शेयर बाज़ार ज़ोरदार ऊपर–नीचे चलेंगे।]

जुलाई (सन् 2012 ई.)

मंगल का कन्या राशि में शनि के साथ मेल चल ही रहा है। कन्या राशिस्थ शनि–मंगल जब एकत्र होंगे तो –"तदा युद्धाकुला पृथ्वी धनधान्य–विवर्जिता।"– प्रमाणानुसार विश्व में कहीं अघटित घटनाचक्र चलेगा और राजनैतिक उलझनें विषम होंगी, जिसका असर व्यापारक्षेत्र पर पड़ेगा।

3 जुलाई को मंगलवारी पूर्णिमा भी अनाज, दालवाना, तिलहन, मैंथा ऑयल एवं पैट्रोलियम में तेज़ी करे।

5 जुलाई को सूर्य पुनर्वसु नक्षत्र में आ रहा है। इस समय सूर्य एवं राहु– ये दोनों मंगलयुत शनि की नज़र में हैं। सूर्यग्रह प्रत्येक वायदा एवं हाज़र बाज़ारों को प्रभावित करता है। लेकिन विशेषरूप से रुई, एरण्ड, मूंगफली, अलसी, सरसों, सूरजमुखी आदि तिलहन, तेल, अनाज, सोना, चान्दी, हल्दी, काली मिर्च एवं शेयर बाज़ारों पर सूर्य का प्रभाव अनुभव किया गया है। अतः इस समय बाज़ारों में ज़ोरदार तेज़ी बन सकती है। ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, चावल, नमक, हरड़, सुपारी, नारियल, केसर, मजीठ, सोंठ, गुग्गुल, करयाणा भी तेज़ रहेंगे। यह तेज़ी लम्बी चल सकती है।

8 जुलाई को बुध आश्लेषा नक्षत्र में आकर " आश्लेषायां महावृष्टिस्तुष-धान्यसमुदभव :"– प्रमाणानुसार वर्षा बहुत होगी। 15 दिन में तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूंग, मोठ, मूंगफली में तेज़ी बनेगी।

11 जुलाई को हस्त नक्षत्र का मंगल दालवाना, चावल, घी, गुड़, खाण्ड, नमक में तेज़ी करे। 13 जुलाई को वक्री यूरेनस भी तेज़ी करेगा।

15 जुलाई को बुध वक्री होगा। वायदा बाज़ार का रुख अचानक बदल सकता है। सावधानी से काम करें। 24 दिन में घी, गुड़, शक्कर, खाण्ड तेज़ होंगे। गेहूं, जौ, चना आदि अनाज अचानक मन्दे हों।

[3 से 15 जुलाई तक वायदा बाज़ार तेज़ रहेंगे। इन दिनों शेयर बाज़ारों में भी तेज़ी का रुख रहेगा।]

16 जुलाई मंगलवार को सूर्य कर्कराशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा एवं 16 जुलाई को ही गुरु रोहिणी के द्वितीय चरण में आकर रुई, सूत, बादाम, सुपारी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों, चान्दी एवं सोना तेज़ करेगा। गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर, उड़द, मूंग, चावल का रुख मध्यम या मन्दा रहे। खजूर, छुहारा, हल्दी मन्दे रहें।

[17/18 जुलाई को बाज़ार अस्थिर रहेंगे।]

19 जुलाई को सूर्य पुष्य नक्षत्र में आकर तेल, तिलहन, सरसों, मघ, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, सुपारी, सोंठ, गुग्गुल, मोम, हींग, हल्दी, लाख, सण, ऊनीवस्त्र, सिक्का, सोना–चान्दी में तेज़ी बनाए। रुई में पहले तेज़ी, बाद में मन्दी रहे।

20 जुलाई को शुक्रवारी चन्द्रदर्शन तिलहन, अनाजों में मन्दा; चान्दी, सोने में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी करे।

21 जुलाई को बुध वक्रगति से पुष्य नक्षत्र में दाखिल होगा। इस समय सूर्य भी पुष्य नक्षत्र में ही है। परिणामस्वरूप, 10 दिन में सोना, चान्दी मन्दे हों, रुई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बने। हीरे, जवाहरात एवं ऊनी कपड़े तेज़ रहें।

इसी दिन (21 जुलाई को ही) बुध भी पश्चिम में अस्त हो रहा है। रुई में झटके के साथ मन्दा आए। चान्दी तेज़ रहे। पाट, हैसियन एवं शेयर बाज़ार मन्दे हों।

[16 से 20 जुलाई तक वायदा बाज़ार तेज़ रहें। इन दिनों शेयर बाज़ार भी ठीक रहें। 21 जुलाई को शेयर बाज़ार मन्दे रहेंगे।]

22 जुलाई को शुक्र मृगशिरा नक्षत्र में आकर गेहूं, चना एवं ज्वार में मन्दा करे। गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज़ रहेंगे।

23 से 30 जुलाई तक अनाज, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना, चान्दी, मैंथा ऑयल एवं दालवाना के व्यापारी तेज़ी से लाभ ले सकेंगे।

31 जुलाई को शुक्र मिथुन राशि में आकर शनि की नज़र में आ जाता है। शुक्र विशेषतया गुड़, खाण्ड, पाट, बारदाना, तिलहन एवं चान्दी के बाज़ारों पर अपना प्रभाव रखता है। शुक्र अकेला कभी–कभी ज़ोरदार मन्दी बनाता है। ध्यान दें– अगर मन्दे का ट्रैंड चल रहा हो तो शुक्र मन्दी को बल देता है और बाज़ारों में ज़ोरदार मन्दे का धमाका करता है। तेज़ी के ट्रैंड में शुक्र साधारण तेज़ी को बल देता है। इस समय सरकार की नीति (**Export&Import**) से बाज़ारों में ज़ोरदार तेज़ी या मन्दी बनेगी, सावधानी से काम करें। हमारे विचार से रुई, कपास, सूत, वस्त्र, बारदाना, पाट, एरण्ड, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार में काफी मन्दी बन सकती है। चान्दी, अलसी, गुड़ एवं घी में घटाबढ़ी रहे।

बादाम, सुपारी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों, चान्दी एवं सोना तेज़ करेगा। गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर, उड़द, मूंग, चावल का रुख मध्यम या मन्दा रहे। खजूर, छुहारा, हल्दी मन्दे रहें।

से रुई, कपास, सूत, वस्त्र, बारदाना, पाट, एरण्ड, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार में काफी मन्दी बन सकती है। चान्दी, अलसी, गुड़ एवं घी में घटाबढ़ी रहे।

लेकिन गेहूं, जौ, चना, चावल, तेज़ रहें। फिर भी बाज़ार के रुख को देखकर काम करें–

"मिथुने च यदा शुक्रो महर्घं तत्र जायते।
यव–गोधूम–चणकाःशालिश्चैव विशेषतः।।"

अगस्त (सन् 2012 ई.)

मासारम्भ में यदि बाज़ार मन्दे बनें तो तुरन्त माल पकड़ें। 2 अगस्त को सूर्य आश्लेषा नक्षत्र में आएगा। सूर्य, बुध दोनों कर्कराशि में एक–साथ हैं। यह योग तेज़ीकारक है। सोना, चान्दी, रुई, बिनौला, गेहूं, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिल, तेल, सरसों, एरण्ड, अलसी, मिर्च, मजीठ एवं नील तेज़ हों।

3 अगस्त को गुरु रोहिणी–3 में एवं इसी दिन मंगल चित्रा में आकर तिल, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, गेहूं, जौ, चना, चावल, सोना, चान्दी, तांबा एवं पीतल तेज़ करेंगे।

ध्यान दें– 4 अगस्त को शनि चित्रा नक्षत्र के तृतीय चरण एवं तुला राशि में प्रवेश करेगा। तुलाराशिस्थ शनि मंगल, राहु द्वारा खलाक्रान्त है। तुला राशि वायदा व्यापार की राशि है। शनि का प्रभाव रुई, बिनौला, एरण्ड, कपास, सरसों, सूरजमुखी, अलसी आदि तिलहनों पर होता है। खड़ी खेती प्राकृतिक प्रकोप से खराब हो सकती है। ध्यान रहे– तुला राशि का शनि कई बार मन्दे का रिएक्शन ला सकता है। सावधानी से काम करें। हम व्यापारी बन्धुओं को आगाह करना चाहते हैं कि– यदि 4 अगस्त के लगभग वायदा या हाज़र बाज़ारों में मन्दा आए तो तुरन्त भरपूर स्टॉक करें। 14 अगस्त के बाद उत्तम लाभ मिलेगा। गुड़, खाण्ड, अनाज, दालवाना, घी, दूध, रुई, चान्दी, तेल, तिलहन व सोने में इस समय हमें तेज़ी मालूम देती है। ध्यान दें– यदि मन्दा आने लगे तो तुरन्त अच्छा स्टॉक करें। जब शनि तुला राशि के 15 अंशों पर विचरण करने लगे तो रुई में झटके की मन्दी बन सकती है–नोट कर लें।

6 अगस्त को प्लूटो मूल नक्षत्र के चतुर्थ चरण में आ रहा है। इस समय शनि की विशेष दृष्टि प्लूटो पर है। रुई, कपास, चान्दी, तिलहन, रसकस, सैंधा नमक, दालवाना एवं अन्य अनाज तेज़ रहेंगे।

7 अगस्त को बुध पूर्व में उदित होगा। रुई में पहले मन्दी होकर 25 दिन में झटके की तेज़ी बनेगी। गेहूं, चना, घी, तिल, पाट, हैसियन, लालमिर्च में भी तेज़ी बने।

8 अगस्त को बुध मार्गी एवं शुक्र आर्द्रा में आकर रुई में पहले मन्दी, बाद में तेज़ी करेगा। चान्दी में घटाबढ़ी होकर तेज़ी बने। गेहूं, जौ, चना, अनाज तेज़ एवं रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपूर, चन्दन, अगर आदि सुगन्धित चीज़ों में मन्दा बनने का योग है।

[2 से 7 अगस्त तक वायदा एवं हाज़र बाज़ार प्रायः तेज़ रहें। इन दिनों शेयर बाज़ार भी प्रायः तेज़ रहेंगे। 8 अगस्त को अचानक मन्दा आ सकता है।]

8 से 13 अगस्त तक बाज़ार अनिश्चितरूप से ऊपर–नीचे चलते रहेंगे।

14 अगस्त को मंगल तुला में आकर शनि के साथ एकराशिसम्बन्ध बनाएगा। इस समय गेहूं, चना, ज्वार, बाजरा, दालवाना, घी, पाट, हैसियन, लालमिर्च एवं कपास में भी तेज़ी रहे।

16 अगस्त को सूर्य मघा/सिंह में आकर रुई, मूंग, ज्वार, बाजरा, सरसों, तिल, एरण्ड, दाख, मिर्च, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिलहन, तेल, रत्न एवं लालरंग की चीज़ों में तेज़ी से अच्छा लाभ करवाएगा। इस समय शेयर बाज़ार मन्दे रहेंगे।

[14 से 16 अगस्त तक वायदा–व्यापार में तेज़ी से लाभ मिलेगा। ध्यान दें– 14 अगस्त से 19 अगस्त के लगभग तक शेयर बाज़ारों में ज़ोरदार मन्दा भी आ सकता है– सावधानी से काम करें।]

19 अगस्त को राहु अनुराधा–1 और केतु कृत्ति.–3 में आकर मिर्च, केसर, चन्दन, कपूर, अफीम, गुड़, खाण्ड, सोने, चान्दी, तांबे में तेज़ी करे।

21 अगस्त को बुध आश्लेषा नक्षत्र में आएगा एवं 22 अगस्त को शुक्र पुन. नक्षत्र में पदार्पण करेगा। 15 दिन में तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूंग, चावल, मूंगफली, बिनौला में तेज़ी ज़ोर पकड़ने लगेगी। सोना, चान्दी, रुई, कपास, सूत में मन्दा रहे।

24 अगस्त को मंगल स्वाती नक्षत्र में दाखिल होगा। मंगल ग्रह मौसम, हवा, बरसात की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। मंगल–शनि के योग से यहां व्यापारिक चीज़ों में ज़ोरदार घटाबढ़ी चलेगी। रुई, ऊनीवस्त्र, गेहूं, तिल, तेल, तिलहन, गुड़, शक्कर, लालमिर्च एवं सोने में अच्छी तेज़ी होगी।

26 अगस्त को गुरु रोहिणी के चतुर्थ चरण में आकर ज्वार, गेहूं, जो, चना, मसूर, सरसों, तिल, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, लवण, शहद, सोंठ, मिर्च, पीपल,

रुई, सूत, वस्त्र में मन्दा बनाएगा।

28 अगस्त को बुध पूर्वदिशा में अस्त होकर मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में दाखिल होगा एवं इस समय यह सूर्य के साथ मेल करेगा। गेहूं , जौ, चना, सूत, रुई, वस्त्र, चान्दी, ऊनीवस्त्र एवं इमली आदि खट्टे पदार्थ तेज़ होंगे। कपूर, गुड़, खाण्ड आदि रसपदार्थ मन्दे हों। 28 अगस्त को सोने में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बने।

30 अगस्त को सूर्य पू. फा. में आकर ज़ीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूं, ज्वार, बाजरा, चावल, ऊन, रुई एवं सूत में तेज़ी करे। चान्दी में घटाबढ़ी चले।

[19 से 21 अगस्त तक बाज़ार नरम रहें। शेयर बाज़ार भी कुछ गिरें। लेकिन 24, 25 अगस्त को सभी बाज़ार तेज़ रहें, 26 से 29 अगस्त तक बाज़ारों में उठापटक रहे, अन्त में तेज़ हों।]

सितम्बर (सन् 2012 ई.)

मासारम्भ में सिंह राशि में सूर्य के साथ स्थित बुध अतिचारी है। जब भी बुध अतिचारी होता है तो यह सूर्य के साथ मिलकर विशेष बली हो जाता है। हमारा अनुभव है कि– अतिचारी बुध तिलहन बाज़ारों पर ज़ोरदार घटाबढ़ी करता है, अतः तेल एवं तिलहन में तेज़ी का व्यापार करके लाभ लें।

1 सितम्बर को शुक्र कर्कराशि में प्रवेश करेगा। रुई में पहले अच्छी मन्दी रहे, बाद में तेज़ी से लाभ मिले। अलसी, एरण्ड, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में अच्छी तेज़ी से लाभ मिले। चान्दी, गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर मन्दे रहें। तेल, तिलहन एवं गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेज़ी 3 सितम्बर तक वायदा व्यापार में चलेगी।

4 सितम्बर को पुष्य नक्षत्र का शुक्र एवं पू. फा. नक्षत्र का बुध लाख, चमड़ा, कपूर, पारा, शिंगरफ, अफीम, गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं अनाजों में मन्दा करेगा, लेकिन रुई, सूत, सण, रेशम, ऊन एवं धान में यह तेज़ी करे।

[1 से 3 सितम्बर तक वायदा एवं शेयर बाज़ार तेज़ रहें। 4 से 7 सितम्बर तक बाज़ार ऊपर–नीचे चलेंगे।]

8 सितम्बर को वक्री यूरेनस उ.भा.–3 में आकर अनाज, चान्दी, चन्दन, कुसुम्भ में तेज़ी करे।

11 सितम्बर को उ.फा. नक्षत्र में बुध एवं 12 सितम्बर को शनि चित्रा के चतुर्थ चरण में आने को हम तेज़ी का फैक्टर मानते हैं। तेलवाना, रुई, कपास, पाट, बारदाना आदि बाज़ारों में बहुत बड़ी तेज़ी का ऐलान जल्दी ही कर सकते हैं। ध्यान दें– आगे 13 सितम्बर से सूर्य, बुध उ.फा. में ही चलेंगे। अतः गुड़, खाण्ड, उड़द, मूंग, मोठ, मसूर, अरहर आदि अनाजों एवं तेल, तिलहन में तेज़ी हो। इस समय रुई, चान्दी एवं शेयर बाजार मन्दे रहें।

13 सितम्बर को सूर्य उ.फा. में और बुध कन्या राशि में प्रविष्ट होगा। गेहूं, जौ, चना, चावल, उड़द, ज्वार, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, कपास, रेशम, सूत, सोने, चान्दी, लोहे, तांबे, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, सुपारी, नारियल, मूंज, नील एवं हल्दी में तेज़ी से लाभ रहे।

ध्यान दें– यहां कन्या राशि में अस्त बुध पर गुरु की विशेष दृष्टि है। अतः कदाचित् 13 सितम्बर को पहले तेज़ी चले तो सावधान रहें। 14 सितम्बर के लगभग ज़ोरदार मन्दा भी आ सकता है। सावधानी से काम करें। इस पोज़ीशन में माल पकड़ें या हर मन्दी में तेज़ी का काम करके लाभ लें।

14 सितम्बर को विशाखा नक्षत्र का मंगल रुई, कपास, गेहूं में तेज़ी कर सकता है।

[8 से 13 सितम्बर तक वायदा बाज़ार उत्तम–मध्यमरूप से तेज़ रहें। शेयर बाज़ार सामान्यतया तेज़ लेकिन 14 सितम्बर को मन्दे रहें।]

16 सितम्बर को सूर्य कन्या राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। बुध–सूर्य का एक राशि में होना तेज़ीकारक है। बुध बालग्रह है। झूठी–सच्ची अफवाहें फैलाकर बाज़ारों में तेज़ी मन्दी के रिएक्शन्ज़ लाता है, अतः बाज़ार के रुख को देखकर काम करें। रुई, नारियल, सुपारी, तिल, तेल, मजीठ एवं लाल चीज़ों में तेज़ी बने।

16 सितम्बर को ही आश्लेषा नक्षत्र का शुक्र रुई, तूअर, चावल में मन्दी का वातावरण बना सकता है।

17 सितम्बर को चन्द्रवारी चन्द्रदर्शन है। वस्त्र, रुई, सूत, सोना, चान्दी एवं तेल में घटाबढ़ी रहे। इस समय यदि अनाज सस्ता हो तो स्टॉक करें, आगे लाभ होगा।

18 सितंबर को प्लूटो मार्गी होकर एवं 19 सितम्बर को बुध हस्त में आकर गेहूं आदि अनाजों में मन्दा बनाए।

[16 से 25 सितम्बर तक शेयर बाज़ार डावांडोल रहें। वायदा बाज़ार भी अनिश्चित चलें।]

8 सितम्बर को वक्री यूरेनस उ.भा.-3 में आकर अनाज, चान्दी, चन्दन, कुसुम्भ में तेज़ी करे।

[16 से 25 सितम्बर तक शेयर बाज़ार डावांडोल रहें। वायदा बाज़ार भी अनिश्चित चलें।]

26 सितंबर को हस्त नक्षत्र का सूर्य 15 दिन में गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, गुड़, खाण्ड, कपास, रुई सूत, जूट, घास, लकड़ी, नमक, हरड़, हींग, धनिया, हल्दी एवं बारदाना में तेज़ी बना सकता है।

27 सितम्बर को चित्रा नक्षत्र का बुध रुई, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी करेगा। इस समय अनाजों में भी कुछ तेज़ी रहेगी।

28 सितम्बर को बुध पश्चिम में उदित होगा; इसी दिन (28 सितम्बर को) मंगल वृश्चिक में, शुक्र मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में दाखिल होगा।

यहां ध्यान दें– मंगल वृश्चिक राशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा। इस समय राहु–मंगल पर गुरु की पूर्ण दृष्टि है और शुक्र सिंह राशि में आकर वर्षा को रोक देता है।

इस समय हमारे विचार से तांबा, सोना, चान्दी आदि धातु ; गेहूं, जौ आदि अनाज एवं दालवाना, रुई, लालचन्दन, मजीठ, लालमिर्च, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेज़ी रहे। रुई में पहले 8/10 दिन मन्दी के बाद तेज़ी बने।

[26 से 30 सितम्बर तक वायदा बाज़ार तेज़ एवं शेयर बाज़ार भी तेज़ी की तरफ रहें।]

अक्तूबर (सन् 2012 ई.)

व्यापारी ध्यान दें– इस मास के आरम्भिक दिनों में ही मंगल अनुराधा नक्षत्र में आकर राहु के साथ एकराशि एवं एक–नक्षत्रसम्बन्ध बनाने लगा है। यह योग वायदा एवं हाज़र के व्यापार में आगे अच्छी तेज़ी का संकेत देता है–

"राहुरंगारकश्चैक– राशि– ऋक्षगतौ यदा।
महाभयं च सस्यानां न च वृष्टिः प्रजायते।"

अनाजों, पशुचारा में तेज़ी बने। वर्षा का अवरोध रहे।

मासारम्भ में 1 अक्तूबर को बुध तुलाराशि में आकर शनि के साथ मेल करेगा। इस योग में तेलवाना, पाट, बारदाना–बाज़ार विशेषरूप से प्रभावित होंगे। हमारे विचार से रुई, गुड़, खाण्ड, सोना एवं अफीम तेज़ रहेंगे।

ध्यान दें– तुला राशि का बुध चान्दी, तेल, तिलहन में यद्यपि मन्दा करता है, परन्तु यहां शनि के साथ बुध का मेल होने से हमें चान्दी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला एवं मूंगफली में कुछ तेज़ी के ही आसार लगते हैं; बाज़ार का रुख देखकर समझ से काम करें।

3 अक्तूबर को मंगल अनुराधा में आ रहा है, राहु के भी इसी राशि–नक्षत्र में होने से रुई, लालमिर्च एवं लालरंग की वस्तुओं में तेज़ी रहेगी।

4 अक्तूबर को गुरु वक्री हो रहा है। इस समय वृषराशिस्थ गुरु के साथ स्वभावतः वक्री राहु का समसप्तक योग बन रहा है। परिणामतः सोना–चान्दी आदि धातु व ऊनीवस्त्र, घी, तेल तेज़ रहेंगे। गेहूं, जौ, चना, चावल आदि अनाज एवं दालवाना के व्यापारी इन दिनों स्टॉक करें। आगे 2/3 मास में ही भारी लाभ मिलेगा।

5 अक्तूबर को बुध स्वाती में आकर 8 दिनों में रुई, तेल, तिलहन में मन्दा बना सकता है।

8 अक्तूबर को तुला–राशिस्थ शनि अस्त हो रहा है। इस समय वस्त्र, रुई, शेयर एवं सोना मन्दा रहे। अनाजों में तेज़ी रहे।

9 अक्तूबर को शुक्र पू.फा. में आकर 14 दिन में गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग, चना में कुछ मन्दा करे। 10 अक्तूबर को सूर्य चित्रा नक्षत्र में आकर 15 दिन में रुई, सूत, सोना,चान्दी, मोती आदि रत्न, गुड़, खाण्ड, अरहर, गेहूं, चना, तिल, नारियल, सण, केसर, कपूर एवं लालमिर्च आदि में तेज़ी करेगा।

11 अक्तूबर को शनि स्वाती नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। इस समय शनि अस्त है। शनि ग्रह के अधिकारक्षेत्र में तिलहन एवं शेयर बाज़ार आते हैं। अलसी, एरण्ड, बिनौला, सरसों, मूंगफली एवं खाद्य तेलों पर शनि का प्रभाव हमने अनुभव किया है।

शेयर बाज़ारों में लोहे के शेयर टाटा–लोकोमोटिव, रिलायन्स आदि के शेयर प्रभावित होते हैं। शनि के स्वाती–1 में प्रवेश पर रुई, कपास, तिलहन बाज़ारों में हमें बड़ी तेज़ी का तूफान मालूम देता है। तेज़ी का तूफान धीरे–धीरे बाज़ारों में आने लगेगा, ऐसा अनुभव में आया है। फिर भी इस समय ताज़ा मशवरा प्राप्त करना चाहिए। नोट करें– शनि के अस्त होने की अवधि में रुई, वस्त्र, शेयर एवं सोना मन्दा होगा। अनाज तेज़ होंगे। 11 नवम्बर के लगभग शनि के उदय होने पर तेल, तिलहन में भयंकर तेज़ी आएगी–नोट कर लें।

15 अक्तूबर को बुध के विशाखा में आने पर रुई में विशेष मन्दी का झटका आएगा। अनाजों का भाव भी प्रायः मन्दा रहेगा।

16 अक्तूबर को सूर्य तुलाराशि में आकर शनि एवं बुध के साथ मेल करेगा। गेहूं, जौ, चना, अलसी, एरण्ड, तिल, सरसों, सोयाबीन, सूरजमुखी आदि तिलहन, सोना, चान्दी, तांबा, लालचन्दन, मजीठ एवं सुपारी में अच्छी तेज़ी बने।

[मासारम्भ से 17 अक्तूबर तक हाज़र एवं शेयर बाज़ार तेज़ रहेंगे।]

17 अक्तूबर को विशाखा नक्षत्र का चन्द्रदर्शन दालवाना, अनाज एवं अलसी में तेज़ी करेगा।

20 अक्तूबर को शुक्र उ.फा. में आकर गेहूं आदि अनाजों व रुई में तेज़ी करे। अफीम तेज़ हो। सोना, चान्दी में घटाबढ़ी चले।

21 अक्तूबर को विशाखा–4 में राहु, कृत्तिका 2 में केतु के आने से गेहूं, चावल, सोना, चान्दी, तांबा एवं इमारती लकड़ी तेज़ हो।

22 अक्तूबर को मंगल के ज्येष्ठा में आने पर अफीम में तेज़ी, चान्दी मन्दी एवं रुई में घटाबढ़ी चले।

23 अक्तूबर को सूर्य स्वाती नक्षत्र में आएगा। इस समय शनि भी स्वाती नक्षत्र में ही है। इसी दिन बुध वृश्चिक राशि में प्रवेश करेगा। ठीक, इसी रोज़ शुक्र कन्या में भी आ रहा है। अब नोट करें– वृश्चिक राशि में बुध राहु एवं मंगल के साथ मेल करेगा। शुक्र अपनी नीचराशि में आकर गुरु की नज़र में आएगा। अतः रुई, सूत, सण, रेशम, कपड़ा, सोना, चान्दी, गुड़, शक्कर, बिनौला, अलसी, सरसों आदि तिलहन, राई, हींग, गुग्गुल, घी, तेल में तेज़ी रहे। अनाज, दालवाना, ऊनी, रेशमी वस्त्र तेज़, चावलों में इस समय विशेष तेज़ी बने।

26 अक्तूबर को बुध अनुराधा में आकर रुई, सूत, सण, सोना, चान्दी में अचानक मन्दा बना सकता है।

31 अक्तूबर को हस्त नक्षत्र का शुक्र सोने, चान्दी में तेज़ी लाए और रुई, चावल मन्दे करे। नोट– यदि इस समय अन्न मन्दे हों तो स्टॉक करें, आगे लाभ मिलेगा। गुड़, खाण्ड, शक्कर में घटाबढ़ी रहे। रुई, कपास, छुहारे, चन्दन, मजीठ, दाख का स्टॉक करें, आगे 2/3 मास में लाभ मिलेगा।

[21 से 31 अक्तूबर तक शेयर बाज़ार तेज़ रहेंगे।]

नवम्बर (सन् 2012 ई.)

मासारम्भ में 5 नवम्बर तक बाज़ार ऊपर–नीचे चलेंगे। 6 नवम्बर को सूर्य विशाखा में आएगा और इसी दिन बुध वक्री होगा। ध्यान दें– बुध वृश्चिक राशि में राहु के साथ वक्री है। मंगल भी वृश्चिक राशि में है। जौ, चना, चावल, गेहूं, मसूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, सूत, सरसों, तिल, एरण्ड, अफीम, घी आदि तेज़ रहें।

8 नवम्बर को मंगल धनु राशि में आकर शनि की नज़र में आ जाता है। शनि अस्त है। चावल, चना, जौ, मूंग, चान्दी, सोना, लकड़ी, सूत, सण, बिनौला, सरसों, घी एवं सभी अनाज तेज़ रहेंगे।

[मासारम्भ से 10 नवम्बर तक तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना, चान्दी, तेज़ रहें। इन दिनों शेयर बाज़ारों में भी तेज़ी का विचार है।]

11 नवम्बर को शनि उदित होगा एवं बुध पश्चिम में अस्त होगा और इसी दिन शुक्र चित्रा में आएगा। यह योग अच्छी तेज़ी का है। बिनौला, अलसी, सरसों, एरण्ड, मूंगफली, तोरिया, सूरजमुखी, तिल, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, गेहूं, जौ, चना, लहसुन, चावल, सोने व चान्दी में पहले ज़ोरदार मन्दा बन सकता है, तुरन्त माल पकड़ें, फिर बड़ी तेज़ी से लाभ मिलेगा। ध्यान दें– यदि 17 नवम्बर को तेल, तिलहन में मन्दा बने तो भरपूर स्टॉक करें, आगे खूब लाभ मिलेगा।

15 नवम्बर को सूर्य वृश्चिक राशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा। इस समय बृहस्पति की सूर्य–राहु पर दृष्टि भी है। ऊनी वस्त्र, रुई, सूत, सरसों, तेल, घी में तेज़ी एवं सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड में घटाबढ़ी रहे।

16 नवम्बर को वक्री बुध विशाखा में आकर रुई में ज़ोरदार मन्दी लाकर अच्छी तेज़ी बनाए। इस समय मुस्लिम त्योहार मुहर्रम के अवसर पर हमारे विचार से शनि तेल, तिलहन, घी, शक्कर, चीनी, गुड़, खाण्ड– सभी में अच्छी तेज़ी बना सकता है। विचार से काम करें।

17 नवम्बर को शुक्र तुला राशि में आएगा। यह योग हाज़र एवं वायदा बाज़ारों में तेज़ी बनाएगा। रुई, चान्दी, अफीम में पहले तेज़ी आकर बाद में मन्दा बने। सोना, चान्दी एवं गुड़–खाण्ड में भी तेज़ी का वातावरण बने।

18 नवम्बर को बुध वक्रगति से फिर से तुलाराशि में आकर शनि–शुक्र के साथ मेल करेगा। रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, अफीम में तेज़ी हो। नोट करें– तुला राशि का बुध तेल, तिलहन में मन्दा करता है, लेकिन यहां बुध वक्री होने से तथा शनि–शुक्र के साथ एक राशि में होने से हमें यहां तेल, तिलहन के बाज़ारों में मन्दे की जगह तेज़ी ही मालूम देती है। फिर भी सावधानी से काम करें।

19 नवम्बर को सूर्यषष्ठी के दिन सूर्य अनुराधा (मंगल के) नक्षत्र में आएगा। शनि के साथ सूर्य का मेल चल रहा है। अतः जौ, चना, उड़द, कुल्थी, दालवाना, ऊन व सोने–चान्दी में अच्छी तेज़ी बनेगी। हां, गेहूं, अलसी, मिर्च में

तेज़ी के बाद मन्दा बनने का योग भी है।

[11 से 15 नवम्बर तक बाज़ारों में ज़ोरदार उठापटक रहे। शेयर बाज़ार मन्दे रहें। 16 से 21 नवम्बर तक सभी बाज़ार तेज़ रहें। 18 नवम्बर को हाज़र व्यापारी अच्छी तेज़ी से लाभ लेंगे।]

22 नवम्बर को शुक्र स्वाती नक्षत्र में आएगा। इस समय शनि भी स्वाती नक्षत्र के दूसरे चरण में चल रहा है। यह हाज़र एवं वायदा व्यापारियों को मालामाल कर सकता है। गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, बारदाना, सोना, चान्दी, सारे तिलहन और तेलों में अच्छी तेज़ी से लाभ मिलने का योग है।

24 नवम्बर को देवप्रबोधिनी एकादशी के दिन बुध पूर्व में उदय होगा। इन दिनों रुई में पहले मन्दी होकर 25 दिन बाद झटके की तेज़ी बनेगी। गेहूं, चना आदि अनाज, तिल, घी, पाट, हैसियन एवं लालमिर्च में तेज़ी बनेगी।

26 नवम्बर को मंगल पू. षा. में आकर सोना–चान्दी, चावल, घी, उड़द, तिल, तेल, सरसों, मूंगफली में तेज़ी करे। इसी दिन (26 नवम्बर को ही) बुध मार्गी होगा। रुई में पहले मन्दी, बाद में तेज़ी बने। चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी हो। गेहूं , चना, जौ आदि अनाज 8 दिन में तेज़ हों। लेकिन अलसी, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली आदि तिलहन, तेल, गुड़, कपूर एवं चन्दन मन्दे रहें।

[22 से 25 नवम्बर तक हाज़र बाज़ार तेज़ रहें। 26 नवम्बर से मास के अन्त तक बाज़ार डावांडोल रहेंगे। शेयरों में 22 से 24 तक तेज़ी, बाद में शेयर बाज़ार ऊपर–नीचे चलेंगे।]

दिसम्बर (सन् 2012 ई.)

मासारम्भ में ही शुक्र–मंगल अतिचारी हो गए हैं। अतिचारी मंगल प्रमुख बाज़ारों में मन्दी व तेज़ी का तूफान ला सकता है। विशेषतः तिलहन बाज़ारों पर तेज़ी सम्भव है। यहां शनि की दृष्टि भी मंगल पर है। हमारे विचार से शनि की मंगल पर दृष्टि होने से तेलवाना, रुई, कपास, जूट, चान्दी, सोना, तथा शेयर बाज़ारों में भयंकर तेज़ी की उम्मीद है। व्यापारी बड़े ऐहतियात से काम करके लाभ लें। शुक्र विशेषतः रुई, कपास, गुड़, खाण्ड, तिलहन बाज़ारों को प्रभावित करता है।

2 दिसम्बर को सूर्य ज्येष्ठा नक्षत्र में आकर 15 दिन में वस्त्र, सोना, चान्दी, चावल, गेहूं, जौ, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गुल, पारा, गुड़, खाण्ड में तेज़ी करे। 3 दिसम्बर को शुक्र विशाखा में आकर रुई एवं अनाजों में कुछ मन्दा कर सकता है।

6 दिसम्बर को बुध वृश्चिक राशि में आकर सूर्य–राहु के साथ मेल करेगा। इस प्रकार बुध मंगल की राशि में आकर तेज़ी बना सकता है। घी, तेल, सरसों, रुई, चान्दी में तेज़ी एवं अफीम–अनाजों में भी यह कुछ तेज़ी बना सकता है।

7 दिसंबर को वक्री गुरु रोहिणी के दूसरे चरण में तथा 8 दिसम्बर को बुध अनुराधा में आकर पन्ना, पुखराज, नीलम आदि रत्न एवं चान्दी में तेज़ी करे। लेकिन सुपारी, मिर्च, सरसों, हींग, राई, तेल, खजूर, छुहारा, हल्दी, सूत, सण, रुई में मन्दे के आसार हैं।

ध्यान दें– 8 दिसम्बर को शनि स्वाती के तीसरे चरण में आएगा। अतः गुड़, खाण्ड, रुई, चान्दी, मूंगफली, सारे तिलहन, कालीमिर्च तेज़ रहेंगे।

[मासारम्भ से 6 दिसम्बर तक शेयर तेज़, 7 दिसम्बर को मन्दे, 8 दिसम्बर से आगे वायदा एवं हाज़र बाज़ार तेज़ी की तरफ बढ़ेंगे।]

11 दिसंबर को शुक्र वृश्चिकराशि में आकर सूर्य–बुध–राहु के साथ मेल करेगा। यह योग सभी अनाजों में तेज़ी करने वाला है–

"एकराशिंगता ह्येते सौम्य–शुक्र–दिनाधिपाः।
सर्वधान्य–महर्घत्वं मेघाः स्वल्पजलप्रदाः।।"

इस समय हमारे विचार से रुई, चान्दी, अफीम एवं शेयर बाज़ारों में पहले मन्दी होकर बाद में तेज़ी बनेगी। शुक्र के साथ सूर्य–राहु (पापग्रह) होने से गुड़, गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, मोठ, तिल, तेल, सरसों, हींग, मिर्च तेज़ होंगे।

14 दिसम्बर को मंगल उ. षा. में एवं शुक्र अनुराधा में आएगा। ध्यान रहे– मंगल अतिचारी है। इसी दिन शुक्रवारी चन्द्रदर्शन भी होगा। उड़द, घी, तेल, सरसों में तेज़ी चलेगी। गुड़, खाण्ड, चावल, नमक, गेहूं, चना, जौ, सरसों, तिल, तेल एवं ऊन में मन्दी रहे। रुई, चान्दी, सोने में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बने।

15 दिसंबर को सूर्य मूल नक्षत्र एवं धनुराशि में दाखिल होगा। इस समय सूर्य पर शनि की दृष्टि भी है। अतः रुई, चावल, सूत, तिल, तेल, सोना, चान्दी, कपास, सूत, अलसी में तेजी बनेगी।

18 दिसंबर को मंगल मकर राशि में आकर बृहस्पति की नज़र में आ

जाता है। इसी दिन बुध ज्येष्ठा में आ रहा है। रुई, सोना, चान्दी, तांबा, गुड़, खाण्ड, घी, तेल, अलसी एवं ऊन में तेज़ी बने। चावल, दालवाना में कुछ मन्दा रहे। घी, गुड़, खाण्ड तेज़ हों–

मकरे च स्थिते भौमे घृत–तैल–महर्घता।"

[11 से 22 दिसम्बर तक तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी एवं चना, चावल, उड़द, दालवाना आदि के व्यापार में तेज़ी, इन दिनों शेयर बाज़ारों में भी तेज़ी से लाभ रहे।]

23 दिसम्बर को राहु विशाखा–3 तुला एवं केतु कृत्ति.–1 मेष में आ रहा है। इस प्रकार राहु का मेल तुला में पहले से मौजूद शनि से होगा। शनि–राहु दोनों महाक्रूर हैं। शनि स्वाती नक्षत्र में है। हमें बड़ी तेज़ी की लाईन मालूम देती है। ध्यान दें– इस समय तेलवाना, रुई, कपास, चान्दी, सोना, गुड़, खाण्ड, पाट, बारदाना एवम् दालवाना आदि सभी बाज़ारों में व्यापारियों को मन्दी में नहीं रहना चाहिए। तेज़ी में रहें, उत्तम लाभ मिलेगा।

शनि–राहु जब एकसाथ होते हैं तो फसल कम/खराब होने से पैदावार कम होती है या राजनैतिक गतिविधि के कारण अथवाप्राकृतिक प्रकोप से कुदरती तेज़ी का तूफान आने लगता है– यह अनुभव किया गया है, अतः व्यापारी बन्धु इस समय ताज़ा मशवरा हासिल करें, मालामाल हो सकेंगे–

" यदा राहुस्तुलां याति क्रूरः क्रूर–समन्वितः।
मेदिन्यां सस्यनाशः स्याद्दुर्भिक्षं तत्र दारुणम् ।।"

(इस समय शेयर बाज़ारों में भयंकर उठापटक के योग हैं, सावधानी से काम करें। अनाज, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, शक्कर एवम् सभी दालों के व्यापारी तेज़ी से उत्तम लाभ प्राप्त कर सकेंगे।)

24 दिसम्बर को शुक्र ज्येष्ठा नक्षत्र में आएगा एवम् 26 दिसम्बर को बुध पूर्व में अस्त होगा। इन दो तारीखों में बाज़ार डगमगा सकते हैं। कुछ अनाज तेज़ रहें; सोना, चान्दी, सरसों, तिल, तेल, हींग, अनाज, घी, रुई में अचानक मन्दे की अस्थायी लहर आ सकती है।

27 दिसम्बर को बुध मूल नक्षत्र एवं धनुराशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। इस समय इन पर शनि की दृष्टि भी है। रुई, कपास, सूत, अनाज, सोना, चान्दी में तेज़ी बने।

31 दिसम्बर को मंगल श्रवण नक्षत्र में आता है। ध्यान रहे– मंगल का अतिचार बरकरार है, अतः गेहूं, चना, बाजरा, जौ एवं दालवाना में ज़ोरदार तेज़ी बनेगी। तिलहन, तेल, अफीम एवं सोना–चान्दी में भी तेज़ी से लाभ मिले। रुई में घटाबढ़ी चलेगी।

जनवरी (सन् 2013 ई.)

आपका यह नववर्ष मंगलमय हो। व्यापार में ऋद्धि–सिद्धि बनी रहे– इस कामना के साथ व्यापार को आगे बढ़ाएं।

मंगल अतिचारी है। 4 जनवरी को शुक्र मूल धनु में आकर सूर्य–बुध के साथ मेल करेगा। गेहूं, जौ, चना आदि अनाज, चान्दी, सोना, तांबा आदि धातु एवं शेयर बाज़ार तेज़ हों। रुई, सूत, कपास में पहले तेज़ी आकर मन्दी और फिर तेज़ी हो। रुई में तेज़ी के बाद मन्दी हो। अनाज तेज़ रहें।

5 जनवरी को बुध पू.षा. में आकर बाज़ारों में मन्दे का रुख बनाए। इस समय सोना–चान्दी में खासी मन्दी बनेगी। अनाज भी कुछ मन्दे होंगे। बिनौला तेज़ रहे। इसी दिन अर्थात् 5 जनवरी को ही वक्री गुरु रोहिणी में दाखिल होगा। गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी, सुपारी, मिर्च, सरसों, राई, हींग, तेल, खजूर, छुहारा एवं हल्दी में मन्दे का वातावरण रहे। रुई में घटाबढ़ी चले।

ध्यान दें– मास के प्रथम सप्ताह में सूर्य–बुध–शुक्र का एकराशिसम्बन्ध तेल एवं तिलहन बाज़ार, दालवाना, गुड़, खाण्ड एवं शक्कर में तेज़ी कारक रहेगा–

"एकराशिंगता ह्येते सौम्य–शुक्रधनाधिपाः।
सर्वधान्य–महर्घत्वं मेघाः स्वल्पजलप्रदाः।।"

10 जनवरी को सूर्य उ.षा. नक्षत्र में आ जाता है। बुध–शुक्र के साथ सूर्य का मेल तेज़ीकारक ही है। 14 दिन में उड़द, मूंग, चावल, चना, गेहूं, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, पिप्पलामूल, चमड़ा, सरसों, मूंज एवं पट्टसूत्र तेज़ होंगे।

[मासारम्भ से 12 जनवरी तक शेयर बाज़ार प्रायः तेज़ रहेंगे। बीच में 5 जनवरी के लगभग बाज़ार 2/3 दिन के लिए मन्दे रह सकते हैं। वायदा व्यापारी 4, 7 से 10 जनवरी को अनाज, दालवाना, तेल, तिलहन में 12 जनवरी सन् 2013 ई. तक तेज़ी के व्यापार से लाभ ले सकेंगे। फिर भी हमारा अनुरोध है कि– इस समय ताज़ा मशवरा प्राप्त करके लाभ लें।]

13 जनवरी रविवार वाले दिन सूर्य मकर राशि में प्रवेश करेगा। व्यापारी

ध्यान दें कि– इस वर्ष धनु संक्रान्ति शनिवारी थी, यहां मकर संक्रान्ति रविवारी एवं आगे कुम्भ संक्रान्ति मंगलवारी होने से 'खप्पर योग' बन रहा है।

" शनिः स्यादाद्य–संक्रान्तौ द्वितीयायां प्रभाकरः।
तृतीयायां कुजे योगः खर्पराख्योऽति कष्टदः।।"

अतः इस ग्रहस्थिति का प्रभाव घी, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चना, उड़द, मूंग, मोठ, बाजरा, गेहूं, सारे तिलहन एवं दालवाना पर तेज़ीकारक रहेगा। ध्यान दें– मकरराशि में स्थित सूर्य पर गुरु की विशेष दृष्टि होने से अनाजों में कदाचित् मन्दा बने तो आगे तेज़ी से जल्दी ही लाभ मिलेगा।

15 जनवरी को बुध मकर राशि में एवं शुक्र पू.षा. में आ जाता है। इस समय रुई, सोना, चान्दी में तेज़ी बनेगी। 13 दिन में मूंग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों एवं नमक मन्दे हों। 16 जनवरी को मंगल धनिष्ठा में आकर 20 दिन में राई, जौ, पीपल, सोना, चान्दी, तांबा, पीतल, जस्ता, लोहा तेज़ करे। ध्यान दें– इस समय मंगल सूर्य एवं बुध के साथ मेल कर रहा है, अतः गुड़, शक्कर, खाण्ड, घी, रुई एवं सूत में कुछ मन्दे का झटका आकर बाज़ार तेज़ी की तरफ बढ़ेंगे।

17 जनवरी को शनि स्वाती नक्षत्र के चतुर्थ चरण में प्रवेश करेगा। इस समय शनि–राहु दोनों तुलाराशि में हैं। अतः दालवाना, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड में ज़ोरदार तेज़ी बनेगी।

[13 से 20 जनवरी, 2013 ई. तक तेल, तिलहन एवं दालवाना में उत्तम–मध्यमरूप से तेज़ी रहेगी। शेयर बाज़ारों में भी तेज़ी प्रधान रहेगी, लेकिन 15, 16 जनवरी को शेयरों के व्यापारी सावधानी से काम करें।]

21 से 25 जनवरी तक श्रवण नक्षत्र के बुध–सूर्य, उ.षा. नक्षत्र का शुक्र एवं 25 जनवरी को मंगल कुम्भ–राशि में प्रवेश करके बाज़ारों में ज़ोरदार तेज़ी का वातावरण बनाएंगे। क्योंकि बुध, सूर्य एवं मंगल – ये तीनो शनि की राशियों में हैं। इस समय वायदा व्यापारी भरपूर लाभ ले सकेंगे। इस समय गेहूं, जौ, चना, चावल, रुई, सूत, सण, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, सुपारी, लौंग, तेल, तिलहन में ज़बरदस्त तेज़ी के रिएक्शन्ज़ आएंगे। अनाज–दालवाना भी तेज़ ही रहें।

28 जनवरी को शुक्र मकर राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। इस समय इन पर वक्री गुरु की विशेष दृष्टि है। शेयर बाज़ार, अफीम, गुड़, खाण्ड, घी एवं गेहूं आदि अनाज तेज़ रहें। रुई, चान्दी में पहले घटाबढ़ी होकर अन्त में अच्छी तेज़ी रहेगी।

29 जनवरी को अतिचारी मंगल कुम्भ राशि में अस्त हो रहा है। इसी दिन (29 जनवरी को ही) मकर राशि का बुध धनिष्ठा नक्षत्र में जाएगा। गेहूं, अलसी में ज़ोरदार तेज़ी बनेगी। जौ, चना, गुड़, दालवाना एवं चावल में भी तेज़ी रहे। रुई में घटाबढ़ी चले।

30 जनवरी को वृषराशि में स्थित गुरुदेव (4 अक्तूबर से चल रही) अपनी वक्रगति को छोड़कर मार्गी पोज़ीशन में आएंगे। इस समय गुरु पर मंगल की विशेष दृष्टि है। इस समय बाज़ारों का रुख पलट सकता है। सावधानी से काम करें। 3 दिन में रुई मन्दी होगी। माल पकड़ें, तुरन्त तेज़ी से लाभ मिलेगा। चान्दी में मन्दी आकर ज़ोरदार तेज़ी से लाभ मिले। चावल, अलसी, सरसों, गुड़, तम्बाखू तेज़ रहें। रुई, चावल, सोना मन्दे हों।

फरवरी (सन् 2013 ई.)

[व्यापारी ध्यान दें– 28 जनवरी से 4 फरवरी तक रुई एवं सोना–चान्दी के बाज़ारों में ज़ोरदार मन्दे एवं तेज़ी के रिएक्शन्ज़ आएंगे। बाज़ार एकतरफा नहीं चलेंगे। अतः वायदा व्यापारी सावधानी से काम करें।]

1 फरवरी को दालवाना, अनाज, गुड़, खाण्ड सामान्यतः तेज़ रहें। 2 फरवरी को बुध कुम्भराशि में अतिचारी मंगल के साथ मेल करेगा। इसी दिन मंगल शतभिषा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। अलसी, रुई एवं सोना–चान्दी में पहले मन्दी आकर तेज़ी बनेगी। घी, तेल, गुड़, खाण्ड में तेज़ी ही रहे।

5 फरवरी को बुध शतभिषक् नक्षत्र में आकर मंगल के साथ एकनक्षत्र– सम्बन्ध बना रहा है। इसी दिन सूर्य धनिष्ठा एवं शुक्र श्रवण में प्रविष्ट होगा। इस समय सूर्य–शुक्र पर गुरु की विशेष दृष्टि है। इस समय वायदा एवं हाज़र के व्यापारी बहुत समझ से काम करें। हमारे विचार से गुड़, खाण्ड, शक्कर, मूंग, मोठ एवं उड़द आदि अनाज कुछ तेज़ रहें। रुई, सोना, चान्दी, ताम्बा एवं क्रूड ऑयल आदि में मन्दा आकर तेज़ी बनेगी।

6 फरवरी को बुध पश्चिम में उदित होगा। इस समय बुध अतिचारी मंगल के साथ कुम्भ राशि में है। ध्यान दें– इस समय ज़ोरदार तेज़ी या मन्दी बनेगी, सावधानी से काम करें। हमारे विचार से वस्त्र, रुई एवं शेयर बाज़ारों में मन्दे का योग है। तिलहन, दालवाना एवं तेलों में भी यदि मन्दा हो तो तुरन्त स्टॉक करें, आगे तेज़ी से उत्तम लाभ मिलेगा। लेकिन हमें इस समय घी, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी में अच्छी तेज़ी मालूम देती है।

10 फरवरी को मकर राशि में स्थित शुक्र पूर्व में अस्त होगा। इस समय शुक्र सूर्य के सम्पर्क में है और इन पर गुरु की विशेष दृष्टि भी है। सोना, चान्दी के व्यापारी सावधान रहें। सोना, चान्दी, तांबा, पीतल, जस्ता, हींग, पारा, केसर, तथा अन्य व्यापारिक वस्तुओं में तेज़ी बनेगी। इस समय सोनामक्खी, चान्दी, तांबा में विशेष तेज़ी से लाभ मिलेगा। दालवाना में भी तेज़ी रहे।

11 फरवरी को कुम्भस्थ चन्द्र के समय चन्द्रदर्शन होगा। घी, तेल, सरसों, मूंगफली एवं राई में तेज़ी, रुई, पाट, अलसी एरण्ड, गेहूं आदि अनाज, गुड़, शक्कर, खाण्ड, सोना, चान्दी तेज़ हों।

12 फरवरी मंगलवार को सूर्य कुम्भ राशि में आकर मंगल एवं बुध के साथ मेल करेगा। मंगल अतिचारी है। गतसंक्रान्ति वारों के हिसाब से 'खप्पर-योग' बन रहा है। अतः खड़ी फसलों को हानि पहुंचने या अफवाहों से बाज़ार टूट-टूटकर तेज़ी की तरफ बढ़ेंगे। इस समय घी, तेल, तिलहन, लवण, सरसों, मूंगफली, तिलहन एवं रुई में अच्छी तेज़ी बनेगी। अनाज, दालवाना, गुड़, शक्कर, खाण्ड में यदि मन्दे का झटका आए- माल पकड़ें, तेज़ी बनेगी। वरना तेज़ी में ही रहें।

14 फरवरी को बुध पू. भा. में आकर सोना, चान्दी, तांबा, लोहा, अनाज, गुड़, शक्कर, खाण्ड में घटाबढ़ी के साथ तेज़ी बनाता है।

15 फरवरी को शुक्र धनिष्ठा में आकर चावल, मूंग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, चान्दी, सोना, रुई, कपास में तेज़ी करेगा।

18 फरवरी को स्वाती नक्षत्र में शनि वक्री होकर राहु के साथ वक्रत्व- सम्बन्ध बना लेगा। स्वाती नक्षत्र में शनि के साथ वक्रत्वकाल में तेल, खाद्यतेल, सभी तिलहन बाज़ारों में ज़ोरदार-भयंकर तेज़ी से एवं दालवाना में भी ज़ोरदार तेज़ी से स्टाकिस्टों को लाभ मिलेगा। सिक्का, कली, गेहूं, ज्वार, बाजरा, चावल, घी, तेल, तिलहन, अलसी, सरसों, सीमेण्ट में तेज़ी बनेगी। एरण्ड में घटाबढ़ी संभव है।

19 फरवरी को सूर्य शतभिषा एवं मंगल पू.भा. में आकर बाज़ारों में तेज़ी को और बढ़ावा देंगे। सूत, सण, कपड़ा, घी, तिल, तेल, अलसी, एरण्ड, मूंगफली, सरसों, हींग, जायफल, दाख, छुहारा, सोंठ, हल्दी, गेहूं, गुड़, शक्कर, चीनी, नारियल, सुपारी, रुई, कपास एवं सोना-चान्दी में अच्छी तेज़ी बनेगी।

[वायदा एवं शेयर बाज़ारों में 22 फरवरी तक तेज़ी रहे।]

21 फरवरी को शुक्र कुम्भ राशि में आकर सूर्य, मंगल एवं बुध के साथ मेल करेगा। रुई, चान्दी, गुड़, खाण्ड, गेहूं, चना, जौ, मूंग, ज्वार, बाजरा तेज़ रहें।

23 फरवरी को बुध के वक्री होने पर वायदा व्यापारी समझ लें कि- बाज़ार में कुछ उलटफेर होने वाला है। कुछ बाज़ारों में ज़ोरदार मन्दा, कुछ बाज़ारों में तेज़ी रहे। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज़ रहें। गेहूं, जौ, चना, दालवाना आदि अनाज मन्दे हो सकते हैं। रसकट में तेज़ी के बाद मन्दा बने।

24 फरवरी को गुरु रोहिणी के दूसरे चरण में आएगा एवं राहु विशाखा के दूसरे चरण में, केतु भरणी के चतुर्थ चरण में प्रविष्ट होगा। इस समय रुई, चावल, गुड़, खाण्ड, घी, रत्न, चान्दी में तेज़ी से लाभ मिले। सुपारी, मिर्च, सरसों, राई एवं हींग में तेज़ी से लाभ मिलेगा। खजूर, छुहारा, हल्दी में कुछ मन्दा रहे।

25 फरवरी को बुध पश्चिम में अस्त होगा। रुई में झटके की मन्दी; चान्दी, तेज़ एवं गेहूं आदि में भी तेज़ी का रुख रहे। पाट, हैसियन एवं शेयर बाज़ार मन्दे हों।

26 फरवरी को शुक्र शतभिषा में आकर गेहूं, गुड़, चना, चावल, घी, सरसों, रुई, सोना, चान्दी तेज़ करेगा। यह तेज़ी उत्तम-मध्यमरूप से मासान्त किंवा कुछ आगे तक चल सकती है।

मार्च (सन् 2013 ई.)

मासारम्भ में वायदा एवं हाज़र बाज़ारों में प्रायः तेज़ी का वातावरण रहेगा।

4 मार्च को सूर्य पू. भा., वक्री बुध शतभिषा नक्षत्र में प्रविष्ट होंगे। इसी दिन मंगल मीनराशि में आकर शनि-राहु के साथ षडष्टकयोग बना रहा है।

इस समय सोना, चान्दी, गेहूं, चना, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तेल, गुड़, रुई में तेज़ी रहे। इमारती लकड़ी भी तेज़ रहे-

"मीनराशिं गतो भौमः तृण-काष्ठ-चतुष्पदाम्।
महर्घं कुरुते सर्वं नात्र कार्या विचारणा।।"

8 मार्च को मंगल उ.भा. में आकर एक मास के अन्दर दयार, चन्दन, कपूर, सोना, चान्दी, रुई, गेहूं, जौ, चना में तेज़ी बनाएगा। 9 मार्च को शुक्र पू. भा. में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र-सम्बन्ध बनाएगा। लकड़ी से बनी चीज़ों में भी

अच्छी तेज़ी बने–

" दुर्भिक्षमेवोत्तर–मद्रिकायां वर्षा न मेघोन्नयनेऽपि किञ्चित्।"

11 मार्च को सोमवती अमावस आगे कुछ मन्दे का इशारा करती है। सावधानी से काम करें।

[1 से 10 मार्च तक वायदा एवं शेयर बाज़ार तेज़ रहें।]

12 मार्च को वक्री बुध पूर्व में उदित होगा। अनाज, दालवाना, तिल, घी, पाट, हैसियन एवं लालमिर्च में तेज़ी; रुई में मन्दी रहे।

13 मार्च को बुधवारी चन्द्रदर्शन होने से चान्दी, सोना, रुई, सूत, वस्त्र, गुड़, खाण्ड, शक्कर मन्दे रहें। अनाजों के बाज़ार ऊपर–नीचे चलें।

[11 से 13 मार्च तक बाज़ार अनिश्चित चलेंगे। मन्दे में लें, तेज़ी में बेचकर लाभ लेते रहें।]

14 मार्च को सूर्य मीन राशि में आकर मंगल के साथ एकराशि–सम्बन्ध बनाएगा। मंगल–शुक्र दोनों अस्त हैं। तिल, तेल, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई एवं सोना तेज़ रहें। मोटे अनाज एवं दालवाना आदि में पहले तेज़ी आकर बाद में मन्दा बने। चान्दी भी मन्दी रहे।

17 मार्च को सूर्य उ.भा. में आएगा। इसी दिन शुक्र मीनराशि में आकर सूर्य एवं मंगल के साथ मेल करेगा। साथ ही इसी दिन बुध मार्गी हो जाएगा। इस समय मंगल अतिचारी ही है।

गुड़, खाण्ड, शक्कर, तेल, गेहूं, चावल, जौ, उड़द, मोठ, सुपारी, नारियल, कपूर, नमक, घी, तिल, तेल, सरसों में इस समय अचानक मन्दा बन सकता है। यदि मन्दा बने तो स्टॉक करें। 10/15 दिन बाद लाभ होगा। रुई, चान्दी में मन्दी बने।

[14/15/16 मार्च को वायदा–व्यापार तेज़ रहे। 17 से 21 मार्च तक बाज़ार का रुख देखकर काम करें।]

19 मार्च को शुक्र उ.भा. में आता है। इस समय सूर्य भी उ.भा. में है। ज़ोरदार तेज़ी या मन्दे के झटके आएंगे। समझ से काम करें।

22 मार्च को वक्री शनि स्वाती–3 में आकर गुड़, खाण्ड, तिलहन, कालीमिर्च में तेज़ी कर सकता है। लेकिन शास्त्रकारों ने शनि के वक्री होकर स्वाती में आने पर सुभिक्ष लिखा है, अतः उनके अनुसार बाज़ारों में मन्दे का संकेत मिलता है–

"स्वात्यां चैव यदा सौरिः सुभिक्षं स्याद्धरातले।"

अतः व्यापारी बन्धु बाज़ार के रुख को देखकर काम करें। लेकिन हमारा विचार यहां तेज़ी का ही है।

24 मार्च को गुरु रोहिणी के तीसरे चरण में प्रवेश करेगा। 16 दिन में तिल, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, गेहूं, जौ, चना में तेज़ी से लाभ मिले।

26 मार्च को मंगल रेवती नक्षत्र में आएगा। इस समय मंगल का अतिचार समाप्त हो जाता है। अतः गेहूं , जौ, चना, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा मन्दे होंगे। रुई में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी; चान्दी तेज़ एवं सोना मन्दा रहे।

[22 से 29 मार्च तक वायदा बाज़ार तेज़ रहेंगे। शेयर बाज़ारों में भी तेज़ी से लाभ मिलेगा।]

30 मार्च को शुक्र रेवती नक्षत्र में एवं 31 मार्च को सूर्य भी रेवती नक्षत्र में आकर ज़ोरदार मन्दी–तेज़ी के रिएक्शन्ज़ लाऐंगे। हमारे विचार से 30 मार्च को रुई, कपास, चान्दी, चावल, चन्दन, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर तथा जवाहरात में झटके के साथ बाज़ार मन्दे की तरफ बढ़ेंगे। लेकिन 31 मार्च को दिन में लगभग 12 घं. 15 मि. के बाद 14 दिन के अन्दर अलसी, सरसों, एरण्ड, मूंगफली, लहसुन, मोती, लाख, सज्जी, गेहूं , जौ, चना एवं चावल में तेज़ी का रुख रहेगा।

[1 से 10 अप्रैल, 2013 ई. तक बाज़ार मन्दे की तरफ बढ़ेंगे। विशेष अगले संवत् 2070 वि. में पढ़ें।]

सज्जनों ! हमने ग्रहचाल को पूरी तरह जांचकर तेजी– मन्दी के रुख का बेरवा इस पंचांग में दिया है, फिर भी ग्रहचाल– वश यदि किसी प्रकार से आपको व्यापार में हानि होती है तो हम उत्तरदायी न होंगे। वैसे, हमारी प्रभु से प्रार्थना है कि– आपको व्यापार में हमेशा उत्तम लाभ प्राप्त होता रहे।

यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र–साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल

(1 जनवरी, सन् 2012 ई. से 10 अप्रैल, सन् 2013 ई. तक)

जप एवं यन्त्र–मन्त्र आदि की साधना के लिए शास्त्रों द्वारा बारह सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा सूर्य–चन्द्र के क्रान्तिसाम्य (महापात) के काल को ठीक सूर्य–चन्द्रग्रहण के समान ही महत्त्वपूर्ण माना गया है। संहिता और ज्योतिषग्रन्थों में इस विषय के अनेक वचन उपलब्ध हैं। क्रान्तिसाम्य को तन्त्रादि की सिद्धि के लिए ऋषियों ने स्पष्टरूप से फलप्रद माना है। आचार्य भास्कर ने भी 'सिद्धान्तशिरोमणि' में कहा है कि–क्रांतिसाम्य के काल में विवाहादि मंगलकृत्य करना तो निषिद्ध है, लेकिन यदि इस समय जप, अनुष्ठानादि किया जाए तो उसकी वृद्धि होती है– *"पातस्थितिकालान्तर्गतमंगलकृत्यं न शस्यते तज्ज्ञैः। स्नान–जप–होमदानादिकमत्रोपैति खलु वृद्धिम्।।"* यन्त्र–मन्त्र–तन्त्रों की साधना में विशेष रुचि रखने वाले पाठकों के लिए हम नीचे 1 जनवरी, 2012 ई. से 10 अप्रैल, सन् 2013 ई. तक की सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा क्रान्तिसाम्य के प्रारंभ और समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.) दे रहे हैं। इन कालों में यंत्र–तंत्रों के निर्माण एवम् मंत्रजाप से वे अभीष्ट सिद्धि प्राप्त कर सकेंगे।

सूर्य और चन्द्रमा के ग्रहण के पर्वकाल को भी मन्त्रादि–साधना के लिए साधकों को उपयोग में लाना चाहिए। सायन संक्रान्तिपुण्यकाल, क्रान्तिसाम्य और सूर्य–चन्द्रग्रहण के पर्वकाल के अलावा मन्त्रादि–साधना के लिए अर्धोदय, महोदय, महामहावारुणीपर्व, महावारुणीपर्व और वारुणीपर्व भी महत्त्वपूर्ण माने गए हैं। ये अर्धोदय आदि योग कभी–कभी ही आते हैं। संवत् 2069 वि. में गजच्छाया पर्व, अर्धोदययोग, महावारुणी तथा महा–महावारुणी पर्व घटित नहीं हुए हैं।

सावधान–यंत्र–मंत्र–तंत्रों के प्रयोग को प्रभावशाली रूप में सद्यः फलप्रद बनाने के लिए शास्त्रविहित काल में साधना कीजिए, अन्यथा आगमशास्त्र पर साधक की निराधार अनास्था होने की पूर्ण आशंका है।

सायनसंक्रान्ति–पुण्यकाल

(भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
सन् 2012 ई.					
20 जन.	15	40	21 जन.	3	40
19 फर.	5	48	19 फर.	17	48
20 मार्च	4	45	20 मार्च	16	45
19 अप्रै.	15	42	20 अप्रै.	3	42
20 मई	14	46	21 मई	2	46
20 जून	22	39	21 जून	10	39
22 जुला.	9	31	22 जुला.	21	31
22 अग.	16	37	23 अग.	4	37
22 सितं.	14	19	23 सितं.	2	19
22 अक्तू.	23	44	23 अक्तू.	11	44
21 नवं.	21	20	22 नवं.	9	20
21 दिसं.	10	42	21 दिसं	22	42
सन् 2013 ई.					
19 जन.	21	22	20 जन.	9	22
18 फर.	11	32	18 फर.	23	32
20 मार्च	10	32	20 मार्च	22	32

निरयण संक्रान्तियों के पुण्यकाल

सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल की भान्ति निरयण संक्रान्तियों के पुण्यकाल में भी यंत्र–मंत्रादि की साधना की जा सकती है, लेकिन सायन संक्रान्तियों का पुण्यकाल इसके लिए विशेष महत्त्व रखता है।

क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ और समाप्तिकाल

(भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
सन् 2012 ई.					
06 जन.	04	43	08 जन.	06	32
18 जन.	11	35	18 जन.	22	01
31 जन.	05	28	31 जन.	13	34
12 फर.	19	57	13 फर.	01	24
25 फर.	08	47	25 फर.	14	26
9 मार्च	08	10	9 मार्च	12	30
21 मार्च	12	04	21 मार्च	17	10
3 अप्रै.	21	54	4 अप्रै.	2	35
15 अप्रै.	13	53	15 अप्रै.	19	27
29 अप्रै.	04	10	29 अप्रै.	10	43
10 मई	16	34	11 मई	00	22
23 मई	16	11	24 मई	09	08
15 जुला.	02	22	17 जुला.	18	40
27 जुला.	15	07	28 जुला.	00	17
08 अग.	22	53	09 अग.	06	36
21 अग.	22	41	22 अग.	04	08
03 सितं.	03	23	03 सितं.	08	54
28 सितं.	08	01	28 सितं.	13	08
11 अक्तू.	18	27	11 अक्तू.	23	42
23 अक्तू.	09	20	23 अक्तू.	15	11
05 नवं.	17	30	06 नवं.	01	31
17 नवं.	06	09	17 नवं.	16	38
सन् 2013 ई.					
21 जन.	14	44	22 जन.	06	58
03 फर.	11	45	03 फर.	19	20
15 फर.	08	37	15 फर.	15	15
28 फर.	14	21	28 फर.	19	39
12 मार्च	12	30	12 मार्च	17	45
25 मार्च	19	59	26 मार्च	01	06
06 अप्रै.	16	12	06 अप्रै.	21	31

सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य

सूर्य–चन्द्र की राशियों के अनुसार निर्धारित किए जाने वाले क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ–समाप्तिकाल नितान्त स्थूल होता है। यहां दिया गया क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ–समाप्तिकाल महापातगणित द्वारा स्पष्ट किया गया है। यह सर्वथा सूक्ष्म है। विवाहादि मुहूर्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य के काल को ही वर्जित किया गया है।

वारुणी पर्व (सन् 2012 ई.)

(भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
20 मार्च	6	54	20 मार्च	17	32
(सन् 2013 ई.)					
7 अप्रै.	15	25	7 अप्रै.	सूर्यास्त	
महोदययोग (सन् 2013 ई.)					
9 फर.	15	19	9 फर.	सूर्यास्त	

सूर्य–चन्द्रग्रहण

ऊपर लिखे अनुसार यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र–साधना के लिए सूर्य एवम् चन्द्र-ग्रहणों का पर्वकाल विशेष महत्त्व रखता है। एतदर्थ पृष्ठ 20 देखिए।

ध्यान रहे– मन्त्रसाधना में उच्चारणादि की शुद्धि परमावश्यक है। इस बारे शास्त्रवचन इस प्रकार है–

"मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा
मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति
यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्।।"

यन्त्र–मन्त्र एवम् तन्त्रों का चमत्कार

इस स्तम्भ के अन्तर्गत अनुभूत यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र गतवर्षों से देते आ रहे हैं। इस स्तम्भ के अन्तर्गत दिए गए मन्त्रों को शुभ मुहूर्त में गुरुमुख से प्राप्त करके ग्रहणवेला, क्रान्तिसाम्य या सायन–संक्रान्तियों के पुण्यकाल में दृढ़–निश्चयपूर्वक अनुष्ठान करके सिद्ध कर लेना चाहिए। **ध्यान रहे**– दीपमाला के समय एवं महाशिवरात्रि की महत्त्वपूर्ण रात्रियों किंवा 'यन्त्र–मन्त्र–तन्त्रों के लिए साधनाकाल' में उल्लिखित समयावधियों में इन मन्त्र–तन्त्रों को सिद्ध करके इनका चमत्कार आप अविलम्ब देख सकेंगे। यन्त्र–मन्त्रों के बल पर ही दैवज्ञ अपने वैदुष्य से अक्षुण्ण यश प्राप्त कर सकता है,–**"सिद्धिर्भूषयते विद्याम्।"**

मन्त्र ऐसे दिव्यशब्दों का समूह है, जिसे दृढ़ इच्छाशक्तिपूर्वक उच्चारण एवं मनन से ही हम अलौकिक काम कर सकते हैं। चुने हुए गुप्त शब्द ही मन्त्र हैं। इनमें शब्दों को ऐसा क्रम दिया जाता है कि– उनके मौन या अमौन अवस्था में उच्चारणमात्र से शून्य महाकाश में एक विचित्र कम्पन उत्पन्न होती है, जिसमें अभीप्सित कार्यसिद्धि एवं रचनात्मक प्रबल–प्रछन्न शक्ति होती है–

" मननात् त्रायते यस्मात्तस्मात् मन्त्रः प्रकीर्तितः। जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्न संशयः।।"

मन्त्रशास्त्र के अनुसार वेदमन्त्रों को ब्रह्मा ने शक्ति प्रदान की थी। तान्त्रिक प्रयोगों को भगवान् शिव ने शक्तिसम्पन्न किया। इसी प्रकार कलियुग में शिवावतार श्री शाबरनाथ जी ने शाबरमन्त्रों को अद्भुत शक्ति प्रदान की। शाबरमन्त्र अनमिल बेजोड़ शब्दों का एक समूह होता है, जोकि अर्थहीन मालूम देते हैं, परन्तु भगवान् शंकर जी के प्रताप से ये मन्त्र अवन्ध्य प्रभाव रखते हैं– **" अनमिल आखर अर्थ न जापू। प्रकट प्रभाव महेश प्रतापू।।"** अतः शाबरमन्त्रों को यथावत् उच्चारण करें, किसी प्रकार से इनमें न्यूनाधिकता न करें। **नोट :**– मन्त्र का पुरुश्चरण गुरु की देखरेख में गुप्तरूप से करें। प्रकट होने पर पुरुश्चरण अर्थहीन हो जाता है– **" गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः।"**

धनधान्य–समृद्धि के लिए विंशति यन्त्रप्रयोग

गुरु-पुष्यामृत योग वाले दिन प्रातः स्नानादि कृत्य से निवृत्त होकर शुद्ध स्थान पर महालक्ष्मी की प्रतिमा या चित्र को सामने स्थापित करें। महालक्ष्मी का विधिवत् पूजन-ध्यान करके घृत-ज्योति प्रज्वलित करके लालवस्त्र पर सामने दिए गए यन्त्र को स्थापित करें। फिर धूप-दीप, नैवेध से यन्त्र की पूजा करके निम्नांकित मन्त्र का पाठ ७ माला प्रतिदिन करें। इस प्रकार सवालाख मन्त्र का जाप कमलगट्टे की माला से करें।

मन्त्र :– " ॐ श्रीम् हीं श्रीम् कमले कमलालये प्रसीद–प्रसीद श्रीम् हीम् श्रीम् ॐ महालक्ष्म्यै नमः।"

इस यन्त्र के प्रयोग को गुरुपुष्यामृत, रविपुष्यामृत, ग्रहणवेला, दीपावली, शिवरात्रि में करें तो सद्यः अभीष्ट फलप्रद होगा। प्रतिदिन पाठोपरान्त

(मन्त्रजाप के बाद) श्रीसूक्त के इन दो मन्त्रों से लक्ष्मी जी की स्तुति करें :–

''ॐ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।।''

''ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।''

सभी प्रकार की विपत्तियों को निरस्त एवं शत्रुकृत प्रयोगों को शान्त करने के लिए श्री बगुलामुखी महाविद्या-मन्त्रप्रयोग

सर्वप्रथम श्री बगुलामुखी महाविद्या का ध्यान, मन्त्रजाप से पहले करें –

''ॐ सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीम्
हेमाभाङ्गरुचिं शशांक–मुकुटां सच्चम्पकस्रग्युताम्।
हस्तैर्मुद्‌गर–पाश–वज्र– रसनां सम्बिभ्रतीं भूषणैः
व्याप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत्।।''

मन्त्र :– **''ॐ ह्लीं बगुलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय-स्तम्भय, जिह्वां कीलय–कीलय, बुद्धिं नाशय- नाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा।।''**

विधि :– इस मन्त्र का विधान 'मन्त्रमहार्णव' के अनुसार इस तरह है :– साधक पीतवस्त्र पहनकर, हरिद्रा(हल्दी)गांठ की माला बनाकर, उल्लिखित मन्त्र का जाप शुद्धासन पर अंगन्यासपूर्वक पूर्वाभिमुख होकर करे। सवा लाख मन्त्रजाप करने से सिद्धि प्राप्त होती है।

नोट :– साधकजन प्रतिदिन मन्त्रजाप के बाद जपित मन्त्र का पीतवर्ण–पुष्पों से दशांश हवन अवश्य करे।

शत्रु की नेष्ट गतिविधि को नष्ट करने के लिए किंवा मारण, मोहन, उच्चाटन की प्रक्रिया के लिए इस अनुष्ठान का प्रयोग तभी करें, जब जीवन एवं अपनी प्रतिष्ठा को भय हो, अन्यथा आप भारी पाप के भागी होंगे।

घर की दरिद्रता दूर करने के लिए श्री अन्नपूर्णा भगवती का अनुभूत प्रयोग

रवि–पुष्यामृत या गुरु–पुष्यामृत योग में किंवा आश्विन–शुक्लाष्टमी या दीपावली की रात्रि में श्री अन्नपूर्णा भगवती का ध्यान करके मन्त्रजाप शुरु करें। यह प्रयोग अनुभूत एवं सद्यः फलद है। मन्त्रजाप से पहले अन्नपूर्णा भगवती का ध्यान इस प्रकार करे –

''ॐ तप्त–स्वर्णनिभां शशांक–मुकुटां रत्नप्रभा–भासुरीं
नानावस्त्र–विभूषितां त्रिनयनां गौरी–रमाभ्यां युताम्।
दर्वी–हाटक–भाजनं च दधतीं रम्योच्चपीनस्तनीम्
नित्यं तां शिवमाकलय्य मुदितां ध्यायेऽन्नपूर्णेश्वरीम्।।''

इस प्रकार श्री अन्नपूर्णा भगवती का ध्यान करके निम्नांकित मन्त्रजाप करें–

मन्त्र :– **''ॐ ह्रीम् श्रीम् क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि ममाभिमतमन्नं देहि–देहि अन्नपूर्णे स्वाहा।''**

प्रतिदिन इस मन्त्र का जाप करने पर घर से दरिद्रता दूर भाग जाती है एवं धनधान्य–समृद्धि सद्यः अनुभव होने लगती है।

यदि इस मन्त्र का जाप दुकान में शुद्धासन पर बैठकर किया जाए तो कारोबार में बहुत लाभ होने लगता है।

ऋण(कर्जे) से मुक्ति पाने के लिए अनुभूत ''ऋणमोचन भौमस्तोत्र''

इस स्तोत्र का प्रतिदिन पाठ करने से कर्जे से मुक्ति अवश्यमेव प्राप्त हो जाती है। इस मन्त्र का जाप शुरू करें, अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है। मंगलवार के व्रत करें और मंगलवार से ही इस स्तोत्र का पाठ प्रारम्भ करें।

स्तोत्रपाठ से पहले मंगलदेव का ध्यान इस मन्त्र से करें–

" ॐ रक्ताम्बरो रक्तवपुः किरीटी चतुर्मुखो मेघगदो गदाधृक्।
धरासुतः शक्तिधरश्च शूली सदा मम स्याद् वरदः प्रशान्तः।।"

पाठ प्रारम्भ करने से पूर्व ऋषि आदि का स्मरण–उच्चारण इस प्रकार करें–

"ॐ अस्य श्री भौममन्त्रस्य गर्गः ऋषिः, मंगलो देवता, त्रिष्टुपश्छन्दः, ऋणापहरणे जपे विनियोगः।"

स्तोत्र–

"मंगलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः।
स्थिरात्मजो महाकायः सर्वकामार्थ साधकः ।।१।।
लोहितो लोहितांगश्च सामगानां कृपाकरः।
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूतिनन्दनः ।।२।।
अंगारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।
वृष्टिकर्ताऽपहर्ता च सर्वकाम – फलप्रदः ।।३।।
एतानि कुजनामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
ऋणं न जायते तस्य धनं प्राप्नोत्यसंशयम् ।।४।।
अंगारको योऽति बलवानपि यो ग्रहाणां
स्वेदोद्भवस्त्रिनयनस्य पिनाकपाणेः।
आरक्त– चन्दन– सुशीतलवारिणा यः
अभ्यर्चितोऽथ विपुलां प्रददाति सिद्धिम् ।।५।।
भो भो धरात्मज इति प्रथितः पृथिव्याम्
दुःखापहो दुरित–शोक – समस्त–हर्ता।
नृणामृणं हरति तान् धनिनः प्रकुर्यात्
यः पूजितः सकल – मंगलवासरेषु ।।६।।
यो मंगलो मंगलमादधाति मध्यग्रहो यच्छति वाञ्छितार्थम्।
धर्मार्थ-कामादि-सुख प्रभुत्त्वं कलत्रपुत्रैन कदा वियोगः।।७।।

कनकमय–शरीरस्तेजसा दुर्निरीक्ष्यो
हुतवह–समकान्तिर्मालवे लब्धजन्मा।
अवनिज–तनयेषु श्रूयते यः पुराणो
दिशतु मम विभूतिं भूमिजः सप्रभावः ।।८।।

ऋणमुक्ति के लिए एक और प्रयोग

निम्नांकित मन्त्र को दीपावली की रात्रि में एवं ग्रहणकाल में सिद्ध करें। प्रतिदिन २५० मन्त्रजाप करें। लालवस्त्र पहन, शुद्धासन पर बैठकर, धूप–दीप करके लगभग 45 दिनों तक मन्त्रजाप करें। मन्त्रजाप से पहले बिल के पत्ते, बिल्वफल, बिल के बीज, बिल की लकड़ी एवं जड़ को पीसकर चूर्ण बना लें, साथ ही **कुशोत्पाटिनी अमावस** वाले दिन उखाड़ी गई कुशा की जड़ को भी कूटकर चूर्ण बनाकर पलाश या चन्दन की चौकी के नीचे बनाए चूर्ण को बिछाकर निम्नांकित मन्त्र को कनेर या चन्दनशलाका से लिखें।

मन्त्र :– " ॐ श्रीं ह्रीम् श्रीं महालक्ष्म्यै नमः। ममालक्ष्मीं नाशय नाशय, मामृणोत्तीर्णं कुरु–कुरु, सम्पदां वर्धय–वर्धय स्वाहा। "

ध्यान दें– ४५ दिन तक प्रतिदिन मन्त्रजाप करने के बाद गोघृत से ७ आहुतियां मन्त्रोच्चारणपूर्वक अवश्य डालें। ४५ दिन का विधान पूर्ण होने पर प्रतिदिन नित्यनेम के समय एक माला प्रतिदिन करते रहें।

कर्जे से जल्दी ही राहत मिलेगी। कोई मित्र–बन्धु मददगार के रूप में खड़ा होगा।

सन्तान–कामेश्वरी मन्त्र–विधान

(यह मन्त्रप्रयोग 'रुद्रयामल' ग्रन्थ में सन्तानहीन स्त्रियों के लिए सविस्तार दिया गया है। इस मन्त्र का प्रयोग यहां जनहिताय देना उपयुक्त समझते हैं ।)

" असन्ततेः गृहं शून्यम् " [जिनके घर सन्तान नहीं, उनका घर शून्य (सूना) है।], अतः वे लोग निम्नलिखित मन्त्रजाप विनियोगपूर्वक

घर शून्य (सूना) है।], अतः वे लोग निम्नलिखित मन्त्रजाप विनियोगपूर्वक

सवालाख करें या कराएं। सवालाख मन्त्रजाप होने पर तर्पण, मार्जनादि विधिपूर्वक गव्यघृत एवं खीर–चरु का आहुतिपूर्वक दशांश हवन अवश्य कराएं। सन्ततिलाभ सुनिश्चित होगा। पाठ प्रारम्भ से पूर्णता तक पति–पत्नी ब्रह्मचर्यपूर्वक रहें।

विनियोग–

''ॐ श्री सन्तानकामेश्वरि–महामन्त्रस्य मन्मथ ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः, श्रीसन्तानकामेश्वरी देवता, क्लीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, श्रीं कीलकम् (अमुक्याः/ मम) सन्तानप्राप्तये वंशवृद्धये जपे विनिसोगः।''

नोट– विनियोग में जहां (अमुक्याः) लिखा है, वहां जिस स्त्री–विशेष के लिए अनुष्ठान किया जा रहा है, उस स्त्री का नाम बोलना चाहिए। यदि पति–पत्नी स्वयं अनुष्ठान करें तो 'अमुक्याः' शब्द को न बोलकर केवल 'मम' शब्द का प्रयोग करें।

मन्त्र – ''ॐ क्लीम् ऐं ह्रीं श्रीम् नमो भगवति सन्तानकामेश्वरि–गर्भ–निरोधं निरासय–निरासय सम्यक् शीघ्रं सन्तानमुत्पादयोत्पादय स्वाहा।''

पुत्रप्राप्ति-प्रयोग

मन्त्रमहार्णव में इस प्रयोग को विशेष महत्त्व दिया गया है। शुभ मुहूर्त्त में शुद्धासन पर बैठकर, एकाग्रमन से पुत्रप्राप्ति की धारणा को मन में संकल्पित करके निम्नांकित मन्त्र का १२ लाख मन्त्रजाप करें। आसन के नीचे आम–वृक्ष के पत्ते रखें। जल्दी ही पुत्रप्राप्ति के लक्षण नज़र आएंगे। अथवा साधक प्रतिदिन एकान्त में आम के वृक्ष पर चढ़कर इसमन्त्र का यथाशक्ति पाठ करें।

मन्त्र – '' ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं पुत्रं कुरु–कुरु स्वाहा।''

मन्त्रमहार्णव में लिखा है–

''आम्रवृक्षं समारुह्य जपेदेकाग्रमानसः।
अपुत्रो लभते पुत्रं नान्यथा शंकरोदितम्।।''

बन्ध्या भी गर्भ धारण करे

(i) लक्ष्मणा बूटी को इतवार वाले दिन जड़ से उखाड़कर, एकवर्ण (एक ही रंग वाली) गाय के दूध में इस (लक्ष्मणा बूटी) को रगड़ें। कुमारी (लगभग 8 वर्ष आयु की) लड़की के हाथ से बूटी को दूध में रगड़ावें। ऋतुमती स्त्री को प्रतिदिन एक छटांक पिलावें। उन दिनों स्त्री गाय के दूध की खीर, चावल, माह की दाल का सेवन करे। इसप्रकार 7 दिन प्रयोग करने पर बांझ स्त्री भी पुत्रवती हो जाती है। श्वेत लक्ष्मणा बूटी की जड़ के सेवन से गर्भ होगा।

(ii) मोरपंख–चन्द्रिका को बारीक–बारीक करके खोए या मलाई में लपेटकर ऋतुमती नारी सेवन करे तो निश्चित गर्भ होगा–ऐसा **चिकित्साशास्त्र** में लिखा है।

(iii) असगन्धा को पानी में पकाकर, घी से युक्त दूध एकरूप करके ऋतुस्नाता नारी को पिलाने से गर्भ हो–

'' समूलपत्रां सर्पाक्षीं रविवारे समुद्धरेत्।
एकवर्णगवां क्षीरैः कन्याहस्तेन पेषयेत्।।
ऋतुकाले पिबेद् बन्ध्या पलार्धं तद्दिने दिने।
क्षीर–शाल्यन्न–मुदगांश्च लघ्वाहारं प्रदापयेत्।।
एवं सप्तदिनं कुर्यात् बन्ध्यापि लभते सुतम्।
श्वेतायाः कंटकार्याश्च मूलं तद्वच्च गर्भकृत्।।
न कर्म कारयेत् किंचिद्वर्जयेच्छीतमातपम्।
शिफाबर्हिशिखायास्तु क्षीरेण परितोषितम्।।
पिबेदृतुमती नारी गर्भधारणहेतवे।
अश्वगन्धा-कषायेण सिद्धं दुग्धं घृतान्वितम्।।
ऋतुस्नातांगना प्रातः पीत्वा गर्भं दधाति हि।''

(यहां सर्पाक्षी = लक्ष्मणाबूटी और बर्हिशिखा = मोरपंख है।)

तारा महाविद्या-स्तोत्र

[पाठक ध्यान दें–जिनके घर में भूत–प्रेत–पिशाचजन्य परेशानी से उपद्रव हों एवं घर में ऋद्धि–सिद्धि का अभाव रहे। बच्चे विद्या–बुद्धिहीन हो रहे हों; कारोबार में भयंकर हानि से मन परेशान हो तो इस 'ताराष्टक स्तोत्र' का प्रातः, सायं एवं मध्याह्न में नित्यप्रति पाठ करने से घर में सब प्रकार से शान्ति एवं प्रगति होने लगती है। यह चामत्कारिक स्तोत्र है, पाठ करें एवं तुजर्बा लें।]

स्तोत्र–

''ॐ मातर्नीलसरस्वति प्रणमतां सौभाग्य–सम्पत्प्रदे
प्रत्यालीढ़पदस्थिते शवहृदि स्मेराननांभोरुहे।
फुल्लेन्दीवरलोचने त्रिनयने कर्त्री कपालोत्पले
खड्गं चादधती त्वमेव शरणं त्वामीश्वरीमाश्रये ।।१।।

वाचामीश्वरि भक्ति – कल्पलतिके सर्वार्थ–सिद्धीश्वरि
गद्य– प्राकृत– पद्यजातरचना सर्वार्थ– सिद्धिप्रदे।
नीलेन्दीवर– लोचन– त्रययुते कारुण्य–वारांनिधे
सौभाग्यामृत–वर्धनेन कृपया सिंच त्वमस्मादृशम् ।।२।।

खर्वे गर्व–समूह–पूरित–तनो सर्पादिवेषोज्ज्वले
व्याघ्रत्वक्–परिवीत–सुन्दर–कटि व्याधूत–घंटांकिते।
सद्यः कृत्त–गलदजः परिमिलन्मुण्डद्वयीमूर्धज–
ग्रन्थिश्रेणि–नृमुण्डदामललिते भीमे भयं नाशय ।।३।।

मायानङ्ग– विकार– रूपललना बिन्द्वर्ध– चन्द्राम्बिके
'हुं फट्' कारमयि त्वमेव शरणं मन्त्रात्मिके मादृशः।
मूर्तिस्ते जननि त्रिधामघटिता स्थूलातिसूक्ष्मा परा
वेदानां नहि गोचरा कथमपि प्राज्ञैर्नुतामाश्रये ।।४।।

त्वत् पादाम्बुजसेवया सुकृतिनो गच्छंति सायुज्यताम्
तस्याः श्रीपरमेश्वर– त्रिनयन– ब्रह्मादि– साम्यात्मनः।
संसाराम्बुधि– मज्जने पटुतनुदेवेन्द्र– मुख्यान् सुरान्
मातस्ते पदसेवनाद्धि विमुखान् किं मन्दधीः सेवते ।।५।।

मातस्त्वत्– पद– पंकज– द्वय– रजोमुद्रांक– कोटीरिण–
स्ते देवा जनसंगरे विजयिनो निश्शंकमंके गतः।
''देवोऽहं भुवने न मे सम''– इति स्पर्धां वहन्तः परे
तत्तुल्यां नियतं यथा शशि–रवी नाशं ब्रजन्ति स्वयम्।।६।।

त्वन्नाम–स्मरणात् पलायन–पराः द्रष्टुं नु शक्ता न ते
भूत–प्रेत–पिशाच–राक्षस–गणा यक्षाश्च नागाधिपाः।
दैत्या दानव–पुंगवाश्च खचरा व्याघ्रादिका जन्तवो
डाकिन्यः कुपितांतकश्च मनुजान् मातो हि भक्तान् तव ।।७।।

लक्ष्मीः सिद्धिगणश्च पादुकमुखाः सिद्धास्तथा वैरिणाम्
स्तम्भश्चापि वराङ्गने गजघटास्तम्भस्तथा मोहनम्।
हे मातस्तव सेवया खलु नृणां सिध्यन्ति ते ते गुणाः
क्लान्तः कान्त–मनोभवोऽत्र भवति क्षुद्रोऽपि वाचस्पतिः ।।८।।

ताराष्टकमिदं भक्तिमान् यः पठेन्नरः।
प्रातर्मध्याह्नकाले च सायाह्ने नियतः शुचिः।।

लभते कवितां विद्यां सर्व–शास्त्रार्थविद् भवेत्।
लक्ष्मीमनश्वरां प्राप्य भुक्त्वा भोगान् यथेप्सितान्।।
कीर्तिं कान्तिं च नैरुज्यं प्राप्यान्ते मोक्षमाप्नुयात्।

कुछ अनुभूत तन्त्रप्रयोग

(क) आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए– यदि आप कर्जे में डूबे हैं, रात की नींद हराम हो गई है। कारोबार में भरपूर मेहनत के बावजूद भी लाभ न हो तो निम्नांकित प्रयोग करें। चिन्ता मिटेगी, कारोबार

में भरपूर लाभ होने लगेगा।

रविपुष्यामृत, गुरुपुष्यामृत योग या दिवाली की रात्रि में अपने चन्द्रबल को देखकर, श्रीगणेश जी का ध्यान करके एवं ऋणहर्तृ श्रीगणेशस्तोत्र का पाठ करके लाल, पीले या हरे रंग की एक थैली में गुड़, मूंग, धनिया, एक पंचमुखी रुद्राक्ष, २ या ५ नग सुपारी, ५ गाठें हल्दी की एवं एक चान्दी का सिक्का डाल दें। तत्पश्चात् गणेश जी को शुद्ध घी से बने लड्डुओं का भोग लगाकर " ॐ गं गणपतये नमः" मन्त्रोच्चारण करते हुए अपने कैशबॉक्स में रख दें। छोटे-छोटे बच्चों को लड्डू बांटें, किसी ब्राह्मण को कुछ दान दें। कारोबार में प्रगति एवं आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

(ख) गर्भरक्षा के लिए अचूक टोटका— गर्भधारण होने पर दूसरा मास पूर्ण होते ही **'पुंसवन संस्कार'** के लिए किसी विद्वान् पण्डित से सम्पर्क करें। **'पुंसवन'** विधि होने पर पति एवं पत्नी दोनों श्रीराधाकृष्ण मन्दिर में जाकर – **" ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।"**— इस मन्त्र उच्चारण के साथ एक छोटी-सी चान्दी की बांसुरी चढ़ा दें। गर्भ खराब नहीं होगा और प्रभुकृपा से पुत्र ही होगा।

(ग) विवाह शीघ्र हो— यदि लड़के या लड़की की शादी में देरी हो रही हो तो इतवार को छोड़कर, प्रातःकाल सूर्योदय से आधा घण्टा पहले या सूर्योदय के समय कच्ची लस्सी से लगभग सवा दो महीने पीपल (ब्रह्मा) सींचा करें। जल्दी ही विवाह का योग बनेगा।

अशुद्धि की अवस्था में जल न चढ़ाएं।

(घ) क्या अपका लड़का या लड़की आपकी इच्छा के विरुद्ध प्रेमविवाह करना चाहता है ? इस चिन्ता से मुक्ति के लिए निम्नांकित प्रयोग करें—

एक बिना इस्तेमाल किए हुए लोहे के टुकड़े को आग में लाल करके शीतल जल में बुझा दें। लोहे को गर्म करके ठण्डे जल में बुझाने की प्रक्रिया को एकदिन में तीन बार करें। आग में लाल टुकड़े को प्रत्येक बार बुझाते समय निम्नांकित वाक्य और लड़के और लड़की का नाम लेकर बोलें— **" जैसे मेरे द्वारा गर्म लोहे का टुकड़ा पानी में शीतल किया जा रहा है, उसी प्रकार अमुक लड़के (लड़के का नाम) एवं अमुक लड़की (लड़की का नाम लेकर) का प्रेम सम्बन्ध शीतल (समाप्त) हो जाए।"**

इस प्रक्रिया को ७ दिन दोहराएं। जिस जल में लोहे का टुकड़ा बुझाया (शीतल किया) जाएगा, उस जल से प्रेम में पागल युवक या युवती का प्रतिदिन मुंह धुलाएं और कुछ जल का उस पर छींटा दें और कुछ स्नान के लिए दे दें। युवक या युवती में प्रेमसम्बन्ध शिथिल (समाप्त) हो जाएगा।

(च) कलहनाशक तन्त्र

घर में झगड़े से मुक्ति पाने के लिए **'दत्तात्रेय तन्त्रोक्त'** इस तन्त्र का प्रयोग करें;—

"तालेन तक्रपिष्टेन मृत्तिका-युक्तपुत्तलीम्।
निखनेद् चेदगृहे भूमौ कलहो नाशमाप्नुयात्।।"

अर्थात्— ताड़वृक्ष के पत्तों को लस्सी डालकर पीसे एवं इससे मिट्टी की एक पुत्तली बनावें। पिसे पत्तों एवम् मिट्टी की इस पुत्तली को घर की धरती में दबा देने से गृहकलह शान्त हो जाता है।

'मुखवार्ताली' कर्णपिशाचिनी मन्त्र

यह प्रयोग एक महात्मा द्वारा अनुभूत है। इस प्रयोग से आश्चर्यजनक भूत-भविष्यत्-वर्तमान को प्रत्यक्षवत् बयान करते हुए देखा गया है:—

मन्त्र:— **"ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नृं ठं ठं हुं नमो देवपुत्रि स्वर्गवासिनि सर्वनर-नारीमुख-वार्तालि वार्ता कथय सप्तसमुदान् दर्शय-दर्शय ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नृं ठं**

ठं हुं फट् स्वाहा।।''

विधान :– जंगल में रहने वाली सेह के दो शूल (कांटे) एवम् जंगली सूअर का एक दांत लेकर सामने रखकर एक लाख ३२ हजार उल्लिखित मन्त्र का जाप करे तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। प्रतिदिन मन्त्रजाप नित्यकर्म के तौर पर करता रहे। ध्यान रहे– मन्त्र सिद्ध करते समय सेह के शूलों एवं सूअर के दांत पर सिन्दूर लगावें एवं अपने मस्तक पर भी मन्त्रजाप करते समय सिन्दूर अवश्य लगावें। ऐसा करने पर कर्णपिशाचिनी साधक के कानों में भूत–भविष्यत्–वर्तमान तीनों कालों की वार्ता स्पष्टरूप से कह देती है।

नेत्रपीड़ा-निवारणार्थ मन्त्र

नीम की डाली से २१ बार दुखती आंख को निम्नांकित मन्त्र पढ़ते हुए झाड़ दें। आंख की पीड़ा शान्त हो जाएगी– इसमें सन्देह नहीं।

मन्त्र :– ''ॐ श्रीराम की धनुही लक्ष्मण का बाण।
आंख दर्द करे तो लक्ष्मण कुमार की आन।।''

कन्या का वास पति के घर में रहे

आजकल नवोढा कुछ कन्याएं पति के घर से झगड़ा करके पिता के घर में आ बैठती हैं। जिससे पिता एवम् ससुरपक्ष में विरोध एवम् परेशानी बन जाती है। विरोधशान्ति हेतु एवम् कन्या पतिघर में ही मन लगाकर रहे, एतदर्थ यह निम्नांकित शाबरमन्त्रप्रयोग रामबाण का काम करता है;– अनुभव करें।

मन्त्र :–''ॐ भोगराज भयंकर परिभूय उत उधरई जोई जोई देखे। मारकर तासो सौ दीखै पांव परन्ता ॐ नमो ठः ठः स्वाहा।।''

विधान– सांभर नमक की १०८ कांकरी इस शाबरमन्त्र से अभिमन्त्रित करके लड़की को किसी तरह खिला दें तो लड़की ससुराल में ही रहे;– रूठकर पिता के घर कभी न आएगी।

वशीकरणार्थ कुछ मन्त्र

[इन मन्त्रों का प्रयोग शत्रु को वश में करने के लिए एवम् रूठी हुई अपनी धर्मपत्नी किंवा रूठे हुए पति को वश में करने के लिए ही करें। अनुचित अर्थ में प्रयोग करने से आपको हानि पहुंचेगी।]

(i) घोररूपिणी–मन्त्रप्रयोग

मन्त्र :– '' ॐ नमः कट–विकट घोररूपिणि स्वाहा।''

विधि :– इस मन्त्र को शुभ मुहूर्त्त में पहले सिद्ध कर लें। फिर भोज्य पदार्थ को इसी मन्त्र द्वारा सात बार अभिमन्त्रित करके, जिसका नाम लेकर ७ दिन तक खाएंगे, वह निश्चय ही वश में हो जाता है।

(ii) वश्यमुखी–मन्त्रप्रयोग

मन्त्र– ''ॐ वश्यमुखि राजमुखि स्वाहा। ''

विधि :–दाएं हाथ में तेल लेकर, अनामिका अंगुली से तीन बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके, फिर तीन बार उल्लिखित मूलमन्त्र को पढ़कर, मुख पर एवम् सिर पर तेल मले। राजा, जज एवम् विरोधी भी वश में आ जाते हैं।

(iii) चामुण्डा–मन्त्रप्रयोग

मन्त्र–''ॐ चामुण्डे जय जय, स्तम्भय–स्तम्भय, भंजय–भंजय, मोहय–मोहय, सर्वसत्त्वे नमः स्वाहा।''

विधि :–शुभ मुहूर्त्त में इस मन्त्र को सिद्ध करें। तत्पश्चात् इस मन्त्र को लाल पुष्प पर तीन बार पढ़कर, फूंक मारकर, जिसे देंगे, वशीभूत हो जाएगा।

शुक्र–सूर्य संक्रमण

(Transit of Venus)

[6 जून, 2012 ई. को एक अद्‌भुत आकाशीय दृश्य देखिए। सूर्य के बिम्ब (Disc) पर शुक्र चलता दिखाई देगा।]

लेखक, गणक :– प्रियव्रत शर्मा

बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, गुरु, शनि, यूरेनस एवं नेप्च्यून– ये सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर अपने–अपने लगभग वृत्ताकार मार्गों में भ्रमण कर रहे हैं। इनमें से बुध और शुक्र के भ्रमणमार्ग (भ्रमणवृत्त) हमारी पृथ्वी के भ्रमणवृत्त के बीच पड़ते हैं। जिससे इन ग्रहों को आभ्यन्तर ग्रह (Inferior Planets) कहा जाता है। जब वक्रगति से चल रहे आभ्यन्तर ग्रह के भोगांश सूर्यभोगांश के लगभग तुल्य एवं उसका शर (पृथ्वी के भ्रमणवृत्त से ग्रह का दक्षिण या उत्तर में अंशात्मक अन्तर) लगभग 16′ से कम हो जाता है, तब हम पृथ्वीवासियों को वह सूर्यबिम्ब के ऊपर से गुज़रता नज़र आता है। यह आकाशीय रोचक घटना कभी–कभी आती है। इस घटना को **"बुध/शुक्र–सूर्यसंक्रमण"** (Transit of Mercury/Venus) कहा जाता है। हमारे सिद्धान्तग्रन्थों में इसे **" बुध/शुक्र द्वारा सूर्य–भेदयुति"** भी कहा गया है।

इसवर्ष (सं. 2069 वि. में) 6 जून, 2012 ई. को **' शुक्र–सूर्य संक्रमण '** घटित होगा। जिसे भारत में सर्वत्र सूर्योदयानन्तर भा. स्टैं. टा. अनुसार प्रातः लगभग सवा दस बजे तक देखा जा सकेगा। इस संक्रमण के समय सूर्यबिम्ब पर शुक्र का छोटा–सा बिम्ब पूर्व से पश्चिम की ओर बहुत धीरे–धीरे चलता दिखाई देगा। [अगले पृष्ठ पर दिया गया आलेख (Diagram) देखिए] शुक्र का बिम्ब इस दिन भा. स्टैं. टा. अनुसार रात्रि के 3 घं. 38 मि. पर पूर्व की ओर से सूर्यबिम्ब में प्रवेश कर प्रातः 10 घं. 10 मि. पर पश्चिम की ओर से सूर्यबिम्ब से बाहर निकल आएगा।

इस प्रकार यह ग्रह सूर्यबिम्ब में 6 घं. 32 मि. तक संचार करेगा। इस अवधि में शुक्र सूर्यबिम्ब पर कब और कहां दिखाई देगा, यह इस आलेख से आप जान सकते हैं। भारत में यह संक्रमण सूर्योदय के अनन्तर $10^{घं}$ $10^{मि}$ (भा.स्टैं.टा.) तक सर्वत्र दिखाई देगा। सूर्योदय से पूर्व घटित होने वाला यह संक्रमण कोरिया, जापान आदि में ही, जहां उस समय सूर्य पूर्वक्षितिज से ऊपर होगा, देखा जा सकेगा।

ध्यान रहे– मैंने इस गणना में शुक्र के लम्बन की उपेक्षा की है, जिससे इस संक्रमण के प्रारम्भ–समाप्ति आदि कालों में कुछेक (नगण्य) मिनटों का अन्तर सम्भव है।

यह भी जान लेना चाहिए, संक्रमणकाल में ये आभ्यन्तर ग्रह (बुध–शुक्र) सर्वदा वक्र ही होते हैं। उनकी मार्गीगति में संक्रमण घटित नहीं होता। मार्गीगति से सूर्य से युति करते हुए ये ग्रह हमारी पृथ्वी से लगभग 180 अंश पर सूर्यबिम्ब से ऊपर होते हैं, यानी तब पृथ्वी और इन ग्रहों के मध्य सूर्य रहता है। संक्रमण (Transit) तो तभी दृश्य होता है, जब ये ग्रह सूर्य और पृथ्वी के मध्य विद्यमान रहते हैं।

शुक्र के सूर्यातिक्रमण का फल **बृहत्संहिता** में इस प्रकार लिखा है–

'' भेदे वृष्टिविनाशो भेदः सुहृदां महाकुलानां च।''

अर्थात् – भेदयुति होने पर वर्षा का अभाव, मित्रों में मतभेद और मित्रराष्ट्रों में वैमनस्य पैदा होता है।

सावधान– इस अद्‌भुत दृश्य को देखने के लिए दर्शक को सावधानी बरतनी होगी। **इसे नंगी आंख से कदापि मत देखिए। इससे आपकी दृष्टि क्षत हो सकती है।** इसे, सम्भव हो तो, Filter लगे Telescope से, अन्यथा काले Welder's glass में से देखिए। दीपक की लो के धुएं से अच्छी तरह काला किए गए कांच में से भी इसे आप देख सकते हैं। विशाल सूर्यबिम्ब पर, धीमी गति से सरक रहा छोटा–सा शुक्रबिम्ब ऐसे दीख पड़ेगा, जैसे किसी चमकदार चान्दी के बड़े थाल पर कोई छोटा–सा सिक्का धीरे धीरे खिसक रहा हो।

ध्यान रहे– शुक्र–सूर्यसंक्रमण का ऐसा रोचक दृश्य अब 105 वर्ष बाद 2117 ई. में ही देखा जा सकेगा, इससे पहले नहीं।

शुक्र का सूर्यातिक्रमण (6 जून, 2012 ई.)

[सूर्यबिम्ब पर शुक्र की भिन्न–भिन्न कालों में स्थिति (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)]
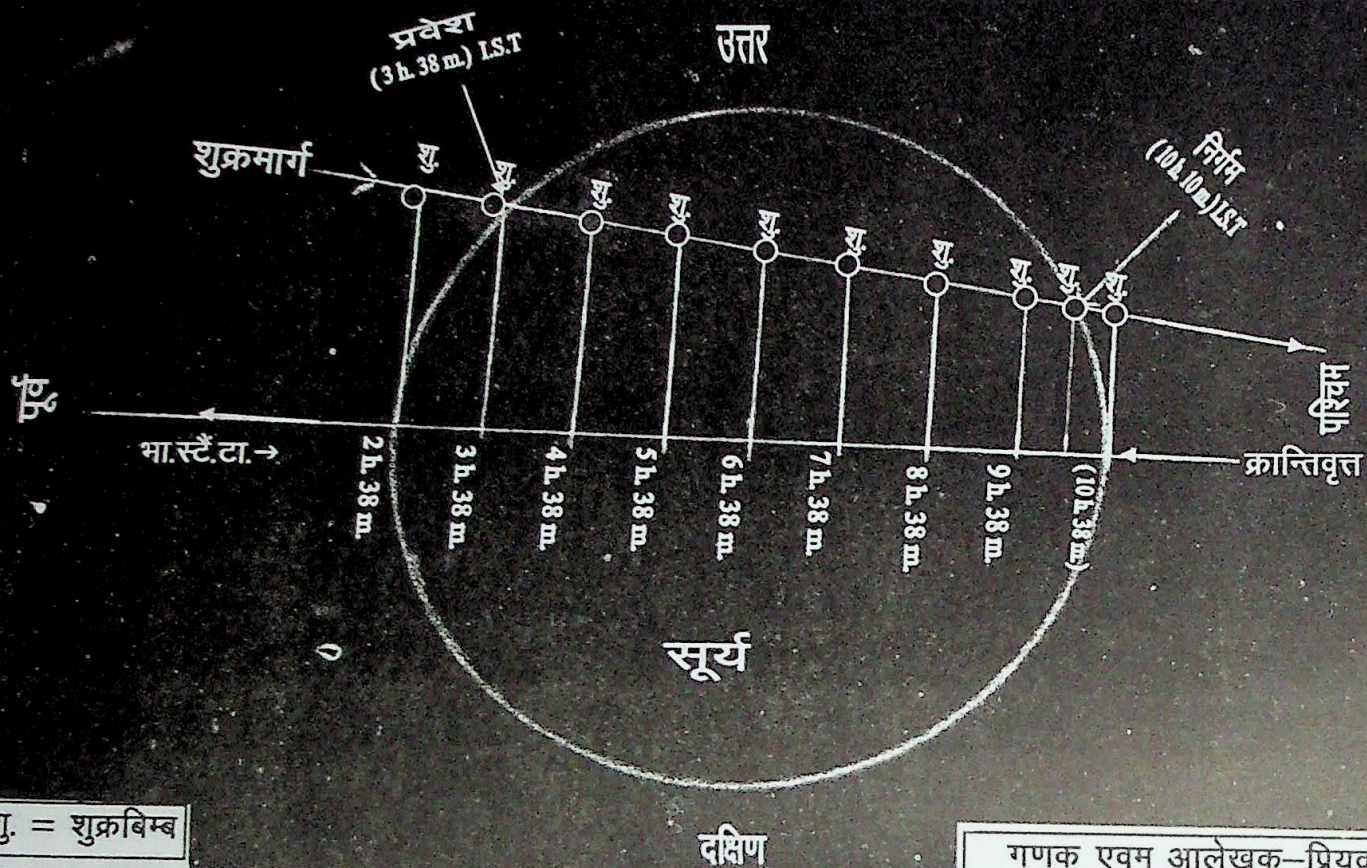
उपरोक्त आलेख को इसप्रकार पकड़िए कि– इसका पूर्वदिशा वाला भाग पूर्वदिशा में, पश्चिमदिशा वाला पश्चिम में, उत्तरदिशा वाला भाग ऊपर की ओर और दक्षिण दिशा वाला भाग नीचे की ओर हो।

की ओर और दक्षिण दिशा वाला भाग नीचे की ओर हो।

प्रसूति-लग्न विचार

मेष—जन्मसमय मेष लग्न हो, तो माता का पूर्व या पश्चिम में सिर, उपसूतिका दो या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवम् मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल, मलिन थे। ४। ११। १६। ४४। ५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे; इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप कराना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो १०० वर्ष जीवे।

वृष— माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आई, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर से पूर्व में सूतिका-स्थान, श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया। १। २८। ३३। ४४। ६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय का जाप और ब्राह्मणभोजन करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन— माता का सिर पश्चिम में, उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, सिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया, दूध कम उतरे। ४। १०। १४। ३८। ५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवाएं। यदि इन वर्षों से बचे, तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क—माता का उत्तर में सिर, उपसूतिका ५ या ४, बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्म, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, माता ने प्रसव से पहले मधुर व शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के वामांग में लहसुन आदि का चिह्न, देर से रोया। ५। २५। ४०। ५८। ६२— इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश के समय तुलादान, छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याणप्रद है।

सिंह— माता का पश्चिम या पूर्व में सिर, मलिन या लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या खट्टा भोजन किया था, जन्मसमय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान। ५। १३। २८। ३६। ४८— इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्यनारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और ब्राह्मणों को मीठा भोजन करावें तो कल्याण रहेगा।

कन्या—माता का दक्षिण में सिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्ठान्न बासी चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्मसमय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्द्ध शब्द किया, घर के नैर्ऋत्यकोण में सूतिका-स्थान। ४। १६। २३। ३६। ५५— ये वर्ष कष्टकारक हैं। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला— माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठंडा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी। जन्मसमय स्त्री ३ या ६, वहां एक कन्या भी हो, दीपक उठाया गया, बालक जन्मसमय कुछ ठहरकर अर्धशब्द करके रोया, घर के पश्चिमभाग में सूतिकास्थान। ८। १५। ३१। ३५। ६२। ६४— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रहों का दान, हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक—माता का दक्षिण या उत्तर में सिर, रक्त या दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक, अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ३, पीछे से भी २ आई, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया। छींक भी किया, दीर्घ केश, घर के पश्चिमभाग में प्रसवस्थान। ११। २८। ३८। ५२। ६२— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु—माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, पीत या रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्मसमय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्यकोण में सूतिकास्थान। २। १०। १८। ३१। ३८। ४२। ६७— इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मणभोजन श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर— माता का सिर दक्षिण में, ऊपर काला व जीर्ण कमजोर वस्त्र; गुड़, दुग्ध, कसैला भोजन, ठण्डा जलपान किया था। जन्मसमय स्त्रियां २, पीछे से एक आई। दीपक हाथ में उठाया गया। बालक जन्मोत्तर अर्धशब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तरभाग में पुराना सूतिकास्थान। ५। १३। २७। ३६। ५७। ६३। ८७— इन कष्टकारक वर्षों से बचे, तो ९५ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के शुरु में शिवार्चन, मृतसंजीवनी आदि का जाप रखे।

कुम्भ—माता का सिर पश्चिम को, जीर्ण, धुम्रवर्ण वा कुरूप वस्त्र, मधुर-शीत शाकादि का भोजन, कष्ट अधिक, जन्मसमय पास स्त्रियां ४, दो स्त्री पीछे से आई, उन में एक स्त्री गर्भिणी भी हो, दीपक स्वास्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्धशब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तरभाग में सूतिका-गृह। २। २८। ३३। ४८। ६४— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जयजप हितकारक है। इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन— माता का सिर उत्तर में, पीत या मलिन वस्त्र, विचित्र अल्प भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका-स्थान। १। ८। १३। ३६। ४८— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रह-शान्ति-हवन, मृतसञ्जीवनीमन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे। स्मरण रहे-अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें – वही बालक का जन्मलग्न जानना चाहिए, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

पितृपरोक्ष जन्मज्ञान— (१) जन्मलग्न को चन्द्रमा न देखे, (२) बुध-शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, (३) लग्न में शनि चन्द्रमा से अदृष्ट हो, (४) भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो– इन चारों योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना चाहिए।

जन्मकुण्डली में दिशाज्ञान— प्रथम भाव पूर्व, द्वितीय-तृतीय ईशान, चतुर्थ उत्तर, पञ्चम-षष्ठ वायव्य, सप्तम पश्चिम, अष्टम-नवम नैर्ऋत्य, दशम दक्षिण, एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना चाहिए।

प्रसूतिस्थान से पाकशालादि का विचार

जन्मकुण्डली में सूर्य, मंगल जिस दिशा में हों, वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना चाहिए। इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और शनि से अशुभ मैला स्थान जानना चाहिए। दोहा– लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। वा लग्न दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार।। केन्द्र (१। ४। ७। १०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें, जो बली (स्वराशि, मित्रोच्च, व मूलत्रिकोण राशि का) केन्द्रस्थान में स्वमित्र, शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो, उसकी दिशा में अथवा लग्नपति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है।

ग्रहों की दिशा–सूर्य की पूर्व, चन्द की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनि की पश्चिम और राहु, केतु की नैर्ऋत्य।

चन्द्रात्तैलज्ञानम्– चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तैल ज्यादा कहना। यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तैल कहें। यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तैल कहना।

सो०– तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशुजन्म तब आई, तब कही दीपकतैल नहीं। सित–शनि दशमें धाम, पंचन तनुपै चन्द्रमा, शिशुजन्म में तब वाम, दीपकतैल सौं युक्त कहि।

लग्नादीपवर्तिज्ञानम्– जन्मलग्न के कम अंश हों तो बड़ी बत्ती कहें, अधिक अंश हों तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतर्गतैर्ग्रहैःस्युरुपसूतिकाः– यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्न से चन्द्रपर्यन्त जितने ग्रह हों, उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों तो उसकी गणना करें, अन्यथा उसे नहीं जोड़ें। इस प्रकार जो ग्रह लग्न में हो और उसके अंश लग्न से अधिक हों तब ही उसकी संख्या जोड़ें, अन्यथा नहीं जोडें। लग्न–चन्द्रांतर्गत कोई ग्रह वक्र या उच्च का हो तो तीन गुणा करें और स्वराशि, स्वनवमांश, स्वद्रेष्काण में हो तो द्विगुण करें, इसी प्रकार जितने ग्रह नीच राशि के, अस्त होवें, उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इसमें भी विशेष यह ध्यान रखने योग्य है, कि– वह लग्न, चन्द्रांतर्गत ग्रह लग्न के भोगांश से सप्तमभावपर्यन्त होवे तो सूतिकागृह से बाहर समीप में, और सप्तमभाव से लग्न के भुक्तांशपर्यन्त हों तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना चाहिए। उन ग्रहों में जो शुभ ग्रह वहां हों तो, धर्मशील, सौभाग्यवती स्त्रियां कहें, अशुभ ग्रहों से विधवा, दुश्चरित्रा कहें।

शय्या–शिर व पादविचार

"लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषट्क्रान्त्येषु पादाः।" लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहें। अर्थात् १। २ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४। ५ में दक्षिण, ६ में नैर्ऋत्य, ७। ८ में पश्चिम, ९ में वायव्यकोण, १०। ११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशान कोण की तरफ जानें। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना चाहिए। इन स्थानों में से जिन स्थानों में पाप ग्रह हों, वहां सूतिका के पलंग का पावा फटा, टूटा समझना चाहिए।

दो०– मीन–मिथुन–सिंह–तुला–मेष होय तत्काल।
अन्तरिक्ष भयो बालक, शेषे भूमि विशाल।।

अथचिह्नज्ञानम्– दोहा–षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। वामे कुछ लहसन अहै गर्गवचन परमाण।। भानु तथा सौरी तनधन कुंज कण्टक चन्द। बालक के षट् अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राहु। वामकर्ण वा मस्तके अवश चिह्न दरशाह।। सुह्रद भाव में कवि तव भौम वा सौरी लग्न। वामपाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न।। नौमे पांचे भृगु बसे तनु व चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद।"

प्रसवकष्ट दूर हो– प्रसवकाल से पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकण्डा) की जड़ें लाकर, घृतयुक्त गुग्गुल की धूनी देकर कटि में बांधे और साथ ही "ॐ मुक्ताः आशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भमेहि माचिर–माचिर स्वाहा।।"– इस मन्त्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र ही प्रसव होगा। अगर तीस का यंत्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख, धोकर पिला देवें तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। स्मरण रहे कि– पहले उपरोक्त मंत्र तथा यन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जाप करके तथा यन्त्र को लिखकर सिद्ध कर लें, तब कष्ट को मिटाता है।

बालक के लिए अरिष्ट

दो०:– "घूनाष्टमतनु पाप खग, बरहै शशि जो खीन। कण्टक शुभ खग ना बसै, वेगि ताहियमलीन।। बसैचन्द्रा द्वादसे अष्टभवन दो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु–पिता संताप।। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्मसमय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु–पिता संताप।। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्मसमय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव।।"

अथकाणयोगः– "तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसै त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुक्त भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय।। तात मात भ्राता तनय मातुल त्रिकघर नाथ।। चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान।। भानु राहु दहनों नयन, बुधजन कहत बखान।।"

मूक योगः– "पञ्चमेश गुरुयुक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौं न भौमपतियुक्त गुरु त्रिकहि मूक कहि सोय।। शुक्र त्रिके गुरु सिंह अज दशम भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश।।"

दुःखदयोग–रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पापयुक्त लग्नेश। जन्मसमय जाके परे ताको अंग कलेश।। पापयुक्त तनुभवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तनु मुख विश्वाबीस।। पापग्रहयुत लग्नपति परै लग्न में आय। वीर्यहीन नर होय तो अधिक व्याधि रुजताय।।

बन्धनयोग– क्रूर रहै धन नवम व्यय और पञ्चम आगार। सो नर सूर कसूर करि निवसै कारागार।।

सर्पवेष्टितयोग– यदि अष्टमेश लग्न में राहुसहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित पैदा होता है।

यमल जन्मयोग–चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्द्ध और धनु के

तरफ जानें। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना चाहिए। इन स्थानों में से जिन स्थानों में पाप ग्रह हों, वहां सूतिका के पलंग का पावा फटा, टूटा समझना चाहिए।

अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित पैदा होता है।

यमल जन्मयोग—चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्द्ध और धनु के

उत्तरार्द्ध) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहें। अथवा आधानलग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे— शनि, मंगल से ५/७/९ स्थान में चन्द्रमा हों तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु-समय-विचार – जिन अरिष्ट योगों में मरणकाल नहीं कहा गया, उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो, वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है, तब मृत्यु कहें। अथवा— जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो, जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है, तब मृत्यु होनी बताएं। अथवा चन्द्रमा जब लग्नराशि में आता है, तब मृत्यु का होना कहें। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योगयुक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पापग्रहों द्वारा देखा जाता हो, तब मृत्यु कहनी चाहिए। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके, तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इसलिए आयु का प्रथम विचार करें, फिर मृत्यु कहें।

सुखदयोग – अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह दो परे तो जानो सुख संग।। जन्मलग्न में उच्च ग्रह जो काहु के होय। मित्रदृष्टि ता पर परे सर्वसुखी नर होय।।

क्लीब (नपुंसक) योगः – दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीब योग तब जान। शुक्रभवन से रिष्फ षट् मन्द बसे क्लिब मान।।

कुष्ठयोग :– लग्नप बुध कुज शशियुते राहुयुक्त या केतु। श्वेतकुष्ठ को योग यह वरणत गुणी सचेतु।। भौम भास्कर मन्दयुक्त रक्तकृष्ण कह कुष्ठ। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अतिरुष्ट।। जलजगंडयुत, चन्द जो ग्रन्थिगंड कुजसाथ। पित्त रोग तब जानियो बुध त्रिकयुत तनुनाथ। आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयोरोग भगसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून।।

केमद्रुम योग :– आगे-पीछे चन्द्र के जो ना परै ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय।। उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग् केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय।।

स्त्रीजातक

क्रूरलग्नयुक्त क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहीं होय। सो कन्या कुल गरल है भूलि न व्याहेउ कोय।। जाके कुज दशम बसै ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासु। क्रूरयुक्त लग्नेश जो पापग्रहों के बीच। सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवर कहै कुज नीच। राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पापदृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर। लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज राण्ड कहै पति को तजि तमारि। छटे आठवें चन्द्र जो क्रूर पर निज अङ्ग। भौम आठवें भवन में सो पति करै है भंग।। राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुम सो हीन। ताको पति जीवित रहे वर्ष दो या तीन।। द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसै त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम।। पापग्रहों के बीच में लग्न होय वा चन्द। सो त्रिय नासे कुलो दुवो भाषत कविकुलवृन्द।। सप्तम भृगु जाके बसै सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृग बसै बुधजन कहत विचारि।

वैधव्य-विषकन्यायोग :– चौ.-रविवार द्वितीया जो होय। आश्लेषा ताहि दिन में जोय।। १ ।। कृत्तिका होय शनिश्चर वार-साते तिथि को करो विचार ।। २ ।। होय शतभिषा मंगलवार। कहो द्वादशी तिथि निर्धार।। ३।। इन योगन में कन्या होय! निश्चय विधवा जाने सोय।।४।। जन्मलग्न द्वै शुभग्रह होय। एक पाप ग्रह नभ (१०) में जोय ।।५।। शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रह मानो। ता कन्या को विधवा जानो।। ६।। अश्लेषा द्वितीया को होय। मंदवारयुत लीजो जोय।।७।। परे शतभिषा मंगलवार। साते तिथि लीजो निर्धार ।। ८।। रविवार द्वादशी जो होय। नक्षत्र विशाखा जानो होय ।। ९।। ऐसो योग लखी जो परै। तो कन्या को विधवा करै ।। १०।। दो०– धर्मसदन में भूमिसुत जन्मसदन शनि जान। सूर्य होत सुतसदन में कन्या विधवा मान।। ११।।

वैधव्य-विषकन्याभंगयोग :– जन्मलग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्नपति सुभगा कन्या होय।।

काकवन्ध्यादि योग :– ज्ञे अष्टमे काकबन्ध्यामन्दार्कावष्टमे बन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या।।

स्त्रीणां राजयोगाः – **चौपाई**– केन्द्रधाम नभगा शुभ होई नरतनु पाय कलत्र समोई। रानी होय बहुत धन ताके मन प्रसन्न होई है सुत वाके-चन्द्रज तुग बसे तनु जाई लाभ धन गुरु आवे धाई। सो तिय होय नृपति की नारी जन विख्यात होय सुकुमारी। जो षड्वर्ग शुद्ध गुरु होई शशि दृग् केन्द्र में भवन में होई।। ऐसे योग जन्म सुकुमारी रानी होय सदन धनमारी।। **दोहा**– कर्क चन्द्रमा सातवें जीवदृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरयुत ताकौ पति नृप शूर।। लाभभवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौम। सुरगुर परिपूर्ण लखे रानी होई है तौन।।

स्त्रीणां पुत्रभावविचार :– पञ्चमे शुभदृष्टे च पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत्।।

अशुभ प्रसवमास :– कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथनी, श्रावण में गधी व घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊँटनी, पौष में बकरी, चैत्र में कुतिया के बच्चे जन्में तो 6 मास में पिता व घरवाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन के समय घोडी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र हो। स्मरण रहे कि-यहां सर्वत्र सौरमासग्रहण है। प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर, व्याहृतिमन्त्रों से घृतयुक्त श्वेत सरसों का हवन करें, बच्चा जन्मे तो कार्तिकशान्ति करने से शुभ होता है।

त्रिखलजन्मफल :– यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को, लडका पिता को भय, धनहानि आदि कष्टप्रद होते हैं। कृपणता छोड़कर, त्रिखलशान्ति करें तो शुभ होता है। तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (सोना, चान्दी, तांबा) दान करें।

बालक की दन्तोत्पत्ति का फल

बालक के जन्मते ही दान्त निकले हों तो माता-पिता को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दांत से युक्त जन्म ले तो अधिक अरिष्ट, प्रथम-बार ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातृपक्ष को भय हो, मामा शान्ति करे। पहले मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पाचवें में ज्येष्ठबन्धु नष्ट, छठे में बहुभोग, सातवें में पितृसुख, आठवें में पुष्टि, ९वें में धनी, १०वें में सुख, ११वें में सुख, १२वें में निकले तो धनी हो।

अथैकनक्षत्रजनन-फलम् :– वृद्धगर्ग कहते हैं, कि यदि भ्राताओं व पिता-पुत्र, माता वा कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। यहां स्वर्णदान से कल्याण होता है।

जन्मकुण्डली से विशेष विचार

लघुभ्राता का जन्मसमय जानना :– (१) जन्मलग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़ें, जो राशि हो उस पर जब गोचर में गुरु आए तो भाई या बहन का जन्म होता है। (२) यदि भ्रातृ–प्रतिबन्धक योग न हो तो तृतीयेश, तृतयस्थ ग्रह की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना

(1) जन्मलग्न के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटाएं, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है, तब भाई या बहन को कष्ट होता है।

(२) लग्नेशस्पष्ट में से तृतीयेशस्पष्ट घटाएं, शेष में से दशमेशस्पष्ट और मंगल स्पष्ट घटाएं– शेष राशि में जब गोचर का शनि आता है तब, भ्रातृकष्ट होता है।

(३) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, भौम– इन चारों स्पष्टों को जोड़कर, जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर का शनि होता है, उस काल में भ्रातृकष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर, जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काणराशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृकष्ट जानिए।

माता की मृत्यु का समय जानना :– जन्म के सूर्य में से चन्द्रस्पष्ट को घटाएं, शेष की राशि में या त्रिकोणराशि में या उस शेष राशि के नवांशराशि में जब गोचर का शनि व गुरु होगा, तब माता की मृत्यु का समय जानें।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

स्थानम	शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वोः	हस्ते	गुह्योः	जंघाः	जान्वोः	पादे
घटी	४	६	५	५	५	४	९	४	४	
फलम्	पशुना.	धनना.	धनला.	कुटिला	धनला.	दयावती	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना.	

अथ कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल (१/२/३ च.)	आश्लेषा (२/३/४ च.)	ज्येष्ठा	विशाखा (४ च.)
फलम्	ससुरहानिः	सासनाशः	ज्येष्ठनाशः	देवरनाशः

सुतः सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेषाद्यपादजः।।

तिथिगण्डान्त– पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की शुरू की दो–दो घड़ी तिथिगण्डान्त होता है। यह गण्डान्त जन्म, यात्रा, विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूलनक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

कोष्ठकोक्त ये छः नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक अथवा बालिका माता, पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाए, तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है। गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र का छः मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिए; तत्पश्चात् शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरणों में जन्मफल

मूल पाद	फल	आश्लेषा पाद	फल
१	पितृनाश	४	पितृनाश
२	मातृनाश	३	मातृनाश
३	धननाश	२	धननाश
४	शान्ति से सुख	१	शान्ति से सुख

अथ मूल पुरुषचक्रम्

स्थानं	मूर्ध्नि	मुखे	स्कन्धे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्योः	जान्वोः	पादयोः
घटी	५	७	४	८	४	९	२	१०	६	६
फलम्	राजा	पि. मृ.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा.	मतिमा.

मूलजनने वृक्षविभागफलम्

विभाग	मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा
घटी	७	८	१०	११	१२	५	४	३
फल	मूलनाश	वंशनाश	मातृ–क्लेश	मातुल–नाश	मन्त्री–पद	मन्त्री–पद	विपुल–लाभ	अल्प–जीवन

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. का.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा. आश्वि. मा. भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२/५/८/११	३/६/९/१२	१/४/७/१०
मूलनिवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार– दोनों प्रकार से भूमि पर आए तो महाभयप्रद होता है। यहां अन्य एक प्रकार से स्वल्पभय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी–शनि–भौम–समन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातःसंहरते कुलम्।। यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत्।। दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गण्डातिगंडे च परिघे यमघण्टके।। ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्।। यथा सर्पविषं चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते।। रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निसृतेन जलेन हि।। बालकस्यापि तत्स्नाने विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम्।। विरुद्धावयवे मूले विधिरेव स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेममीप्सुभिः।।

अथाभुक्तमूलविचारः– ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी (किसी के मत से एक घटी) एवं मूल नक्षत्र की आदि की चार घटी विशेष आधी, अभुक्तमूल कहलाता है।

यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाए, तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

मत से एक घटी) एवं मूल नक्षत्र की आदि की चार घटी विशेष आधी, अभुक्तमूल कहलाता है।

इस समय जो बच्चा जन्म ले, उसका परित्याग कर दें या आठ वर्ष; असमर्थ हों तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे।

धनगंडे दरिद्रोऽपि शांतिं कुर्यात्स्वशक्तितः। अन्यथा नाशमाप्नोति चामुक्तर्क्षे विशेषतः।।

गण्डमूलोत्पन्न बालक का जन्मकाल फल

समय	प्रातः	दिन में	रात्रि में	सन्ध्या में
नक्षत्र	सभी गण्डमूल नक्षत्र	मूल, ज्ये.	मघा, आश्ले.	रे. अश्वि.
फल	पशु हानि	पिता को भय	माता को भय	शरीर को भय

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थ–ग्रह फलानि

भाव		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	1	अंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुःखी	रोगी	सकाम
धन	2	धननाश	सम्पत्तिवान्	ऋणी	धनी,गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज	3	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत्	4	दुःखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहानि	दुःखी
सुत	5	सुतहानि	धनी,पुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु	6	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री	7	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहानि
मृत्यु	8	अल्पायु	योगी	शरीरपीड़ा	गुणी	नीचस्व	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म	9	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म	10	शूर	तेजयुक्त	तेजस्वी	कीर्तिमान्	सम्पत्तिवान्	संपत्ति	पराक्रमी	मानी	पितृहीन
लाभ	11	धनी	धनी	धनी	धनी	सुलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	धनी
व्यय	12	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदार	दरिद्र	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थ–ग्रहफलानि

भाव		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	1	क्रोधिनी	गतायु	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	बन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखिनी
धन	2	दरिद्रा	बहुधना	बन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्ता
सहज	3	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत्	4	सपीड़ा	दुर्भगा	दुःखार्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहानि
सुत	5	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुता	सुगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु	6	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति	7	दुःखार्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु	8	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्ना	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म	9	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	बन्ध्या	बन्ध्या	शोकयुक्ता
कर्म	10	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साधवी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ	11	सधना	गुणज्ञा	सुलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुपुत्रा	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय	12	क्रोधिनी	हीनांगी	खला	कृशांगी	सुव्यया	सुव्यया	मूढा	दुष्टा	रोगिणी

अश्विनीजातस्य फलम्–अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखैश्वर्य, तृतीय में मन्त्रीतुल्य, चतुर्थ में नृपतिसमान होता है।

मघाफलम्– मघा के प्रथमचरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन, विद्यालाभ होंगे।

ज्येष्ठापादफलम्– प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने बाप का नाश होता है। " ज्येष्ठाद्यपाद जो ज्येष्ठं हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलर्क्षे मातरं पितरं तथा।"

रेवतीपादफलम् –रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृपसमान, दूसरे में मंत्री या मुख्तार, तीसरे में सुख–सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों।

अथ मातृसुखनाश–योग– (१) पाप ग्रहयुक्त चन्द्रमा सातवें भाव में हो, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र हो, (३) पापग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे–सातवें पापग्रह हो, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य और लग्न में मंगल हो, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो– इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप–दान करना चाहिए।

पितृनाशयोग– (१) सूर्य, मंगल दसवें वा नवम में गए हों, (२) दशमेश रवि, मंगल से युक्त हो, (३) शत्रुराशि का मंगल १०वें हो, (४) पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें हो– इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो।

भ्रातृनाशयोग– भ्रातृ गृह को ईश जो भौम संग त्रिक होय। जाके ऐसे योग है भ्रातृहीन नर होय।।

सन्तानसुखनाशयोग– गुरु ते पंचम गेहपति, जाय परे त्रिकभाव। ऐसा योग जो लखि परे ताकि पुत्र अभाव। पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे त्रिकधाम। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान।

रोगिणी स्त्रीयोग– शुक्र और सूर्य सप्तम, पंचम और नवम में हों तो स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है।

नीचयोग – सहज सप्तम धनसदन में क्रूर बसे खग आई। भवन पांचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई।। सिंहलग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल। म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल। जिनके बुध भग राहुसंग सप्तमभाव विराज। लहे सर्वदा राजसुख होवे वेश्यावाज।।

गोचरग्रहाणां द्वादशभाव–फलबोध–चक्रम्

भाव→ ग्रह↓	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	स्थाननाश	भय	श्रीप्राप्ति	मानभंग	दैन्य	विजय	यात्रा	पीड़ा	सुकृतिनाश	सिद्धि	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्र	अन्नलाभ	धननाश	सुख	रोग	कार्यनाश	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग	धर्मलाभ	सुख	धनलाभ	धननाश
मंगल	शत्रुभीति	धननाश	धनलाभ	शत्रुभय	धननाश	धनलाभ	द्रव्यनाश	शत्रुभय	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	धननाश
बुध	बन्धन	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुख	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सख	धनलाभ	धननाश
गुरु	भय	धनलाभ	क्लेश	धननाश	सुख	शोक	राजमान	पीड़ा	सुख	दैन्य	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र	शत्रुनाश	धनलाभ	सुख	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुःख	धनलाभ	धनलाभ
शनि	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभय	पुत्रनाश	धनलाभ	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मनस्य	धनलाभ	धननाश
राहु	हानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक	श्रीप्राप्ति	कलह	मृत्यु	दुःख	वैर	सुख	शोक
केतु	रोग	वैर	सुख	भय	सुख	धनलाभ	कलह	रोग	पाप	शोक	कीर्ति	शत्रुभय

अथग्रहाणामेक भोगफल–समयादि ज्ञानम्

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा. के.
एकार्थभोग	मास 1	दिन 2¼	मास 1½	मास 1	मास 12	मास 1	मास 30	मास 18
फलसमयः	आदौ	अन्ते	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते	अन्ते
गंतव्यराशेः प्राक्फलम्	मास 5	घटी 3	दिन 8	दिन 7	मास 2	दिन 7	मास 6	मास 3

अथ ग्रहतुष्ट्यर्थ धारणाय मणयः

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यम्	मुक्ताफलम्	प्रवालम्	पन्ना	पुष्पराग:	हीरा	नीलम:	गोमेदम्	रौप्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	लोहम्	वैडूर्यम्	लाजवर्तः	लाजवर्तः

जारजयोग – भानुचन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न। सो शिशु है पर पुरुष को भाषत ज्योतिषमग्न।। रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तर जन्म में तब शिशु कहो परार।।

पूतनाग्रस्तलक्षण एवं शान्ति–

बहुत मैले बिछौने पर अकेली जगह में छोटे बच्चे को सुला देने से पूतना नाम राक्षसी का उसमें प्रवेश होने से बच्चा बीमार हो जाता है। तब पूतना की बलि निकालने से अच्छा होता है। जब कभी बच्चा बैठे–बैठे गिर पड़े, या यूं मालूम हो कि–किसी के पीटने से गिरा है और मूर्छा आ गई है अथवा एकाएक कोई रोग हो गया है तब जानो, कि– उसे महा पूतना ने ग्रसा है। यदि कोई लाभादि के वश में आकर वनदेवता या नागदेवता का तिरस्कार कर दे तो उसके बालक में ऊर्ध्वपूतना प्रवेश कर लेती है। यदि कोई मनुष्य अपनी ऋतुस्नाता स्त्री का गमन करने के पश्चात् स्नान न करे या बिना ऋतु के संगम करके हाथ मुंह न धोवे और माता अपवित्र अवस्था में ही बालक के साथ सो जावे तो बालक्रांता नाम की राक्षसी का दोष होगा। बच्चे को इतर फुलेल और फूलमाला पहिनाकर बाहिर जाने से रेवती ग्रही का दोष होता है। सिर खुले, जूठे बाल को संध्या के समय सोने से भी रेवती का आवेश हो जाता है। संध्या के समय जमीन पर सोने से अथवा खेलने से बालक को पुष्य रेवती का दोष होता है। कदाचित् बालक खेलता–खेलता गिर जाए अथवा उसे उल्टी हो या हाथ–पांव नहीं धुले हों तब उसे शुष्क रेवती का आवेश होता है। जूठा खाने और देवता के स्थान पर मल–मूत्र करने से शकुनी ग्रही बालक को पकड लेती है। जो नित्यकर्म संध्या–वंदनादि नहीं करते या जो लोग पक्षियों को पालते हैं, जन्मान्तर में उनके बालकों पर शिशुमुण्डिका राक्षसी का दोष हो जाता है। फिर उसका पूजन और बलि, धूपादि दान करने से शान्ति होती है।

उद्वर्तनम्– दूर्वा, कुटकी, नीम के पत्ते, तज–इनका उबटना बालक के शरीर में मलकर पीछे पीपल के पत्ते, मुलट्ठी, लसूड़े के पत्ते– इनका काढ़ा बनाकर स्नान कराए, तो यह रोग दूर होगा।

चेष्टाः– जिस बालक के नखों और दांतों में विकार हो, नींद नहीं आए, डर लगे, मन में उद्वेग रहे, शरीर में दुर्गन्ध उठे, अनेक प्रकार की चेष्टा करे, बल अधिक हो जाए–उसे ग्रहाविष्ट जानना चाहिए

सर्वबालग्रह–शान्त्यर्थ देवालये ज्योतिर्दर्शनं निवासश्च तत्ररात्रौ – ''ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव।।''– इत्यस्य जापः, ततोऽनेनैव मन्त्रेण सदीप दधिमाषान्नबलिदाने घण्टाबन्धने च सर्वबालग्रहशान्तिः।।

अथ बालरक्षाविधि (प्रयोगसारे)– यदि दुष्टदृष्टि (नज़रादि दोषों) के कारण बालक के शरीर में कोई रोग, कष्ट हो जाए तो– ''ॐ वासुदेवो जगन्नाथः पूतनातर्जनो हरिः। रक्षतु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।। १।। कृष्ण रक्ष शिशुं शंख–मधुकैटभ–मर्दन। प्रातः–सङ्गव–मध्याह्न–सायाह्नेषु च सन्ध्ययोः।। २।। महानिशि सदा रक्ष कंसाराति निषूदन। यद्गोरजः पिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि।। ३।। बालग्रहान्विशेषेण छिन्धि छिन्धि महाभयान्। त्राहि त्राहि हरे नित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम्।। ४।। – इन चारों मंत्रों से अभिमंत्रित की गई गौ के गोबर की शुद्ध भस्म को बालक के मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगों में लगाने से बालक का कष्ट दूर होगा।

यद्गारजः पिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि।। ३।। बालग्रहानुविशेषेण छिन्धि छिन्धि महामयान्। त्राहि त्राहि हरे नित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम्।। ४।। – इन चारों मंत्रों से अभिमंत्रित की गई गौ के गोबर की शुद्ध भस्म को बालक के मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगों में लगाने से बालक का कष्ट दूर होगा।

बाल कष्टावली चक्रम्

किस समय कौन पूतना ग्रस्त करती है	मूर्ति–निर्माणार्थ द्रव्य	पूजनद्रव्य	बलि–विधान व समय	स्नान, पूजा, मार्जनमंत्र	धूप
प्रथम दिन–मास–वर्ष में योगिनी	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेतचन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प, 5 रंग की झंडी 5, दीपक 5, आटे के सतिए 5, कपूर, लोहवान,	श्वेतभात, 5 पूर्ण पोली (सुहाली) 1 प्रहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखें,	ॐ ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै श्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।	राई, खस, आक के फूल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्बपत्र, गोघृत
द्वितीय दिन–मास–वर्ष में सुनन्दना	एक सेर चावलों का आटा	10 दीपक, 10 झण्डी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिए 10,	भात एक सेर, आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस, संध्यासमय, पश्चिम दिशा में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्थानादाज्ञया स्वाहा।	
तृतीय दिन–मास–वर्ष में पूतना	एक सेर चावलों का आटा	रक्तचन्दन, रक्तपुष्प, श्वेत–ध्वजा, दीपक 10, गेहूं के आटे के सतिए 10,	एक सेर लालभात, आधा सेर पूर्ण पोली, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखें,	सुनन्दना विधानोक्त	लहसुन, गोश्रृंग, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष बिल्ली के बाल, और गोघृत।
चतुर्थ दिन–मास–वर्ष में मुख मंडिका	तिल–चूर्ण एक सेर	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा 5, दीपक, मिल सके तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प,	भात, सेर आटे के पूड़े, आधा सेर पूर्ण पौली, सायं, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखें,	सुनन्दना विधानोक्त	
पंचम दिन–मास–वर्ष में विडालिका	एक सेर चावलों का आटा	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेत ध्वजा 5, गेहूं के आटे के सतिए,	श्वेत भात, 7 पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखें,	ॐ भगवती ह्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं मुञ्च रक्षां कुरु कुरु बलिं गृहाण अस्त्र ठः ठः चामुंडे सर्वारि चण्डिके ठः ठः स्वाहा।	
षष्ठ दिन–मास–वर्ष में षट्कारिका	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेतध्वजा 5,	भात, 5 मिठाई, 5 सुहाली, 7 पूड़ियां, 1 प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर रखें,	योगिनी विधानोक्त	कूठ, गुग्गुल, राई, हाथीदांत, घृत।
सप्तम दिन–मास–वर्ष में कालिका	चावल का आटा एक सेर	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेतध्वजा 5,	भात, 7 पूड़िया, सायकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखें,	विडालिका विधानोक्त	
अष्टम दिन–मास–वर्ष में कामिनी	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्तचन्दन, 5 रंग की झंडी 5, दीपक 5,	गेहूँ की रोटी, मसूर की दाल, हरासाग, छागमांस, संध्या में चौरास्ते पर रखें,	विडालिका विधानोक्त	
नवम दिन–मास–वर्ष में मदना	एक सेर गेहूं का आटा	चन्दन, पुष्प, 5 दीपक, 5 रंग की झंडी 5,	भात, मत्स्यमांस, पापड़ी, सुहाली, उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर रखें	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हन् हन् हुं फट् स्वाहा।	गोश्रृंग, लहसुन, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, राई, गोघृत।
दशम दिन–मास–वर्ष में रेवती	एक सेर गेहूं का आटा	रक्तपुष्प, 25 झण्डी, 25 दीपक, 25 सतिए,	गुड़ के घी भुने चावल, गौघृत, सायं, दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो भगवते वैश्वदेवाय हन् हुं फट् स्वाहा।	
एकादश दिन–मास–वर्ष में सुदर्शना	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेतपुष्प, 25 दीपक, 25 सफेद झण्डी, 25 आटे के सतिए,	श्वेतभात, 7 पूड़े, सुहाली 7, सायं व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्रहास, वज्रहस्ताय ज्वल ज्वल दुष्ट ग्रहादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।	
द्वादश दिन–मास–वर्ष में अद्भुता	चावलों का आटा एक सेर	13 दीपक, 13 झण्डी, 13 सतिए आटे के,	सुहाली, पूड़े 7, पूड़िया 7, मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन् हन् शोषय शोषय मर्दय मर्दय तापय तापय हुँ हुँ हुँ हन् हन् दुष्टानां ह्रां ह्रां स्वाहा।	

अथ बालपूतना–विधान

यहां लिखे बाल–कष्टावली चक्रोक्त हर एक बलिदान के पीछे मार्जन शिखास्थान– स्पर्श निम्न–लिखित मन्त्रों द्वारा एक ही प्रकार से होता है, बलिदान–विधि तीन दिन निरंतर करें। चौथे दिन पलाश, अश्वत्थ, बिल्व, गूलर, मिल सके तो कपित्थ– इनके पत्रों को उबालकर बालक को मंत्र–पाठपूर्वक स्नान करावे। तदनन्तर कल्याणार्थ यथाशक्ति भिक्षुकों को तथा कुत्ते आदि जीवों को मिष्ठान भोजन कराएं। तदनन्तर "ओं द्यौः शांतिरन्तरिक्ष............" इत्यादि शांतिमंत्रों व मार्जनमंत्रों से कुशा से छींटे देने के अनन्तर बालक की शिखा या शिखास्थान स्पर्शपूर्वक यह मंत्र पढ़ें– " ओं रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर। ग्रहैस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।

"ओं सर्वमातर इमं ग्रहं सहरंतु हुं रोदय–रोदय, स्फोटय –स्फोटय स्वाहा। गर्ज–गर्ज सः गृहाण–गृहाण आमर्दय– आमर्दय ह्रीम्–ह्रीम् हन् हन् एवं सिद्धिरुद्रो ज्ञापय स्वाहा।।"

अथ नक्षत्र–कष्टावली

रोग–नक्षत्र	रोगशान्त्यर्थ दान	नक्षत्रपादवशाद रोगदिन–संख्या				रोगशान्त्यर्थ जपनीय मन्त्र	रोगनिवृत्त्यर्थ बलि
		1	2	3	3		
अश्विनी	भोजनदान	9	11	1	20	मृत्युञ्जयमंत्र	घोड़ी के मुख में सात व्रीही धान्य दें।
भरणी	गो–अन्नादि दान	0	80	40	11	यमायतवेति मंत्रः	हाथी के मुख में तिल चावल दें।
कृत्तिका	स्वर्णदान	9	11	16	28	अग्निर्मूर्धेति	कछुए के मुख में घी दें।
रोहिणी	घृतदान	3	9	18	30	ब्रह्मायर्येति	सर्प को दूध–दही खिलाएं।
मृगशिरा	तिलदान	9	5	7	10	इमं देवेति मंत्र	खरगोश को दूध पिलाएं।
आर्द्रा	गोदान	0	18	0	0	नमस्ते रुद्र इति मंत्र	बकरे के मुख में रक्त डालें।
पुनर्वसु	पीतलदान	7	14	2	21	अदितिर्द्यौरिति मन्त्रः	सूअर को धान्य खिलाएं।
पुष्य	तैलान्नदान	6	7	10	21	बृहस्पतेति मन्त्रः	बकरे के मुख में दही डालें।
आश्लेषा	गो–अजादि दान	0	0	41	0	नमोस्तुसर्पेति मन्त्रः	बिलाब को दूध पिलाएं।
मघा	वस्त्राज्यदान	15	7	17	20	पितृभ्य इति मन्त्रः	बन्दर को तिल उड़द खिलाएं।
पू.फा.	भोजनदान	0	15	0	30	भगम्प्रणेति मन्त्रः	ऊंट के मुख में शहद दें।
उ.फा.	अन्नदान	7	14	7	60	दध्यावद्धेति मन्त्रः	गाय को शाक खिलाएं।
हस्त	तैलदान	15	17	15	0	उदत्यं जातवेदेति मन्त्रः	भैंसे को कमल के फूल खिलाएं।
चित्रा	दुग्धदान	11	9	9	16	त्वष्टा तुरगेति मन्त्रः	बाघ के लिए तगर–धतूरे के फूल वन में रखें।
स्वाती	गौघृतदान	60	17	30	0	वायोरग्नेति मन्त्रः	भैंसे को गुड़, चावल खिलाएं।
विशाखा	गौ–स्वर्णदान	15	0	4	13	इंद्राग्नी इति मन्त्रः	बाघ के मुख में गुड़, भात की बलि दें।
अनुराधा	गौघृतदान	60	12	36	30	नमो मित्रेति मन्त्रः	बकरे को कुल्थीसहित भात, गुड़ दें।
ज्येष्ठा	तिलदान	69	9	6	4	त्रातारमिन्द्रमिति मन्त्रः	बंदरों को गुड़, तिल डालें।
मूल	रौप्यपात्रदान	0	9	15	6	माता पुत्रेति मन्त्रः	बिलाब को दूध पिलाएं।
पू.षा.	गोमुक्तादान	0	15	24	10	आपोधर्मेति मन्त्रः	कछुए के मुख में नागरमोथे की बलि दें।
उ.षा.	भोजनदान	30	24	26	16	विश्वेदेवेति मन्त्रः	गौ को धान्य डालें।
श्रवण	श्रीफलदान	60	24	6	9	विष्णोरराटेति मन्त्रः	भैंसे के मुख में रक्त, मीठा की बलि दें।
धनिष्ठा	अश्वान्नदान	15	4	20	21	वसोः पवित्रेति मन्त्रः	मनुष्य के मुख में दहीं, अन्न की बलि दें।
शतभिषा	भोजनान्नदान	4	45	3	22	वरुणस्तम्भेति मन्त्रः	गौ को चावल खिलाएं।
पू.भा.	भोजनदान	0	12	21	19	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	कौए के मुख में फल की बलि छोड़ें।
उ.भा.	अन्नदान	10	3	9	15	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	गाय को चावल खिलाएं।
रेवती	फलदान, कन्यापूजन	18	10	9	20	पूषन्नयेति मन्त्रः	हाथी के मुख में पूरी–पूओं की बलि छोड़ें।

नोट– इस कष्टावली में प्रत्येक नक्षत्र का जपनीय मंत्र पृथक्–पृथक् लिखा है, उसे न जप सकें तो महामृत्युंजय मन्त्र ही जपें। जिस नक्षत्र के जिस चरण में पहले रोग उत्पन्न हुआ है, उस चरणानुसार कष्ट व दिन जानें, शून्य से विशेष भय जानें। दान, जप करे। जिस नक्षत्र में रोग पैदा हुआ है, उसे यहां कष्टावली में रोगनक्षत्र का नाम दिया गया है। रोगनक्षत्र को जानकर, इन कोष्ठकों में लिखा उपाय एवं यथाशक्ति दान करने से रोग शान्त होगा। 'रोग निवृत्त्यर्थ बलिदान' वाले कॉलम में घोड़ी, हाथी आदि के मुख में बलि देने के लिए लिखा है, वह गेहूं के आटे की वैसी ही आकृति बनाकर (मन में हाथी आदि की धारणा करके) उसके मुख में बलिद्रव्य देकर धूप--दीपादि करके आटे की आकृति को जल में प्रवाहित कर दें– ऐसा तीन दिन करें। साथ ही दान और जप भी करें।

ज्वालामुखी योग

तिथि	१	५	६	९	१०
नक्षत्र	मूल	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	आश्लेषा

जन्मे सो जीवे नहीं बसै जो उजड़ जाय। चूड़ा पहिरे कामिनी चटपट विधवा होय। गए गए ना बुहरे कूए नीर सुकाय।

पुत्रोत्पत्ति का समय

(1) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़ें। योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों की त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब पुत्र–संतान उत्पन्न होती है।

(2) चंद्र, लग्न, गुरु– इन तीनों से पंचमस्थानेश या नवमस्थानेश की दशान्तर्दशा में पुत्रसंतानोत्पत्ति होती है।

विवाह (स्त्रीसुख) होने का समय

(1) जन्मलग्नेश, सप्तमेश को जोड़कर जो राशि हो, उस राशि में जब गोचर का गुरु हो, तब विवाह होता है।

(2) चन्द्रराशीश और अष्टमेश को जोड़ने पर प्राप्त राशि में जब गोचर का गुरु आए, तब विवाह होता है।

(3) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो, उस राशि से द्वितीयभाव में जब गोचर में गुरु–चन्द्र होते हैं, तब विवाह होता है।

(4) शुक्र–चन्द्र व सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय

(1) गुलिक स्पष्ट से सूर्य स्पष्ट घटाएं, शेष राशि के त्रिकोण में जब गोचर का शनि हो, तब पिता की मृत्यु होती है।

(2) सूर्य से 1/2/7/12 भाव में जो पापग्रह हो, उस की दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

के लिए लिखा है, वह गेहूं के आटे की वैसी ही आकृति बनाकर (मन में हाथी आदि की धारणा करके) उसके मुख में बलिद्रव्य देकर धूप--दीपादि करके आटे की आकृति को जल में प्रवाहित कर दें– ऐसा तीन दिन करें। साथ ही दान और जप भी करें।

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(1) रोग के शुरुआती दिन में जन्मराशि, नक्षत्र, लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र या यमघंट कुयोग हो।

(2) सूर्यवार को मघा, द्वादशी या भरणी, अनुराधा नक्षत्र हो।

(3) सोमवार को आर्द्रा या उ. षा. नक्षत्र हो।

(4) मंगलवार को कृत्तिका, मघा व शतभिषा या नन्दा (1/6/11) तिथि हो।

(5) बुधवार को अश्विनी, विशाखा या भद्रा (2/7/12) तिथि, आश्लेषा हो।

(6) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (3/8/13) तिथि व मघा, हस्त हो।

(7) शुक्रवार–अष्टमी व अश्विनी या आश्ले., श्रवण या रिक्ता (4/9/14) तिथि, आर्द्रा या धनिष्ठा हो।

(8) शनिवार को नवमी व पू. षा. या हस्त व पू. भा. या पूर्णा (5/10/15) तिथि व भरणी हो।

(9) सूर्य, मंगल, शनि वारों को 4। 6। 9। 12/14/30 तिथि, भरणी, कृत्ति. आर्द्रा, आश्लेषा, पूर्वा. 3, विशा., ज्ये., धनि., शत. नक्षत्र हों तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परञ्च– जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना चाहिए। क्योंकि– बिना मारकेश आए मृत्यु तो होती ही नहीं। हां– ऐसे योग में कष्ट ज़रूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुलादान, गोदान तथा मृत्युञ्जयजप करना कल्याणप्रद है।

बाल–रक्षार्थ धूप

राई, लाख, नीम के पत्ते, बांस का छिल्का, लहसुन, शिवजी पर चढ़े हुए फूल, अगर, गाय का घी–इन सब को मिलाकर धूप देने से सब पूतना तथा अन्य बालग्रह दूर हो जाते हैं। धूप देते समय "खुं खुर्दनं हुं फट् स्वाहा–" इस मन्त्र का उच्चारण करें।

अथ रोगत्रिनाड़ी चक्रम्

प्रथमा	आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.
मध्या	पुन.	मघा	हस्त	विशा.	मूल	श्रवण	पू.भा.	अश्वि.	रो.
अन्त्या	पुष्य	आश्ले.	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रेव.	मृ.

सूर्यनक्षत्र, दिन, जन्म और नाम नक्षत्र रोगत्रिनाड़ीचक्र में एक ही नाड़ी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है। मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले, उसी दिन निःसन्देह रोगी की मृत्यु कहनी चाहिए। यह रोगत्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा रण के समय वर्जित करना चाहिए।

कालस्य मुखदंष्ट्रा ज्ञानम्

दिननक्षत्र से नामनक्षत्र 5/13/23 संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार 10/18वां नक्षत्र दंष्ट्रा (दाढ़) होती है। काल के मुख में दाढ़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो, उस दिन अत्यन्त रोगग्रस्त पुरुष की हालत मृत्युपर्यन्त होती है। रोग पर, सर्पादि दर्शन पर, विग्रह–युद्ध में जाने पर काल के मुख–दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है।

कालांगचक्र से शुभाशुभ फलज्ञान

यदि किसी व्यक्ति के अंगविशेष में पीड़ा, कष्ट, घाव, फोड़ा आदि चर्मविकार किंवा वायु–विकारादिजन्य कोई कष्ट हो तो तात्कालिक प्रश्नकुण्डली लगाकर, निम्नलिखित कालांगचक्र में दिए भावों के अनुसार उस पीड़ित भाव को देखें। यदि उस भाव में कोई अशुभ ग्रह हो, किंवा वह भाव खलदृष्ट, अस्त, नीच तथा शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो तो समझें, कि उस अवयव में और विशेष कष्ट की संभावना है। शान्ति के लिए उस ग्रह की शान्ति कराएं। यदि प्रश्नकुण्डली में पीड़ित भात शुभग्रह से युक्त किंवा शुभग्रहदृष्ट हो तो रोग (कष्ट) शीघ्र निवृत्त हो जाएगा।

कालांगचक्र

भाव	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
अंग	सिर	मुख	भुजाएं	हृदय	उदर	कटिभाग	वस्ति/मूत्राशय	लिङ्ग/गुदा	जंघाएं	घुटने	पिण्डलियां	पाद–युगल

तिथिकष्टावली यन्त्रम्

तिथि	तिथीश	कष्ट–दिन	बलि	दान
1	अग्नि	12	शर्कराज्यबलि	घृतदान
2	ब्रह्मा	5	पायसबलि	भोजनदान
3	काम	7	घृतान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
4	गणेश	16	मोदकान्नबलि	मूंगादान
5	सर्प	21	पायसबलि	दुग्धदान
6	स्कन्द	12	मोदकान्नबलि	चित्रवस्त्रदान
7	सूर्य	8	पायसबलि	ताम्रपात्रदान
8	ईश्वर	13	नानाभक्ष्यबलि	पीतवस्त्रदान
9	दुर्गा	18	मिष्ठान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
10	यम	25	कृशरान्नबलि	नीलवस्त्रदान
11	विश्वेदेव	7	मोदकान्नबलि	पीतवस्त्रदान
12	विष्णु	7	मोदकान्नबलि	श्वेतवस्त्रदान
13	काम	10	दधिशर्कराबलि	सुवर्णदान
14	शिव	60	मिष्ठान्नबलि	क्षौद्रशाकभोजन
15	चन्द्र	3	दध्योदनबलि	रौप्यदान
30	पितर	18	अपूपकान्नबलि	उत्तमान्नभोजन

वारकष्टावली–यंत्रम्

वार	वारेश	क.दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	5	पायसबलि, सूर्यदान
चं.	गौरी	8	नानाभक्ष्यबलि, चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	5	दुग्धबलि, भौमदान
बु.	विष्णु	7	मुद्गान्नबलि, बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	5	घृतपक्वबलि, गुरुदान
शु.	इन्द्र	7	तिलयवाज्यमधुबलि, शुक्रदान
श.	यम	15	माषान्नबलि, शनिदान

ग्रहगोचराद्यैर्दशा-क्रमाद्यैर्ग्रह-कृतानिष्ट-फल-शमनार्थं प्रत्येक-ग्रहाणां दान-पदार्थाः												जपसंख्या	जपनीयमन्त्राः	दानसमय	हवनसमिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तपुष्प	मूंग, रक्तगाय	रक्तचन्दन	7000	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	शंख	श्वेतपुष्प	कर्पूर, श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	11000	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	सन्ध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तकनेर	कस्तूरी, रक्तबैल	रक्तचन्दन	10000	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घटी 2 शेषदिन	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	हाथीदांत	सर्वपुष्प	कर्पूर, शस्त्र	फल	19000	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घटी 5 शेषदिन	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	हल्दी	पीतपुष्प	पुस्तक, घोड़ा	पीतफल	19000	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	सन्ध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	सुगंध	श्वेतपुष्प	दधि, श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	16000	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सूर्योदय	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुल्थी	तेल	कृष्णवस्त्र	कस्तूरी	कृष्णपुष्प	कृष्णांग भैंस	उपानह	23000	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	मध्याह्न	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तिल	नीलवस्त्र	खड्ग	कृष्णपुष्प	कंबल, घोड़ा	शूर्प	18000	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्रि	दूर्वा
केतु	लहसुनिया	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	नारियल	धूम्रपुष्प	कंबल, बकरा	शस्त्र	17000	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्रि	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	कपूर	श्वेतपुष्प	मसरी, श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुन्थेशवत्	मुन्थेशमन्त्रः	मुन्थेशकाल	मुन्थेशवत्

नवग्रहों के व्रत की विधि

यदि किसी व्यक्ति का कोई ग्रह गोचर से या दशा–अन्तर्दशा से खराब चल रहा हो तो निम्नलिखित प्रकार से उस ग्रह का शास्त्रोक्त व्रत–विधान ब्रह्मचर्यपूर्वक करने से अशुभ फल की निवृत्ति होती है।

रविवार के व्रत की विधि–सूर्य का व्रत रविवार को करें। यह व्रत शुक्लपक्ष के पहले (जेठे) रविवार से आरम्भ करके वर्षपर्यन्त तीस या कम से कम 12 व्रत करें। उस रोज केवल गेहूं की रोटी, घी और लालखाण्ड के साथ या गेहूं का गुड़ से बना दलिया या हलवा इलायची डालकर दान करके शेष का दिन में ही सूर्यास्त से पहले भोजन करें। नमक बिल्कुल न खाएं। भोजन से पूर्व हो सके तो लालवस्त्र पहनकर ऊपर चक्रोक्त बीज–मन्त्र की माला का जप करें। तदनन्तर सूर्य को गन्धाक्षत, रक्तपुष्प दूर्वायुक्त अर्घ्य प्रदान करें। अपने मस्तक में लालचन्दन का तिलक करें। जब व्रत का अन्तिम रविवार हो तो हवन–पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण को भोजन कराएं। ऐसा करने से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परिणत हो जाएगा। तेजस्विता बढ़ेगी। नेत्ररोग, चर्मरोग एवम् अन्य शारीरक रोग भी शान्त होंगे।

सूर्यशान्ति का सरल उपचार :–लाल वस्तुओं का विशेष उपयोग करें– जैसे– लालचादर, परना तथा तांबे की अंगूठी का पहनना।

सोमवार के व्रत की विधि– चन्द्रमा का व्रत शुक्ल–पक्ष के प्रथम (जेठे) सोमवार को प्रारम्भ करके 54 या 10 व्रत करें। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण करके ऊपर चक्रलिखित बीज–मन्त्र की 11 या 3 माला जप करें। सफेद फूलों से पूजन करके सफेद चन्दन का तिलक करें। मध्याह्न के समय नमक के बिना दही–चावल, घी, खाण्ड का यथाशक्ति दान करके स्वयं भोजन करें। जब व्रत का अन्तिम सोमवार हो, उस दिन हवन–पूर्णाहुति करके खीर–खाण्ड से ब्राह्मण व बटुकों को भोजन कराएं। इस व्रत के करने से व्यापार में लाभ, मानसिक कष्टों से शान्ति होती है। विशेष कार्यसिद्धयर्थ भी यह पूर्ण फलदायक होता है।

चन्द्रशान्ति का सरल उपचार :– सफेद जुराब, रुमाल, सफेद वस्त्र, दूध, दहीं का उपयोग, चान्दी की अंगूठी पहनना।

मंगलवार के व्रत की विधि :– यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) मंगलवार से प्रारम्भ करके 21 या 45 व्रत करने चाहिएं। हो सके तो यह व्रत आजीवन रखें। बिना सिला हुआ लालवस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 1, 5, या 7 माला जप करें। नमक सेवन न करें, यह जरूरी है। उस दिन गुड़ से बने हलवे का या लड्डुओं का दान करें और स्वयं भी खाएं। गुड़ से बना कुछ हलवा आदि बैल को भी खिलाएं। मंगलवार का व्रत ऋण–हर्ता तथा सन्तति–सुखप्रद है। जब व्रत का अन्तिम मंगलवार हो, उस दिन हवन–पूर्णाहुति करके लालवस्त्र, तांबा, मसूर, गुड़, गेहूं तथा नारियल का दान करें। ब्राह्मणों तथा बच्चों को मीठा भोजन कराएं।

मंगलशान्ति का सरल उपचार :– लालरंग की वस्तुओं का उपयोग, रात को लालवस्त्र पहनें, तांबे के बर्तनों का प्रयोग, तांबे की अंगूठी पहनना।

बुधवार का व्रत :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) बुधवार से प्रारम्भ कर 21 या 45 व्रत करें। हरा वस्त्र धारण करके बीज–मन्त्र की 17 या 3 माला जप करना चाहिए। उस दिन भोजन में नमकरहित, खाण्ड–घी से बने पदार्थ, जैसे– मूंगी का बना हुआ हलवा, मूंगी की बनी मीठी पंजीरी या मूंगी के लड्डुओं का दान करें। फिर तीन तुलसीपत्र, गंगाजल या चरणामृत के साथ लेकर स्वयं भी उपरोक्त पदार्थ खाएं। व्रत के अन्तिम बुधवार को हवन–पूर्णाहुति करके छोटे बच्चों या अन्नहीन भिक्षुक को मूंगीयुक्त भोजन कराकर हरा वस्त्र, मूंगी आदि का दान भी करें। इस व्रत से विद्या, धन–लाभ, व्यापार में तरक्की तथा स्वास्थ्यलाभ होता है। अमावस का व्रत करने से भी बुध ग्रहजन्य नेष्टफल से मुक्ति मिलती है।

गी, खाण्ड का यथाशक्ति दान करके स्वयं भोजन करें। जब व्रत का अन्तिम सोमवार हो, उस दिन हवन–पूर्णाहुति करके खीर–खाण्ड से ब्राह्मण व बटुकों को भोजन कराएं।

आदि का दान भी करें। इस व्रत से विद्या, धन–लाभ, व्यापार में तरक्की तथा स्वास्थ्यलाभ होता है। अमावस का व्रत करने से भी बुध ग्रहजन्य नेष्टफल से मुक्ति मिलती है।

बुधशान्ति का सरल उपचार :– हरा रंग, हरे वस्त्र तथा श्रृंगार की अन्य वस्तुएं, हरा रुमाल आदि रखना, कांसी के बर्तन में भोजन, बुधाष्टमी का व्रत।

बृहस्पति के व्रत की विधि :– यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) गुरुवार से आरम्भ करें। तीन वर्षपर्यन्त या 16 व्रत करें। उस दिन पीतवस्त्र धारण करके बीज–मन्त्र की 11 या तीन माला जप करें। पीतपुष्पों से पूजन–अर्घ्य दानादि के बाद भोजन में चने के बेसन की घी–खाण्ड से बनी मिठाई, लड्डू या हल्दी से पीले या केसरी चावल आदि ही खाएं और इन्हीं का दान करें। जब व्रत का अन्तिम गुरुवार हो तो हवन–पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण व बटुकों को लड्डूभोजन कराएं। स्वर्ण, पीत–वस्त्र, चने की दाल आदि का दान करें। यह व्रत विद्यार्थियों के लिए बुद्धि तथा विद्याप्रद है। धन की स्थिरता तथा यशवृद्धि करता है। अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

बृहस्पतिशान्ति का सरल उपचार :– पीले वस्त्र, रुमाल आदि, पीले फूल धारण करना, सोने की अंगूठी पहनना।

शुक्र के व्रत की विधि :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से प्रारम्भ कर, 31 या 21 व्रत करें। श्वेत वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 3 या 21 माला जपें। भोजन में चावल, खाण्ड या दूध से बने पदार्थ ही सेवन करें। यही पदार्थ यथाशक्ति सम्भव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दें। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो, तब हवन–पूर्णाहुति के बाद खीर–खाण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मणबटुकों को खिलाएं। चांदी, श्वेतवस्त्र, खाण्ड, चावल का दान करें। इस व्रत से स्त्रीसुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

शुक्रशान्ति का सरल उपचार :–सफेद वस्त्र, सफेद रुमाल, सफेद फूल धारण करना आदि, गाय को हरा घास या पेड़ा देना, शिवपूजन।

शनि के व्रत की विधि :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से आरम्भ करे। व्रत 51 या 31 करने चाहिएं। व्रत के दिन काला वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 19 या तीन माला का जप करें। फिर एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, काले फूल या लवंग (लौंग), गङ्गाजल तथा शक्कर, थोड़ा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुंह करके पीपल–वृक्ष की जड़ में डाल दें। भोजन में उड़द के आटे का बना पदार्थ, पंजीरी, कुछ तेल से पका हुआ पदार्थ कुत्ते व गरीब को दें तथा तेलपक्व वस्तु के साथ केला व अन्य फल स्वयं प्रयोग में लाना चाहिए। यही पदार्थ दान भी करें। व्रत के अन्तिम शनिवार को हवन–पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को देने के बाद काला वस्त्र, केवल उड़द तथा देसी (चमड़े का) जूता तेल लगाकर दान करें। इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक परेशानी दूर हो जाती है। झगड़े में विजय होती है। लोह–मशीनरी, कारखाने वालों के व्यापार में उन्नति होती है।

शनिशान्ति का सरल उपचार :– घर के परदे, जूते, जुराब, घड़ी का पट्टा, रुमाल आदि काले रंग के धारण करें।

राहु–केतु के व्रत की विधि :– शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से ही यह व्रत भी शुरु करना चाहिए। व्रत 18 करें। काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीजमन्त्र की माला जपें। तदनन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुशा लेकर, पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी, समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें। इस व्रत से शत्रुभय दूर होता है तथा राजपक्ष से विजय मिलती है।

राहु–केतुशान्ति का सरल उपचार :– नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी पहनें।

ग्रहों के अरिष्ट–निवृत्त्यर्थ स्नानविधि

यथा सिद्धौषधैः रोगाः नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्।।
तथा स्नान–विधानेन ग्रह–दोषः प्रणश्यति।।

रवि ग्रह के दोष की शान्ति के लिए कभी–कभी व्रत के दिन बिल्ववृक्ष की जड़, देवदारु, मुलट्ठी, लाल फूल, केसर पानी में उबालकर स्नान करें। चन्द्र शान्त्यर्थ सोमवार के व्रत के दिन खिरनी की जड़, श्वेत चन्दन, सिप्पी, पञ्चगव्य उबालकर स्नान करें। ऐसे ही मंगलव्रत के दिन अनन्तमूल, रक्त चन्दन, मौलश्री, लाल फूल–ये सब उबालकर; बुधव्रत के दिन गोबर, मधु, चावल, विधारा; गुरुव्रत के दिन भारंगी, मुलट्ठी, श्वेत सरसों, मालती पुष्प; शुक्रव्रत के दिन इलायची, मजीठ तथा शनिव्रत के दिन काले तिल, सौंफ, सुरमा, अमरबेल, सफेद बिनौला– उबालकर स्नान करें। ऐसे ही राहु–केतु की शान्ति के लिए शनिवार के दिन देवदारु, सरसों तथा लोहबान उबालकर स्नान करें, तो ग्रहशान्ति मिलती है।

नोटः– स्नानोक्त कोई वस्तु उपलब्ध न हो, तो जो वस्तु मिले उससे ही स्नान करें।

सर्वग्रह किंवा सर्वविधशान्ति के लिए सामान्य औषधस्नान

लाजवन्ती (छुई–मुई), कूट, खिलां, कांगनी, जौ, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि, लोध– इन औषधियों के जल एवं सतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नष्ट होती है तथा पूर्व जो दान कह चुके हैं, उनके करने से शान्ति मिलती है। गुरुवचन, देवता, ब्राह्मणों की वंदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते।– (श्रीपतिः)।

शनिविचार-अथ लघुकल्याणी (ढैया) फलम्ः-

कल्याणी प्रददाति वा रविसुते राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधिः
बन्धुविरोधं देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्।
मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि–वह्नेर्भयं
लोहशस्त्रभयं सदैव–असुखं कुर्यादसौ सर्वदा।। १।।

वृहत्कल्याणी साढेसाती फलम् :–.......राशौ द्वादश (12) मूर्ध्नि जन्म (1) हृदये पादौ द्वितीये (2) शनिः। नानाक्लेशकरोऽति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत्।। हानिः स्यान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम् , रामात्रृद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा।। २।।

सप्तधान्य– उड़द, मूंगी, गेहूं, चने, जौ, धान्य (तंडुल), कंगनी।

अष्टगंध-स्याही :–अगर, कस्तूरी, कुंकुम, कर्पूर, चन्दन, टोपीदार लौंग, गोरोचन, देवदारु।

अष्टगंध-धूप– अगर, छरीला, जटामासी, कर्पूर–कचरी, गुग्गुल, देवदारु, गोघृत, सफेद चन्दन।

नक्षत्र–राशिज्ञान–चक्र

राशि→	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्र→ चरण ↓	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा
प्रथम चरण	चू	ली	अ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी	मा	मो	टे	०	पू	पे
द्वितीय चरण	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू	मी	टा	०	टो	ष	पो
तृतीय चरण	चो	ले	०	उ	वी	०	क	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०	पा	ण	०
चतुर्थ चरण	ला	लो	०	ए	वू	०	की	छ	०	हि	डा	डो	मे	टू	०	पी	ठ	०

राशि→	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्र→ चरण ↓	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	अभिजित्	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिष	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
प्रथम चरण	०	रू	ती	०	ना	नो	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय चरण	०	रे	तू	०	नी	या	यो	धा	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय चरण	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ चरण	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

राशिज्ञाने विशेषः– नक्षत्र व राशि में 'श' और 'स' तथा 'व' और 'ब' में कोई भेद नहीं होता। जिसके नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो, वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें– संयोगजाक्षरे नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम्।

ध्यान दें – नामों का प्रारम्भ ङ, ञ, ण अक्षरों से नहीं होता। यदि नक्षत्र के आधार पर इन अक्षरों से नाम प्रारम्भ हो रहा हो तो 'ङ' की जगह 'घ', 'ञ' की जगह 'दु', तथा 'ण' की जगह 'पू' से प्रारम्भ करें। ऐसा करने से भेद नहीं होता।

"बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन। ततः पश्चादभवं नाम ग्राह्यं स्वर–दिशारदैः।। प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शाब्दितः। तस्य नामाद्यवर्णे या मात्रा स स्वर एव हि।।

अथ जन्मराशि-नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते–

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे। जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्।। देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके।। नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत्।। काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे च नामराशेः प्रधानता।। कुर्यात्षोडशकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते।। विवाह घटनं चैवं लग्नजं ग्रहजं बलम्। कामभाक्चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा।।

अभिजित्निर्णय :– वैश्यप्रान्त्यांघिः श्रुति–तिथि–भागतोऽभिजित्स्यात्।।

"उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण और श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़कर उसके चार भाग करें। उसको अभिजित् का एक चरण मानकर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करें। उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक–एक चरण मानो। श्रवण का १५वां भाग छोड़कर जो शेष रहे, उसके चार भाग करें; उसको श्रवण के १–१ चरण मानें। सामान्य गणक के ज्ञानार्थ ही यह यहां लिखा गया है।

राशिज्ञानम्– चू ल अ मेषः, इ वो वृषः, क घ ङ छ ह मिथुनम्।।
हीडो कर्कः, माटे सिंहः, टो ष ण ठ पो कन्या।।
राते तुला, तो ना यू वृश्चिकः, ये घफढभे धनुः।।
भोजा खागी मकरः, गुशद : कुम्भः दीथझञची मीनः।।

इस राशिज्ञान में प्रत्येक राशि के आदि और अन्त का अक्षर है और जहां जो अक्षर बदलता है, वहां वह अक्षर भी ले लिया गया है। जैसे–मेष में पहला अक्षर 'चू' लेने से अश्विनी के तीन चरण (चू चे चो) का ग्रहण होता है और 'ल' से (ला ली लू ले लो) पांचों का ग्रहण हुआ अर्थात् एक चरण (चौथा) अश्विनी का और चतुर्थ चरण पर्यन्त भरणी का ग्रहण हुआ और 'अ' से कृत्तिका का प्रथम चरण– इन नौ चरणों की एक राशि मेष हुई। इसी तरह अन्य राशियों का ज्ञान करें।

विशेष– जहां 'ज्ञ' का उच्चारण 'ज्ञ' होता है वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र उ.षा. और जहां इसका उच्चारण 'ग्य' होता है, वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र धनिष्ठा माना जाएगा। क्योंकि 'ज' और 'ग' वर्ण क्रमशः उ.षा. और धनिष्ठा नक्षत्र में पड़ते हैं।

नोटः–चन्द्रमा की राशि एवम् नक्षत्र के अनुसार जातक का नाम रखने में फलितज्ञ को काफी आसानी रहती है। नाम जानने से ही ज्योतिषी जातक के जन्मसमय चन्द्रमा की राशि एवम् नक्षत्र जान लेता है तथा फलितशास्त्र में काफी महत्त्वपूर्ण फलादेश चन्द्रमा की स्थिति पर ही निर्भर है। इसका एक वैज्ञानिक रहस्य भी है। निकटतम होने से चन्द्रमा का प्रभाव भूस्थित वनस्पति एवम् प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक होता है। ज्वारभाटा लाने में भी चन्द्रमा की देन सूर्य की देन से दुगुनी है। चन्द्रमा का ज्वार–भाटांक सूर्य के ज्वार–भाटांक से दुगुना है। चन्द्रमा के भगणकाल का स्त्री के मासिक धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है। आजकल वैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोग भी किए हैं, जिससे अचर जगत् (वनस्पति आदि) पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है। अतः जन्मपत्र आदि के अभाव में चन्द्रमा की स्थिति से ही फलादेश करने की परिपाटी फलितज्ञों में है।

नवीन फलितवेत्ता जन्मपत्र की अंग्रेज़ी तारीखों के हिसाब से भी फलादेश करने लग गए हैं। इस पद्धति में सायन सूर्य की राशि के आधार पर ही फलादेश होता है, जबकि चन्द्रमा की राशि के आधार पर फलादेश करना अधिक उपयुक्त है। अतः प्राचीन फलित–शास्त्रियों ने जन्मकालीन चन्द्रमा की स्थिति को जन्मराशि का नाम दिया है। हमारे ज्योतिष के अनुसार इसका विशेष महत्त्व भी है।

भोजा खागी मकरः, गुशद : कुम्भः दीथझञची मीनः।।

प्राचीन फलित–शास्त्रियों ने जन्मकालीन चन्द्रमा की स्थिति को जन्मराशि का नाम दिया है। हमारे ज्योतिष के अनुसार इसका विशेष महत्त्व भी है।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2069 वि.)

मेषसंक्रान्ति (13 अप्रैल से 13 मई, सन् 2012 ई.)

(चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

वैशाखसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

2 के. शु.		12 बु.
3	सू. 1 गु.	11
4		10 चं.
5 मं.	7 श.	9
6		8 रा.

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– मेषस्थ (उच्चस्थ) सूर्य एवं गुरु उच्च शनि के साथ समसप्तकयोग बना रहे हैं। द्वितीयेश शुक्र केतु के साथ द्वितीयभाव में ही है। नवमेश गुरु की एवं कर्मेश शनि की नवमभाव पर विशेष दृष्टि है। उल्लिखित ग्रहस्थिति राष्ट्र एवं जनसाधारण के लिए धन–धान्यसमृद्धिकारक एवं राष्ट्र के अभ्युदय के लिए नए आयाम उपस्थित करने वाली रहेगी।

वैशाख मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– मेषस्थ सूर्य–गुरु मनोबल को प्रबल रखेंगे। सभी समस्याओं पर विजय प्राप्त करने का मनोबल प्रबल रहेगा। अर्थिक स्थिति ठीक होने पर भी वृथाव्यय से मन खिन्न रहेगा। नेत्रकष्ट से परेशानी बने। सप्तम भावस्थ शनि की लग्नस्थ सूर्य पर नीच दृष्टि होने से वृथाविवादों से दूर रहें। घरेलू झंझट परेशानी के कारण बनेंगे। अप्रैल 18, 19, 20, 28, 29, 30; मई 6, 7 अशुभ।

वृष– लग्नस्थ शुक्र केतु के साथ पित्त–कफविकार करेगा। आर्थिक संकट अनुभव होगा। निजीजनों से विवादभय रहे। सम्पत्ति(जायदाद)सम्बन्धी विवाद परेशानी का कारण बने। विद्यार्थियों के लिए कठिन परिश्रम का फल आशा के अनुकूल न रहे। बुधवार को हरा चारा गाय को देना ठीक रहेगा। नई योजना बने। गृहस्थियों को स्त्रीपक्ष से चिन्ता। कारोबार में रुकावट। अप्रैल 21, 22; मई 1, 2, 9, 10 अशुभ।

मिथुन– लग्नेश बुध नीच होने से शारीरिक स्वास्थ्य कुछ ठीक न रहे। आर्थिक स्थिति चिन्ताजनक रहे। मिथुन राशि से तृतीयभाव में मंगल होने से मित्र–बन्धु के सहयोग से पराक्रम व उत्साहजनक वातावरण बनेगा। पंचमभावस्थ उच्च का शनि सन्तानपक्ष से खुशी का समाचार देता है, लेकिन यात्रा एवं नई योजनाओं में कुछ बाधा उपस्थित करे। कारोबार ठीक, आय–व्यय मासान्त में ठीक रहे। अप्रैल 14, 15, 23, 24, 25; मई 3, 4, 11, 12 अशुभ।

कर्क– चन्द्र शत्रुक्षेत्रस्थ है। अतः कफ–वायुविकार से परेशानी रहे। अचानक आर्थिक लाभ होकर वृथाव्यय एवं नेत्रकष्ट से परेशानी बने। निजी–बन्धुओं से मेल एवं सहयोग प्राप्त हो। नई योजना एवं यात्रा में हानि व कष्टभय का योग है। बुध–शनि– मंगलवार को सावधान रहें। आय से व्यय अधिक। राजपक्ष से भय बने। अप्रैल 16, 17, 26, 27; मई 5, 6, 13 अशुभ।

सिंह– लग्नस्थ मंगल रक्त–पित्त–विकार करेगा। कारोबार में उत्तम लाभ की स्थिति बनेगी। तृतीय भावस्थ शनि गुरुदृष्ट है। बन्धु–भ्रातापक्ष से स्नेह–सद्भाव एवं सहयोग प्राप्त हो। स्थायी सम्पत्ति–सम्बन्धी विवाद में उलझना इस समय ठीक नहीं, चोट व आर्थिकहानि संभव है। विद्यार्थियों को सफलता मिले, मासमध्य में शारीरिक कष्ट, नेत्रकष्ट किंवा आर्थिक हानि संभव है। अप्रैल 18, 19, 20, 28, 29, 30; मई 6, 7 अशुभ।

कन्या– लड़ाई–झगड़े से दूर रहें। अर्थलाभ होकर विशेष खर्च होने से अर्थसंकट से परेशानी बढ़े। अचानक मित्र–बन्धुपक्ष से भी परेशानी का कारण बने। नई योजना किंवा सन्तानपक्ष से असन्तोषजनक परिणाम होंगे। शनि–राहु का जप–दान– विधान कराना कल्याणप्रद रहेगा। स्त्रीपक्ष से लाभ व सहयोग से मनोबल प्रबल रहे। मासान्त में कारोबार से लाभ रहे। अप्रैल 21, 22; मई 1, 2, 9, 10 अशुभ।

तुला– लग्नस्थ शनि उच्च है। बृहस्पति की दृष्टि भी है। सेहत ठीक रहे, लेकिन शत्रुपक्ष से चिन्ता एवं वृथाव्यय हो। स्त्रीपक्ष किंवा राजपक्ष से भी लाभ की स्थिति बने। कार्यान्तर व स्थानान्तर से लाभ हो। सन्तानपक्ष से चिन्ता किंवा असन्तोपजनक परिणामों से चिन्ता रहे। शनि–राहु–चन्द्र का दान–विधान करा देना श्रेयस्कर रहेगा। अप्रैल 14, 15, 23, 24, 25; मई 3, 4, 11, 12 अशुभ।

वृश्चिक– पेट, सिर व नेत्र में विकार से परेशानी रहे। अर्थलाभ हो। निजी–बन्धु के सहयोग से मनोबल बना रहे। यात्रा में कष्ट की संभावना है। शनि–मंगल–बुधवार को दुर्घटना से कष्टभय है। स्त्री किंवा मित्र से मदद एवं सहानुभूति मिलेगी। मासान्त में कारोबार एवं पार्टनरशिप में हानि से मन चिन्तित। अप्रैल 16, 17, 26, 27; मई 5, 6, 13 अशुभ।

धनु– कफ–पित्त–विकार से सेहत बिगड़े। धनस्थान में शत्रुक्षेत्रीय चन्द्रमा आर्थिक संकट का संकेत देता है। निजीजनों से कलह–क्लेश, स्थायी सम्पत्तिसम्बन्धी विवाद उलझें। सन्तानपक्ष से खुशी का समाचार मिले। विद्यार्थियों के लिए सफलता से हर्षप्रद वातावरण बने। गुप्त शत्रु से भय हो। स्त्री का स्वास्थ्य किंवा गुप्त चिन्ता से परेशानी रहे। कार्यान्तर व स्थानान्तर से लाभ। अप्रैल 18, 19, 20, 28, 29, 30; मई 6, 7 अशुभ।

मकर– शत्रु–क्षेत्रीय चन्द्र शारीरिक परेशानी किंवा वायुरोग करे। वृथाव्यय हो, कलह–क्लेश से दूर रहें। मित्र–बन्धु से मिलाप हो, सन्तानपक्ष से सुख किंवा नई योजना से लाभ मिले। स्त्री पक्ष से चिन्ता रहे। अशुभ कर्मों में रुचि से हानिभय है, सावधान रहें। मासान्त में आय से व्यय अधिक हो। अप्रैल 21, 22; मई 1, 2, 9, 10 अशुभ।

कुम्भ– कुंभराशि पर मंगल की दृष्टि शुभ नहीं। मुकदमे एवं सरकारी कामों में गड़बड़ी से कष्टभय। शनि–मंगल का दान करें। आर्थिक परेशानी रहे। निजी लोगों से अनबन, सन्तानपक्ष से सुख, नई योजना से लाभ मिले। शत्रु प्रबल रहेंगे, झगड़े से बचें। स्त्रीपक्ष किंवा गुप्त शत्रु से अपमानभय। कारोबार में लाभ होकर हानिभय हो। अप्रैल 14, 15, 23, 24, 25; मई 3, 4, 11, 12 अशुभ।

मीन– सरकार किंवा विवादों से सावधान रहें, बन्धनभय है। लग्नस्थ नीच बुध पर मंगल की दृष्टि है। धनलाभ हो, लेकिन वृथाव्यय से परेशानी रहे। निजीजन से सहायता मिले। मासमध्य में शत्रु हतप्रभ रहें। स्त्रीपक्ष से लाभ, लेकिन अचानक गुप्त शत्रु चिन्ता का कारण बनेगा। वीरवार को पीले चावल, शनिवार–बुधवार को तेलदान करें। अप्रैल 16, 17, 26, 27; मई 5, 6, 13 अशुभ।

वृषसंक्रान्ति (14 मई से 13 जून, सन् 2012 ई.)

(इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– वृषसंक्रान्ति–कुण्डली में सूर्य, शुक्र लग्न में केतु के साथ योग बना रहे हैं, जोकि पाराशरी के अनुसार "यदि केन्द्रे त्रिकोणे वा निवसेतां तमोग्रहौ। नाथेनान्यतरेणापि सम्बन्धाद्योगकारकौ।"– प्रमाणानुसार इस मास में शुभफलकारक रहेंगे। मकरराशि का मालिक शनि उच्चस्थ एवम् गुरुदृष्ट है, अतः भारत के लिए भी प्रगत्याधायक है।

ज्येष्ठ मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– लग्नस्थ शुक्र शत्रुग्रह सूर्य के साथ होने से आपको अचानक राजपक्ष किंवा प्रबल विरोधी व्यक्ति से परेशानी बन सकती है। पेट में विशेष रोग भी परेशानी का कारण बने। चतुर्थ भावस्थ मंगल गुरुदृष्ट है, अतः आपत्ति में आपके मित्र–बन्धु आपके पक्ष में खड़े होंगे। अन्ततः शत्रु परास्त होंगे। स्त्रीपक्ष से भी चिन्ता रहे। नई योजना व नए कारोबार से लाभ हो। मई 15, 16, 17, 26, 27; जून 3, 4, 12, 13 अशुभ।

वृष– बुध मेषस्थ गुरु के साथ शुभ है। निजीजन–सहयोग मिले। षष्ठ भावस्थ शनि धनलाभ कराएगा, लेकिन अचानक विशेष खर्च खड़ा हो, परेशानी बने। कारोबार बेहतर हो, मित्र–बन्धु से सांझेदारी में लाभ होगा। मई 18, 19, 28, 29; जून 5, 6 अशुभ।

मिथुन– चन्द्र शत्रुक्षेत्री है। वायुरोग से सेहत खराब हो। धनस्थान में मंगल वृथाव्यय एवं घरेलू झंझटों को बढ़ावा देगा। बन्धुकष्ट, लेकिन निजीजनों से मदद मिले। सन्तानपक्ष किंवा विद्या में निराशाजनक परिणाम रहें। मासान्त में कारोबार ठीक रहे। मई 21, 22, 30, 31; जून 7, 8, 9 अशुभ।

कर्क– मंगल सूर्यक्षेत्र में कलह–क्लेश को बढ़ावा दे सकता है, क्रोध को वश में रखें। ब्लडप्रैशर किंवा वायुरोग से परेशानी रहे। बन्धु किंवा भाई से सहयोग–सुख मिले। सम्पत्तिविवाद (मुकदमेबाजी) से बचें। निजीकार्य में सफलता। सन्तानपक्ष शुभ, गुप्त चिन्ता बने। मई 14, 15, 23, 24, 25; जून 1, 2, 10, 11 अशुभ।

सिंह– सेहत ठीक, आर्थिक संकट बना रहे। निजी लोगों से घरेलू उलझनें बढ़ें। नई योजना से हानि, स्त्रीपक्ष से लाभ हो। मासान्त में कारोबार ठीक, आय–व्यय बराबर रहे। मई 15, 16, 17, 26, 27; जून 3, 4, 12, 13 अशुभ।

कन्या– उच्च शनि पर बृहस्पति की पूर्ण दृष्टि है। शत्रु प्रबल होने पर भी हानि से बचे रहेंगे। आय से व्यय अधिक हो। दुर्घटना से हानिभय, सन्तानपक्ष से चिन्ता। नई योजना से हानि हो। स्त्री–बन्धुपक्ष से सहयोग रहे। कारोबार अपेक्षाकृत कमज़ोर रहे। मई 18, 19, 28, 29; जून 5, 6 अशुभ।

तुला– उदर–नेत्रकष्ट, गुप्तचिन्ता, ब्लडप्रैशर से हानिभय, स्त्रीपक्ष से अपमानभय, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार बने। मंगल, राहु, शनि का मन्त्रजाप एवं दान करें। बुधवार को तेल मलकर स्नान करें। मई 21, 22, 30, 31; जून 7, 8, 9 अशुभ।

वृश्चिक– सेहत ठीक रहे, निजी लोगों से अनबन हो, नई योजना सफल हो, सन्तानपक्ष से खुशी। स्त्रीकष्ट से चिन्ता, कारोबार में वृद्धि, नए कारोबार के संकेत हैं। कर्जा न लें। मई 14, 15, 23, 24, 25; जून 1, 2, 10, 11 अशुभ।

धनु– रक्त–पित्तविकार से परेशानी, यात्रा में कष्ट, वृथाव्यय हो। मित्र–बन्धु आदि का सहयोग मिले। सन्तानपक्ष से सुख, स्त्रीपक्ष से परेशानी हो। कारोबार ठीक एवं मासान्त में अधिक व्यय हो। मई 15, 16, 17, 26, 27; जून 3, 4, 12, 13 अशुभ।

मकर– क्रोध बढ़े, विवाद से दूर रहें, अर्थलाभ हो। बन्धुकष्ट से चिन्ता रहे। सम्पदाप्राप्ति का योग बने । स्त्रीकष्ट, लेकिन सन्तानसुख मिले। कारोबार में रद्दोबदल का विचार बने। मई 18, 19, 28, 29; जून 5, 6 अशुभ।

कुम्भ– सेहत ठीक, अचानक अर्थलाभ हो। निजी लोगों से अनबन हो। घरेलू झगड़े बढ़ें। मित्र से मदद मिले। गुप्त शत्रु से सावधान रहें। सांझेदारी के कार्य में उलझनें एवं हानियोग है। मई 21, 22, 30, 31; जून 7, 8, 9 अशुभ।

मीन– सेहत ठीक रहे, आय से व्यय अधिक हो। भ्रातृसुख मिले। विद्या में विशेष सफलता न मिले। सन्तानपक्ष से चिन्ता रहे। स्त्रीपक्ष से मनोबल प्रबल रहे। गुप्तशत्रु से सावधान। धर्म–कर्म में रुचि बढ़े। मई 14, 15, 23, 24, 25; जून 1, 2, 10, 11 अशुभ।

मिथुनसंक्रान्ति (14 जून से 15 जुलाई, सन् 2012 ई.)

(क, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, ह)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– 14 जून से 15 जुलाई, सन् 2012 ई. तक की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार लग्नेश बुध, मित्रग्रह सूर्य के साथ 'बुधादित्य योग' बना रहा है। शासकीय कार्यों में सुधार होगा। भारतदेश प्रगतिपथ पर अग्रेसर रहेगा। चीन–पाकिस्तान की ओर से अशुभ संकेत मिलेंगे।

आषाढ़ मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– सूर्य–बुध की पोज़ीशन राजकीय कार्यों में बाधा एवं कदाचित् स्थानान्तरण का भी योग बना सकती है। मंगल की स्थिति अचानक धनहानि व नेत्रकष्ट बना सकती है। निजीजनों द्वारा सम्पत्ति–विवाद रहे एवं गुप्त शत्रु अधिक बल पकड़ सकते हैं। स्त्रीपक्ष से सुख–लाभ रहे। कारोबार ठीक एवं मनोबल प्रबल रहे। जून 22, 23; जुलाई 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।

वृष– सेहत ठीक रहे। धनहानियोग है, कर्जे से बचें। निजीजनों से अनबन हो, लेकिन बन्धुविशेष की मध्यस्थता से समस्याएं सुलझें। सन्तानपक्ष से चिन्ता, विद्यार्थीवर्ग को परीक्षाफल शुभ किंवा अनुकूल परिस्थिति न होने से असन्तोष रहे। स्त्रीपक्ष एवं गुप्त चिन्ता से मन परेशान रहे। मासान्त में विशेष हानि से बचें। जून 14, 15, 16, 24, 25, 26; जुलाई 3, 4, 12, 13 अशुभ।

मिथुन– क्रोध से परिवार में परेशानी, ब्लडप्रैशर से स्वास्थ्य खराब रहे। कारोबार कमज़ोर, अर्थहानि से मन उद्विग्न रहे। मित्र–बन्धुकष्ट, अपमानभय। मंगल–राहु एवं शनि का जप–दान–विधान कराएं। शुभकार्य में विशेष व्यय हो। जून 17, 18, 19, 26, 27, 28; जुलाई 5, 6, 14, 15 अशुभ।

कर्क– अचानक धनलाभ का योग, पंचम–भावस्थ राहु वृथाव्यय भी कराएगा। चोर–उच्चकों से सावधान रहें। सम्पत्ति हेतु अधिक खर्च हो। वृथाविवादों से दूर रहें। शत्रु प्रबल है, सावधानी की जरूरत है। किसी अच्छे व्यक्ति से मेल हो। कारोबार में रद्दोबदल का योग है। जून 19, 20, 21, 29, 30; जुलाई 7, 8 अशुभ।

सिंह– कार्यसिद्धि के लिए विशेष प्रयास व धनव्यय करना होगा। स्त्रीपक्ष से चिन्ता, आय से व्यय अधिक हो। घर में मंगलकार्य में विघ्नभय है, अतः मंगल–शनिवार को नया काम न करें। मासान्त में उत्साह बढ़े एवं रुके काम बनें। जून 22, 23; जुलाई 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।

कन्या– मासारम्भ में अनेक बाधाओं का सामना करना पड़े। अशुभ समाचार से मन खिन्न हो सकता है। शिवपूजन एवं हनुमान्चालीसा का पाठ करें। निजीजनों से विरोध रहे, लेकिन किसी मित्र–बन्धु का सहयोग पूर्ण रूप से मिलेगा। कारोबार में तबदीली का योग है। जून 14, 15, 16, 24, 25, 26; जुलाई 3, 4, 12, 13 अशुभ।

तुला– मासारम्भ में शुभकार्यों पर व्यय होगा। शत्रु हतप्रभ रहें। रिश्तेदार–विशेष से अनबन हो। सम्पत्तिलाभ के योग हैं। स्त्रीपक्ष से चिन्ता और गुप्त चिन्ता रहे। नई योजना व जमीन–जायदाद से लाभ मिले। जून 17, 18, 19, 26, 27, 28; जुलाई 5, 6, 14, 15 अशुभ।

वृश्चिक– मंगल की स्थिति जुलाई मास में गृहकलह का कारण बन सकती है। मंगल का जप–दान करते रहें। कारोबार में विशेष परिवर्तन के योग हैं। कर्जा सिर चढ़े। नई योजना व सन्तानपक्ष से लाभ मिले। चोरी–ठगी से सावधान रहें। जून 19, 20, 21, 29, 30; जुलाई 7, 8 अशुभ।

धनु– वाहन से चोटभय है, सावधान रहें। कारोबार से उत्तगलाभ होकर विशेष खर्च हो। बन्धुजन–सौहार्द एवं सहयोग रहे। सन्तानपक्ष से शुभ समाचार, स्त्रीपक्ष से चिन्ता रहे। कार्यान्तर से लाभ हो। जून 22, 23; जुलाई 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।

मकर– सुख–लाभ की इच्छा से व्यय अधिक हो। निजीजन सहयोग रहे। सम्पत्तिसम्बन्धी विवाद अधिक बढ़ें। नीच व्यक्ति से अपमानभय, स्त्री की सेहत चिन्ताजनक रहे। **जून** 14, 15, 16, 24, 25, 26; **जुलाई** 3, 4, 12, 13 **अशुभ।**

कुम्भ– सेहत ठीक रहे, आर्थिक लाभ व कारोबार में प्रगति हो। मासमध्य में मानसिक तनाव रहे, लेकिन बिगड़े कामों में सुधार आए। शत्रुपक्ष कमज़ोर रहे। कारोबार में वृद्धि हो। **जून** 17, 18, 19, 26, 27, 28; **जुलाई** 5, 6, 14, 15 **अशुभ।**

मीन– शत्रुपक्ष कमज़ोर हो, धनलाभ होकर हानि होने का भय। व्यापार सावधानी से करें। बन्धुकष्ट एवं सन्तानपक्ष से भी चिन्ता रहे। गुप्त चिन्ता एवं स्त्रीरोग विशेष से वृथा धनव्यय संभव है। मासान्त में कारोबार से अच्छा लाभ मिले। **जून** 19, 20, 21, 29, 30; **जुलाई** 7, 8 **अशुभ।**

कर्कसंक्रान्ति (16 जुलाई से 15 अगस्त, सन् 2012 ई.)

(हि, हु, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– इसमास में शनि–मंगल का कन्याराशि में एक साथ होना एवं राहु पर शनि की विशेष दृष्टि राजनैतिक स्थिति के लिए विषम परिस्थितियों वाली है। विशेषतः कन्याराशि वाले पाकिस्तान आदि देशों में सत्ता–परिवर्तन संभव है। भारत की गरिमा के लिए समय ठीक रहे।

श्रावण मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– प्रारम्भिक समय अनुकूल अनुभव होने पर भी मानसिक एवं पारिवारिक परेशानियां बनी रहेंगी। घरेलू झंझट बढ़ेंगे। कोर्ट–कचहरी में परेशानी का सामना करना पड़ेगा। धन का अपव्यय एवं कारोबारी परेशानियां घर–गृहस्थी के लिए दुःखदायी रहेंगी। वाहन–दुर्घटना किंवा लड़ाई–झगड़े से बचें। मंगलवार को गाय को गुड़ एवं शनिवार को तेलदान करें। मित्र–बन्धु से सहायता सुखदायी रहेगी। **जुलाई** 19, 20, 21, 28, 29; **अग.** 6, 7, 15 **अशुभ।**

वृष– सेहत प्रायः ठीक रहे, आर्थिक संकट से जूझना पड़ेगा। नेत्र व शिरोवेदना से कष्ट हो। नई योजना से लाभ हो। कारोबार में प्रगति होने पर भी आय से व्यय अधिक हो। स्त्रीपक्ष से चिन्ता एवं सन्तानपक्ष शुभ रहे। **जुलाई** 21, 22, 23, 30, 31; **अगस्त** 8, 9, 10 **अशुभ।**

मिथुन– इस मास में शनि–मंगल का एकराशिसम्बन्ध मिथुनराशि वाले व्यक्तियों के लिए शारीरिक स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं। रुधिरविकार, अग्नि एवं वाहन से भय है, सावधानी रखें। शनि–मंगल–राहु का दान करें। कारोबारी हालात ठीक रहेंगे। घरेलू विवाद से दूर रहें। **जुलाई** 16, 24, 25; **अगस्त** 1, 2, 11, 12 **अशुभ।**

कर्क– अकस्मात् कष्ट एवं राजकार्य से भय रहे। वृथाव्यय एवं अपने लोगों से मनमुटाव रहे। नई योजना से हानिभय है। मासान्त विशेष कष्टप्रद रहे। शनि, मंगल एवं बुधवार को वाहन से या यात्रा में कष्टभय है। मित्र–बन्धु की मदद से समय ठीक निकलेगा। **जुलाई** 17, 18, 26, 27; **अगस्त** 3, 4, 5, 13, 14, 15 **अशुभ।**

सिंह– शिरोवेदना एवं नेत्रकष्ट से परेशानी रहे, शुभकार्य में मन लगे। सन्तानपक्ष से चिन्ता रहे। विद्यार्थियों के लिए यह मास विशेष परेशानी वाला है। स्त्रीपक्ष से सहायता मिलने से मनोबल बना रहे। **जुलाई** 19, 20, 21, 28, 29; **अग.** 6, 7, 15 **अशुभ।**

कन्या– श्रावण मास में कन्यास्थ शनि–मंगल पारिवारिक उलझनों को उपस्थित करेंगे। नई योजनाएं कार्यान्वित होंगी, लेकिन कारोबार में विशेष विघ्न–बाधाएं आने से मासान्त में हानि एवम् स्थानान्तरण का भी विचार बनेगा। ब्लडप्रैशर का ध्यान रखें। **जुलाई** 21, 22, 23, 30, 31; **अगस्त** 8, 9, 10 **अशुभ।**

तुला– 16 जुलाई से 15 अगस्त तक की ग्रहस्थिति तुलाराशि वाले व्यक्तियों के लिए प्रायः शुभ है, लेकिन प्रगतिप्रद योजनाओं में भारी बाधाएं उपस्थित होंगी। शुभकार्यों में योगदान रहेगा। स्त्रीपक्ष से चिन्ता, मासान्त में आय से व्यय अधिक रहे। **जुलाई** 16, 24, 25; **अगस्त** 1, 2, 11, 12 **अशुभ।**

वृश्चिक– मंगल वृश्चिक राशि का मालिक है। शनि–मंगल दोनों वाद–विवाद में उलझा सकते हैं। घरेलू झगड़े उलझेंगे। मित्र व बन्धुवर्ग से सहयोग मिलेगा। कारोबार में विशेष रद्दोबदल का योग है। जमीन–जायदाद का लाभ संभव है। **जुलाई** 17, 18, 26, 27; **अगस्त** 3, 4, 5, 13, 14, 15 **अशुभ।**

धनु– मानसिक परेशानियां बढ़ें। स्त्रीपक्ष से चिन्ता रहे। भाई–बन्धुवर्ग से सहयोग एवं धनलाभ हो। सन्तानपक्ष से खुशी मिले। कारोबार में कुछ परिवर्तन के साथ लाभ की स्थिति बने। **जुलाई** 19, 20, 21, 28, 29; **अग.** 6, 7, 15 **अशुभ।**

मकर– राजकीय कार्यों में परेशानी बढ़े। आर्थिक लाभ, कारोबार में वृद्धि

एवं गुप्त शत्रु से भय हो। शनि–मंगल–बुधवार को यात्रा में कष्टयोग है, सावधान रहें। स्त्रीपक्ष शुभ, मनोबल ठीक रहे। जुलाई 21, 22, 23, 30, 31; अगस्त 8, 9, 10 अशुभ।

कुम्भ– शत्रुपक्ष कमज़ोर रहे। सेहत ठीक रहे एवं मित्रमिलाप हो। पार्टनरशिप एवं कारोबार में खलबली रहे। कर्जा सिर चढ़े, घरेलू झगड़े–झंझटों से परेशानी रहे। सन्तानपक्ष से चिन्ता, विद्यार्थियों को परीक्षा में आशानुकूल सफलता न मिले। अपने भी पराए नज़र आएं। जुलाई 16, 24, 25; अगस्त 1, 2, 11, 12 अशुभ।

मीन– धनलाभ होकर हानि हो, मित्रवर्ग से अनबन रहे। सन्ततिकष्ट, गुप्त शत्रु से भय, राजपक्ष से अचानक परेशानी का योग बनेगा। वृथा कलह से बचें। स्त्रीपक्ष से सहायता एवं कारोबार प्रायः ठीक रहे। जुलाई 17, 18, 26, 27; अगस्त 3, 4, 5, 13, 14, 15 अशुभ।

सिंहसंक्रान्ति (16 अगस्त से 15 सितंबर, सन् 2012 ई.)

(मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– सिंहराशिस्थ सूर्य प्रबल है। तृतीयभावस्थ शनि–मंगल विश्व में कहीं यानदुर्घटना एवं मुस्लिम–राष्ट्रों में संघर्षमय स्थिति बनाएंगे। भारत की प्रभावराशि मकर से पंचम स्थान में गुरु की स्थिति राजनीति के क्षेत्र में संशोधन का वातावरण बनाएगी।

भाद्रपदसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

भाद्रपद मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– 16 अगस्त से 15 सितंबर तक स्थानान्तरण का योग बनेगा। गोचर में मेष राशि पर शनि–मंगल की दृष्टि शारीरिक कष्ट दे सकती है। आर्थिक संकट अवश्य रहेगा, लेकिन कारोबार में अड़चनें आने पर भी आप प्रगति के मार्ग पर चलते रहेंगे। नज़दीकी रिश्तेदारों से अनबन रहे। अगस्त 16, 17, 24, 25, 26; सितंबर 2, 3, 12, 13 अशुभ।

वृष– सेहत ठीक रहेगी। कारोबार ठीक नहीं रहेगा, कर्जा सिर चढ़े। निजी लोगों से अनबन रहेगी। बन्धु व मित्रवर्ग से सहयोग मिलेगा। व्यवसायार्थ नई योजना बने। विद्यार्थीवर्ग के लिए समय अनुकूल है। मासान्त में लाभ की स्थिति बनेगी। अगस्त 18, 19, 26, 27, 28; सितंबर 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।

मिथुन– वायु–कफ–विकार से परेशानी बने। आर्थिक संकट से मन दुःखी रहे। दुर्घटना से बचें। शनि–मंगल का दान करें। सन्तानपक्ष से शुभ समाचार मिले। स्त्रीपक्ष से चिन्ता। कारोबार में पार्टनरशिप से लाभ की स्थिति बने। अगस्त 20, 21, 29, 30; सितंबर 7, 8 अशुभ।

कर्क– उदरविकार एवं त्वचारोग से परेशानी रहे। आय के साधन ठीक रहें। ज़मीन–जायदादसम्बन्धी झगड़े किंवा घरेलू परेशानियों का सामना करना पड़े। स्त्रीपक्ष से मदद मिले। कारोबार में गड़बड़ी रहे। मासान्त में कष्टप्रद स्थिति बने। अगस्त 22, 23, 31; सितंबर 1, 9, 10, 11 अशुभ।

सिंह– मनोबल प्रबल रहे। उलझे हुए कार्यों में सफलता की किरण नज़र आए। निजीजनों की कुचाल से सावधान रहें। शनि–मंगल का दान–विधान करें। सन्तानपक्ष से चिन्ता रहे। आय से व्यय अधिक हो। अगस्त 16, 17, 24, 25, 26; सितंबर 2, 3, 12, 13 अशुभ।

कन्या– रोज़गार में अस्थिरता से परेशानी रहे। मन चिन्तित एवं बलडप्रैशर, शूगर की परेशानी भी बन सकती है। स्त्री–पुत्र के सहयोग से मनोबल कायम रहे। शनि–मंगल–बुधवार को चोट से बचें, हानिभय है। मासान्त में नई योजना एवं बन्धु–सहयोग से लाभ की स्थिति बने। अगस्त 18, 19, 26, 27, 28; सितंबर 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।

तुला– यह मास (16 अगस्त से 15 सितम्बर तक) विशेष उलझनों वाला है, गुप्त शत्रु से सावधान रहें। कार्यान्तर व स्थानान्तर से लाभ की योजना बनेगी। दुर्घटना किंवा अशुभ समाचार से मन परेशान रहे। मासान्त में लाभ की स्थिति बनेगी। अगस्त 20, 21, 29, 30; सितंबर 7, 8 अशुभ।

वृश्चिक– निजीजनों के सहयोग से लाभ एवं समस्याओं का हल निकलेगा। सेहत ठीक रहेगी। धनलाभ होकर अचानक विशेष खर्च आ पड़ेगा। यात्रा सुखद रहेगी, सन्तानपक्ष से सुख एवं स्त्रीपक्ष से चिन्ता, शत्रु सिर उठाएं, मुकद्दमेबाज़ी एवं वृथा–झंझटों से दूर रहें। अगस्त 22, 23, 31; सितंबर 1, 9, 10, 11 अशुभ।

धनु– रक्त–पित्तविकार से परेशानी, धनलाभ एवं कारोबार में प्रगति बने। सम्पत्तिलाभ हो। स्त्री–स्वास्थ्य की किंवा स्त्रीपक्ष से चिन्ता रहे। शत्रुपक्ष कमज़ोर रहे। नई योजना सफल हो। अगस्त 16, 17, 24, 25, 26; सितंबर 2, 3, 12, 13 अशुभ।

मकर– शुभ, मंगलकार्य के समाचार से वातावरण ठीक रहे। सेहत कुछगड़बड़ रहे। सम्पत्तिसम्बन्धी कार्य में सफलता मिले। भाई–बन्धुवर्ग का सहयोग

मिलता रहेगा। विरोधीवर्ग प्रबल है– सावधान रहें। स्त्रीपक्ष से भी अनबन व चिन्ता का कारण बने। अगस्त 18, 19, 26, 27, 28; सितंबर 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।

कुम्भ– सेहत ठीक रहे, आर्थिक दृष्टि से यह मास शुभ है। मित्र–बन्धु–सहयोग रहेगा। नई योजना एवं सन्तानपक्ष से परेशानी बन सकती है। स्त्रीपक्ष में मंगलकार्य से उत्साह रहे। कारोबार में नई योजनाओं से खर्च बढ़े। अगस्त 20, 21, 29, 30; सितंबर 7, 8 अशुभ।

मीन– मन अशान्त, कारोबार कमज़ोर, वृथाव्यय हो। भ्रातृकष्ट, दाम्पत्य जीवन में विरोधमय, कारोबार कुछ ठीक। मासान्त में सुख रहे। अगस्त 22, 23, 31; सितंबर 1, 9, 10, 11 अशुभ।

कन्या–संक्रान्ति (16 सितम्बर से 15 अक्तूबर, सन् 2012 ई.)

(टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– लग्नस्थ उच्च बुध सूर्य एवं चन्द्र के साथ राजनैतिक परिप्रेक्ष्य की दृष्टि से शुभ है। द्वितीय भाव में शनि–मंगल की स्थिति वैश्विक तापमान में वृद्धि एवं विश्व में उग्रवादजन्य परेशानी की सूचक है।

आश्विन मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– इस मास में मेष राशि वाले व्यक्तियों को मानसिक एवं शारीरिक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। शनि–मंगलवार को वाहन एवं गुप्त शत्रु से सावधान रहें। कारोबार में कुछ रद्दोबदल से लाभ की स्थिति बनेगी। निजीजनों से अनबन, बन्धुवर्ग से सम्पत्तिलाभ हो। कर्जा सिर चढ़े। सितंबर 20, 21, 22, 29, 30; अक्तूबर 1, 9, 10, 11 अशुभ।

वृष– चोट से बचें, अचानक परेशानी का सबब बने। व्यर्थ में खर्चा हो, गुप्त चिन्ता मन को व्यथित करे। मित्र–बन्धु की तरफ से सहायता मिले। सन्तानपक्ष से चिन्ता रहे। कारोबार सामान्यतः ठीक चले। सितंबर 23, 24; अक्तूबर 2, 3, 11, 12 अशुभ।

मिथुन– उदरविकार व नेत्रकष्ट से परेशानी हो। निजीजन–सहयोग एवं

अर्थलाभ हो। शुभ सन्देश एवं मांगलिक कार्य का आयोजन हो। मासान्त में आय से व्यय अधिक हो। जल–वाहन से कष्टभय का योग है। सितंबर 16, 17, 25, 26; अक्तूबर 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।

कर्क– सेहत ठीक रहे। आर्थिक संकट होने पर भी काम ठीक होते रहें। निजीजनों से सम्पदा–विवाद बढ़े। स्थिर सम्पत्ति का लाभ हो। स्त्रीपक्ष से अचानक लाभ हो, कारोबार ठीक, लेकिन मासान्त में विशेष खर्च आ पड़े। सितंबर 18, 19, 20, 27, 28; अक्तूबर 7, 8 अशुभ।

सिंह– कफ–वायुविकार से सेहत खराब रहे। फिजूलखर्ची अधिक हो। निजीजन– सहयोग से उलझे काम बनें। नई योजना से किंवा सन्तानपक्ष से सुखप्रद समाचार मिले। मानसिक शान्ति एवं स्त्रीपक्ष की दृष्टि से यह मास शुभ है। सितंबर 20, 21, 22, 29, 30; अक्तूबर 1, 9, 10, 11 अशुभ।

कन्या– सेहत का ध्यान रखें। यह मास अचानक चोटभयकारक है। कारोबार एवं हिस्सेदारी के व्यवसाय में झगड़े–झंझट पनपेंगे। निजी कारोबार में रद्दोबदल करनी पड़ेगी। जगह–परिवर्तन से लाभ मिले। आय से व्यय अधिक होने से मन चिन्तित रहे। सितंबर 23, 24; अक्तूबर 2, 3, 11, 12 अशुभ।

तुला– सेहत ठीक रहेगी। कर्ज़ा सिर चढ़ने से गुप्त चिन्ता रहे। बन्धुजन–सहयोग रहे। यात्रा सुखकर हो। स्त्रीकष्ट से मन उद्विग्न रहे, शत्रुपक्ष कमज़ोर रहे। पुनरपि, शनि–मंगल–राहु का दान करना श्रेयस्कर रहेगा। सितंबर 16, 17, 25, 26; अक्तूबर 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।

वृश्चिक– राशीश मंगल शनि के साथ होने से कई प्रकार की परेशानियां इस मास में उपस्थित होंगी, लेकिन किसी सत्पुरुष व बन्धुवर्ग की मदद से समस्याओं का हल निकलेगा। अचानक ज़मीन–जायदाद खरीदने व बेचने से लाभ मिलेगा। स्त्रीपक्ष से अपमानभय, सावधान रहें। कारोबार ठीक रहे। सितंबर 18, 19, 20, 27, 28; अक्तूबर 7, 8 अशुभ।

धनु– पेट में कुछ खराबी संभव है। मन–बुद्धि–कर्म सब शुभकार्यों में लगे रहें। अर्थलाभ अच्छा हो। भाई–बन्धु से सुखकारक वातावरण रहे। शत्रु प्रबल होने पर भी दबे रहें। स्त्री–स्वास्थ्य बिगड़े, कारोबार कुछ टीक न चले। सितंबर 20, 21, 22, 29, 30; अक्तूबर 1, 9, 10, 11 अशुभ।

मकर– सेहत ठीक रहे, नई योजनाओं की सफलता से उत्साहवृद्धि हो। नए अच्छे मित्र बनें। पुत्रादि सन्तानपक्ष से चिन्ता रहे। अचानक चिन्ताजनक समाचार से परेशानी पैदा हो। कारोबार ठीक रहे। सितंबर 23, 24; अक्तूबर 2, 3, 11, 12 अशुभ।

कुम्भ— वायुरोग से परेशानी रहे। आर्थिक लाभ होकर हाथ से निकल जाए। मित्र–बन्धुकष्ट, कष्टप्रद यात्रा एवं वृथाखर्च हो। स्त्रीपक्ष शुभ रहे। कार्यान्तर से लाभ की स्थिति बने। कुम्भराशि का स्वामी शनि मंगल के साथ होने से चोटभय है, सावधान रहें। मासान्त में कारोबार से लाभ रहेगा। सितंबर 16, 17, 25, 26; अक्तूबर 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।

मीन— निजीजनों के साथ अनबन रहे। लेकिन शुभकार्यों में लगे रहने से मन ठीक रहे। घरेलू झंझटों से बचें। स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार से अच्छा लाभ मिले। अन्य किसी काम से भी लाभ का योग है। सितंबर 18, 19, 20, 27, 28; अक्तूबर 7, 8 अशुभ।

तुला–संक्रान्ति (16 अक्तूबर से 14 नवम्बर, सन् 2012 ई.)

(रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति— लग्नस्थ उच्च शनि नीचस्थ सूर्य के साथ, बुध एवम् चन्द्रयुत है, जोकि कहीं प्राकृतिक आपदा से हानि का संकेत देता हैं। द्वितीयस्थान में मंगल–राहु प्रमुख देशों में आर्थिक संकट एवं राजनैतिक हिलजुल की सम्भावना बनाते हैं।

कार्तिक मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष— 16 अक्तूबर से 14 नवम्बर तक का समय मेषराशि के लिए राजपक्ष से भय, वृथाव्यय एवं स्थानान्तरण की योजना बनाने वाला है। व्यवसाय में अच्छा लाभ होने पर भी विशेष खर्च की योजना बनेगी। कारोबार में प्रगति की व्यवस्था बनेगी। अक्तूबर 18, 19, 26, 27, 28; नवम्बर 5, 6, 7, 14 अशुभ।

वृष— क्रोध बढ़े। नेत्रकष्ट की सम्भावना है। मित्र–बन्धुवर्ग से सहयोग मिले। स्त्रीपक्ष से सान्त्वना एवं सहयोग का योग है। कारोबार में वृद्धि की योजनाएं आर्थिक संकट के कारण स्थगित करनी पड़ें। अक्तूबर 20, 21, 29, 30, 31; नवम्बर 8, 9 अशुभ।

मिथुन— नई योजनाएं, नए आयाम कार्यान्वित करने का समय है। आर्थिक योजना सहज में फलीभूत होगी और व्यवसाय में वृद्धि का आयोजन सम्भव होगा। मासान्त में विशेष खर्च होने से मन चिन्तातुर होगा। अक्तूबर 22, 23, 31; नवम्बर 1, 2, 10, 11 अशुभ।

कर्क— रक्त–पित्तविकार से शारीरिक परेशानी हो। धनलाभ होकर भी खर्च आय से अधिक हो। बन्धुसुख एवं सन्तानपक्ष से प्रगति के समाचार मिलें। कारोबार में रुकावट एवं सांझेदारी में गड़बड़ी से हानि हो। अक्तूबर 16, 17, 24, 25, 26; नवम्बर 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ।

सिंह— सेहत में बिगाड़, माणिक नग 7 रत्ती धारण करें। आर्थिक स्थिति प्रायः ठीक रहे। स्त्रीपक्ष से सहयोग मिले। नए मित्र–बन्धु की सलाह से नए कार्यक्षेत्र में प्रवेश हो। आय से व्यय अधिक हो एवं राजपक्ष से परेशानी के कारण बनें। ज़मीन–जायदाद– सम्बन्धी झगड़ों को परस्पर बैठक से हल कर लें, अन्यथा लम्बी परेशानी में पड़ जाएंगे। अक्तूबर 18, 19, 26, 27, 28; नवम्बर 5, 6, 7, 14 अशुभ।

कन्या— कफ–वायुविकार से शारीरिक शिथिलता रहे। आय–व्यय प्रायः बराबर रहे। भाई–बन्धु का सहयोग पूर्णरूपेण मिले। स्त्रीपक्ष से चिन्ता एवं कारोबार में रुकावट से परेशानी रहे। किसी अन्य कार्यविशेष से अचानक लाभ हो। अक्तूबर 20, 21, 29, 30, 31; नवम्बर 8, 9 अशुभ।

तुला— कारोबार में अच्छा लाभ होकर खर्च भी अधिक हो। सन्तानपक्ष से शुभ समाचार मिले। उच्चवर्ग के लोगों से सम्पर्क एवं लाभ मिले। दाम्पत्य सुख में वृद्धि एवम् बन्धुवर्ग से लाभ मिले। शत्रु हतप्रभ रहें। अक्तूबर 22, 23, 31; नवम्बर 1, 2, 10, 11 अशुभ।

वृश्चिक— रोगभय, राजपक्ष से परेशानी बने। मित्र–बन्धु से भरपूर सहयोग एवं आर्थिक सहायता मिले। विरोधीपक्ष कमज़ोर पड़े, व्यवसाय में विशेष रद्दोबदल के साथ लाभ प्राप्त हो। वाहन से चोटभय है, सावधान रहें। स्त्रीपक्ष से सुख–शान्ति। अक्तूबर 16, 17, 24, 25, 26; नवम्बर 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ।

धनु— सुख–आर्थिक लाभ हो। कारोबार में गड़बड़ से भारी हानि की सम्भावना। सन्तानपक्ष से चिन्ता, अशुभ समाचार से मन खिन्न रहे, लेकिन परिवार में किसी मांगलिक कार्य से वातावरण बदलेगा। मासान्त में शारीरिक कष्ट से परेशानी। अक्तूबर 18, 19, 26, 27, 28; नवम्बर 5, 6, 7, 14 अशुभ

मकर— मासारम्भ में अर्थलाभ से मन प्रसन्न रहे। शत्रुपक्ष ज़ोर पकड़ेगा। वृथाव्यय हो। मासमध्य में रोगविशेष से परेशानी बने। दाम्पत्य सुख एवं सन्तानपक्ष से शुभ समाचार मिले। मासान्त में शुभकार्य में व्यय हो। अक्तूबर 20, 21, 29, 30, 31; नवम्बर 8, 9 अशुभ।

कुम्भ– विरोधीपक्ष कमज़ोर हो। आकस्मिक धनप्राप्ति का योग है। गुप्त शत्रु से धनहानिभय है। सम्पत्तिसम्बन्धी विवाद सुलझेंगे। मित्र–बन्धु का सहयोग प्राप्त होगा। दाम्पत्य सुख ठीक रहे। कारोबार में वृद्धि हो। अक्तूबर 22, 23, 31; नवम्बर 1, 2, 10, 11 अशुभ।

मीन– कारोबार में हानि एवं कर्जा सिर चढ़े। मित्र–बन्धु से सद्भाव–सहयोग रहे। सन्तानपक्ष से खुशी का समाचार मिले। स्त्रीकष्ट एवं गुप्त शत्रु से भय रहे। कारोबार किंवा सट्टे के व्यापार में हानिभय। चोर–उच्चकों से सावधान रहें। अक्तूबर 16, 17, 24, 25, 26; नवम्बर 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ।

वृश्चिक–संक्रान्ति (15 नवम्बर, से 14 दिसम्बर, सन् 2012 ई.)

(तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– लग्न में नीचस्थ चन्द्र के साथ सूर्य, राहु एवं बुध की स्थिति तथा शनि की मंगल पर विशेष दृष्टि राजनीति में किसी संकटापन्न स्थिति को जन्म देती है। 15 नवम्बर से 14 दिसम्बर के मध्य ऐतिहासिक घटना घटे। होगी। किसी प्रमुख राजनेता का पदरिक्त हो।

मार्गशीर्ष मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– सेहत खराब एवम् मानसिक चिन्ता रहेगी। मित्र–बन्धु का सहयोग मानसिक परेशानी को दूर करे। लक्ष्यप्राप्ति के लिए संघर्ष व परिश्रम अपेक्षित है। वाहन के क्रय–विक्रय में हानि रहे। नवम्बर 15, 23, 24; दिसम्बर 3, 4, 12, 13 अशुभ।

वृष– धन का अपव्यय हो, लेकिन उलझे काम बनेंगे। सेहत ठीक रहे। वाहन से चोटभय है। निजीजनों से अनबन रहे। सम्पत्तिलाभ के योग हैं। कारोबार ठीक रहे। नवम्बर 16, 17, 25, 26, 27; दिसम्बर 5, 6, 7, 14 अशुभ।

मिथुन– सेहत ठीक, कारोबार में लाभ होकर भी कर्जा सिर चढ़े। सन्तानपक्ष से शुभ समाचार मिले। मासान्त में आय से व्यय अधिक रहे। विदेशसम्बन्धी कार्यों में प्रगति हो। नवम्बर 18, 19, 20, 28, 29; दिसम्बर 7, 8, 9 अशुभ।

कर्क– राशि का स्वामी चन्द्र नीचस्थ है। मन अशान्त रहेगा। कारोबार एवम् आर्थिक चिन्ता बनी रहेगी। शनि की मंगल पर विशेष दृष्टि राजकीय क्षेत्र एवम् मित्र–बन्धुवर्ग से तनाव की स्थिति बनाती है। शनि–मंगल का दान करें। नवम्बर 20, 21, 22, 30; दिसम्बर 1, 10, 11 अशुभ।

सिंह– सेहत ठीक रहेगी। फिजूलखर्ची अधिक होगी। भाई–बन्धु से मदद मिले। सन्तानपक्ष से चिन्ता रहे। स्त्री–सहयोग बना रहे। नए काम से लाभ की स्थिति बने। नवम्बर 15, 23, 24; दिसम्बर 3, 4, 12, 13 अशुभ।

कन्या– नीच शुक्र एवं शनि की दृष्टिविचार से यह मास उलझनपूर्ण रहेगा, लेकिन आर्थिक स्थिति कुछ सुलझेगी। यात्रा में कष्ट की सम्भावना है। कार्यान्तर से लाभ होगा। मासान्त में मनोरंजन एवं शुभकार्यों में खर्च हो। नवम्बर 16, 17, 25, 26, 27; दिसम्बर 5, 6, 7, 14 अशुभ।

तुला– अचानक रोग व कष्टभय बने। मासमध्य में मित्र–बन्धुकष्ट, यात्रा में धनहानियोग है। वृथाकलह से बचें। गुप्त शत्रु से भय है, सावधान रहें। अशुभकार्य में खर्च हो। नवम्बर 18, 19, 20, 28, 29; दिसम्बर 7, 8, 9 अशुभ।

वृश्चिक– लग्नेश मंगल गुरु के क्षेत्र में एवम् बुध का राहु, चन्द्र एवम् सूर्य के साथ मेल उलझनपूर्ण स्थिति बनाता है। मित्र–बन्धु का परामर्श लाभप्रद रहेगा। सन्तानपक्ष से खुशी एवं स्त्री–स्वास्थ्य की चिन्ता रहे। कारोबार ठीक, मासान्त शुभ रहे। नवम्बर 20, 21, 22, 30; दिसम्बर 1, 10, 11 अशुभ।

धनु– धनुःस्थ मंगल एवं कर्कराशि पर मंगल की नीच दृष्टि क्रोध को बढ़ावा देगी। ब्लडप्रैशर से सेहत बिगड़ेगी, लेकिन शत्रुपक्ष कमज़ोर रहे। कारोबार में रद्दोबदल करना पड़े। ज़मीन–जायदाद से सम्बन्धित मसले को शान्तिपूर्ण ढंग से निपटा दें। नवम्बर 15, 23, 24; दिसम्बर 3, 4, 12, 13 अशुभ।

मकर– सुखलाभ, धनप्राप्ति के योग बनेंगे। मित्र–बन्धुवर्ग से कहा–सुनी होने से परेशानी बढ़े। कारोबार में प्रगति के लक्षण नज़र आएं। मासान्त में आय–व्यय बराबर रहे। सेहत की दृष्टि से यह मास बढ़िया नहीं। नवम्बर 16, 17, 25, 26, 27; दिसम्बर 5, 6, 7, 14 अशुभ।

कुम्भ– राजकीय कार्यों में सफलता मिले। विरोधीपक्ष कमज़ोर रहे, लेकिन व्यय अधिक हो। कारोबार में विशेष प्रगति एवं लक्ष्यप्राप्ति सहज मालूम दे। मासान्त में विशेष खर्च आ पड़े। लग्नेश शनि उच्चस्थ होने से स्थायी सम्पत्ति–लाभ संभव है। नवम्बर 18, 19, 20, 28, 29; दिसम्बर 7, 8, 9 अशुभ।

मीन– लग्नेश गुरु शत्रुक्षेत्र में है। शनि की मेषराशि पर नीच दृष्टि

परेशानी पैदा करेगी। सरकारी झगड़े बढ़ेंगे। फिजूलखर्ची अधिक होगी। भाई–बन्धु से मदद व सहानुभूति मिले। अचानक अशुभ समाचार से मन परेशान हो। मासान्त में अच्छा लाभ हो। नवम्बर 20, 21, 22, 30; दिसम्बर 1, 10, 11 अशुभ।

धनु–संक्रान्ति (15 दिसम्बर, 2012 से 12 जनवरी, सन् 2013 ई.)

(ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, ढ, भे)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– धनुःस्थ सूर्य एवं मंगल पर शनि की विशेष दृष्टि राजनीति के क्षेत्र में उठा–पटक करने वाली है। शुक्र, राहु, बुध का गुरु–केतु के साथ समसप्तकयोग भी बहुप्रतिष्ठित राजनीतिज्ञों के लिए दिसं., 2012 ई. एवम् जनवरी, 2013 ई. से आगे शुभ नहीं।

पौष मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– राजपक्ष से भय रहे, वाहन व शत्रुपक्ष से परेशानी व कष्टभय है। वृथाव्यय अधिक हो। स्त्रीपक्ष व गुप्त शत्रुजन्य परेशानी से सावधान रहें। कारोबार ठप्प हो। मासान्त में किसी की मदद से कुछ राहत मिले। दिसम्बर 20, 21, 30, 31; जनवरी (2013 ई.) 1, 8, 9 अशुभ।

वृष– वायुविकार से शरीरकष्ट रहे। आय से व्यय अधिक हो। शत्रु बढ़ें, निजीजनों से असहयोग रहे। कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार बने। अचानक पारिवारिक परेशानी व दुःखद समाचार मिले। अपना आचरण ठीक रखें, अपमानभय है। दिसम्बर 15, 22, 23, 24; जनवरी (2013 ई.) 1, 2, 3, 10, 11 अशुभ।

मिथुन– कफ–वायुविकार से शरीरकष्ट रहे। धनलाभ होकर हाथ से निकले। शेयर बाज़ार के कार्य से सावधान, हानिभय है। सम्पत्तिसम्बन्धी विवाद उलझें। स्त्रीपक्ष से आर्थिक सहयोग मिले। कारोबार रुक–रुककर चले, मासान्त में लाभ। दिसम्बर 16, 17, 25, 26, 27; जनवरी (2013 ई.) 4, 5, 12, 13 अशुभ।

कर्क– लग्नेश चन्द्र शत्रुक्षेत्र में है, बृहस्पति भी शत्रुक्षेत्रस्थ है। अतः शारीरिक कष्ट होने पर भी मनोबल ऊंचा रहे। कारोबार ठीक, विरोधीपक्ष कमज़ोर पड़े। भाई–बन्धु का सहयोग मिले। जमीन–जायदाद–सम्बन्धी प्रॉपर्टी लाभ हो। दिसम्बर 18, 19, 28, 29; जनवरी (2013 ई.) 6, 7 अशुभ।

सिंह– लग्नेश सूर्य मंगल के साथ धनुःस्थ है; सेहत ठीक रहेगी; आर्थिक लाभ, कारोबारी पोज़ीशन ठीक रहेगी। आकस्मिक दुःखद घटना से परेशानी बढ़े। नई कार्यप्रणाली की योजना से लाभ मिले। मित्र–बन्धु का सहयोग बना रहे। दिसम्बर 20, 21, 30, 31; जनवरी (2013 ई.) 1, 8, 9 अशुभ।

कन्या– कष्ट–रोगभय एवं आर्थिक परेशानी रहे। भ्रातृसुख रहे। विद्या में सफलता, सन्तानपक्ष से खुशी मिले। विरोधीपक्ष नए षडयन्त्र बनाएं। स्त्रीपक्ष से सहयोग रहे। कारोबार कुछ ठीक रहे। दिसम्बर 15, 22, 23, 24; जनवरी (2013 ई.) 1, 2, 3, 10, 11 अशुभ।

तुला– सन्तानपक्ष से कष्ट एवं सन्तानार्थ विशेष व्यय हो। सेहत ठीक रहे। कारोबार में विशेष परिस्थितिवश रुकावट आए। शत्रुपक्ष प्रबल हो। स्त्री एवं बन्धुवर्ग की मदद से मनोबल बना रहे। राजपक्ष से उलझनें बनें। दिसम्बर 16, 17, 25, 26, 27; जनवरी (2013 ई.) 4, 5, 12, 13 अशुभ।

वृश्चिक– लग्नेश पर शनि की दृष्टि है। विरोधीवर्ग घरेलू एवं सरकारी उलझनों में फंसा सकता है, अतः वृथा–कलह से दूर रहें। निजीलोगों से अनबन रहे। स्त्री एवं अपनी सेहत हेतु खर्च विशेष हो। कारोबार में लाभ मिले। दिसम्बर 18, 19, 28, 29; जनवरी (2013 ई.) 6, 7 अशुभ।

धनु– इस मास में घरेलू विवाद सिरदर्द बनेंगे। निजीलोगों से अनबन रहे। बन्धुवर्ग की मध्यस्थता ठीक रहेगी। सन्तानपक्ष से कुछ परेशानी का सबब बने। अचानक धनलाभ का योग बनेगा। जमीन–जायदाद विषयक सौदा सावधानी से करें। दिसम्बर 20, 21, 30, 31; जनवरी (2013 ई.) 1, 8, 9 अशुभ।

मकर– धनहानिभय है। चोर–उचक्कों से सावधान रहें। सेहत प्रायः ठीक रहेगी। विद्यार्थीवर्ग के लिए समय अनुकूल है। कारोबार से लाभ की स्थिति बनती है। यात्रा में कष्ट, लेकिन नए मित्रों से मेल–जोल बढ़ेगा। दिसम्बर 15, 22, 23, 24; जनवरी (2013 ई.) 1, 2, 3, 10, 11 अशुभ।

कुम्भ– दिसंबर के लगभग विदेश–सम्बन्धी बातचीत में प्रगति होगी, लेकिन अचानक अर्थहानि व वृथाव्यय से सावधान रहें। कारोबार में अच्छी प्रगति नज़र आएगी, खर्च भी बढ़ेगा। कुछ निजीलोगों की नाराज़गी झेलनी पड़ेगी। मासमध्य में मानसिक तनाव एवं घरेलू उलझनें बढ़ेंगी, मासान्त ठीक रहे। दिसम्बर 16, 17, 25, 26, 27; जनवरी (2013 ई.) 4, 5, 12, 13 अशुभ।

मीन– राजपक्ष से भय है, शत्रुपक्ष से सावधान रहें। ब्लडप्रैशर व क्रोध से बचें। शनि–मंगल का दान–विधान करा दें। निजीजनसहयोग मिले। विद्या में सफलता एवं सन्तानपक्ष से शुभ समाचार मिले। कारोबार ठीक रहे। दिसम्बर 18, 19, 28, 29; जनवरी (2013 ई.) 6, 7 अशुभ।

मकरसंक्रान्ति (13 जनवरी, से 11 फरवरी, सन् 2013 ई.)

(भो, जा, जी, जू, जे, जो, खा, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– मंगल सूर्य के साथ है और इन पर गुरु की विशेष दृष्टि है। तुलाराशि के शनि–राहु मुस्लिम–राष्ट्रों के लिए नेष्टफलप्रद हैं। भारत की प्रभावराशि मकर का मालिक शनि उच्च है एवं लग्नस्थ मंगल भी उच्च है। स्पष्ट है कि– केन्द्रीय शासनतन्त्र को विरोधी राजनैतिक दलों से सुलझना कठिन होगा एवम् सत्तापरीक्षण को लक्ष्य लेकर चल रहे दल अपने–अपने प्रभावक्षेत्र को बढ़ाएंगे।

माघ मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– उदरविकार रहे, ब्लडप्रैशर किंवा शूगर से परेशानी बने। वृथाव्यय हो एवं घरेलू झंझट बढ़ें। सन्तानपक्ष से मनोबल बढ़े। कारोबार में तरक्की किंवा नए कारोबार से लाभ मिले। ज़मीन–जायदाद से सम्बन्धित मुकद्दमे में गुप्त शत्रु से भय है, सावधान रहें। जनवरी 16, 17, 18, 26, 27, 28; फरवरी 4, 5, 6 अशुभ।

वृष– स्थायी सम्पत्तिसम्बन्धी विवाद सुलझेंगे। भ्रातृपक्ष की नाराज़गी सहन करनी पड़े। उच्च शनि राहु के साथ होने से संघर्षपूर्ण परिस्थिति में भी व्यवसाय में लाभ किंवा पदोन्नति के योग हैं। मास के उत्तरार्ध में मान–सम्मान में वृद्धि एवं सुख–सुविधा के लिए खर्च हो। जनवरी 19, 20, 29, 30; फरवरी 7, 8 अशुभ।

मिथुन– कारोबार ठीक रहे, अर्थलाभ होकर हानि हो। भाई–बन्धु का सहयोग मिले। यात्रा में सुख एवम् सन्तानपक्ष से चिन्ता रहे। अधिकांश समय मनोरंजन एवं निरर्थक कार्यों में व्यतीत होगा। मासान्त में विरोधीपक्ष प्रबल हो। स्थायी सम्पत्तिलाभ हो। जनवरी 21 22 23 31; फरवरी 1, 9, 10 अशुभ।

कर्क– प्रारम्भिक दिनों में (3 जन. से) योजनाओं में कुछ सफलता रहे। धनलाभ के अच्छे आसार बनेंगे। परिवार में मांगलिक कार्यों से उत्साह रहे। कारोबार ठीक, विदेशयात्रा संभव है। जनवरी 14, 15, 24, 25; फरवरी 2, 3, 4, 11 अशुभ।

सिंह– कुछ परेशानी वाला वातावरण बनने से मन अशान्त हो। अकस्मात् लाभ की स्थिति बने। सम्पत्ति के लिए निजीलोगों से अनबन सम्भव है। शत्रु कमज़ोर रहेंगे। कार्यान्तर व नई योजना से लाभ संभव है। जनवरी 16, 17, 18, 26, 27, 28; फरवरी 4, 5, 6 अशुभ।

कन्या– सेहत ठीक रहे। बनते कार्यों में रुकावट एवं व्यर्थ की व्यस्तता रहे। निजीजन–विरोध रहे। अचानक कष्ट की सम्भावना, वृथाव्यय हो। धर्म–कर्म में रुचि बढ़े। कारोबार में रद्दोबदल करना पड़े। बुध–राहु का मन्त्रजाप एवं दान करें। जनवरी 19, 20, 29, 30; फरवरी 7, 8 अशुभ।

तुला– अचानक संकट का सामना करना पड़े। स्त्रीकष्ट किंवा गुप्त शत्रु से भय रहे। स्थिर सम्पत्ति का विवाद ज़ोर पकड़े। मासान्त में समस्याओं का समाधान मध्यस्थता से सम्भव होगा। कारोबार में लाभ हो। हनुमान्–चालीसा का पाठ करें। जनवरी 21 22 23 31; फरवरी 1, 9, 10 अशुभ।

वृश्चिक– सेहत ठीक रहे। निजीलोगों से अनबन रहे। नई योजना में सफलता मिले। अचानक अर्थलाभ हो। कारोबार में विशेष रद्दोबदल हो। शुभकार्य में व्यय हो। नए कार्य की योजना एवं साझेदारी का प्रपोज़ल लाभप्रद रहेगा। जनवरी 14, 15, 24, 25; फरवरी 2, 3, 4, 11 अशुभ।

धनु– आय से व्यय अधिक हो। कफविकार से शरीरकष्ट हो। भाई–बन्धु से मेल–मुलाकात हो। कारोबार में अच्छी तरक्की से लाभ मिले। यात्रा सुखद रहे। विदेश यात्रा के अवसर मिलें। चोर–उचक्कों से सावधान रहें। जनवरी 16, 17, 18, 26, 27, 28; फरवरी 4, 5, 6 अशुभ।

मकर– लग्नेश शनि राहु के साथ है। पारिवारिक उलझनें एवं स्थिर सम्पदा–सम्बन्धी विवाद उग्र हो सकते हैं। चोट व वृथाकलह से बचें। मित्र–बन्धु का परामर्श एवं सहयोग मिलेगा। सन्तानपक्ष से चिन्ता रहे। मंगल–शनि की पोज़ीशन स्वभाव में तेज़ी एवं व्यर्थ की दौड़–धूप से परेशानी करे। सुन्दरकाण्ड एवं हनुमान्–चालीसा का पाठ करना श्रेयस्कर रहेगा। जनवरी 19, 20, 29, 30; फरवरी 7, 8 अशुभ।

कुम्भ– उच्चस्थ मंगल सूर्य के साथ है। कुम्भ–राशीश शनि का राहु के साथ मेल है। अग्नि, जल व बिजली से सावधान रहें। प्रियबन्धु से मेलजोल, धनलाभ एवं विदेशयात्रा के योग बनते हैं। आय से व्यय अधिक हो। जनवरी 21, 22, 23, 31; फरवरी 1, 9, 10 अशुभ।

कर्क— प्रारम्भिक दिनों में (3 जन. से) योजनाओं में कुछ सफलता रहे। फरवरी 1, 9, 10 अशुभ।

मीन— लग्नेश गुरु शत्रुक्षेत्र में है। लाभेश शनि उच्च है, मंगल लाभस्थ उच्च है। अच्छी धनधान्य-समृद्धि रहेगी। कुछ रिश्तेदार गुप्तरूप से विरोधी ग्रुप के सहयोगी रहेंगे। सन्तानपक्ष से, विद्या में एवं नई योजना से हानि सम्भव है। स्त्रीपक्ष से सहायता मिले। उत्साह बना रहे। जनवरी 14, 15, 24, 25; फरवरी 2, 3, 4, 11 अशुभ।

कुम्भसंक्रान्ति (12 फरवरी से 13 मार्च, सन् 2013 ई.)

(गु, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, द)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति— फाल्गुन मास में 12 फरवरी से 13 मार्च, सन् 2013 ई. तक की ग्रहस्थिति के अनुसार कुम्भस्थ मंगल-सूर्य-बुध-चन्द्र की शनि-राहु के साथ नवम-पंचमस्थिति कहीं प्राकृतिक आपदा को आमन्त्रित करती है। भूकम्प आदि से जनधनहानि हो। राजनैतिक शक्तिपरीक्षण से केन्द्रीय शासन-सत्ता में आश्चर्यजनक रद्दोबदल का संकेत भी मिलता है।

फाल्गुन मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष— फरवरी-मध्य से लगभग मार्चमध्य तक राजपक्ष से भय एवं मानसिक अशान्ति का योग है। आय के साधन कुछ क्षीण रहेंगे। मासमध्य में ज़मीन-जायदाद- सम्बन्धित कार्य बनेंगे। क्रोध अधिक रहे। निजीलोगों से अनबन रहे। फरवरी 13, 14, 23, 24; मार्च 4, 5, 12, 13 अशुभ।

वृष— राशिस्वामी शुक्र मकर (मित्रक्षेत्र) में गुरु की दृष्टि में है। सेहत ठीक रहे। बनते कार्यों में रुकावट, वृथाव्यय से मन अशान्त रहे। कारोबार ठीक चले, लेकिन मासान्त में कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। आय से व्यय अधिक हो। फरवरी 15, 16, 17, 25, 26; मार्च 6, 7 अशुभ।

मिथुन— राशीश बुध क्षीण है, आमदन के साधन ठीक होने पर भी धनसंचय न हो सके, गुज़ारा ही चले। मित्र-बन्धु से सुख, सन्तानसम्बन्धित चिन्ता एवं व्यर्थ की भाग-दौड़ बनी रहे। विदेश से लाभयोग बनते हैं। स्त्री एवं पुत्रपक्ष से सुख मिले। फरवरी 18, 19, 27, 28; मार्च 1, 8, 9 अशुभ।

कर्क— सेहत ठीक रहे। कर्जा सिर चढ़े। भाई-बन्धु से सहयोग मिले। स्त्री एवं सन्तानपक्ष से चिन्ता, शत्रु बढ़ें। कारोबार में रद्दोबदल हो। मासान्त में आय से खर्च अधिक हो। वृथाविवाद से दूर रहें। फरवरी 12, 20, 21, 22; मार्च 2, 3, 10, 11 अशुभ।

सिंह— सूर्य का मंगल, बुध एवम् चन्द्र के साथ शनि के क्षेत्र में एकराशिसम्बन्ध होने से सेहत में गड़बड़ी, वृथाव्यय, घरेलू झगड़े-झंझट रहेंगे। मासान्त में अचानक धनलाभ एवं बिगड़े कार्य बनेंगे। फरवरी 13, 14, 23, 24; मार्च 4, 5, 12, 13 अशुभ।

कन्या— राशिस्वामी बुध क्षीण है। सेहत गड़बड़ रहे। दाम्पत्य जीवन में सुखद वातावरण रहे। आर्थिक स्थिति कमज़ोर रहेगी। स्थायी सम्पत्ति-विवाद परेशानी का कारण बने। नौकरी या व्यवसाय में कुछ परिवर्तन की सम्भावना बने। फरवरी 15, 16, 17, 25, 26; मार्च 6, 7 अशुभ।

तुला— राशीश शुक्र शनि(मित्र)क्षेत्र में होने से शुभ है। सेहत ठीक रहे। कारोबार में तबदीली से आर्थिक लाभ हो। निजीजनों से अनबन हो, स्त्रीपक्ष से चिन्ता एवं सन्तानपक्ष से शुभ समाचार मिले। फरवरी 18, 19, 27, 28; मार्च 1, 8, 9 अशुभ।

वृश्चिक— नेत्र व सिरपीड़ा हो। आय से व्यय अधिक रहे। भाई-बन्धु से सुख मिले। विद्या में सफलता एवं नई योजना से लाभ मिले। गुप्त शत्रु से सावधान रहें। शुभकार्य में व्यय एवं मांगलिक कार्य हों। फरवरी 12, 20, 21, 22; मार्च 2, 3, 10, 11 अशुभ।

धनु— राशि का स्वामी गुरु शत्रुक्षेत्रस्थ होने से शुभकार्यों एवं प्रगतिप्रद योजनाओं में बाधा डाले। शनि-राहु की पोज़ीशन जातक को क्रोधी एवं कुछ निजीलोगों से अनबन कराएगी। कारोबार कुछ ठीक एवम् आय-व्यय ठीक-ठीक रहे। फरवरी 13, 14, 23, 24; मार्च 4, 5, 12, 13 अशुभ।

मकर— शनि-शुक्र का राशिवैपर्यय शुभ है। नई-नई योजनाएं, शुभकार्यों का आयोजन एवं कारोबार में वृद्धि हो। उत्साह बना रहे। दाम्पत्य सुख किंवा कारोबारी हालात सुधरें। मित्र-बन्धुकष्ट से परेशानी हो। धर्म-कर्म में मन लगे। फरवरी 15, 16, 17, 25, 26; मार्च 6, 7 अशुभ।

कुम्भ— रक्त-पित्तविकार से परेशानी रहे। धनलाभ हो। गुप्त शत्रु से भय है। सन्तान एवं स्त्रीपक्ष चिन्ता का कारण बने। आय से व्यय अधिक हो। अचल सम्पत्ति-सम्बन्धित विवाद उलझेंगे। फरवरी 18, 19, 27, 28; मार्च 1, 8, 9 अशुभ।

मीन— कफ-वायुविकार से परेशानी। त्वचारोग भी परेशान करे। घोर आर्थिक संकट; निजीजनों से अनबन, सन्तानपक्ष से खुशी एवं दाम्पत्य जीवन में सुखप्रद वातावरण रहे। कारोबार में रुकावट व रद्दोबदल हो। फरवरी 12, 20, 21, 22; मार्च 2, 3, 10, 11 अशुभ।

मीनसंक्रान्ति (14 मार्च से 12 अप्रैल, सन् 2013 ई.)

(दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– मंगल–सूर्य मीनस्थ हैं। मीन राशीश गुरु शत्रुक्षेत्र में तृतीयभावस्थ है। लग्नस्थ मंगल की अष्टम भावस्थ शनि एवं राहु पर विशेष दृष्टि है। मुस्लिम राष्ट्र–विशेष में हत्याकाण्ड होंगे। कहीं प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन व हत्या का शोकसमाचार मिलेगा। राजनैतिक हिलजुल हो एवं 14 मार्च से 12 अप्रैल के मध्य किसी राष्ट्रविशेष में सत्ताहस्तान्तरण का योग भी बनता है।

चैत्र मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– मासारम्भ में कार्यों में सहज सफलता मिलेगी। स्थानान्तरण का योग है। अकस्मात् धनहानि एवं वृथाव्यय के योग बनते है। शत्रु बढ़ेंगे, वायुरोग से शरीरकष्ट रहे। कारोबार में बिगाड़ हो एवम् मासान्त में मित्र–बन्धु की मदद से राहत मिले। मार्च 14, 22, 23, 31; अप्रैल 1, 8, 9, 10 अशुभ।

वृष– राशीश शुक्र मित्रक्षेत्री होने से शारीरिक स्वास्थ्य ठीक रहेगा। गुप्त चिन्ता रहे। गृहस्थ किंवा दाम्पत्य सुख में अकस्मात् परेशानी से चिन्ता रहे। कारोबार एवम् आर्थिक स्थिति प्रायः ठीक रहेगी। मासान्त में राजभय से मुक्ति के लिए विशेष खर्च करना पड़े। मार्च 14, 15, 16, 24, 25, 26; अप्रैल 2, 3 अशुभ।

मिथुन– राशीश बुध शनि के क्षेत्र में शुक्र के साथ है। सेहत ठीक रहे, गृहस्थजीवन में कुछ आपसी अनबन से मन परेशान रहे। कारोबार में सुधार की नई योजना कार्यान्वित हो। सन्तानपक्ष से खुशी मिले। विरोधीवर्ग कमज़ोर, आय ठीक रहे। मार्च 17, 18, 19, 27, 28; अप्रैल 4, 5 अशुभ।

कर्क– लग्नेश चन्द्र केतु के साथ शनि–राहु की दृष्टि में है। मन की चिन्ता एवं गुप्त शत्रु से भय रहे। सन्तान हेतु विशेष खर्च हो, स्त्री–स्वास्थ्य बिगड़े। कारोबार में पार्टनरशिप से राहत मिले। मार्च 20, 21, 29, 30; अप्रैल 6, 7, 8 अशुभ।

सिंह– सेहत ठीक, घरेलू झंझट बढ़ें, निजीलोगों से अनबन रहे। दाम्पत्य सुख एवं सन्तानपक्ष शुभ रहे। विरोधीपक्ष से परेशानी, आर्थिक संकट भी रहे। मार्च 14, 22, 23, 31; अप्रैल 1, 8, 9, 10 अंशुभ।

कन्या– विरोधी हतप्रभ, उत्साह बढ़े, सम्पत्तिलाभ एवं कारोबार में रद्दोबदल से लाभ रहे। मासान्त में शुभ समाचार मिले एवं मांगलिक कार्य हों। मार्च 14, 15, 16, 24, 25, 26; अप्रैल 2, 3 अशुभ।

तुला– राहु–शनि की तुला में स्थिति एवम् मंगल की इन पर दृष्टि क्रोध, मानसिक उलझनें एवम् शत्रुवर्ग से परेशानी बनाती है, फिर भी मित्र–बन्धु की मदद एवम् आर्थिक बल से शत्रु हतप्रभ होंगे। कारोबार ठीक एवम् मासान्त शुभ रहे। मार्च 17, 18, 19, 27, 28; अप्रैल 4, 5 अशुभ।

वृश्चिक– रोगविशेष से विशेष कष्टयोग है, सावधान रहें। बन्धु, स्त्री एवम् पुत्र से सहयोग मिले। कारोबार प्रायः ठीक रहे। धर्म–कर्म में मन लगे। सुदूरस्थित बन्धुवर्ग से भी लाभ हो। मासान्त में मांगलिक कार्य एवं सुख–साधनों में वृद्धि हो। मार्च 20, 21, 29, 30; अप्रैल 6, 7, 8 अशुभ।

धनु– शारीरिक स्वास्थ्य ठीक, आकस्मिक धनप्राप्ति का योग है। भाई–बन्धु से सम्पत्तिसम्बन्धी विवाद बढ़े। विरोधी ग्रुप बढ़ें। दाम्पत्य सुख पूर्ण है। कारोबार पूर्ववत्। मार्च 14, 22, 23, 31; अप्रैल 1, 8, 9, 10 अशुभ।

मकर– राशीश शनि का राहु के साथ मेल कारोबार में विशेष उथल–पुथल करे एवं आर्थिक लाभ होकर हाथ से निकले। अच्छे लोगों से मेल, सन्तानपक्ष से शुभ समाचार मिले। विदेशयात्रा का कार्यक्रम भी लाभप्रद रहे। मार्च 14, 15, 16, 24, 25, 26; अप्रैल 2, 3 अशुभ।

कुम्भ– रक्त–पित्तविकार, कारोबार में हानि, लेकिन बन्धु से मदद मिले। विदेशयात्रा से लाभ हो। नेत्र व शिरोवेदना से परेशानी, वृथाव्यय, स्थिर सम्पत्तिसुख हो। मार्च 17, 18, 19, 27, 28; अप्रैल 4, 5 अशुभ।

मीन– शत्रुपक्ष कमज़ोर, नेत्रकष्ट, अर्थलाभ होकर हानि हो। निजीजन–कष्ट, अच्छे लोगों से मेल, पुत्र व दाम्पत्य सुख शुभ है। मासान्त में विशेष खर्च एवं राजपक्ष से चिन्ता बने। मार्च 20, 21, 29, 30; अप्रैल 6, 7, 8 अशुभ।

अथ वर्षराजादि–फलविचार (संवत् २०६६ वि.)

(सन् २०१२–१३ ई. की ग्रहपरिषद् का विवरण)

कल्पादि से गत वर्ष १९७२९४९११३, सृष्टि संवत् १९५५८८५११३, श्रीविक्रम संवत् २०६९, शक संवत् १९३४, श्रीकृष्ण-जन्म संवत् ५२४८, कलि-संवत् ५११३, सप्तर्षि-संवत् ५०८८, श्रीजैन महावीर निर्वाण संवत् २५३७-३८, श्रीबुद्ध संवत् २६३५-३६, हिजरी सन् १४३३-३४, फसली सन् १४१९-२०, ईस्वी सन् २०१२-१३ ।

वर्षारम्भ में गुरुमान से विष्णुविंशति का 'विश्वावसु' नामक संवत्सर है। इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है-

" अब्दे विश्वावसौ शश्वद्–घोर–रोगाकुला–धरा।
सस्यार्घ–वृष्ट्यो मध्या भूपाला नाति–भूतयः।।"

अर्थात्– 'विश्वावसु' नामक संवत्सर में विश्व में भयंकर रोगों से जनता परेशान रहे, वर्षा मध्यम एवं अन्न (चावल, गेहूं, जौ, ज्वार एवं दालवाना) की उपज भी मध्यम रहे। शासकवर्ग धनसंचय (कर–वसूली) अधिक न कर सके। अर्थात् देश में आर्थिक संकट अनुभव हो।

लेकिन 'मेघ महोदय' में 'विश्वावसु' नामक संवत्सर का फल उपरोक्त फल से कुछ हटकर इसप्रकार लिखा है –

" सर्वत्र जायते क्षेमं सर्व–सस्य–महर्घता।
निष्पत्तिः सर्व–सस्यानां वृष्टिश्च प्रबला पुनः।।
विश्वावसौ सुवृष्टिश्च काष्ठलौह–महर्घता।"

अर्थात् – प्रजा में कल्याण, सभी अनाज तेज़, वर्षा प्रबल हो। अनाजों की फसल अच्छी हो। काष्ठ एवं धातुओं से निर्मित वस्तुएं महंगी हों।

किञ्च–" विश्वावसु वत्सरे राहुः स्वामी, वर्षा समता परं अन्नमहर्घता, चैत्रे राज्ञां विरोधः, धान्यं महर्घम्, वैशाखे मण्डप–दुर्गे विग्रहः। मरु–देशे दुर्भिक्षम्, पश्चिमायामन्नं समर्घम्, ज्येष्ठे विग्रहोऽन्नस्य ४५ फदियानाणकैरेका कलशिका, आषाढ़ेऽल्पमेघः, श्रावणे–भाद्रपदे च दुर्भिक्षम्, ५५ फदियानाणकैरेका कण–कलशिका, अन्यत्र देशे सुभिक्षम्, आश्विने लोकपीड़ा, रोग–बाहुल्यम्, गो–महिष–घोटकाजामहर्घता, सुवर्णादि–धातुमहर्घता, कार्तिकादि मासत्रये समर्घता।।"

इस संवत् का राजा (ग्रहपरिषद के प्रधान) शुक्र, मन्त्री शुक्र, सस्येश (चौमासी फसलों के स्वामी) चन्द्र, धान्येश (शीतकालीन फसलों के स्वामी) शनि, मेघेश (मौसम, वर्षा–पानी के स्वामी) गुरु, रसेश (गुड़–खाण्ड, रसकस आदि के स्वामी) मंगल, नीरसेश (सर्वविध धातु आदि व्यापार के स्वामी) सूर्य, फलेश (फल–फूल आदि के स्वामी) गुरु, धनेश (धन–दौलत एवं खजाना के स्वामी) सूर्य एवं दुर्गेश (सुरक्षा एवं प्रतिरक्षा के स्वामी) गुरु हैं।

संवत् २०६९ वि. के उल्लिखित पदाधिकारियों का फल इस प्रकार है –

(१) संवत्सर २०६९ वि. के राजा शुक्र का फल–

"शुक्रस्य राज्ये बहुसस्य–संकुला सुतीव्रवेगाः सरितोऽबुराशिभिः।
फलन्ति वृक्षा बहु–गो–प्रसूतिर्वसुन्धरा पार्थिव–सौख्य–संयुता।।"

अर्थात्– शुक्र के संवत्सराधिपति होने पर (सर्वविध) अन्न की उपज अधिक हो, वर्षा अधिक होने से नदियां परिपूर्ण जल से तीव्र प्रवाह से चलेंगी। फलों से वृक्ष लदे रहें, गोधन अधिक हो, शासक लोगों में परस्पर स्नेह–सौख्य बना रहे।

(२) मन्त्री शुक्र का फल–

"भृगुसुते ननु मन्त्रिपदं गते शलभ–मूषक–रावथ–माहिषैः।
भवति धान्य–महर्घतया भयं जनपदेषु जलं सरितोऽधिकम्।।"

अर्थात्– शुक्र के मन्त्रिपद पर होने से इसवर्ष कीट–पतंग (टिड्डीदल), मूषक(चूहे), जंगली सूअर एवं अन्य वन्यजीवों (भैंसे) आदि से खड़ी फसलों को हानि हो, अनाजों (चावलादि) में भारी तेज़ी आने का भय रहे एवं अनेकत्र अधिकवर्षा से

नदियों में बाढ़ का भी भय रहे।

(३) सस्येश चन्द्र का फल-

"सस्याधिपे शीतकरे प्रजासुखं मेघः पयो मुञ्चति गोप–गोधुक्।
देव–द्विजाराधन–तत्परा नृपाः धरा भवेद्धान्य–धनौघ–पूर्णा।।"

अर्थात्– सस्येश चन्द्र होने पर प्रजा सुखी रहे, वर्षा पर्याप्त हो। गोपालन से गाएं खूब दूध दें। शासक वर्ग में देव–द्विज के लिए श्रद्धाभाव रहे। पृथ्वी पर धन–धान्यसमृद्धि रहे।

(४) धान्येश शनि का फल-

" निर्धनाः क्षितिभुजो रणादराः सस्यमल्पमतिरोगिणो नराः।
नैव वर्षति जलं सुरेश्वरः स्याद्यदि कणपः शनैश्चरः।।"

किञ्च– " दुर्भिक्षं जायते तत्र कलहो देश–विग्रहः।
सौराष्ट्रदेश–भंगश्च यत्र धान्याधिपः शनिः।।"

अर्थात्– शासक किंवा नेतालोग (विशेष परिस्थितिवश) आर्थिक संकट का सामना करें। नेतालोग परस्पर शक्तिपरीक्षण किंवा युद्धमय वातावरण में उलझें। सस्य अर्थात् अनाज किंवा पशुचारे की कमी रहे। लोगों में भयंकर रोगों से परेशानी बढ़े एवं वर्षा की अधिक न्यूनता रहे।

किञ्च– धान्येश शनि होने पर देश में दुर्भिक्ष की स्थिति बने। प्रजा एवं शासकों में अशान्ति, परस्पर कलह रहे, सौराष्ट्र प्रदेश आपदाग्रस्त किंवा राजनैतिक–संकट ग्रस्त हो।

(५) मेघेश गुरु का फल-

"गुरुरपि प्रियवृष्टिकरः सदा निखिल–विलासवती धरणी तदा।
श्रुति-विचारपरा नरपालकाः रस-समृद्धि-युताखिल-मानवाः।।"

अर्थात्– गुरु मेघेश हो तो वर्षा उत्तम हो, प्रजा में सर्वत्र सुख–शान्ति रहे किंवा विलासमय वातावरण रहे। शासकवर्ग वेदविहित मार्ग का अनुसरण करे। जनता में रस (घृत–दूध) आदि की समृद्धि रहे।

(६) रसेश मंगल का फल-

"यदि धरातनयो रसपो भवेन्न रस–राशियुता जनता शुभा।
नरपतिर्विषमो जनता–पदो न जलदो बहुवृष्टिकरो भुवि।।"

अर्थात्– यदि मंगल रसेश हो तो जनता रसराशि (दूध–घी) आदि का अभाव (किंवा कमी) अनुभव करे। शासकों का व्यवहार जनमानस के अनुकूल (किंवा हितकारी) न रहे। कुछ भागों में वर्षा की कमी किंवा अभाव रहे।

(७) नीरसेश सूर्य का फल-

" नीरसाधिपतौ सूर्ये ताम्र – चन्दनयोरपि।
रत्न–माणिक्य–मुक्तादेरर्घ–वृद्धिः प्रजायते।।"

अर्थात्– सूर्य नीरसेश हो तो ताम्बा, चन्दन, रत्न, माणिक्य एवं मोती आदि जवाहरात के मूल्यों में वृद्धि हो।

(८) फलेश गुरु का फल-

"सुरगुरुः फलनायकतां गतो गतभया वनराशि– महाद्रुमाः।
यजन–याजनकोत्सव–मन्दिराः श्रुति–विचारपराः द्विजपूर्वकाः।।"

अर्थात्– गुरुदेव यदि फलेश हो तो वन में गगनचुंबी, विशालकाय वृक्ष बहुतायत में उपलब्ध हों। जनता निर्भय रहे। देवालयों किंवा सर्वविध पूजास्थलों में यज्ञ–याजन (पूजा–पाठ) हों। धार्मिकवृत्ति के लोग (विशेषतः द्विज) वेद–पुराण आदि धार्मिक ग्रन्थों का पाठ (चिन्तन) करें।

(९) धनेश सूर्य का फल-

"द्रविणपो यदि वासरपस्तदा वणिजतो बहुद्रव्य–समागमः।
गज–तुरंगम–मेष–खरोष्ट्रतो धनचयं लभते क्रय–विक्रयात्।।"

अर्थात्– सूर्य धनेश हो तो व्यापारीवर्ग से विशेष धन प्राप्त हो या व्यापार से जनता विशेष लाभान्वित हो। हाथी, घोड़े, गधे, ऊँट एवं मेढ़ा आदि के व्यापार से लाभ हो।

(१०) दुर्गेश गुरु का फल-

" सुरगुरौ गढ़पे नय–शोभितैर्नरवरैर्जनता परिपालिता।
गिरिषु वै नगरेषु समं सुखं सुखमति द्विज–शास्त्रवतोऽनिशम्।।"

अर्थात्– गुरु दुर्गेश हो तो शासकवर्ग नीतिपूर्वक जनता का पालन–पोषण करे। जंगलों (पर्वतों) एवं नगरों में भी किसी प्रकार का भय न रहे। सर्वत्र सुख अनुभव हो। धर्माचरण करने वाले लोग, शास्त्रज्ञ व्यक्ति (विशेषतः द्विज) अत्यन्त सुख–पूर्वक रहें।

नरपतिर्विषमो जनता–पदो न जलदो बहुवृष्टिकरो भुवि।।"

सर्वत्र सुख अनुभव हो। धर्माचरण करने वाले लोग, शास्त्रज्ञ व्यक्ति (विशेषतः द्विज) अत्यन्त सुख-पूर्वक रहें।

सूचना– यद्यपि वर्ष के इन दशाधिकारियों का फल सर्वत्र होता है। किन्तु विशेषतः राजा का फल काश्मीर, अफगानिस्तान एवं बराड़ देश में; मन्त्री का फल आन्ध्र, वाल्हीक, उज्जैन एवम् मालवा में; सस्येश का पौण्ड्र, विदर्भ में; धान्येश का गुजरात, नर्मदा के तटवर्ती प्रदेश एवं मध्यप्रदेश में; मेघेश का मगध एवं बंगाल में; रसेश का कोंकण एवं गोवा में; नीरसेश का मालवा व बिहार में; धनेश का राजस्थान एवं बाड़मेर में; फलेश, दुर्गेश एवं राजा का फल सब जगह विशेष होता है।

वर्षादि के विश्वामान

वर्षाविश्वा १७, धान्य १७, तृण १५, शीत १५, तेज ११, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ६, तृषा ६ निद्रा ११, आलस्य १३, उद्यम ५, शांति १५, क्रोध १३, दम्भ ६, लोभ ३, मैथुन १५, रस ६ फल १३, उत्साह ११, उग्रता ३, पाप १, पुण्य ६, व्याधि ३, व्याधिनाश १७, आचार १७, अनाचार ५, मृत्यु १, जन्म ६ देशोपद्रव १५, देशस्वास्थ्य ३, चौर ९, चौरनाश १, अग्नि १५, अग्निशांति १, उद्भिज्ज ६ जरायुज ३ अण्डज ७, स्वेदज ६ टिड्डी ७, तोता १७, मूषक ७, सोना ३, तांबा १६, स्वचक्र ३, परचक्र ६ वृष्टि ७, वृष्टिनाश १५ एवं संवत्विश्वा २० हैं।

चतुर्मेघविचार– आवर्तकादि चतुर्मेघों में 'आवर्त' नामक मेघ है।

फलः– "आवर्तेऽल्पवृष्टिःस्यात्"– वर्षा की अनेकत्र कमी अनुभव हो। कुछ भूभाग 'अकाल–ग्रस्त' भी हो सकते हैं।

नवमेघविचार– इसवर्ष नवमेघों में भी ' आवर्त ' नामक ही मेघ है।

फल–" विनाशनं शालि–यवादिकानां तथैव कार्पास–घृतादिकानाम्।
घनो यदावर्तक–नामधेयः स्वल्पं जलं स्याद्धनिनामपायः।।"

अर्थात्– कपास, सरसों आदि तेलवाना एवं चावल, जौ, गेहूं, चना आदि अनाजों की फसलों को (अवर्षण या अतिवर्षण से)भारी हानि होने से इन की भारी कमी रहेगी। वर्षा अनेक प्रान्तों में अपर्याप्त रहेगी।

इसवर्ष चतुर्मेघ एवं नवमेघ दोनों आवर्त संज्ञक हैं। लेकिन ' आवर्त ' शब्द के अर्थ से संकेत मिलता है कि– समुद्र–तटवर्ती भूभाग किंवा देश–विशेष में कहीं समुद्रजन्य सुनामी आदि से भारी जनधनहानि संभव है–

"आवर्त–बुदबुदतरंगमयान् विकारानम्भो यथा सलिलमेव हि तत् समस्तम्।" –(*भवभूतिः*)

अनन्तादि अष्टनाग– अनन्तादि अष्टनागों में इस वर्ष 'वासुकी' नामक नाग है।

फल– " प्रभूत धान्यदायकः सुवृष्टिकारकस्तथा"।

अर्थात्– वर्षा उत्तम हो, खाद्यान्न पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हों।

सुबुध्नादि द्वादश नाग– बारह नागों में इसवर्ष 'पृथुश्रवा' नामक नाग है।

फल– संवत् २०६६ वि. में सर्वविध खाद्यान्नों की उपज अच्छी नहीं होगी। वर्षा भी कम होगी–

" पृथुश्रवा भुजंगेन्द्रो जायते यत्र वत्सरे।
तत्र कीलालमल्पं स्यात् सस्यहानिरसंशयम्।।"

आवह आदि सप्तवायु–विचार– इस वर्ष 'वायुसप्तक' में 'संवह' नामक वायु है।

फल– इसवर्ष संवह वायु 'फल–फूल' की खेती करने वाले किसानों, बाग़वानियों के लिए लाभप्रद है। हि. प्र., काश्मीर आदि में सेब एवं जंगली जड़ी–बूटियों की वृद्धि से व्यापारी लाभ लेंगे। लेकिन कुछ प्रान्तों में वर्षा की कमी से धान्यों की खेती नष्ट होने का भी योग है।

संवत् २०६६ वि. का वाहन– इसवर्ष का राजा 'शुक्र' होने से संवत् का वाहन 'मेढ़क' है।

फल– संवत् का वाहन 'मेढ़क' होने से उत्तरी एवं दक्षिणी भूभाग में वर्षा कहीं कम हो, कहीं बाढ़ की स्थिति से धान्य (मक्का, बाजरा, ईख, ज्वार आदि) की फसल को अनेकत्र हानि से किसान परेशान रहें। वन्य भूभाग पर कहीं अग्निकाण्ड से हानि के भी कारण बनेंगे। दक्षिणी प्रान्तविशेष में प्राकृतिक आपदा से भारी हानि हो।

संवत् २०६६ वि. के चार स्तम्भ

(१) जलस्तम्भ–(चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र) ३५.२४ प्रतिशत है।

(२) वायुस्तम्भ–(ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र) का अभाव है।

(३) तृणस्तम्भ–(वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र) ९४ प्रतिशत है।

(४) अन्नस्तम्भ–(आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र) का अभाव है।

ये उल्लिखित चार स्तम्भ देश के कुशल–क्षेम–ज्ञानार्थ विशेष महत्त्व रखते हैं। क्योंकि, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की सत्ता जल, वायु, अन्न एवं तृण (जड़ी–बूटियों) आदि पर ही निर्भर है। संवत् के शुभारम्भ पर देश की प्राकृतिक व्यवस्था के नियामक इन चार स्तम्भों का आकलन आवश्यक समझा गया है।

(१) जलस्तम्भ– इस वर्ष जलस्तम्भ ३५ प्रतिशत होने से कुछ प्रान्तों में वर्षा की भारी कमी अनुभव होगी। बहुजल–प्रधान अन्न महंगे होंगे। जीरा, मक्का, गेहूं, चावल, बाजरा आदि की फसल अच्छी होने पर भी अन्ततः झाड़ पर्याप्त नहीं मिलेगा। विद्युत्–उत्पादन की दर कम रहेगी, जिससे औद्यौगिक क्षेत्र प्रभावित होंगे। इसवर्ष चतुर्मेघ एवं नवमेघ 'आवर्त ' संज्ञक होने पर भी वर्षा की कुछ क्षेत्रों में भारी कमी रहेगी, लेकिन कहीं समुद्री तूफान (सुनामी) आदि से समुद्रतटवर्ती क्षेत्रों में भारी विनाश का कारण भी बनेगा।

(२) वायुस्तम्भ– वायुस्तम्भ का इसवर्ष अभाव होने से भू–अन्तर्गत उष्णताजन्य 'सीस्मोग्राफिक वेव्स ' का प्रवाह उग्रत्व रूप धारण कर सकता है। परिणामस्वरूप, आंधी–तूफान, प्राकृतिक प्रकोप से कहीं भारी जनधनहानि संभव है। समुद्रतटवर्ती किंवा दक्षिण–पश्चिमी प्रान्तों एवं देशों में ज्वालामुखी–विस्फोट, अग्निकाण्ड से हानि हो। जंगलसंपदा को भी हानि हो।

(३) तृणस्तम्भ– इसवर्ष तृणस्तम्भ ५४ प्रतिशत होने से पशुओं के लिए चारा एवं वन्य–सम्पदा (जड़ी–बूटियों) की उपलब्धता पर्याप्त होगी। आयुर्वेदिक जड़ी–बूटियों के निर्यात एवं निर्माण से फार्मास्युटिकल कम्पनियां लाभान्वित होंगी।

(४) अन्नस्तम्भ– इसवर्ष अन्नस्तम्भ का अभाव 'प्राकृतिक आपदाओं के आधिक्य' का संकेत देता है। जनजीवनोपयोगी वस्तुओं की कमी से महंगाई बढ़ेगी। शासनतन्त्र को कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा।

इसवर्ष जलस्तम्भ भी बहुत सुदृढ़ नहीं। वायुस्तम्भ एवं अन्नस्तम्भ का पूर्णतः अभाव देश एवं जनजीवन के लिए कोई शुभ संकेत नहीं देता। केवल तृणस्तम्भ की दृष्टि से ही देश की समृद्धि का लक्ष्य पूर्ण नहीं हो सकता।

आर्षमान विचार (सं २०६६ वि. की रक्षा के लिए चार दुर्ग)

(१) प्रथम आर्ष– (अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र) ५१ प्रतिशत है।
(२) द्वितीय आर्ष–(गत संवत् २०६८ वि. में पौष अमा को मूल नक्षत्र) ६३.५ प्रतिशत है।
(३) तृतीय आर्ष– (श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र) ४६ प्रतिशत है।
(४) चतुर्थ आर्ष –(कार्त्तिक पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र) ७७.५ प्रतिशत है।

इसवर्ष देश की रक्षा के लिए स्थापित उल्लिखित चार दुर्गों (किलों) के विचार से यह वर्ष देश के लिए विजयश्री प्राप्त कराने का संकेत देता है, क्योंकि इसवर्ष चारों दुर्ग सुदृढ़ हैं।

प्रथम आर्ष – इसवर्ष रोहिणी नक्षत्र अक्षय तृतीया को **५१ प्रतिशत** है। अतः प्रकृति(ईश्वरीय कृपा से) प्राकृतिक आपदाओं से स्वतः रक्षात्मक रहेगी। वर्षस्तम्भचतुष्टय के कमज़ोर होने पर भी शासनतन्त्र मूलभूत आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता कराने में सक्रिय रहेगा।

द्वितीय आर्ष – गतवर्ष पौष अमा को मूल नक्षत्र ६३.५ प्रतिशत होने से जल-वायु एवं स्थलसेना की कार्यक्षमता एवं शस्त्रास्त्रक्षमता को सुदृढ़ बनाता है। चीन–पाक आदि देशों की काश्मीर एवं सीमाप्रान्तीय क्षेत्रों पर कुनीति को देश की सैन्यक्षमता हतप्रभ करने की क्षमता रखेगी।

तृतीय आर्ष – श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र कुछ कमज़ोर अवश्य है। लेकिन **४६ प्रतिशत** होने से राजनैतिक घोटाले एवम् राजनीतिज्ञों के कदाचार से छुटकारों के लिए प्रयास होंगे। राजनीति के सुसंस्कृतीकरण के लिए विशेष अभियान ज़ोर पकड़ेंगे।

चतुर्थ आर्ष– कार्त्तिक पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र ७७.५ प्रतिशत होने से सीमाप्रान्तों पर सुरक्षार्थ विशेष व्यय करने होंगे। नेपाल, तिब्बत, राजस्थान, पाक, चीन के तटस्पर्शी क्षेत्रों पर शत्रुजन्य गतिविधि अक्षम्य होगी। देश को सुदृढ़, सशक्त सैन्यक्षमता को बनाए रखना होगा।

दोहा : "अखैतीज रोहिणी न होई, पौष अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणो हीन विचारो, कार्तिक पुण्यो कृत्तिका टारो।
महीमाह खलबली प्रकाशै, कहै भड्डली साख विनाशै।।"

रोहिणी का वास– इस वर्ष रोहिणी का वास 'पर्वत' पर है।

फल– संवत् २०६६ वि. में रोहिणी का वास 'पर्वत' पर होने से अनेकत्र वर्षा की कमी रहे। वर्षा समय पर न होने से खड़ी फसलों को भारी हानि पहुंचेगी–

" रोहिणी–नाम नक्षत्रं पर्वतस्थं यदा भवेत्।
वृष्टिहानिस्तदा ज्ञेया सर्वसस्य–विनाशनम्।।"

इसवर्ष रोहिणी का वास पर्वत पर होने से बहुजलीय अनाज जीरी ...

(२) भौमवती अमावस्याएं – आषाढ़ में १६ जून एवम् कार्त्तिक में १३

इसवर्ष रोहिणी का वास पर्वत पर होने से बहुजलीय अनाज जीरी आदि वाले कृषक परेशान रहेंगे। महंगाई ज़ोर पकड़ेगी, जिससे आगे शासनतन्त्र को दूरगामी परिणाम भोगने पड़ेंगे।

संवत्सर(समय) का वास–क्योंकि, इसवर्ष 'रोहिणी का वास पर्वत' पर है; अतः समय का वास 'कुम्हार (कुम्भकार)' के घर है।

फल– मृण्मय पात्र एवं (भवन–निर्माणार्थ) ईंटें, रेता, कोयला, सीमेन्ट एवं ज़मीन–जायदाद के भावों में अप्रत्याशित महंगाई ज़ोर पकड़ेगी।

शनि की दृष्टि– १५ नवम्बर (मंगलवार) सन् २०११ ई. से शनिदेव तुलाराशि में प्रवेश करके संवत् २०६६ वि. में १५ मई, सन् २०१२ ई. तक तुलाराशि (अपनी उच्चराशि) में ही सञ्चरण करेंगे। तत्पश्चात् वक्रगति से शनिदेव १६ मई, सन् २०१२ ई. को पुनः कन्याराशि में आकर ३ अगस्त, २०१२ ई. तक कन्याराशि में रहेंगे। पुनः ४ अगस्त, सन् २०१२ ई. को मार्गी गति से तुलाराशि में आकर संवत् २०६६ के अन्त (किंवा आगे) तक तुलाराशि में ही शनिदेव का संचरण रहेगा।

फल– १५ नवम्बर, २०११ ई. से १५ मई, २०१२ ई. तक एवं ४ अगस्त, २०१२ ई. से संवत् २०६६ वि. के अन्त तक तुला–राशिस्थ शनि की दृष्टि पश्चिम की तरफ रहेगी। अतः उल्लिखित समयावधियों में पश्चिमी प्रान्तों एवं पश्चिमी देशों में कहीं भयंकर भूकम्प, समुद्रीतूफान (सुनामी) एवं कहीं शासनतन्त्र के विरुद्ध (सत्तापरिवर्तनार्थ) आन्दोलन, ज्वालामुखी–विस्फोट, हवाई हादसे किंवा उग्रवाद से भारी जनधनहानि के योग नज़र आते हैं।

ध्यान दें– १६ मई, सन् २०१२ ई. से ३ अगस्त, सन् २०१२ ई.तक शनि कन्याराशि में रहेगा, इस समय शनि की दृष्टि दक्षिण–दिशा की तरफ रहेगी। अतः इस समयावधि में दक्षिणी प्रान्तों एवं दक्षिणी गोलार्ध के देशों में राजनैतिक उलझनें बढ़ेंगी। उग्रवाद से कहीं अराजकता, हत्याकाण्ड, विस्फोट से हानि के योग भी बनते हैं। कहीं मुस्लिम–राष्ट्रविशेष में आकस्मिक सत्ता-हस्तान्तरण होगा–

"शनैश्चरः क्रमात्पश्यन् तत्तद्देशान् प्रपीड़येत्।
दुर्भिक्ष –देशभङ्गाधैर्विग्रहो राजविड्वरैः।।"

संवत् २०६६ वि. में–

(१) सोमवती अमावस्याएं– आश्विन में १५ अक्तूबर, सन् २०१२ ई. एवं फाल्गुन में ११ मार्च, २०१३ ई. को दो हैं।

(२) भौमवती अमावस्याएं – आषाढ़ में १६ जून एवम् कार्त्तिक में १३ नवंबर, २०१२ ई. को दो ही हैं।

(३) शनिवारी अमावस्या – वैशाख में २१ अप्रैल, सन् २०१२ ई. को एक ही है।

अधिक मास– संवत् २०६६ वि. में भाद्रपद (१८ अगस्त से १६ सितम्बर, २०१२ ई. तक) 'अधिक मास' है। भाद्रपद दो होने से अनाजों की उत्पत्ति पर्याप्त हो– **" भाद्रद्वितये धान्य–निष्पत्तिः स्याद् यथेप्सिता।"**

किसानवर्ग के लिए यह अधिकमास अच्छा रहेगा। लेकिन इस मास में तुलाराशि में शनि–मंगल का एकसाथ रहना कहीं राजनैतिक उलझनों वाला है। किसी महानगर में उग्रवाद से हानियोग भी बनते हैं।

शरत्सस्य जातक

संवत् २०६६ वि. में ज्येष्ठ कृष्ण नवमी चन्द्रवार, तदनुसार १४ मई, सन् २०१२ ई. को शतभिषक् नक्षत्र, वैधृति योग एवं कुम्भस्थ चन्द्र के समय सूर्यदेव १६ घंटा १० मिनट (भा.स्टैं.टा.) पर वृष राशि में प्रविष्ट होंगे।

शरत्सस्य जातककुण्डली
(१४ मई, सन् २०१२ ई.)

फल– शरत्सस्य जातक–कुण्डली में नवमभावस्थ (वृषस्थ) सूर्य–शुक्र केतु के साथ होने से सर्दी (खरीफ) की फसल ठीक रहेगी – **"कार्मुक–मृग–घटसंस्थः शारद–सस्यस्य तद्वदेव रविः। संग्रहकाले ज्ञेयो विपर्ययः क्रूर–दृग्योगात्।।"** अतः शारदधान्य के संग्रह से आगे लाभ मिलेगा। शरत् सस्यजातक कुण्डली में सूर्य से सप्तम राहु है एवं राहु पर मंगल की दृष्टि है। सूर्य से चतुर्थ मंगल है। लेकिन मंगल–शनि पर गुरु की दृष्टि होने से शारदान्न को भारी हानि का योग नहीं।

ग्रीष्मसस्य जातक

सं. २०६६ वि. में कार्तिक शुक्ल द्वितीया (तात्कालिक तृतीया) गुरुवार, तदनुसार १५/१६ नवम्बर, सन् २०१२ ई. को ज्येष्ठा नक्षत्र, सुकर्मा योग एवं वृश्चिकस्थ चन्द्र के समय ५ घं. ३७ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर सूर्यदेव वृश्चिकराशि में प्रविष्ट होंगे।

फल– ग्रीष्मसस्य–जातककुण्डली में वृश्चिक राशि में सूर्य–राहु नीचस्थ चन्द्र के साथ होने से खड़ी फसलों की भारी हानि होगी। भारी महंगाई से जनता में आक्रोश पैदा होगा– "मध्ये पापग्रहयोः सूर्यः सस्यं विनाशयत्यलिगः।" लेकिन (सूर्य से) सप्तमभाव में गुरु होने से शासनतन्त्र ग्रीष्मान्नों की उपलब्धता कराने में सक्षम रहेगा। गेहूं, जौ, चना आदि की फसलों को नुक्सान पहुंचेगा।

ग्रीष्मसस्य जातककुण्डली
(१६ नवं., २०१२ ई.;)

सू.चं.८ बु.रा.
शु. ६
९ मं.
७ श.
५
१०
४
११
१
३
१२
२ गु. के.

सूर्य से द्वितीय भावस्थ मंगल शनि की विशेष दृष्टि में है। अतः बोई गईं फसलें (अगेती बुवाई) नष्ट हो जाए, देर से बोई गई ग्रीष्मान्न–फसल ही पैदा होगी–

" अर्थस्थाने सूर्यः सौम्यैरनीक्षितः प्रथम जातम्।
सस्यं निहन्ति पश्चादुप्तं निष्पादयेद् व्यक्तम्।।"

सूर्य का आर्द्रानक्षत्र में प्रवेश

संवत् २०६६ वि. में आषाढ़ शुक्ल द्वितीया गुरुवार, तदनुसार २१ जून, सन् २०१२ ई. को पुनर्वसु नक्षत्र, ध्रुव योग एवं कर्कस्थ चन्द्र के समय २२ घं. १८ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में प्रविष्ट होंगे।

सूर्य आर्द्रप्रवेश–कुण्डली
(२१ जून, सन् २०१२ ई., २२ घं. १८ मि.)

११
९
१२
१०
८ रा.
१
७
गु.२ शु.के.
४ चं.बु.
६ श.
३ सू.
५ मं.

फल– सूर्य का आर्द्रानक्षत्र में प्रवेश मकर लग्न में हुआ है। इस समय सूर्य पर शनि की विशेष दृष्टि है। मंगल की दृष्टि राहु पर है। लेकिन शनि–राहु दोनों बृहस्पति की दृष्टि में हैं। लग्न पर भी गुरु की विशेष दृष्टि है। चन्द्र स्वस्थ (जलराशि) में है। अतः धान्य–फसल अच्छी हो–

"रौद्रप्रवेशे तरणिर्विधुश्चेत् त्रिकोण–संस्थोऽथ चतुष्ट्यस्थः।
जलर्क्षगो वा शुभवीक्षितो वा धान्यं प्रभूतं निखिलं तदानीम्।।"

आर्द्रा में सूर्य का प्रवेश रात्रि के समय हुआ है। बुध–चन्द्रयोग आंधी–तूफान, दक्षिण–पश्चिम में सामान्य से अधिक वर्षा का संकेत देता है। पूर्वी एवम् पश्चिमी भूभाग में कहीं औलावृष्टि व असामयिक वर्षा भी हो।

संवत् २०६६ वि. का शुभारम्भ

गतसंवत् २०६८ वि. में चैत्र कृष्ण अमावस, गुरुवार, तदनुसार २२ मार्च, सन् २०१२ ई. को उ.भा. नक्षत्र, शुक्ल योग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय नवसंवत् २०६६ वि. का शुभारम्भ २० घं. ७ मि.(भा.स्टैं.टा.) पर कन्या लग्न में हुआ है।

शुभ संवत् २०६६ वि. की प्रवेषकालीन कुण्डली

७ श.
५ मं.
८ रा.
६
४
९
३
१०
चं. १२
२ के.
सू. ११ बु.
१ गु.शु.

२२ मार्च, सन् २०१२ ई., २० घं. ७ मि.

फल– संवत् २०६६ वि. का शुभारम्भ कन्या लग्न में हो रहा है। पंचमेश शनि द्वितीय भाव में उच्च होकर गुरु–शुक्र की दृष्टि में है। अतः राजनीति का शुद्धिकरण–प्रयास अवश्य होगा, लेकिन सूर्य–चन्द्र–बुध के साथ मंगल का समसप्तक एवं मंगल की राहु पर दृष्टि होने से नयावर्ष राजनैतिक दलों के लिए विषम परिस्थितियों को लेकर उपस्थित होगा।

पूर्व में राजनैतिक स्थिरता रहे, दक्षिण में भयंकर बीमारी से परेशानी का सामना करना पड़े। बंगाल–आसाम आदि में उग्रवादजन्य अशान्ति रहे, अन्न महंगा हो, पश्चिमी भूभाग पर युद्धाग्नि से वातावरण अशान्त रहे–

"कन्यायां सुस्थिरा प्राच्यां घृते महर्घता मता।
मंजिष्ठादि समर्घत्वं यावन्मासत्रयं भवेत्।।"

"मारिर्दक्षिण–देशे स्यात् तथा बंगे तु उपद्रवः।
लोक–दुखं पश्चिमायां विग्रहोन्न–समर्घता।।"

"चतुष्पदां सुखं प्राच्यामुदीच्यां राजविग्रहः।
मध्यदेशे प्रजाभंगः समर्घत्वं घृते पुनः।।"

घी, खाद्यसामग्री आदि में महंगाई से जनता में शासनतन्त्र के प्रति आक्रोश रहे।

जलर्क्षगो वा शुभवीक्षितो वा धान्यं प्रभूतं निखिलं तदानीम्।।"
आक्रोश रहे।

वर्षेश(जगत्) लग्न (सं. २०६९ वि.)

संवत् २०६९ वि. में वैशाख कृष्ण अष्टमी शुक्रवार, तदनुसार १३ अप्रैल, सन् २०१२ ई. को उ.षा. नक्षत्र, सिद्ध योग एवं मकरस्थ चन्द्र के समय १९ घं. १९ मि. (मा.स्टैं.टा.) पर सूर्यदेव मेष राशि में प्रविष्ट होंगे।

वर्षेश (जगत्) लग्न-कुण्डली

८ रा.
६
९
७ श.
५ मं.
१० चं.
४
११
गु. १ सू.
३
१२ बु.
२ शु. के.

१३ अप्रैल, २०१२ ई.,१९ घं. १९ मि.(I.S.T.)

फल– तुला लग्न में जगत्लग्न का शुभारम्भ हुआ है। लग्नस्थ उच्च शनि सप्तम भावस्थ उच्च सूर्य एवं गुरु द्वारा पूर्णरूप से दृष्ट है। धनेश मंगल एवं आयेश सूर्य का राशिव्यत्यय भी शुभ है। लेकिन मेषस्थ सूर्य की लग्न पर नीच दृष्टि है, लग्नस्थ शनि की सप्तम भावस्थ सूर्य पर शत्रुदृष्टि है; अतः कुछ स्थानों पर खड़ी फसल को हानि पहुंचे–

"मेष–प्रवेशलग्ने वा यदि स्याद्वर्ष–जन्मनि।
सप्तमस्थो यदा पापो धान्यजातं विनाशयेत्।।"

वैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण–भाद्रपद, कार्तिक एवं फाल्गुन मास राजनैतिक दृष्टि से अशुभ, उग्रवादजन्य परेशानी एवं प्राकृतिक आपदाओं वाले सिद्ध होंगे।

जगत्लग्न से व्यक्तिगत फलविचार

जन्मकुण्डली में लग्न बलवान् हो तो जन्मराशि से जगत्लग्न जिस राशि पर आए, वह भाव शुभग्रह या भावेश से दृष्ट या युक्त हो तो उस वर्ष में उस भाव की वृद्धि कहनी चाहिए। यदि पापग्रह की दृष्टि या योग हो तो उस भाव की हानि कहें। जन्मलग्न, जन्मराशि एवं अपने वर्षलग्न से वर्षेश (जगत्) लग्न आठवें या बारहवें हो तो वह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होगा। इसी प्रकार देश एवं ग्राम के शुभाशुभ विचार के लिए भी समझना चाहिए ।

गुर्रा–विचार (सन् २०१२-१३ ई.)

इस्लामी मतानुसार एक (यकम) मुहर्रम से ही नया हिजरी सन् प्रारम्भ होता है। उस दिन जो वार होता है, वही इस्लामी मतानुसार साल का राजा होता है, जो "गुर्रा" नाम से जाना जाता है।

संवत् २०६८ वि. में मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष तृतीया रविवार, तदनुसार २७ नवंबर, सन् २०११ ई. को यकम मुहर्रम (१ मुहर्रम) को हिजरी सन् १४३३ का शुभारम्भ हुआ है। क्योंकि, इसवर्ष यकम मुहर्रम (१ मुहर्रम) को रविवार है, अतः इस हिजरी सन् १४३३ का बादशाह 'सूर्य' ही होगा।

फल– वर्षा बहुत हो, अनाज सस्ते रहें, मेवा पर्याप्त उपलब्ध हो। शासक एवं प्रजा सुखी रहे, पशुधन ठीक रहें, दूध–दही पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हों। स्त्रियों के वक्षस्थल से सम्बन्धित रोग बहुत हों। मुस्लिम राष्ट्रविशेष में सत्ता–हस्तान्तरण एवं उग्रवादजन्य मारक घटनाएं अधिक हों।

संवत् २०६९ वि. में कार्तिक शुक्ल–तृतीया शुक्रवार, तदनुसार १६ नवम्बर, सन् २०१२ ई. को यकम मुहर्रम वाले दिन शुक्रवार होने से हिजरी सन् १४३४ का बादशाह शुक्र ही होगा।

फल– शासकों, राजनैतिक दलों में परस्पर राजनैतिक संघर्ष की स्थिति बने। कई मुस्लिम–राष्ट्रों में भयंकर युद्ध की स्थिति बनेगी। वर्षा समय पर न हो, अग्निकाण्ड एवं प्राकृतिक आपदा से जनधनहानि हो। चोर–उच्चकों से सावधान रहें। शासकवर्ग प्रजाहितार्थ काम करे। जनजीवनोपयोगी किंवा खाद्य–वस्तुओं में बहुत महंगाई होगी। पशुओं में रोग व्याप्त हो।

आय–व्यय–चक्र (विंशोत्तरी मतानुसार)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	११	५	११	५	८	११	५	११	८	२	२	८
व्यय	५	१४	११	८	५	११	१४	५	११	१४	१४	११

लाभ–व्यय देखने की रीति– अपनी राशि के लाभ–व्यय–अंको को जोड़कर, उसमें से १ घटाकर, शेष को ८ से भाग देने पर यदि १, २, ६, ७ बचें तो वर्ष में उत्तम लाभ होगा। ३, ४, ५, ० बचें तो लाभ बहुत कम हो, चिन्ता भी रहे।

"इतीदं वत्सरफलं वत्सरादि-तिथौ शुभम् ।
यः शृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत् ।।"

विशेष– चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से दश दिन तक नीम के कोमल पत्ते, नीम की मंजरी या निमौली का चूर्ण, सैंधा नमक, इमली, कालीमिर्च, हींग, अजवायन, जीरा, तुलसीदल– ये सब कूट–पीसकर इच्छानुसार खाण्ड या शक्कर में मिलाकर शर्बत बनाकर प्रातः सेवन करने से रक्तविकार, वात–पित्त एवं कफजन्य कष्टों एवं कुष्ठरोग से भी मुक्ति मिलती है।

क्या आप में उपवास रखने का सामर्थ्य नहीं है ?

उपवास (व्रत) में पूरा दिन (24 घण्टे) अन्न–जल का सेवन वर्जित है। यदि अस्वास्थ्य, वृद्धावस्था आदि के कारण पूरा दिन (24 घं.) उपवास करना संभव न हो तो शास्त्रकारों ने इसके तीन विकल्प बतलाए हैं–

(i) एकभक्त, (ii) नक्त, (iii) अयाचित।

(i) एकभक्त :– व्रत के दिन मध्याह्न के अन्तिमार्द्ध में भोजन ग्रहण करना 'एकभक्त' व्रत कहलाता है। यहां पूर्ण भोजन न करे। शास्त्रोक्ति है कि– मुनि को यहां 8 ग्रास, वानप्रस्थी को 16 और गृहस्थी को 32 ग्रास ही खाने चाहिएं। शास्त्रों में ग्रासों की यह संख्या भिन्न–भिन्न उपलब्ध होती है। हां, इन वाक्यों से यह तो स्पष्ट होता है कि– एकभक्त में भोजन इतना खाया जाए कि– भूख बनी रहे। यह भोजन शरीररक्षा के लिए है, उदरपूर्ति हेतु नहीं। यहां मेरा मत है– व्रती व्यक्ति को अपनी भूख की शान्ति 33% ही करनी चाहिए। पूर्ण (उदरपूरक) भोजन तो व्रतदिन से दूसरे दिन पारणा में ही करना होगा।

(ii) नक्त :– इस व्रत में व्रत के दिन प्रदोष के वक्त सूर्यास्त पश्चात् $1\frac{1}{2}$ (डेढ़) मुहूर्त्त को छोड़कर भोजन करना चाहिए। यति, विधवा और अपुत्र विधुरों को तो नक्त भोजन सायाह्न में सूर्यास्त से पहले एक मुहूर्त्त के भीतर कर लेना चाहिए, क्योंकि उन्हें सूर्यास्तबाद भोजन करने का निषेध है। नक्त में 12, 15 अथवा 22 ग्रास ही व्रती को खाने चाहिएं– ऐसा शास्त्रादेश है। यहां भी ग्रासों की संख्या के बारे शास्त्र एकमत नहीं हैं। लेकिन यह तो स्पष्ट है कि– भोजन इतना ही किया जाए कि शरीररक्षा की जा सके। उदरपूर्त्यर्थ यहां भी भोजन कदापि न करें।

यहां भी मेरा मत है कि– इस व्रत में व्रती को भूख का तृतीयांश भोजन ही ग्रहण करना चाहिए। यहां भी पूर्ण भोजन दूसरे दिन पारणा में ही किया जाएगा।

(iii) अयाचित :– इस व्रत में व्रत के दिन व्रती को वही भोजन करने का अधिकार है, जो किसी अन्य व्यक्ति ने उसे बिना मांगे स्वयं दिया हो। इसके भोजन के काल के बारे में शास्त्रों में कोई स्पष्ट निर्देश नहीं है। मैं समझता हूँ– इस व्रत के व्रती को जब भोजन अर्पित किया जाए, तभी खा लेना चाहिए। वैसे, भोजन किसी को तभी अर्पित किया जाता है, जब भोजनकाल हो। इस व्रत में भी व्रती को अपनी भूख का तीसरा हिस्सा ही शान्त करना चाहिए। यहां भी पूर्ण भोजन दूसरे दिन पारणा में किया जाएगा।

यह व्रत कष्टसाध्य है, अतः इसका आचरण बहुत ही कम लोग करते हैं, क्योंकि इस व्रत में कईबार 24 घण्टे भूखा–प्यासा भी रहना पड़ सकता है।

ध्यान रहे– उपवास के ये तीनों विकल्प तभी अपनाए जाएं, जबकि व्रती में वस्तुतः उपवास करने का सामर्थ्य न हो। यदि इस विषय में वह प्रवञ्चना करता है तो उसे व्रत का फल बिल्कुल नहीं मिलेगा। इस बारे "मनु जी" का वाक्य है–

" प्रभुःप्रथमकल्पस्य योऽनुकल्पेन वर्तते।
न साम्परायिकं तस्य दुर्मतेर्विद्यते फलम्।।"

यहां यह भी ध्यान रखें– इन एकभक्त, नक्त, अयाचित व्रतों में फलाहार (फल, दूध, सावां, बाथू आदि का भोजन) ही करना चाहिए, अन्नाहार नहीं।

किंच– रोग अथवा अन्य किसी अपरिहार्य कारण से यदि कभी व्रत (उपवास) रखना सम्भव न हो तब व्रताभिलाषी अपने स्थान पर प्रतिनिधि के रूप में निर्वाचित धर्मपत्नी, पति, आज्ञाकारी पुत्र, भ्राता, बहन, माता, पिता, पुरोहित, मित्र या शिष्य द्वारा भी अपना अभीष्ट व्रत करवा सकता है।

'व्रतपर्व विवेक' से उद्धृत

सन्दिग्ध व्रत-पर्व-व्यवस्था (सं. 2069 वि.)

लेखक- प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित), पंचकूला(हरियाणा)-134 109

(यदि इस स्तम्भ में चर्चित या अन्य किसी व्रत-पर्व की तिथि के बारे में किसी को सन्देह/शंका हो तो पत्र देकर मुझसे स्पष्टीकरण मांग लेना चाहिए. – प्रियव्रत शर्मा)
(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

(1) स्कन्दषष्ठी (चैत्र शुक्ल-षष्ठी)

यह पर्व पञ्चमीविद्धा चैत्र शुक्ल-षष्ठी के दिन मनाया जाता है-

"कृष्णाष्टमी स्कन्दषष्ठी शिवरात्रिश्चतुर्दशी।
एताः पूर्वयुताः कार्याः ....।।"- (*वसिष्ठ*)

ध्यान रहे- यहां सूर्योदयानन्तर त्रिमुहूर्त्तव्यापिनी पंचमी द्वारा ही षष्ठी का वेध माना जाएगा, "नागो द्वादशनाड़ीमि..................." द्वारा प्रतिपादित षण्मुहूर्त्तव्यापिनी पंचमी द्वारा नहीं। क्योंकि ऐसा वेध नहीं लिया जाता, जहां पंचमीवेध वर्जित हो-

"नागो द्वादशनाड़ीमि..................." इति वचनस्य न स्कन्द-व्रतविषयत्वं तत्र पूर्वविद्धाया एव विधानात्।"- (*पुरुषार्थ-चिन्तामणि*)

इसवर्ष (सं. 2069 वि. में) षष्ठी 28 मार्च, 2012 ई. को पञ्चमीविद्धा नहीं है, क्योंकि इसदिन पंचमी मुहूर्त्तत्रय-व्यापिनी न होने से षष्ठी की वेधक नहीं हो सकती, अतः इसवर्ष यह व्रत 29 मार्च, 2012 ई. को मुहूत्तत्रयाधिक-व्यापिनी षष्ठी के दिन ही मनाया जाएगा।

(2) श्रीपरशुराम जयन्ती (वैशाख शुक्ल-तृतीया)

प्रदोषव्यापिनी वैशा. शु. तृतीया के दिन यह जयन्ती मनाई जाती है-

"वैशाखस्य सिते पक्षे तृतीयायां पुनर्वसौ।
निशायाः प्रथमे यामे रामाख्यः समये प्रभुः।
रेणुकायास्तु यो गर्भादवतीर्णो हरिःस्वयम्।।"

(यहां 'याम' का अर्थ अधिकतर व्याख्याकारों ने 'प्रदोष' ही लिया है।)

तृतीया की दोनों दिन प्रदोषव्याप्ति की स्थिति में यह जयन्ती दूसरे ही दिन मनानी होती है। क्योंकि, तब प्रातः संकल्पकाल से लेकर तृतीया प्रदोषपर्यन्त रहती है, जबकि पहले दिन तृतीया इस स्थिति में केवल प्रदोष को ही व्याप्त कर रही होती है-

"दिनद्वये प्रदोषे कात्स्न्र्येन साम्येन वैषम्येण वा एकदेशव्याप्तौ परैव, संकल्पकालमारभ्य सत्त्वाद् दिवा-रात्रि-योगाच्च।।"

-(*पुरुषार्थ-चिन्तामणि*)

इसवर्ष तृतीया पहले दिन 23 अप्रैल, 2012 ई. को आंशिकरूप से ही प्रदोष को व्याप्त करती है। दूसरे दिन (24 अप्रैल, 2012 ई. को) तो यह पूरा दिन व्याप्त रहकर प्रदोष को भी व्याप्त कर रही है, अतः स्पष्टतः श्रीपरशुराम जयन्ती 24 अप्रैल, 2012 ई. को ही होगी।

(3) प्रदोषव्रत (वैशाख शुक्ल-त्रयोदशी)

प्रत्येक पक्ष की प्रदोषव्यापिनी त्रयोदशी में यह व्रत किया जाता है। यह नक्त व्रत है। अतः स्पष्ट है- इसका तिथिनिर्णय नक्तव्रत के समान ही है। इस प्रकार दोनों दिन प्रदोष में त्रयोदशी की आंशिक या सम्पूर्ण व्याप्ति अथवा अव्याप्ति की स्थिति में यह व्रत दूसरे ही दिन होगा, जैसा कि 'कालमाधवकार' का यह वचन है-

"प्रदोषव्यापिनी नक्ते तिथिः व्याप्तिर्दिनद्वये।
अव्याप्तिर्वाथवांशेन व्याप्तिः स्यात्सर्वथोत्तरा।।"

यहां 'धर्मसिन्धु'कार का यह निर्णय कि- *"त्रयोदशी दोनों दिन असमान रूप से प्रदोष में व्याप्त हो तो प्रदोषव्रत उस दिन किया जाए, जिस दिन प्रदोष को तिथि अधिक व्याप्त करती है। बशर्ते कि- वहां देवपूजा, भोजनादि के लिए समय पर्याप्त हो, अन्यथा वहां भी व्रत दूसरे*

ही दिन किया जाए "– तर्कसंगत नहीं है। क्योंकि देवपूजादि के लिए पर्याप्त काल कितना है, यह निश्चित नहीं किया जा सकता। अतः उपरोक्त **'कालमाधव'कार** का मत ही मान्य है। **किंच–** यहां यह भी ध्यान देने योग्य है– दोनों दिन त्रयोदशी की प्रदोष में अव्याप्ति की स्थिति में दूसरे दिन त्रयोदशी प्रदोष के गौणकाल (सायंकाल) को तो व्याप्त करती ही है। उस दिन वह प्रातः व्रतसंकल्प के समय भी साक्षात् विद्यमान होती है।

इसवर्ष वैशा. शुक्ल त्रयोदशी प्रदोष को 3 मई, 2012 ई. के दिन आंशिकरूप से ही व्याप्त कर रही है। दूसरे दिन (4 मई को) वह सारादिन व्याप्त रहकर प्रदोष से पहले (सूर्यास्त से पहले) समाप्त हो जाती है, अतः पूर्व उद्धृत निर्णयानुसार प्रदोषव्रत इसवर्ष दूसरे ही दिन (4 मई, 2012 ई. को ही) रखा जाएगा, क्योंकि इसदिन सायाह्नरूप प्रदोष में त्रयोदशी व्याप्त है।

(4) श्रीगंगादशहरा (ज्येष्ठ शुक्ल–दशमी)

पूर्वाह्णव्यापिनी ज्येष्ठशुक्ल दशमी को पृथ्वी पर गंगावतरण हुआ था। इसीलिए पूर्वाह्णव्यापिनी दशमी के दिन 'गंगादशहरा' मनाया जाता है। यदि दशमी दो दिन पूर्वाह्णव्यापिनी हो तब निम्नांकित दस योगों (पदार्थों) में से अधिकतर योगों का संयोग जिस दिन हो, उसी दिन यह पर्व होता है। **ये दस योग इस प्रकार हैं –**

(1) ज्येष्ठमास, (2) शुक्लपक्ष, (3) दशमी तिथि, (4) बुधवार, (5) हस्तनक्षत्र, (6) व्यतिपात योग, (7) गरकरण, (8) आनन्द योग (बुध और हस्त के संयोग से उत्पन्न योग), (9) कन्यास्थ चन्द्र और (10) वृषस्थ रवि।

यदि दोनों दिन इन योगों की संख्या समान (5–5) हो जाए तो यह पर्व पहले दिन होगा– **"दशमी चैव कर्त्तव्या सदुर्गा मुनिसत्तम।"**

– (*स्कन्दपुराण*)

ज्येष्ठ अधिकमास होने पर गंगादशहरा उसी (अधिक) मास में मनाया जाता है, शुद्ध में नहीं–("दशहरासु नोत्कर्षः चतुर्ष्वपि युगादिषु"– (*ऋष्य शृंगः*)। लेकिन कुछ तीर्थस्थलों पर ज्येष्ठ मलमास होने पर गंगादशहरा शुद्ध ज्येष्ठ में मनाया जाता है, जो सर्वथा शास्त्रविरुद्ध है।

इसवर्ष 31 मई, 2012 ई. को ज्येष्ठमास, शुक्लपक्ष, दशमी 9 घं. 18 मि. तक, हस्तनक्षत्र 21 घं. 22 मि. तक तथा वृषस्थसूर्य एवं कन्यास्थ चन्द्र– इस प्रकार गंगादशहरा के घटक छः योग प्राप्त हैं। अतः ऊपर्युक्त प्रतिपादनानुसार इसवर्ष 31 मई, 2012 ई. को ही **श्रीगंगादशहरा** मनाया जाएगा। (**ध्यान रहे–** इसवर्ष व्यतीपात योग 31 मई, 2012 ई. को 11 घं. 10 मि. पर प्रारम्भ होता है। अतः यह गंगादशहरा का घटक नहीं बन सका, क्योंकि यह यहां दशमी तिथि का स्पर्श नहीं कर रहा है।)

(5) श्रीसत्यनारायण व्रत (ज्येष्ठ–पूर्णिमा)

यह व्रत प्रत्येक मास के शुक्लपक्ष की प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा में किया जाता है। कोई भी व्यक्ति स्वेच्छया इसे अन्य किसी भी दिन, किसी भी अन्य प्रदोषव्यापिनी तिथि में कर सकता है, ऐसा भी पुराणवाक्य है। लेकिन अधिकतर लोग इस व्रत को परम्परया प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा वाले दिन ही करते हैं।

यह नक्तव्रत है, अतः इसकी तिथि का निर्णय भी नक्तव्रत के समान ही होगा। तदनुसार दोनों दिन पूर्णिमा की प्रदोष में व्याप्ति एवं अव्याप्ति की स्थितियों में यह व्रत दूसरे ही दिन किया जाएगा–

"प्रदोषव्यापिनी नक्ते तिथिः व्याप्तिर्दिनद्वये।
अव्याप्तिर्वाऽथवांशेन व्याप्तिः स्यात्सर्वथोतरा।।"

–(*कालमाधव*)

ध्यान रहे– दोनों दिन पूर्णिमा की प्रदोष में अव्याप्ति की स्थिति में भी वह (पूर्णिमा) दूसरे दिन गौण प्रदोषकाल (सायाह्न) को तो अनिवार्यतः व्याप्त करती ही है।

इसवर्ष ज्येष्ठपूर्णिमा 3 जून, 2012 ई. को आंशिकरूप से प्रदोष को व्याप्त कर रही है। दूसरे दिन (4 जून को) वह प्रदोष में अव्याप्त है, अतः पूर्वोक्त निर्णयानुसार इसवर्ष यह व्रत 3 जून, 2012 ई. को ही किया जाएगा।

(6) रक्षाबन्धन (श्रावण–पूर्णिमा)

रक्षाबन्धन अपराह्णव्यापिनी श्रावण–पूर्णिमा में मनाया जाता है। भद्रा में यह निषिद्ध है – **"भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा।"**

जब पहिले दिन अपराह्न में भद्रा हो, दूसरे दिन पूर्णिमा मुहूर्त–त्रयव्यापिनी हो और भले ही वह वहां अपराह्न से पूर्व ही समाप्त हो जाए, तब भी दूसरे दिन ही अपराह्न में रक्षाबन्धन करना चाहिए। क्योंकि, उस समय साकल्यापादित पूर्णिमा का अस्तित्व होगा। 'पुरुषार्थ–चिन्तामणि' कार का वचन है,– **"यदा द्वितीयापराह्णात् पूर्वं समाप्ता, तदापि 'भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये..... ..... इति भद्रायां निषेधादुत्तरैद। तत्र तिथ्यनुरोधेन अपराह्णात्पूर्वम् अनुष्ठाने अपराह्णस्य सर्वथा बाधापत्तेः, अपराह्ने ज्योतिशशास्त्रप्रसिद्ध–तिथ्यभावेऽपि साकल्य–बोधित–तिथि– सत्त्वात्तत्रैव अनुष्ठानम्।"**

जब दूसरे दिन पूर्णिमा मुहूर्तत्रय–व्यापिनी न हो तब अपराह्न में साकल्यापादित पूर्णिमा भी नहीं होगी– ऐसी स्थिति में पहिले दिन भद्रा समाप्त होने पर प्रदोष के उत्तरार्ध में रक्षाबन्धन करना चाहिए। 'पुरुषार्थचिन्तामणि' का ही वाक्य है–**"यदा तूत्तरत्र मुहूर्त्तद्वय (त्रय) मध्ये किंचित् न्यूना पौर्णमासी तदापराह्ने सर्वथा तदभावात् , प्रदोष–पश्चिमौ यामौ दिनवत् कर्म चाचरेत्, इति पराशरात् भद्रान्ते प्रदोषयामेऽनुष्ठानम्।"**

पंजाब आदि अनेक प्रान्तों मे परम्परा के अनुसार रक्षाबन्धन क लिए अपराह्नकाल को स्वीकार नहीं किया जाता और मध्याह्न से पूर्व (विशेषतया प्रातःकाल में) ही रक्षाबन्धन कर लिया जाता है। लेकिन भद्रा में तो रक्षाबन्धन शास्त्रों द्वारा सर्वथा वर्जित है।

ग्रहणवेध (सूतक) तथा संक्रान्तिदिन में भी यह पर्व निर्बाध मनाया जाता है।

इसवर्ष 1 अगस्त, 2012 ई. को अपराह्न–व्यापिनी श्रावणपूर्णिमा भद्रादूषित है (भद्रा 21 घं. 58 मि. तक है)। दूसरे दिन 2 अगस्त, 2012 ई. को वह तीन मुहूर्तों से अधिक काल को व्याप्त कर रही है, अतः उपरोक्त विवेचनानुसार इसवर्ष रक्षाबन्धन 2 अगस्त, 2012 ई. को अपराह्न में (साकल्यापादित पूर्णिमा–तिथि में) किया जाएगा।

इसदिन अपराह्नकाल लगभग 13 घं. 50 मि. से 16 घं. 32 मि. तक रहेगा।

(7) दूर्वाष्टमी व्रत (भाद्र. शुक्ल–अष्टमी)

यह व्रत स्त्रियों द्वारा भाद्र. शुक्ल अष्टमी को किया जाता है। इस व्रत को **'रौहिण'** मुहूर्त्त (दिन के नवम मुहूर्त्त) में व्याप्त अष्टमी में करने का निर्देश है। रौहिण मुहूर्त्त के समय ज्येष्ठा और मूलनक्षत्र न हों – यह भी शास्त्र–निर्देश है। यदि ये नक्षत्र किसी स्थिति में वर्जित करने असम्भव हों तो इनके सम्पर्क में भी यह व्रत किया जा सकता है। अगस्त्य तारा के उदय (रात्रि में दृश्य) हो जाने पर इस व्रत का सर्वथा निषेध है (अगस्त्य तारा वर्षा ऋतु की लगभग समाप्ति के दिनों में रात्रि के समय दक्षिण की ओर दिखाई देने लगता है)। ध्यान रहे–कन्यार्क भी इस व्रत में वर्जित है। सिंहस्थ सूर्य के काल मे इस व्रत के अनुष्ठान को महत्त्व दिया गया है–

"शुक्ले भाद्रपदे मासि दूर्वा–संज्ञा तु साष्टमी।
सिंहार्के एव कर्त्तव्या न कन्यार्के कदाचन।।
सिंहस्थे सोत्तमा सूर्येऽनुदिते मुनिसत्तमे।" –(*स्कन्द*)

यदि भाद्र. शुक्ल अष्टमी से पहले ही अगस्त्य दृश्य हो जाए (रात्रि के समय आकाश में दिखाई देने लगे) तो शास्त्रकारों का कहना है, कि– ऐसी स्थिति में भाद्रपद शुक्ल से निरन्तर पूर्ववर्ती ऐसी अन्य रौहिणव्यापिनी किसी भी कृष्ण या शुक्ल पक्ष की अष्टमी के दिन यह व्रत करना चाहिए, जबकि अगस्त्य तारा अस्त (अदृश्य) हो। भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को अगस्त्य के दृश्य होने की स्थिति अधिकतर तब पैदा होती है, जबकि भाद्रपद मास अधिक हो जाए। अधिक मास में यह व्रत नहीं होता।

यद्यपि शुक्लाष्टमी परविद्धा ली जाती है, लेकिन दूर्वाष्टमी व्रत में इसे पूर्वविद्धा लेने का निर्देश है–

"श्रावणी दुर्गनवमी तथा दूर्वाष्टमी तिथिः।
पूर्वविद्धैव कर्त्तव्या शिवरात्रिर्बलेर्दिनम्।।" – (*पद्मपुराण*)

कालमाधवकार भी कहते हैं– **"दूर्वाष्टमी तु शुक्लाऽपि पूर्वविद्धा विधीयते।"** अतः यदि अष्टमी दो दिन रौहिणमुहूर्त्त में ज्येष्ठा और मूल से रहित अथवा सहित प्राप्त हो या दोनों दिन वह रौहिण का स्पर्श न करे तो यह व्रत पहिले दिन होगा।

ध्यान दें– 'अगस्त्य तारा' के उदयास्त की तारीखें अक्षांशभेद से भिन्न–भिन्न स्थलों के लिए भिन्न–भिन्न होती हैं। पंजाब एवं उसके पार्श्ववर्त्ती प्रान्तों में आजकल अगस्त्य का उदय लगभग 3 सितम्बर को हो रहा है।

इसवर्ष भाद्रपद अधिकमास है। द्वि.(शुद्ध) भाद्र. शुक्ल में अष्टमी को 23 सितंबर के दिन समस्त भारत में अगस्त्य उदित रहेगा। अतः इसदिन भारत में कहीं भी दूर्वाव्रत नहीं किया जा सकेगा। इसलिए इस व्रत को पूर्वोक्त नियमानुसार पूर्ववर्ती किसी निकटतम पक्ष की पूर्वविद्धा रौहिणव्यापिनी अष्टमी को सम्पन्न करना होगा। पूर्ववर्ती दो पक्ष तो अधिक भाद्रपद (मलमास) के हैं, अतः ये दोनों पक्ष भी इस व्रत के लिए विहित नहीं हैं। इस स्थिति में इसव्रत को प्रथम भाद्रपद कृष्ण की पूर्वविद्धा रौहिणव्यापिनी अष्टमी को ही सम्पन्न करना होगा। इस पक्ष में पूर्वविद्धा रौहिणव्यापिनी अष्टमी 9 अगस्त, 2012 ई. को है। इसदिन भारत के अक्षांश 19° से 37° तक (लगभग सारे उत्तरी भारत में) अगस्त्य अस्त भी रहेगा, अतः भारत के इस भाग में **दूर्वाष्टमी** व्रत इसी दिन (9 अगस्त, 2012 ई. को ही) किया जाएगा– यह स्पष्ट है।

9 अगस्त को रौहिणमुहूर्त्त लगभग 12 घं. 54 मि. से 13 घं. 47 मि. तक रहेगा।

(8) तृतीया का महालयश्राद्ध

पितृपक्ष (आश्विन कृष्णपक्ष) में किए जाने वाले श्राद्ध पार्वण–श्राद्ध हैं। इन श्राद्धों को अपराह्णव्यापिनी मृत्युतिथि में किया जाता है। यदि मृत्युतिथि दोनों दिन अपराह्ण में व्याप्त न हो तो पहले दिन श्राद्ध किया जाता है। यदि दोनों दिन मृत्युतिथि अपराह्ण के एकदेश को असमानता से (एक दिन अधिक और दूसरे दिन कम) व्याप्त करे तो वहां अधिक व्याप्ति वाले दिन श्राद्ध होता है।

इसवर्ष आश्विन–कृष्ण तृतीया तिथि दो दिन (2 और 3 अक्तू., 2012 ई. को) अपराह्णव्यापिनी है, अतः उपरोक्त नियमानुसार इस तिथि का श्राद्ध 2 अक्तूबर, 2012 ई. को किया जाएगा, क्योंकि तृतीया इस दिन अपराह्णकाल के अधिकतर भाग को व्याप्त कर रही है।

इसदिन (2 अक्तूबर, 2012 ई. को) अपराह्णकाल लगभग 13 घं. 17 मि. से 15 घं. 36 मि. तक है।

ध्यान दें– इसवर्ष (सं. 2069 वि. में) श्राद्धपक्ष में 3 अक्तूबर, 2012 ई. को कोई तिथिश्राद्ध नहीं होगा। इसदिन केवल भरणीश्राद्ध है।

(9) चतुर्थी का महालयश्राद्ध

जैसा कि ऊपर "तृतीया–महालयश्राद्ध" के निर्णय में भी लिख चुके हैं, महालय (आश्विन कृष्णपक्षीय) श्राद्ध पार्वणश्राद्ध होते हैं। ये श्राद्ध (पार्वण–श्राद्ध) अपराह्णव्यापिनी मृत्युतिथि के दिन किए जाते हैं। जैसा कि ऊपर भी लिखा जा चुका है– उभयत्र असमानता से अपराह्णव्यापिनी तिथि होने पर श्राद्ध उसी दिन किया जाता है, जिसदिन मृत्युतिथि अपराह्ण के अपेक्षाकृत अधिक भाग को व्याप्त करती है।

इसवर्ष चतुर्थी तिथि दो दिन (3 और 4 अक्तूबर, 2012 ई. को) अपराह्ण–व्यापिनी है। अतः उक्त नियमानुसार इस तिथि का श्राद्ध 4 अक्तूबर, 2012 ई. को ही किया जाएगा, क्योंकि इसदिन चतुर्थी अपराह्ण को 3 अक्तूबर से अधिक व्याप्त कर रही है।

इसदिन अपराह्ण लगभग 13 घं. 17 मि. से 15 घं. 36 मि. तक है।

(10) गोपाष्टमी (कार्त्तिक शुक्ल–अष्टमी)

कार्त्तिक शुक्ल–अष्टमी गोपाष्टमी है। यदि दो दिन अष्टमी प्राप्त हो तो परविद्धा अष्टमी के दिन यह पर्व मनाना चाहिए। क्योंकि, शुक्ल पक्ष की अष्टमी (दूर्वाष्टमी को छोड़कर) सर्वत्र परविद्धा ही ली जाती है–

" व्रतमात्रेऽष्टमी शुक्लपक्षे परा कृष्णपक्षे पूर्वा।– (*धर्मसिन्धुः*)

अपि च– दूर्वाष्टमी तु शुक्लाऽपि पूर्वविद्धा विधीयते। – (*कालमाधव*)

इसवर्ष (सं. 2069 वि. में) कार्त्तिक शुक्ल अष्टमी 20 व 21 नवम्बर, 2012 ई.– दोनों दिन व्याप्त है। लेकिन दूसरे दिन यह तीन मुहूर्त्तों से अल्प होने के कारण परविद्धा नहीं है। अतः इसवर्ष गोपाष्टमी

उक्त नियमानुसार पहले ही दिन (20 नवम्बर, 2012 ई. को ही) मनाई जाएगी।

इसदिन 9 घं. 00 मि. (लगभग) पर त्रिमुहूर्त्त–समाप्ति होती है।

(11) वैकुण्ठ चतुर्दशी (कार्तिक शुक्ल–चतुर्दशी)

कार्तिक शुक्ल–चतुर्दशी को 'वैकुण्ठ चतुर्दशी' मनाई जाती है। इसे मनाने की दो परम्पराएं हैं –

(1) कुछ श्रद्धालु इस दिन उपवास रखकर रात्रि में जागरण करके विष्णुपूजा करते हैं। ये लोग निशीथव्यापिनी चतुर्दशी स्वीकार करते हैं। इनके लिए निशीथव्यापिनी चतुर्दशी में इस पर्व को मनाने का विधान है। यदि दोनों दिन चतुर्दशी निशीथव्यापिनी हो तो प्रदोष और निशीथ दोनों कालों में चतुर्दशी जिस दिन व्याप्त हो, उसी दिन (अर्थात् दूसरे दिन) विष्णुपूजक भक्त वैकुण्ठ चतुर्दशी मनाते हैं– " **केचित्तु विष्णुपूजायामियं निशीथव्यापिनी ग्राह्या, दिनद्वये तद्व्याप्तौ निशीथ–प्रदोषोभय–व्यापिनी ग्राह्येत्याहुः।।"** – *(धर्मसिंधुः)*। चतुर्दशी यदि दोनों दिन निशीथ का स्पर्श न करे तो भी यह व्रत दूसरे दिन ही होगा।

(2) दूसरी परम्परा यह है कि– पहले दिन उपवास करके अरुणोदय–व्यापिनी चतुर्दशी में शिवपूजा करके बाद में प्रातःपारणा की जाती है। इस मत के अनुयायी लोग अरुणोदय–व्यापिनी चतुर्दशी जिस अहोरात्र में हो, उस दिन उपवास करते हैं। वे उसी दिन वैकुण्ठ चतुर्दशी मनाते हैं। चतुर्दशी दोनों दिन अरुणोदय–व्यापिनी हो तो पहले दिन उपवास और दूसरे दिन अरुणोदय में पूजा करनी चाहिए। यदि चतुर्दशी दोनों दिन अरुणोदय का स्पर्श न करे तो चतुर्दशी तिथि वाले दिन अहोरात्र में अरुणोदय के समय पूजा करें और पूजा से पहले इसी अहोरात्र में उपवास करना चाहिए। यहां *धर्मसिन्धु* का वचन है–

" **पूर्वेद्युरुपवासं कृत्वा अरुणोदयव्यापिन्यां चतुर्दश्यां शिवं सम्पूज्य, प्रातः पारणं कार्यम्। तथा च– चतुर्दशीयुक्तारुणोदयवति अहोरात्रे उपवासः फलितः। उभयत्रारुणोदयव्याप्तौ परत्रारुणोदये पूजा, पूर्वत्र उपवासः। उभयत्राव्याप्तौ चतुर्दशीयुक्ताहोरात्रे एव अरुणोदये पूजा पूर्वत्रोपवासश्च।"**

इसवर्ष चतुर्दशी 26 नवम्बर, 2012 ई. को प्रदोष एवं निशीथ को व्याप्त कर रही है। अतः विष्णुपूजकों के लिए इसी दिन यह व्रत (उपवास) होगा और वे इसी दिन निशीथ में विष्णु–पूजन करेंगे। जो लोग शिवभक्त हैं, उन्हें भी 26 नवम्बर को ही अरुणोदयव्यापिनी चतुर्दशी के दिन व्रत (उपवास) रखकर अरुणोदय में शिवपूजन करके 27 नवम्बर, 2012 ई. को प्रातःपारणा करनी होगी। विष्णुभक्तों की पारणा भी इसी दिन होगी।

(12) मोक्षदा एकादशी व्रत (मार्ग. शुक्ल–एकादशी)

द्वादशी की वृद्धि होने पर स्मार्त्त द्वादशीयुता एकादशी के दिन और वैष्णव षष्टिघट्यात्मक द्वादशी के दिन व्रत करते हैं। ध्यान रहे– दशमी द्वारा अरुणोदय के वेध और अवेध–दोनों स्थितियों में यह नियम भी समानरूपेण चरितार्थ होता है।

इस स्थिति में माधव और हेमाद्रि एकमत नहीं हैं। यहां माधव के मतानुसार स्मार्त्तों का व्रत द्वादशीयुता एकादशी के दिन और वैष्णवों का षष्टिघट्यात्मक द्वादशी के दिन होना चाहिए, जबकि हेमाद्रि के मतानुसार स्मार्त्तों का व्रत भी वैष्णवों के व्रत के साथ षष्टिघट्यात्मक द्वादशी के दिन ही होना चाहिए। लेकिन यहां माधवमत ही बहुसम्मत है।

इसवर्ष मार्ग. शुक्ल द्वादशी की वृद्धि है। यह 24 दिसम्बर, 2012 ई. को अहोरात्रव्याप्नी है, अतः बहुसम्मत माधवमतानुसार इसवर्ष मोक्षदा एकादशी का व्रत स्मार्त्त 23 दिसम्बर, 2012 ई. को और वैष्णव 24 दिसम्बर, 2012 ई. को करेंगे।

(13) महोदय योग (माघी अमा)

माघी अमा का रविवार, श्रवण नक्षत्र और व्यतीपात योग– इन तीनों से संयोग होने पर 'अर्धोदय योग' बनता है, जो स्नान, दान, जप आदि के लिए करोड़ों सूर्यग्रहणों का माहात्म्य रखता है–

" अमार्कपात–श्रवणैः युक्ता चेत्पौष–माघयोः।
अर्धोदयः स विज्ञेयः कोटि–सूर्यग्रहैः समः।।" –(महाभारत)

यदि यह माघी अमा रविवार, श्रवण और व्यतीपात में से किन्हीं दो से ही युक्त हो तो **'महोदय योग'** कहलाता है– **किंचिन्न्यूनो महोदयः** । इस योग का भी अनेकों सूर्यग्रहणों के समान माहात्म्य माना गया है।

ये दोनों योग दिन के समय ही मान्य हैं, रात्रि में नहीं।

इसवर्ष (सं. 2069 वि. में) माघी अमा शनिवार (9 फरवरी, 2013 ई.) को 15 घं. 19 मि. के बाद प्रारम्भ होती है और यहां श्रवण नक्षत्र तथा व्यतीपात योग– दोनों सूर्यास्तबाद तक विद्यमान हैं। इसप्रकार यहां माघी अमा 15 घं. 19 मि. से सूर्यास्त–पर्यन्त श्रवण और व्यतीपात से तो युक्त है, लेकिन यहां रविवार का योग नहीं है, यानी **अर्धोदय** के तीन घटकों की जगह यहां अमा के समय केवल दो ही घटक उपलब्ध हैं। अतः किंचिन्न्यून होने से इसदिन 15 घं. 19 मि. के बाद सूर्यास्त तक **'महोदय योग'** ही यहां बना है।

(14) वसन्त पञ्चमी (माघ शुक्ल–पंचमी)

वसन्त पंचमी पूर्वाह्णव्यापिनी माघ शुक्ल पंचमी को मनाई जाती है। जब पंचमी केवल दूसरे ही दिन पूर्वाह्ण को व्याप्त करती हो तभी यह पर्व दूसरे दिन मनाया जाता है, अन्यथा इसे पहले ही दिन मनाने का शास्त्रनिर्णय है–

" इयं परत्रैव पूर्वाह्णव्याप्तौ परा अन्यथा पूर्वैव।।" – (*धर्मसिन्धु*)

इसवर्ष पंचमी दो दिन (14–15 फरवरी, 2013 ई. को) पूर्वाह्णव्यापिनी है। अतः उक्त वाक्यानुसार **वसन्त पञ्चमी** इसवर्ष पहले ही दिन (14 फरवरी, 2013 ई. को ही) मनानी होगी।

स्थानीय सूर्योदय से दोपहर 12 बजे तक का काल पूर्वाह्ण कहा जाता है।

(15) होलिकादहन (फाल्गु. पूर्णिमा)

भद्रारहित प्रदोषकाल–व्यापिनी फाल्गुन पूर्णिमा में **'होलिकादहन'** किया जाता है। यदि दोनों दिन पूर्णिमा प्रदोषव्यापिनी हो अथवा दूसरे दिन वह प्रदोष के एकदेश को व्याप्त करे तो पहिले दिन भद्रादोष के कारण होलिकादहन दूसरे दिन किया जाता है। यदि दूसरे दिन प्रदोष का वह स्पर्श न करे और पहिले दिन प्रदोष में भद्रा हो, **किञ्च** – दूसरे

दिन पूर्णिमा साढे तीन प्रहर तक अथवा उससे ज्यादा हो एवं अगले दिन प्रतिपदा वृद्धिगामिनी हो तब दूसरे दिन ही प्रदोषव्यापिनी प्रतिपदा में **'होलिकादहन'** होता है। यदि यहां प्रतिपदा का ह्रास हो तब पहिले दिन भद्रा के पुच्छ में अथवा भद्रा के मुख को छोड़कर भद्रा में ही **'होलिकादहन'** किया जाता है। दूसरे दिन प्रदोष को पूर्णिमा स्पर्श न करे और पहिले दिन निशीथ से पहिले ही भद्रा समाप्त हो जाए तो वहां भद्रासमाप्ति पर होलिकादहन किया जाए। यदि यहां भद्रा निशीथ के बाद समाप्त हो रही हो तो भद्रामुख को छोड़कर भद्रा में ही होलिकादीपन होना चाहिए। यदि प्रदोष में भद्रामुख हो तो भद्रा के बाद अथवा प्रदोष के बाद होलिकादहन किया जाए । यदि दोनों दिन पूर्णिमा प्रदोष को स्पर्श न करे तो पहिले ही दिन भद्रापुच्छ में होली जलाई जाए । यदि वहां भद्रापुच्छ भी न मिले तो भद्रा में ही प्रदोष के अनन्तर होलिकादीपन करे।

पूर्णिमा की भद्रा के मुख एवम् पुच्छ का निर्णय इस प्रकार किया जाएगा–

भद्रा के तृतीय चरण का समाप्तिकाल ज्ञात कीजिए। यह भद्रा के पुच्छ की समाप्ति और मुख का प्रारम्भकाल है। इसमें से तीन घड़ी (1 घं. 12 मि.) घटावें और पांच घड़ी (2 घं. 00 मि.) जोड़ने पर क्रमशः पुच्छ का प्रारम्भ और मुख का समाप्तिकाल निकल आएगा।

कदाचित् उस समय ग्रहण हो तो स्नान करके होलिका जलानी चाहिए।

इसवर्ष (सं. 2069 वि. में) पूर्णिमा केवल 26 मार्च, 2913 ई. को ही प्रदोषव्यापिनी है। 27 मार्च को तो वह प्रदोष को बिल्कुल स्पर्श नहीं करती है। 26 मार्च को भद्रा 27 घं. 41 मि. तक है, यानी वह निशीथ से कहीं बाद तक विद्यमान है, अतः उपरोक्त निर्देशानुसार इसवर्ष **होलिकादहन** 26 मार्च, 2013 ई. को भद्रा के मुख को त्यागकर, भद्रा में ही करना होगा। इसदिन भद्रा का मुख 24 घं. 52 मि. से 26 घं. 52 मि. तक है। इस प्रकार स्पष्ट है– इसदिन भद्रामुख प्रदोष से काफी दूर अर्धरात्रि से भी बाद विद्यमान है। अतः 26 मार्च, 2013 ई. को भद्रामुख से रहित प्रदोषकाल में **होलिकादहन** निःशंक किया जा सकता है।

श्री वि. सं. २०६९, शाक १९३४, चैत्र शुक्ल पक्ष १

(२३ मार्च से ६ अप्रैल तक, सन् २०१२ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त ऋतु।

२६ मार्च से बु. प्रातः पूर्व में दृश्य हो जाएगा। सायं गु.शु. पश्चिम में और मं. पूर्व में होगा । श. प्रातः पश्चिम में दिखाई देगा ।

विश्वावसु संवत्सर

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
															चैत्र	मार्च	चैत्र	र.उ.सा												
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३०	१४	१	शु.	३८	५४	उ.भा.	१५	१८	ब्र.	५०	२८	किं.	६	३१	१०	२३	३	२९	मीन			६	२६	१८	३२	११	८	४३	४९	चान्द्र संवत्सर २०६९ वि. प्रारम्भ, वासन्त नवरात्र (A)
३०	१९	२	श.	४४	३५	रेव.	२१	५७	ऐं.	५२	२२	बा.	११	४४	११	२४	४	३०	मेष	२१	५७	६	२५	१८	३३	११	९	४३	२१	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, पंचक समाप्त २१/५७, शुक्र कृत्ति. (B)
३०	२३	३	र.	५०	५८	अश्वि.	२९	२०	वै.	५४	४७	तै.	१७	४६	१२	२५	५	ज.१	मेष			६	२४	१८	३३	११	१०	४२	५०	गौरी तृतीया (गणगौर), आन्दोलन तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती, (C)
३०	२८	४	चं.	५७	४४	भर.	३७	१२	वि.	५७	२८	व.	२४	२१	१३	२६	६	२	वृष	५४	१२	६	२३	१८	३४	११	११	४२	१७	भ. २४/२१ से ५७/४४ तक, वक्री बुध पू.भा. में ३६/१५,
३०	३३	५	मं.	६०	०	कृत्ति.	४५	१०	प्री.	६०	०	ब.	३१	६	१४	२७	७	३	वृष			६	२१	१८	३४	११	१२	४१	४२	श्री(लक्ष्मी)पञ्चमी, नागपञ्चमी, हयव्रत,
३०	३७	५	बु.	४	२९	रोहि.	५२	४१	प्री.	०	७	बा.	४	२९	१५	२८	८	४	वृष			६	२०	१८	३५	११	१३	४१	५	शुक्र वृष में २०/००,
३०	४२	६	गु.	१०	३२	मृग.	५९	१२	आ.	२	२०	तै.	१०	३२	१६	२९	९	५	मिथुन	२६	९	६	१९	१८	३६	११	१४	४०	२६	बुध पूर्व में उदित ६ घं. १६ मि. (भा.स्टैं.टा.), स्कन्द (D)
३०	४७	७	शु.	१५	२४	आर्द्रा	६०	०	सौ.	३	४४	व.	१५	२४	१७	३०	१०	६	मिथुन			६	१८	१८	३६	११	१५	३९	४४	भ. १५/२४ से ४६/५९ तक, सूर्य रेवती में ५९/०,(E)
३०	५१	८	श.	१८	३४	आर्द्रा	४	१६	शो.	३	५३	ब.	१८	३४	१८	३१	११	७	कर्क	५१	४६	६	१६	१८	३७	११	१६	३८	५९	श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी [पुनर्वसु ७घं. ५९मि. बाद(भा.स्टैं.टा.)],
३०	५६	९	र.	१९	४२	पुन.	७	२२	अ./सु.	२ / ५९	२८ / २५	कौ.	१९	४२	१९	अप्रै.१	१२	८	कर्क			६	१५	१८	३८	११	१७	३८	१३	श्रीरामनवमी[पुनर्वसु ९ घं./१२ मि.(भा.स्टैं.टा.)तक], (F)
३१	१	१०	चं.	१८	३८	पुष्य	८	२२	धृ.	५४	३८	ग.	१८	३८	२०	२	१३	९	कर्क			६	१४	१८	३८	११	१८	३७	२४	भ. ४७/०१ बाद, वक्री बुध कुम्भ में २८/२१, नवरात्र-पारणा,
३१	५	११	मं.	१५	२५	आश्ले.	७	१४	शू.	४८	१४	वि.	१५	२५	२१	३	१४	१०	सिंह	७	१४	६	१३	१८	३९	११	१९	३६	३३	भ. १५/२५ तक, कामदा एकादशी व्रत (स.),
३१	१०	१२	बु.	१०	१६	मघा / पू.फा.	४ / ५९	९ / २१	गं.	४०	२४	बा.	१०	१६	२२	४	१५	११	सिंह			६	१२	१८	३९	११	२०	३५	३९	बुध मार्गी २३/४२, गुरु भरणी ३ में १३/०७, श्रीविष्णु-(G)
३१	१४	१३	गु.	३	२९	उ.फा.	५३	२२	वृ.	३१	२५	तै.	३	२९	२३	५	१६	१२	कन्या	१२	५८	६	१०	१८	४०	११	२१	३४	४४	भ. ५५/२६ बाद, श्री शिवदमनोत्सव, श्रीमहावीर जयन्ती(जैन),
अवम		१४	गु.	५५	२६	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
३१	१९	१५	शु.	४६	३८	हस्त	४६	३३	धृ.	२१	३६	वि.	२१	२	२४	६	१७	१३	कन्या			६	९	१८	४१	११	२२	३३	४६	भ. २१/२ तक, बुध मीन में २१/४८, श्रीहनुमान् जयन्ती(H)

(A) प्रारम्भ, वर्षफलश्रवण, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण, (B) में ५७/५०, चन्द्रव्रत, (C) जमद-उल-अव्वल मु. प्रा., (D) षष्ठी (देखें पृ. 103), (E) वक्री शनि चित्रा ३ में ५६/४८, (F) नवरात्र समाप्त, अप्रैल प्रारम्भ, (G) दमनोत्सव, अनंग त्रयोदशी (पूर्वविद्धा), प्रदोष व्रत, (H) (द.भा.), वैशाखस्नान प्रारम्भ, चैत्री पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ३१ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	४	११	०	१	६	७	१
१६	१८	१०	०	१९	२	३	१४	१४
३९	४२	५५	४४	३	३२	१६	१०	१०
०	३९	२९	५	३९	४७	५५	३५	३५
५९	७५१	१०	२२	१३	५७	४	३	३
१४	१३	३१	१०	११	९	२०	११	११
		व.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा. ४	आर्द्रा ४	मघा ४	पू.भा. ४	भर. २	कृत्ति. २	चित्रा ३	अनु. ४	रोहि. २

कुण्डली सूर्योदय (३१ मार्च)

१ गु.
११
शु. २ के.
सू.१२ बु.
१०
चं. ३
९
४
६
८ रा.
मं. ५
७ श.

लोक भविष्य:- संवत् २०६९ वि. का प्रारम्भ शुक्रवार से है, वर्षेश एवं संवत् का मन्त्रीपद दोनों शुक्र को ही प्राप्त है- अतः इसवर्ष कुछ देशों में ज्वालामुखीविस्फोट, भयंकर अग्निकाण्ड एवं राजनैतिक घोटालों से जनता स्तब्ध रहेगी- "स्वयं राजा स्वयं मन्त्री अग्निचौरादिजं भयम्।" लेकिन चैत्र चान्द्रमास में ५ शुक्रवार होने से भारतीय जनमानस सुख-समृद्धि की ओर अग्रेसर रहे; देश में सुभिक्ष रहे-"शुक्रस्य पञ्चवारा स्युर्यत्र मासे निरन्तरम् । प्रजावृद्धिः सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तते।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में तिलहन, रुई, सोना, चान्दी एवं अनाजों में कुछ मन्दा रहे । २८ मार्च के लगभग रुई, कपास में अच्छी मन्दी के झटके के बाद तेज़ी बने । घी, लालमिर्च, तेल, तिलहन एवं अनाज तेज़ रहें । ४ अप्रैल को गुड़, खाण्ड तेज़ हों । **आकाशलक्षण :-** मार्च २६, २८, २९; अप्रैल २, ६ को आसाम, मुम्बई, पश्चिमी राजस्थान, हि.प्र. एवं उ.प्र. के कुछ भागों में तेज़ हवाओं के साथ कहीं खण्डवृष्टि एवं बादलचाल हो।

कुण्डली सूर्योदय (६ अप्रै.)

१ गु.
११ बु.
शु. २ के.
सू.१२
१०
३
९
४
चं. ६
८ रा.
मं. ५
७ श.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ६ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	४	१०	०	१	६	७	१
२२	११	१०	२९	२०	८	२	१३	१३
३३	१४	४	५५	२३	७	५३	५१	५१
४७	११	५	४१	२९	२४	२८	३०	३०
५९	६०४	५	११	१३	५३	४	३	३
०	३३	४९	३	२९	४२	३०	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रेव. २	हस्त १	मघा ४	पू.भा. ३	भर. ३	कृत्ति. ४	चित्रा ३	अनु. ४	रोहि. २

श्री वि. सं. २०६९, शाक १९३४, वैशाख कृष्ण पक्ष २

(७ से २१ अप्रैल तक, सन् २०१२ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त–ग्रीष्म ऋतु।

सायं गु. पश्चिमक्षितिज में और शु. कुछ ऊपर उठा होगा। इस समय मं. पूर्व में होगा। प्रातः बु. पूर्व में और श. पश्चिम में देखा जा सकता है।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र. चैत्र	अं. अप्रैल	श. चैत्र	मु. ज.उ.अ.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३१	२३	१	श.	२७	३०	चित्रा	१९	२४	व्या.	११	२०	बा.	१२	४	२५	७	१८	१४	तुला	१२	५९	६	८	१८	४१	११	२३	३२	४७	
३१	२८	२	र.	२८	२८	स्वाती	१२	२२	ह. व.	० ५०	५५ ४७	तै.	२	५९	२६	८	१९	१५	तुला			६	७	१८	४२	११	२४	३१	४५	भ. ५४/११ बाद, शुक्र रोहि. में ५/०४,
३१	३२	३	चं.	१९	५५	विशा.	२५	५२	सि.	४१	१२	वि.	१९	५५	२७	९	२०	१६	वृश्चिक	१२	२५	६	६	१८	४३	११	२५	३०	४१	भ. १६/५५ तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
३१	३७	४	मं.	१२	१४	अनु.	२०	१५	व्य.	३२	२७	बा.	१२	१४	२८	१०	२१	१७	वृश्चिक			६	४	१८	४३	११	२६	२९	३६	प्लूटो वक्री ३६/२८,
३१	४१	५	बु.	५	४३	ज्येष्ठा	१५	५९	व.	२४	४३	तै.	५	४३	२९	११	२२	१८	धनु	१५	५९	६	३	१८	४४	११	२७	२८	२८	
३१	४६	६	गु.	०	३२	मूल	१२	५३	प.	१८	११	व.	०	३२	३०	१२	२३	१९	धनु			६	२	१८	४५	११	२८	२७	१९	भ. ०/३२ से २८/४४ तक,
अवम		७	गु.	५६	५६	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	००	०	०	००	०	०	०	०	सप्तमी तिथिक्षय,
३१	५०	८	शु.	५४	५६	पू.षा.	११	२६	शि.	१२	५५	बा.	२५	५६	वै.१	१३	२४	२०	मकर	२६	१९	६	१	१८	४५	११	२९	२६	८	सं. सूर्य अश्वि. मेष में ३३/१५, मु. ४५, पुण्यकाल (A)
३१	५५	९	श.	५४	२९	उ.षा.	११	३४	सि.	८	५५	तै.	२४	४२	२	१४	२५	२१	मकर			६	०	१८	४६	०	०	२४	५६	मंगल मार्गी ८/२७,
३१	५९	१०	र.	५५	३१	श्रव.	१३	१२	सा.	६	८	वि.	२५	०	३	१५	२६	२२	कुम्भ	४४	३३	५	५९	१८	४६	०	१	२३	४१	भ. २५/० से ५५/३१ तक, पंचक प्रारम्भ ४४/३३,
३२	४	११	चं.	५७	५३	धनि.	१६	१५	शु.	४	३०	ब.	२६	४२	४	१६	२७	२३	कुम्भ			५	५८	१८	४७	०	२	२२	२५	श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती, वरुथिनी एकादशी व्रत (स्मा.),
३२	८	१२	मं.	६०	०	शत.	२०	३१	शु.	३	५०	कौ.	२९	३८	५	१७	२८	२४	कुम्भ			५	५७	१८	४८	०	३	२१	८	वरुथिनी एकादशी व्रत (वै.),
३२	१२	१२	बु.	१	२४	पू.भा.	२५	५२	ब्र.	४	८	तै.	१	२४	६	१८	२९	२५	मीन	९	२७	५	५५	१८	४८	०	४	१९	४८	गुरु भरणी ४ में ५१/५७, प्रदोष व्रत,
३२	१७	१३	गु.	५	५८	उ.भा.	३२	७	ऐं.	५	१०	व.	५	५८	७	१९	३०	२६	मीन			५	५४	१८	४९	०	५	१८	२७	भ. ५/५८ से ३८/३८ तक, सूर्य सायन वृष में ३६/३०, (B)
३२	२१	१४	शु.	११	१९	रेव.	३९	६	वै.	६	४९	श.	११	१९	८	२०	३१	२७	मेष	३९	६	५	५३	१८	५०	०	६	१७	४	पंचक समाप्त ३६/०६,
३२	२५	३०	श.	१७	२०	अश्वि.	४६	३६	वि.	८	५९	ना.	१७	२०	९	२१	वै.१	२८	मेष			५	५२	१८	५०	०	७	१५	४०	अगस्त्य अस्त, शनैश्चरी अमा, शक वैशाख प्रारम्भ,

(A) मध्याह्न बाद, बुध उ.भा. में ३८/५२, वैशाखी (पं.), मेष संक्रान्ति, (B) ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १३ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	४	११	०	१	६	७	१
२९	२३	६	२	२१	१४	२	१३	१३
२६	४७	३६	५१	५८	६	२१	२६	२६
६	४४	२८	५१	३६	५	३४	१५	१५
५८	८०३	०	४२	१३	४८	४	३	३
४७	२२	२६	३	४४	४४	३६	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रेव. ४	पू.षा. ४	मघा ३	पू.भा. ४	भर. ३	रोहि. २	चित्रा ३	अनु. ४	रोहि. २

कुण्डली सूर्योदय (१३ अप्रै.)

भाव	ग्रह
१	गु.
११	
२	शु., के.
१२	सू., बु.
१०	
३	
९	चं.
४	
६	
८	रा.
५	मं.
७	श.

लोक भविष्य:- वैशाख कृष्ण प्रतिपदा शनिवारी है एवं वैशाख चान्द्रमास में पांच शनिवार होने से भारत किंवा किसी मुस्लिम राष्ट्र में कहीं किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन/ हत्या से शोक व्याप्त हो एवं शासनसत्ता में कहीं विशेष परिवर्तन करने को विवश होना पड़े। उग्रवादजन्य किसी घटनाविशेष से कहीं भारी जनधनहानि के योग भी बनते हैं- " अथवा दैवयोगेन शनिवारो भवेद्यदि । जलशोषः प्रजानाशः छत्रभंगस्तदा भवेत् ॥" इस मास में पांच रविवार भी कहीं छत्रभंग (सत्तापरिवर्तन), कहीं अग्निकाण्ड, भयंकर भूकम्प एवं महंगाई से जनाक्रोश का कारण बनेंगे- "ईशानदेशभंगश्च वह्निदाहो महर्घता ॥"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में चान्दी, सोना, तेल, तिलहन, घी, गुड़, खाण्ड, दाख, छुहारा, सुपारी एवं अन्न मन्दे रहें। १३ अप्रैल को तिलहन, सोना, चान्दी, तांबा, लौंग, इलायची, मेथी, अनाज, रुई, कपास, घी, बादाम, गुड़, खाण्ड तेज़ रहें। १८ अप्रैल के बाद बाज़ार मन्दे हो सकते हैं। **आकाशलक्षण:-** अप्रै. ८ से १५ एवं १८ के लगभग आसाम, प. राजस्थान, हि. प्र., जम्मू-काश्मीर, मुम्बई एवं उ.प्र. के कुछ भागों में कहीं बादलवाल, कहीं वर्षाबूंदि व कहीं बादुवेग के आसार बनते हैं।

कुण्डली सूर्योदय (२१ अप्रै.)

भाव	ग्रह
२	शु., के.
१२	बु.
१	सू., चं., गु.
३	
११	
४	
१०	
५	मं.
७	श.
९	
६	
८	रा.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २१ अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	४	११	०	१	६	७	१
७	३	६	१०	२३	२०	१	१३	१३
१५	५६	५५	०	४६	१४	४४	३	३
४०	५८	४८	१३	३१	२३	४३	४६	४६
५८	७१०	५	६६	१३	४१	४	३	३
३३	१४	११	३८	५६	१८	३४	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अश्वि. ३	अश्वि. २	मघा ३	उ.षा. ३	भर. ४	रोहि. ४	चित्रा ३	अनु. ३	रोहि. १

श्री वि. सं. २०६९, शाक १९३४, वैशाख शुक्ल पक्ष ३																तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(२२ अप्रैल से ६ मई तक, सन् २०१२ ई.) उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति काल			प्र. वैशाख	अं. अप्रैल	श. वैशाख	मु. ज.उ.ल.				सूर्योदय		सूर्यास्त						२ मई से गु. सायं पश्चिम में दीखना बन्द हो जाएगा । इस समय शु. पश्चिम में और मं. याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में होगा । प्रातः बु. पूर्व में और श. पश्चिमक्षितिज में होगा ।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.							घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३२	२९	१	र.	२३	४७	भर.	५४	२८	प्री.	११	३१	ब.	२३	४७		१०	२२	२	२९	मेष			५	५१	१८	५१	०	८	१४	१३	चन्द्रदर्शन, मु. १५,
३२	३४	२	चं.	३०	२६	कृत्ति.	६०	०	आ.	१४	१५	कौ.	३०	२६		११	२३	३	ज.१	वृष	११	२९	५	५०	१८	५२	०	९	१२	४४	श्रीशिवाजी जयन्ती, जमद उस्सानी मु. प्रा.,
३२	३८	३	मं.	३६	५७	कृत्ति.	२	२३	सौ.	१६	५७	तै.	३	४१		१२	२४	४	२	वृष			५	४९	१८	५२	०	१०	११	१४	श्रीपरशुराम जयन्ती (देखें पृ. 103), अक्षयतृतीया [रोहिणी (A)
३२	४२	४	बु.	४२	५९	रोहि.	१०	३	शो.	१९	२२	व.	९	५८		१३	२५	५	३	मिथुन	४३	३८	५	४८	१८	५३	०	११	९	४१	भ. ६/५८ से ४२/५६ तक, शुक्र मृग. में ४३/३४,
३२	४६	५	गु.	४८	५	मृग.	१७	१	अ.	२१	१३	ब.	१५	३२		१४	२६	६	४	मिथुन			५	४७	१८	५४	०	१२	८	६	बुध रेवती में ३१/४३, श्रीशंकराचार्य जयन्ती,
३२	५०	६	शु.	५१	५१	आर्द्रा	२२	५३	सु.	२२	१०	कौ.	१९	५८		१५	२७	७	५	मिथुन			५	४६	१८	५४	०	१३	६	३०	सूर्य भरणी में १३/१२, श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती,
३२	५४	७	श.	५३	५६	पुन.	२७	१७	धृ.	२१	५८	ग.	२२	५३		१६	२८	८	६	कर्क	११	२१	५	४५	१८	५५	०	१४	४	५१	भ. ५३/५६ बाद, श्रीगंगाजन्म,
३२	५८	८	र.	५४	६	पुष्य	२९	५३	शू.	२०	२१	वि.	२४	१		१७	२९	९	७	कर्क			५	४४	१८	५६	०	१५	३	१०	भ. २४/०१ तक, गुरुवार्धक्य प्रारम्भ १८ घं. ५८ मि. (भा.स्टैं.टा.),
३३	२	९	चं.	५२	१४	आश्ले.	३०	३३	गं.	१७	११	बा.	२३	१०		१८	३०	१०	८	सिंह	३०	३३	५	४३	१८	५६	०	१६	१	२७	श्रीजानकी जयन्ती,
३३	६	१०	मं.	४८	२३	मघा	२९	१४	वृ.	१२	२४	तै.	२०	१८		१९	म.१	११	९	सिंह			५	४२	१८	५७	०	१६	५९	४२	मई प्रारम्भ,
३३	१०	११	बु.	४२	४४	पू.फा.	२६	३	ध्रु. व्या.	६ ५८	४ १७	व.	१५	३३		२०	२	१२	१०	कन्या	३९	५७	५	४२	१८	५८	०	१७	५७	५४	भ. १५/३३ से ४२/४४ तक, गुरु अस्त १८घं. ५८मि.(B)
३३	१४	१२	गु.	३५	३३	उ.फा.	२१	१४	ह.	४९	२२	ब.	९	८		२१	३	१३	११	कन्या			५	४१	१८	५८	०	१८	५६	५	गुरु कृत्ति. १ में ५/२२, प्रदोषव्रत (देखें पृ. 103),
३३	१८	१३	शु.	२७	१३	हस्त	१५	९	व.	३९	३४	कौ.	१	२३		२२	४	१४	१२	तुला	४१	४२	५	४०	१८	५९	०	१९	५४	१५	श्रीनृसिंह जयन्ती,
३३	२१	१४	श.	१८	६	चित्रा	८	१२	सि.	२९	११	व.	१८	६		२३	५	१५	१३	तुला			५	३९	१९	०	०	२०	५२	२२	भ. १८/०६ से ४३/२१ तक, बुध अश्वि. मेष में (C)
३३	२५	१५	र.	८	३७	स्वाती विशा.	० ५२	४६ २१	व्य.	१८	३६	ब.	८	३७		२४	६	१६	१४	वृश्चिक.	४०	९	५	३८	१९	०	०	२१	५०	२७	वैशाखी पूर्णिमा, श्रीबुद्ध पूर्णिमा, श्रीबुद्ध जयन्ती, (D)

गुरु अस्त–2 मई

(A) नक्षत्र ६ घं. ४७ मि. बाद (भा.स्टैं.टा.), (B) (भा.स्टैं.टा.), मोहिनी एकादशी व्रत (स.), (C) ३८/२७, श्रीकूर्म जयन्ती, (D) श्री सत्यनारायण व्रत, वैशाखस्नान समाप्त,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २६ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	४	११	०	१	६	७	१
१५	१०	१०	१६	२५	२५	१	१२	१२
३	७	५५	५६	४२	११	८	३८	३८
१०	६	२८	१४	०	२५	४१	२३	२३
५८	७७६	१०	८४	१४	३१	४	३	३
१७	१	१४	४३	८	१०	२४	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१	३	४	१	४	१	३	३	१
भर.	पुष्य	मघा	रेव.	मृग.	मृग.	चित्रा	अनु.	रोहि.

कुण्डली सूर्योदय (२६ अप्रै.)

शु. २ के.
१२ बु.
३
१ सू. गु.
११
चं. ४
१०
मं. ५
श. ७
९
६
८ रा.

लोकभविष्य:- इस पक्ष में गुरु, सूर्य का शनि के साथ समसप्तकयोग शुभ नहीं! राजनैतिक गतिविधि में गतिरोधक तत्त्व सक्रिय होंगे । कहीं विस्फोट व उग्रवादजन्य विभीषिका जनधनहानि करे-" यदा जीवयुतो मन्दो जीवाद् वा सप्तमे स्थितः। तदा प्रजाः विनश्यन्ति भूयश्चान्न-परिक्षयः।।" खड़ी फसलों को हानि हो । शनि वक्री है एवं राहु के समीपस्थ है, अतः कहीं प्राकृतिक आपदा एवं यानदुर्घटना से हानि के संकेत मिलते हैं ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में नमक, सरसों, अलसी तेज़ रहे । २५ अप्रैल से २ मई तक घी, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना, चान्दी, तांबा, मूंगा, गेहूं, जौ, चना, चावल, मोठ, अलसी, रुई, सरसों, लालमिर्च तेज़ रहें। ३ से ५ मई तक गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी, दूध, घी, दालवाना एवं मोटे अनाजों में मन्दे का वातावरण रहे । ५ मई को चान्दी में खास मन्दी बने । आकाशलक्षण:- अप्रैल २५, २६, २७; मई २, ३, ५, ६ को तिरुवनन्तपुरम्, आसाम, पूर्वी उड़ीसा, विन्ध्यप्रदेश, हि.प्र., मुम्बई, भूटान, सिक्किम में वर्षा हो । उ.भा. में गर्मी का प्रकोप रहे ।

कुण्डली सूर्योदय (६ मई)

शु. २ के.
१२
सू.
३
बु. १ गु.
११
४
१०
मं. ५
श. ७ चं.
९
६
८ रा.

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ६ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	४	०	०	१	६	७	१
२१	१९	१२	०	२७	२८	०	१२	१२
५०	४२	१८	३४	२१	१५	३८	१६	१६
२७	३७	४६	३	१२	५७	४६	८	८
५८	६१२	१४	६८	१४	१९	४	३	३
४	५६	१	३१	१२	२४	६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३	४	४	१	१	२	३	३	१
भर.	स्वा.	मघा	अश्वि.	कृत्ति.	मृग.	चित्रा	अनु.	रोहि.

श्री वि.सं. २०६९, शाक १९३४, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ४															तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(७ से २० मई तक, सन् २०१२ ई.) उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. वैशाख	अं. मई	श. वैशाख	मु. ज.उस्सा.				सूर्योदय		सूर्यास्त						गु. अस्त है । बु. भी १६ मई से पूर्व में लुप्त हो जाएगा । सायं शु. पश्चिमक्षितिज के पास और मं. याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा। श. को भी इसी समय पूर्व में देख सकते हैं ।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	र.	५९	१०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
३३	२९	२	चं.	५०	१३	अनु.	४६	२३	व. प.	८ ५८	७ ४	तै.	२४	४१	२५	७	१७	१५	वृश्चि.			५	३७	१९	१	०	२२	४८	३१	प्रतिपदा तिथिक्षय,
३३	३२	३	मं.	४२	७	ज्येष्ठा	४०	१५	शि.	४८	५०	व.	१६	१०	२६	८	१८	१६	धनु	४०	१५	५	३७	१९	१	०	२३	४६	३३	भ. १६/१० से ४२/०७ तक,
३३	३६	४	बु.	३५	१५	मूल	३५	२०	सि.	४०	३८	ब.	८	४१	२७	९	१९	१७	धनु			५	३६	१९	२	०	२४	४४	३४	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
३३	३९	५	गु.	२९	५३	पू.षा.	३१	५५	सा.	३३	४१	कौ.	२	३४	२८	१०	२०	१८	मकर	४६	२०	५	३५	१९	३	०	२५	४२	३३	सूर्य कृत्ति. में ५६/१५, मंगल पू.फा. में ८/२१,
३३	४३	६	शु.	२६	१५	उ.षा.	३०	१४	शु.	२८	१०	व.	२६	१५	२९	११	२१	१९	मकर			५	३४	१९	३	०	२६	४०	३१	भ. २६/१५ से ५५/२२ तक,
३३	४६	७	श.	२४	२९	श्रव.	३०	२४	शु.	२४	१०	ब.	२४	२९	३०	१२	२२	२०	मकर			५	३४	१९	४	०	२७	३८	२७	
३३	४९	८	र.	२४	३५	धनि.	३२	२४	ब्र.	२१	३८	कौ.	२४	३५	३१	१३	२३	२१	कुम्भ	१	१०	५	३३	१९	५	०	२८	३६	२२	पंचक प्रारम्भ १/१०, बुध भर. में १८/५५,
३३	५३	९	चं.	२६	२७	शत.	३६	७	ऐं.	२०	३१	ग.	२६	२७	ज्ये.१	१४	२४	२२	कुम्भ			५	३२	१९	५	०	२९	३४	१६	भ. ५८/१० बाद, सं. सूर्य वृष में २६/३५, मु. १५, (A)
३३	५६	१०	मं.	२९	५३	पू.भा.	४१	१८	वै.	२०	३७	वि.	२९	५३	२	१५	२५	२३	मीन	२४	५४	५	३२	१९	६	१	०	३२	९	भ. २६/५३ तक, शुक्र वक्री ३६/१७,
३३	५९	११	बु.	३४	३६	उ.भा.	४७	४०	वि.	२१	४५	ब.	२	१४	३	१६	२६	२४	मीन			५	३१	१९	७	१	१	३०	१	वक्री शनि चित्रा २ कन्या में २/३९, बुध पूर्व में अस्त (B)
३४	२	१२	गु.	४०	१५	रेव.	५४	५२	प्री.	२३	३९	कौ.	७	२५	४	१७	२७	२५	मेष	५४	५२	५	३०	१९	७	१	२	२७	५१	पंचक समाप्त ५४/५२, गुरु कृत्ति. २ वृष में १०/१०,
३४	५	१३	शु.	४६	३०	अश्वि.	६०	०	आ.	२६	५	ग.	१३	२२	५	१८	२८	२६	मेष			५	३०	१९	८	१	३	२५	४०	भ. ४६/३० बाद, प्रदोष व्रत,
३४	८	१४	श.	५३	१	अश्वि.	२	३४	सौ.	२८	४७	वि.	१९	४५	६	१९	२९	२७	मेष			५	२९	१९	९	१	४	२३	२८	भ. १६/४५ तक, यूरेनस उ.भा. ४ में १७/१५,
३४	११	३०	र.	५९	३०	भर.	१०	२९	शो.	३१	३२	च.	२६	१५	७	२०	३०	२८	वृष	२७	२७	५	२९	१९	९	१	५	२१	१५	बुध कृत्ति. में ५/१८, सूर्य सायन मिथुन में ३८/१३, (C)

(A) पुण्यकाल १०/३२ बाद, (B) ५ घं. ३१ मि. (भा.स्टैं.टा.), अपरा एकादशी व्रत (स.), भद्रकाली एकादशी (पं.), (C) वट्सावित्री व्रत (अमापक्ष), भावुका अमा,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १३ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	४	०	०	१	६	७	१
२८	२६	१४	१२	२९	२९	०	११	११
३६	४२	६	४४	०	४९	११	५३	५३
२२	५५	५७	२४	४३	३९	६	५३	५३
५७	७२८	१७	११२	१४	४	३	३	३
५४	३६	१८	७	१३	५१	४४	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृत्ति. १	धनि. २	पू.फा. १	अश्वि. ४	कृत्ति. १	मृग. २	चित्रा ३	अनु. ३	रोहि. १

कुण्डली सूर्योदय (१३ मई)

शु. २ के. | १२ | सू. | ३ | बु. १ गु. | ११ | ४ | चं. १० | मं. ५ | श. ७ | ९ | ६ | ८ रा.

लोकभविष्यः- पक्षमध्य के बाद शुक्र-शनि दोनों वक्री हैं । शनि वक्रावस्था में कन्याराशि में प्रवेश करता है । किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त होगा । मुस्लिमराष्ट्र में भारी हिंसात्मक उपद्रवों से भारी हानि होने के योग हैं- "यदा चित्रागतः सौरिः छत्रभंगो भवेत्तदा ।" कहीं अकालिक वर्षा व कहीं वर्षावरोध के कारण फसलों को हानि पहुंचे । पाक-चीन-नेपाल एवं जापान में प्राकृतिक आपदा से हानि हो ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ से १३ मई तक तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड में तेज़ी रहे। १४ मई से रुई, तांबा, चान्दी, सोना, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, जौ, चना में अच्छी तेज़ी बन सकती है । १६ मई के लगभग वक्री शनि के चित्रा २ एवं कन्या में आने पर रुई में भयंकर तेज़ी बनेगी । गुड़, खाण्ड, चान्दी, सोना, अफीम में मन्दी के अच्छे झटके आएंगे । दालवाना, अनाज तेज़ रहें।

आकाशलक्षणः- मई १०, ११ एवं १३ से १८ के मध्य मुंबई, आसाम, तिरुवनन्तपुरम्, उड़ीसा, बिहार में वर्षा के अच्छे योग हैं । कहीं गुजरात आदि में बाढ़ की स्थिति बने । हि.प्र., जम्मू-काश्मीर एवं उ.भारत के कुछ भागों में बादलवाल व खण्डवृष्टि हो ।

कुण्डली सूर्योदय (२० मई)

३ | चं. १ बु. | गु. | ४ | सू. २. शु. के. | १२ | मं. ५ | ११ | ६ श. | रा. ८ | १० | ७ | ९

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २० मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	०	४	०	१	१	५	७	१
५	२४	१६	२६	०	२९	२९	११	११
२१	३७	१६	२९	४०	३४	४६	३१	३१
१५	०	५१	४	१२	२८	२६	३७	३७
५७	७०७	२०	१२४	१४	११	३	३	३
४५	५७	१०	५७	११	४५	१५	११	११
		मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृत्ति. ३	भ. ४	पू.फा. १	भ. ४	कृत्ति. २	मृग. २	चित्रा २	अनु. ३	रोहि. १

आकाशलक्षण:- मई १०, ११ एवं १३ से १८ के मध्य मुंबई, आसाम, तिरुवनन्तपुरम्, उड़ीसा, बिहार में वर्षा के अच्छे योग हैं। कहीं गुजरात आदि में बाढ़ की स्थिति बने। हि.प्र., जम्मू-काश्मीर एवं उ.भारत के कुछ भागों में बादलवाल व खण्डवृष्टि हो।

श्री वि.सं. २०६९, शाक १९३४, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ५

(२१ मई से ४ जून तक, सन् २०१२ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

बु. अस्त है। शु. भी २ जून से सायं पश्चिम में अदृश्य हो जाएगा। २९ मई से गु. प्रातः पूर्वक्षितिज पर चमकना शुरु होगा। सायंकाल मं. को याम्योत्तरवृत्त में तथा श. को पूर्वकपाल में देखिए।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	तारीखें प्र. ज्येष्ठ	अं. मई	श. वैशाख	मु. ज.उ.सा.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३४	१४	१	चं.	६०	०	कृत्ति.	१८	१५	अ.	३४	८	किं.	३२	३४	८	२१	३१	२९	वृष			५	२८	१९	१०	१	६	१९	०	बुध वृष में ४०/५२, कंकण सूर्यग्रहण (देखें पृ 20) (A)
३४	१७	१	मं.	५	३९	रोहि.	२५	३८	सु.	३६	२३	ब.	५	३९	९	२२	ज्ये.१	३०	मिथुन	५९	६	५	२८	१९	११	१	७	१६	४४	चन्दर्शन, मु. ३०, शक ज्येष्ठ प्रारम्भ,
३४	१९	२	बु.	११	१२	मृग.	३२	२३	धृ.	३८	६	कौ.	११	१२	१०	२३	२	र.१	मिथुन			५	२७	१९	११	१	८	१४	२७	रम्भातृतीया (पूर्वविद्धा), रजब मु. प्रारम्भ,
३४	२२	३	गु.	१५	५५	आर्द्रा	३८	१४	शू.	३९	५	ग.	१५	५५	११	२४	३	२	मिथुन			५	२७	१९	१२	१	९	१२	८	भ. ४७/४३ बाद, सूर्य रोहि. में ४६/५५,(B)
३४	२४	४	शु.	१९	३२	पुन.	४२	५९	गं.	३९	११	वि.	१९	३२	१२	२५	४	३	कर्क	२६	५६	५	२७	१९	१२	१	१०	९	४७	भ. १९/३२ तक, बलिदान दिवस श्रीगुरु अर्जुनदेव जी,
३४	२७	५	श.	२१	५१	पुष्य	४६	२२	वृ.	३८	१३	बा.	२१	५१	१३	२६	५	४	कर्क			५	२६	१९	१३	१	११	७	२५	बुध रोहि. में १९/०६,
३४	२९	६	र.	२२	४०	आश्ले.	४८	१६	ध्रु.	३६	३	तै.	२२	४०	१४	२७	६	५	सिंह	४८	१६	५	२६	१९	१४	१	१२	५	२	अरण्यषष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा,
३४	३२	७	चं.	२१	५२	मघा	४८	३१	व्या.	३२	३५	व.	२१	५२	१५	२८	७	६	सिंह			५	२५	१९	१४	१	१३	२	३७	भ. २१/५२ से ५०/३८ तक,
३४	३४	८	मं.	१९	२५	पू.फा.	४७	९	ह.	२७	४८	ब.	१८	२५	१६	२९	८	७	सिंह			५	२५	१९	१५	१	१४	०	११	गुरु उदित ५ घं. २५ मि. (भा.स्टैं.टा.),
३४	३६	९	बु.	१५	१९	उ.फा.	४४	१३	व.	२१	४२	कौ.	१५	१९	१७	३०	९	८	कन्या	१	३३	५	२५	१९	१५	१	१४	५७	४४	शुक्रवार्धक्य प्रारम्भ १९ घं. १७ मि. (भा.स्टैं.टा.),
३४	३८	१०	गु.	९	४४	हस्त	३९	५२	सि.	१४	२३	ग.	९	४४	१८	३१	१०	९	कन्या			५	२५	१९	१६	१	१५	५५	१५	भ. ३६/१६ बाद, गुरु कृत्ति. ३ में १९/४५, श्रीगंगा (C)
३४	४०	११	शु.	२	४९	चित्रा	३४	२२	व्य. व.	६ ५६	० ४६	वि.	२	४९	१९	जू.१	११	१०	तुला	७	१४	५	२४	१९	१६	१	१६	५२	४५	भ. २/४९ तक, बुध मृग. में २४/३५ गुरुबाल्य समाप्त(D)
अवम		१२	शु.	५४	५४	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वादशी तिथिक्षय,
३४	४२	१३	श.	४६	१५	स्वाती	२८	०	प.	४६	५७	कौ.	२०	३४	२०	२	१२	११	तुला			५	२४	१९	१७	१	१७	५०	१३	शनिप्रदोष व्रत, शुक्र पश्चिम में अस्त १९घं. १७मि.(भा.स्टैं.टा.),
३४	४३	१४	र.	३७	१४	विशा.	२१	८	शि.	३६	५१	ग.	११	४४	२१	३	१३	१२	वृश्चि.	७	५२	५	२४	१९	१७	१	१८	४७	४१	भ. ३७/१४ बाद, वक्री शुक्र रोहि. में २७/२०, (E)
३४	४५	१५	चं.	२८	१४	अनु.	१४	९	सि.	२६	४५	वि.	२	४४	२२	४	१४	१३	वृश्चि.			५	२४	१९	१८	१	१९	४५	७	भ. २/४४ तक, बुध मिथुन में ३२/५०, नेप्च्यून वक्री (F)

सूर्यग्रहण 21 मई

गुरु उदित-२९ मई

शुक्र अस्त-२ जून

(A) [यह ग्रहण पूर्वी भारत में २१ मई को प्रातः दृश्य होगा (विशेष स्पष्टीकरण के लिए पृष्ठ 23 पर दिया लेख पढ़ें)], (B) श्रीमहाराणा प्रताप जयन्ती (राज.), (C) दशहरा [हस्त नक्षत्र २१ घं. २२ मि. (भा.स्टैं.टा.) तक] (देखें पृ. 104), निर्जला एकादशी व्रत (स्मा.), (D) ५ घं. २५ मि. (भा.स्टैं.टा.), निर्जला एकादशी व्रत (वै.), (E) श्रीसत्यनाराण व्रत (देखें पृ 104), (F) ५३/०४, वटसावित्री व्रत (पूर्णिमापक्ष),

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २९ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	४	१	१	१	५	७	१
१४	१५	१९	१५	२	२६	२९	११	११
०	५७	३१	५३	४७	२६	१९	३	३
१२	२२	२९	५५	२३	११	५७	०	०
५७	८२३	२३	१३१	१४	३१	२	३	३
३२	४०	१९	४५	२	९	२२	११	११
		मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रोहि. २	पू.फा. १	पू.फा. २	रोहि. २	कृत्ति. २	मृग. १	चित्रा २	अनु. ३	रोहि. १

कुण्डली सूर्योदय (२९ मई)

बु. गु. सू. २ शु. के.; ३; १; ४; १२; मं. ५ चं.; ११; ६ श.; रा. ८; १०; ७; ९

लोकभविष्य:- इस पक्ष में पंचग्रहीयोग जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में भारी महंगाई का संकेत देता है। देश में राजनैतिक संकट गहराएंगे- "एकराशौ यदा यांति चत्वारः पञ्च खेचराः। सर्वधान्य-महर्घत्वं मेघाः स्वल्प-जलप्रदाः ॥" इस पक्ष में बुध वृषराशि में चतुर्ग्रहों के साथ मेल करता है। एक ही पक्ष में गुरु का उदय एवं (शुक्लपक्ष में) शुक्र का अस्त कहीं भयंकर वर्षा, सुनामी आदि किंवा भयंकर आंधी-तूफ़ान से जनधनहानि करा सकता है। कहीं किसी मुस्लिमराष्ट्र में युद्धाग्नि से भारी हानि संभव है-"शुक्लपक्षे यदा शुक्रः समुदेत्यस्तमेति वा। राजपुत्र-सहस्राणां मही पिबति शोणितम् ॥"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- २१ से २४ मई तक गेहूं, जौ, चना, चावल, मटर, रुई, कपास, सूत, अफ़ीम, तेल, तिलहन, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड में तेज़ी रहे। २९ मई से १ जून के मध्य अनाज, गुड़, खाण्ड, चान्दी, सोना, तिल, सरसों, उड़द एवं रुई में घटाबढ़ी के साथ मन्दी प्रधान रहे। २ जून से पक्षान्त तक ज़ोरदार मन्दे के रिएक्शन्ज़ आ सकते हैं, बाज़ार का रुख देखकर काम करें।

आकाशलक्षण:- मई २१, २२, २४, २५, २९, ३०, ३१ एवं जून १ से ४ तक उड़ीसा, भूटान, शिलांग, मुम्बई, काठमाण्डु, जम्मू-काश्मीर में वायुवेग के साथ अच्छी वर्षा के योग हैं। उ.प्र., म.प्र., हि.प्र., हरियाणा एवं पंजाब में भी अनेकत्र वायुप्रकोप रहे। आंधी, तूफ़ान एवं खण्डवृष्टि हो।

कुण्डली सूर्योदय (४ जून)

बु. गु. सू. २ शु. के.; ३; १; ४; १२; मं. ५; ११; ६ श.; चं. ८ रा.; १०; ७; ९

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ४ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	४	१	१	१	५	७	१
१९	१३	२१	२८	४	२२	२९	१०	१०
४५	१०	५५	५२	११	५९	६	४३	४३
७	२८	५९	१	१८	३८	१	५५	५५
५७	८०१	२५	१२५	१३	३७	२	३	३
२५	४३	७	७	५४	२९	०	११	११
		मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
रोहि. ३	अनु. ३	पू.फा. ३	मृग. २	कृत्ति. ३	रोहि. ४	चित्रा २	अनु. ३	रोहि. १

श्री वि. सं. २०६९, शाक १९३४, आषाढ़ कृष्ण पक्ष ६

(५ जून से १६ जून तक, सन् २०१२ ई.)
उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु।

७ जून से बु. सायं पश्चिम में दृश्य होगा । ११ जून से शु. भी प्रातः पूर्व में गु. के साथ दिखाई देना आरम्भ हो जाएगा । सायं मं. याम्योत्तरवृत्त के पास और श. इससे पूर्व की ओर होगा ।*

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. ज्येष्ठ	अं. जून	श. ज्येष्ठ	मु. रजब	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३४	४७	१	मं.	१९	३८	ज्येष्ठा	७	२९	सा.	१६	५८	कौ.	१९	३८	२३	५	१५	१४	धनु	७	२९	५	२४	१९	१८	१	२०	४२	३३	
३४	४८	२	बु.	११	५०	मूल पू.षा.	१ ५६	३१ २१	शु. शु.	७ ५९	५१ ४०	ग.	११	५०	२४	६	१६	१५	धनु			५	२४	१९	१९	१	२१	३९	५७	भ. ३८/३० बाद, (A)
३४	५०	३	गु.	५	११	उ.षा.	५३	१५	ब्र.	५२	४३	वि.	५	११	२५	७	१७	१६	मकर	१०	३९	५	२३	१९	१९	१	२२	३७	२०	भ. ५/११ तक, सूर्य मृग. में ४४/५५, बुध आर्द्रा में (B)
३४	५१	४	शु.	०	३	श्रव.	५१	३६	ऐं.	४७	१२	बा.	०	३	२६	८	१८	१७	मकर			५	२३	१९	२०	१	२३	३४	४३	
अवम		५	शु.	५६	४२	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पंचमी तिथिक्षय,
३४	५२	६	श.	५५	१९	धनि.	५१	५३	वै.	४३	१४	ग.	२६	०	२७	९	१९	१८	कुम्भ	२१	३१	५	२३	१९	२०	१	२४	३२	५	भ. ५५/१६ बाद, पंचक प्रारम्भ २१/३१,
३४	५३	७	र.	५५	५७	शत.	५४	९	वि.	४०	५४	वि.	२५	३८	२८	१०	२०	१९	कुम्भ			५	२३	१९	२१	१	२५	२९	२७	भ. २५/३८ तक,
३४	५४	८	चं.	५८	२९	पू.भा.	५८	१८	प्री.	४०	५	बा.	२७	१३	२९	११	२१	२०	मीन	४२	७	५	२३	१९	२१	१	२६	२६	४८	शुक्र पूर्व में उदित ५ घं. २३ मि. (भा.स्टैं.टा.),
३४	५५	९	मं.	६०	०	उ.भा.	६०	०	आ.	४०	३८	तै.	२९	३५	३०	१२	२२	२१	मीन			५	२३	१९	२१	१	२७	२४	९	
३४	५६	९	बु.	२	४१	उ.भा.	४	२	सौ.	४२	१६	ग.	२	४१	३१	१३	२३	२२	मीन			५	२३	१९	२२	१	२८	२१	२९	भ. ३५/२४ बाद,
३४	५७	१०	गु.	८	७	रेव.	१०	५८	शो.	४४	३८	वि.	८	७	आ.१	१४	२४	२३	मेष	१०	५८	५	२३	१९	२२	१	२९	१८	४९	भ. ८/०७ तक, पंचक समाप्त १०/५८, सं. सूर्य मिथुन (C)
३४	५७	११	शु.	१४	२०	अश्वि.	१८	३७	अ.	४७	२२	बा.	१४	२०	२	१५	२५	२४	मेष			५	२३	१९	२२	२	०	१६	८	बुध पुनर्वसु में ६/०३, योगिनी एकादशी व्रत (स.),
३४	५८	१२	श.	२०	५०	भर.	२६	३०	सु.	५०	९	तै.	२०	५०	३	१६	२६	२५	वृष	४३	२८	५	२४	१९	२३	२	१	१३	२७	शनिप्रदोष व्रत,
३४	५८	१३	र.	२७	८	कृत्ति.	३४	११	धृ.	५२	३९	व.	२७	८	४	१७	२७	२६	वृष			५	२४	१९	२३	२	२	१०	४६	भ. २७/०८ बाद, राहु अनु. २, केतु कृत्ति. ४ में ४८/५७,
३४	५९	१४	चं.	३२	५४	रोहि.	४१	१९	शू.	५४	३९	वि.	०	१	५	१८	२८	२७	वृष			५	२४	१९	२३	२	३	८	४	भ. ०/०१ तक,
३४	५९	३०	मं.	३७	५०	मृग.	४७	३७	गं.	५५	५७	च.	५	२२	६	१९	२९	२८	मिथुन	१४	३५	५	२४	१९	२४	२	४	५	२२	भौमवती अमा,

*६ जून को शुक्र सूर्यबिम्ब के ऊपर से चलता नज़र आएगा ।

शुक्र उदित-११ जून

(A) शुक्र-सूर्य संक्रमण (देखें पृष्ठ 69), (B) ४६/४५, बुध पश्चिम में उदित १६ घं. १६ मि. (भा.स्टैं.टा.), श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (C) में ४३/२५, मु. ३०, पुण्यकाल मध्याह्न बाद, मंगल उ.फा. में ४६/०६, गुरु कृत्ति. ४ में ४६/११, शुक्रबाल्य समाप्त ५ घं. २३ मि. (भा.स्टैं.टा.),

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ११ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१ २६ २६ ४८	१० २१ ४७ १८	४ २४ ५७ २१	२ १२ ४५ २	१ ५ ४७ ५६	१ १८ ४० ३७	५ २८ ५३ ५२	७ १० २१ ४०	१ १० २१ ४०
५७ २१	७४७ ६	२६ ५६	१०६ ५६	१३ ४१	३४ ८	१ २२	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (११ जून)

बु. ३ | १ | ४ | गु. सू. २ शु. के. | १२ | म. ५ | चं. ११ | ६ श. | ८ रा. | १० | ७ | ९

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच मंगलवार हैं। प्रतिपदा एवं अमा दोनों मंगलवारी होने से देश में कहीं उपद्रव, राजनैतिक विषमता से जनान्दोलन, उग्रवाद से भयंकर जनधनहानि एवं भूकम्प-विस्फोट आदि प्राकृतिक आपदा का संकेत मिलता है:-" यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पञ्चवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत् ॥" किसी देश-विशेष में प्रधान-प्रतिष्ठित पद रिक्त हो । राजनैतिक हत्याकाण्ड भी सम्भव हैं। सौराष्ट्र, उत्तरप्रदेश आदि में राजनैतिक संकट गहरा सकता है ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में रुई, शेयर बाज़ार, गेहूं, तिल, उड़द, जौ, चना, मूंग, मोठ मन्दे होकर जल्दी ही तेज़ी की ओर बढ़ेंगे । ८ से १३ जून तक रुई, सूत, चान्दी, चावल, घी, बारदाना, रेशम, कपास, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, दालवाला, सोने और चान्दी में अच्छी तेज़ी बनने के योग हैं। १४ से १५ जून तक तेज़ी का वातावरण बने और १५ जून को ही चान्दी, रुई, कपास में अच्छी तेज़ी बनेगी । १७ से १९ जून तक बाज़ार तेज़ रहेंगे । **आकाशलक्षणः-** जून ७, ८, ११ से १७ तक उड़ीसा, शिलांग, भूटान, आसाम एवं महाराष्ट्र में ज़ोरदार वर्षा हो । अनेकत्र बाढ़ की स्थिति बने । पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली, चण्डीगढ़, जम्मू-कश्मीर, उ.प्र. में भी इन दिनों वर्षा होगी एवं गर्मी से राहत मिलेगी।

कुण्डली सूर्योदय (१६ जून)

४ | चं.गु.शु.के. २ | ५ मं. | बु. ३ सू. | १ | श.६ | १२ | ७ | ९ | ११ | रा. ८ | १०

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १६ जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२ ४ ५ २१	१ २७ ७ २५	४ २८ ३६ ३५	२ २६ १५ ५४	१ ७ ३६ २५	१ १४ ५४ ४६	५ २८ ४५ ४०	७ ६ ५६ १३	१ ६ ५६ १३
५७ १८	७२६ २१	२८ ४८	६० १	१३ २२	१६ ८	० ३५	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०६९, शाक १९३४, आषाढ़ शुक्ल पक्ष ७

(२० जून से ३ जुलाई तक, सन् २०१२ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

सायं बु. पश्चिमक्षितिज में, श. याम्योत्तरवृत्त में और मं. इससे कुछ पश्चिम में होगा । प्रातः गु. शु. पूर्व में उदय होते दिखाई देंगे ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. आषाढ़	अं. जून	श. ज्येष्ठ	मु. रज्जब	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५९	१	बु.	४१	४५	आर्द्रा	५२	५५	वृ.	५६	२७	किं.	९	४७	७	२०	३०	२९	मिथुन			५	२४	१९	२४	२	५	२	३९	सूर्य सायन कर्क में ५८/०७, वर्षाऋतु प्रारम्भ, दक्षिणायन (A)
३४	५९	२	गु.	४४	३४	पुन.	५७	८	ध्रु.	५६	५	बा.	१३	९	८	२१	३१	३०	कर्क	४१	११	५	२४	१९	२४	२	५	५९	५५	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, सूर्य आर्द्रा में ४२/१५, मंगल कन्या (B)
३४	५९	३	शु.	४६	१३	पुष्य	६०	०	व्या.	५४	४८	तै.	१५	२३	९	२२	आ.१	शा.१	कर्क			५	२५	१९	२४	२	६	५७	११	शाबान मु. प्रा., शक आषाढ़ प्रा.,
३४	५९	४	श.	४६	४१	पुष्य	०	१३	ह.	५२	३५	व.	१६	२७	१०	२३	२	२	कर्क			५	२५	१९	२४	२	७	५४	२७	भ. १६/२७ से ४६/४१ तक,
३४	५८	५	र.	४५	५७	आश्ले.	२	९	व.	४९	२५	ब.	१६	१९	११	२४	३	३	सिंह	२	९	५	२५	१९	२५	२	८	५१	४२	बुध पुष्य में ०/१६,
३४	५८	६	चं.	४४	१	मघा	२	५३	सि.	४५	१८	कौ.	१४	५९	१२	२५	४	४	सिंह			५	२५	१९	२५	२	९	४८	५६	शनि मार्गी २०/१५, कुमार षष्ठी,
३४	५८	७	मं.	४०	५५	पू.फा.	२	२७	व्य.	४०	१४	ग.	१२	२८	१३	२६	५	५	कन्या	१७	९	५	२६	१९	२५	२	१०	४६	१०	भ. ४०/५५ बाद, विवस्वत् सप्तमी,
३४	५७	८	बु.	३६	४०	उ.फा. हस्त	० ५८	५२ ९	व.	३४	१४	वि.	८	४७	१४	२७	६	६	कन्या			५	२६	१९	२५	२	११	४३	२३	भ. ८/४७ तक, शुक्र मार्गी ३८/०,
३४	५६	९	गु.	३१	२१	चित्रा	५४	२६	प.	२७	२१	बा.	४	०	१५	२८	७	७	तुला	२६	२४	५	२६	१९	२५	२	१२	४०	३६	
३४	५६	१०	शु.	२५	६	स्वाती	४९	४९	शि.	१९	४१	ग.	२५	६	१६	२९	८	८	तुला			५	२७	१९	२५	२	१३	३७	४८	भ. ५१/३५ बाद, गुरु रोहि. १ में ५६/४२,
३४	५५	११	श.	१८	४	विशा.	४४	३१	सि.	११	२२	वि.	१८	४	१७	३०	९	९	वृश्चि.	३०	५२	५	२७	१९	२५	२	१४	३५	०	भ. १८/०४ तक, श्रीविष्णुशयनोत्सव, हरिशयनी एकादशी (C)
३४	५४	१२	र.	१०	२८	अनु.	३८	४७	सा. शु.	२ ५३	३४ २८	बा.	१०	२८	१८	जु.१	१०	१०	वृश्चि.			५	२७	१९	२५	२	१५	३२	१२	प्रदोष व्रत, जुलाई प्रारम्भ,
३४	५३	१३	चं.	२	३६	ज्येष्ठा	३२	५५	शु.	४४	२१	तै.	२	३६	१९	२	११	११	धनु	३२	५५	५	२८	१९	२५	२	१६	२९	२३	भ. ५४/४४ बाद,
अवम		१४	चं.	५४	४४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
३४	५१	१५	मं.	४७	१३	मूल	२७	१७	ब्र.	३५	२८	वि.	२०	५८	२०	३	१२	१२	धनु			५	२८	१९	२५	२	१७	२६	३४	भ. २०/५८ तक, गुरुपूर्णिमा (व्यासपूजा), आषाढ़ी पूर्णिमा, (D)

(A) प्रारम्भ, (B) में ४६/३४, बुध कर्क में ३३/१५, रथयात्रा (श्री जगदीश रथोत्सव) पुरी, ,(C) व्रत (स.), (D) कोकिला व्रत, श्रीशिवशयनोत्सव, चातुर्मास्य व्रतनियमादि प्रा., श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २७ जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	५	३	१	१	५	७	१
११	६	२	७	६	१३	२८	६	६
४३	५०	३६	१	२२	२७	४३	३०	३०
२४	२७	०	४८	०	३२	४८	४७	४७
५७	८३७	३०	६८	१२	०	०	३	३
१२	४५	२७	१६	५८	१८	१३	११	११
		मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आर्द्रा २	उ.फा. ४	उ.फा. २	पुष्य २	कृत्ति. ४	रोहि. २	चित्रा २	अनु. २	कृत्ति. ४

कुण्डली सूर्योदय (२७ जून)

४ बु. | २ गु. शु. के. | ५ | ३ सू. | १ | चं. ६ श. मं. | १२ | ७ | ९ | ११ | ८ रा. | १०

लोकभविष्य :- आषाढ़ शुक्ल में शनि-मंगल दोनों कन्याराशि में एकत्र हैं। मुस्लिमराष्ट्र पाक, अफ़ग़ानिस्तान, लीबिया आदि में भयंकर राजनैतिक संकट उपस्थित होगा । कहीं युद्ध की स्थिति, कहीं सेना की बग़ावत, कहीं हत्याकाण्डों से अराजकता व्याप्त होगी । कुछ प्रतिष्ठित व्यक्तियों के जीवन को देश-विशेष में उग्रवादजन्य क्रिया से खतरा है- "कर्क-मीन-मृग-स्त्रीषु शनि-भौमी यदा स्थितौ । तदा युद्धाकुला पृथ्वी धनधान्य-विवर्जिता ।।" शनि-मंगल का संयोग कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बनाएगा एवं कहीं यानदुर्घटना से जनधनहानि का संकेत भी देता है ।

कुण्डली सूर्योदय(३ जुला.)

४ बु. | २ गु. शु. के. | ५ | ३ सू. | १ | ६ श. मं. | १२ | ७ | चं. ९ | ११ | ८ रा. | १०

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ से २१ जून तक रुई, सूत, कपास, खल, अलसी, एरण्ड, गेहूं, चना, जौ, गुड़, खाण्ड, घी, तेल तेज़ रहें । २४ जून के लगभग बाज़ार मन्दे हों । २५ से २७ जून तक रुई, धान्दी, सोना, तिल, तेल, सरसों, हींग, मिर्च में घटावढ़ी के साथ तेज़ी से लाभ मिले। २७/२८ जून से पक्षान्त तक गुड़, घी, सोना, चान्दी में मन्दा रहे ।

आकाशलक्षण:- जून २०, २१, २२, २४, २५, २६ एवं २७ के लगभग पंजाब, हरियाणा, हि. प्र., उ.प्र., जम्मू-काश्मीर, दिल्ली, चण्डीगढ़, महाराष्ट्र, उड़ीसा में अनेकत्र वायुवेग के साथ अच्छी वर्षा होगी । कहीं आकाशी बिजली गिरने से हानि का योग भी है ।

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ३ जुला.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	५	३	१	१	५	७	१
१७	६	५	१३	१०	१३	२८	६	६
२६	४०	४१	५	३८	५९	४६	११	११
३४	१८	२८	१२	५६	१८	३५	४२	४२
५७	८७८	३१	४९	१२	१२	०	३	३
१०	१६	३१	५	३६	४८	४८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आर्द्रा ४	मूल ३	उ.फा. ३	पुष्य ३	रोहि. १	रोहि. २	चित्रा २	अनु. २	कृत्ति. ४

श्री वि. सं. २०६९, शाक १९३४, श्रावण कृष्ण पक्ष ८

(४ से १९ जुलाई तक, सन् २०१२ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

सायं बु. पश्चिमक्षितिज में कुछ ही समय के लिए दिखाई देगा। इस समय शनि याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम की ओर एवम् मं. पश्चिमकपाल में होगा। प्रातः गु.शु. पूर्व में होंगे।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. आषाढ़	अं. जुलाई	श. आषाढ़	मु. शाबान	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टै. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टै. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५०	१	बु.	४०	२६	पू.षा.	२२	१४	ऐं.	२७	७	बा.	१३	४९	२१	४	१३	१३	मकर	३६	५	५	२९	१९	२५	२	१८	२३	४४	
३४	४९	२	गु.	३४	४५	उ.षा.	१८	९	वै.	१९	३६	तै.	७	३५	२२	५	१४	१४	मकर			५	२९	१९	२५	२	१९	२०	५५	सूर्य पुन. में ४१/३, अशून्यशयन व्रत,
३४	४७	३	शु.	३०	३१	श्रव.	१५	२५	वि.	१३	१२	वि.	२	३८	२३	६	१५	१५	कुम्भ	४४	४०	५	३०	१९	२५	२	२०	१८	६	भ. २/३८ से ३०/३१ तक, पंचक प्रारम्भ ४४/४०, (A)
३४	४६	४	श.	२८	१	धनि.	१४	२१	प्री.	८	८	बा.	२८	१	२४	७	१६	१६	कुम्भ			५	३०	१९	२४	२	२१	१५	१७	
३४	४४	५	र.	२७	२७	शत.	१५	९	आ.	४	३७	तै.	२७	२७	२५	८	१७	१७	कुम्भ			५	३१	१९	२४	२	२२	१२	२८	बुध आश्ले. में १२/४३,
३४	४२	६	चं.	२८	५२	पू.भा.	१७	५४	सौ.	२	४०	व.	२८	५२	२६	९	१८	१८	मीन	२	३	५	३१	१९	२४	२	२३	९	३९	भ. २८/५२ बाद,
३४	४१	७	मं.	३२	९	उ.भा.	२२	३१	शो.	२	१४	वि.	०	३०	२७	१०	१९	१९	मीन			५	३२	१९	२४	२	२४	६	५१	भ. ०/३० तक,
३४	३९	८	बु.	३७	०	रेव.	२८	४३	अ.	३	८	बा.	४	३४	२८	११	२०	२०	मेष	२८	४३	५	३२	१९	२४	२	२५	४	४	पंचक समाप्त २८/४३, मंगल हस्त में २/५७,
३४	३७	९	गु.	४२	५४	अश्वि.	३५	५६	सु.	५	३	तै.	९	५७	२९	१२	२१	२१	मेष			५	३३	१९	२३	२	२६	१	१६	
३४	३५	१०	शु.	४९	१६	भर.	४३	४३	धृ.	७	३६	व.	१६	५	३०	१३	२२	२२	मेष			५	३३	१९	२३	२	२६	५८	३०	भ. १६/०५ से ४६/१६ तक, यूरेनस वक्री २४/३०,
३४	३२	११	श.	५५	३१	कृत्ति.	५१	२४	शू.	१०	२०	ब.	२२	२३	३१	१४	२३	२३	वृष	०	४०	५	३४	१९	२३	२	२७	५५	४४	कामिका एकादशी व्रत (स्मा.),
३४	३०	१२	र.	६०	०	रोहि.	५८	२८	गं.	१२	४९	कौ.	२८	१८	३२	१५	२४	२४	वृष			५	३४	१९	२२	२	२८	५२	५८	बुध वक्री ५/३०, कामिका एकादशी व्रत (वै.),
३४	२८	१२	चं.	१	५	मृग.	६०	०	वृ.	१४	४२	तै.	१	५	श्रा. १	१६	२५	२५	मिथुन	३१	३९	५	३५	१९	२२	२	२९	५०	१३	सं. सूर्य कर्क में १०/०३, मु. ३०, पुण्यकाल २५/५८ (B)
३४	२६	१३	मं.	५	३५	मृग.	४	३३	ध्रु.	१५	४५	व.	५	३५	२	१७	२६	२६	मिथुन			५	३५	१९	२२	३	०	४७	२९	भ. ५/३५ से ३७/१२ तक, श्रावणशिवरात्रि,
३४	२३	१४	बु.	८	५०	आर्द्रा	९	२२	व्या.	१५	४६	श.	८	५०	३	१८	२७	२७	कर्क	५७	९	५	३६	१९	२१	३	१	४४	४५	
३४	२०	३०	गु.	१०	४३	पुन.	१२	५३	ह.	१४	४४	ना.	१०	४३	४	१९	२८	२८	कर्क			५	३६	१९	२१	३	२	४२	१	सूर्य पुष्य में ३८/३३, हरियाली अमा,

(A) श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (B) तक, गुरु रोहि. २ में १२/००, सोमप्रदोष व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ११ जुला.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	५	३	१	१	५	७	१
२५	२४	६	१७	१२	१६	२८	८	८
४	१४	५८	५०	१८	३४	५५	४६	४६
४	१२	२१	३८	०	३०	४७	१६	१६
५७	७१८	३२	१६	१२	२७	१	३	३
१२	१६	५०	५३	४	६	३५	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन. २	रेव. ३	उ.फा. ४	आश्ले. १	रोहि. १	रोहि. २	चित्रा २	अनु. २	कृत्ति. ४

कुण्डली सूर्योदय (११ जुला.)

लोकभविष्यः- इस पक्ष में शनि-मंगल कन्यास्थ हैं। १५ जुलाई तक शनि की राहु और सूर्य पर विशेष दृष्टि है। कहीं प्राकृतिक आपदा, जनधनहानि एवं महंगाई से जनमानस परेशान रहे। कहीं राजनैतिक उथल-पुथल हो एवं कहीं प्रतिष्ठित व्यक्ति की मृत्यु से शोक हो। इस पक्ष में आश्ले. नक्षत्र का बुध कहीं भयंकर बाढ़ का दृश्य उपस्थित करेगा-" आश्लेषायां महावृष्टिस्तुष-धान्यसमुद्भवा।" कहीं यानदुर्घटना से जनधनहानि का भी संकेत मिलता है। नेपाल, पाक एवं चीन की तरफ से सरहदी इलाकों पर सतर्क रहना होगा।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- ५ से १५ जुलाई तक रुई, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, कपास, बिनौला, एरण्ड, अलसी, सरसों आदि तिलहन, ज्वार, मोठ, बाजरा, चावल, नमक, घी में तेज़ी रहे। गेहूं, जौ, चना के बाज़ार ऊपर-नीचे चलें। १६ से १९ जुलाई तक सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, चावल आदि अनाज तेज़ रहें।

आकाशलक्षणः- जुलाई ५, ६, ८, ९, १२, १५, १६, १७ को पंजाब, हि. प्र., हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, उ.प्र., दिल्ली, चण्डीगढ़, उड़ीसा, भूटान, शिलांग, बिहार में अनेकत्र व्यापक वर्षा के योग हैं। शनि-मंगल का योग कहीं बाढ़, कहीं सूखा एवं कहीं आकस्मीय बिजली से हानि करे।

कुण्डली सूर्योदय (१९ जुला.)

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १९ जुला.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	५	३	१	१	५	७	१
२	०	१४	१७	१३	२०	२६	८	८
४२	३३	२५	५३	५२	५१	११	२०	२०
१	०	२४	४०	२६	२८	१०	४६	४६
५७	७६७	३४	२०	११	३७	२	३	३
१७	२३	३	५३	२६	५२	२१	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन. ४	पुन. ४	हस्त २	आश्ले. १	रोहि. २	रोहि. ४	चित्रा २	अनु. २	कृत्ति. ४

श्री वि. सं. २०६९, शाक १९३४, श्रावण शुक्ल पक्ष ९

(२० जुलाई से २ अगस्त तक, सन् २०१२ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु ।

२१ जुलाई से बु. सायं पश्चिम में अदृश्य हो जाएगा । श.मं. इस समय पश्चिमकपाल में होंगे । प्रातः गु.शु. को पूर्वकपाल में देखें ।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्तिकाल		नक्षत्र	समाप्तिकाल		योग	समाप्तिकाल		करण	समाप्तिकाल		तारीखें प्र. श्रावण	अं. जुलाई	श. आषाढ़	मु. शाबान	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	१८	१	शु.	११	१८	पुष्य	१५	७	व.	१२	४१	ब.	११	१८	५	२०	२९	२९	कर्क			५	३७	१९	२०	३	३	३९	१८	चन्द्रदर्शन, मु.१५,
३४	१५	२	श.	१०	४०	आश्ले.	१६	११	सि.	९	४०	कौ.	१०	४०	६	२१	३०	र.१	सिंह	१६	११	५	३८	१९	२०	३	४	३६	३५	वक्री बुध पुष्य में ५५/५७, बुध पश्चिम में अस्त (A)
३४	१२	३	र.	८	५९	मघा	१६	१४	व्य.	५	४८	ग.	८	५९	७	२२	३१	२	सिंह			५	३८	१९	१९	३	५	३३	५३	भ. ३७/४१ बाद, शुक्र मृग. में ४६/००, सूर्य सायन (B)
३४	१०	४	चं.	६	२४	पू.फा.	१५	२४	व. प.	१ ५९	१४ १	वि.	६	२४	८	२३	श्रा.१	३	कन्या	३०	४	५	३९	१९	१९	३	६	३१	११	भ. ६/२४ तक, नागपंचमी, शक श्रावण प्रा.,
३४	७	५	मं.	३	४	उ.फा.	१३	४९	शि.	५०	१४	बा.	३	४	९	२४	२	४	कन्या			५	३९	१९	१८	३	७	२८	२९	श्रीकल्कि जयन्ती,
अवम		६	मं.	५९	२	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	षष्ठी तिथिक्षय,
३४	४	७	बु.	५४	२५	हस्त	११	३५	सि.	४३	५७	ग.	२६	४३	१०	२५	३	५	तुला	४०	१५	५	४०	१९	१७	३	८	२५	४८	भ. ५४/२५ बाद, श्रीतुलसीदास जयन्ती,
३४	१	८	गु.	४९	१६	चित्रा	८	४६	सा.	३७	१५	वि.	२१	५०	११	२६	४	६	तुला			५	४१	१९	१७	३	९	२३	७	भ. २१/५० तक, श्रीदुर्गाष्टमी,
३३	५८	९	शु.	४३	३९	स्वाती	५	२७	शु.	३०	८	बा.	१६	२७	१२	२७	५	७	वृश्चि.	४७	४०	५	४१	१९	१६	३	१०	२०	२७	
३३	५४	१०	श.	३७	४०	विशा. अनु.	१ ५७	४१ ३६	शु.	२२	४१	तै.	१०	३९	१३	२८	६	८	वृश्चि.			५	४२	१९	१६	३	११	१७	४७	
३३	५१	११	र.	३१	२५	ज्येष्ठा	५३	१८	ब्र.	१५	०	व.	४	३२	१४	२९	७	९	धनु	५३	१८	५	४२	१९	१५	३	१२	१५	७	भ. ४/३२ से ३१/२५ तक, पवित्रा एकादशी व्रत (स.),
३३	४८	१२	चं.	२५	५	मूल	४८	५९	ऐं. वै.	७ ५९	१२ २८	बा.	२५	५	१५	३०	८	१०	धनु			५	४३	१९	१४	३	१३	१२	२८	सोमप्रदोष व्रत,
३३	४५	१३	मं.	१८	५३	पू.षा.	४४	५५	वि.	५१	५७	तै.	१८	५३	१६	३१	९	११	मकर	५८	५९	५	४४	१९	१३	३	१४	९	५०	शुक्र मिथुन में ३५/१०,
३३	४१	१४	बु.	१३	५	उ.षा.	४१	२५	प्री.	४४	५५	व.	१३	५	१७	अ.१	१०	१२	मकर			५	४४	१९	१३	३	१५	७	१२	भ. १३/५ से ४०/३३ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, अगस्त (C)
३३	३८	१५	गु.	८	१	श्रव.	३८	४७	आ.	३८	३८	ब.	८	१	१८	२	११	१३	मकर			५	४५	१९	१२	३	१६	४	३५	सूर्य आश्ले. में ३६/२५, ऋक् उपाकर्म, शुक्ल-कृष्ण-(D)

(A)१९ घं. २० मि. (भा.स्टैं.टा.), रमज़ान मु. प्रा., (B) सिंह में २४/४३, मधुस्रवा तृतीया(सन्धारा तीज), (C) प्रारम्भ, (D) यजु उपाकर्म, श्रावणी पूर्णिमा, श्री अमरनाथ यात्रा (कश्मीर), रक्षाबन्धन (राखी) (देखें पृ. 104),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २६ जुलाई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	५	३	१	१	५	७	१
६	४	१८	१४	१५	२५	२६	७	७
२३	३०	२६	८	१०	३८	२६	५८	५८
७	३७	४६	१५	३८	२६	३२	३४	३४
५७	८४५	३५	४२	१०	४४	२	३	३
२०	३३	२	५१	४८	५१	५६	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (२६ जुला.)

- ५
- ३
- ६ मं. श.
- सू. ४ बु
- गु.शु.२ के.
- चं. ७
- १
- ८ रा.
- १०
- १२
- ९
- ११

लोकभविष्य:- इस चान्द्रमास में पांच गुरुवार एवं पांच बुधवार होने से भारत में सुख-शान्ति एवं आर्थिक-औद्योगिक प्रगति हो, लेकिन पश्चिमी प्रान्तों एवं पश्चिमी देशों में राजनैतिक एवं प्राकृतिक परेशानियों से जनता परेशान रहे । कहीं राजनैतिक उथल-पुथल, कहीं पश्चिमी देशों में युद्धमय वातावरण से वातावरण क्षुब्ध रहे -" यत्र मासे पञ्चवारा जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धं च जायते ।।" श्रावण शुक्ल में तिथिक्षय कहीं विशिष्ट व्यक्ति का पद रिक्त होने का संकेत देता है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ से २१ जुलाई तक रुई, सोना, चान्दी, तेल, तिलहन, दालदाना, चावल, चना, गेहूं एवम् शेयर बाज़ार मन्दे रहें । २२ जुलाई को अनाज, गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज़ रहें । ३१ जुलाई को कपास, सूत, गुड़, घी, तेल, तिलहन में अच्छा मन्दा आ सकता है । गेहूं, जौ, चना, चावल में तेज़ी हो । **आकाशलक्षण:-** जुलाई २०, २१, २२, २५, २७, ३१ एवं २ अगस्त को पंजाब, हरियाणा, हि.प्र. दिल्ली, चण्डीगढ़, उ.प्र., राजस्थान, उड़ीसा आदि में अच्छी वर्षा के योग हैं। कुछ प्रान्तों में बाढ़ से हानि भी होगी।

कुण्डली सूर्योदय (२ अग.)

- ५
- ३ शु.
- ६ श. मं.
- बु. ४ सू.
- २गु.के.
- ७
- १
- ८ रा.
- १० चं.
- १२
- ९
- ११

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २ अग.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	५	३	१	२	५	७	१
१६	१४	२२	६	१६	१	२६	७	७
४	१२	३४	१८	२४	६	५२	३६	३६
३५	१२	३७	५५	८	२५	१५	१८	१८
५७	८१०	३५	३२	१०	५०	३	३	३
२४	४७	५४	६	६	१६	३४	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०६९, शाक १९३४, प्र. भाद्रपद कृष्ण पक्ष १० — (३ से १७ अगस्त तक, सन् २०१२ ई.)

दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

७ अग. से बु. प्रातः पूर्वीक्षितिज पर देखा जा सकेगा । इस समय शु. पूर्व में और गु. पूर्वकपाल में होगा । सायं श. मं. पश्चिमकपाल में काफी नज़दीक दिखाई देंगे ।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
															प्र. श्रावण	अं. अगस्त	श. श्रावण	मु. रमज़ान				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३३	३४	१	[illegible]	४	१	धनि.	३७	२२	सौ.	३३	२१	कौ.	४	१	१९	३	१२	१४	कुम्भ	७	५४	५	४५	१९	११	३	१७	१	५९	पंचक प्रारम्भ ७/५४, मंगल चित्रा में १५/१०, गुरु (A)
३३	३१	२	श.	१	२१	शत.	३७	३०	शो.	२९	१७	ग.	१	२१	२०	४	१३	१५	कुम्भ			५	४६	१९	१०	३	१७	५९	२४	भ. ३०/५० बाद, शनि चित्रा ३ तुला में ७/३७,
३३	२७	३	र.	०	१९	पू.भा.	३९	१९	अ.	२६	३५	वि.	०	१९	२१	५	१४	१६	मीन	२३	४२	५	४७	१९	१०	३	१८	५६	५०	भ. ०/१९ तक, श्रीगणेश (संकष्ट)चतुर्थी व्रत, [चन्द्रोदय (B)
३३	२४	४	चं.	१	५	उ.भा.	४२	५६	सु.	२५	१९	बा.	१	५	२२	६	१५	१७	मीन			५	४७	१९	९	३	१९	५४	१६	वक्री प्लूटो मूल ४ में १७/४०,
३३	२०	५	मं.	३	४०	रेव.	४८	१५	धृ.	२५	२७	तै.	३	४०	२३	७	१६	१८	मेष	४८	१५	५	४८	१९	८	३	२०	५१	४५	पंचक समाप्त ४८/१५, बुध पूर्व में उदित ५ घं. ४८ मि. (C)
३३	१६	६	बु.	७	५३	अश्वि.	५४	५२	शू.	२६	४६	व.	७	५३	२४	८	१७	१९	मेष			५	४९	१९	७	३	२१	४९	१४	भ. ७/५३ से ४०/३८ तक, बुध मार्गी १३/२५, शुक्र (D)
३३	१२	७	गु.	१३	२४	भर.	६०	०	गं.	२८	५७	ब.	१३	२४	२५	९	१८	२०	मेष			५	४९	१९	६	३	२२	४६	४५	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मा.) (चन्द्रोदयव्यापिनी अष्टमी(E)
३३	९	८	शु.	१९	३८	भर.	२	२३	वृ.	३१	३४	कौ.	१९	३८	२६	१०	१९	२१	वृष	१९	२०	५	५०	१९	५	३	२३	४४	१७	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वै.) [चन्द्रोदय २४ घं. ०२ मि.(F)
३३	५	९	श.	२५	५७	कृत्ति.	१०	६	ध्रु.	३४	८	ग.	२५	५७	२७	११	२०	२२	वृष			५	५०	१९	४	३	२४	४१	५०	भ. ५८/४८ बाद, श्रीगुग्गा नवमी,
३३	१	१०	र.	३१	३९	रोहि.	१७	२४	व्या.	३६	११	वि.	३१	३९	२८	१२	२१	२३	मिथुन	५०	४४	५	५१	१९	३	३	२५	३९	२५	भ. ३१/३९ तक,
३२	५७	११	चं.	३६	१३	मृग.	२३	४२	ह.	३७	२०	ब.	३	५६	२९	१३	२२	२४	मिथुन			५	५२	१९	२	३	२६	३७	२	अजा एकादशी व्रत (स.),
३२	५३	१२	मं.	३९	१७	आर्द्रा	२८	३७	व.	३७	१९	कौ.	७	४५	३०	१४	२३	२५	मिथुन			५	५२	१९	१	३	२७	३४	३९	मंगल तुला में ६/५२,
३२	४९	१३	बु.	४०	४२	पुन.	३१	५६	सि.	३६	०	ग.	९	५९	३१	१५	२४	२६	कर्क	१६	१५	५	५३	१९	०	३	२८	३२	१९	भ. ४०/४२ बाद, प्रदोष व्रत, भारत स्वतन्त्रता दिवस, (G)
३२	४५	१४	गु.	४०	२८	पुष्य	३३	३८	व्य.	३३	२४	वि.	१०	३५	भा.१	१६	२५	२७	कर्क			५	५३	१८	५९	३	२९	२९	५९	भ. १०/३५ तक, सं. सूर्य मघा सिंह में ३०/१५, मु. (H)
३२	४१	३०	शु.	३८	४६	आश्ले.	३३	५१	व.	२९	३६	च.	९	३६	२	१७	२६	२८	सिंह	३३	५१	५	५४	१८	५८	४	०	२७	४१	कुशोत्पाटिनी अमा, पिठोरी अमा,

(A) रोहि. ३ में ३४/००, (B) २१ घं. ०० मि. (भा.स्टैं.टा.)], बहुला चतुर्थी, (C) (भा.स्टैं.टा.), (D) आर्द्रा में २०/३६, (E) में) [चन्द्रोदय २३ घं. २० मि. (भा.स्टैं.टा.)], दूर्वाष्टमी व्रत (देखें पृ.105), (F) (भा.स्टैं.टा.)], गोकुलाष्टमी(नन्दोत्सव), (G) पर्युषण पर्व (जैन), (H)३०, पुण्यकाल मध्याह्न बाद,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १० अग.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	५	३	१	२	६	७	१
२३	२६	२७	७	१७	८	०	७	७
४४	२	२५	३३	४१	६	२३	१०	१०
१७	१८	११	४८	४६	१६	१०	५२	५२
[illegible]	७०८	३६	१५	६	५५	४	३	३
[illegible]	१६	५१	२७	११	५	१३	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आश्ले.	भर. ४	चित्रा २	पुष्य २	रोहि. ३	आर्द्रा १	चित्रा ३	अनु. २	कृत्ति. ४

कुण्डली सूर्योदय (१० अग.)

५ — ३ शु. — ६ मं. — बु. ४ सू. — २गु.के. — श. ७ — १ चं. — ८ रा. — १० — १२ — ९ — ११

लोकभविष्य:- इस चान्द्रमास में पांच शुक्रवार हैं; अतः प्रजा में सुख-समृद्धि एवं देश में सुभिक्ष रहे- " शुक्रस्य पञ्चवारा स्युर्यत्र मासे निरन्तरम् । प्रजावृद्धिः सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तते ।।" लेकिन ७ से १४ अगस्त तक की ग्रहस्थिति कहीं प्राकृतिक आपदा से भारी जनधनहानि का भी संकेत देती है। तुलाराशिस्थ शनि-मंगल किसी विशिष्ट व्यकित का पद रिक्त करे। कहीं यानदुर्घटना किंवा भूकम्प आदि से भी हानि हो।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में सोना, चान्दी, ताम्बा, गेहूं, जौ, चावल, चना, तिल, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, लालमिर्च तेज़ रहें । शेयर बाज़ार मन्दे रहें । ८ से १३ अगस्त तक बाज़ार मन्दे रहें। १४ अगस्त से अनाज, दालवाना, तेल, तिलहन, चान्दी, सोना आदि में झटके के साथ तेज़ी बनेगी। पक्षान्त में शेयर बाज़ार मन्दे हों ।

आकाश लक्षण:- अगस्त ३ से १३ तक हि.प्र., जम्मू-काश्मीर, पंजाब, हरियाणा, उ.प्र., दिल्ली, महाराष्ट्र, चण्डीगढ़ आदि में व्यापक वर्षा के योग हैं । अगस्त १४ से १६ तक कहीं वायुवेग किंवा बिजली गिरने या बाढ़ से हानि हो ।

कुण्डली सूर्योदय (१७ अग.)

६ — चं. ४ बु. — ७ मं. श. — ५ सू. — ३ शु. — ८ रा. — गु. २ के. — ९ — ११ — १ — १० — १२

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १७ अग.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	३	६	३	१	२	६	७	१
०	२२	१	११	१८	१४	०	६	६
२७	१४	४५	४८	४३	४५	५४	४८	४८
४१	५१	३५	८	२७	८	१८	३७	३७
५७	८०४	३७	६३	८	५८	४	३	३
४३	१४	४०	१८	१७	२१	४४	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मघा १	आश्ले. २	चित्रा ३	पुष्य ३	रोहि. ३	आर्द्रा ३	चित्रा ३	अनु. २	कृत्ति. ४

श्री वि. सं. २०६९, शाक १९३४, प्र.(अधि.)भाद्रपद शुक्ल पक्ष ११																तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(१८ से ३१ अगस्त तक, सन् २०१२ ई.) दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा–शरद्–ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल			प्र. भाद्रपद	अं. अगस्त	श. श्रावण	मु. रमज़ान				सूर्योदय		सूर्यास्त						२८ अग. को बुध पूर्व में अस्त होगा । प्रातः शु. पूर्वकपाल में और गु. याम्योत्तरवृत्त के समीप होगा। सायं श. मं. पश्चिमकपाल में होंगे।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.							घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३२	३७	१	श.	३५	४८	मघा	३२	४९	प.	२४	४५	किं.	७	१७		३	१८	२७	२९	सिंह			५	५५	१८	५७	४	१	२५	२४	अधिक (मल)मास प्रारम्भ,
३२	३३	२	र.	३१	५३	पू.फा.	३०	४९	शि.	१९	५	बा.	३	५०		४	१९	२८	३०	कन्या	४५	११	५	५५	१८	५६	४	२	२३	९	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, राहु अनु. १, केतु कृत्ति. ३ में ४१/३१,
३२	२८	३	चं.	२७	१६	उ.फा.	२८	६	सि.	१२	४८	ग.	२७	१६		५	२०	२९	श.१	कन्या			५	५६	१८	५५	४	३	२०	५४	भ. ५४/४४ बाद, शव्वाल मु. प्रा.,
३२	२४	४	मं.	२२	१३	हस्त	२४	५८	सा. शु.	६ ५९	७ १२	वि.	२२	१३		६	२१	३०	२	तुला	५३	१८	५	५६	१८	५४	४	४	१८	४१	भ. २२/१३ तक, बुध आश्ले. में ०/४३,
३२	२०	५	बु.	१६	५५	चित्रा	२१	३६	शु.	५२	१०	बा.	१६	५५		७	२२	३१	३	तुला			५	५७	१८	५३	४	५	१६	२९	शुक्र पुन. में १८/०३, सूर्य सायन कन्या में ४१/४०, (A)
३२	१६	६	गु.	११	३३	स्वाती	१८	९	ब्र.	४५	६	तै.	११	३३		८	२३	भा.१	४	तुला			५	५८	१८	५२	४	६	१४	१९	शक भाद्रपद प्रारम्भ,
३२	१२	७	शु.	६	११	विशा.	१४	४४	ऐं.	३८	६	व.	६	११		९	२४	२	५	वृश्चि.	०	३६	५	५८	१८	५१	४	७	१२	९	भ. ६/११ से ३३/३३ तक, मंगल स्वाती में ४३/२२,
३२	७	८	श.	०	५६	अनु.	११	२४	वै.	३१	११	ब.	०	५६		१०	२५	३	६	वृश्चि.			५	५९	१८	५०	४	८	१०	१	
अवम		९	श.	५५	४८	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	नवमी तिथिक्षय,
३२	३	१०	र.	५०	५१	ज्येष्ठा	८	१३	वि.	२४	२५	तै.	२३	१९		११	२६	४	७	धनु	८	१३	५	५९	१८	४८	४	९	७	५४	गुरु रोहि. ४ में ५७/५२,
३१	५९	११	चं.	४६	११	मूल	५	१५	प्री.	१७	४९	व.	१८	३१		१२	२७	५	८	धनु			६	०	१८	४७	४	१०	५	४८	भ. १८/३१ से ४६/११ तक, पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (स.),
३१	५४	१२	मं.	४१	५६	पू.षा.	२	२६	आ.	११	३०	ब.	१४	३		१३	२८	६	९	मकर	१६	५८	६	०	१८	४६	४	११	३	४३	बुध मघा सिंह में ५८/००, बुध पूर्व में अस्त ६ घं. (B)
३१	५०	१३	बु.	३८	१६	उ.षा. श्रव.	० ५८	२३ ४९	सौ.	५	३४	कौ.	१०	६		१४	२९	७	१०	मकर			६	१	१८	४५	४	१२	१	४०	प्रदोष व्रत,
३१	४६	१४	गु.	३५	२४	धनि.	५८	८	शो. अ.	० ५५	१२ ३२	ग.	६	५०		१५	३०	८	११	कुम्भ	२८	१९	६	२	१८	४४	४	१२	५९	३८	भ. ३५/२४ बाद, पंचक प्रारम्भ २८/१६, सूर्य पू.फा.(C)
३१	४१	१५	शु.	३३	३४	शत.	५८	३३	सु.	५१	४६	वि.	४	२९		१६	३१	९	१२	कुम्भ			६	२	१८	४३	४	१३	५७	३८	भ. ४/२६ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत,

(A) शरदऋतु प्रारम्भ, (B) ०० मि. (भा.स्टैं.टा.), (C) में १६/४५,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २५ अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	६	३	१	२	६	७	१
८	१३	६	२२	१६	२२	१	६	६
१०	४२	४६	५०	४५	४२	३४	२३	२३
१	१५	५५	३३	५५	३४	६	११	११
५७	८४४	३९	१०३	७	६१	५	३	३
५३	५७	३०	२६	१०	१६	४७	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मघा ३	अनु. ४	स्वा. १	आश्ले. ४	रोहि. ३	पुन. १	चित्रा ३	अनु. १	कृत्ति. ३

कुण्डली सूर्योदय (२५ अग.)

६ | ४ बु. | सू. ५ | ७ मं. श. | शु. ३ | ८ चं. रा. | २ गु. के. | ९ | ११ | १ | १० | १२

लोकभविष्य:- भाद्रपद अधिकमास होने से जीरी के व्यापारियों को इसवर्ष विशेष लाभ होगा- "भाद्रद्वितये धान्यनिष्पत्तिःस्याधर्षेप्सिता ।" शनि-मंगल की तुलाराशि में स्थिति से कहीं विस्फोट व भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से भयंकर जनधनहानि हो। कहीं बाढ़ से खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी -"गुरु-शुक्रौ समीपस्थौ कुरुत एकार्णवां महीम् ।।" पाकिस्तान आदि यावनराष्ट्रों की स्थिति एवं राजनैतिक परिदृश्य बिखरता जाएगा।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ से २४ अगस्त तक सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, तेल, तिलहन, रुई, कपास, सूत तेज़ रहें । २६ अगस्त के लगभग ज्वार, गेहूं, जौ, चना, मसूर, सरसों, तिल, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शहद, सोंठ, मिर्च, रुई एवं सूत में मन्दा बन सकता है । २८ अगस्त को गेहूं, चना, रुई, चान्दी, सोना, सूत, घी, अनाज, दालदाना में पहले मन्दी का वातावरण बनेगा, बाद में तेज़ी रहे । २९ अगस्त को तेल, तिलहन, सोना, चान्दी एवम् सभी अनाज तेज़ रहें । **आकाशलक्षण:-** अग. १६, २१, २२, २४ को पंजाब, चण्डीगढ़, हि.प्र., हरियाणा, उ.प्र., दिल्ली, राजस्थान आदि के अधिकांश भागों में वर्षा, बादलचाल के योग हैं । २८, २९ अगस्त के लगभग वायुवेग के साथ वर्षा हो ।

कुण्डली सूर्योदय (३१ अग.)

६ | ४ | ५ सू. बु. | श. ७ मं. | ३ शु. | रा. ८ | गु. २ के. | ९ | चं. ११ | १ | १० | १२

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ३१ अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	६	४	१	२	६	७	१
१३	६	१०	३	२०	२८	२	६	६
५७	४७	४२	४६	२६	५४	६	४	४
३८	२४	३०	३६	४०	५६	४५	७	७
५८	७६३	३६	११५	६	६३	५	३	३
१	५६	६	५०	१५	७	३८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा. १	शत. १	स्वा. २	मघा २	रोहि. ४	पुन. ३	चित्रा ३	अनु. १	कृत्ति. ३

श्री वि. सं. २०६९, शाक १९३४, द्वि.(अधि.)भाद्रपद कृष्ण पक्ष १२ | **तारीखें** | **चन्द्रराशि - प्रवेशकाल** | **चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)** | **स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)**

(१ से १६ सितम्बर तक, सन् २०१२ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, शरद् ऋतु।

बुध अस्त है। प्रातः शु. पूर्व में और गु. याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा। सायं श. मं. पश्चिमकपाल में होंगे।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	प्र. भाद्रपद	अं. सितंबर	श. भाद्रपद	मु. शव्वाल	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३१	३७	१	[illegible]	३३	१	पू.भा.	६०	०	धृ.	४९	३	बा.	३	१७	१७	१	१०	१३	मीन	४४	४४	६	३	१८	४१	४	१४	५५	३९	शुक्र कर्क में ०/२७, सितम्बर प्रारम्भ,
३१	३२	२	र.	३३	५७	पू.भा.	०	१९	शू.	४७	३२	तै.	३	२९	१८	२	११	१४	मीन			६	३	१८	४०	४	१५	५३	४२	
३१	२८	३	चं.	३६	२७	उ.भा.	३	३५	गं.	४७	१४	व.	५	१२	१९	३	१२	१५	मीन			६	४	१८	३९	४	१६	५१	४६	भ. ५/१२ से ३६/२७ तक,
३१	२३	४	मं.	४०	२९	रेव.	८	२०	वृ.	४८	४	ब.	८	२८	२०	४	१३	१६	मेष	८	२०	६	४	१८	३८	४	१७	४९	५३	पंचक समाप्त ८/२०, बुध पू.फा. में ५१/५८, शुक्र पुष्य (A)
३१	१९	५	बु.	४५	४८	अश्वि.	१४	२९	ध्रु.	४९	५२	कौ.	१३	८	२१	५	१४	१७	मेष			६	५	१८	३७	४	१८	४८	१	
३१	१४	६	गु.	५१	५९	भर.	२१	४१	व्या.	५२	१७	ग.	१८	५३	२२	६	१५	१८	वृष	३८	३८	६	६	१८	३५	४	१९	४६	११	भ. ५१/५६ बाद,
३१	१०	७	शु.	५८	२८	कृत्ति.	२९	२६	ह.	५४	५५	वि.	२५	१४	२३	७	१६	१९	वृष			६	६	१८	३४	४	२०	४४	२३	भ. २५/१४ तक,
३१	५	८	श.	६०	०	रोहि.	३७	५	व.	५७	१७	बा.	३१	३०	२४	८	१७	२०	वृष			६	७	१८	३३	४	२१	४२	३७	वक्री यूरेनस उ.भा. ३ में १७/१९,
३१	१	८	र.	४	३२	मृग.	४४	०	सि.	५८	५५	कौ.	४	३२	२५	९	१८	२१	मिथुन	१०	४०	६	७	१८	३२	४	२२	४०	५४	
३०	५६	९	चं.	९	३६	आर्द्रा	४९	३७	व्य.	५९	२६	ग.	९	३६	२६	१०	१९	२२	मिथुन			६	८	१८	३०	४	२३	३९	१२	भ. ४१/२२ बाद,
३०	५२	१०	मं.	१३	८	पुन.	५३	३२	व.	५८	३३	वि.	१३	८	२७	११	२०	२३	कर्क	३७	४४	६	८	१८	२९	४	२४	३७	३३	भ. १३/८ तक, बुध उ.फा. में ५०/१५,
३०	४७	११	बु.	१४	४९	पुष्य	५५	३४	प.	५६	१०	बा.	१४	४९	२८	१२	२१	२४	कर्क			६	९	१८	२८	४	२५	३५	५५	शनि चित्रा ४ में १७/५२, पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (स.),
३०	४३	१२	गु.	१४	३४	आश्ले.	५५	४५	शि.	५२	१७	तै.	१४	३४	२९	१३	२२	२५	सिंह	५५	४५	६	९	१८	२६	४	२६	३४	२०	सूर्य उ.फा. में ४/१२, बुध कन्या में ३८/३०, प्रदोषव्रत,
३०	३८	१३	शु.	१२	२८	मघा	५४	१६	सि.	४७	१	व.	१२	२८	३०	१४	२३	२६	सिंह			६	१०	१८	२५	४	२७	३२	४६	भ. १२/२८ से ४०/३६ तक, मंगल विशा. में ०/०२,
३०	३३	१४	श.	८	४५	पू.फा.	५१	२३	सा.	४०	३५	श.	८	४५	३१	१५	२४	२७	सिंह			६	११	१८	२४	४	२८	३१	१५	
३०	२९	३०	र.	३	४३	उ.फा.	४७	२९	शु.	३३	१५	ना.	३	४३	आ.१	१६	२५	२८	कन्या	५	२८	६	११	१८	२३	४	२९	२९	४५	सं. सूर्य कन्या में २९/१८, मु. ४५, पुण्यकाल मध्याह्न (B)

(A) में ८/४६, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, अगस्त्य उदित, (B) बाद, शुक्र आश्ले. में २०/१०, अधिक(मल)मास समाप्त,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ९ सितंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]	१	६	४	१	३	६	७	१
२[illegible]	२७	१६	२१	२१	८	२	५	५
[illegible]	३४	३७	१६	१७	३२	५९	३५	३५
[illegible]	१५	५८	४	७	४५	२८	३०	३०
[illegible]	७२०	३९	११३	४	६५	६	३	३
[illegible]	१६	५९	५९	४६	२८	७	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.[illegible]	मृग. २	स्वा. ३	पू.फा. ३	रोहि. ४	पुष्य २	चित्रा ३	अनु. १	कृत्ति. ३

कुण्डली सूर्योदय (९ सितं.)

६ | ४ शु.
श. ७ मं. | ५ सू. बु. | ३
रा. ८ | चं. गु. २ के.
९ | ११ | १
१० | १२

लोकभविष्यः- इस पक्ष में सिंहराशिस्थ सूर्य-बुध एवं शुक्र का कर्कराशि में संक्रमण जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में तेज़ी करेगा- "दैत्यगुरुर्यदा कर्के रसानां वै महर्घता। सर्वधान्य-समर्घत्वं मेघाश्च प्रबला भुवि॥" सितम्बर ४ से पक्षान्त तक किसी मुस्लिम-राष्ट्र में आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक स्थिति बिगड़ेगी। किसी विशिष्ट व्यक्ति का पद रिक्त होगा। भारत के किसी प्रान्त में अवर्षण या अतिवर्षण से अकाल की स्थिति बनेगी।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में अलसी, एरण्ड, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज़ रहें। ४ से ७ सितम्बर तक दालें, अनाज तेज़; रुई एवं चान्दी मन्दे हों। १२ सितम्बर से पक्षान्त तक रुई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चान्दी, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल, गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं हल्दी में तेज़ी बनेगी; शेयर मन्दे हों।

आकाशलक्षणः- सितम्बर १, ४, ११, १२, १३, १४ एवं १६ को नेपाल, सूरत, दार्जिलिंग, विन्ध्यप्रदेश एवं उ.प्र. के कुछ भागों में कहीं बादलचाल व खण्डवृष्टि हो। उ. भारत में मौसम साफ रहे।

कुण्डली सूर्योदय (१६ सितं.)

६ बु. | ४ शु.
श. ७ मं. | ५ सू. चं. | ३
रा. ८ | गु. २ के.
९ | ११ | १
१० | १२

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १६ सितंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	६	५	१	३	६	७	१
२९	२८	२१	४	२१	१६	३	५	५
२९	१७	१९	१३	४६	१५	४३	१३	१३
४५	५६	५२	३३	४४	३६	१७	१५	१५
५८	८२३	४०	१०६	३	६६	६	३	३
३२	१७	३९	५७	३१	५६	२७	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा. १	उ.फा. १	विशा. १	उ.फा. ३	रोहि. ४	पुष्य ४	चित्रा ४	अनु. १	कृत्ति. ३

श्री वि. सं. २०६९, शाक १९३४, द्वि.(शुद्ध) भाद्रपद शु. पक्ष १३															तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(१७ से ३० सितम्बर तक, सन् २०१२ ई.) दक्षिणायन, उत्तर-दक्षिणगोल, शरद ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. आश्विन	अं. सितंबर	श. भाद्रपद	मु. शव्वाल				सूर्योदय		सूर्यास्त						२८ सितं. को बु. सायं पश्चिम में उदित होगा । मं. इस समय पश्चिम में और श. पश्चिमक्षितिज की ओर होगा । प्रातः शु. पूर्वकपाल में और गु. याम्योत्तरवृत्त में दिखाई देगा ।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	र.	५७	४६	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,
३०	२४	२	चं.	५१	१२	हस्त	४२	५५	शु.	२५	१९	बा.	२४	२९	२	१७	२६	२९	कन्या			६	१२	१८	२१	५	०	२८	१७	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, साम उपाकर्म, मेला डेरा बाबा (A)
३०	२०	३	मं.	४४	२३	चित्रा	३८	३	ब्र.	१७	१	तै.	१७	४७	३	१८	२७	जि.१	तुला	१०	२८	६	१२	१८	२०	५	१	२६	५१	प्लूटो मार्गी १०/५७, हरितालिका तृतीया, गौरी तृतीया, (B)
३०	१५	४	बु.	३७	३७	स्वाती	३३	१२	ऐं.	८	३९	व.	११	०	४	१९	२८	२	तुला			६	१३	१८	१९	५	२	२५	२७	भ. ११/०० से ३७/३७ तक, बुध हस्त में १४/४६, (C)
३०	१०	५	गु.	३१	८	विशा.	२८	३७	ऐं. वि.	० ५२	२६ ३१	ब.	४	२२	५	२०	२९	३	वृश्चि.	१४	४३	६	१३	१८	१८	५	३	२४	५	ऋषि पंचमी, संवत्सरी महापर्व (जैन),
३०	६	६	शु.	२५	९	अनु.	२४	३०	प्री.	४५	१	तै.	२५	९	६	२१	३०	४	वृश्चि.			६	१४	१८	१६	५	४	२२	४४	सूर्यषष्ठी व्रत,
३०	१	७	श.	१९	४६	ज्येष्ठा	२१	०	आ.	३८	३	व.	१९	४६	७	२२	३१	५	धनु	२१	०	६	१५	१८	१५	५	५	२१	२५	भ. १९/४६ से ४७/२५ तक, सूर्य सायन तुला में (D)
२९	५६	८	र.	१५	४	मूल	१८	१०	सौ.	३१	३९	ब.	१५	४	८	२३	आ.१	६	धनु			६	१५	१८	१४	५	६	२०	८	श्रीराधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ, शक आश्विन प्रारम्भ,
२९	५२	९	चं.	११	६	पू.षा.	१६	५	शो.	२५	५२	कौ.	११	६	९	२४	२	७	मकर	३०	४२	६	१६	१८	१२	५	७	१८	५३	बा. श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव),
२९	४७	१०	मं.	७	५६	उ.षा.	१४	४७	अ.	२०	४३	ग.	७	५६	१०	२५	३	८	मकर			६	१६	१८	११	५	८	१७	३९	भ. ३६/४६ बाद,
२९	४३	११	बु.	५	३६	श्रव.	१४	१८	सु.	१६	१४	वि.	५	३६	११	२६	४	९	कुम्भ	४४	२४	६	१७	१८	१०	५	९	१६	२७	भ. ५/३६ तक, पंचक प्रारम्भ ४४/२४, सूर्य हस्त में (E)
२९	३८	१२	गु.	४	१०	धनि.	१४	४३	धृ.	१२	२८	बा.	४	१०	१२	२७	५	१०	कुम्भ			६	१७	१८	९	५	१०	१५	१६	बुध चित्रा में १४/१८, प्रदोष व्रत,
२९	३३	१३	शु.	३	४३	शत.	१६	७	शू.	९	३०	तै.	३	४३	१३	२८	६	११	कुम्भ			६	१८	१८	७	५	११	१४	८	मंगल वृश्चिक में ३६/०४, बुध पश्चिम में उदित १८ घं.(F)
२९	२९	१४	श.	४	२२	पू.भा.	१८	३५	गं.	७	२३	व.	४	२२	१४	२९	७	१२	मीन	२	५३	६	१९	१८	६	५	१२	१३	१	भ. ४/२२ से ३५/१७ तक, श्री अनन्तचतुर्दशी व्रत, (G)
२९	२४	१५	र.	६	१३	उ.भा.	२२	१४	वृ.	६	१२	ब.	६	१३	१५	३०	८	१३	मीन			६	१९	१८	५	५	१३	११	५६	पितृपक्ष (महालय) प्रारम्भ, प्रतिपदा का श्राद्ध,

(A) गोसाईं आणां, कुराली (पं.), (B) श्रीवराह जयन्ती, ज़िल्काद मु. प्रा., (C) हरितालिका चतुर्थी, कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषिद्ध) [चन्द्रास्त २० घं. ३१ मि. (भा.स्टै.टा.)], श्रीसिद्धिविनायक व्रत, (D) ३५/१०, दक्षिणगोल प्रारम्भ, विषुवदिन, (E) ४२/२८, श्रीवामन जयन्ती, पद्मा एकादशी व्रत (स.), वामन द्वादशी, श्रवण द्वादशी, (F) ०७ मि. (भा.स्टै.टा.), शुक्र मघा सिंह में ६/०३, (G) श्रीसत्यनारायण व्रत, प्रोष्ठपदी श्राद्ध, पूर्णिमा श्राद्ध,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २३ सितंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	६	५	१	३	६	७	१
६	८	२६	१६	२२	२४	४	४	४
२०	४०	६	२०	७	८	२६	५१	५१
६	३४	१९	२६	२०	५	११	०	०
५८	८३२	४१	६६	२	६८	६	३	३
४४	१	७१	४६	११	१२	४२	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३ उ.फा.	३ मृग.	२ विशा.	२ हस्त	४ रोहि.	३ आश्ले.	४ चित्रा	१ कृ.	३ पू.भा.

कुण्डली सूर्योदय (२३ सितं.)

मं.७ श. | ५ | रा. ८ | सू. ६ बु. | शु. ४ | चं. ६ | ३ | १० | १२ | गु.के.२ | ११ | १

लोकभविष्य:- इस पक्ष में शनि-मंगल का (२७ सितम्बर तक) एकराशिसम्बन्ध एवम् तत्पश्चात् मंगल-राहु का एकराशिसम्बन्ध कहीं प्राकृतिक आपदा, भूकम्प, कहीं भयंकर राजनैतिक उलटफेर या यानदुर्घटना से स्तब्ध कर सकता है । महंगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी। शासकों एवं राजनैतिक दलों में परस्पर आरोप-प्रत्यारोप का दौर चलेगा- " यदा वृश्चिक-राशिस्थो जायते महीसुतः । महर्घं सर्वद्रव्याणां नृपाणां कोपमादिशेत् ।।" शासनतन्त्र-संचालक घटकों में परस्पर वैमनस्य नज़र आएगा ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में सभी अनाज मन्दे रहें । सोने-चान्दी में घटाबढ़ी चले । दालदाना में ज़ोरदार तेज़ी बने । २६ से २८ सितम्बर तक सभी अनाज, तेल, तिलहन, घी, गुड़, खाण्ड, नमक, शहद, सोंठ, मिर्च, कपास, रुई, सूत, सोना, चान्दी तेज़ रहेंगे । शेयर बाज़ार मन्दे रहें ।

आकाशलक्षण :- सितम्बर १७, १९, २४, २६ एवम् २८ को आसाम, बंगाल, नेपाल, भूटान एवम् काश्मीर में बादलचाल व कहीं वायुवेग के साथ वर्षा हो । उत्तर-भारत में शीत का आगमन अनुभव होगा।

कुण्डली सूर्योदय (३० सितं.)

७ श. | ५ शु. | रा. ८ मं. | सू. ६ बु. | ४ | ६ | ३ | १० | चं. १२ | गु.के.२ | ११ | १

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ३० सितंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	११	७	५	१	४	६	७	१
१३	११	०	२७	२२	२	५	४	४
११	३६	५७	३९	१८	८	१६	२८	२८
५७	३१	१	३४	३०	५६	४७	४५	४५
५८	७४५	४१	९३	०	६९	६	३	३
५७	२६	५२	२६	४८	१९	५५	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१ हस्त	३ उ.भा.	४ विशा.	२ चित्रा	४ रोहि.	१ मघा	४ चित्रा	१ कृ.	३ पू.फा.

श्री वि. सं. २०६९, शाक १९३४, अश्विन कृष्ण पक्ष १४

(१ से १५ अक्तूबर तक, सन् २०१२ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद् ऋतु।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें अं. आश्विन	तारीखें अं. अक्तू.	तारीखें श. आश्विन	तारीखें मु. ज़िल्काद	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.
२९	२०	१	चं.	९	१९	रेव.	२७	७	ध्रु.	५	५९	कौ.	९	१९	१६	१	९	१४	मेष	२७	७	६	२०	१८	४	५	१४	१०	५३
२९	१५	२	मं.	१३	३९	अश्वि.	३३	८	व्या.	६	४२	ग.	१३	३९	१७	२	१०	१५	मेष			६	२०	१८	२	५	१५	९	५२
२९	१०	३	बु.	१९	५	भर.	४०	९	ह.	८	१६	वि.	१९	५	१८	३	११	१६	वृष	५७	२	६	२१	१८	१	५	१६	८	५३
२९	६	४	गु.	२५	२१	कृत्ति.	४७	५०	व.	१०	३०	बा.	२५	२१	१९	४	१२	१७	वृष			६	२२	१८	०	५	१७	७	५७
२९	१	५	शु.	३२	१	रोहि.	५५	४२	सि.	१३	६	तै.	३२	१	२०	५	१३	१८	वृष			६	२२	१७	५९	५	१८	७	३
२८	५६	६	श.	३८	३१	मृग.	६०	०	व्य.	१५	४१	ग.	५	२१	२१	६	१४	१९	मिथुन	२९	३४	६	२३	१७	५७	५	१९	६	११
२८	५२	७	र.	४४	१४	मृग.	३	१२	व.	१७	५१	वि.	११	२२	२२	७	१५	२०	मिथुन			६	२४	१७	५६	५	२०	५	२१
२८	४७	८	चं.	४८	३८	आर्द्रा	९	४६	प.	१९	१०	बा.	१६	२६	२३	८	१६	२१	कर्क	५८	४७	६	२४	१७	५५	५	२१	४	३४
२८	४३	९	मं.	५१	१५	पुन.	१४	५२	शि.	१९	१६	तै.	१९	५६	२४	९	१७	२२	कर्क			६	२५	१७	५४	५	२२	३	४९
२८	३८	१०	बु.	५१	५०	पुष्य	१८	८	सि.	१७	५४	व.	२१	३२	२५	१०	१८	२३	कर्क			६	२५	१७	५३	५	२३	३	६
२८	३४	११	गु.	५०	२१	आश्ले.	१९	२३	सा.	१४	५४	ब.	२१	५	२६	११	१९	२४	सिंह	१९	२३	६	२६	१७	५२	५	२४	२	२६
२८	२९	१२	शु.	४६	५४	मघा	१८	३८	शु.	१०	१७	कौ.	१८	३७	२७	१२	२०	२५	सिंह			६	२७	१७	५०	५	२५	१	४८
२८	२५	१३	श.	४१	४४	पू.फा.	१६	३	शु. / ब्र.	४ / ५६	९ / ४४	ग.	१४	१९	२८	१३	२१	२६	कन्या	३०	८	६	२७	१७	४९	५	२६	१	१२
२८	२०	१४	र.	३५	११	उ.फा.	११	५६	ऐं.	४८	१५	वि.	८	२७	२९	१४	२२	२७	कन्या			६	२८	१७	४८	५	२७	०	३८
२८	१६	३०	चं.	२७	३९	हस्त	६	३९	वै.	३९	२	च.	१	२५	३०	१५	२३	२८	तुला	३३	४१	६	२९	१७	४७	५	२८	०	७

८ अक्तू. को श. पश्चिम में लुप्त हो जाएगा । सायं बु. पश्चिमक्षितिज पर और मं. भी पश्चिम की ओर होगा । प्रातः शु. पूर्व में और गु. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम की ओर दिखाई देगा ।

पंचक समाप्त २७/०७, बुध तुला में २८/२२, द्वितीया (A)
भ. ४६/२२ बाद, तृतीया का श्राद्ध (देखें पृ. 106),
भ. १६/०५ तक, मंगल अनु. में २२/१६, श्रीगणेश (B)
गुरु वक्री ३१/०५, चतुर्थी का श्राद्ध (देखें पृ. 106),
बुध स्वा. में ५२/४६, पंचमी का श्राद्ध,
भ. ३८/३१ बाद, वक्री नेप्च्यून धनि. ४ में १२/३३, (C)
भ. ११/२२ तक, सप्तमी का श्राद्ध,
शनि अस्त १७ घं. ५५ मि. (भा.स्टैं.टा.), श्रीमहालक्ष्मी (D)
शुक्र पू.फा. में ३३/२०, नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवती (E)
भ. २१/३२ से ५१/५० तक, सूर्य चित्रा में १४/४६,(F)
शनि स्वा. १ में ४६/४०, एकादशी (G)
मघा श्राद्ध, द्वादशी का श्राद्ध, संन्यासियों (H)
भद्रा ४१/४४ बाद, त्रयोदशी का श्राद्ध, शनिप्रदोष व्रत,
भ. ८/२७ तक, शस्त्र-विषादि से मृतों (अपमृत्यु वालों) (I)
बुध विशाखा में १६/३०, मेला फल्गु (पिहोवा-हरि.), (J)

मेला फल्गु
१५ अक्तूबर

(A) का श्राद्ध, (B) चतुर्थी व्रत, भरणी श्राद्ध, (इस दिन कोई तिथिश्राद्ध घटित नही होता- देखें पृ. 106),(C) षष्ठी का श्राद्ध, चन्द्रषष्ठी व्रत, (D) व्रत समाप्त (चन्द्रोदयव्यापिनी अष्टमी में), अष्टमी का श्राद्ध, (E) श्राद्ध, (F) दशमी का श्राद्ध, (G) का श्राद्ध, इन्दिरा एकादशी व्रत (स.), (H) का श्राद्ध, (I) का श्राद्ध, (J) सर्वपितृ श्राद्ध, अज्ञात मृत्युतिथि, चतुर्दशी/अमावस एवम् पूर्णिमा मृत्युतिथि वालों का श्राद्ध, सोमवती अमा,

ग्रहस्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ८ अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	७	६	१	४	६	७	१
२१	१७	६	९	२२	११	६	४	४
४	३४	३४	४३	३९	२७	१२	३	३
३५	२२	१२	१७	२१	३७	४८	१९	१९
५९	७३२	४२	८६	०	७०	७	३	३
१५	५०	३१	३९	४८	२८	६	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
हस्त ४	आर्द्रा ४	अनु. १	स्वा. १	रोहि. ४	मघा ४	चित्रा ४	अनु. १	कृत्ति. ३

कुण्डली सूर्योदय (८ अक्तू.)

७ बु. श. | ५ शु.
रा. ८ मं. | सू. ६ | ४
९ | ३ चं.
१० | १२ | गु.के.२
११ | १

लोकमविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच चन्द्रवार होने से सर्वत्र आनन्द-मंगल रहे । सर्वत्र धनधान्य-समृद्धि रहे- 'सोमस्य पञ्चवारास्तु यत्र मासे भवन्ति हि । धन-धान्यसमृद्धिः स्यात् सुखं भवति सर्वदा ।।" तुलाराशि में बुध राहु के साथ होने से कहीं उपवादजन्य विभीषिका रहेगी । तुला प्रभावराशि वाले देश एवं मेष-वृश्चिक-राशि वाले राजनीतिज्ञों के लिए समय कुछ चिन्ताकारक किंवा कष्टप्रद है । शनि अस्त हो रहा है, गुरु वक्री है, अतः समुद्रतटवर्ती भूभाग पर सुनामी आदि से हानि के योग बनते हैं ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- १ से ४ अक्तू. तक रुई, गुड़, खाण्ड, कपास, गेहूं, मिर्च एवं सोना, चान्दी आदि धातु तेज़ रहेंगे । ८ से १० अक्तू. तक अनाज, दालवाना, शेयर बाज़ार मन्दे रहेंगे। १० अक्तू. को दोपहर बाद गुड़, खाण्ड, दालवाना, तेल, तिलहन में कुछ तेज़ी रहे ।

आकाशलक्षणः- अक्तू. १, ४, ५, ६, ८, ९, १० एवं १५ को श्रीलंका, आसाम, बंगाल एवं उ.प्र. के कुछ भागों में बादलचाल एवम् वर्षा के योग हैं। उ.भारत के कुछ भागों में वायुवेग के साथ कहीं खण्डवृष्टि एवं हवा का ज़ोर रहे।

कुण्डली सूर्योदय (१५ अक्तू.)

७ बु. श. | ५ शु.
रा. ८ मं. | सू. ६ चं. | ४
९ | ३
१० | १२ | गु.के.२
११ | १

ग्रहस्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १५ अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	७	६	१	४	६	७	१
२८	२१	११	१९	२२	१९	७	३	३
०	५	३३	३०	९	४३	२	४१	४१
७	५६	३३	४६	३०	२८	५२	४	४
५९	८८७	४३	७९	२	७१	७	३	३
३१	५६	५	५७	१३	१८	१२	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
चित्रा २	हस्त ४	अनु. ३	स्वा. ४	रोहि. ४	पू.फा. २	स्वा. १	अनु. १	कृ. ३

(१६ से २६ अक्तूबर तक, सन् २०१२ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद्-हेमन्त ऋतु।

श. अस्त है । सायं बु. पश्चिमक्षितिज में और मं. पश्चिम की ओर होगा । प्रातः शु. पूर्व में एवम् गु. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम की ओर होगा ।

श्री वि. सं. २०६९, शाक १९३४, अश्विन शुक्ल पक्ष १५															तारीखें				चन्द्रराशि प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. कार्तिक	अं. अक्तू.	श. आश्विन	मु. ज़िल्काद				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२८	११	१	मं.	१९	३१	चित्रा स्वाती	० ५४	३९ १६	वि.	२९	२३	ब.	१९	३१	का.१	१६	२४	२९	तुला			६	२९	१७	४६	५	२८	५९	३७	सं. सूर्य तुला में५८/२२, मु. १५, पुण्यकाल अगले (A)
२८	७	२	बु	११	११	विशा.	४७	५६	प्री.	१९	३८	कौ.	११	११	२	१७	२५	३०	वृश्चि.	३४	२७	६	३०	१७	४५	५	२९	५९	१०	चन्द्रदर्शन, मु. ४५,
२८	२	३	गु	३	१	अनु	४२	१	आ.	१०	४	ग.	३	१	३	१८	२६	ज़ि.१	वृश्चि.			६	३१	१७	४४	६	०	५८	४४	भ. २६/१२ से ५५/२३ तक, जिल्हिज्ज मु. प्रा.,
अवम		४	गु	५५	२३	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय,
२७	५८	५	शु	४८	३१	ज्येष्ठा	३६	४९	सौ. शो.	० ५२	५९ ३२	ब.	२१	५७	४	१९	२७	२	धनु	३६	४९	६	३२	१७	४३	६	१	५८	२०	उपाङ्गललिता व्रत,
२७	५३	६	श.	४२	४१	मूल	३२	३५	अ.	४४	५६	कौ.	१५	३६	५	२०	२८	३	धनु			६	३२	१७	४२	६	२	५७	५८	शुक्र उ.फा. में ४६/४२, सरस्वती-आवाहन,
२७	४९	७	र.	३८	२	पू.षा.	२९	३१	सु.	३८	१७	ग.	१०	२१	६	२१	२९	४	मकर	४३	५७	६	३३	१७	४१	६	३	५७	३८	भ. ३८/०२ बाद, राहु विशा. ४, केतु कृत्ति. २ में (B)
२७	४४	८	चं.	३४	४०	उ.षा.	२७	४२	धृ.	३२	४१	वि.	६	२१	७	२२	३०	५	मकर			६	३४	१७	४०	६	४	५७	२०	भ. ६/२१ तक, मंगल ज्येष्ठा में १/४७, सूर्य सायन (C)
२७	४०	९	मं.	३२	३९	श्रव.	२७	१३	शू.	२८	८	बा.	३	३९	८	२३	का.१	६	कुम्भ	५७	२८	६	३४	१७	३९	६	५	५७	३	पंचक प्रारम्भ ५७/२८, सूर्य स्वाती में ४०/२८, बुध (D)
२७	३६	१०	बु	३१	५८	धनि.	२८	१	गं.	२४	३८	तै.	२	१८	९	२४	२	७	कुम्भ			६	३५	१७	३८	६	६	५६	४८	विजयादशमी (दशहरा), आयुध पूजा, अपराजिता-पूजा, (E)
२७	३१	११	गु	३२	३६	शत.	३०	६	वृ.	२२	१०	व.	२	१७	१०	२५	३	८	कुम्भ			६	३६	१७	३७	६	७	५६	३५	भ. २/१७ से ३२/३६ तक, भरत मिलाप, पापांकुशा (F)
२७	२७	१२	शु	३४	२८	पू.भा.	३३	२३	धु.	२०	३९	ब.	३	३२	११	२६	४	९	मीन	१७	२८	६	३७	१७	३६	६	८	५६	२३	बुध अनुराधा में २६/१७,
२७	२३	१३	श.	३७	३०	उ.भा.	३७	४८	व्या.	२०	३	कौ.	५	५९	१२	२७	५	१०	मीन			६	३७	१७	३५	६	९	५६	१३	शनिप्रदोष व्रत,
२७	१९	१४	र.	४१	३७	रेव.	४३	१४	ह.	२०	१६	ग.	९	३३	१३	२८	६	११	मेष	४३	१४	६	३८	१७	३४	६	१०	५६	५	भ. ४१/३७ बाद, पंचक समाप्त ४३/१४,
२७	१५	१५	चं.	४६	४०	अश्वि.	४९	३३	व.	२१	१४	वि.	१४	०८	१४	२९	७	१२	मेष			६	३९	१७	३३	६	११	५५	५९	भ. १४/०८ तक, प्लूटो पू.षा. १ में १२/१६, शरत् (G)

(A) दिन मध्याह्न तक, शारद नवरात्र प्रारम्भ, महाराजा श्री अग्रसेन जयंती, नाना-नानी का श्राद्ध, (B) ३५/००, सरस्वती-पूजन, (C) वृश्चिक में ५७/५५, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, सरस्वती के लिए बलिदान, श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी, (D) वृश्चिक में २०/५३, शुक्र कन्या में ३३/२०, सरस्वती-विसर्जन, महानवमी (उपवास, पूजा, बलिदान के लिए), नवरात्र समाप्त, शक कार्तिक प्रारम्भ, (E) सीमोल्लंघन, श्रीमाध्वाचार्य जयन्ती, (F) एकादशी व्रत (स.), (G) पूर्णिमा, कोजागर व्रत, श्रीवाल्मीकि जयन्ती, कार्तिकस्नान प्रारम्भ, श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.)
२२ अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ ४ ५७ २१	९ ३ ४ ५९	७ १६ ३६ ४५	६ २८ २३ २३	१ २१ ४९ ५२	४ २८ ४ ४५	६ ७ ५३ ३०	७ ३ १८ ४९	१ ३ १८ ४९
५९ ४३	८१५ २७	४३ ३७	६९ ५६	२ ३५	७१ ०	७ १५	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
चित्रा ४	उ.षा. २	अनु. ४	विशा. ३	रोहि. ४	उ.फा. १	स्वा. १	विशा. ४	कृत्ति. २

कुण्डली सूर्योदय (२२ अक्तू.)

- मं. ८ रा.
- ६
- ९
- सू. ७ श. बु.
- शु. ५
- १० चं.
- ४
- ११
- १
- ३
- १२
- २ गु.के.

लोकभविष्य:- इस पक्ष में तुलाराशिस्थ चन्द्र के समय तुला-संक्रान्ति लग रही है। सूर्य-शनि दोनों तुलाराशि में हैं । विश्व के राजनीतिज्ञों के लिए समय भयावह है, किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन व हत्या से शोक व्याप्त होगा-" यद्दिने मार्कसंक्रान्तिः तद्राशौ तद्दिने शशी । जन्मवेधादयं नेष्टः श्रेष्ठः स्व-सुहृद्गृहे ॥" जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में महंगाई से जनाक्रोश बढ़े ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ से २२ अक्तूबर तक गेहूं, जौ, चना, अलसी,सोना, चान्दी, तांबा, लालचन्दन, मजीठ, सुपारी, इमारती लकड़ी, रुई, सूत, सण, मिर्च, सरसों, बिनौला, हींग तेज़ होंगे । २३ अक्तूबर को बाज़ार कुछ मन्दे होकर बाद में २५ अक्तूबर तक तेज़ रहेंगे। पक्षान्त में फिर मन्दा बने । आकाशलक्षण:- अक्तूबर १६, २०, २१, २२, २३, २४ एवं २६ को जम्मू-काश्मीर, पंजाब, हि.प्र. एवं उ.प्र. के कुछ भागों में वायुवेग के साथ हल्की बौछारें संभव हैं । शीत का प्रभाव बढ़ने लगेगा ।

कुण्डली सूर्योदय (२६ अक्तू.)

- मं. ८ बु. रा.
- ६ शु.
- ९
- सू. ७ श.
- ५
- १०
- ४
- ११
- १ चं.
- ३
- १२
- २ गु.के.

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.)
२६ अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ ११ ५६ ०	० २ ४८ ४८	७ २१ ४३ ३०	७ ५ ४३ ५३	१ २१ २० ५७	५ ६ ३० ४१	६ ८ ४४ १७	७ २ ५६ ३४	१ २ ५६ ३४
५९ ५५	७२१ ४८	४४ ६	५१ ३	४ ५१	७२ ३७	७ १५	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
स्वा. २	अश्वि. १	ज्येष्ठा २	अनु. १	रोहि. ४	उ.फा. ३	स्वा. १	विशा. ४	कृत्ति. २

श्री वि. सं. २०६९, शाक १९३४, कार्तिक कृष्ण पक्ष १६

(३० अक्तूबर से १३ नवम्बर तक, सन् २०१२ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।

११ नवं. को बु. पश्चिम में अस्त और इसी दिन श. प्रातः पूर्व में दृश्य हो जाएगा। सायं मं. पश्चिम में होगा। प्रातः शु. पूर्व में और गु. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम की ओर होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. कार्तिक	अं. अक्तू.	श. कार्तिक	मु. जिलहिज्जा	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२७	१०	१	मं.	५२	३२	भर.	५६	३८	सि.	२२	५२	बा.	१९	३६	१५	३०	८	१३	मेष			६	४०	१७	३२	६	१२	५५	५४	
२७	६	२	बु.	५८	५९	कृत्ति.	६०	०	व्य.	२४	५९	तै.	२५	४६	१६	३१	९	१४	वृष	१३	२९	६	४१	१७	३१	६	१३	५५	५१	शुक्र हस्त में ४६/४८,
२७	२	३	गु.	६०	०	कृत्ति.	४	१४	व.	२७	२७	व.	३२	२१	१७	न. १	१०	१५	वृष			६	४१	१७	३०	६	१४	५५	५१	भ. ३२/२१ बाद, नवम्बर प्रारम्भ,
२६	५८	३	शु.	५	४२	रोहि.	१२	६	प.	३०	०	वि.	५	४२	१८	२	११	१६	मिथुन	४६	२	६	४२	१७	२९	६	१५	५५	५२	भ. ५/४२ तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, करक चतुर्थी (A)
२६	५४	४	श.	१२	२०	मृग.	१९	५०	शि.	३२	२२	बा.	१२	२०	१९	३	१२	१७	मिथुन			६	४३	१७	२९	६	१६	५५	५६	
२६	५०	५	र.	१८	२६	आर्द्रा	२६	५९	सि.	३४	१३	तै.	१८	२६	२०	४	१३	१८	मिथुन			६	४४	१७	२८	६	१७	५६	१	
२६	४६	६	चं.	२३	३१	पुन.	३३	८	सा.	३५	१३	व.	२३	३१	२१	५	१४	१९	कर्क	१६	४३	६	४५	१७	२७	६	१८	५६	९	भ. २३/३१ से ५५/२० तक,
२६	४२	७	मं.	२७	९	पुष्य	३७	४९	शु.	३५	३	ब.	२७	९	२२	६	१५	२०	कर्क			६	४५	१७	२६	६	१९	५६	१८	सूर्य विशाखा में ०/३२, बुध वक्री ५४/३२,
२६	३८	८	बु.	२९	०	आश्ले.	४०	४६	शु.	३३	३०	कौ.	२९	०	२३	७	१६	२१	सिंह	४०	४६	६	४६	१७	२६	६	२०	५६	३०	अहोई अष्टमी (पं.),
२६	३५	९	गु.	२८	५१	मघा	४१	४३	ब्र.	३०	२४	ग.	२८	५१	२४	८	१७	२२	सिंह			६	४७	१७	२५	६	२१	५६	४४	भ. ५७/४४ बाद, शनि स्वाती २ में २६/५०,
२६	३१	१०	शु.	२६	३८	पू.फा.	४०	४२	ऐं.	२५	४१	वि.	२६	३८	२५	९	१८	२३	कन्या	५५	९	६	४८	१७	२४	६	२२	५७	०	भ. २६/३८ तक, मंगल मूल धनु में ७/०७,
२६	२७	११	श.	२२	२९	उ.फा.	३७	४८	वै.	१९	२५	बा.	२२	२९	२६	१०	१९	२४	कन्या			६	४९	१७	२४	६	२३	५७	१८	गोवत्स द्वादशी (प्रदोषव्यापिनी), रमा एकादशी व्रत (स.),
२६	२३	१२	र.	१६	३६	हस्त	३३	१५	वि.	११	४४	तै.	१६	३६	२७	११	२०	२५	कन्या			६	५०	१७	२३	६	२४	५७	३७	वक्री गुरु रोहि. ३ में ४५/०५, शुक्र चित्रा में ४४/४७,(B)
२६	२०	१३	चं.	९	१७	चित्रा	२७	२५	प्री. आ.	२ ५३	५२ ८	व.	९	१७	२८	१२	२१	२६	तुला	०	२९	६	५०	१७	२२	६	२५	५७	५९	भ. ६/१७ से ३५/०७ तक, धन त्रयोदशी, श्रीहनुमान् (C)
२६	१६	१४	मं.	०	५८	स्वाती	२०	३८	सौ.	४२	४७	श.	०	५८	२९	१३	२२	२७	तुला			६	५१	१७	२२	६	२६	५८	२२	नरक चतुर्दशी (पूर्व अरुणोदय वाली), दीपावली, (D)
अवम		३०	मं.	५१	५६	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अमावस तिथिक्षय,

(A) (करवा चौथ) [चन्द्रोदय २० घं. ०६ मि. (भा.स्टैं.टा.)], (B) बुध पश्चिम में अस्त १७ घं. २३ मि. (भा.स्टैं.टा.), शनि उदित ६ घं. ५० मि. (भा.स्टैं.टा.), नेप्च्यून मार्गी १६/३२, यमप्रीत्यर्थ दीपदान, प्रदोष व्रत, (C) जयन्ती (उ.भा.) (अर्धरात्रिव्यापिनी),(D) श्रीमहालक्ष्मी पूजन, भौमवती अमा, श्रीमहावीरनिर्वाण दिवस (जैन),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ७ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	७	७	१	५	६	७	१
२०	२०	२८	१०	२०	१७	६	२	२
५६	३६	२२	१५	३१	२७	४६	२७	२७
३१	१७	४७	४५	२५	१५	१५	५७	५७
६०	७६८	४४	४	६	७३	७	३	३
१४	५५	४२	४६	१६	२०	१०	११	११
		मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
विशा. १	आश्ले. २	ज्येष्ठा ४	अनु. ३	रोहि. ४	हस्त ३	स्वा. १	विशा. ४	कृत्ति. २

कुण्डली सूर्योदय (७ नवं.)

- मं. ८ बु. रा.
- ६ शु.
- ९
- सू. ७ श.
- ५
- १०
- चं. ४
- ११
- १
- ३
- १२
- २ गु. के.

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच मंगलवार होने से किसी यावनदेश में युद्ध का वातावरण बने। रक्तपात एवं उग्रवादजन्य जनधनहानि होगी। कहीं शासन-सत्ता में परिवर्तन के भी आसार बन सकते हैं - "यत्र मासे महीसुनोर्जायंत्ते पञ्चवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत् ॥" लेकिन इसी चान्द्रमास में पांच बुधवार भी हैं, अतः भारत में सुख-समृद्धि एवं प्रगति की योजनाएं भी कार्यान्वित हों।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- पक्षारम्भ में यदि रुई, चावल, दालदाना मन्दे हों तो तुरन्त स्टॉक करें। ६ से १० नवम्बर तक जौ, चावल, गेहूं, मसूर, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, सरसों, तिल, एरण्ड, अफीम, कालीमिर्च तेज़ रहें। ११ नवम्बर को तिलहन-बाज़ार अचानक मन्दे होकर कुछ तेज़ी की तरफ बढ़ेंगे। अन्त में अनाज, गुड़, खाण्ड तेज़ रहें।

आकाशलक्षणः- अक्तूबर ३१; नवम्बर ६, ७, ९, ११ एवं १२ को जम्मू-काश्मीर और हि.प्र. के पर्वतीय शिखरों पर हिमपात के समाचार मिलें। उ.भारत में कहीं बादलचाल, खण्डवृष्टि से शीत लहर ज़ोर पकड़ेगी।

कुण्डली सूर्योदय (१३ नवं.)

- ८ बु. रा.
- ६ शु.
- मं. ९
- सू. ७ श. चं.
- ५
- १०
- ४
- ११
- १
- ३
- १२
- २ गु. के.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १३ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	८	७	१	५	६	७	१
२६	१३	२	७	१६	२४	१०	२	२
५८	५७	५१	२१	५१	४८	३२	८	८
२३	४८	५७	४५	४४	१४	०	५२	५२
६०	८०७	४५	६२	७	७३	७	३	३
२५	१३	६	२७	३	४३	३	११	११
		मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
विशा. ३	स्वा. ३	मूल १	अनु. २	रोहि. ३	चित्रा १	स्वा. २	विशा. ४	कृत्ति. २

श्री वि. सं. २०६९, शाक १९३४, कार्तिक शुक्ल पक्ष १७															तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(१४ से २८ नवम्बर तक, सन् २०१२ ई.) दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु। २४ नवं. से बु. प्रातः पूर्वीक्षितिज पर उदय होता देखा जा सकेगा । इसके साथ ही प्रातः श. शु. पूर्व में और गु. पश्चिमकपाल में होंगे । सायं मं. पश्चिमक्षितिज के समीप होगा ।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. कार्तिक	अं. नवम्बर	श. कार्तिक	मु. ज़िलहिज्ज				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२६	१३	१	बु	४२	४०	विशा.	१३	२२	शो.	३२	९	किं.	१७	१८	३०	१४	२३	२८	वृश्चि.	०	१४	६	५२	१७	२१	६	२७	५८	४७	गोवर्धन-पूजा, बलिपूजा,अन्नकूट, गोक्रीड़ा,
२६	९	२	गु	३३	३४	अनु ज्येष्ठा	६ ५९	१ ४	अ.	२१	३५	बा.	८	०७	मा.१	१५	२४	२९	धनु	५९	४	६	५३	१७	२१	६	२८	५९	१४	चन्द्रदर्शन, मु. १५, सं. सूर्य वृश्चिक में ५६/५१, मु. १५,(A)
२६	६	३	शु	२५	३	मूल	५२	५१	सु.	११	२५	ग.	२५	०३	२	१६	२५	मु.१	धनु			६	५४	१७	२०	६	२९	५९	४२	भ. ५१/१५ बाद, वक्री बुध विशा. में २१/२२, मुहर्रम (B)
२६	३	४	श.	१७	२८	पू.षा.	४७	४५	धृ. शू.	१ ५३	५७ २९	वि.	१७	२८	३	१७	२६	२	धनु			६	५५	१७	२०	७	१	०	१२	भ. १७/२८ तक, शुक्र तुला में ६/५५,
२५	५९	५	र.	११	११	उ.षा.	४४	६	गं.	४६	१०	बा.	११	११	४	१८	२७	३	मकर	१	४०	६	५६	१७	१९	७	२	०	४३	वक्री बुध तुला में ५०/४४, ज्ञानपंचमी (जैन),
२५	५६	६	चं.	६	२७	श्रव.	४२	५	वृ.	४०	१३	तै.	६	२७	५	१९	२८	४	मकर			६	५६	१७	१९	७	३	१	१६	सूर्य अनु. में १४/५८, सूर्यषष्ठी (बिहार),
२५	५३	७	मं.	३	२७	धनि.	४१	५१	ध्रु.	३५	४१	व.	३	२७	६	२०	२९	५	कुम्भ	११	४४	६	५७	१७	१९	७	४	१	५०	भ. ३/२७ से ३२/५२ तक, पंचक प्रारम्भ ११/४४, (C)
२५	५०	८	बु	२	१७	शत.	४३	२४	व्या.	३२	३४	ब.	२	१७	७	२१	३०	६	कुम्भ			६	५८	१७	१८	७	५	२	२५	सूर्य सायन धनु में ५०/५५, अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी,
२५	४७	९	गु	२	५६	पू.भा.	४६	३७	ह.	३०	४९	कौ.	२	५६	८	२२	मा.१	७	मीन	३०	४१	६	५९	१७	१८	७	६	३	१	शुक्र स्वाती में ३३/५७, शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ,
२५	४४	१०	शु.	५	१६	उ.भा.	५१	१८	व.	३०	१७	ग.	५	१६	९	२३	२	८	मीन			७	०	१७	१८	७	७	३	३८	भ. ३७/१० बाद,
२५	४२	११	श.	९	४	रेव.	५७	१२	सि.	३०	४६	वि.	९	४	१०	२४	३	९	मेष	५७	१२	७	१	१७	१७	७	८	४	१७	भ. ६/०४ तक, पंचक समाप्त ५७/१२, बुध पूर्व में (D)
२५	३९	१२	र.	१४	३	अश्वि.	६०	०	व्य.	३२	३	बा.	१४	३	११	२५	४	१०	मेष			७	२	१७	१७	७	९	४	५६	चातुर्मास्य व्रत-नियमादि समाप्त, प्रदोषव्रत,
२५	३६	१३	चं.	१९	५३	अश्वि.	३	५७	व.	३३	५५	तै.	१९	५३	१२	२६	५	११	मेष			७	२	१७	१७	७	१०	५	३७	बुध मार्गी ५३/१०, मंगल पू.षा. में ४५/१४, श्रीवैकुण्ठ (E)
२५	३४	१४	मं.	२६	१८	भर.	११	२०	प.	३६	९	व.	२६	१८	१३	२७	६	१२	वृष	२८	१६	७	३	१७	१७	७	११	६	१९	भ. २६/१८ से ५९/३९ तक,
२५	३१	१५	बु.	३२	५९	कृत्ति.	१९	३	शि.	३८	३२	ब.	३२	५९	१४	२८	७	१३	वृष			७	४	१७	१७	७	१२	७	२	कार्तिकस्नान समाप्त, भीष्मपंचक समाप्त, कार्तिक पूर्णिमा,(F)

(A) पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, यमद्वितीया, भाईदूज, श्रीविश्वकर्मा पूजा, (B) (हिजरी सन् १४३४) प्रारम्भ, (C) गोपाष्टमी (देखें पृ. 106), (D) उदित ७ घं. ०१ मि. (भा.स्टै.टा.), देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत (स.), तुलसी विवाह, भीष्मपंचक प्रारम्भ, बलिदान दिवस श्रीगुरु तेग़बहादुर जी (नानकशाही अनुसार), (E) चतुर्दशी (देखें पृ.107), (F) श्रीगुरुनानक जयन्ती, त्रिपुरोत्सव, मेला पुष्करराज (राज.), श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २१ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ ५ २ २६	१० ६ ५० २७	८ ८ ५४ १८	६ २७ २७ ४०	१ १८ ५२ ३०	६ ४ ३६ २२	६ ११ २७ ४५	७ १ ४३ २६	१ १ ४३ २६
६० ३६	७७४ ३७	४५ ३३	६० ३८	७ ४७	७४ ६	६ ५१	३ ११	३ ११
		मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अनु. १	शत. १	मूल. ३	विशा. ३	रोहि. ३	चित्रा. ४	स्वा. २	विशा. ४	कृत्ति. २

कुण्डली सूर्योदय (२१ नवं.)

६ मं. | बु. शु. श. ७
१० | सू. ८ रा. | ६
चं. ११ | ५
१२ | गु. २ के. | ४
१ | ३

लोकभविष्य:- इस पक्ष में शनि-शुक्र-बुध तुला राशिस्थ हैं । मंगल पर शनि की दृष्टि भी है । कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा एवं पूर्णिमा दोनों बुधवारी हैं । अतः कहीं अकालिक वर्षा एवं कहीं प्राकृतिक आपदा से भारी हानि के योग हैं । सीमाप्रान्तों पर सैन्यबल की स्थिति कहीं अशान्ति का कारण बनेगी । विशाखा नक्षत्र के राहु-बुध एवं बुध-राहु-गुरु का वकत्व कहीं हिमाचल आदि में भूस्खलन आदि से हानि का संकेत देते हैं ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:-१५ से १९ नवंबर तक तांबा, चान्दी, सोना, सूत, रेशमी कपड़ा, गुड़, खाण्ड, घी, जौ, चना में तेज़ी बने । रुई, तेल, तिलहन में ज़ोरदार मन्दा आए तो माल पकड़ें, आगे लाभ मिलेगा । २४ नवम्बर के लगभग गेहूं, चना, तेल, तिलहन, घी, दालवाना, लालमिर्च में तेज़ी से लाभ मिलेगा ।

कुण्डली सूर्योदय (२८ नवं.)

६ मं. | बु. शु. श. ७
१० | सू. ८ रा. | ६
११ | ५
१२ | चं. गु. २ के. | ४
१ | ३

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २८ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ १२ ७ ३	१ ५ २८ ५६	८ १४ १४ १२	६ २४ १३ ४१	१ १७ ५६ ४८	६ १३ १८ ५८	६ १२ १४ ५७	७ १ २१ १०	१ १ २१ १०
६० ४४	७०७ ५५	४५ ५४	१५ ५२	८ ८	७४ २३	६ ३५	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अनु. ३	कृत्ति. ३	पू.षा. १	विशा. २	रोहि. ३	स्वा. २	स्वा. २	विशा. ४	कृत्ति. २

आकाशलक्षण:- नवम्बर १५ से १९ एवं २४ से २६ तक हि. प्र., हरियाणा, जम्मू-काश्मीर एवं उत्तर भारत में शीतलहर चलेगी । इन दिनों अनेकत्र वायुवेग के साथ वर्षा हो एवं हिमाचल आदि में कहीं ज़ोरदार बर्फबारी भी हो ।

श्री वि. सं. २०६९, शाक १९३४, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १८																तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(२६ नवम्बर से १३ दिसम्बर तक, सन् २०१२ ई.) दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल			प्र. मार्गशीर्ष	अं. नवंबर	श. मार्गशीर्ष	मु. मुहर्रम				सूर्योदय		सूर्यास्त						प्रातः बु. शु. श. पूर्व में और गु. पश्चिम में दिखाई देगा। सायं मं. को पश्चिमक्षितिज में देखें।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.							घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	२९	१	गु.	३९	४०	रोहि.	२६	४८	सि.	४०	५५	बा.	६	१९		१५	२९	८	१४	वृष			७	५	१७	१६	७	१३	७	४६	
२५	२६	२	शु.	४६	५	मृग.	३४	२२	सा.	४३	६	तै.	१२	५२		१६	३०	९	१५	मिथुन	०	३८	७	६	१७	१६	७	१४	८	३२	
२५	२४	३	श.	५१	५९	आर्द्रा	४१	२८	शु.	४४	५४	व.	१९	२		१७	दि.१	१०	१६	मिथुन			७	७	१७	१६	७	१५	९	१९	भ. १६/०२ से ५१/५६ तक, दिसम्बर प्रारम्भ,
२५	२२	४	र.	५७	४	पुन.	४७	५०	शु.	४६	६	ब.	२४	३१		१८	२	११	१७	कर्क	३१	२०	७	७	१७	१६	७	१६	१०	७	सूर्य ज्येष्ठा में २५/२५, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
२५	२०	५	चं.	६०	०	पुष्य	५३	१३	ब्र.	४६	३२	कौ.	२९	३		१९	३	१२	१८	कर्क			७	८	१७	१६	७	१७	१०	५७	शुक्र विशा. में १६/००,
२५	१८	५	मं.	१	२	आश्ले.	५७	१९	ऐं.	४५	५९	तै.	१	२		२०	४	१३	१९	सिंह	५७	१९	७	९	१७	१६	७	१८	११	४८	
२५	१६	६	बु.	३	४०	मघा	५९	५५	वै.	४४	१६	त.	३	४०		२१	५	१४	२०	सिंह			७	१०	१७	१६	७	१९	१२	४०	भ. ३/४० से ३४/११ तक,
२५	१५	७	गु.	४	४३	पू.फा.	६०	०	वि.	४१	१५	ब.	४	४३		२२	६	१५	२१	सिंह			७	१०	१७	१६	७	२०	१३	३४	बुध वृश्चिक में ४/४५, श्री भैरवाष्टमी (कालाष्टमी),
२५	१३	८	शु.	४	१	पू.फा.	०	४८	प्री.	३६	४९	कौ.	४	१		२३	७	१६	२२	कन्या	१५	४६	७	११	१७	१६	७	२१	१४	२९	वक्री गुरु रोहि. २ में २०/१०,
२५	१२	९	श.	१	३१	उ.फा. हस्त	० ५७	०१ २५	आ.	३०	५८	ग.	१	३१		२४	८	१७	२३	कन्या			७	१२	१७	१७	७	२२	१५	२५	भ. २६/२४ से ५७/१७ तक, बुध अनु. में ५६/१७,(A)
अवम		१०	श.	५७	१७	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	दशमी तिथिक्षय,
२५	१०	११	र.	५१	२३	चित्रा	५३	१५	सौ.	२३	४६	ब.	२४	२०		२५	९	१८	२४	तुला	२५	३०	७	१३	१७	१७	७	२३	१६	२२	उत्पन्ना एकादशी व्रत (स्मा.),
२५	९	१२	चं.	४४	७	स्वाती	४७	४३	शो.	१५	२१	कौ.	१७	४५		२६	१०	१९	२५	तुला			७	१३	१७	१७	७	२४	१७	२१	उत्पन्ना एकादशी व्रत (वै.),
२५	८	१३	मं.	३५	४५	विशा.	४१	७	अ. सु.	५ ५५	५४ ४३	ग.	९	५६		२७	११	२०	२६	वृश्चि.	२७	४८	७	१४	१७	१७	७	२५	१८	२१	भ. ३५/४५ बाद, शुक्र वृश्चिक में २०/४३, भौमप्रदोष व्रत,
२५	७	१४	बु.	२६	४२	अनु.	३३	५२	धृ.	४५	३	वि.	१	१३		२८	१२	२१	२७	वृश्चि.			७	१५	१७	१७	७	२६	१९	२१	भ. १/१३ तक,
२५	६	३०	गु.	१७	२०	ज्येष्ठा	२६	२१	शू.	३४	१६	ना.	१७	२०		२९	१३	२२	२८	धनु	२६	२१	७	१५	१७	१८	७	२७	२०	२३	यूरेनस मार्गी २५/४७,

(A) शनि स्वाती ३ में ५/२७,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ७ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	८	७	१	६	६	७	१
२१	२५	२१	०	१६	२४	१३	०	०
१४	३३	९	५६	४३	२९	१२	५२	५२
३०	६	१	३६	१८	४८	४८	३३	३३
६०	८०६	४६	६९	८	७४	६	३	३
५६	३	२०	५३	७	४२	१२	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ज्येष्ठा २	पू.फा. ४	पू.षा. ३	विशा. ४	रोहि. ३	विशा. २	स्वा. २	विशा. ४	कृत्ति. २

कुण्डली सूर्योदय (७ दिसं.)

६ मं. | ७ शु. श. | सू. | १० | बु. ८ रा. | ९ | ११ | ५ चं. | १२ | गु. २ के. | ४ | १ | ३

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच गुरुवार होने से पश्चिमी देशों में कहीं अशान्ति के कारण सैन्यबल का प्रयोग करना पड़े । चीन, श्रीलंका एवम् पाकिस्तान में कहीं अराजकता का वातावरण बने । इस पक्ष में तिथिवृद्धि एवं तिथिक्षय कहीं सीमाप्रान्तों पर अशान्ति एवं कहीं नाटकीय ढंग से सत्तापरिवर्तन का संकेत देती है- " मार्गशीर्षे कृष्णपक्षे तिथिवृद्धिश्च जायते। तदा युद्धाकुला पृथ्वी प्रजाः क्रन्दन्ति नित्यशः ।।" सूर्य-बुध-शुक्र-राहु- ये चार ग्रह शनि-मंगल द्वारा खलाक्रान्त होने से कहीं प्राकृतिक आपदा व कहीं उग्रवादजन्य घटना से जनधनहानि होगी ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- २ से ५ दिसंबर तक सोना, चान्दी एवम् चना आदि अनाजों, सभी तिलहनों और घी में तेज़ी रहे। ७, ८ दिसंबर को बाज़ार मन्दे एवं ८ से पक्षान्त तक अनाज, गुड़, चान्दी तथा मूंगफली आदि तिलहन तेज़ रहें। शेयर बाज़ार मन्दे रहें । आकाशलक्षणः- दिसंबर २, ३, ६, ७, ८, ११ एवं १२ को उत्तरी भारत में शीतलहर चलेगी । धुन्ध से यातायात भी अनेकत्र अवरुद्ध होगा । हि. प्र., जम्मू-कश्मीर में भयंकर हिमपात के समाचार मिलेंगे ।

कुण्डली सूर्योदय (१३ दिसं.)

६ मं. | ७ श. | सू. ८ चं. | १० | बु. शु. रा. | ९ | ११ | ५ | १२ | गु. के. २ | ४ | १ | ३

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १३ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	८	७	१	७	६	७	१
२७	२२	२५	८	१५	१	१३	०	०
२०	११	४७	३२	५५	५८	४९	३३	३३
२४	२८	३८	२३	११	२५	१४	२८	२८
६१	६१३	४६	८२	७	७४	५	३	३
३	५	३५	२२	५०	५२	५३	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ज्येष्ठा ४	ज्येष्ठा २	पू.षा. ४	अनु. २	रोहि. २	विशा. ४	स्वा. ३	विशा. ४	कृत्ति. २

श्री वि. सं. २०६९, शाक १९३४, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १६	तारीखें	चन्द्रराशि -	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि.	(१४ से २८ दिसम्बर तक, सन् २०१२ ई.) दक्षिण-उत्तरायण, दक्षिणगोल, हेमन्त-शिशिर ऋतु।

श्री वि. सं. २०६६, शाक १९३४, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १६																तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(१४ से २८ दिसम्बर तक, सन् २०१२ ई.) दक्षिण-उत्तरायण, दक्षिणगोल, हेमन्त-शिशिर ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. मार्गशीर्ष	अं. दिसंबर	श. मार्गशीर्ष	मु. मुहर्रम				सूर्योदय		सूर्यास्त						२६ दिसं. को बु. पूर्व में दिखाई देना बन्द हो जाएगा । प्रातः शु. पूर्व में, श. पूर्वकपाल में और गु. इस समय पश्चिमक्षितिज पर डूबता नज़र आएगा । मं. को सायं पश्चिमक्षितिज में देख सकते हैं ।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	५	१	शु.	८	५	मूल	१९	३	गं.	२३	४१	ब.	८	५	३०	१४	२३	२९	धनु			७	१६	१७	१८	७	२८	२१	२५	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, मंगल उ.षा. में ३/०२, शुक्र अनु. (A)
अवम		२	शु.	५९	२६	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथिक्षय,
२५	४	३	श.	५१	४५	पू.षा.	१२	२५	वृ.	१३	४२	तै.	२५	३५	पौ. १	१५	२४	स.१	मकर	२५	५३	७	१७	१७	१८	७	२९	२२	२९	सं. सूर्य मूल धनु में ३२/२२, मु. ४५, पुण्यकाल मध्याह्न(B)
२५	३	४	र.	४५	२९	उ.षा.	६	५२	ध्रु व्या.	४ ५६	३६ ४५	व.	१८	३७	२	१६	२५	२	मकर			७	१७	१७	१९	८	०	२३	३२	भ. १८/३७ से ४५/२९ तक, नेप्च्यून शत. १ में १९/५५,
२५	३	५	चं.	४०	५८	श्रव.	२	४९	ह.	५०	२०	ब.	१३	१३	३	१७	२६	३	कुम्भ	३१	२९	७	१८	१७	१९	८	१	२४	३७	पंचक प्रारम्भ ३१/२९, बलिदान दिवस श्रीगुरु तेग़बहादुर (C)
२५	२	६	मं.	३८	२७	धनि.	०	३६	व.	४५	३१	कौ.	९	४२	४	१८	२७	४	कुम्भ			७	१९	१७	२०	८	२	२५	४२	मंगल मकर में १९/५५, बुध ज्येष्ठा में ४०/१७, स्कन्द (D)
२५	२	७	बु.	३८	६	शत.	०	२६	सि.	४२	२३	ग.	८	१६	५	१९	२८	५	मीन	४६	४०	७	१९	१७	२०	८	३	२६	४७	भ. ३८/०६ बाद, मित्र सप्तमी,
२५	२	८	गु.	३९	५१	पू.भा.	२	१८	व्य.	४०	५२	वि.	८	५८	६	२०	२९	६	मीन			७	२०	१७	२०	८	४	२७	५२	भ. ८/५८ तक,
२५	२	९	शु.	४३	३०	उ.भा.	६	९	व.	४०	४६	बा.	११	४०	७	२१	३०	७	मीन			७	२०	१७	२१	८	५	२८	५८	सूर्य सायन मकर में २३/२५, उत्तरायण एवं शिशिर ऋतु प्रारम्भ,
२५	२	१०	श.	४८	४०	रेव.	११	४२	प.	४१	५१	तै.	१६	५	८	२२	पौ. १	८	मेष	११	४२	७	२१	१७	२१	८	६	३०	४	पंचक समाप्त ११/४२, शक पौष प्रारम्भ,
२५	२	११	र.	५४	५५	अश्वि.	१८	२९	शि.	४३	४४	व.	२१	४७	९	२३	२	९	मेष			७	२१	१७	२२	८	७	३१	१०	भ. २१/४७ से ५४/५५ तक, राहु विशा. ३ तुला, केतु (E)
२५	२	१२	चं.	६०	०	भर.	२६	५	सि.	४६	६	ब.	२८	१८	१०	२४	३	१०	वृष	४३	३	७	२२	१७	२३	८	८	३२	१६	शुक्र ज्येष्ठा में ४१/१०, मोक्षदा एकादशी व्रत (वै.),
२५	३	१२	मं.	१	४२	कृत्ति.	३३	५८	सा.	४८	३६	बा.	१	४२	११	२५	४	११	वृष			७	२२	१७	२३	८	९	३३	२३	भौमप्रदोष व्रत,
२५	३	१३	बु.	८	३४	रोहि.	४१	४६	शु.	५०	५७	तै.	८	३४	१२	२६	५	१२	वृष			७	२२	१७	२४	८	१०	३४	२९	बुध पूर्व में अस्त ७ घं. २२ मि. (भा.स्टैं.टा.), जोड़मेला (F)
२५	४	१४	गु.	१५	९	मृग.	४९	७	शु.	५२	५७	व.	१५	९	१३	२७	६	१३	मिथुन	१५	३१	७	२३	१७	२४	८	११	३५	३६	भ. १५/०६ से ४८/०६ तक, बुध मूल धनु में ३६/४८ (G)
२५	४	१५	शु.	२१	९	आर्द्रा	५५	५०	ब्र.	५४	२६	ब.	२१	९	१४	२८	७	१४	मिथुन			७	२३	१७	२५	८	१२	३६	४३	सूर्य पू.षा. में ३७/४५,

(A) में ०/५८, (B) बाद, सफर मु. प्रारम्भ, (C) जी, (पुरातन परम्परानुसार), (D) (गुह)षष्ठी, चम्पा षष्ठी,(E) कृत्ति. १ मेष में २६/५५, श्रीगीता जयन्ती, मोक्षदा एकादशी व्रत (स्मा.) (देखें पृ.107), (F) श्रीफतेहगढ़ साहिब (पं.), (G) श्रीदत्त जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २० दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	९	७	१	७	६	७	१
४	१	१	१८	१५	१०	१४	०	०
२७	५२	१४	२६	२	४२	२६	११	११
५३	३१	२६	४४	३	४६	६	१३	१३
६१	७५४	४६	८८	७	७४	५	३	३
६	२६	५०	९७	१३	५८	२८	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मूल २	पू.भा. ४	उ.षा. २	ज्येष्ठा १	रोहि. २	अनु. ३	स्वा. ३	विशा. ४	कृत्ति. २

कुण्डली सूर्योदय (२० दिसं.)

मं. १० | ८ बु. शु. रा. | ११ | सू. ९ | ७ श. | चं. १२ | ६ | १ | ३ | ५ | गु. २ के. | ४

लोकभविष्य:- इसपक्ष में राहु तुलाराशि में आकर शनि के साथ एकराशिसम्बन्ध बना रहा है, अतः प्राकृतिक प्रकोप से खड़ी फसलों को हानि पहुंचे, महंगाई उत्तरोत्तर बढ़ने से जनता में रोष व्याप्त हो - " यदा राहुस्तुलां याति क्रूरः क्रूर-समन्वितः । मेदिन्यां सस्यनाशः स्यात् दुर्भिक्षं तत्र दारुणम् ॥" इस पक्ष में तिथिक्षय कहीं छत्रभंग का भी संकेत देता है- " मार्गशीर्षादि मासेषु शुक्लपक्षे तिथिक्षयः । छत्रभंगं प्रजापीड़ां दुर्भिक्षं च समादिशेत् ॥" इस पक्ष में शनिवारी सूर्यसंक्रान्ति, शनि की सूर्य पर विशेष दृष्टि एवं मकरस्थ मंगल देश की राजनीति में अस्थिरता एवं यानदुर्घटना किंवा आतंकी घटना से जनधनहानि करें ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में रुई, धान्य, घी, तेल, अनाज, तिलहन, सोना, चान्दी तेज़ हों । १८ दिसंबर के लगभग बाज़ारों में ज़ोरदार मन्दा बने तो स्टॉक करें । २३ दिसंबर से पक्षान्त तक रुई, गुड़, खाण्ड, दालदाना, सभी अनाजों एवं घी में भारी तेज़ी बन सकती है । **आकाशलक्षण:-** दिसंबर १४ से २१ एवं २३ से २८ तक भयंकर शीतलहर से हानि के समाचार मिलें । कहीं वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि एवं धुन्ध के वातावरण से यातायात बाधित हो ।

कुण्डली सूर्योदय (२८ दिसं.)

मं. १० | ८ शु. | ११ | सू. ९ बु. | ७ श. रा. | १२ | ६ | के. १ | चं. ३ | ५ | गु. २ | ४

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २८ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	९	८	१	७	६	६	०
१२	७	७	०	१४	२०	१५	२६	२६
३६	५३	२६	२८	७	४२	१०	४५	४५
४४	३७	५४	४	४३	५१	५५	४६	४६
६१	७९६	४७	६१	६	७५	४	३	३
७	३८	३	२७	१२	४	५४	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मूल ४	आर्द्रा १	उ.षा. ४	मूल १	रोहि. २	ज्येष्ठा २	स्वा. ३	विशा. ३	कृत्ति. १

श्री वि. सं. २०६९, शाक १९३४, पौष कृष्ण पक्ष २०															तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा.				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा.				(२९ दिसम्बर २०१२ से ११ जनवरी, सन् २०१३ ई. तक,) उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						बु. अस्त है । प्रातः शु. पूर्वक्षितिज में और श. पूर्वकपाल में होगा। सायं मं. पश्चिमक्षितिज पर और गु. पूर्वकपाल में होगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	पौष	दिसम्बर	पौष	सफर		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	५	१	श.	२६	२३	पुन.	६०	०	ऐं.	५५	१८	कौ.	२६	२३	१५	२९	८	१५	कर्क	४५	२२	७	२३	१७	२६	८	१३	३७	५०	
२५	६	२	र.	३०	४५	पुन.	१	४५	वै.	५५	२८	ग.	३०	४५	१६	३०	९	१६	कर्क			७	२४	१७	२६	८	१४	३८	५७	
२५	७	३	चं.	३४	८	पुष्य	६	४८	वि.	५४	५३	व.	२	२६	१७	३१	१०	१७	कर्क			७	२४	१७	२७	८	१५	४०	५	भ. २/२९ से ३४/०८ तक, मंगल श्रव. में ६/३२,
२५	८	४	मं.	३६	२८	आश्ले.	१०	५३	प्री.	५३	३०	ब.	५	१८	१८	ज.१	११	१८	सिंह	१०	५३	७	२४	१७	२८	८	१६	४१	१३	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, जनवरी (इंग्लिश नववर्ष सन् (A)
२५	१०	५	बु.	३७	४१	मघा	१३	५४	आ.	५१	१३	कौ.	७	४	१९	२	१२	१९	सिंह			७	२५	१७	२८	८	१७	४२	२२	
२५	११	६	गु.	३७	३९	पू.फा.	१५	४६	सौ.	४७	५८	ग.	७	४०	२०	३	१३	२०	कन्या	३१	३	७	२५	१७	२९	८	१८	४३	३०	भ. ३७/३९ बाद,
२५	१३	७	शु.	३६	१८	उ.फा.	१६	२३	शो.	४३	४१	वि.	६	५८	२१	४	१४	२१	कन्या			७	२५	१७	३०	८	१९	४४	३९	भ. ६/५८ तक, शुक्र मूल धनु में २०/२०,
२५	१४	८	श.	३३	३३	हस्त	१५	४१	अ.	३८	१८	बा.	४	५५	२२	५	१५	२२	तुला	४४	४९	७	२५	१७	३१	८	२०	४५	४८	बुध पू.षा. में १५/०२, वक्री गुरु रोहि. १ में २४/५२,
२५	१६	९	र.	२९	२६	चित्रा	१३	३६	सु.	३१	५०	तै.	१	२९	२३	६	१६	२३	तुला			७	२५	१७	३१	८	२१	४६	५७	भ. ५६/४२ बाद,
२५	१८	१०	चं.	२३	५९	स्वाती	१०	१२	धृ.	२४	१९	वि.	२३	५९	२४	७	१७	२४	वृश्चि.	५१	५१	७	२५	१७	३२	८	२२	४८	७	भ. २३/५९ तक,
२५	२०	११	मं.	१७	२१	विशा अनु	५ ५९	३५ ५८	शू.	१५	५०	बा.	१७	२१	२५	८	१८	२५	वृश्चि.			७	२५	१७	३३	८	२३	४९	१६	सफला एकादशी व्रत (स.),
२५	२२	१२	बु.	९	४५	ज्येष्ठा	५३	३७	गं. वृ.	६ ५६	३४ ४४	तै.	९	४५	२६	९	१९	२६	धनु	५३	३७	७	२५	१७	३४	८	२४	५०	२६	प्रदोष व्रत,
२५	२४	१३	गु.	१	२९	मूल	४६	५५	ध्रु.	४६	३९	व.	१	२९	२७	१०	२०	२७	धनु			७	२५	१७	३५	८	२५	५१	३६	भ. १/२९ से २७/१२ तक, सूर्य उ.षा. में ४२/४०,
अवम		१४	गु.	५२	५६	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
२५	२६	३०	शु.	४४	३०	पू.षा.	४०	१७	व्या.	३६	३६	च.	१८	४३	२८	११	२१	२८	मकर	५३	४०	७	२५	१७	३६	८	२६	५२	४५	

(A) २०१३ ई.) प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ५ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	९	८	१	८	६	६	०
२०	१८	१३	१२	१३	०	१५	२९	२९
४५	४१	४६	४८	२२	४३	४८	२०	२०
४९	४०	५७	५४	२७	४२	३	२०	२०
६१	८२२	४७	९४	४	७५	४	३	३
१०	४	१४	९	५५	९	१७	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदय (५ जन.)

१० मं. | ८ | ११ | सू. ९ बु. शु. | ७ श. रा. | १२ | ६ चं. | १ के. | ३ | ५ | गु.२ | ४

लोकभविष्य:- इस चान्द्रमास में पांच शनिवार एवं पांच रविवार होने से कहीं भयंकर भूकम्प, विस्फोट एवं अन्यविध प्राकृतिक आपदा से भारी जनधनहानि के योग हैं । किसी देश-विशेष में प्रतिष्ठित व्यक्ति के अपदस्थ होने किंवा निधन से शासनसत्ता में उलटफेर भी संभव है- "शनेश्च पंचकं दृष्ट्वा पाताले काम्पते फणी । ईशानदेश-भंगश्च वह्निदाहो महर्घता ।।" हि.प्र. आदि में कहीं भूस्खलन एवं हिमपात आदि से हानि के योग हैं ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- ३१ दिसंबर को चना, गेहूं, बाजरा एवं दालवाना आदि में अच्छी तेज़ी बनेगी । तिलहन, सोना, चान्दी एवम् शेयरों में भी तेज़ी रहे । ५ जनवरी सन् २०१३ ई. को सभी बाज़ार मन्दे की तरफ जाएंगे । १० जन. को चावल, चना, उड़द, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा, तिलहन, गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज़ रहें । आकाशलक्षण:- दिसंबर ३१ एवं ४, ५, ६, १० जनवरी २०१३ ई. को उत्तरी भारत शीतग्रस्त रहेगा । कुछ स्थानों पर वायुवेग के साथ चन्द्रवृष्टि को , कश्मीर एवं हि. प्र. में कहीं हिमपात के समाचार मिलेंगे ।

कुण्डली सूर्योदय (११ जन.)

१० मं. | ८ | ११ | सू. ९ चं. बु. शु. | ७ श. रा. | १२ | ६ | १ के. | ३ | ५ | गु.२ | ४

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ११ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	९	८	१	८	६	६	०
२६	१५	१८	२२	१२	८	१६	२९	२९
५२	२४	३०	१९	५५	१४	१२	१	१
४६	१९	३८	४४	३७	४३	३३	१५	१५
६१	८९८	४७	९६	३	७५	३	३	३
१०	१०	२१	३८	४९	१२	४७	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

(१२ से २७ जनवरी तक, सन् २०१३ ई.) उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु ।

चण्डीगढ़ | स्पष्ट सूर्य | तारीखें | पौष शुक्ल पक्ष २१

श्री वि. सं. २०६९, शाक १९३४, पौष शुक्ल पक्ष २१

(१२ से २७ जनवरी तक, सन् २०१३ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु ।

बु. अस्त है । प्रातः शु. पूर्वक्षितिज में और श. पूर्व में याम्योत्तरवृत्त के समीप होगा । सायं मं. पश्चिमक्षितिज में अत्यल्प समय के लिए दृष्टिगोचर होगा । इस समय गु. को पूर्वकपाल में देखें ।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्तिकाल		नक्षत्र	समाप्तिकाल		योग	समाप्तिकाल		करण	समाप्तिकाल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	पौष	जनवरी	पौष	सफर		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	२८	१	श.	३६	३७	उ.षा.	३४	१०	ह.	२६	५७	किं.	१०	३३	२९	१२	२२	२९	मकर			७	२५	१७	३६	८	२७	५३	५४	लोहड़ी (पं.),
२५	३०	२	र.	२९	४४	श्रव.	२९	१	व.	१८	४	बा.	३	१०	मा.१	१३	२३	३०	कुम्भ	५६	५७	७	२५	१७	३७	८	२८	५५	३	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, पंचक प्रारम्भ ५६/५७, सं. सूर्य मकर(A)
२५	३३	३	चं.	२४	१६	धनि.	२५	१७	सि.	१०	१५	ग.	२४	१६	२	१४	२४	र.१	कुम्भ			७	२५	१७	३८	८	२९	५६	१२	भ. ५२/२६ बाद, शुक्र पू.षा. में ५८/४७, पोंगल (B)
२५	३५	४	मं.	२०	३७	शत.	२३	२०	व्य. व.	३ ५८	४९ ५७	वि.	२०	३७	३	१५	२५	२	कुम्भ			७	२५	१७	३९	९	०	५७	२०	भ. २०/३७ तक, बुध मकर में ३८/२५,
२५	३८	५	बु.	१९	३	पू.भा.	२३	२६	प.	५५	४९	बा.	१९	३	४	१६	२६	३	मीन	८	१३	७	२५	१७	४०	९	१	५८	२८	
२५	४१	६	गु.	१९	४२	उ.भा.	२५	४०	शि.	५४	२२	तै.	१९	४२	५	१७	२७	४	मीन			७	२४	१७	४१	९	२	५९	३४	मंगल धनि. में १/४५,
२५	४४	७	शु.	२२	२९	रेव.	२९	५८	सि.	५४	२६	व.	२२	२९	६	१८	२८	५	मेष	२९	५८	७	२४	१७	४२	९	४	०	४०	भ. २२/२६ से ५४/४८ तक, पंचक समाप्त २६/५८, (C)
२५	४७	८	श.	२७	८	अश्वि.	३५	५७	सा.	५५	४४	ब.	२७	८	७	१९	२९	६	मेष			७	२४	१७	४३	९	५	१	४५	सूर्य सायन कुम्भ में ४६/५५,
२५	४९	९	र.	३३	१०	भर.	४३	११	शु.	५७	५२	बा.	०	९	८	२०	३०	७	मेष			७	२४	१७	४३	९	६	२	४९	
२५	५३	१०	चं.	३९	५७	कृत्ति.	५१	३	शु.	६०	०	तै.	६	३३	९	२१	मा.१	८	वृष	०	७	७	२३	१७	४४	९	७	३	५३	बुध श्रवण में ३७/४०, शक माघ प्रारम्भ,
२५	५६	११	मं.	४६	५२	रोहि.	५८	५७	शु.	०	२४	व.	१३	२४	१०	२२	२	९	वृष			७	२३	१७	४५	९	८	४	५५	भ. १३/२४ से ४६/५२ तक, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.),
२५	५९	१२	बु.	५३	२२	मृग.	६०	०	ब्र.	२	५३	ब.	२०	७	११	२३	३	१०	मिथुन	३२	४६	७	२३	१७	४६	९	९	५	५६	सूर्य श्रवण में ४८/२८,
२६	२	१३	गु.	५९	०	मृग.	६	२३	ऐं.	४	५९	कौ.	२६	११	१२	२४	४	११	मिथुन			७	२२	१७	४७	९	१०	६	५६	प्रदोष व्रत,
२६	५	१४	शु.	६०	०	आर्द्रा	१२	५६	वै.	६	२४	ग.	३१	१७	१३	२५	५	१२	मिथुन			७	२२	१७	४८	९	११	७	५६	मंगल कुम्भ में २७/५५, शुक्र उ.षा. में ३७/२२,
२६	९	१४	श.	३	३५	पुन.	१८	२७	वि.	७	०	व.	३	३५	१४	२६	६	१३	कर्क	२	११	७	२१	१७	४९	९	१२	८	५४	भ.३/३५ से ३५/१६ तक, भारत गणतन्त्र दिवस, (D)
२६	१२	१५	र.	६	५८	पुष्य	२२	४९	प्री.	६	४३	ब.	६	५८	१५	२७	७	१४	कर्क			७	२१	१७	५०	९	१३	९	५२	पौषी पूर्णिमा, माघस्नान प्रारम्भ,

(A) में ५८/५४, मु. ३०, पुण्यकाल आगामी सारा दिन, बुध उ.षा. में ३६/१०, मकर संक्रान्ति, (B) (द.भा.), पहला शाही स्नान कुम्भमहापर्व-प्रयाग, रबि-उल-अव्वल मु. प्रा., (C) शनि स्वाती ४ में ४६/२२, अवतार दिन श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी, (D) श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १६ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ ५ १ ४६	० ५ ८ ४६	९ २४ ४६ ४१	९ ५ २६ १८	१ १२ ३० २६	८ १८ १६ १५	६ १६ ४० १८	६ २८ ३५ ४६	० २८ ३५ ४६
६१ ४	७२२ ४	४७ २५	१०० ३६	२ १४	७५ ११	३ ४	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.षा. ३	अश्वि. २	धनि. १	उ.षा. ३	रोहि. १	पू.षा. २	स्वा. ४	विशा. ३	कृत्ति. १

कुण्डली सूर्योदय (१६ जन.)

११ | शु. ९
१२ | सू. १० मं. बु. | ८
१ चं. के. | श. ७ रा.
२ गु. | ४ | ६
३ | ५

लोकभविष्यः- सूर्य, मंगल, बुध मकरराशि में एकत्र है। महंगाई के कारण जनाक्रोश बढ़ेगा। शनि-राहु का एकराशिसम्बन्ध भी यानदुर्घटना एवं राजनैतिक उलटफेर का योग बनाता है-"मकरे च स्थितो भानुर्घृत-तैल-महर्घता। सुभिक्षं सर्वधान्यानां लोकानां दुःख-पीड़नम् ॥" यह पक्ष खप्परयोग से ग्रस्त है, अतः जनता में भयंकर रोग एवं प्राकृतिक प्रकोप से हानि व कष्ट का संकेत मिलता है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- बुध, सूर्य, मंगल की मकरराशि में स्थिति रुई, सोना, चान्दी, घी, तेल, अलसी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चना, दालवाना आदि अनाजों में अच्छी तेज़ी का संकेत देती है। १५ से २० जनवरी तक बाज़ार कुछ मन्दे रहें। २१ जनवरी से पक्षान्त तक चावल, चना, जौ, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, सोना तेज़ रहें।

आकाशलक्षणः- जनवरी १३ से १६ एवं २१ से २६ तक धुन्ध का वातावरण रहे। अनेकत्र खण्डवृष्टि एवं शीतलहर चले। हि. प्र., काश्मीर में हिमपात हो।

कुण्डली सूर्योदय (२७ जन.)

११ मं. | शु. ९
१२ | सू. १० बु. | ८
१ के. | श. ७ रा.
२ गु. | चं. ४ | ६
३ | ५

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २७ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९ १३ ९ ५३	३ १० ५७ ११	१० १ ९ ५	९ १९ ६ २१	१ १२ १८ १५	८ २८ १७ ४१	६ १७ २ ६	६ २८ १० २३	० २८ १० २३
६० ५७	७५२ ५५	४७ २६	१०४ ४१	० ३७	७५ १०	२ १७	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्रव. १	पुष्य ३	धनि. ३	श्रव. ३	रोहि. १	उ.षा. १	स्वा. ४	विशा. ३	कृत्ति. १

श्री वि. सं. २०६९, शाक १९३४, माघ कृष्ण पक्ष २२

(२८ जनवरी से १० फरवरी तक, सन् २०१३ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

२९ जनवरी को मं. पश्चिम में और पक्षान्त में शुक्र पूर्व में अदृश्य हो जाएगा। ६ फरवरी से बु. सायं पश्चिम में दिखाई देना शुरु होगा। प्रातः श. याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा। तथा सायं गु. याम्योत्तरवृत्त के पास दीखेगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. माघ	अं. जनवरी	श. माघ	मु. र.उ.ल.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२६	१६	१	चं.	९	११	आश्ले.	२६	६	आ.	५	३४	कौ.	९	११	१६	२८	८	१५	सिंह	२६	६	७	२०	१७	५१	९	१४	१०	४९	शुक्र मकर में १७/०५,
२६	१९	२	मं.	१०	१९	मघा	२८	२२	सौ.	३	३५	ग.	१०	१९	१७	२९	९	१६	सिंह			७	२०	१७	५२	९	१५	११	४५	भ. ४०/२४ बाद, मंगल अस्त १७ घं. ५२ मि. (A)
२६	२३	३	बु.	१०	२९	पू.फा.	२९	४२	शो. / अ.	० / ५७	५० / २१	वि.	१०	२९	१८	३०	१०	१७	कन्या	४४	५४	७	१९	१७	५२	९	१६	१२	४०	भ. १०/२६ तक, गुरु मार्गी २४/३२, श्रीगणेश (संकष्ट) (B)
२६	२७	४	गु.	९	४४	उ.फा.	३०	११	सु.	५३	१४	बा.	९	४४	१९	३१	११	१८	कन्या			७	१९	१७	५३	९	१७	१३	३५	शुक्र अस्त-१० फरवरी
२६	३०	५	शु.	८	८	हस्त	२९	५१	धृ.	४८	२७	तै.	८	८	२०	फ. १	१२	१९	तुला	५९	२२	७	१८	१७	५४	९	१८	१४	२८	फरवरी प्रारम्भ,
२६	३४	६	श.	५	४१	चित्रा	२८	४१	शू.	४३	०	व.	५	४१	२१	२	१३	२०	तुला			७	१७	१७	५५	९	१९	१५	२१	भ. ५/४१ से ३४/१ तक, मंगल शत. में ५४/१३, बुध (C)
२६	३८	७	र.	२	२२	स्वाती	२६	४०	गं.	३६	५२	ब.	२	२२	२२	३	१४	२१	तुला			७	१७	१७	५६	९	२०	१६	१३	
अवम		८	र.	५८	१०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अष्टमी तिथिक्षय,
२६	४२	९	चं.	५३	९	विशा.	२३	४९	वृ.	३०	३	तै.	२५	३९	२३	४	१५	२२	वृश्चि.	९	३७	७	१६	१७	५७	९	२१	१७	४	कुम्भ महापर्व-प्रयागराज १० फरवरी
२६	४६	१०	मं.	४७	२१	अनु.	२०	९	ध्रु.	२२	३५	व.	२०	१५	२४	५	१६	२३	वृश्चि.			७	१५	१७	५८	९	२२	१७	५४	
२६	५०	११	बु.	४०	५५	ज्येष्ठा	१५	४६	व्या.	१४	३२	ब.	१४	८	२५	६	१७	२४	धनु	१५	४६	७	१५	१७	५९	९	२३	१८	४४	भ. २०/१५ से ४७/२१ तक, सूर्य धनि. में ५६/५०, (D)
२६	५४	१२	गु.	३४	४	मूल	१०	५२	ह. / व.	६ / ५७	३ / १८	कौ.	७	२९	२६	७	१८	२५	धनु			७	१४	१७	५९	९	२४	१९	३२	बुध पश्चिम में उदित १७ घं. ५६ मि. (भा.स्टैं.टा.), (E) शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ ७ घं. १४ मि. (भा.स्टैं.टा.),
२६	५८	१३	शु.	२७	४	पू.षा.	५	४१	सि.	४८	३६	ग.	०	३४	२७	८	१९	२६	मकर	१९	२१	७	१३	१८	०	९	२५	२०	२०	भ. २७/०४ से ५३/४० तक, मेरु त्रयोदशी (जैन), (F)
२७	२	१४	श.	२०	१७	उ.षा. / श्रव.	० / ५५	३३ / ५३	व्य.	४०	११	श.	२०	१७	२८	९	२०	२७	मकर			७	१२	१८	१	९	२६	२१	६	महोदय योग (१५ घं. १६ मि. से सूर्यास्त तक) (G)
२७	६	३०	र.	१४	६	धनि.	५२	६	व.	३२	२३	ना.	१४	६	२९	१०	२१	२८	कुम्भ	२३	५१	७	१२	१८	२	९	२७	२१	५१	पंचक प्रारम्भ २३/५१, शुक्र पूर्व में अस्त ७ घं. १२ मि.(H)

(A) (भा.स्टैं.टा.), बुध धनि. में २०/२५, (B) चतुर्थी व्रत [चन्द्रोदय २१ घं. ०६ मि. (भा.स्टैं.टा.)], (C) कुम्भ में ७/५८, (D) बुध शत. में ५७/४५, शुक्र श्रवण में १६/१५, (E) षट्तिला एकादशी व्रत (स.), (F) प्रदोष व्रत, (G) (भा.स्टैं.टा.), (देखें पृ. 107), (H) (भा.स्टैं.टा.), मौनी अमा, कुम्भ महापर्व प्रयागराज (प्रमुख शाहीस्नान) (देखें पृ. 14),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ३ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	१०	१०	१	९	६	६	०
२०	१२	६	१	१२	७	१७	२७	२७
१६	४८	४१	२३	१८	३	१६	४८	४८
१४	५४	३	३३	१६	५१	२	७	७
६०	८३४	४७	६५	०	७५	१	३	३
५१	१	२४	०	४६	१०	३५	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्रव. ४	धनि. २	श्रव. १	धनि. ३	रोहि. १	उ.षा. ४	धनि. ४	विशा. ३	[illegible] १

कुण्डली सूर्योदय (३ फर.)

बु. ११ मं. | ९
१२ | सू. १० शु. | ८
१ के. | चं. श. ७ रा.
२ गु. | ४ | ६
३ | ५

लोकभविष्यः- इस पक्ष में शुक्र मकरराशि में सूर्य के साथ मेल करेगा। खप्परयोग भी प्रभावी है, अतः केन्द्रीय पार्टियों में पारस्परिक मतभेद उजागर होंगे। पक्षमध्य में बुध का उदय फरवरी मास में कहीं प्राकृतिक आपदा को आमन्त्रित करता है। पक्षान्त में देवगणनक्षत्र (श्रवण) में शुक्र अस्त होगा। गुजरात, बिहार, महाराष्ट्र आदि में कहीं राजनैतिक उलझनें जटिल हों, कहीं उग्रवादजन्य जनधनहानि भी होगी-

"सुरगणे भृगुजास्तगतिर्यदा दिवस गुर्जर- मालव-मण्डले।
भवति देशभयं नृपविग्रहः प्रथमतोऽपि च धान्यमहर्घता ॥"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- २८ जनवरी से १ फरवरी तक शेयर, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, चना, अलसी, घी तेज़ रहें। लगभग २ फरवरी को सोना-चान्दी मन्दे हों। १० फरवरी के लगभग सोना, चान्दी, तांबा, पीतल, सोनामक्खी तेज़ होंगे, अच्छा लाभ मिलेगा। आकाशलक्षणः- जनवरी २८, २९, ३० एवं फरवरी २, ४, ६, १० को शीत का प्रकोप कुछ कमजोर हो. उत्तरी भारत में कहीं बादलचाल व बूंदाबांदी हो। ऋतुपरिवर्तन अनुभव होगा।

कुण्डली सूर्योदय (१० फर.)

बु. ११ मं. | ९
१२ | सू. १० शु. चं. | ८
१ के. | श. ७ रा.
२ गु. | ४ | ६
३ | ५

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १० फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	१०	१०	१	९	६	६	०
२७	२३	१२	१३	१२	१५	१७	२७	२७
२१	१७	१२	१४	२८	४६	२४	२५	२५
५३	४२	४८	३५	१३	५६	५७	५२	५२
६०	८५४	४७	६३	२	७५	०	३	३
४४	१	२२	२६	१४	८	५२	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible] २	[illegible] ४	[illegible] २	[illegible] २	[illegible] १	[illegible] २	[illegible] ४	[illegible] ३	[illegible] १

(११ से २५ फरवरी तक, सन् २०१३ ई.)

श्री वि. सं. २०६९, शाक १९३४, माघ शुक्ल पक्ष २३																	तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(११ से २५ फरवरी तक, सन् २०१३ ई.) उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर-वसन्त ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						मं. शु. अस्त हैं। बु. भी पक्षान्त तक पश्चिम में लुप्त हो जाएगा । प्रातः श. याम्योत्तरवृत्त में और सायं गु. याम्योत्तरवृत्त के पास होगा ।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	माघ	फरवरी	माघ	र.उ.ल.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२७	१०	१	चं.	८	५५	शत.	४९	३३	प.	२५	३०	ब.	८	५५	३०	११	२२	२९	कुम्भ			७	११	१८	३	९	२८	२२	३५	चन्द्रदर्शन, मु. १५,
२७	१४	२	मं.	५	७	पू.भा.	४८	३८	शि.	१९	४९	कौ.	५	७	फा.१	१२	२३	र.१	मीन	३३	४३	७	१०	१८	४	९	२९	२३	१८	सं. सूर्य कुम्भ में ३२/०४, मु. ३०, पुण्यकाल मध्याह्न (A)
२७	१९	३	बु.	३	४	उ.भा.	४९	३५	सि.	१५	३३	ग.	३	४	२	१३	२४	२	मीन			७	९	१८	५	१०	०	२३	५९	भ. ३३/०१ बाद, गौरी तृतीया (गौंतरी) (परयुता), तिल- (B)
२७	२३	४	गु.	२	५८	रेव.	५२	३१	सा.	१२	५०	वि.	२	५८	३	१४	२५	३	मेष	५२	३१	७	८	१८	५	१०	१	२४	३९	भ. २/५८ तक, पंचक समाप्त ५२/३१, बुध पू. भा. में (C)
२७	२७	५	शु.	४	५४	अश्वि.	५७	१९	शु.	११	४२	बा.	४	५४	४	१५	२६	४	मेष			७	७	१८	६	१०	२	२५	१७	शुक्र धनि. में ५५/२८,
२७	३२	६	श.	८	४६	भर.	६०	०	शु.	११	५९	तै.	८	४६	५	१६	२७	५	मेष			७	६	१८	७	१०	३	२५	५३	
२७	३६	७	र.	१४	११	भर.	३	४३	ब्र.	१३	२६	व.	१४	११	६	१७	२८	६	वृष	२०	३१	७	५	१८	८	१०	४	२६	२७	भ. १४/११ से ४७/२३ तक, रथ सप्तमी/आरोग्य सप्तमी(D)
२७	४०	८	चं.	२०	३६	कृत्ति.	११	९	ऐं.	१५	३९	ब.	२०	३६	७	१८	२९	७	वृष			७	४	१८	९	१०	५	२७	०	शनि वक्री ३८/४३, सूर्य सायन मीन में २६/१०, वसन्त (E)
२७	४५	९	मं.	२७	२३	रोहि.	१८	५९	वै.	१८	१०	कौ.	२७	२३	८	१९	३०	८	मिथुन	५२	५१	७	३	१८	९	१०	६	२७	३१	सूर्य शत. में ८/३०, मंगल पू.भा. में ४८/५२,
२७	४९	१०	बु.	३३	४९	मृग.	२६	३५	वि.	२०	२९	तै.	०	३६	९	२०	फा.१	९	मिथुन			७	२	१८	१०	१०	७	२८	०	शक फाल्गुन प्रारम्भ,
२७	५४	११	गु.	३९	२०	आर्द्रा	३३	२३	प्री.	२२	१४	व.	६	३४	१०	२१	२	१०	मिथुन			७	१	१८	११	१०	८	२८	२७	भ. ६/३४ से ३९/२० तक, शुक्र कुम्भ में १५/२८, (F)
२७	५८	१२	शु.	४३	३४	पुन.	३८	५९	आ.	२३	४	ब.	११	२७	११	२२	३	११	कर्क	२२	४४	७	०	१८	१२	१०	९	२८	५२	भीष्मद्वादशी,
२८	३	१३	श.	४६	१९	पुष्य	४३	११	सौ.	२२	४९	कौ.	१४	५६	१२	२३	४	१२	कर्क			६	५९	१८	१२	१०	१०	२९	१५	बुध वक्री २०/२९, शनिप्रदोष व्रत,
२८	७	१४	र.	४७	३४	आश्ले.	४५	५६	शो.	२१	२५	ग.	१६	५६	१३	२४	५	१३	सिंह	४५	५६	६	५८	१८	१३	१०	११	२९	३७	भ. ४७/३४ बाद, गुरु रोहि. २ में ३६/०७, राहु (G)
२८	१२	१५	चं.	४७	२६	मघा	४७	२०	अ.	१८	५५	वि.	१७	३०	१४	२५	६	१४	सिंह			६	५७	१८	१४	१०	१२	२९	५७	भ. १७/३० तक, बुध पश्चिम में अस्त १८ घं. १४ मि. (H)

(A) बाद, छूटे पू.षा. २ में २८/४७, रवि-उस्तानी मु. प्रा., (B) वरद-कुन्द चतुर्थी, (C) ३९/४०, श्री(वसन्त) पंचमी (देखें पृ. 108), लक्ष्मी-सरस्वती पूजन, तीसरा (अन्तिम) शाही स्नान कुम्भमहापर्व-प्रयाग, (D) (पूर्वारुणोदय वाली), मर्यादा महोत्सव (जैन), (E) ऋतु प्रारम्भ, भीष्माष्टमी, (F) जया एकादशी व्रत (स.), (G) विशा. २, केतु भर. ४ में २१/५८, (H) (भा.स्टैं.टा.), माघी पूर्णिमा, माघस्नान समाप्त, जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी, श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
१८ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१	१०	१०	१	९	६	६	०
५	७	१८	२३	१२	२५	१७	२७	२७
२७	१	३१	२७	५१	५०	२८	०	०
१	३६	१६	३०	२९	४६	५२	२६	२६
६०	७०८	४७	४६	३	७५	०	३	३
३१	२५	१४	४८	४५	४	२	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
धनि. ४	कृत्ति. ४	शत. ४	पू.भा. २	रोहि. १	धनि. १	स्वा. ४	विशा. ३	कृत्ति. १

कुण्डली सूर्योदय (१८ फर.)

- १२
- ११ सू. मं. बु.
- १० शु.
- के. १
- ९
- चं. गु. २
- ८
- ३
- ५
- ७ श. रा.
- ४
- ६

लोकभविष्यः-- इस पक्ष में कुम्भ-संक्रान्ति मंगलवारी लग रही है । मंगल, बुध के साथ सूर्य का मेल कहीं दुर्भिक्ष, किसी देश-विशेष में राजनैतिक अस्थिरता करे । पक्षमध्य में राहु के साथ शनि का वक्रत्व किसी मुस्लिम-राष्ट्र में अराजकता का संकेत देता है । माघशुक्ल सप्तमी को रविवार है । कहीं दुर्भिक्ष एवम् कहीं युद्धाग्नि से हानि हो -" माघस्य शुक्ल- सप्तम्यां रविवारो भवेद्यदि । दुर्भिक्षं तु महाघोरं विग्रहं च विनिर्दिशेत् ।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- पक्षारम्भ में घी, तेल, सरसों, मूंगफली, रुई, सूत, सोना तेज़ रहें । १२ से १४ फरवरी तक बाज़ार अस्थिर रहें । १५ फरवरी के लगभग से पक्षान्त तक दालवाना, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, शक्कर एवम् तिलहन में अच्छी तेज़ी से लाभ मिलेगा । २५ फरवरी को शेयर बाज़ार मन्दे हों । आकाशलक्षण :- फरवरी १२, १४, १५, १८, १९, २०, २१, २३, २५ को श्रीलंका के पूर्वी छोर, शिलांग व अन्य कुछ प्रान्तों में बादलचाल व बूंदाबांदी के योग हैं । उत्तर भारत में हवा का जोर रहेगा एवं वसंत ऋतु का आगमन होगा ।

कुण्डली सूर्योदय (२५ फर.)

- १२
- ११ सू.मं.बु.शु.
- १०
- के. १
- ९
- गु. २
- ८
- ३
- चं. ५
- ७ श. रा.
- ४
- ६

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
२५ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	१०	१०	१	१०	६	६	०
१२	२	२४	२५	१३	४	१७	२६	२६
२९	१४	१	३७	२१	३५	२६	३८	३८
५९	१३	२५	६	३९	५७	५०	११	११
६०	७८४	४७	२०	५	७४	०	३	३
१८	४४	४	३०	१	५८	४२	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
शत. २	मघा १	पू.भा. २	पू.भा. २	रोहि. २	धनि. ४	स्वा. ४	विशा. २	कृत्ति. ४

श्री वि. सं. २०६९, शाक १९३४, फाल्गुन कृष्ण पक्ष २४

(२६ फरवरी से ११ मार्च तक, सन् २०१३ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, वसन्त ऋतु।

मं. बु. शु. अदृश्य हैं । प्रातः श. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में और सायं गु. पश्चिमकपाल में होगा ।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	फाल्गुन	फरवरी	फाल्गुन	र.उ.स्मा.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२८	१६	१	मं.	४६	७	पू.फा.	४७	३५	सु.	१५	२४	बा.	१६	४६	१५	२६	७	१५	सिंह			६	५६	१८	१५	१०	१३	३०	१५	शुक्र शत. में ३५/४२,
२८	२१	२	बु.	४३	४९	उ.फा.	४६	५४	धृ.	११	३	तै.	१४	५८	१६	२७	८	१६	कन्या	२	३२	६	५५	१८	१५	१०	१४	३०	३२	
२८	२५	३	गु.	४०	४६	हस्त	४५	२९	शू.	६	१	व.	१२	१७	१७	२८	९	१७	कन्या			६	५४	१८	१६	१०	१५	३०	४७	म. १२/१७ से ४०/४६ तक,
२८	३०	४	शु.	३७	८	चित्रा	४२	३०	गं. वृ.	० ५४	२३ २४	ब.	८	५७	१८	मा.१	१०	१८	तुला	१४	३४	६	५३	१८	१७	१०	१६	३१	१	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, मार्च प्रारम्भ,
२८	३५	५	श.	३३	३	स्वाती	४१	६	ध्रु.	४८	४	कौ.	५	५	१९	२	११	१९	तुला			६	५२	१८	१८	१०	१७	३१	१२	
२८	३९	६	र.	२८	३७	विशा.	३८	२१	व्या.	४१	२८	ग.	०	५०	२०	३	१२	२०	वृश्चि.	२४	५	६	५१	१८	१८	१०	१८	३१	२३	म. २८/३७ से ५६/१४ तक,
२८	४४	७	चं.	२३	५२	अनु.	३५	१९	ह.	३४	३८	ब.	२३	५२	२१	४	१३	२१	वृश्चि.			६	५०	१८	१९	१०	१९	३१	३१	सूर्य पू.भा. में २५/०३, मंगल मीन में ५७/०२, वक्री (A)
२८	४९	८	मं.	१८	५२	ज्येष्ठा	३२	२	व.	२७	३७	कौ.	१८	५२	२२	५	१४	२२	धनु	३२	२	६	४८	१८	२०	१०	२०	३१	३८	
२८	५३	९	बु.	१३	४०	मूल	२८	३५	सि.	२०	२६	ग.	१३	४०	२३	६	१५	२३	धनु			६	४७	१८	२०	१०	२१	३१	४४	म. ४१/०० बाद,
२८	५८	१०	गु.	८	२१	पू.षा.	२५	३	व्य.	१३	११	वि.	८	२१	२४	७	१६	२४	मकर	३९	८	६	४६	१८	२१	१०	२२	३१	४८	म. ८/२१ तक, विजया एकादशी व्रत (स्मा.),
२९	३	११	शु.	३	४	उ.षा.	२१	३५	व. प.	५ ५८	५८ ५३	बा.	३	४	२५	८	१७	२५	मकर			६	४५	१८	२२	१०	२३	३१	५०	मंगल उ.भा. में ५०/५५, विजया एकादशी व्रत (वै.), (B)
अवम		१२	शु.	५७	५७	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वादशी तिथिक्षय,
२९	७	१३	श.	५३	२१	श्रव.	१८	२६	शि.	५२	१४	ग.	२५	३९	२६	९	१८	२६	कुम्भ	४७	०	६	४४	१८	२३	१०	२४	३१	५१	म. ५३/२१ बाद, पंचक प्रारम्भ ४७/००, शुक्र पू.भा. (C)
२९	१२	१४	र.	४९	२९	धनि.	१५	४९	सि.	४६	११	वि.	२१	२५	२७	१०	१९	२७	कुम्भ			६	४२	१८	२३	१०	२५	३१	५०	म. २१/२५ तक, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत,
२९	१७	३०	चं.	४६	३९	शत.	१४	४	सा.	४०	५६	च.	१८	४	२८	११	२०	२८	मीन	५८	२७	६	४१	१८	२४	१०	२६	३१	४८	सोमवती अमा,

(A) बुध शत. में ३२/५०, (B) त्रिस्पृशा महाद्वादशी, (C) में १६/५२, यूरेनस उ.भा. ४ में १८/२८, शनिप्रदोष व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ५ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	११	१०	१	१०	६	६	०
२०	२१	०	१९	१४	१४	१७	२६	२६
३१	४१	१७	३५	६	३५	१८	१२	१२
४०	१४	१८	३६	३३	३२	२३	४५	४५
६०	८४८	४६	६१	६	७४	१	३	३
५	११	५३	५३	२२	५५	३१	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा. १	ज्येष्ठा २	पू.भा. ४	शत. ४	रोहि. २	शत. ३	स्वा. ४	विशा. २	भर. ४

कुण्डली सूर्योदय (५ मार्च)

१२ मं. | ११ सू. बु. शु. | १० | ९ | ८ चं. | ७ श. रा. | ६ | ५ | ४ | ३ | गु. २ | के. १

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच मंगलवार एवं पांच बुधवार हैं, अतः पश्चिमी देश-विशेष में कहीं ज्वालामुखी-विस्फोट, भूकम्प किंवा कहीं अग्निकाण्ड से भारी जनधनहानि का समाचार मिले एवं कहीं आन्तरिक अशान्ति एवं युद्धमय स्थिति से वातावरण अशान्त रहे; कहीं सत्तापरिवर्तन हो-" यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पञ्चवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत् ।।" भारत में सुख-शान्ति, सुभिक्ष रहे ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः-२६ फरवरी से ३ मार्च तक गेहूं, दालें, गुड़, खाण्ड, चावल, घी, सरसों, रुई, सोना, चान्दी में तेज़ी रहे । ४ मार्च को सोने-चान्दी में मन्दी रहे; ८ से १० मार्च तक सभी अनाज, दालदाना, चन्दन, कुंकुम, रुई, सोना-चान्दी तेज़ रहेंगे ।

आकाशलक्षण :- फरवरी २६, २७; मार्च ४, ५, ८, ९, १० को मध्यप्रदेश, बंगाल आदि में कहीं बूंदाबांदी व बादलचाल रहे । उत्तरी भारत में हवा का ज़ोर रहे एवं गर्मी का आगमन अनुभव हो ।

कुण्डली सूर्योदय (११ मार्च)

१२ मं. | ११ सू. चं. बु. शु. | १० | ९ | ८ | ७ श. रा. | ६ | ५ | ४ | ३ | गु. २ | के. १

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ११ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	११	१०	१	१०	६	६	०
२६	१६	४	१४	१४	२२	१७	२५	२५
३१	७	५८	२	४७	४	७	५३	५३
४६	१०	७	३१	१	४६	५३	४१	४१
५९	८१३	४६	३९	७	७४	२	३	३
५६	४४	४२	५७	१७	५१	४	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा. २	शत. ३	उ.भा. १	शत. ३	रोहि. २	पू.भा. १	स्वा. ४	विशा. २	भर. ४

श्री वि. सं. २०६९, शाक १९३४, फाल्गुन शुक्ल पक्ष २५

(१२ से २७ मार्च तक, सन् २०१३ ई.) उत्तरायण, दक्षिण–उत्तरगोल, वसन्त ऋतु।

पक्षारम्भ से ही बु. प्रातः पूर्व में दृश्य हो जाएगा । मं. शु. अदृश्य हैं । प्रातः श. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में और सायं गु. पश्चिम कपाल में होगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. फाल्गुन	तारीखें अं. मार्च	तारीखें श. फाल्गुन	तारीखें मु. र.उ.सा.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२९	२१	१	मं.	४५	८	पू.भा.	१३	२७	शु.	३६	४३	किं.	१५	५३	२९	१२	२१	२९	मीन			६	४०	१८	२५	१०	२७	३१	४३	बुध पूर्व में उदित ६ घं. ४० मि. (भा.स्टैं.टा.),
२९	२६	२	बु.	४५	११	उ.भा.	१४	१५	शु.	३३	४२	बा.	१५	९	३०	१३	२२	३०	मीन			६	३९	१८	२५	१०	२८	३१	३७	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, अवतार दिन श्रीरामकृष्ण परमहंस,
२९	३१	३	गु.	४६	५५	रेव.	१६	३९	ब्र.	३१	५९	तै.	१६	३	चै.१	१४	२३	ज.१	मेष	१६	३९	६	३८	१८	२६	१०	२९	३१	२९	पंचक समाप्त १६/३९, सं. सूर्य मीन में २५/४५, मु. (A)
२९	३५	४	शु.	५०	१९	अश्वि.	२०	४०	ऐं.	३१	३५	व.	१८	३७	२	१५	२४	२	मेष			६	३६	१८	२७	११	०	३१	१८	भ. १८/३७ से ५०/१९ तक,
२९	४०	५	श.	५५	१३	भर.	२६	१५	वै.	३२	२२	ब.	२२	४६	३	१६	२५	३	वृष	४२	५१	६	३५	१८	२७	११	१	३१	६	होलाष्टक १९ से २७ मार्च
२९	४५	६	र.	६०	०	कृत्ति.	३३	३	वि.	३४	६	कौ.	२८	१३	४	१७	२६	४	वृष			६	३४	१८	२८	११	२	३०	५१	बुध मार्गी ४७/२५, सूर्य उ.भा. (B)
२९	४९	६	चं.	१	१३	रोहि.	४०	३७	प्री.	३६	२६	तै.	१	१३	५	१८	२७	५	वृष			६	३३	१८	२९	११	३	३०	३४	
२९	५४	७	मं.	७	४८	मृग.	४८	२०	आ.	३८	५५	व.	७	४८	६	१९	२८	६	मिथुन	१४	३२	६	३२	१८	२९	११	४	३०	१४	भ. ७/४८ से ४१/०० तक, शुक्र उ.भा. में ५९/१०, (C)
२९	५९	८	बु.	१४	१२	आर्द्रा	५५	३४	सौ.	४१	५	ब.	१४	१२	७	२०	२९	७	मिथुन			६	३०	१८	३०	११	५	२९	५३	सूर्य सायन मेष में २५/०५, उत्तरगोल प्रारम्भ, (D)
३०	४	९	गु.	१९	५२	पुन.	६०	०	शो.	४२	३२	कौ.	१९	५२	८	२१	३०	८	कर्क	४५	२१	६	२९	१८	३०	११	६	२९	२९	
३०	८	१०	शु.	२४	१६	पुन.	१	४५	अ.	४२	५५	ग.	२४	१६	९	२२	चै.१	९	कर्क			६	२८	१८	३१	११	७	२९	२	भ. ५५/३९ बाद, वक्री शनि स्वाती ३ में ०/२६, शक (E)
३०	१३	११	श.	२७	३	पुष्य	६	३३	सु.	४२	१	वि.	२७	३	१०	२३	२	१०	कर्क			६	२७	१८	३२	११	८	२८	३४	भ. २७/०३ तक, आमला एकादशी व्रत (स.),
३०	१८	१२	र.	२८	४	आश्ले.	९	३८	धृ.	३९	४५	बा.	२८	४	११	२४	३	११	सिंह	९	३८	६	२५	१८	३२	११	९	२८	३	गुरु रोहि. ३ में ४६/५२, गोविन्द द्वादशी, प्रदोषव्रत,
३०	२२	१३	चं.	२७	२१	मघा	११	१	शू.	३६	१०	तै.	२७	२१	१२	२५	४	१२	सिंह			६	२४	१८	३३	११	१०	२७	३१	
३०	२७	१४	मं.	२५	४	पू.फा.	१०	४८	गं.	३१	२२	व.	२५	४	१३	२६	५	१३	कन्या	२५	३०	६	२३	१८	३४	११	११	२६	५६	भ. २५/०४ से ५३/१६ तक, मंगल रेवती में ४/३५, (F)
३०	३२	१५	बु.	२१	२९	उ.फा.	९	१४	वृ.	२५	३३	ब.	२१	२९	१४	२७	६	१४	कन्या			६	२२	१८	३४	११	१२	२६	१९	होलाष्टक समाप्त, जन्मदिन श्रीचैतन्य महाप्रभु,

(A) ३०, पुण्यकाल ९/४३ बाद, जमद-उल-अव्वल मु. प्रारम्भ, (B) में ४६/४३, शुक्र मीन में १८/३०, (C) होलाष्टक प्रारम्भ, (D) महाविषुवदिन, (E) चैत्र (संवत् १९३५) प्रारम्भ, (F) नेप्च्यून शत. २ में ४५/३०, होलिका दहन (देखें पृ 108.), श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २० मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	११	१०	१	११	६	६	०
५	८	११	११	१५	३	१६	२५	२५
२९	२७	५७	४९	५७	१७	४५	२५	२५
५४	५५	९	१	४२	४८	५७	४	४
५९	७१५	४६	१५	८	७४	२	३	३
३६	७	२२	६	३२	४१	५२	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा. १	आर्द्रा १	उ.भा. ३	शत. २	रोहि. २	पू.भा. ४	स्वा. ४	विशा. २	भर. ४

कुण्डली सूर्योदय (२० मार्च)

१ के. | ११ बु. | गु. २ | सू.१२ मं.शु. | १० | ३ चं. | ९ | ४ | ६ | ८ | ५ | ७ श. रा.

लोकभविष्यः– समुद्रतटवर्ती देशों एवं प्रान्तों में जलीय किंवा अन्य प्राकृतिक प्रकोप से भारी हानि के योग हैं । सूर्य मीनराशि में मंगल एवं शुक्र के साथ एकराशिसम्बन्ध बना रहा है । सूर्य, शुक्र, मंगल- ये तीनों उ.भा. में होने से कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने - दुर्भिक्षमेवोत्तर-भद्रिकायां वर्षा न मेघोन्नयनेऽपि किञ्चित् ।" स्वाती नक्षत्र का शनि किसी वरिष्ठ व्यक्ति का पद रिक्त करे; यह किसी दुर्घटना/उपवाद से भारी हानि का भी संकेत देता है ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः–१२ से १६ मार्च तक अनाज, तिल, तेल, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, सोना, लालमिर्च, घी में पहले कुछ मन्दा आकर अच्छी तेज़ी बनेगी । १७ मार्च को बुध के मार्गी होने पर बाज़ारों में अच्छा मन्दा बन सकता है, सावधानी से काम करें । घी, तिल, तेल, सरसों का स्टॉक करें, २४ मार्च से आगे लाभ मिलेगा ।

आकाशलक्षणः– मार्च १२, १३, १४, १७, १९, २२, २४, २६ को वायुवेग के साथ म.प्र., बंगाल, आसाम आदि में कहीं बादलचाल, कहीं खण्डवृष्टि हो । उत्तर भारत में आसमान साफ रहे । गर्मी अनुभव होने लगेगी ।

कुण्डली सूर्योदय (२७ मार्च)

१ के. | ११ बु. | गु. २ | सू.१२ मं.शु. | १० | ३ | ९ | ४ | ६ चं. | ८ | ५ | ७ श. रा.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २७ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	११	१०	१	११	६	६	०
१२	७	१७	१५	१७	१२	१६	२५	२५
२६	२२	२०	१३	०	०	२४	२	२
१९	३१	५४	५८	५	१५	१७	४९	४९
५९	८३५	४६	४५	९	७४	३	३	३
२१	११	५	४९	२३	३४	२३	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा. ३	उ.फा. ४	रेव. १	शत. ३	रोहि. ३	उ.भा. ३	स्वा. ३	विशा. २	भर. ४

श्री वि. सं. २०६९, शाक १९३४, चैत्र कृष्ण पक्ष २६

(२८ मार्च से १० अप्रैल तक, सन् २०१३ ई.)
उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त ऋतु।
मं. शु. अस्त हैं । प्रातः बु. पूर्वक्षितिज में और श. पश्चिमकपाल में दिखाई देगा। सायं गु. पश्चिमकपाल में दीखेगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. (चैत्र)	तारीखें अं. (मार्च)	तारीखें श. (चैत्र)	तारीखें मु. (ज.उ.ल.)	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३०	३६	१	गु.	१६	५१	हस्त	६	३६	धु.	१८	५५	कौ.	१६	५१	१५	२८	७	१५	तुला	३४	५५	६	२०	१८	३५	११	१३	२५	३९	वसन्तोत्सव, होलामेला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.),
३०	४१	२	शु.	११	२९	चित्रा स्वाती	३ ५९	१० १३	व्या.	११	४२	ग.	११	२९	१६	२९	८	१६	तुला			६	१९	१८	३६	११	१४	२४	५८	भ. ३८/३५ बाद,
३०	४६	३	श.	५	४१	विशा.	५५	४	ह. व.	४ ५६	८ २०	वि.	५	४१	१७	३०	९	१७	वृश्चि.	४१	७	६	१८	१८	३६	११	१५	२४	१५	भ. ५/४१ तक, शुक्र रेवती में ४३/१०, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
अवम		४	श.	५९	३७	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय,
३०	५०	५	र.	५३	३७	अनु.	५०	५६	सि.	४८	३६	कौ.	२६	३७	१८	३१	१०	१८	वृश्चि.			६	१७	१८	३७	११	१६	२३	३०	सूर्य रेवती में १४/४५,
३०	५५	६	चं.	४७	४७	ज्येष्ठा	४६	५८	व्य.	४१	०	ग.	२०	४२	१९	अ.१	११	१९	धनु	४६	५८	६	१६	१८	३७	११	१७	२२	४४	भ. ४७/४७ बाद, बुध पू. भा. में २१/५५, अप्रैल प्रारम्भ,
३०	५९	७	मं.	४२	१७	मूल	४३	१९	व.	३३	३९	वि.	१५	२	२०	२	१२	२०	धनु			६	१४	१८	३८	११	१८	२१	५५	भ. १५/०२ तक,
३१	४	८	बु.	३७	१३	पू.षा.	४०	६	प.	२६	३८	ब.	९	४५	२१	३	१३	२१	मकर	५४	२१	६	१३	१८	३९	११	१९	२१	५	श्रीशीतलाष्टमी,
३१	९	९	गु.	३२	४०	उ.षा.	३७	२४	शि.	२०	२	बा.	४	५६	२२	४	१४	२२	मकर			६	१२	१८	३९	११	२०	२०	१३	मेला श्रीशीतला माता-कुराली (पं.),
३१	१३	१०	शु.	२८	४४	श्रव.	३५	२०	सि.	१३	५६	तै.	०	४२	२३	५	१५	२३	मकर			६	११	१८	४०	११	२१	१९	१९	भ. ०/४२ से २८/४४ तक,
३१	१८	११	श.	२५	३२	धनि.	३४	०	सा.	८	२३	बा.	२५	३२	२४	६	१६	२४	कुम्भ	४	३५	६	९	१८	४१	११	२२	१८	२३	पंचक प्रारम्भ ४/३५, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स.),
३१	२२	१२	र.	२३	११	शत.	३३	३१	शु. शु.	३ ५९	२९ १७	तै.	२३	११	२५	७	१७	२५	कुम्भ			६	८	१८	४१	११	२३	१७	२६	वारुणी पर्व (१५ घं. २५ मि. से सूर्यास्त तक), (A)
३१	२७	१३	चं.	२१	४८	पू.भा.	३४	१	ब्र.	५५	५९	व.	२१	४८	२६	८	१८	२६	मीन	१८	४८	६	७	१८	४२	११	२४	१६	२७	भ. २१/४८ से ५१/४० तक,
३१	३१	१४	मं.	२१	३२	उ.भा.	३५	३९	ऐं.	५३	३६	श.	२१	३२	२७	९	१९	२७	मीन			६	६	१८	४२	११	२५	१५	२६	बुध मीन में ४६/२७, मेला पिहोवातीर्थ (हरि.),
३१	३६	३०	बु.	२२	३१	रेव.	३८	३०	वै.	५२	१४	ना.	२२	३१	२८	१०	२०	२८	मेष	३८	३०	६	५	१८	४३	११	२६	१४	२३	पंचक समाप्त ३८/३०, शुक्र अश्वि. मेष में २८/३५, (B)

(A) प्रदो व्रत, (B) चान्द्र संवत्सर (२०६९ वि.) पूर्ण,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.)
३ अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	११	१०	१	११	६	६	०
[illegible]	१६	२२	२१	१८	२०	१५	२४	२४
[illegible]	४६	४२	४०	८	४१	५६	४०	४०
[illegible]	५२	४०	४५	१३	५३	११	३४	३४
[illegible]	८४३	४५	६६	१०	७४	३	३	३
[illegible]	५६	४८	२१	१०	२८	५०	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
रेव. १	पू.षा. २	रेव. २	पू.भा. १	रोहि. ३	रेव. २	स्वा. ३	विशा. २	भ. ४

कुण्डली सूर्योदय (३ अप्रै.)

१ के. | ११ बु.
गु. २ | सू.१२ मं.शु. | १०
३ | ९ चं.
४ | ६ | ८
५ | ७ श. रा.

लोकभविष्यः- इस पक्ष में सूर्य, मंगल, शुक्र-ये तीनों ग्रह रेवती नक्षत्र में हैं । स्पष्ट है कि- शुक्र देवगण-नक्षत्र में है, अतः गुजरात, बिहार एवं अन्य किसी प्रान्तविशेष में प्राकृतिक उत्पात अधिक होंगे । नेताओं/ राजनैतिक दलों में परस्पर विरोध पनपेगा । मुस्लिमराष्ट्रों में उन्मादजन्य कुकृत्यों से जनधनहानि होगी । उत्तर भारत के लिए शुक्र का स्वर्णद्वार (रेवती) में प्रवेश सुभिक्ष का संकेत देता है, लेकिन राजनैतिक दलों में आन्तरिक संघर्षपूर्ण वातावरण बने-"कनकद्वारे सुभिक्षश्चेत् सुभिक्षं तत्र निश्चितम् ।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में रुई कपास, धान्दी, चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर मन्दे रहें । ३१ मार्च से ८ अप्रैल तक तेल, तिलहन, रुई, चना, चावल, सोना, चान्दी, तांबा में तेज़ी बनेगी । ८ से १० अप्रैल तक अनाज, घी, दालदाना एवं सोने-चान्दी में ज़ोरदार घटाबढ़ी रहे । आकाशलक्षणः- मार्च ३०, ३१; अप्रैल १, ९ एवं १० को पूर्वी आसाम, पूर्वी बिहार, बंगाल एवं बर्मा के कुछ भागों में बादलचाल एवं खण्डवृष्टि के योग हैं ।

" चन्द्रमौलि-शंकरचरण बार-बार सिरनाय । संवत् यह पूरण कियो गिरा-गणेश मनाय ।।"

कुण्डली सूर्योदय (१० अप्रैल)

१ के. | ११
गु. २ | सू. १२ चं. मं. बु. शु. | १०
३ | ९
४ | ६ | ८
५ | ७ श. रा.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.)
१० अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	११	११	१	११	६	६	०
२६	२१	२८	०	१९	२६	१५	२४	२४
१४	३३	२	११	३१	२२	३१	१८	१८
२४	०	२२	५५	३१	४६	१४	१९	१९
५८ ५५	७५९ ७	४५ ३०	८१ १२	१० ५२	७४ २१	४ ११	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
रेव. ३	रेव. २	रेव. ४	पू.भा. ४	रोहि. ३	रेव. ४	स्वा. ३	विशा. २	भ. ४

श्री वि. सं 2068 | **तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)** | **जनवरी, सन् 2012 ई.**

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
पौष शुक्ल	1	8	र.	24	58	उ.भा.	12	41	प.	—	—	मीन			7	24	17	27	7	18	17	31	7	20	17	40	6	47	17	15	1	भ. 11/48 तक, इंग्लिश नववर्ष (2012 ई.) प्रारम्भ,
	2	9	चं.	27	35	रेव.	15	39	प.	8	6	मेष	15	39	7	24	17	28	7	18	17	31	7	20	17	41	6	48	17	15	2	पंचक समाप्त 15/39, प्लूटो पू.षा. 1 में 12/28,
	3	10	मं.	30	12	अश्वि.	18	42	शि.	9	0	मेष			7	25	17	29	7	18	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	3	मंगल उ.फा. में 17/57, बुध मूल धनु में 31/13, (A)
	4	11	बु.	—	—	भर.	21	38	सि.	9	52	वृष	28	19	7	25	17	29	7	19	17	33	7	20	17	42	6	48	17	17	4	भ. 19/24 बाद,
	5	11	गु.	8	35	कृत्ति.	24	14	सा.	10	33	वृष			7	25	17	30	7	19	17	34	7	21	17	43	6	48	17	17	5	भ. 8/35 तक, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.),
	6	12	शु.	10	33	रोहि.	26	21	शु.	10	54	वृष			7	25	17	31	7	19	17	34	7	21	17	44	6	49	17	18	6	प्रदोष व्रत,
	7	13	श.	11	58	मृग.	27	54	शु.	10	50	मिथुन	15	12	7	25	17	32	7	19	17	35	7	21	17	44	6	49	17	19	7	
	8	14	र.	12	47	आर्द्रा	28	53	ब्र.	10	19	मिथुन			7	25	17	32	7	19	17	36	7	21	17	45	6	49	17	20	8	भ. 12/47 से 24/54 तक, गुरु अश्वि. 3 में 23/48, (B)
	9	15	चं.	13	0	पुन.	29	19	ऐं.	9	21	कर्क	23	15	7	25	17	33	7	19	17	37	7	21	17	46	6	49	17	20	9	शुक्र कुम्भ में 13/38, पौषी पूर्णिमा, माघस्नान प्रारम्भ,
माघ कृष्ण	10	1	मं.	12	40	पुष्य	29	15	वै./	7	58	कर्क			7	25	17	34	7	19	17	37	7	21	17	47	6	49	17	21	10	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
									वि.	30	11																					
	11	2	बु.	11	52	आश्ले.	28	48	प्री.	28	5	सिंह	28	48	7	25	17	35	7	19	17	38	7	21	17	47	6	49	17	22	11	भ. 23/17 बाद, सूर्य उ.षा. में 18/25,
	12	3	गु.	10	40	मघा	28	2	आ.	25	43	सिंह			7	25	17	36	7	19	17	39	7	21	17	48	6	49	17	23	12	भ. 10/40 तक, श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी व्रत (C)
	13	4	शु.	9	11	पू.फा.	27	1	सौ.	23	10	सिंह			7	25	17	37	7	19	17	40	7	21	17	49	6	49	17	23	13	बुध पू.षा. में 12/05, लोहड़ी (पं.),
	14	5/	श.	7	28	उ.फा.	25	51	शो.	20	29	कन्या	8	44	7	25	17	37	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	24	14	भ. 29/36 बाद, सं. सूर्य मकर में 24/58, मु. 45, (D)
		6		29	36																											षष्ठी तिथिक्षय,
	15	7	र.	27	38	हस्त	24	35	अ.	17	42	कन्या			7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	25	15	भ. 16/37 तक, पोंगल (द.भा.),
	16	8	चं.	25	37	चित्रा	23	14	सु.	14	51	तुला	11	55	7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	26	16	
	17	9	मं.	23	33	स्वाती	21	52	धृ.	11	58	तुला			7	25	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	26	17	बुध पूर्व में अस्त 8/36,
	18	10	बु.	21	30	विशा.	20	30	शू./	9	4	वृश्चिक	14	50	7	24	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	18	भ. 10/32 से 21/30 तक,
									गं.	30	11																					
	19	11	गु.	19	30	अनु.	19	10	वृ.	27	22	वृश्चिक			7	24	17	42	7	19	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
	20	12	शु.	17	35	ज्येष्ठा	17	56	ध्रु.	24	37	धनु	17	56	7	24	17	43	7	18	17	46	7	21	17	54	6	49	17	29	20	प्रदोष व्रत, सूर्य सायन कुम्भ में 21/40,
	21	13	श.	15	50	मूल	16	51	व्या.	22	2	धनु			7	24	17	44	7	18	17	46	7	20	17	55	6	49	17	29	21	भ. 15/50 से 27/05 तक, बुध उ.षा. में 28/26, (E)
	22	14	र.	14	19	पू.षा.	16	1	ह.	19	40	मकर	21	52	7	23	17	45	7	18	17	47	7	20	17	56	6	48	17	30	22	
	23	30	चं.	13	9	उ.षा.	15	32	व.	17	35	मकर			7	23	17	45	7	18	17	48	7	20	17	57	6	48	17	31	23	मंगल वक्री 30/24, बुध मकर में 30/55, सोमवती अमा, (F)
माघ शुक्ल	24	1	मं.	12	26	श्रव.	15	29	सि.	15	51	कुम्भ	27	39	7	23	17	46	7	17	17	49	7	20	17	58	6	48	17	32	24	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30, पंचक प्रारम्भ (G)
	25	2	बु.	12	15	धनि.	15	59	व्य.	14	34	कुम्भ			7	22	17	47	7	17	17	50	7	19	17	58	6	48	17	32	25	शुक्र पू.भा. में 25/44,
	26	3	गु.	12	42	शत.	17	5	व.	13	46	कुम्भ			7	22	17	48	7	16	17	51	7	19	17	59	6	47	17	33	26	भ. 25/15 बाद, गौरी तृतीया(गौंतरी), तिल-वरद- (H)
	27	4	शु.	13	47	पू.भा.	18	48	प.	13	27	मीन	12	19	7	21	17	49	7	16	17	51	7	19	18	0	6	47	17	34	27	भ. 13/47 तक,
	28	5	श.	15	30	उ.भा.	21	7	शि.	13	37	मीन			7	21	17	50	7	16	17	52	7	18	18	1	6	47	17	35	28	श्री(वसन्त)पंचमी, लक्ष्मी/सरस्वती पूजन,
	29	6	र.	17	45	रेव.	23	53	सि.	14	11	मेष	23	53	7	20	17	51	7	15	17	53	7	18	18	2	6	46	17	35	29	पंचक समाप्त 23/53,
	30	7	चं.	20	19	अश्वि.	26	55	सा.	15	1	मेष			7	20	17	52	7	15	17	54	7	17	18	2	6	46	17	36	30	भ. 20/19 बाद, बुध श्रव. में 10/26, रथ सप्तमी (I)
	31	8	मं.	22	59	भर.	29	59	शु.	15	58	मेष			7	19	17	53	7	14	17	55	7	17	18	3	6	46	17	37	31	भ. 9/39 तक, भीष्माष्टमी,

(A) शुक्र धनि. में 26/47, (B) श्रीसत्यनारायण व्रत, (C) (चन्द्रोदय 20/57), (D) पुण्यकाल अगले दिन 16/56 तक, शुक्र शत. में 25/02, मकर संक्रान्ति, (E) श्रीमेरु त्रयोदशी (जैन), (F) मौनी अमा, (G) 27/39, सूर्य श्रव. में 20/42, (H) कुन्द चतुर्थी, भारत गणतन्त्र दिवस, (I) (पूर्वारुणोदय वाली), आरोग्य सप्तमी, मर्यादा महोत्सव (जैन).

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
माघ शुक्ल	1	9	बु.	25	28	कृत्ति.	—	—	शु.	16	49	वृष	12	43	7	19	17	54	7	14	17	56	7	16	18	4	6	45	17	38	1	
	2	10	गु.	27	31	कृत्ति.	8	48	ब्र.	17	25	वृष			7	18	17	54	7	13	17	56	7	16	18	5	6	45	17	38	2	
	3	11	शु.	28	56	रोहि.	11	10	ऐं.	17	36	मिथुन	24	6	7	17	17	55	7	13	17	57	7	15	18	6	6	44	17	39	3	भ. 16/14 से 28/56 तक, शुक्र मीन में 10/29, (A)
	4	12	श.	29	38	मृग.	12	53	वै.	17	16	मिथुन			7	17	17	56	7	12	17	58	7	15	18	6	6	44	17	40	4	भीष्म द्वादशी,
	5	13	र.	29	34	आर्द्रा	13	53	वि.	16	21	मिथुन			7	16	17	57	7	11	17	59	7	14	18	7	6	43	17	41	5	शुक्र उ.भा. में 29/57, प्रदोष व्रत,
	6	14	चं.	28	47	पुन.	14	10	प्री.	14	51	कर्क	8	10	7	15	17	58	7	11	18	0	7	14	18	8	6	43	17	41	6	भ. 28/47 बाद, सूर्य धनि. में 23/51, बुध धनि. में (B)
	7	15	मं.	27	23	पुष्य	13	47	आ.	12	50	कर्क			7	14	17	59	7	10	18	1	7	13	18	9	6	42	17	42	7	भ. 16/05 तक, शनि वक्री 19/34, श्रीसत्यनारायण (C)
फाल्गुन कृष्ण	8	1	बु.	25	31	आश्ले.	12	51	सौ.	10	22	सिंह	12	51	7	14	18	0	7	9	18	1	7	13	18	9	6	42	17	43	8	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	9	2	गु.	23	18	मघा	11	30	शो./	7	32	सिंह			7	13	18	0	7	9	18	2	7	12	18	10	6	41	17	43	9	
									अ.	28	28																					
	10	3	शु.	20	53	पू.फा.	9	52	सु.	25	16	कन्या	15	26	7	12	18	1	7	8	18	3	7	11	18	11	6	40	17	44	10	भ. 10/06 से 20/53 तक, बुध कुम्भ में 24/10,
	11	4	श.	18	23	उ.फा./	8	7	धृ.	22	2	कन्या			7	11	18	2	7	7	18	4	7	11	18	12	6	40	17	45	11	गुरु अश्वि. 4 में 20/16, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
						हस्त	30	21																								
	12	5	र.	15	57	चित्रा	28	41	शू.	18	51	तुला	17	30	7	11	18	3	7	6	18	4	7	10	18	12	6	39	17	45	12	वक्री मंगल पू.फा. में 12/20, राहु अनु. 4, केतु रोहि. 2 (D)
	13	6	चं.	13	39	स्वाती	27	12	गं.	15	47	तुला			7	10	18	4	7	6	18	5	7	9	18	13	6	38	17	46	13	भ. 13/39 से 24/36 तक, सं. सूर्य कुम्भ में 13/58, (E)
	14	7	मं.	11	32	विशा.	25	55	वृ.	12	53	वृश्चिक	20	13	7	9	18	5	7	5	18	6	7	8	18	14	6	38	17	47	14	बुध शत. में 16/16,
	15	8	बु.	9	39	अनु.	24	53	ध्रु.	10	10	वृश्चिक			7	8	18	6	7	4	18	7	7	8	18	14	6	37	17	47	15	
	16	9/	गु.	8	1	ज्येष्ठा	24	5	व्या./	7	38	धनु	24	5	7	7	18	6	7	3	18	7	7	7	18	15	6	36	17	48	16	भ. 19/20 से 30/37 तक,
		10		30	37				ह.	29	19																					दशमी तिथिक्षय,
	17	11	शु.	29	29	मूल	23	32	व.	27	12	धनु			7	6	18	7	7	2	18	8	7	6	18	16	6	35	17	49	17	शुक्र रेव. में 15/12, विजया एकादशी व्रत(स्मा.),
	18	12	श.	28	38	पू.षा.	23	15	सि.	25	18	मकर	29	14	7	5	18	8	7	1	18	9	7	5	18	16	6	35	17	49	18	विजया एकादशी व्रत (वै.),
	19	13	र.	28	4	उ.षा.	23	16	व्य.	23	37	मकर			7	4	18	9	7	1	18	10	7	4	18	17	6	34	17	50	19	भ. 28/04 बाद, सूर्य शत. में 28/24, प्रदोष व्रत, सूर्य (F)
	20	14	चं.	27	52	श्रव.	23	36	व.	22	13	मकर			7	3	18	10	7	0	18	10	7	3	18	18	6	33	17	50	20	भ. 15/59 तक, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत,
	21	30	मं.	28	4	धनि.	24	19	प.	21	7	कुम्भ	11	54	7	2	18	10	6	59	18	11	7	3	18	18	6	32	17	51	21	पंचक प्रारम्भ 11/54, बुध पू.भा. में 22/11, भौमवती अमा,
फाल्गुन शुक्ल	22	1	बु.	28	45	शत.	25	30	शि.	20	23	कुम्भ			7	1	18	11	6	58	18	12	7	2	18	19	6	32	17	52	22	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, नेप्च्यून शत. 1 में 13/07,
	23	2	गु.	29	56	पू.भा.	27	10	सि.	20	2	मीन	20	42	7	0	18	12	6	57	18	12	7	1	18	20	6	31	17	52	23	चन्द्रदर्शन, मु. 30, बुध पश्चिम में उदित 21/32, (G)
	24	3	शु.	—	—	उ.भा.	29	20	सा.	20	4	मीन			6	59	18	13	6	56	18	13	7	0	18	20	6	30	17	53	24	
	25	3	श.	7	39	रेव.	—	—	शु.	20	29	मीन			6	58	18	13	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	53	25	भ. 20/45 बाद,
	26	4	र.	9	50	रेव.	7	57	शु.	21	14	मेष	7	57	6	57	18	14	6	54	18	15	6	58	18	22	6	28	17	54	26	भ. 9/50 तक, पंचक समाप्त 7/57,
	27	5	चं.	12	22	अश्वि.	10	55	ब्र.	22	11	मेष			6	56	18	15	6	53	18	15	6	57	18	22	6	27	17	55	27	बुध मीन में 16/10,
	28	6	मं.	15	4	भर.	14	3	ऐं.	23	11	वृष	20	49	6	55	18	16	6	52	18	16	6	56	18	23	6	26	17	55	28	
	29	7	बु.	17	40	कृत्ति.	17	6	वै.	24	4	वृष			6	54	18	16	6	51	18	17	6	55	18	23	6	25	17	56	29	भ. 17/40 से 30/48 तक, बुध उ.भा. में 19/50, (H)

(A) जया एकादशी व्रत (स.), (B) 30/04, (C) व्रत, माघी पूर्णिमा, जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी, माघस्नान समाप्त, (D) में 29/23, (E) मु. 15, पुण्यकाल मध्याह्न बाद, (F) सायन मीन में 11/48, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, (G) अवतारदिन श्रीरामकृष्ण परमहंस, (H) शुक्र अश्वि. मेष में 7/22.

श्री वि. सं 2068–69 — **तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)** — मार्च, सन् 2012 ई.

मास पक्ष	गते	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
फाल्गुन शुक्ल	1	8	गु.	19	55	रोहि.	19	50	वि.	24	38	वृष			6	53	18	17	6	50	18	17	6	54	18	24	6	24	17	56	1	होलाष्टक प्रारम्भ, [होलाष्टक–1 से 8 मार्च]
	2	9	शु.	21	34	मृग.	21	59	प्री.	24	44	मिथुन	8	59	6	52	18	18	6	49	18	18	6	53	18	25	6	24	17	57	2	गुरु भर. 1 में 25/31,
	3	10	श.	22	28	आर्द्रा	23	25	आ.	24	14	मिथुन			6	50	18	19	6	48	18	18	6	52	18	25	6	23	17	57	3	
	4	11	र.	22	30	पुन.	24	1	सौ.	23	5	कर्क	17	57	6	49	18	19	6	47	18	19	6	51	18	26	6	22	17	58	4	भ. 10/29 से 22/30 तक, सूर्य पू.भा. में 10/39, (A)
	5	12	चं.	21	42	पुष्य	23	49	शो.	21	16	कर्क			6	48	18	20	6	46	18	20	6	50	18	26	6	21	17	58	5	गोविन्द द्वादशी,
	6	13	मं.	20	7	आश्ले.	22	50	अ.	18	51	सिंह	22	50	6	47	18	21	6	45	18	20	6	49	18	27	6	20	17	59	6	भौमप्रदोष व्रत,
	7	14	बु.	17	53	मघा	21	15	सु.	15	53	सिंह			6	46	18	21	6	43	18	21	6	48	18	27	6	19	17	59	7	भ. 17/53 से 28/31 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, (B)
	8	15	गु.	15	9	पू.फा.	19	12	धृ.	12	31	कन्या	24	38	6	45	18	22	6	42	18	22	6	47	18	28	6	18	18	0	8	जन्मदिन श्रीचैतन्य महाप्रभु, होलाष्टक समाप्त.
चैत्र कृष्ण	9	1	शु.	12	7	उ.फा.	16	52	शू./	8	53	कन्या			6	43	18	23	6	41	18	22	6	46	18	28	6	17	18	0	9	चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, वसन्तोत्सव, होलामेला (C)
									गं.	29	6																					
	10	2/	श.	8	55	हस्त	14	25	वृ.	25	18	तुला	25	13	6	42	18	23	6	40	18	23	6	45	18	29	6	16	18	1	10	भ. 19/20 से 29/45 तक,
		3		29	45																											तृतीया तिथिक्षय,
	11	4	र.	26	44	चित्रा	12	2	धु.	21	37	तुला			6	41	18	24	6	39	18	23	6	44	18	30	6	15	18	1	11	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
	12	5	चं.	24	0	स्वाती	9	51	व्या.	18	8	वृश्चिक	26	24	6	40	18	25	6	38	18	24	6	43	18	30	6	14	18	2	12	बुध वक्री 13/19, शुक्र भरणी में 10/06,
	13	6	मं.	21	38	विशा./	7	58	ह.	14	57	वृश्चिक			6	39	18	25	6	37	18	25	6	42	18	31	6	13	18	2	13	भ. 21/38 बाद, बुध पश्चिम में अस्त 11/45,
						अनु.	30	30																								
	14	7	बु.	19	42	ज्येष्ठा	29	28	व.	12	6	धनु	29	28	6	37	18	26	6	36	18	25	6	41	18	31	6	12	18	3	14	भ. 8/40 तक, सं. सूर्य मीन में 10/50, मु. 15, पुण्यकाल(D)
	15	8	गु.	18	14	मूल	28	54	सि.	9	37	धनु			6	36	18	27	6	34	18	26	6	40	18	32	6	11	18	3	15	श्रीशीतलाष्टमी, मेला श्रीशीतलामाता–कुराली (पं.),
	16	9	शु.	17	14	पू.षा.	28	46	व्य./	7	31	धनु			6	35	18	27	6	33	18	26	6	39	18	32	6	10	18	4	16	भ. 28/57 बाद, यूरेनस उ.भा. 3 में 13/54,
									व.	29	47																					
	17	10	श.	16	41	उ.षा.	29	5	प.	28	23	मकर	10	49	6	34	18	28	6	32	18	27	6	38	18	33	6	9	18	4	17	भ. 16/41 तक, सूर्य उ.भा. में 19/10,
	18	11	र.	16	34	श्रव.	29	48	शि.	27	19	मकर			6	32	18	29	6	31	18	28	6	36	18	33	6	8	18	4	18	पापमोचिनी एकादशी व्रत (स.),
	19	12	चं.	16	51	धनि.	–	–	सि.	26	33	कुम्भ	18	18	6	31	18	29	6	30	18	28	6	35	18	34	6	7	18	5	19	पंचक प्रारम्भ 18/18, गुरु भर. 2 में 24/49, सोमप्रदोष व्रत,
	20	13	मं.	17	32	धनि.	6	54	सा.	26	7	कुम्भ			6	30	18	30	6	29	18	29	6	34	18	34	6	5	18	5	20	भ. 17/32 से 30/05 तक, सूर्य सायन मेष में 10/45, (E)
	21	14	बु.	18	37	शत.	8	24	शु.	25	59	मीन	27	47	6	29	18	31	6	28	18	29	6	33	18	35	6	4	18	6	21	वक्री मंगल मघा में 8/15, मेला पिहोवातीर्थ (हरि.),
	22	30	गु.	20	7	पू.भा.	10	17	शु.	26	9	मीन			6	28	18	31	6	26	18	30	6	32	18	35	6	3	18	6	22	चान्द्रसंवत्सर 2068 वि. पूर्ण,
चैत्र शुक्ल	23	1	शु.	22	0	उ.भा.	12	34	ब्र.	26	38	मीन			6	26	18	32	6	25	18	30	6	31	18	36	6	2	18	7	23	चैत्र शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चान्द्र संवत्सर 2069 वि. (F)
	24	2	श.	24	15	रेव.	16	12	ऐं.	27	22	मेष	15	12	6	25	18	33	6	24	18	31	6	30	18	36	6	1	18	7	24	पंचक समाप्त 15/12, शुक्र कृत्ति. में 29/33, चन्द्रदर्शन, (G)
	25	3	र.	26	47	अश्वि.	18	8	वै.	28	19	मेष			6	24	18	33	6	23	18	31	6	29	18	37	6	0	18	8	25	गौरी तृतीया (गणगौर), आन्दोलन तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती,
	26	4	चं.	29	28	भर.	21	16	वि.	29	22	वृष	28	3	6	23	18	34	6	22	18	32	6	28	18	37	5	59	18	8	26	भ. 16/07 से 29/28 तक, वक्री बुध पू.भा. में 22/05,
	27	5	मं.	–	–	कृत्ति.	24	25	प्री.	–	–	वृष			6	21	18	34	6	21	18	33	6	27	18	38	5	58	18	9	27	श्री(लक्ष्मी)पंचमी, नागपंचमी, हयव्रत,
	28	5	बु.	8	8	रोहि.	27	25	प्री.	6	24	वृष			6	20	18	35	6	19	18	33	6	25	18	38	5	57	18	9	28	शुक्र वृष में 14/20,
	29	6	गु.	10	32	मृग.	30	0	आ.	7	16	मिथुन	16	46	6	19	18	36	6	18	18	34	6	24	18	39	5	56	18	9	29	बुध पूर्व में उदित 6/19, स्कन्द षष्ठी (देखें पृष्ठ 103).
	30	7	शु.	12	27	आर्द्रा	–	–	सौ.	7	48	मिथुन			6	18	18	36	6	17	18	34	6	23	18	39	5	55	18	10	30	भ. 12/27 से 25/04 तक, सूर्य रेवती में 29/54, (H)
	31	8	श.	13	42	आर्द्रा	7	59	शो.	7	50	कर्क	26	58	6	16	18	37	6	16	18	35	6	22	18	40	5	54	18	10	31	श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी (पुनर्वसु नक्षत्र 7/59 बाद),

(A) आमला एकादशी व्रत (स.), (B) होलिका दहन, (C) श्री आनन्दपुर साहिब (पं.), (D) मध्याह्न तक, (E) उत्तरगोल प्रारम्भ, महाविषुवदिन, वारुणीपर्व (6/54 से 17/32 तक), (F) प्रारम्भ, वासन्त नवरात्र प्रारम्भ, वर्षफल श्रवण, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण, (G) मु. 30, चन्द्रव्रत, (H) वक्री शनि चित्रा 3 में 29/01.

श्री वि. सं 2069 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — अप्रैल, सन् 2012 ई.

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
चैत्र शुक्ल	1	9	र.	14	8	पुन.	9	12	अ./	7	16	कर्क			6	15	18	38	6	15	18	35	6	21	18	40	5	53	18	11	1	श्रीरामनवमी (पुनर्वसु 9/12 तक), नवरात्र समाप्त,
									सु.	30	1																					
	2	10	चं.	13	41	पुष्य	9	35	धृ.	28	5	कर्क			6	14	18	38	6	14	18	36	6	20	18	41	5	52	18	11	2	भ. 25/02 बाद, वक्री बुध कुम्भ में 17/34, नवरात्रपारणा,
	3	11	मं.	12	23	आश्ले.	9	6	शू.	25	30	सिंह	9	6	6	13	18	39	6	13	18	36	6	19	18	41	5	51	18	12	3	भ. 12/23 तक, कामदा एकादशी व्रत (स.),
	4	12	बु.	10	18	मघा	7	51	गं.	22	21	सिंह			6	12	18	39	6	11	18	37	6	18	18	42	5	50	18	12	4	बुध मार्गी 15/41, गुरु भरणी 3 में 11/27, श्रीविष्णु-- (A)
	5	13/	गु.	7	34	पू.फा./	5	56	वृ.	18	44	कन्या	11	22	6	10	18	40	6	10	18	38	6	17	18	42	5	49	18	12	5	भ. 28/21 बाद, श्रीशिवदमनोत्सव, श्रीमहावीर जयन्ती (जैन),
		14		28	21	उ.फा.	27	31																								चतुर्दशी तिथिक्षय,
	6	15	शु.	24	49	हस्त	24	47	ध्रु.	14	48	कन्या			6	9	18	41	6	9	18	38	6	16	18	43	5	48	18	13	6	भ. 14/35 तक, बुध मीन में 14/52, श्रीहनुमान् जयन्ती (B)
वैशाख कृष्ण	7	1	श.	21	8	चित्रा	21	54	व्या.	10	40	तुला	11	20	6	8	18	41	6	8	18	39	6	15	18	43	5	47	18	13	7	वैशाख कृष्णपक्ष प्रारम्भ,
	8	2	र.	17	30	स्वाती	19	4	ह./	6	30	तुला			6	7	18	42	6	7	18	39	6	14	18	44	5	46	18	14	8	भ. 27/47 बाद, शुक्र रोहिणी में 8/09,
									व.	26	26																					
	9	3	चं.	14	4	विशा.	16	26	सि.	22	35	वृश्चि.	11	4	6	6	18	43	6	6	18	40	6	13	18	44	5	45	18	14	9	भ. 14/04 तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	10	4	मं.	10	58	अनु.	14	11	व्य.	19	3	वृश्चि.			6	4	18	43	6	5	18	40	6	12	18	45	5	44	18	15	10	प्लूटो वक्री 21/51,
	11	5	बु.	8	21	ज्येष्ठा	12	24	व.	15	57	धनु	12	24	6	3	18	44	6	4	18	41	6	11	18	45	5	43	18	15	11	
	12	6/	गु.	6	16	मूल	11	11	प.	13	19	धनु			6	2	18	45	6	3	18	41	6	9	18	46	5	42	18	16	12	भ. 6/16 से 17/33 तक,
		7		28	49																											सप्तमी तिथिक्षय,
	13	8	शु.	28	0	पू.षा.	10	36	शि.	11	11	मकर	16	32	6	1	18	45	6	1	18	42	6	8	18	46	5	41	18	16	13	सं. सूर्य अश्वि. मेष में 19/19, मु. 45, पुण्यकाल मध्याह्न (C)
	14	9	श.	27	48	उ.षा.	10	38	सि.	9	34	मकर			6	0	18	46	6	0	18	43	6	7	18	47	5	40	18	16	14	मंगल मार्गी 9/23,
	15	10	र.	28	11	श्रव.	11	16	सा.	8	26	कुम्भ	23	48	5	59	18	46	5	59	18	43	6	6	18	47	5	39	18	17	15	भ. 15/59 से 28/11 तक, पंचक प्रारम्भ 23/48,
	16	11	चं.	29	7	धनि.	12	28	शु.	7	46	कुम्भ			5	58	18	47	5	58	18	44	6	5	18	48	5	38	18	17	16	श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती, वरूथिनी एकादशी व्रत (स्मा.),
	17	12	मं.	—	—	शत.	14	9	शु.	7	30	कुम्भ			5	57	18	48	5	57	18	44	6	5	18	48	5	37	18	18	17	वरूथिनी एकादशी व्रत (वै.),
	18	12	बु.	6	30	पू.भा.	16	16	ब्र.	7	35	मीन	9	42	5	55	18	48	5	56	18	45	6	4	18	49	5	36	18	18	18	गुरु भरणी 4 में 26/42, प्रदोषव्रत,
	19	13	गु.	8	18	उ.भा.	18	45	ऐं.	7	58	मीन			5	54	18	49	5	55	18	45	6	3	18	49	5	35	18	19	19	भ. 8/18 से 21/22 तक, सूर्य सायन वृष में 21/42, (D)
	20	14	शु.	10	25	रेव.	21	31	वै.	8	37	मेष	21	31	5	53	18	50	5	54	18	46	6	2	18	50	5	35	18	19	20	पंचक समाप्त 21/31,
	21	30	श.	12	48	अश्वि.	24	31	वि.	9	28	मेष			5	52	18	50	5	53	18	47	6	1	18	50	5	34	18	20	21	अगस्त्य अस्त, शनैश्चरी अमा,
वैशाख शुक्ल	22	1	र.	15	22	भर.	27	38	प्री.	10	28	मेष			5	51	18	51	5	52	18	47	6	0	18	51	5	33	18	20	22	वैशाख शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 15,
	23	2	चं.	18	0	कृत्ति.	—	—	आ.	11	32	वृष	10	26	5	50	18	52	5	51	18	48	5	59	18	51	5	32	18	21	23	श्रीशिवाजी जयन्ती,
	24	3	मं.	20	36	कृत्ति.	6	47	सौ.	12	36	वृष			5	49	18	52	5	50	18	48	5	58	18	52	5	31	18	21	24	श्रीपरशुराम जयन्ती (देखें पृष्ठ 103), अक्षयतृतीया (E)
	25	4	बु.	23	0	रोहि.	9	50	शो.	13	33	मिथुन	23	15	5	48	18	53	5	49	18	49	5	57	18	52	5	30	18	22	25	भ. 9/48 से 23/00 तक, शुक्र मृग. में 23/14,
	26	5	गु.	25	1	मृग.	12	36	अ.	14	16	मिथुन			5	47	18	54	5	49	18	50	5	56	18	53	5	29	18	22	26	बुध रेवती में 18/28, श्रीशंकराचार्य जयन्ती,
	27	6	शु.	26	31	आर्द्रा	14	56	सु.	14	38	मिथुन			5	46	18	54	5	48	18	50	5	55	18	53	5	29	18	23	27	सूर्य भरणी में 11/03, श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती,
	28	7	श.	27	20	पुन.	16	40	धृ.	14	33	कर्क	10	18	5	45	18	55	5	47	18	51	5	55	18	54	5	28	18	23	28	भ. 27/20 बाद, श्रीगंगा जन्म,
	29	8	र.	27	23	पुष्य	17	42	शू.	13	53	कर्क			5	44	18	56	5	46	18	51	5	54	18	55	5	27	18	24	29	भ. 15/21 तक, गुरु वार्धक्य प्रारम्भ 18/58,
	30	9	चं.	26	37	आश्ले.	17	56	गं.	12	36	सिंह	17	56	5	43	18	56	5	45	18	52	5	53	18	55	5	26	18	24	30	श्री जानकी जयन्ती,

(A) दमनोत्सव, अनंगत्रयोदशी (पूर्वविद्धा), प्रदोषव्रत, (B) (द.भा.), चैत्रीपूर्णिमा, वैशाखस्नान प्रारम्भ, श्री सत्यनारायण व्रत, (C) बाद, बुध उ.भा. में 21/34, मेष संक्रान्ति, वैशाखी (पं.), (D) ग्रीष्मऋतु प्रारम्भ, (E) (रोहिणी नक्षत्र 6/47 बाद).

श्री वि. सं. 2069 — **तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)** — **मई, सन् 2012 ई.**

मास पक्ष	मई	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
वैशाख शुक्ल	1	10	मं.	25	4	मघा	17	24	वृ.	10	40	सिंह			5	42	18	57	5	44	18	52	5	52	18	56	5	26	18	25	1	
	2	11	बु.	22	47	पू.फा.	16	7	धु./	8	7	कन्या	21	41	5	42	18	58	5	43	18	53	5	51	18	56	5	25	18	25	2	भ. 11/55 से 22/47 तक, गुरु अस्त (A) — गुरु अस्त 2 मई
									व्या.	29	0																					
	3	12	गु.	18	54	उ.फा.	14	10	ह.	25	26	कन्या			5	41	18	58	5	43	18	54	5	51	18	57	5	24	18	26	3	गुरु कृत्ति. 1 में 7/50, प्रदोष व्रत (देखें पृष्ठ 103),
	4	13	शु.	16	33	हस्त	11	44	व.	21	29	तुला	22	22	5	40	18	59	5	42	18	54	5	50	18	57	5	23	18	26	4	श्रीनृसिंह जयन्ती,
	5	14	श.	12	53	चित्रा	8	56	सि.	17	20	तुला			5	39	19	0	5	41	18	55	5	49	18	58	5	23	18	27	5	भ. 12/53 से 22/59 तक, बुध अश्वि. मेष में 21/02,(B)
	6	15/	र.	9	5	स्वाती/	5	57	व्य.	13	5	वृश्चि.	21	43	5	38	19	0	5	40	18	55	5	48	18	58	5	22	18	27	6	वैशाखी पूर्णिमा, श्रीबुद्ध पूर्णिमा, श्रीबुद्ध जयन्ती, वैशाख–(C)
						विशा.	26	59																								
ज्येष्ठ कृष्ण		1		29	18																											ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय,
	7	2	चं.	25	43	अनु.	24	11	व./	8	52	वृश्चि.			5	37	19	1	5	39	18	56	5	48	18	59	5	21	18	28	7	
									प.	28	51																					
	8	3	मं.	22	28	ज्येष्ठा	21	43	शि.	25	9	धनु	21	43	5	37	19	1	5	39	18	57	5	47	18	59	5	21	18	28	8	भ. 12/05 से 22/28 तक,
	9	4	बु.	18	42	मूल	19	44	सि.	21	51	धनु			5	36	19	2	5	38	18	57	5	46	19	0	5	20	18	29	9	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	10	5	गु.	17	32	पू.षा.	18	21	सा.	19	4	मकर	24	7	5	35	19	3	5	37	18	58	5	46	19	1	5	20	18	29	10	सूर्य कृत्ति. में 29/17, मंगल पू. फा. में 8/55,
	11	6	शु.	16	5	उ.षा.	17	40	शु.	16	51	मकर			5	34	19	3	5	37	18	58	5	45	19	1	5	19	18	30	11	भ. 16/05 से 27/43 तक,
	12	7	श.	15	21	श्रव.	17	43	शु.	15	14	मकर			5	34	19	4	5	36	18	59	5	45	19	2	5	18	18	30	12	
	13	8	र.	15	23	धनि.	18	31	ब्र.	14	12	कुम्भ	6	2	5	33	19	5	5	35	19	0	5	44	19	2	5	18	18	31	13	पंचक प्रारम्भ 6/02, बुध भरणी में 13/07,
	14	9	चं.	16	7	शत.	19	59	ऐं.	13	45	कुम्भ			5	32	19	5	5	35	19	0	5	43	19	3	5	17	18	31	14	भ. 28/48 बाद, सं. सूर्य वृष में 16/10, मु. 15, (D)
	15	10	मं.	17	29	पू.भा.	22	3	वै.	13	47	मीन	15	29	5	32	19	6	5	34	19	1	5	43	19	3	5	17	18	32	15	भ. 17/29 तक, शुक्र वक्री 20/03,
	16	11	बु.	19	22	उ.भा.	24	35	वि.	14	13	मीन			5	31	19	7	5	34	19	1	5	42	19	4	5	16	18	32	16	बुध पूर्व में अस्त 5/31, वक्री शनि चित्रा 2 कन्या में (E)
	17	12	गु.	21	37	रेव.	27	27	प्री.	14	58	मेष	27	27	5	30	19	7	5	33	19	2	5	42	19	4	5	16	18	33	17	पंचक समाप्त 27/27, गुरु कृत्ति. 2 वृष में 9/34,
	18	13	शु.	24	6	अश्वि.	—	—	आ.	15	56	मेष			5	30	19	8	5	33	19	3	5	41	19	5	5	15	18	33	18	भ. 24/06 बाद, प्रदोष व्रत,
	19	14	श.	26	42	अश्वि.	6	32	सौ.	17	0	मेष			5	29	19	9	5	32	19	3	5	41	19	6	5	15	18	34	19	भ. 13/24 तक, यूरेनस उ.भा. 4 में 12/23,
	20	30	र.	29	17	भर.	9	40	शो.	18	6	वृष	16	27	5	29	19	9	5	32	19	4	5	41	19	6	5	15	18	34	20	बुध कृत्ति. में 7/36, सूर्य सायन मिथुन में (F),
ज्येष्ठ शुक्ल	21	1	चं.	—	—	कृत्ति.	12	46	अ.	19	8	वृष			5	28	19	10	5	31	19	4	5	40	19	7	5	14	18	35	21	ज्येष्ठ शुक्लपक्ष प्रारम्भ, बुध वृष में 21/49, कंकण सूर्य (G)
	22	1	मं.	7	44	रोहि.	15	43	सु.	20	1	मिथुन	29	6	5	28	19	11	5	31	19	5	5	40	19	7	5	14	18	35	22	चन्द्रदर्शन, मु. 30, — सूर्यग्रहण–21 मई
	23	2	बु.	9	57	मृग.	18	25	धृ.	20	42	मिथुन			5	27	19	11	5	30	19	6	5	39	19	8	5	14	18	36	23	रम्भा तृतीया (पूर्वविद्धा),
	24	3	गु.	11	49	आर्द्रा	20	45	शू.	21	5	मिथुन			5	27	19	12	5	30	19	6	5	39	19	8	5	13	18	36	24	भ. 24/32 बाद, सूर्य रोहि. में 25/25, श्रीमहाराणा (H)
	25	4	शु.	13	15	पुन.	22	38	गं.	21	7	कर्क	16	13	5	27	19	12	5	30	19	7	5	39	19	9	5	13	18	37	25	भ. 13/15 तक, बलिदान दिवस श्रीगुरु अर्जुनदेव जी,
	26	5	श.	14	11	पुष्य	23	59	वृ.	20	44	कर्क			5	26	19	13	5	29	19	7	5	38	19	9	5	13	18	37	26	बुध रोहि. में 13/04,
	27	6	र.	14	30	आश्ले.	24	44	ध्रु.	19	51	सिंह	24	44	5	26	19	14	5	29	19	8	5	38	19	10	5	12	18	38	27	अरण्यषष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा, — गुरु उदित 29 मई
	28	7	चं.	14	11	मघा	24	50	व्या.	18	28	सिंह			5	25	19	14	5	29	19	8	5	38	19	10	5	12	18	38	28	भ. 14/11 से 25/41 तक,
	29	8	मं.	13	11	पू.फा.	24	17	ह.	16	32	सिंह			5	25	19	15	5	28	19	9	5	38	19	11	5	12	18	39	29	गुरु उदित 5/25,
	30	9	बु.	11	33	उ.फा.	23	6	व.	14	6	कन्या	6	3	5	25	19	15	5	28	19	9	5	37	19	11	5	12	18	39	30	शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ 19/17,
	31	10	गु.	9	18	हस्त	21	22	सि.	11	10	कन्या			5	25	19	16	5	28	19	10	5	37	19	12	5	12	18	40	31	भ. 19/55 बाद, गुरु कृत्ति. 3 में 13/19, श्रीगंगा (I)

(A) 16/56, मोहिनी एकादशी व्रत (स.), (B) श्रीकूर्म जयन्ती, (C) स्नान समाप्त, श्रीसत्यनारायण व्रत, (D) पुण्यकाल 9/45 बाद, (E) 6/35, भद्रकाली एकादशी (पं.), अपरा एकादशी व्रत (स.), (F) 20/46, वटसावित्री व्रत (अमापक्ष), भावुका अमा, (G) ग्रहण (देखें पृ. 20)(यह ग्रहण पूर्वी भारत में 21 मई को प्रातः दृश्य होगा) (विशेष स्पष्टीकरण के लिए पृष्ठ 23 पर दिया लेख देखें)], (H) प्रताप जयन्ती (राज.), (I) दशहरा (हस्त नक्षत्र 21/22 तक) (देखें पृष्ठ 104), निर्जला एकादशी व्रत (स्मा.).

मास पक्ष	ता.	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि–प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
ज्येष्ठ शुक्ल	1	11/	शु.	6	33	चित्रा	19	9	व्य./	7	49	तुला	8	18	5	24	19	16	5	28	19	10	5	37	19	12	5	11	18	40	1	म. 6/33 तक, बुध मृग. में 15/14, निर्जला एकादशी (A)
		12		27	22				व.	28	7																					द्वादशी तिथिक्षय,
	2	13	श.	23	54	स्वाती	16	36	प.	24	11	तुला			5	24	19	17	5	27	19	11	5	37	19	13	5	11	18	41	2	शुक्र पश्चिम में अस्त 19/17, शनिप्रदोषव्रत, (शुक्र अस्त 2 जून)
	3	14	र.	20	18	विशा.	13	51	शि.	20	8	वृश्चि.	8	33	5	24	19	17	5	27	19	11	5	37	19	13	5	11	18	41	3	भ. 20/18 बाद, वक्री शुक्र रोहि. में 16/20, श्रीसत्य– (B)
	4	15	चं.	16	41	अनु.	11	4	सि.	16	6	वृश्चि.			5	24	19	18	5	27	19	12	5	37	19	14	5	11	18	41	4	भ. 6/29 तक, बुध मिथुन में 18/32, नेप्च्यून वक्री (C)
आषाढ़ कृष्ण	5	1	मं.	13	15	ज्येष्ठा	8	23	सा.	12	11	धनु	8	23	5	24	19	18	5	27	19	12	5	36	19	14	5	11	18	42	5	आषाढ़ कृष्णपक्ष प्रारम्भ,
	6	2	बु.	10	7	मूल/	6	0	शु./	8	32	धनु			5	24	19	19	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	42	6	भ. 20/48 बाद, शुक्र–सूर्य संक्रमण (देखें पृष्ठ 69).
						पू.षा.	28	3	शु.	29	16																					
	7	3	गु.	7	28	उ.षा.	26	42	ब्र.	26	29	मकर	9	39	5	23	19	19	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	43	7	भ. 7/28 तक, सूर्य मृग. में 23/21, बुध आर्द्रा में (D)
	8	4/	शु.	5	25	श्रव.	26	2	ऐं.	24	16	मकर			5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	15	5	11	18	43	8	
		5		28	4																											पंचमी तिथिक्षय,
	9	6	श.	27	31	धनि.	26	9	वै.	22	41	कुम्भ	13	59	5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	43	9	भ. 27/31 बाद, पंचक प्रारम्भ 13/59,
	10	7	र.	27	46	शत.	27	3	वि.	21	45	कुम्भ			5	23	19	21	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	44	10	भ. 15/39 तक,
	11	8	चं.	28	47	पू.भा.	28	42	प्री.	21	26	मीन	22	14	5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	16	5	11	18	44	11	शुक्र पूर्व में उदित 5/23, (शुक्र उदित 11 जून)
	12	9	मं.	—	—	उ.भा.	—	—	आ.	21	39	मीन			5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	45	12	
	13	9	बु.	6	28	उ.भा.	7	0	सौ.	22	18	मीन			5	23	19	22	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	45	13	भ. 19/33 बाद,
	14	10	गु.	8	38	रेव.	9	46	शो.	23	15	मेष	9	46	5	23	19	22	5	27	19	16	5	36	19	18	5	11	18	45	14	भ. 8/38 तक, पंचक समाप्त 9/46, सं. सूर्य मिथुन (E)
	15	11	शु.	11	8	अश्वि.	12	50	अ.	24	20	मेष			5	23	19	22	5	27	19	16	5	37	19	18	5	11	18	46	15	बुध पुन. में 7/48, योगिनी एकादशी व्रत (स.),
	16	12	श.	13	44	भर	16	0	सु.	25	27	वृष	22	47	5	24	19	23	5	27	19	16	5	37	19	18	5	11	18	46	16	शनिप्रदोष व्रत,
	17	13	र.	16	15	कृत्ति.	19	4	धृ.	26	27	वृष			5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	18	5	12	18	46	17	भ. 16/15 से 29/24 तक, राहु अनु. 2, केतु कृत्ति. 4 (F)
	18	14	चं.	18	33	रोहि.	21	55	शू.	27	15	वृष			5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	19	5	12	18	46	18	
	19	30	मं.	20	32	मृग.	24	27	गं.	27	47	मिथुन	11	14	5	24	19	24	5	28	19	17	5	37	19	19	5	12	18	47	19	भौमवती अमा,
आषाढ़ शुक्ल	20	1	बु.	22	6	आर्द्रा	26	34	वृ.	27	59	मिथुन			5	24	19	24	5	28	19	18	5	37	19	19	5	12	18	47	20	आषाढ़ शुक्लपक्ष प्रारम्भ, सूर्य सायन कर्क में 28/39, (G)
	21	2	गु.	23	14	पुन.	28	16	ध्रु.	27	51	कर्क	21	53	5	24	19	24	5	28	19	18	5	38	19	19	5	12	18	47	21	सूर्य आर्द्रा में 22/18, मंगल कन्या में 24/02, बुध कर्क (H)
	22	3	शु.	23	54	पुष्य	—	—	व्या.	27	20	कर्क			5	25	19	24	5	28	19	18	5	38	19	20	5	13	18	47	22	
	23	4	श.	24	5	पुष्य	5	30	ह.	26	27	कर्क			5	25	19	24	5	28	19	18	5	38	19	20	5	13	18	47	23	भ. 11/59 से 24/05 तक,
	24	5	र.	23	48	आश्ले.	6	16	व.	25	11	सिंह	6	16	5	25	19	25	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	48	24	बुध पुष्य में 5/33,
	25	6	चं.	23	2	मघा	6	35	सि.	23	33	सिंह			5	25	19	25	5	29	19	18	5	39	19	20	5	13	18	48	25	शनि मार्गी 13/31, कुमार षष्ठी,
	26	7	मं.	21	48	पू.फा.	6	25	व्य.	21	31	कन्या	12	17	5	26	19	25	5	29	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	26	भ. 21/48 बाद, विवस्वत् सप्तमी,
	27	8	बु.	20	6	उ.फा./	5	47	व.	19	8	कन्या			5	26	19	25	5	30	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	27	भ. 8/57 तक, शुक्र मार्गी 20/38,
						हस्त	28	42																								
	28	9	गु.	17	59	चित्रा	27	13	प.	16	23	तुला	16	0	5	26	19	25	5	30	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	28	
	29	10	शु.	15	29	स्वाती	25	23	शि.	13	19	तुला			5	27	19	25	5	30	19	19	5	40	19	20	5	14	18	48	29	भ. 26/05 बाद, गुरु रोहिणी 1 में 28/08,
	30	11	श.	12	41	विशा.	23	16	सि.	10	0	वृश्चि.	17	48	5	27	19	25	5	31	19	19	5	40	19	20	5	15	18	48	30	भ. 12/41 तक, श्रीविष्णुशयनोत्सव, हरिशयनी एकादशी (I)

(A) व्रत (वै.), गुरुबाल्य समाप्त 5/25, (B) नारायण व्रत (देखें पृष्ठ 104), (C) 26/38, वट सावित्री व्रत (पूर्णिमापक्ष), (D) 25/17, बुध पश्चिम में उदित 19/19, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, (E) में 22/45, मु. 30, पुण्यकाल मध्याह्न बाद, मंगल उ.फा. में 23/49, गुरु कृत्ति. 4 में 25/03, शुक्रबाल्य समाप्त 5/23, (F) में 24/59, (G) वर्षाऋतु प्रारम्भ, दक्षिणायन प्रारम्भ, (H) में 18/42, चन्द्रदर्शन, मु. 30, रथयात्रा (श्रीजगदीश रथोत्सव) पुरी, (I) व्रत (स.).

श्री वि. सं. 2069 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) जुलाई, सन् 2012 ई.

मास पक्ष	जुलाई	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
आषाढ़ शुक्ल	1	12	र.	9	39	अनु.	20	59	सा./	6	29	वृश्चि.			5	27	19	25	5	31	19	19	5	40	19	21	5	15	18	48	1	प्रदोष व्रत,
									शु.	26	51																					
	2	13/	चं.	6	30	ज्येष्ठा	18	38	शु.	23	12	धनु	18	38	5	28	19	25	5	31	19	19	5	41	19	21	5	16	18	48	2	भ. 27/21 बाद,
		14		27	21																											चतुर्दशी तिथिक्षय,
	3	15	मं.	24	22	मूल	16	23	ब्र.	19	39	धनु			5	28	19	25	5	32	19	19	5	41	19	20	5	16	18	48	3	भ. 13/52 तक, गुरुपूर्णिमा (व्यासपूजा), आषाढ़ी पूर्णिमा (A)
श्रावण कृष्ण	4	1	बु.	21	39	पू.षा.	14	22	ऐं.	16	19	मकर	19	55	5	29	19	25	5	32	19	19	5	42	19	20	5	16	18	48	4	श्रावण कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	5	2	गु.	19	23	उ.षा.	12	45	वै.	13	20	मकर			5	29	19	25	5	33	19	19	5	42	19	20	5	17	18	48	5	सूर्य पुनर्वसु में 21/54, अशून्यशयन व्रत,
	6	3	शु.	17	42	श्रव.	11	40	वि.	10	46	कुम्भ	23	22	5	30	19	25	5	33	19	18	5	42	19	20	5	17	18	48	6	भ. 6/32 से 17/42 तक, पंचक प्रारम्भ 23/22, (B)
	7	4	श.	16	42	धनि.	11	14	प्री.	8	46	कुम्भ			5	30	19	24	5	33	19	18	5	43	19	20	5	17	18	48	7	
	8	5	र.	16	29	शत.	11	34	आ.	7	21	कुम्भ			5	31	19	24	5	34	19	18	5	43	19	20	5	18	18	48	8	बुध आश्ले. में 10/36,
	9	6	चं.	17	4	पू.भा.	12	41	सौ.	6	35	मीन	6	20	5	31	19	24	5	34	19	18	5	44	19	20	5	18	18	48	9	भ. 17/04 बाद,
	10	7	मं.	18	23	उ.भा.	14	32	शो.	6	25	मीन			5	32	19	24	5	35	19	18	5	44	19	20	5	19	18	48	10	भ. 5/43 तक,
	11	8	बु.	20	20	रेव.	17	0	अ.	6	47	मेष	17	0	5	32	19	24	5	35	19	18	5	45	19	20	5	19	18	47	11	पंचक समाप्त 17/00, मंगल हस्त में 6/43,
	12	9	गु.	22	42	अश्वि.	19	55	सु.	7	34	मेष			5	33	19	23	5	36	19	17	5	45	19	19	5	20	18	47	12	
	13	10	शु.	25	16	भर.	23	2	धृ.	8	35	मेष			5	33	19	23	5	36	19	17	5	46	19	19	5	20	18	47	13	भ. 11/59 से 25/16 तक, यूरेनस वक्री 15/21,
	14	11	श.	27	46	कृत्ति.	26	7	शू.	9	42	वृष	5	49	5	34	19	23	5	37	19	17	5	46	19	19	5	20	18	47	14	कामिका एकादशी व्रत (स्मा.),
	15	12	र.	—	—	रोहि.	28	58	गं.	10	42	वृष			5	34	19	22	5	37	19	17	5	46	19	19	5	21	18	47	15	बुध वक्री 7/46, कामिका एकादशी व्रत (वै.),
	16	12	चं.	6	0	मृग.	—	—	वृ.	11	28	मिथुन	18	14	5	35	19	22	5	38	19	16	5	47	19	18	5	21	18	46	16	सं. सूर्य कर्क में 9/36, मु. 30, पुण्यकाल 15/58 तक, (C)
	17	13	मं.	7	50	मृग.	7	24	ध्रु.	11	53	मिथुन			5	35	19	22	5	38	19	16	5	47	19	18	5	22	18	46	17	भ. 7/50 से 20/29 तक, श्रावण शिवरात्रि,
	18	14	बु.	9	8	आर्द्रा	9	21	व्या.	11	55	कर्क	28	27	5	36	19	21	5	39	19	15	5	48	19	18	5	22	18	46	18	
	19	30	गु.	9	54	पुन.	10	46	ह.	11	30	कर्क			5	36	19	21	5	39	19	15	5	48	19	17	5	23	18	45	19	सूर्य पुष्य में 21/25, हरियाली अमावस,
श्रावण शुक्ल	20	1	शु.	10	8	पुष्य	11	40	व.	10	41	कर्क			5	37	19	20	5	40	19	15	5	49	19	17	5	23	18	45	20	श्रावण शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 15,
	21	2	श.	9	54	आश्ले.	12	6	सि.	9	30	सिंह	12	6	5	38	19	20	5	41	19	14	5	49	19	16	5	24	18	45	21	वक्री बुध पुष्य में 28/01, बुध पश्चिम में अस्त 19/20,
	22	3	र.	9	14	मघा	12	8	व्य.	7	58	सिंह			5	38	19	19	5	41	19	14	5	50	19	16	5	24	18	44	22	भ. 20/43 बाद, सूर्य सायन सिंह में 15/31, शुक्र (D)
	23	4	चं.	8	12	पू.फा.	11	48	व./	6	8	कन्या	17	41	5	39	19	19	5	42	19	13	5	50	19	16	5	25	18	44	23	भ. 8/12 तक, नागपंचमी,
									प.	28	3																					
	24	5/	मं.	6	52	उ.फा.	11	11	शि.	25	45	कन्या			5	39	19	18	5	42	19	13	5	51	19	15	5	25	18	43	24	श्रीकल्कि जयन्ती,
		6		29	16																											षष्ठी तिथिक्षय,
	25	7	बु.	27	26	हस्त	10	18	सि.	23	15	तुला	21	46	5	40	19	17	5	43	19	12	5	52	19	15	5	26	18	43	25	भ. 27/26 बाद, श्रीतुलसीदास जयन्ती,
	26	8	गु.	25	23	चित्रा	9	11	सा.	20	35	तुला			5	41	19	17	5	43	19	12	5	52	19	14	5	26	18	42	26	भ. 14/24 तक, श्रीदुर्गाष्टमी,
	27	9	शु.	23	9	स्वाती	7	52	शु.	17	45	वृश्चि.	24	46	5	41	19	16	5	44	19	11	5	53	19	14	5	27	18	42	27	
	28	10	श.	20	46	विशा./	6	22	शु.	14	47	वृश्चि.			5	42	19	16	5	44	19	10	5	53	19	13	5	27	18	41	28	
						अनु.	28	44																								
	29	11	र.	18	16	ज्येष्ठा	27	1	ब्र.	11	43	धनु	27	1	5	42	19	15	5	45	19	10	5	54	19	12	5	27	18	41	29	भ. 7/31 से 18/16 तक, पवित्रा एकादशी व्रत (स.),
	30	12	चं.	15	45	मूल	25	19	ऐं./	8	36	धनु			5	43	19	14	5	45	19	9	5	54	19	12	5	28	18	40	30	सोमप्रदोष व्रत,
									वै.	29	30																					
	31	13	मं.	13	17	पू.षा.	23	42	वि.	26	30	मकर	29	19	5	44	19	13	5	46	19	8	5	55	19	11	5	28	18	40	31	शुक्र मिथुन में 19/48.

(A) कोकिला व्रत, श्रीशिवशयनोत्सव, चातुर्मास्य व्रत–नियमादि प्रारम्भ, श्रीसत्यनारायण व्रत, (B) श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, (C) गुरु रोहिणी 2 में 10/23, सोमप्रदोष व्रत, (D) मृग. में 24/02, मधुश्रवा तृतीया (संधारा तीज),

मास पक्ष	अगस्त	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
श्रावण शुक्ल	1	14	बु.	10	58	उ.षा.	22	18	प्री.	23	42	मकर			5	44	19	13	5	47	19	8	5	55	19	11	5	29	18	39	1	भ. 10/58 से 21/58 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत,
	2	15	गु.	8	57	श्रव.	21	16	आ.	21	12	मकर			5	45	19	12	5	47	19	7	5	56	19	10	5	29	18	39	2	सूर्य आश्ले. में 20/19, ऋक उपाकर्म, शुक्ल–कृष्ण यजु (A)
प्रथम भाद्रपद कृष्ण	3	1	शु.	7	21	धनि.	20	43	सौ.	19	6	कुम्भ	8	55	5	45	19	11	5	48	19	6	5	56	19	9	5	30	18	38	3	प्रथम भाद्रपद कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, पंचक प्रारम्भ 8/55, (B)
	4	2	श.	6	18	शत.	20	46	शो.	17	29	कुम्भ			5	46	19	10	5	48	19	6	5	57	19	8	5	30	18	37	4	भ. 18/06 बाद, शनि चित्रा 3 तुला में 8/49,
	5	3	र.	5	54	पू.भा.	21	31	अ.	16	25	मीन	15	15	5	47	19	10	5	49	19	5	5	57	19	8	5	31	18	37	5	भ. 5/54 तक, श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी व्रत, (चन्द्रोदय (C)
	6	4	चं.	6	13	उ.भा.	22	58	सु.	15	55	मीन			5	47	19	9	5	49	19	4	5	58	19	7	5	31	18	36	6	वक्री प्लूटो मूल 4 में 12/51,
	7	5	मं.	7	15	रेव.	25	5	धृ.	15	59	मेष	25	5	5	48	19	8	5	50	19	3	5	58	19	6	5	32	18	35	7	पंचक समाप्त 25/05, बुध पूर्व में उदित 5/48,
	8	6	बु.	8	58	अश्वि.	27	46	शू.	16	31	मेष			5	49	19	7	5	50	19	2	5	59	19	6	5	32	18	34	8	भ. 8/58 से 22/05 तक, बुध मार्गी 11/11, शुक्र (D)
	9	7	गु.	11	11	भर.	—	—	गं.	17	24	मेष			5	49	19	6	5	51	19	2	5	59	19	5	5	33	18	34	9	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मा.) (चन्द्रोदयव्यापिनी अष्टमी में) (E)
	10	8	शु.	13	41	भर.	6	47	वृ.	18	27	वृष	13	33	5	50	19	5	5	52	19	1	6	0	19	4	5	33	18	33	10	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वै.) (चन्द्रोदय 24/02), (F)
	11	9	श.	16	13	कृत्ति.	9	53	ध्रु.	19	30	वृष			5	50	19	4	5	52	19	0	6	0	19	3	5	33	18	32	11	भ. 29/22 बाद, श्री गुग्गा नवमी,
	12	10	र.	18	31	रोहि.	12	49	व्या.	20	19	मिथुन	26	8	5	51	19	3	5	53	18	59	6	1	19	2	5	34	18	31	12	भ. 18/31 तक,
	13	11	चं.	20	21	मृग.	15	21	ह.	20	48	मिथुन			5	52	19	2	5	53	18	58	6	1	19	1	5	34	18	31	13	अजा एकादशी व्रत (स.),
	14	12	मं.	21	35	आर्द्रा	17	19	व.	20	48	मिथुन			5	52	19	1	5	54	18	57	6	2	19	1	5	35	18	30	14	मंगल तुला में 9/49,
	15	13	बु.	22	10	पुन.	18	39	सि.	20	17	कर्क	12	23	5	53	19	0	5	54	18	56	6	2	19	0	5	35	18	29	15	भ. 22/10 बाद, प्रदोष व्रत, भारत स्वतन्त्रता दिवस, (G)
	16	14	गु.	22	5	पुष्य	19	21	व्य.	19	15	कर्क			5	53	18	59	5	55	18	55	6	3	18	59	5	36	18	28	16	भ. 10/08 तक, सं. सूर्य मघा सिंह में 17/59, मु. 30, (H)
	17	30	शु.	21	24	आश्ले.	19	26	व.	17	44	सिंह	19	26	5	54	18	58	5	55	18	54	6	3	18	58	5	36	18	27	17	कुशोत्पाटिनी अमा, पिठोरी अमा,
प्रथम (अधिक) भाद्रपद शुक्ल	18	1	श.	20	14	मघा	19	2	प.	15	49	सिंह			5	55	18	57	5	56	18	53	6	4	18	57	5	37	18	26	18	प्रथम(अधिक)भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, अधिक(मल)मास प्रा.,
	19	2	र.	18	40	पू.फा.	18	15	शि.	13	33	कन्या	24	0	5	55	18	56	5	56	18	52	6	4	18	56	5	37	18	25	19	चन्द्रदर्शन, मु. 45, राहु अनु. 1, केतु कृत्ति. 3 में 22/32,
	20	3	चं.	16	50	उ.फा.	17	10	सि.	11	3	कन्या			5	56	18	55	5	57	18	51	6	4	18	55	5	37	18	25	20	भ. 27/50 बाद,
	21	4	मं.	14	50	हस्त	15	56	सा./	8	23	तुला	27	16	5	56	18	54	5	57	18	50	6	5	18	54	5	38	18	24	21	भ. 14/50 तक, बुध आश्ले. में 6/13,
									शु.	29	37																					
	22	5	बु.	12	43	चित्रा	14	35	शु.	26	49	तुला			5	57	18	53	5	58	18	49	6	5	18	53	5	38	18	23	22	शुक्र पुन. में 13/10, सूर्य सायन कन्या में 22/37, (I)
	23	6	गु.	10	35	स्वाती	13	13	ब्र.	24	0	तुला			5	58	18	52	5	58	18	48	6	6	18	52	5	39	18	22	23	
	24	7	शु.	8	27	विशा.	11	52	ऐं.	21	13	वृश्चिक	6	12	5	58	18	51	5	59	18	47	6	6	18	51	5	39	18	21	24	भ. 8/27 से 19/24 तक, मंगल स्वाती में 23/19,
	25	8/	श.	6	21	अनु.	10	33	वै.	18	27	वृश्चिक			5	59	18	50	5	59	18	46	6	7	18	50	5	39	18	20	25	
		9		28	18																											नवमी तिथिक्षय,
	26	10	र.	26	20	ज्येष्ठा	9	17	वि.	15	45	धनु	9	17	5	59	18	48	6	0	18	45	6	7	18	49	5	40	18	19	26	गुरु रोहि. 4 में 29/08,
	27	11	चं.	24	29	मूल	8	6	प्री.	13	8	धनु			6	0	18	47	6	1	18	44	6	8	18	48	5	40	18	18	27	भ. 13/24 से 24/29 तक, पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (स.),
	28	12	मं.	22	47	पू.षा.	7	2	आ.	10	37	मकर	12	48	6	0	18	46	6	1	18	43	6	8	18	47	5	41	18	17	28	बुध मघा सिंह में 29/12, बुध पूर्व में अस्त 6/00,
	29	13	बु.	21	19	उ.षा./	6	10	सौ.	8	15	मकर			6	1	18	45	6	2	18	42	6	9	18	46	5	41	18	16	29	प्रदोष व्रत,
						श्रव.	29	33																								
	30	14	गु.	20	11	धनि.	29	17	शो./	6	6	कुम्भ	17	22	6	2	18	44	6	2	18	41	6	9	18	45	5	41	18	15	30	भ. 20/11 बाद, पंचक प्रारम्भ 17/22, सूर्य पू. फा. में (J)
									अ.	28	15																					
	31	15	शु.	19	28	शत.	29	28	सु.	26	45	कुम्भ			6	2	18	43	6	2	18	40	6	9	18	44	5	42	18	14	31	भ. 7/50 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत,

(A) उपाकर्म, श्रावणी पूर्णिमा, श्री अमरनाथ यात्रा (काश्मीर), रक्षाबन्धन (राखी) (देखें पृष्ठ 104). (B) मंगल चित्रा में 11/49, गुरु रोहि. 3 में 19/21, (C) 21/00), बहुला चतुर्थी, (D) आर्द्रा में 14/05. (E) (चन्द्रोदय 23/20), दूर्वाष्टमी व्रत (देखें पृष्ठ 105). (F) गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव), (G) पर्युषण पर्व (जैन), (H) पुण्यकाल मध्याह्न बाद, (I) शरद् ऋतु प्रारम्भ, (J) 13/56.

श्री वि. सं. 2069 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — सितम्बर, सन् 2012 ई.

मास पक्ष	सितम्बर	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	जयपुर सूर्योदय घं. मि.	जयपुर सूर्यास्त घं. मि.	वाराणसी सूर्योदय घं. मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं. मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
द्वितीय(अधिक) भाद्रपद कृष्ण	1	1	श.	19 15	पू.भा.	— —	धृ.	25 40	मीन	23 57	6 3	18 41	6 3	18 39	6 10	18 43	5 42	18 13	1	द्वितीय(अधिक)भाद्रपद कृष्णपक्ष प्रारम्भ, शुक्र कर्क में 6/14,
	2	2	र.	19 38	पू.भा.	6 11	शू.	25 4	मीन		6 3	18 40	6 3	18 37	6 10	18 42	5 43	18 12	2	
	3	3	चं.	20 39	उ.भा.	7 29	गं.	24 57	मीन		6 4	18 39	6 4	18 36	6 11	18 41	5 43	18 11	3	भ. 8/08 से 20/39 तक,
	4	4	मं.	22 16	रेव.	9 24	वृ.	25 18	मेष	9 24	6 4	18 38	6 4	18 35	6 11	18 40	5 43	18 10	4	पंचक समाप्त 9/24, बुध पू.फा. में 26/51, शुक्र (A)
	5	5	बु.	24 24	अश्वि.	11 53	ध्रु.	26 2	मेष		6 5	18 37	6 5	18 34	6 12	18 39	5 44	18 9	5	
	6	6	गु.	26 53	भर.	14 46	व्या.	27 1	वृष	21 32	6 6	18 35	6 5	18 33	6 12	18 37	5 44	18 8	6	भ. 26/53 बाद,
	7	7	शु.	29 29	कृत्ति.	17 53	ह.	28 4	वृष		6 6	18 34	6 6	18 32	6 12	18 36	5 44	18 7	7	भ. 16/11 तक,
	8	8	श.	— —	रोहि.	20 57	व.	29 2	वृष		6 7	18 33	6 6	18 30	6 13	18 35	5 45	18 6	8	वक्री यूरेनस उ.भा. 3 में 13/03,
	9	8	र.	7 56	मृग.	23 43	सि.	29 41	मिथुन	10 23	6 7	18 32	6 7	18 29	6 13	18 34	5 45	18 5	9	
	10	9	चं.	9 58	आर्द्रा	25 59	व्य.	29 54	मिथुन		6 8	18 30	6 7	18 28	6 14	18 33	5 46	18 3	10	भ. 22/40 बाद,
	11	10	मं.	11 23	पुन.	27 33	व.	29 34	कर्क	21 13	6 8	18 29	6 8	18 27	6 14	18 32	5 46	18 2	11	भ. 11/23 तक, बुध उ.फा. में 26/14,
	12	11	बु.	12 5	पुष्य	28 23	प.	28 37	कर्क		6 9	18 28	6 8	18 26	6 15	18 31	5 46	18 1	12	शनि चित्रा 4 में 13/18, पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (स.),
	13	12	गु.	11 59	आश्ले.	28 28	शि.	27 4	सिंह	28 28	6 9	18 26	6 9	18 24	6 15	18 30	5 47	18 0	13	सूर्य उ.फा. में 07/50, बुध कन्या में 21/33, प्रदोष व्रत,
	14	13	शु.	11 9	मघा	27 52	सि.	24 58	सिंह		6 10	18 25	6 9	18 23	6 15	18 28	5 47	17 59	14	भ. 11/09 से 22/25 तक, मगल विशा. में 6/11,
	15	14	श.	9 41	पू.फा.	26 44	सा.	22 25	सिंह		6 11	18 24	6 10	18 22	6 16	18 27	5 47	17 58	15	
	16	30/	र.	7 40	उ.फा.	25 11	शु.	19 29	कन्या	8 22	6 11	18 23	6 10	18 21	6 16	18 26	5 48	17 57	16	सं. सूर्य कन्या में 17/54, मु. 45, पुण्यकाल मध्याह्न (B)
द्वितीय (शुद्ध) भाद्रपद शुक्ल		/1		29 18																द्वितीय (शुद्ध)भाद्रपद शुक्लपक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय,
	17	2	चं.	26 41	हस्त	23 22	शु.	16 19	कन्या		6 12	18 21	6 11	18 20	6 17	18 25	5 48	17 56	17	चन्द्रदर्शन, मु. 30, साम उपाकर्म, मेला डेरा बाबा गोसाईं (C)
	18	3	मं.	23 58	चित्रा	21 26	ब्र.	13 1	तुला	10 24	6 12	18 20	6 11	18 18	6 17	18 24	5 49	17 55	18	प्लूटो मार्गी 10/35, हरितालिका तृतीया, गौरी तृतीया (D)
	19	4	बु.	21 16	स्वाती	19 30	ऐं.	9 41	तुला		6 13	18 19	6 12	18 17	6 18	18 23	5 49	17 54	19	भ. 10/38 से 21/16 तक, बुध हस्त में 12/09, (E)
	20	5	गु.	18 41	विशा.	17 40	वै./	6 23	वृश्चि.	12 7	6 13	18 18	6 12	18 16	6 18	18 22	5 49	17 53	20	ऋषिपंचमी, संवत्सरी महापर्व (जैन),
							वि.	27 14												
	21	6	शु.	16 18	अनु.	16 2	प्री.	24 15	वृश्चि.		6 14	18 16	6 13	18 15	6 18	18 20	5 50	17 52	21	सूर्यषष्ठी व्रत,
	22	7	श.	14 9	ज्येष्ठा	14 39	आ.	21 28	धनु	14 39	6 15	18 15	6 13	18 14	6 19	18 19	5 50	17 50	22	भ. 14/09 से 25/13 तक, सूर्य सायन तुला में (F)
	23	8	र.	12 17	मूल	13 31	सौ.	18 55	धनु		6 15	18 14	6 14	18 12	6 19	18 18	5 51	17 49	23	श्रीराधा अष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ,
	24	9	चं.	10 42	पू.षा.	12 42	शो.	16 37	मकर	18 32	6 16	18 12	6 14	18 11	6 20	18 17	5 51	17 48	24	बा. श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव),
	25	10	मं.	9 27	उ.षा.	12 11	अ.	14 33	मकर		6 16	18 11	6 15	18 10	6 20	18 16	5 51	17 47	25	भ. 20/59 बाद,
	26	11	बु.	8 31	श्रव.	12 0	सु.	12 46	कुम्भ	24 3	6 17	18 10	6 15	18 9	6 21	18 15	5 52	17 46	26	भ. 8/31 तक, पंचक प्रारम्भ 24/03, सूर्य हस्त में (G)
	27	12	गु.	7 58	धनि.	12 11	धृ.	11 17	कुम्भ		6 17	18 9	6 16	18 8	6 21	18 14	5 52	17 45	27	बुध चित्रा में 12/00, प्रदोष व्रत,
	28	13	शु.	7 47	शत.	12 45	शू.	10 6	कुम्भ		6 18	18 7	6 16	18 7	6 22	18 12	5 52	17 44	28	मंगल वृश्चिक में 20/44, बुध पश्चिम में उदित (H)
	29	14	श.	8 4	पू.भा.	13 45	गं.	9 16	मीन	7 27	6 19	18 6	6 17	18 5	6 22	18 11	5 53	17 43	29	भ. 8/04 से 20/26 तक, श्री अनंत चतुर्दशी व्रत, (I)
	30	15	र.	8 48	उ.भा.	15 13	वृ.	8 48	मीन		6 19	18 5	6 17	18 4	6 23	18 10	5 53	17 42	30	पितृपक्ष (महालय)प्रारम्भ, प्रतिपदा का श्राद्ध,

(A) पुष्य में 9/35, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, अगस्त्य उदय, (B) बाद, शुक्र आश्ले. में 14/15, अधिक(मल)मास समाप्त, (C) आणां, कुराली (पं.), (D) श्रीवराह जयन्ती, (E) हरितालिका चतुर्थी, कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषिद्ध)(चन्द्रास्त 20/31), श्रीसिद्धिविनायक व्रत, (F) 20/19, दक्षिणगोल प्रारम्भ, विषुवदिन, (G) 23/16, श्रीवामन जयन्ती, पद्मा एकादशी व्रत (स.), वामनद्वादशी, श्रवण द्वादशी, (H) 18/07, शुक्र मघा सिंह में 8/43, (I) प्रोष्ठपदी श्राद्ध, पूर्णिमा श्राद्ध, श्रीसत्यनारायण व्रत,

मास पक्ष	अक्टूबर	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
आश्विन कृष्ण	1	1	चं.	10	3	रेव.	17	10	धु.	8	43	मेष	17	10	6	20	18	4	6	18	18	3	6	23	18	9	5	54	17	41	1	आश्विन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, पंचक समाप्त 17/10,, बुध (A)
	2	2	मं.	11	48	अश्वि.	19	36	व्या.	9	1	मेष			6	20	18	2	6	18	18	2	6	23	18	8	5	54	17	40	2	भ. 24/53 बाद, तृतीया का श्राद्ध (देखें पृष्ठ 106),
	3	3	बु.	13	59	भर.	22	25	ह.	9	40	वृष	29	10	6	21	18	1	6	19	18	1	6	24	18	7	5	55	17	39	3	भ. 13/59 तक, मंगल अनु. में 15/17, श्रीगणेशचतुर्थी (B)
	4	4	गु.	16	30	कृत्ति.	25	30	व.	10	34	वृष			6	22	18	0	6	19	17	59	6	24	18	6	5	55	17	38	4	गुरु वक्री 18/48, चतुर्थी का श्राद्ध (देखें पृष्ठ 106),
	5	5	शु.	19	11	रोहि.	28	39	सि.	11	37	वृष			6	22	17	59	6	20	17	58	6	25	18	5	5	55	17	37	5	बुध स्वाती में 27/30, पंचमी का श्राद्ध,
	6	6	श.	21	47	मृग.	—	—	व्य.	12	39	मिथुन	18	12	6	23	17	57	6	21	17	57	6	25	18	4	5	56	17	36	6	भ. 21/47 बाद, वक्री नेप्च्यून धनि. 4 में 11/24, षष्ठी(C)
	7	7	र.	24	5	मृग.	7	40	व.	13	32	मिथुन			6	24	17	56	6	21	17	56	6	26	18	3	5	56	17	35	7	भ. 10/56 तक, सप्तमी का श्राद्ध,
	8	8	चं.	25	51	आर्द्रा	10	19	प.	14	4	कर्क	29	55	6	24	17	55	6	22	17	55	6	26	18	2	5	57	17	34	8	शनि अस्त 17/55, श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त, (चन्द्रोदय (D)
	9	9	मं.	26	55	पुन.	12	22	शि.	14	7	कर्क			6	25	17	54	6	22	17	54	6	27	18	0	5	57	17	33	9	शुक्र पू.फा. में 19/45, नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध,
	10	10	बु.	27	10	पुष्य	13	41	सि.	13	35	कर्क			6	25	17	53	6	23	17	53	6	27	17	59	5	58	17	32	10	भ. 15/03 से 27/10 तक, सूर्य चित्रा में 12/20, (E)
	11	11	गु.	26	35	आश्ले.	14	11	सा.	12	24	सिंह	14	11	6	26	17	52	6	23	17	52	6	28	17	58	5	58	17	31	11	शनि स्वाती 1 में 25/06, एकादशी का श्राद्ध, इन्दिरा (F)
	12	12	शु.	25	12	मघा	13	54	शु.	10	34	सिंह			6	27	17	50	6	24	17	51	6	28	17	57	5	59	17	30	12	मघा श्राद्ध, द्वादशी का श्राद्ध, संन्यासियों का श्राद्ध,
	13	13	श.	23	9	पू.फा.	12	53	शु./ ब्र.	8 / 29	7 / 9	कन्या	18	31	6	27	17	49	6	25	17	49	6	29	17	56	5	59	17	29	13	भ. 23/09 बाद, त्रयोदशी--श्राद्ध, शनिप्रदोष व्रत,
	14	14	र.	20	33	उ.फा.	11	15	ऐं.	25	46	कन्या			6	28	17	48	6	25	17	48	6	29	17	55	6	0	17	28	14	भ. 9/51 तक, शस्त्र–विषादि से मृतों (अपमृत्यु) वालों (G)
	15	30	चं.	17	32	हस्त	9	9	वै.	22	6	तुला	19	58	6	29	17	47	6	26	17	47	6	30	17	54	6	0	17	27	15	बुध विशा. में 14/17, मेला फल्गु (पिहोवा–हरि.), सर्वपितृ (H)
आश्विन शुक्ल	16	1	मं.	14	18	चित्रा/ स्वाती	6 / 28	44 / 12	वि.	18	15	तुला			6	29	17	46	6	26	17	46	6	31	17	53	6	1	17	26	16	आश्विन शुक्लपक्ष प्रारम्भ, सं. सूर्य तुला में 29/50, मु. 15(I)
	17	2	बु.	10	58	विशा.	25	41	प्री.	14	21	वृश्चि.	20	18	6	30	17	45	6	27	17	45	6	31	17	52	6	1	17	25	17	चन्द्रदर्शन, मु. 45,
	18	3/ 4	गु.	7 / 28	43 / 40	अनु.	23	19	आ.	10	33	वृश्चि.			6	31	17	44	6	28	17	44	6	32	17	51	6	2	17	24	18	भ. 18/11 से 28/40 तक,
	19	5	शु.	25	56	ज्येष्ठा	21	15	सौ./ शो.	6 / 27	55 / 32	धनु	21	15	6	32	17	43	6	28	17	43	6	32	17	51	6	2	17	23	19	चतुर्थी तिथिक्षय, उपांगललिता व्रत,
	20	6	श.	23	37	मूल	19	34	अ.	24	31	धनु			6	32	17	42	6	29	17	42	6	33	17	50	6	3	17	22	20	शुक्र उ.फा. में 25/13, श्रीसरस्वती आवाहन,
	21	7	र.	21	46	पू.षा.	18	21	सु.	21	52	मकर	24	8	6	33	17	41	6	30	17	41	6	33	17	49	6	3	17	21	21	भ. 21/46 बाद, राहु विशा. 4, केतु कृत्ति. 2 में 20/33, (J)
	22	8	चं.	20	26	उ.षा.	17	39	धृ.	19	38	मकर			6	34	17	40	6	30	17	40	6	34	17	48	6	4	17	21	22	भ. 9/06 तक, मंगल ज्येष्ठा में 7/17, सूर्य सायन (K)
	23	9	मं.	19	38	श्रव.	17	28	शू.	17	50	कुम्भ	29	34	6	34	17	39	6	31	17	39	6	35	17	47	6	4	17	20	23	पंचक प्रारम्भ 29/34, सूर्य स्वाती में 22/45, बुध वृश्चिक (L)
	24	10	बु.	18	23	धनि.	17	48	गं.	16	27	कुम्भ			6	35	17	38	6	32	17	39	6	35	17	46	6	5	17	19	24	विजयादशमी (दशहरा), आयुध-पूजा, अपराजिता पूजन, (M)
	25	11	गु.	19	39	शत.	18	39	वृ.	15	28	कुम्भ			6	36	17	37	6	32	17	38	6	36	17	45	6	5	17	18	25	भ. 7/31 से 19/39 तक, भरतमिलाप, पापांकुशा (N)
	26	12	शु.	20	24	पू.भा.	19	58	धु.	14	52	मीन	13	36	6	37	17	36	6	33	17	37	6	37	17	44	6	6	17	17	26	बुध अनु. में 17/08,
	27	13	श.	21	38	उ.भा.	21	45	व्या.	14	39	मीन			6	37	17	35	6	34	17	36	6	37	17	44	6	7	17	17	27	शनिप्रदोष व्रत,
	28	14	र.	23	17	रेव.	23	55	ह.	14	45	मेष	23	55	6	38	17	34	6	34	17	35	6	38	17	43	6	7	17	16	28	भ. 23/17 बाद, पंचक समाप्त 23/55,
	29	15	चं.	25	19	अश्वि.	26	28	व.	15	9	मेष			6	39	17	33	6	35	17	34	6	38	17	42	6	8	17	15	29	भ. 12/18 तक, प्लूटो पू.षा. 1 में 11/34, शरत् पूर्णिमा, (O)
कार्ति. कृष्ण	30	1	मं.	27	41	भर.	29	19	सि.	15	48	मेष			6	40	17	32	6	36	17	33	6	39	17	41	6	8	17	14	30	कार्तिक कृष्णपक्ष प्रारम्भ,
	31	2	बु.	30	16	कृत्ति.	—	—	व्य.	16	40	वृष	12	4	6	41	17	31	6	36	17	33	6	40	17	40	6	9	17	14	31	शुक्र हस्त में 26/36,

(A) तुला में 17/41, द्वितीया का श्राद्ध, (B) व्रत, भरणी श्राद्ध,(इस दिन कोई तिथिश्राद्ध घटित नही होगा– देखें पृष्ठ 106),(C) का श्राद्ध, चन्द्रषष्ठी व्रत, (D) व्यापिनी अष्टमी में), अष्टमी का श्राद्ध, (E) दशमी का श्राद्ध, (F) एकादशी व्रत (स.), (G) का श्राद्ध, (H) श्राद्ध, अज्ञातमृत्युतिथि–चतुर्दशी/अमावस एवं पूर्णिमा मृत्युतिथि वालों का श्राद्ध, सोमवती अमा, (I) पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, शारद नवरात्र प्रारम्भ, महाराजा श्री अग्रसेन जयन्ती, नाना–नानी का श्राद्ध, (J) श्रीसरस्वती पूजन, (K) वृश्चिक में 29/44, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, सरस्वती के लिए बलिदान, [illegible]

श्री वि. सं. 2069 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) नवम्बर, सन् 2012 ई.

मास पक्ष	नवम्बर	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
कार्तिक कृष्ण	1	3	गु.	—	—	कृत्ति.	8	23	व.	17	40	वृष			6	41	17	30	6	37	17	32	6	40	17	40	6	10	17	13	1	भ. 19/37 बाद,
	2	3	शु.	8	59	रोहि.	11	32	प.	18	42	मिथुन	25	7	6	42	17	29	6	38	17	31	6	41	17	39	6	10	17	12	2	भ. 8/59 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, करक चतुर्थी (A)
	3	4	श.	11	39	मृग.	14	39	शि.	19	40	मिथुन			6	43	17	29	6	39	17	30	6	42	17	38	6	11	17	12	3	
	4	5	र.	14	6	आर्द्रा	17	32	सि.	20	25	मिथुन			6	44	17	28	6	39	17	30	6	42	17	38	6	11	17	11	4	
	5	6	चं.	16	9	पुन.	20	0	सा.	20	50	कर्क	13	26	6	45	17	27	6	40	17	29	6	43	17	37	6	12	17	11	5	भ. 16/09 से 28/53 तक,
	6	7	मं.	17	37	पुष्य	21	53	शु.	20	47	कर्क			6	45	17	26	6	41	17	28	6	44	17	36	6	13	17	10	6	सूर्य विशा. में 6/58, बुध वक्री 28/34,
	7	8	बु.	18	22	आश्ले.	23	4	शु.	20	10	सिंह	23	4	6	46	17	26	6	42	17	28	6	45	17	36	6	13	17	9	7	अहोई अष्टमी (पं.),
	8	9	गु.	18	19	मघा	23	28	ब्र.	18	57	सिंह			6	47	17	25	6	42	17	27	6	45	17	35	6	14	17	9	8	भ. 29/53 बाद, शनि स्वाती 2 में 17/31,
	9	10	शु.	17	27	पू.फा.	23	5	ऐं.	17	4	कन्या	28	51	6	48	17	24	6	43	17	26	6	46	17	35	6	15	17	8	9	भ. 17/27 तक, मंगल मूल धनु में 9/39,
	10	11	श.	15	49	उ.फा.	21	56	वै.	14	35	कन्या			6	49	17	24	6	44	17	26	6	47	17	34	6	15	17	8	10	रमाएकादशी व्रत, गोवत्स द्वादशी (प्रदोषव्यापिनी),
	11	12	र.	13	28	हस्त	20	8	वि.	11	31	कन्या			6	50	17	23	6	45	17	25	6	47	17	34	6	16	17	7	11	बुध पश्चिम में अस्त 17/23, वक्री गुरु रोहिणी 3 में (B)
	12	13	चं.	10	34	चित्रा	17	48	प्री./	8	0	तुला	7	1	6	50	17	22	6	45	17	25	6	48	17	33	6	17	17	7	12	भ. 10/34 से 20/54 तक, धनत्रयोदशी, श्रीहनुमान (C)
									आ.	28	6																					
	13	14/	मं.	7	14	स्वाती	15	7	सौ.	23	58	तुला			6	51	17	22	6	46	17	24	6	49	17	33	6	18	17	7	13	नरकचतुर्दशी (पूर्व अरुणोदयवाली), दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी(D) अमावस तिथिक्षय,
		30		27	38																											
कार्तिक शुक्ल	14	1	बु.	23	56	विशा.	12	13	शो.	19	44	वृश्चि.	6	57	6	52	17	21	6	47	17	24	6	50	17	32	6	18	17	6	14	कार्तिक शुक्लपक्ष प्रारम्भ, गोवर्धनपूजा, बलिपूजा, (E)
	15	2	गु.	20	19	अनु./	9	18	अ.	15	31	धनु	30	31	6	53	17	21	6	48	17	23	6	50	17	32	6	19	17	6	15	सं. सूर्य वृश्चिक में 29/37, मु. 15, पुण्यकाल अगले (F)
						ज्येष्ठा	30	31																								
	16	3	शु.	16	55	मूल	28	2	सु.	11	28	धनु			6	54	17	20	6	49	17	23	6	51	17	31	6	20	17	5	16	भ. 27/24 बाद, वक्री बुध विशा. में 15/27,
	17	4	श.	13	54	पू.षा.	26	1	धृ./	7	41	धनु			6	55	17	20	6	49	17	22	6	52	17	31	6	20	17	5	17	भ. 13/54 तक, शुक्र तुला में 10/53,
									शू.	28	18																					
	18	5	र.	11	24	उ.षा.	24	34	गं.	25	24	मकर	7	36	6	56	17	19	6	50	17	22	6	53	17	31	6	21	17	5	18	वक्री बुध तुला में 27/14, ज्ञानपंचमी (जैन),
	19	6	चं.	9	31	श्रव.	23	47	वृ.	23	2	मकर			6	56	17	19	6	51	17	22	6	53	17	30	6	22	17	5	19	सूर्य अनु. में 12/55, सूर्यषष्ठी (बिहार),
	20	7	मं.	8	20	धनि.	23	42	ध्रु.	21	14	कुम्भ	11	39	6	57	17	19	6	52	17	21	6	54	17	30	6	23	17	4	20	भ. 8/20 से 20/06 तक, पंचक प्रारम्भ 11/39, (G)
	21	8	बु.	7	53	शत.	24	20	व्या.	20	0	कुम्भ			6	58	17	18	6	53	17	21	6	55	17	30	6	23	17	4	21	सूर्य सायन धनु में 27/20, अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी,
	22	9	गु.	8	10	पू.भा.	25	38	ह.	19	19	मीन	19	15	6	59	17	18	6	54	17	21	6	56	17	30	6	24	17	4	22	शुक्र स्वाती में 20/34,
	23	10	शु.	9	7	उ.भा.	27	31	व.	19	7	मीन			7	0	17	18	6	54	17	20	6	57	17	29	6	25	17	4	23	भ. 21/52 बाद,
	24	11	श.	10	38	रेव.	29	53	सि.	19	19	मेष	29	53	7	1	17	17	6	55	17	20	6	57	17	29	6	25	17	4	24	भ. 10/38 तक, पंचक समाप्त 29/53, बुध पूर्व में (H)
	25	12	र.	12	39	अश्वि.	—	—	व्य.	19	51	मेष			7	2	17	17	6	56	17	20	6	58	17	29	6	26	17	3	25	चातुर्मास्य नियमादिक समाप्त, प्रदोष व्रत,
	26	13	चं.	15	0	अश्वि.	6	37	व.	20	36	मेष			7	2	17	17	6	57	17	20	6	59	17	29	6	27	17	3	26	मंगल पू.षा. में 25/08, बुध मार्गी 28/18, श्रीबैकुण्ठ (I)
	27	14	मं.	17	35	भर.	11	36	प.	21	31	वृष	18	21	7	3	17	17	6	58	17	20	7	0	17	29	6	28	17	3	27	भ. 17/35 से 30/56 तक,
	28	15	बु.	20	16	कृत्ति.	14	41	शि.	22	29	वृष			7	4	17	17	6	58	17	20	7	0	17	29	6	28	17	3	28	कार्त्तिकस्नान समाप्त, भीष्म-पंचक समाप्त, कार्तिक पूर्णिमा, (J)
मार्ग. कृष्ण	29	1	गु.	22	57	रोहि.	17	48	सि.	23	27	वृष			7	5	17	16	6	59	17	20	7	1	17	29	6	29	17	3	29	मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष प्रारम्भ,
	30	2	शु.	25	32	मृग.	20	50	सा.	24	20	मिथुन	7	20	7	6	17	16	7	0	17	20	7	2	17	29	6	30	17	3	30	

(A) (करवा चौथ) (चन्द्रोदय 20/06), (B) 24/52, शुक्र चित्रा में 24/45, शनि उदित 6/50, नेप्च्यून मार्गी 13/27, यमप्रीत्यर्थ दीपदान, प्रदोष व्रत, (C) जयन्ती (उ.शा.) (अर्धरात्रिव्यापिनी), (D) पूजन, श्रीमहावीर निर्वाणदिवस (जैन), भौमवती अमा, (E) अन्नकूट, गोक्रीड़ा, (F) दिन मध्याह्न तक, चन्द्रदर्शन, मु. 15, यमद्वितीया, भाई दूज, श्रीविश्वकर्मा पूजा, (G) गोपाष्टमी (देखें पृष्ठ 106), (H) उदित 7/01, तुलसी विवाह, भीष्मपंचक प्रारम्भ, देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत (स.), बलिदान दिवस श्रीगुरु तेग़बहादुर जी (नानक शाही) (I) चतुर्दशी (देखें पृष्ठ 107), (J) श्रीगुरुनानक जयन्ती, त्रिपुरोत्सव, मेला पुष्करराज(राज.), श्रीसत्यनारायण व्रत,

मास पक्ष	दिसम्बर	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
मार्गशीर्ष कृष्ण	1	3	श.	27	54	आर्द्रा	23	42	शु.	25	4	मिथुन			7	7	17	16	7	1	17	19	7	3	17	29	6	31	17	3	1	भ. 14/43 से 27/54 तक,
	2	4	र.	29	57	पुन.	26	16	शु.	25	34	कर्क	19	39	7	7	17	16	7	1	17	19	7	3	17	29	6	31	17	3	2	सूर्य ज्येष्ठा में 17/17, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	3	5	चं.	—	—	पुष्य	28	25	ब्र.	25	45	कर्क			7	8	17	16	7	2	17	20	7	4	17	29	6	32	17	3	3	शुक्र विशा. में 14/44,
	4	5	मं.	7	34	आश्ले.	30	5	ऐं.	25	33	सिंह	30	5	7	9	17	16	7	3	17	20	7	5	17	29	6	33	17	3	4	
	5	6	बु.	8	38	मघा	31	8	वै.	24	52	सिंह			7	10	17	16	7	4	17	20	7	6	17	29	6	33	17	4	5	भ. 8/38 से 20/51 तक,
	6	7	गु.	9	4	पू.फा.	—	—	वि.	23	40	सिंह			7	10	17	16	7	4	17	20	7	6	17	29	6	34	17	4	6	बुध वृश्चिक में 9/04, श्रीभैरवाष्टमी (कालाष्टमी),
	7	8	शु.	8	48	पू.फा./	7	31	प्री.	21	55	कन्या	13	30	7	11	17	16	7	5	17	20	7	7	17	29	6	35	17	4	7	वक्री गुरु रोहि. 2 में 15/15,
						उ.फा.	31	11																								
	8	9/	श.	7	48	हस्त	30	10	आ.	18	35	कन्या			7	12	17	17	7	6	17	20	7	8	17	29	6	35	17	4	8	भ. 18/58 से 30/07 तक, बुध अनु. में 29/43, (A)
		10		30	7																											दशमी तिथिक्षय,
	9	11	र.	27	46	चित्रा	28	31	सौ.	16	43	तुला	17	25	7	13	17	17	7	7	17	20	7	8	17	30	6	36	17	4	9	उत्पन्ना एकादशी व्रत (स्मा.),
	10	12	चं.	24	52	स्वाती	26	19	शो.	13	22	तुला			7	13	17	17	7	7	17	20	7	9	17	30	6	37	17	5	10	उत्पन्ना एकादशी व्रत (वै.),
	11	13	मं.	21	32	विशा.	23	41	अ./	9	36	वृश्चि.	18	22	7	14	17	17	7	8	17	21	7	10	17	30	6	37	17	5	11	भ. 21/32 बाद, शुक्र वृश्चिक में 15/31, भौमप्रदोष व्रत,
									सु.	29	31																					
	12	14	बु.	17	56	अनु.	20	48	धृ.	25	16	वृश्चि.			7	15	17	17	7	9	17	21	7	10	17	30	6	38	17	5	12	भ. 7/44 तक,
	13	30	गु.	14	11	ज्येष्ठा	17	48	शू.	20	58	धनु	17	48	7	15	17	18	7	9	17	21	7	11	17	31	6	39	17	5	13	यूरेनस मार्गी 17/34,
मार्गशीर्ष शुक्ल	14	1/	शु.	10	30	मूल	14	54	गं.	16	45	धनु			7	16	17	18	7	10	17	22	7	12	17	31	6	39	17	6	14	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30, मंगल (B)
		2		31	3																											द्वितीया तिथिक्षय,
	15	3	श.	27	59	पू.षा.	12	15	वृ.	12	45	मकर	17	39	7	17	17	18	7	11	17	22	7	12	17	31	6	40	17	6	15	सं. सूर्य मूल धनु में 20/14, मु. 45, पुण्यकाल मध्याह्न बाद,
	16	4	र	25	29	उ.षा.	10	2	ध्रु./	9	8	मकर			7	17	17	19	7	11	17	22	7	13	17	32	6	41	17	7	16	भ. 14/44 से 25/29 तक, नेप्च्यून शत. 1 में 15/15,
									व्या.	30	0																					
	17	5	चं.	23	41	श्रव.	8	26	ह.	27	26	कुम्भ	19	54	7	18	17	19	7	12	17	23	7	13	17	32	6	41	17	7	17	पंचक प्रारम्भ 19/54, बलिदान दिवस श्रीगुरु तेग़बहादुर (C)
	18	6	मं.	22	42	धनि.	7	33	व.	25	31	कुम्भ			7	19	17	20	7	12	17	23	7	14	17	33	6	42	17	7	18	मंगल मकर में 15/17, बुध ज्ये. में 23/26, स्कन्द–(D)
	19	7	बु.	22	34	शत.	7	29	सि.	24	17	मीन	25	59	7	19	17	20	7	13	17	24	7	15	17	33	6	42	17	8	19	भ. 22/34 बाद, मित्र सप्तमी,
	20	8	गु.	23	16	पू.भा.	8	15	व्य.	23	41	मीन			7	20	17	20	7	13	17	24	7	15	17	34	6	43	17	8	20	भ. 10/55 तक,
	21	9	शु.	24	44	उ.भा.	9	48	व.	23	39	मीन			7	20	17	21	7	14	17	25	7	16	17	34	6	43	17	9	21	सूर्य सायन मकर में 16/42, उत्तरायण प्रारम्भ, शिशिर (E)
	22	10	श.	26	49	रेव.	12	1	प.	24	5	मेष	12	1	7	21	17	21	7	14	17	25	7	16	17	35	6	44	17	9	22	पंचक समाप्त 12/01
	23	11	र	29	19	अश्वि.	14	45	शि.	24	51	मेष			7	21	17	22	7	15	17	26	7	17	17	35	6	44	17	10	23	भ. 16/04 से 29/19 तक, राहु विशा. 3 तुला, केतु (F)
	24	12	चं.	—	—	भर.	17	48	सि.	25	48	वृष	24	35	7	22	17	23	7	15	17	26	7	17	17	36	6	45	17	10	24	शुक्र ज्येष्ठा में 23/50, मोक्षदा एकादशी व्रत (वै.),
	25	12	मं.	8	3	कृत्ति.	20	58	सा.	26	49	वृष			7	22	17	23	7	16	17	27	7	17	17	36	6	45	17	11	25	भौमप्रदोष व्रत,
	26	13	बु.	10	48	रोहि.	24	5	शु.	27	46	वृष			7	22	17	24	7	16	17	27	7	18	17	37	6	46	17	12	26	बुध पूर्व में अस्त 7/22, जोड़मेला श्रीफतेहगढ़ साहिब (पं.),
	27	14	गु.	13	27	मृग.	27	2	शु.	28	34	मिथुन	13	35	7	23	17	24	7	17	17	28	7	18	17	37	6	46	17	12	27	भ. 13/27 से 26/39 तक, बुध मूल धनु में 22/06, (G)
	28	15	शु.	15	51	आर्द्रा	29	43	ब्र.	29	10	मिथुन			7	23	17	25	7	17	17	29	7	19	17	38	6	46	17	13	28	सूर्य पू.षा. में 22/29,
पौष कृष्ण	29	1	श.	17	57	पुन.	—	—	ऐं.	29	31	कर्क	25	32	7	23	17	26	7	17	17	29	7	19	17	39	6	47	17	13	29	पौष कृष्णपक्ष प्रारम्भ,
	30	2	र.	19	42	पुन.	8	6	वै.	29	35	कर्क			7	24	17	26	7	18	17	30	7	19	17	39	6	47	17	14	30	
	31	3	चं.	21	3	पुष्य	10	7	वि.	29	22	कर्क			7	24	17	27	7	18	17	30	7	20	17	40	6	47	17	15	31	भ. 8/22 से 21/03 तक, मंगल श्रवण में 10/01,

(A) शनि स्वाती 3 में 9/23. (B) उ.षा. में 8/29, शुक्र अनु. में 7/39. (C) जी (पुरातन परम्परा). (D) गुह षष्ठी, चम्पा षष्ठी. (E) ऋतु प्रारम्भ. (F) कृत्ति 1 मेष में 18/07. श्रीगीता जयन्ती, मोक्षदा एकादशी व्रत (स्मा.) (देखें पृष्ठ 107). (G) श्रीदत्त जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत.

श्री वि. सं. 2069 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — जनवरी, सन् 2013 ई.

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
पौष कृष्ण	1	4	मं.	22	0	आश्ले.	11	45	प्री.	28	48	सिंह	11	45	7	24	17	28	7	18	17	31	7	20	17	41	6	48	17	15	1	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, इंग्लिश नववर्ष 2013 ई. प्रारम्भ,
	2	5	बु.	22	29	मघा	12	58	आ.	27	54	सिंह			7	25	17	28	7	18	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	2	
	3	6	गु.	22	28	पू.फा.	13	43	सौ.	26	36	कन्या	19	50	7	25	17	29	7	19	17	33	7	20	17	42	6	48	17	17	3	भ. 22/28 बाद,
	4	7	शु.	21	56	उ.फा.	13	58	शो.	24	53	कन्या			7	25	17	30	7	19	17	33	7	21	17	43	6	48	17	17	4	भ. 10/12 तक, शुक्र मूल धनु में 15/33,
	5	8	श.	20	51	हस्त	13	41	अ.	22	45	तुला	25	21	7	25	17	31	7	19	17	34	7	21	17	43	6	49	17	18	5	बुध पू.षा. में 13/26, वक्री गुरु रोहिणी 1 में 17/22,
	6	9	र.	19	12	चित्रा	12	52	सु.	20	9	तुला			7	25	17	31	7	19	17	35	7	21	17	44	6	49	17	19	6	भ. 30/07 बाद,
	7	10	चं.	17	1	स्वाती	11	30	धृ.	17	9	वृश्चि.	28	10	7	25	17	32	7	19	17	36	7	21	17	45	6	49	17	19	7	भ. 17/01 तक,
	8	11	मं.	14	22	विशा./	9	39	शू.	13	45	वृश्चि.			7	25	17	33	7	19	17	36	7	21	17	46	6	49	17	20	8	सफला एकादशी व्रत (स.),
						अनु.	31	24																								
	9	12	बु.	11	19	ज्येष्ठा	28	52	गं./	10	3	धनु	28	52	7	25	17	34	7	19	17	37	7	21	17	46	6	49	17	21	9	प्रदोष व्रत,
									वृ.	30	7																					
	10	13/	गु.	8	1	मूल	26	11	ध्रु.	26	5	धनु			7	25	17	35	7	19	17	38	7	21	17	47	6	49	17	22	10	भ. 8/01 से 18/19 तक, सूर्य उ.षा. में 24/29,
		14		28	36																											चतुर्दशी तिथिक्षय,
	11	30	शु.	25	13	पू.षा.	23	32	व्या.	22	4	मकर	28	54	7	25	17	36	7	19	17	39	7	21	17	48	6	49	17	22	11	
पौष शुक्ल	12	1	श.	22	4	उ.षा.	21	5	ह.	18	12	मकर			7	25	17	36	7	19	17	40	7	21	17	49	6	49	17	23	12	पौष शुक्लपक्ष प्रारम्भ, लोहड़ी (पं.),
	13	2	र.	19	19	श्रव.	19	2	व.	14	39	कुम्भ	30	12	7	25	17	37	7	19	17	40	7	21	17	50	6	49	17	24	13	पंचक प्रारम्भ 30/12, सं. सूर्य मकर में 30/59, (A),
	14	3	चं.	17	8	धनि.	17	32	सि.	11	31	कुम्भ			7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	25	14	भ. 28/24 बाद, शुक्र पू. षा. में 30/56, पोंगल (द.भा.),(B)
	15	4	मं.	15	40	शत.	16	45	व्य./	8	56	कुम्भ			7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	25	15	भ. 15/40 तक, बुध मकर में 22/47,
									व.	31	0																					
	16	5	बु.	15	2	पू.भा.	16	47	प.	29	44	मीन	10	42	7	25	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	26	16	
	17	6	गु.	15	17	उ.भा.	17	40	शि.	29	9	मीन			7	24	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	17	मंगल धनि. में 8/06,
	18	7	शु.	16	24	रेव.	19	24	सि.	29	11	मेष	19	24	7	24	17	42	7	19	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	18	भ. 16/24 से 29/20 तक, पंचक समाप्त 19/24, (C)
	19	8	श.	18	15	अश्वि.	21	47	सा.	29	42	मेष			7	24	17	43	7	18	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	सूर्य सायन कुम्भ में 27/22,
	20	9	र.	20	40	भर.	24	40	शु.	30	32	मेष			7	24	17	43	7	18	17	46	7	20	17	55	6	49	17	29	20	
	21	10	चं.	23	22	कृत्ति.	27	49	शु.	—	—	वृष	7	28	7	23	17	44	7	18	17	47	7	20	17	56	6	49	17	30	21	बुध श्रवण में 22/27,
	22	11	मं.	26	8	रोहि.	30	58	शु.	7	33	वृष			7	23	17	45	7	18	17	48	7	20	17	57	6	48	17	31	22	भ. 12/45 से 26/08 तक, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.),
	23	12	बु.	28	43	मृग.	—	—	ब्र.	8	32	मिथुन	20	30	7	23	17	46	7	17	17	49	7	20	17	58	6	48	17	32	23	सूर्य श्रवण में 26/46,
	24	13	गु.	30	58	मृग.	9	55	ऐं.	9	22	मिथुन			7	22	17	47	7	17	17	50	7	19	17	58	6	48	17	32	24	प्रदोष व्रत,
	25	14	शु.	—	—	आर्द्रा	12	32	वै.	9	55	मिथुन			7	22	17	48	7	17	17	50	7	19	17	59	6	48	17	33	25	मंगल कुम्भ में 18/32, शुक्र उ. षा. में 22/19,
	26	14	श.	8	47	पुन.	14	44	वि.	10	9	कर्क	8	14	7	21	17	49	7	16	17	51	7	19	18	0	6	47	17	34	26	भ. 8/47 से 21/28 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, (D)
	27	15	र.	10	8	पुष्य	16	29	प्री.	10	2	कर्क			7	21	17	50	7	16	17	52	7	18	18	1	6	47	17	35	27	पौषी पूर्णिमा, माघस्नान प्रारम्भ,
माघ कृष्ण	28	1	चं.	11	1	आश्ले.	17	47	आ.	9	34	सिंह	17	47	7	20	17	51	7	15	17	53	7	18	18	1	6	47	17	35	28	माघ कृष्णपक्ष प्रारम्भ, शुक्र मकर में 14/10,
	29	2	मं.	11	28	मघा	18	41	सौ.	8	46	सिंह			7	20	17	52	7	15	17	54	7	18	18	2	6	46	17	36	29	भ. 23/30 बाद, मंगल अस्त 17/52, बुध धनि. में 15/30,
	30	3	बु.	11	31	पू.फा.	19	12	शो./	7	39	कन्या	25	17	7	19	17	52	7	14	17	55	7	17	18	3	6	46	17	37	30	भ. 11/31 तक, गुरु मार्गी 17/08, श्रीगणेश (संकष्ट) (E)
									अ.	30	16																					
	31	4	गु.	11	12	उ.फा.	19	23	सु.	28	36	कन्या			7	19	17	53	7	14	17	55	7	17	18	4	6	45	17	38	31	

(A) मु. 30, पुण्यकाल आगामी सारा दिन, बुध उ.षा. में 21/53, चन्द्रदर्शन, मु. 30, मकरसंक्रान्ति, (B) पहला शाही स्नान कुम्भमहापर्व--प्रयाग, (C) शनि स्वाती 4 में 27/09, अवतार दिन श्रीगुरु गोविन्दसिंह जी, (D) भारत गणतन्त्रता दिवस, (E) चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 21/06),

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
माघ कृष्ण	1	5	शु.	10	33	हस्त	19	15	धृ.	26	41	तुला	31	2	7	18	17	54	7	13	17	56	7	16	18	5	6	45	17	38	1	
	2	6	श.	9	34	चित्रा	18	46	शू.	24	29	तुला			7	17	17	55	7	13	17	57	7	16	18	5	6	44	17	39	2	भ. 9/34 से 20/54 तक, मंगल शत. में 28/58, बुध (A)
	3	7/	र.	8	14	स्वाती	17	57	गं.	22	2	तुला			7	17	17	56	7	12	17	58	7	15	18	6	6	44	17	40	3	
		8		30	33																											अष्टमी तिथिक्षय,
	4	9	चं.	28	32	विशा.	16	48	वृ.	19	17	वृश्चि.	11	6	7	16	17	57	7	11	17	59	7	14	18	7	6	43	17	40	4	
	5	10	मं.	26	12	अनु.	15	19	ध्रु.	16	17	वृश्चि.			7	15	17	58	7	11	18	0	7	14	18	8	6	43	17	41	5	भ. 15/22 से 26/12 तक, सूर्य धनि. में 29/59, बुध (B)
	6	11	बु.	23	37	ज्येष्ठा	13	33	व्या.	13	4	धनु	13	33	7	15	17	59	7	10	18	0	7	13	18	8	6	42	17	42	6	बुध पश्चिम में उदित 17/59, षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
	7	12	गु.	20	51	मूल	11	35	ह./	9	39	धनु			7	14	17	59	7	10	18	1	7	13	18	9	6	42	17	43	7	शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ 7/14,
									व.	30	9																					
	8	13	शु.	18	3	पू.षा.	8	30	सि.	26	40	मकर	14	57	7	13	18	0	7	9	18	2	7	12	18	10	6	41	17	43	8	भ. 18/03 से 28/42 तक, श्रीमेरु त्रयोदशी (जैन), (C)
	9	14	श.	15	19	उ.षा./	7	26	व्य.	23	17	मकर			7	12	18	1	7	8	18	3	7	11	18	11	6	40	17	44	9	महोदय योग (15/19 से सूर्यास्त तक) (देखें पृष्ठ 107),
						श्रव.	29	34																								
	10	30	र.	12	50	धनि.	28	2	व.	20	9	कुम्भ	16	44	7	12	18	2	7	7	18	3	7	11	18	11	6	40	17	45	10	पंचक प्रारम्भ 16/44, शुक्र पूर्व में अस्त 7/12, मौनी (D)
माघ शुक्ल	11	1	चं.	10	45	शत.	27	0	प.	17	23	कुम्भ			7	11	18	3	7	7	18	4	7	10	18	12	6	39	17	45	11	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 15,
	12	2	मं.	9	13	पू.भा.	26	37	शि.	15	5	मीन	20	39	7	10	18	4	7	6	18	5	7	9	18	13	6	39	17	46	12	सं. सूर्य कुम्भ में 20/00, मु. 30, पुण्यकाल मध्याह्न बाद, (E)
	13	3	बु.	8	23	उ.भा.	26	59	सि.	13	22	मीन			7	9	18	5	7	5	18	6	7	9	18	13	6	38	17	47	13	भ. 20/21 बाद, गौरी तृतीया (गोंतरी) (परयुता), तिल–(F)
	14	4	गु.	8	19	रेव.	28	9	सा.	12	16	मेष	28	9	7	8	18	5	7	4	18	7	7	8	18	14	6	37	17	47	14	भ. 8/19 तक, पंचक समाप्त 28/09, बुध पू.भा. में (G)
	15	5	शु.	9	5	अश्वि.	30	3	शु.	11	48	मेष			7	7	18	6	7	3	18	7	7	7	18	15	6	36	17	48	15	शुक्र धनि. में 29/18,
	16	6	श.	10	37	भर.	—	—	शु.	11	54	मेष			7	6	18	7	7	3	18	8	7	6	18	16	6	36	17	48	16	
	17	7	र.	12	46	भर.	8	35	ब्र.	12	28	वृष	15	18	7	5	18	8	7	2	18	9	7	5	18	16	6	35	17	49	17	भ. 12/46 से 27/03 तक, (H)
	18	8	चं.	15	19	कृत्ति.	11	32	ऐं.	13	20	वृष			7	4	18	9	7	1	18	9	7	5	18	17	6	34	17	50	18	शनि वक्री 22/33, सूर्य सायन मीन में 17/32, वसंत (I)
	19	9	मं.	18	1	रोहि.	14	39	वै.	14	19	मिथुन	28	13	7	3	18	9	7	0	18	10	7	4	18	18	6	33	17	50	19	सूर्य शत. में 10/27, मंगल पू. भा. में 26/36,
	20	10	बु.	20	34	मृग.	17	41	वि.	15	14	मिथुन			7	2	18	10	6	59	18	11	7	3	18	18	6	33	17	51	20	
	21	11	गु.	22	46	आर्द्रा	20	23	प्री.	15	55	मिथुन			7	1	18	11	6	58	18	12	7	2	18	19	6	32	17	52	21	भ. 9/40 से 22/46 तक, शुक्र कुम्भ में 13/12, (J)
	22	12	शु.	24	26	पुन.	22	36	आ.	16	14	कर्क	16	7	7	0	18	12	6	57	18	12	7	1	18	20	6	31	17	52	22	भीष्म द्वादशी,
	23	13	श.	25	31	पुष्य	24	16	सौ.	16	7	कर्क			6	59	18	12	6	56	18	13	7	0	18	20	6	30	17	53	23	बुध वक्री 15/11, शनिप्रदोष व्रत,
	24	14	र.	26	0	आश्ले.	25	21	शो.	15	32	सिंह	25	21	6	58	18	13	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	53	24	भ. 26/00 बाद, गुरु रोहि. 2 में 21/25, राहु विशा. 2, (K)
	25	15	चं.	25	56	मघा	25	53	अ.	14	31	सिंह			6	57	18	14	6	54	18	14	6	58	18	21	6	28	17	54	25	भ. 13/58 तक, बुध पश्चिम में अस्त 18/14, (L)
फाल्गुन कृष्ण	26	1	मं.	25	23	पू.फा.	25	58	सु.	13	6	सिंह			6	56	18	15	6	53	18	15	6	57	18	22	6	27	17	54	26	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, शुक्र शत. में 21/13,
	27	2	बु.	24	27	उ.फा.	25	41	धृ.	11	21	कन्या	7	56	6	55	18	15	6	52	18	16	6	56	18	23	6	27	17	55	27	
	28	3	गु.	23	12	हस्त	25	6	शू.	9	19	कन्या			6	54	18	16	6	51	18	16	6	55	18	23	6	26	17	55	28	भ. 11/49 से 23/12 तक,

कुम्भ महापर्व–प्रयागराज 10 फरवरी

शुक्र अस्त– 10 फरवरी

(A) कुम्भ में 10/28, (B) शत. में 30/21, शुक्र श्रवण में 13/45, (C) प्रदोष व्रत, (D) अमा, कुम्भ महापर्व प्रयागराज (प्रमुख शाही स्नान) (देखें पृष्ठ 14), (E) प्लूटो पू.षा. 2 में 18/41, (F) वरद–कुन्द चतुर्थी, (G) 23/00, श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी (देखें पृष्ठ 108), लक्ष्मी–सरस्वती पूजन, तीसरा (अन्तिम) शाही स्नान कुम्भ महापर्व–प्रयाग, (H) रथ/आरोग्य सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली), मर्यादा महोत्सव (जैन), (I) ऋतु प्रारम्भ, भीष्माष्टमी, (J) जया एकादशी व्रत (स.), (K) केतु भरणी 4 में 15/45, (L) माघी पूर्णिमा, माघस्नान समाप्त, प्रकाशोत्सव श्रीगुरु रविदास जी, श्रीसत्यनारायण व्रत

श्री वि. सं. 2069 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — मार्च, सन् 2013 ई.

मास पक्ष	गते	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
फाल्गुन कृष्ण	1	4	शु.	21	44	चित्रा	24	17	गं./	7	3	तुला	12	42	6	53	18	17	6	50	18	17	6	55	18	24	6	25	17	56	1	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
									वृ.	28	38																					
	2	5	श.	20	5	स्वाती	23	18	ध्रु.	26	5	तुला			6	52	18	18	6	49	18	18	6	54	18	24	6	24	17	57	2	
	3	6	र.	18	17	विशा.	22	11	व्या.	23	26	वृश्चि.	16	28	6	51	18	18	6	48	18	18	6	53	18	25	6	23	17	57	3	भ. 18/17 से 29/20 तक,
	4	7	चं.	16	22	अनु.	20	57	ह.	20	41	वृश्चि.			6	50	18	19	6	47	18	19	6	52	18	26	6	22	17	58	4	सूर्य पू. भा. में 16/51, मंगल मीन में 29/39, वक्री (A)
	5	8	मं.	14	21	ज्येष्ठा	19	37	व.	17	51	धनु	19	37	6	48	18	20	6	46	18	20	6	51	18	26	6	21	17	58	5	
	6	9	बु.	12	15	मूल	18	13	सि.	14	58	धनु			6	47	18	20	6	45	18	20	6	49	18	27	6	20	17	59	6	भ. 23/11 बाद,
	7	10	गु.	10	7	पू.षा.	16	47	व्य.	12	3	मकर	22	25	6	46	18	21	6	44	18	21	6	48	18	27	6	19	17	59	7	भ. 10/07 तक, विजया एकादशी व्रत (स्मा.),
	8	11/	शु.	7	59	उ.षा.	15	23	व./	9	8	मकर			6	45	18	22	6	43	18	21	6	47	18	28	6	18	18	0	8	मंगल उ.भा. में 27/07, विजया एकादशी व्रत (वै.), (B)
		12		29	56				प.	30	18																					द्वादशी तिथिक्षय,
	9	13	श.	28	4	श्रव.	14	6	शि.	27	37	कुम्भ	25	32	6	44	18	23	6	41	18	22	6	46	18	28	6	17	18	0	9	भ. 28/04 बाद, पंचक प्रारम्भ 25/32, शुक्र पू. भा. में (C)
	10	14	र.	26	30	घनि.	13	2	सि.	25	11	कुम्भ			6	42	18	23	6	40	18	23	6	45	18	29	6	16	18	1	10	भ. 15/17 तक, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत,
	11	30	चं.	25	21	शत.	12	19	सा.	23	4	मीन	30	4	6	41	18	24	6	39	18	23	6	44	18	29	6	15	18	1	11	सोमवती अमा,
फाल्गुन शुक्ल	12	1	मं.	24	43	पू.भा.	12	3	शु.	21	21	मीन			6	40	18	25	6	38	18	24	6	43	18	30	6	14	18	2	12	फाल्गुन शुक्लपक्ष प्रारम्भ, बुध पूर्व में उदित 6/40,
	13	2	बु.	24	43	उ.भा.	12	21	शु.	20	8	मीन			6	39	18	25	6	37	18	24	6	42	18	30	6	13	18	2	13	चन्द्रदर्शन, मु. 30, जन्मदिन श्रीरामकृष्ण परमहंस,
	14	3	गु.	25	24	रेव.	13	18	ब्र.	19	25	मेष	13	18	6	38	18	26	6	36	18	25	6	41	18	31	6	12	18	3	14	पंचक समाप्त 13/18, सं. सूर्य मीन में 16/56, मु. 30, (D)
	15	4	शु.	26	44	अश्वि.	14	53	ऐं.	19	15	मेष			6	36	18	27	6	35	18	26	6	40	18	32	6	11	18	3	15	भ. 14/04 से 26/44 तक,
	16	5	श.	28	41	भर.	17	5	वै.	19	32	वृष	23	44	6	35	18	27	6	34	18	26	6	39	18	32	6	10	18	3	16	
	17	6	र.	—	—	कृत्ति.	19	47	वि.	20	13	वृष			6	34	18	28	6	32	18	27	6	38	18	33	6	9	18	4	17	सूर्य उ.भा. में 25/15, बुध मार्गी 25/32, शुक्र मीन में (E)
	18	6	चं.	7	3	रोहि.	22	48	प्री.	21	7	वृष			6	33	18	29	6	31	18	27	6	37	18	33	6	8	18	4	18	
	19	7	मं.	9	39	मृग.	25	51	आ.	22	8	मिथुन	12	21	6	32	18	29	6	30	18	28	6	36	18	34	6	7	18	5	19	भ. 9/39 से 22/55 तक, शुक्र उ.भा. में 30/12, (F)
	20	8	बु.	12	11	आर्द्रा	28	44	सौ.	22	56	मिथुन			6	30	18	30	6	29	18	29	6	35	18	34	6	6	18	5	20	सूर्य सायन मेष में 16/32, उत्तरगोल प्रारम्भ, महाविषुवदिन,
	21	9	गु.	14	26	पुन.	—	—	शो.	23	30	कर्क	24	38	6	29	18	30	6	28	18	29	6	33	18	35	6	5	18	6	21	
	22	10	शु.	16	10	पुन.	7	11	अ.	23	38	कर्क			6	28	18	31	6	27	18	30	6	32	18	35	6	4	18	6	22	भ. 28/43 बाद, वक्री शनि स्वाती 3 में 6/40,
	23	11	श.	17	16	पुष्य	9	4	सु.	23	15	कर्क			6	27	18	32	6	25	18	30	6	31	18	36	6	3	18	7	23	भ. 17/16 तक, आमला एकादशी व्रत (स.),
	24	12	र.	17	39	आश्ले.	10	17	धृ.	22	20	सिंह	10	17	6	25	18	32	6	24	18	31	6	30	18	36	6	2	18	7	24	गुरु रोहिणी 3 में 25/10, गोविन्दद्वादशी, प्रदोष व्रत,
	25	13	चं.	17	21	मघा	10	48	शू.	20	52	सिंह			6	24	18	33	6	23	18	31	6	29	18	37	6	0	18	8	25	
	26	14	मं.	16	25	पू.फा.	10	42	गं.	18	56	कन्या	16	35	6	23	18	34	6	22	18	32	6	28	18	37	5	59	18	8	26	भ. 16/25 से 27/41 तक, मंगल रेवती में 8/13, (G)
	27	15	बु.	14	57	उ.फा.	10	4	वृ.	16	35	कन्या			6	22	18	34	6	21	18	32	6	27	18	38	5	58	18	8	27	होलाष्टक समाप्त, जन्मदिन श्री चैतन्य महाप्रभु,
चैत्र कृष्ण	28	1	गु.	13	5	हस्त	8	59	ध्रु.	13	54	तुला	20	19	6	20	18	35	6	20	18	33	6	26	18	38	5	57	18	9	28	चैत्र कृष्णपक्ष प्रारम्भ, वसन्तोत्सव, होला–मेला (H)
	29	2	शु.	10	55	चित्रा/	7	35	व्या.	11	0	तुला			6	19	18	36	6	19	18	34	6	25	18	39	5	56	18	9	29	भ. 21/45 बाद,
						स्वाती	30	0																								
	30	3/	श.	8	34	विशा.	28	20	ह./	7	57	वृश्चिक	22	45	6	18	18	36	6	17	18	34	6	24	18	39	5	55	18	10	30	भ. 8/34 तक, शुक्र रेवती में 23/34, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
		4		30	9				व.	28	50																					चतुर्थी तिथिक्षय,
	31	5	र.	27	43	अनु.	28	39	सि.	25	43	वृश्चिक			6	17	18	37	6	16	18	35	6	22	18	40	5	54	18	10	31	सूर्य रेवती में 12/11.

होलाष्टक 19 से 27 मार्च

(A) बुध शत. में 19/58, (B) त्रिस्पृशा महाद्वादशी, (C) 13/29, यूरेनस उ.भा. 4 में 14/07, शनिप्रदोष व्रत, (D) पुण्यकाल 10/31 बाद, (E) 13/58, (F) होलाष्टक प्रारम्भ, (G) नेप्च्यून शत. 2 में 24/35, होलिकादहन (देखें पृष्ठ 108), श्रीसत्यनारायण व्रत, (H) श्री आनन्दपुर साहिब (पं.).

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
चैत्र कृष्ण	1	6	चं.	25	23	ज्येष्ठा	25	3	व्य.	22	40	धनु	25	3	6	16	18	37	6	15	18	35	6	21	18	40	5	53	18	11	1	भ. 25/23 बाद, बुध पू. भा. में 15/02,
	2	7	मं.	23	9	मूल	23	34	व.	19	42	धनु			6	14	18	38	6	14	18	36	6	20	18	41	5	52	18	11	2	भ. 12/11 तक,
	3	8	बु.	21	6	पू.षा.	22	15	प.	16	52	मकर	27	57	6	13	18	39	6	13	18	36	6	19	18	41	5	51	18	11	3	श्री शीतलाष्टमी,
	4	9	गु.	19	16	उ.षा.	21	10	शि.	14	13	मकर			6	12	18	39	6	12	18	37	6	18	18	42	5	50	18	12	4	मेला श्री शीतलामाता, (कुराली– पं.),
	5	10	शु.	17	40	श्रव.	20	19	सि.	11	45	मकर			6	11	18	40	6	10	18	37	6	17	18	42	5	49	18	12	5	भ. 6/28 से 17/40 तक,
	6	11	श.	16	22	धनि.	19	46	सा.	9	31	कुम्भ	7	59	6	9	18	41	6	9	18	38	6	16	18	43	5	48	18	13	6	पंचक प्रारम्भ 7/59, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स.),
	7	12	र.	15	25	शत.	19	33	शु./	7	32	कुम्भ			6	8	18	41	6	8	18	39	6	15	18	43	5	47	18	13	7	वारुणी पर्व (15/25 से सूर्यास्त तक), प्रदोष व्रत,
									शु.	29	51																					
	8	13	चं.	14	50	पू.भा.	19	44	ब्र.	28	31	मीन	13	39	6	7	18	42	6	7	18	39	6	14	18	44	5	46	18	14	8	भ. 14/50 से 26/46 तक,
	9	14	मं.	14	43	उ.भा.	20	21	ऐं.	27	32	मीन			6	6	18	42	6	6	18	40	6	13	18	44	5	45	18	14	9	बुध मीन में 25/53, मेला पिहोवातीर्थ (हरि.),
	10	30	बु.	15	5	रेव.	21	29	वै.	26	58	मेष	21	29	6	5	18	43	6	5	18	40	6	12	18	45	5	44	18	15	10	पंचक समाप्त 21/29, शुक्र अश्वि. मेष में 17/31, (A)

(A) चान्द्र संवत्सर 2069 वि. पूर्ण,

(पृष्ठ 173 का शेष)

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्तकाल (भा.स्टैं.टा.), सन् 2013 ई.

अप्रैल	उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	अप्रैल	उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	अप्रैल	उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.
1	–	–	9	48	11	6	19	19	49	21	14	29	2	36
2	0	5	10	48	12	6	58	20	44	22	15	28	3	11
3	1	0	11	51	13	7	40	21	38	23	16	28	3	48
4	1	51	12	54	14	8	24	22	29	24	17	31	4	26
5	2	36	13	57	15	9	10	23	17	25	18	37	5	7
6	3	17	14	59	16	9	59	–	–	26	19	44	5	52
7	3	55	15	59	17	10	51	0	2	27	20	50	6	42
8	4	31	16	58	18	11	43	0	44	28	21	54	7	38
9	5	7	17	56	19	12	37	1	23	29	22	54	8	39
10	5	42	18	53	20	13	33	2	0	30	23	47	9	42

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2012 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जनवरी 2012 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	उ.भा.	10	4	16	41	23	19	6	0
1/ 2	रेव.	12	41	19	24	2	8	8	53
2/ 3	अश्वि.	15	39	22	24	5	10	11	56
3/ 4	भर.	18	42	1	27	8	12	14	55
4/ 5	कृत्ति.	21	38	4	19	10	59	17	37
6	रोहि.	0	13	6	48	13	21	19	52
7	मृग.	2	20	8	47	15	12	21	34
8	आर्द्रा	3	54	10	12	16	28	22	41
9	पुन.	4	53	11	2	17	9	23	15
10	पुष्य	5	18	11	20	17	20	23	18
11	आश्ले.	5	15	11	10	17	4	22	57
12	मघा	4	48	10	38	16	27	22	15
13	पू.फा.	4	1	9	47	15	33	21	17
14	उ.फा.	3	1	8	44	14	27	20	9
15	हस्त	1	51	7	32	13	13	18	54
16	चित्रा	0	35	6	15	11	55	17	34
16/17	स्वाती	23	14	4	54	10	33	16	12
17/18	विशा.	21	52	3	31	9	11	14	50
18/19	अनु.	20	30	2	9	7	49	13	29
19/20	ज्येष्ठा	19	10	0	51	6	32	12	14
20/21	मूल	17	56	23	39	5	22	11	6
21/22	पू.षा.	16	51	22	37	4	24	10	12
22/23	उ.षा.	16	1	21	52	3	43	9	37
23/24	श्रव.	15	32	21	28	3	27	9	27
24/25	धनि.	15	29	21	33	3	39	9	48
25/26	शत.	15	59	22	12	4	27	10	44
26/27	पू.भा.	17	5	23	27	5	52	12	19
27/28	उ.भा.	18	48	1	20	7	53	14	29
28/29	रेव.	21	7	3	46	10	27	17	9
29/30	अश्वि.	23	53	6	38	13	23	20	9
31	भर.	2	55	9	42	16	28	23	14

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
फरवरी 2012 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1/ 2	कृत्ति.	5	59	12	43	19	26	2	8
2/ 3	रोहि.	8	48	15	27	22	3	4	38
3/ 4	मृग.	11	10	17	39	0	6	6	31
4/ 5	आर्द्रा	12	53	19	12	1	29	7	42
5/ 6	पुन.	13	53	20	1	2	7	8	10
6/ 7	पुष्य	14	10	20	8	2	3	7	56
7/ 8	आश्ले.	13	47	19	36	1	23	7	8
8/ 9	मघा	12	51	18	33	0	13	5	52
9/10	पू.फा.	11	30	17	7	22	43	4	18
10/11	उ.फा.	9	52	15	26	21	0	2	34
11/12	हस्त	8	7	13	40	19	14	0	47
12	चित्रा	6	21	11	55	17	30	23	6
13	स्वाती	4	41	10	18	15	55	21	33
14	विशा.	3	12	8	51	14	32	20	13
15	अनु.	1	55	7	38	13	22	19	7
16	ज्येष्ठा	0	52	6	39	12	27	18	15
17	मूल	0	5	5	55	11	47	17	39
17/18	पू.षा.	23	32	5	26	11	22	17	18
18/19	उ.षा.	23	15	5	14	11	13	17	14
19/20	श्रव.	23	15	5	19	11	23	17	29
20/21	धनि.	23	36	5	44	11	54	18	6
22	शत.	0	19	6	34	12	51	19	9
23	पू.भा.	1	30	7	52	14	16	20	42
24	उ.भा.	3	9	9	39	16	11	22	44
25/26	रेव.	5	19	11	56	18	35	1	15
26/27	अश्वि.	7	57	14	40	21	24	4	9
27/28	भर.	10	55	17	41	0	28	7	16
28/29	कृत्ति.	14	3	20	49	3	36	10	22

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मार्च 2012 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
29/ 1	रोहि.	17	6	23	49	6	31	13	11
1/ 2	मृग.	19	49	2	26	8	59	15	31
2/ 3	आर्द्रा	21	59	4	25	10	48	17	8
3/ 4	पुन.	23	25	5	39	11	49	17	57
5	पुष्य	0	1	6	3	12	1	17	56
5/ 6	आश्ले.	23	48	5	38	11	25	17	9
6/ 7	मघा	22	50	4	30	10	7	15	42
7/ 8	पू.फा.	21	15	2	47	8	16	13	45
8/ 9	उ.फा.	19	12	0	38	6	3	11	28
9/10	हस्त	16	52	22	16	3	39	9	2
10/11	चित्रा	14	25	19	49	1	13	6	37
11/12	स्वाती	12	2	17	28	22	54	4	22
12/13	विशा.	9	50	15	20	20	52	2	24
13/14	अनु.	7	58	13	34	19	11	0	49
14	ज्येष्ठा	6	30	12	12	17	55	23	41
15	मूल	5	28	11	17	17	7	22	59
16	पू.षा.	4	53	10	49	16	47	22	46
17	उ.षा.	4	46	10	49	16	52	22	58
18	श्रव.	5	5	11	13	17	23	23	35
19/20	धनि.	5	48	12	2	18	18	0	35
20/21	शत.	6	54	13	15	19	36	1	59
21/22	पू.भा.	8	24	14	50	21	18	3	47
22/23	उ.भा.	10	17	16	49	23	23	5	57
23/24	रेव.	12	34	19	11	1	50	8	30
24/25	अश्वि.	15	12	21	54	4	38	11	22
25/26	भर.	18	8	0	54	7	41	14	28
26/27	कृत्ति.	21	16	4	3	10	51	17	38
28	रोहि.	0	25	7	12	13	57	20	41
29	मृग.	3	24	10	6	16	46	23	24
30/31	आर्द्रा	6	0	12	33	19	4	1	33

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2012 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अप्रैल 2012 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	पुन.	7	59	14	22	20	41	2	58
1/2	पुष्य	9	12	15	23	21	30	3	34
2/3	आश्ले.	9	35	15	32	21	27	3	18
3/4	मघा	9	6	14	52	20	34	2	14
4/5	पू.फा.	7	51	13	26	18	58	0	28
5	उ.फा.	5	56	11	22	16	47	22	10
6	हस्त	3	31	8	51	14	10	19	29
7	चित्रा	0	47	6	4	11	20	16	37
7/8	स्वाती	21	54	3	11	8	28	13	45
8/9	विशा.	19	4	0	23	5	43	11	4
9/10	अनु.	16	26	21	50	3	15	8	42
10/11	ज्येष्ठा	14	11	19	41	1	13	6	48
11/12	मूल	12	24	18	2	23	43	5	26
12/13	पू.षा.	11	11	16	59	22	49	4	41
13/14	उ.षा.	10	35	16	32	22	32	4	33
14/15	श्रव.	10	37	16	44	22	52	5	3
15/16	धनि.	11	16	17	31	23	48	6	7
16/17	शत.	12	28	18	50	1	15	7	41
17/18	पू.भा.	14	9	20	39	3	10	9	42
18/19	उ.भा.	16	16	22	52	5	28	12	6
19/20	रेव.	18	45	1	25	8	6	14	48
20/21	अश्वि.	21	31	4	15	11	0	17	45
22	भर.	0	31	7	17	14	4	20	51
23/24	कृत्ति.	3	38	10	26	17	13	0	0
24/25	रोहि.	6	47	13	34	20	20	3	5
25/26	मृग.	9	50	16	33	23	15	5	56
26/27	आर्द्रा	12	36	19	13	1	49	8	24
27/28	पुन.	14	55	21	25	3	53	10	18
28/29	पुष्य	16	40	22	59	5	16	11	31
29/30	आश्ले.	17	42	23	50	5	55	11	57

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मई 2012 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/1	मघा	17	56	23	53	5	46	11	36
1/2	पू.फा.	17	24	23	8	4	50	10	30
2/3	उ.फा.	16	6	21	41	3	13	8	42
3/4	हस्त	14	10	19	36	1	0	6	23
4/5	चित्रा	11	43	17	3	22	22	3	39
5/6	स्वाती	8	56	14	12	19	27	0	42
6	विशा.	5	57	11	12	16	27	21	43
7	अनु.	2	59	8	15	13	33	18	51
8	ज्येष्ठा	0	11	5	31	10	53	16	17
8/9	मूल	21	43	3	10	8	39	14	10
9/10	पू.षा.	19	44	1	20	6	58	12	38
10/11	उ.षा.	18	21	0	7	5	55	11	46
11/12	श्रव.	17	40	23	37	5	36	11	38
12/13	धनि.	17	43	23	51	6	2	12	15
13/14	शत.	18	31	0	49	7	10	13	33
14/15	पू.भा.	19	59	2	27	8	57	15	29
15/16	उ.भा.	22	3	4	39	11	16	17	55
17	रेव.	0	35	7	17	13	59	20	43
18	अश्वि.	3	27	10	13	16	58	23	45
19/20	भर.	6	32	13	19	20	6	2	53
20/21	कृत्ति.	9	40	16	27	23	14	6	0
21/22	रोहि.	12	46	19	32	2	16	9	0
22/23	मृग.	15	43	22	25	5	6	11	46
23/24	आर्द्रा	18	25	1	2	7	38	14	12
24/25	पुन.	20	45	3	16	9	45	16	13
25/26	पुष्य	22	38	5	1	11	23	17	42
26/27	आश्ले.	23	59	6	14	12	26	18	36
28	मघा	0	44	6	49	12	52	18	52
29	पू.फा.	0	50	6	45	12	38	18	29
30	उ.फा.	0	17	6	3	11	46	17	27
30/31	हस्त	23	6	4	43	10	18	15	50

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जून 2012 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	चित्रा	21	21	2	51	8	18	13	44
1/2	स्वाती	19	9	0	32	5	54	11	16
2/3	विशा.	16	36	21	56	3	14	8	33
3/4	अनु.	13	51	19	9	0	27	5	45
4/5	ज्येष्ठा	11	3	16	22	21	42	3	2
5/6	मूल	8	23	13	45	19	9	0	34
6	पू.षा.	6	0	11	28	16	58	22	30
7	उ.षा.	4	3	9	39	15	18	20	58
8	श्रव.	2	42	8	27	14	16	20	8
9	धनि.	2	2	7	59	13	59	20	3
10	शत.	2	9	8	18	14	30	20	45
11	पू.भा.	3	3	9	24	15	47	22	14
12/13	उ.भा.	4	42	11	14	17	47	0	22
13/14	रेव.	7	0	13	39	20	20	3	3
14/15	अश्वि.	9	46	16	31	23	17	6	3
15/16	भर.	12	50	19	37	2	25	9	12
16/17	कृत्ति.	16	0	22	47	5	33	12	19
17/18	रोहि.	19	4	1	48	8	32	15	14
18/19	मृग.	21	55	4	35	11	14	17	51
20	आर्द्रा	0	27	7	1	13	34	20	5
21	पुन.	2	34	9	2	15	28	21	53
22	पुष्य	4	16	10	37	16	56	23	14
23/24	आश्ले.	5	30	11	44	17	57	0	7
24/25	मघा	6	16	12	24	18	29	0	33
25/26	पू.फा.	6	35	12	35	18	33	0	30
26	उ.फा.	6	24	12	17	18	9	23	58
27	हस्त	5	46	11	33	17	17	23	0
28	चित्रा	4	42	10	22	16	0	21	37
29	स्वाती	3	13	8	47	14	20	19	52
30	विशा.	1	22	6	52	12	21	17	48

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2012 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जुलाई 2012 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/ 1	अनु.	23	16	4	42	10	8	15	33
1/ 2	ज्येष्ठा	20	58	2	23	7	48	13	13
2/ 3	मूल	18	38	0	4	5	29	10	56
3/ 4	पू.षा.	16	23	21	51	3	20	8	51
4/ 5	उ.षा.	14	22	19	55	1	30	7	6
5/ 6	श्रव.	12	45	18	25	0	8	5	53
6/ 7	घनि.	11	40	17	29	23	22	5	17
7/ 8	शत.	11	14	17	15	23	18	5	25
8/ 9	पू.भा.	11	34	17	46	0	2	6	20
9/10	उ.भा.	12	41	19	5	1	31	8	0
10/11	रेव.	14	32	21	6	3	42	10	20
11/12	अश्वि.	17	0	23	42	6	25	13	10
12/13	भर.	19	55	2	41	9	28	16	15
13/14	कृत्ति.	23	2	5	49	12	36	19	22
15	रोहि.	2	7	8	52	15	35	22	17
16/17	मृग.	4	57	11	37	18	14	0	50
17/18	आर्द्रा	7	24	13	56	20	26	2	54
18/19	पुन.	9	21	15	45	22	7	4	27
19/20	पुष्य	10	46	17	2	23	17	5	29
20/21	आश्ले.	11	40	17	49	23	56	6	2
21/22	मघा	12	6	18	9	0	10	6	9
22/23	पू.फा.	12	8	18	5	0	0	5	55
23/24	उ.फा.	11	48	17	41	23	32	5	22
24/25	हस्त	11	11	16	59	22	46	4	33
25/26	चित्रा	10	18	16	2	21	46	3	29
26/27	स्वाती	9	11	14	52	20	33	2	13
27/28	विशा.	7	52	13	30	19	8	0	46
28	अनु.	6	22	11	58	17	34	23	9
29	ज्येष्ठा	4	44	10	19	15	53	21	27
30	मूल	3	1	8	35	14	10	19	44
31	पू.षा.	1	19	6	54	12	29	18	5

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अगस्त 2012 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	उ.षा.	23	42	5	19	10	58	16	37
1/ 2	श्रव.	22	18	4	0	9	44	15	29
2/ 3	घनि.	21	16	3	5	8	55	14	48
3/ 4	शत.	20	43	2	40	8	40	14	42
4/ 5	पू.भा.	20	46	2	53	9	3	15	15
5/ 6	उ.भा.	21	31	3	48	10	9	16	32
6/ 7	रेव.	22	58	5	26	11	57	18	30
8	अश्वि.	1	5	7	43	14	22	21	3
9/10	भर.	3	46	10	30	17	14	0	0
10/11	कृत्ति.	6	47	13	33	20	20	3	6
11/12	रोहि.	9	53	16	38	23	23	6	6
12/13	मृग.	12	49	19	29	2	8	8	45
13/14	आर्द्रा	15	21	21	54	4	24	10	53
14/15	पुन.	17	19	23	43	6	4	12	23
15/16	पुष्य	18	39	0	53	7	5	13	14
16/17	आश्ले.	19	21	1	25	7	28	13	28
17/18	मघा	19	26	1	23	7	18	13	11
18/19	पू.फा.	19	2	0	52	6	41	12	28
19/20	उ.फा.	18	15	0	0	5	44	11	28
20/21	हस्त	17	10	22	52	4	34	10	15
21/22	चित्रा	15	56	21	36	3	16	8	56
22/23	स्वाती	14	35	20	15	1	54	7	34
23/24	विशा.	13	13	18	53	0	32	6	12
24/25	अनु.	11	52	17	32	23	12	4	52
25/26	ज्येष्ठा	10	32	16	13	21	54	3	35
26/27	मूल	9	17	14	58	20	40	2	23
27/28	पू.षा.	8	6	13	49	19	33	1	17
28/29	उ.षा.	7	2	12	48	18	34	0	22
29	श्रव.	6	10	11	59	17	49	23	40
30	घनि.	5	33	11	26	17	22	23	18
31	शत.	5	17	11	17	17	18	23	22

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
सितंबर 2012 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	पू.भा.	5	27	11	35	17	45	23	57
2/ 3	उ.भा.	6	10	12	27	18	45	1	6
3/ 4	रेव.	7	29	13	55	20	22	2	52
4/ 5	अश्वि.	9	24	15	59	22	35	5	13
5/ 6	भर.	11	53	18	34	1	17	8	1
6/ 7	कृत्ति.	14	46	21	32	4	18	11	6
7/ 8	रोहि.	17	52	0	39	7	26	14	12
8/ 9	मृग.	20	57	3	40	10	23	17	4
9/10	आर्द्रा	23	43	6	20	12	55	19	28
11	पुन.	1	58	8	26	14	51	21	13
12	पुष्य	3	33	9	50	16	3	22	14
13	आश्ले.	4	23	10	28	16	30	22	30
14	मघा	4	28	10	22	16	14	22	4
15	पू.फा.	3	52	9	38	15	22	21	4
16	उ.फा.	2	44	8	22	14	0	19	36
17	हस्त	1	11	6	45	12	18	17	50
17/18	चित्रा	23	22	4	53	10	24	15	55
18/19	स्वाती	21	26	2	56	8	27	13	58
19/20	विशा.	19	30	1	1	6	34	12	7
20/21	अनु.	17	40	23	15	4	50	10	25
21/22	ज्येष्ठा	16	2	21	40	3	18	8	58
22/23	मूल	14	39	20	20	2	3	7	47
23/24	पू.षा.	13	31	19	17	1	4	6	53
24/25	उ.षा.	12	42	18	32	0	24	6	17
25/26	श्रव.	12	11	18	6	0	3	6	1
26/27	घनि.	12	0	18	1	0	3	6	6
27/28	शत.	12	11	18	17	0	25	6	34
28/29	पू.भा.	12	45	18	57	1	11	7	27
29/30	उ.भा.	13	45	20	4	2	25	8	48

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2012 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अक्तूबर 2012 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/ 1	रेव.	15	13	21	40	4	8	10	38
1/ 2	अश्वि.	17	10	23	44	6	20	12	57
2/ 3	भर.	19	36	2	16	8	58	15	41
3/ 4	कृत्ति.	22	25	5	10	11	56	18	42
5	रोहि.	1	30	8	17	15	5	21	52
6/ 7	मृग.	4	39	11	26	18	12	0	57
7/ 8	आर्द्रा	7	40	14	23	21	3	3	42
8/ 9	पुन.	10	19	16	53	23	25	5	55
9/10	पुष्य	12	22	18	46	1	7	7	25
10/11	आश्ले.	13	41	19	53	2	2	8	8
11/12	मघा	14	11	20	11	2	9	8	3
12/13	पू.फा.	13	54	19	43	1	28	7	12
13/14	उ.फा.	12	53	18	31	0	8	5	42
14/15	हस्त	11	14	16	45	22	14	3	42
15/16	चित्रा	9	8	14	34	19	58	1	22
16	स्वाती	6	44	12	6	17	28	22	50
17	विशा.	4	12	9	33	14	55	20	18
18	अनु.	1	41	7	4	12	28	17	53
18/19	ज्येष्ठा	23	19	4	46	10	15	15	44
19/20	मूल	21	15	2	48	8	22	13	57
20/21	पू.षा.	19	34	1	13	6	54	12	37
21/22	उ.षा.	18	21	0	8	5	56	11	46
22/23	श्रव.	17	39	23	33	5	29	11	27
23/24	घनि .	17	27	23	30	5	34	11	40
24/25	शत .	17	48	23	58	6	9	12	23
25/26	पू.भा.	18	38	0	56	7	15	13	36
26/27	उ.भा.	19	58	2	22	8	48	15	16
27/28	रेव.	21	44	4	15	10	47	17	21
28/29	अश्वि.	23	55	6	32	13	9	19	48
30	भर.	2	28	9	10	15	52	22	35

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
नवंबर 2012 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	कृत्ति.	5	19	12	4	18	50	1	36
1/ 2	रोहि.	8	23	15	10	21	57	4	45
2/ 3	मृग.	11	32	18	20	1	7	7	53
3/ 4	आर्द्रा	14	39	21	24	4	8	10	50
4/ 5	पुन.	17	32	0	11	6	49	13	26
5/ 6	पुष्य	20	0	2	32	9	1	15	29
6/ 7	आश्ले.	21	53	4	15	10	34	16	51
7/ 8	मघा	23	4	5	15	11	22	17	27
8/ 9	पू.फा.	23	28	5	27	11	22	17	15
9/10	उ.फा.	23	4	4	51	10	35	16	17
10/11	हस्त	21	56	3	32	9	6	14	38
11/12	चित्रा	20	8	1	35	7	1	12	25
12/13	स्वाती	17	48	23	9	4	30	9	48
13/14	विशा.	15	6	20	24	1	41	6	57
14/15	अनु.	12	13	17	29	22	45	4	1
15/16	ज्येष्ठा	9	17	14	35	19	52	1	11
16	मूल	6	31	11	51	17	14	22	37
17	पू.षा.	4	2	9	29	14	58	20	28
18	उ.षा.	2	1	7	36	13	13	18	52
19	श्रव.	0	34	6	18	12	5	17	55
19/20	घनि.	23	47	5	41	11	39	17	39
20/21	शत.	23	42	5	47	11	56	18	6
22	पू.भा.	0	20	6	36	12	54	19	15
23	उ.भा.	1	38	8	3	14	31	21	0
24	रेव.	3	31	10	4	16	39	23	15
25/26	अश्वि.	5	53	12	33	19	13	1	55
26/27	भर.	8	37	15	21	22	5	4	50
27/28	कृत्ति.	11	35	18	21	1	8	7	54
28/29	रोहि.	14	41	21	28	4	15	11	2
29/30	मृग.	17	48	0	34	7	20	14	6

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
दिसंबर 2012 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/ 1	आर्द्रा	20	50	3	34	10	18	17	0
1/ 2	पुन.	23	42	6	22	13	1	19	39
3	पुष्य	2	15	8	50	15	24	21	55
4	आश्ले.	4	25	10	53	17	19	23	43
5/ 6	मघा	6	5	12	24	18	41	0	56
6/ 7	पू.फा.	7	8	13	17	19	24	1	29
7/ 8	उ.फा.	7	31	13	30	19	26	1	20
8/ 9	हस्त	7	11	13	0	18	46	0	29
9	चित्रा	6	10	11	49	17	25	22	59
10	स्वाती	4	31	10	0	15	28	20	54
11	विशा.	2	18	7	41	13	2	18	22
11/12	अनु.	23	41	4	59	10	15	15	32
12/13	ज्येष्ठा	20	48	2	3	7	18	12	33
13/14	मूल	17	48	23	4	4	19	9	36
14/15	पू.षा.	14	53	20	12	1	32	6	52
15/16	उ.षा.	12	15	17	39	23	5	4	32
16/17	श्रव.	10	2	15	34	21	9	2	46
17/18	घनि.	8	26	14	8	19	54	1	42
18/19	शत.	7	33	13	27	19	25	1	25
19/20	पू.भा.	7	29	13	36	19	46	1	59
20/21	उ.भा.	8	15	14	34	20	56	3	20
21/22	रेव.	9	48	16	18	22	50	5	24
22/23	अश्वि.	12	1	18	40	1	20	8	2
23/24	भर.	14	45	21	29	4	15	11	1
24/25	कृत्ति.	17	47	0	35	7	22	14	10
25/26	रोहि.	20	57	3	45	10	32	17	19
27	मृग.	0	5	6	50	13	35	20	19
28	आर्द्रा	3	2	9	44	16	25	23	5
29/30	पुन.	5	43	12	21	18	57	1	32
30/31	पुष्य	8	6	14	38	21	9	3	39

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2013 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जनवरी 2013 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	आश्ले.	10	7	16	34	22	59	5	23
1/ 2	मघा	11	45	18	6	0	25	6	42
2/ 3	पू.फा.	12	58	19	12	1	24	7	35
3/ 4	उ.फा.	13	43	19	50	1	54	7	57
4/ 5	हस्त	13	58	19	57	1	54	7	49
5/ 6	चित्रा	13	41	19	32	1	21	7	7
6/ 7	स्वाती	12	52	18	34	0	15	5	53
7/ 8	विशा.	11	30	17	5	22	38	4	10
8/ 9	अनु.	9	39	15	8	20	34	2	0
9	ज्येष्ठा	7	24	12	47	18	10	23	31
10	मूल	4	52	10	12	15	32	20	52
11	पू.षा.	2	11	7	31	12	51	18	11
11/12	उ.षा.	23	32	4	54	10	16	15	40
12/13	श्रव.	21	5	2	32	8	0	13	30
13/14	धनि.	19	2	0	36	6	12	11	51
14/15	शत.	17	32	23	16	5	3	10	52
15/16	पू.भा.	16	45	22	41	4	40	10	42
16/17	उ.भा.	16	47	22	56	5	7	11	22
17/18	रेव.	17	40	0	2	6	26	12	53
18/19	अश्वि.	19	23	1	55	8	30	15	7
19/20	भर.	21	47	4	28	11	11	17	55
21	कृत्ति.	0	40	7	26	14	13	21	1
22/23	रोहि.	3	49	10	36	17	24	0	11
23/24	मृग.	6	58	13	44	20	29	3	13
24/25	आर्द्रा	9	55	16	37	23	17	5	55
25/26	पुन.	12	32	19	8	1	41	8	14
26/27	पुष्य	14	44	21	13	3	40	10	5
27/28	आश्ले.	16	28	22	50	5	11	11	29
28/29	मघा	17	47	0	2	6	16	12	29
29/30	पू.फा.	18	41	0	50	6	59	13	6
30/31	उ.फा.	19	12	1	17	7	20	13	22

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
फरवरी 2013 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	हस्त	19	23	1	23	7	21	13	19
1/ 2	चित्रा	19	14	1	9	7	3	12	55
2/ 3	स्वाती	18	46	0	36	6	24	12	11
3/ 4	विशा.	17	57	23	42	5	25	11	7
4/ 5	अनु.	16	48	22	27	4	6	9	43
5/ 6	ज्येष्ठा	15	19	20	54	2	28	8	1
6/ 7	मूल	13	33	19	4	0	35	6	5
7/ 8	पू.षा.	11	34	17	4	22	32	4	1
8/ 9	उ.षा.	9	30	14	58	20	27	1	57
9/10	श्रव.	7	26	12	57	18	28	0	0
10	धनि.	5	34	11	8	16	45	22	22
11	शत.	4	2	9	43	15	27	21	12
12	पू.भा.	3	0	8	50	14	43	20	39
13	उ.भा.	2	37	8	38	14	42	20	49
14	रेव.	2	59	9	12	15	28	21	47
15	अश्वि.	4	8	10	33	17	0	23	30
16/17	भर.	6	3	12	38	19	15	1	54
17/18	कृत्ति.	8	35	15	17	22	1	4	46
18/19	रोहि.	11	32	18	18	1	5	7	52
19/20	मृग.	14	39	21	26	4	11	10	57
20/21	आर्द्रा	17	41	0	23	7	5	13	45
21/22	पुन.	20	23	2	59	9	34	16	6
22/23	पुष्य	22	36	5	4	11	30	17	54
24	आश्ले.	0	16	6	35	12	52	19	7
25	मघा	1	21	7	32	13	41	19	48
26	पू.फा.	1	53	7	57	13	59	19	59
27	उ.फा.	1	58	7	56	13	52	19	47
28	हस्त	1	41	7	33	13	25	19	16

(अप्रैल 2013 ई. के लिए देखें पृष्ठ 179)

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मार्च 2013 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	चित्रा	1	6	6	55	12	43	18	30
2	स्वाती	0	17	6	3	11	49	17	34
2/ 3	विशा.	23	18	5	2	10	46	16	29
3/ 4	अनु.	22	11	3	53	9	35	15	16
4/ 5	ज्येष्ठा	20	57	2	38	8	18	13	58
5/ 6	मूल	19	37	1	17	6	56	12	34
6/ 7	पू.षा.	18	13	23	52	5	30	11	9
7/ 8	उ.षा.	16	47	22	26	4	5	9	44
8/ 9	श्रव.	15	23	21	3	2	43	8	24
9/10	धनि.	14	6	19	49	1	32	7	17
10/11	शत.	13	2	18	49	0	38	6	27
11/12	पू.भा.	12	19	18	12	0	7	6	4
12/13	उ.भा.	12	3	18	4	0	8	6	13
13/14	रेव.	12	21	18	31	0	44	6	59
14/15	अश्वि.	13	17	19	37	2	0	8	25
15/16	भर.	14	53	21	22	3	55	10	29
16/17	कृत्ति.	17	5	23	43	6	23	13	5
17/18	रोहि.	19	47	2	31	9	16	16	1
18/19	मृग.	22	47	5	34	12	20	19	6
20	आर्द्रा	1	51	8	36	15	20	22	2
21/22	पुन.	4	44	11	23	18	1	0	37
22/23	पुष्य	7	11	13	43	20	12	2	39
23/24	आश्ले.	9	4	15	26	21	45	4	2
24/25	मघा	10	16	16	28	22	37	4	44
25/26	पू.फा.	10	48	16	50	22	50	4	47
26/27	उ.फा.	10	42	16	35	22	26	4	16
27/28	हस्त	10	3	15	49	21	34	3	17
28/29	चित्रा	8	59	14	39	20	19	1	58
29/30	स्वाती	7	35	13	12	18	49	0	25
30	विशा.	6	0	11	35	17	10	22	45
31	अनु.	4	20	9	54	15	29	21	4

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जनवरी 2012 ई. को अयनांश 24° 1' 46"

जनवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	6 40 15	8 15 55 45	11 13 5 10	4 26 5 7	7 25 48 15	0 6 23 59	9 19 47 37	6 4 15 36	7 18 56 43	7 19 56 29	-23 4	7 15	4 50
2	6 44 11	8 16 56 54	11 24 59 41	4 26 19 21	7 27 9 5	0 6 25 22	9 21 1 14	6 4 19 20	7 18 53 32	7 19 56 46	-22 59	11 25	4 18
3	6 48 8	8 17 58 3	0 6 49 37	4 26 33 5	7 28 31 2	0 6 26 56	9 22 14 48	6 4 22 58	7 18 50 21	7 19 58 0	-22 54	15 8	3 35
4	6 52 4	8 18 59 12	0 18 39 58	4 26 46 18	7 29 54 0	0 6 28 43	9 23 28 19	6 4 26 31	7 18 47 10	7 19 59 48	-22 48	18 15	2 44
5	6 56 1	8 20 0 20	1 0 35 27	4 26 58 58	8 1 17 54	0 6 30 43	9 24 41 47	6 4 29 58	7 18 44 0	7 20 1 38	-22 42	20 37	1 45
6	6 59 57	8 21 1 28	1 12 40 16	4 27 11 6	8 2 42 39	0 6 32 54	9 25 55 13	6 4 33 20	7 18 40 49	7 20 2 55	-22 35	22 5	0 40
7	7 3 54	8 22 2 36	1 24 57 50	4 27 22 42	8 4 8 11	0 6 35 18	9 27 8 35	6 4 36 36	7 18 37 38	7 20 3 4	-22 28	22 32	- 0 27
8	7 7 51	8 23 3 44	2 7 30 41	4 27 33 43	8 5 34 26	0 6 37 53	9 28 21 54	6 4 39 47	7 18 34 27	7 20 1 41	-22 21	21 52	- 1 34
9	7 11 47	8 24 4 51	2 20 20 7	4 27 44 10	8 7 1 23	0 6 40 41	9 29 35 10	6 4 42 52	7 18 31 16	7 19 58 33	-22 13	20 3	- 2 38
10	7 15 44	8 25 5 59	3 3 26 20	4 27 54 1	8 8 28 58	0 6 43 40	10 0 48 22	6 4 45 52	7 18 28 6	7 19 53 48	-22 4	17 9	- 3 35
11	7 19 40	8 26 7 6	3 16 48 18	4 28 3 17	8 9 57 11	0 6 46 51	10 2 1 31	6 4 48 45	7 18 24 55	7 19 47 52	-21 56	13 20	- 4 21
12	7 23 37	8 27 8 13	4 0 24 4	4 28 11 56	8 11 25 59	0 6 50 14	10 3 14 37	6 4 51 33	7 18 21 44	7 19 41 24	-21 46	8 46	- 4 53
13	7 27 33	8 28 9 20	4 14 11 5	4 28 19 58	8 12 55 22	0 6 53 49	10 4 27 39	6 4 54 16	7 18 18 33	7 19 35 16	-21 37	3 43	- 5 9
14	7 31 30	8 29 10 26	4 28 6 38	4 28 27 22	8 14 25 18	0 6 57 35	10 5 40 38	6 4 56 52	7 18 15 22	7 19 30 14	-21 27	- 1 35	- 5 7
15	7 35 26	9 0 11 33	5 12 8 11	4 28 34 7	8 15 55 46	0 7 1 32	10 6 53 33	6 4 59 22	7 18 12 12	7 19 26 52	-21 16	- 6 50	- 4 46
16	7 39 23	9 1 12 40	5 26 13 39	4 28 40 13	8 17 26 47	0 7 5 41	10 8 6 25	6 5 1 47	7 18 9 1	7 19 25 23	-21 5	-11 45	- 4 9
17	7 43 20	9 2 13 46	6 10 21 21	4 28 45 38	8 18 58 21	0 7 10 1	10 9 19 13	6 5 4 5	7 18 5 50	7 19 25 33	-20 54	-16 3	- 3 16
18	7 47 16	9 3 14 52	6 24 29 55	4 28 50 22	8 20 30 26	0 7 14 33	10 10 31 57	6 5 6 18	7 18 2 39	7 19 26 42	-20 42	-19 26	- 2 11
19	7 51 13	9 4 15 58	7 8 37 57	4 28 54 24	8 22 3 3	0 7 19 16	10 11 44 37	6 5 8 24	7 17 59 28	7 19 27 55	-20 30	-21 39	- 0 58
20	7 55 9	9 5 17 4	7 22 43 38	4 28 57 44	8 23 36 12	0 7 24 9	10 12 57 13	6 5 10 24	7 17 56 18	7 19 28 12	-20 18	-22 29	0 18
21	7 59 6	9 6 18 9	8 6 44 38	4 29 0 21	8 25 9 54	0 7 29 14	10 14 9 45	6 5 12 19	7 17 53 7	7 19 26 42	-20 5	-21 54	1 32
22	8 3 2	9 7 19 14	8 20 37 59	4 29 2 14	8 26 44 9	0 7 34 29	10 15 22 13	6 5 14 6	7 17 49 56	7 19 22 53	-19 51	-19 59	2 40
23	8 6 59	9 8 20 18	9 4 20 23	4 29 3 23	8 28 18 58	0 7 39 56	10 16 34 36	6 5 15 48	7 17 46 45	7 19 16 42	-19 38	-16 56	3 38
24	8 10 55	9 9 21 21	9 17 48 38	4 29 3 47	8 29 54 22	0 7 45 33	10 17 46 55	6 5 17 24	7 17 43 34	7 19 8 31	-19 24	-13 2	4 22
25	8 14 52	9 10 22 24	10 1 0 9	4 29 3 26	9 1 30 21	0 7 51 20	10 18 59 9	6 5 18 53	7 17 40 24	7 18 59 7	-19 9	- 8 36	4 51
26	8 18 49	9 11 23 26	10 13 53 30	4 29 2 19	9 3 6 55	0 7 57 18	10 20 11 18	6 5 20 16	7 17 37 13	7 18 49 27	-18 55	- 3 53	5 5
27	8 22 45	9 12 24 27	10 26 28 42	4 29 0 26	9 4 44 6	0 8 3 27	10 21 23 22	6 5 21 32	7 17 34 2	7 18 40 31	-18 40	0 53	5 3
28	8 26 42	9 13 25 27	11 8 47 14	4 28 57 47	9 6 21 55	0 8 9 45	10 22 35 21	6 5 22 42	7 17 30 51	7 18 33 8	-18 24	5 31	4 47
29	8 30 38	9 14 26 25	11 20 51 53	4 28 54 21	9 8 0 22	0 8 16 14	10 23 47 14	6 5 23 46	7 17 27 41	7 18 27 51	-18 9	9 51	4 19
30	8 34 35	9 15 27 23	0 2 46 37	4 28 50 8	9 9 39 29	0 8 22 52	10 24 59 2	6 5 24 44	7 17 24 30	7 18 24 48	-17 53	13 45	3 40
31	8 38 31	9 16 28 19	0 14 36 7	4 28 45 8	9 11 19 15	0 8 29 41	10 26 10 44	6 5 25 35	7 17 21 19	7 18 23 46	-17 36	17 4	2 51

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 फरवरी 2012 ई. को अयनांश 24° 1' 51"

फरवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	8 42 28	9 17 29 15	0 26 25 41	4 28 39 21	9 12 59 43	0 8 36 39	10 27 22 20	6 5 26 20	7 17 18 8	7 18 24 4	-17 20	19 43	1 55
2	8 46 24	9 18 30 8	1 8 20 44	4 28 32 47	9 14 40 52	0 8 43 46	10 28 33 49	6 5 26 58	7 17 14 57	7 18 24 54	-17 3	21 31	0 54
3	8 50 21	9 19 31 1	1 20 26 36	4 28 25 26	9 16 22 44	0 8 51 3	10 29 45 12	6 5 27 30	7 17 11 47	7 18 25 13	-16 45	22 21	-0 11
4	8 54 18	9 20 31 52	2 2 48 2	4 28 17 17	9 18 5 20	0 8 58 29	11 0 56 29	6 5 27 56	7 17 8 36	7 18 24 3	-16 28	22 8	-1 16
5	8 58 14	9 21 32 42	2 15 28 53	4 28 8 22	9 19 48 39	0 9 6 5	11 2 7 39	6 5 28 16	7 17 5 25	7 18 20 38	-16 10	20 47	-2 19
6	9 2 11	9 22 33 31	2 28 31 36	4 27 58 39	9 21 32 43	0 9 13 49	11 3 18 41	6 5 28 29	7 17 2 14	7 18 14 36	-15 52	18 19	-3 17
7	9 6 7	9 23 34 18	3 11 56 49	4 27 48 10	9 23 17 30	0 9 21 43	11 4 29 37	6 5 28 36	7 16 59 4	7 18 6 2	-15 33	14 49	-4 5
8	9 10 4	9 24 35 4	3 25 43 5	4 27 36 54	9 25 3 2	0 9 29 45	11 5 40 26	6 5 28 36	7 16 55 53	7 17 55 33	-15 15	10 27	-4 40
9	9 14 0	9 25 35 49	4 9 46 52	4 27 24 51	9 26 49 17	0 9 37 56	11 6 51 7	6 5 28 30	7 16 52 42	7 17 44 10	-14 56	5 27	-4 59
10	9 17 57	9 26 36 33	4 24 3 4	4 27 12 4	9 28 36 15	0 9 46 15	11 8 1 41	6 5 28 18	7 16 49 31	7 17 33 6	-14 37	0 6	-5 0
11	9 21 53	9 27 37 15	5 8 25 46	4 26 58 30	10 0 23 54	0 9 54 43	11 9 12 7	6 5 27 59	7 16 46 21	7 17 23 34	-14 17	-5 18	-4 42
12	9 25 50	9 28 37 57	5 22 49 16	4 26 44 12	10 2 12 13	0 10 3 20	11 10 22 25	6 5 27 34	7 16 43 10	7 17 16 27	-13 58	-10 25	-4 7
13	9 29 47	9 29 38 37	6 7 8 54	4 26 29 11	10 4 1 10	0 10 12 4	11 11 32 36	6 5 27 3	7 16 39 59	7 17 12 6	-13 38	-14 56	-3 15
14	9 33 43	10 0 39 16	6 21 21 30	4 26 13 26	10 5 50 39	0 10 20 57	11 12 42 38	6 5 26 26	7 16 36 48	7 17 10 17	-13 18	-18 33	-2 12
15	9 37 40	10 1 39 55	7 5 25 24	4 25 56 59	10 7 40 39	0 10 29 57	11 13 52 32	6 5 25 42	7 16 33 38	7 17 10 6	-12 57	-21 2	-1 2
16	9 41 36	10 2 40 32	7 19 20 4	4 25 39 52	10 9 31 2	0 10 39 6	11 15 2 18	6 5 24 52	7 16 30 27	7 17 10 20	-12 37	-22 13	0 11
17	9 45 33	10 3 41 8	8 3 5 33	4 25 22 5	10 11 21 42	0 10 48 23	11 16 11 55	6 5 23 56	7 16 27 16	7 17 9 35	-12 16	-22 1	1 23
18	9 49 29	10 4 41 42	8 16 41 58	4 25 3 39	10 13 12 30	0 10 57 47	11 17 21 23	6 5 22 54	7 16 24 5	7 17 6 40	-11 55	-20 31	2 30
19	9 53 26	10 5 42 16	9 0 9 7	4 24 44 37	10 15 3 18	0 11 7 19	11 18 30 43	6 5 21 45	7 16 20 55	7 17 0 49	-11 34	-17 53	3 26
20	9 57 22	10 6 42 48	9 13 26 15	4 24 25 0	10 16 53 52	0 11 16 58	11 19 39 53	6 5 20 30	7 16 17 44	7 16 51 51	-11 12	-14 21	4 11
21	10 1 19	10 7 43 18	9 26 32 15	4 24 4 50	10 18 43 59	0 11 26 45	11 20 48 54	6 5 19 9	7 16 14 33	7 16 40 12	-10 51	-10 10	4 42
22	10 5 16	10 8 43 47	10 9 25 48	4 23 44 9	10 20 33 22	0 11 36 39	11 21 57 45	6 5 17 43	7 16 11 22	7 16 26 46	-10 29	-5 36	4 58
23	10 9 12	10 9 44 15	10 22 5 53	4 23 22 59	10 22 21 43	0 11 46 40	11 23 6 26	6 5 16 10	7 16 8 12	7 16 12 46	-10 8	-0 53	4 58
24	10 13 9	10 10 44 41	11 4 32 10	4 23 1 23	10 24 8 40	0 11 56 48	11 24 14 57	6 5 14 31	7 16 5 1	7 15 59 28	-9 46	3 47	4 45
25	10 17 5	10 11 45 5	11 16 45 16	4 22 39 22	10 25 53 49	0 12 7 3	11 25 23 17	6 5 12 46	7 16 1 50	7 15 47 57	-9 23	8 13	4 18
26	10 21 2	10 12 45 27	11 28 46 54	4 22 16 59	10 27 36 45	0 12 17 24	11 26 31 26	6 5 10 55	7 15 58 39	7 15 39 0	-9 1	12 17	3 40
27	10 24 58	10 13 45 47	0 10 39 54	4 21 54 17	10 29 16 56	0 12 27 53	11 27 39 24	6 5 8 59	7 15 55 29	7 15 32 54	-8 39	15 48	2 53
28	10 28 55	10 14 46 5	0 22 28 6	4 21 31 18	11 0 53 52	0 12 38 28	11 28 47 10	6 5 6 57	7 15 52 18	7 15 29 30	-8 16	18 40	1 59
29	10 32 51	10 15 46 22	1 4 16 11	4 21 8 5	11 2 26 59	0 12 49 9	11 29 54 44	6 5 4 49	7 15 49 7	7 15 28 11	-7 54	20 44	0 59

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 मार्च 2012 ई. को अयनांश 24° 1' 54"

मार्च	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां	चन्द्र क्रां	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	10 36 48	10 16 46 36	1 16 9 26	4 20 44 40	11 3 55 43	0 12 59 57	0 1 2 6	6 5 2 36	7 15 45 56	7 15 27 59	-7 31	21 55	-0 4
2	10 40 45	10 17 46 48	1 28 13 27	4 20 21 6	11 5 19 26	0 13 10 50	0 2 9 15	6 5 0 17	7 15 42 46	7 15 27 45	-7 8	22 6	-1 7
3	10 44 41	10 18 46 59	2 10 33 43	4 19 57 26	11 6 37 34	0 13 21 50	0 3 16 11	6 4 57 53	7 15 39 35	7 15 26 22	-6 45	21 13	-2 9
4	10 48 38	10 19 47 7	2 23 15 14	4 19 33 43	11 7 49 31	0 13 32 56	0 4 22 53	6 4 55 23	7 15 36 24	7 15 22 52	-6 22	19 15	-3 6
5	10 52 34	10 20 47 13	3 6 21 47	4 19 9 58	11 8 54 44	0 13 44 7	0 5 29 21	6 4 52 48	7 15 33 13	7 15 16 44	-5 59	16 14	-3 55
6	10 56 31	10 21 47 17	3 19 55 24	4 18 46 15	11 9 52 41	0 13 55 24	0 6 35 35	6 4 50 8	7 15 30 3	7 15 7 57	-5 35	12 17	-4 33
7	11 0 27	10 22 47 19	4 3 55 34	4 18 22 37	11 10 42 55	0 14 6 47	0 7 41 34	6 4 47 23	7 15 26 52	7 14 57 4	-5 12	7 33	-4 55
8	11 4 24	10 23 47 19	4 18 18 54	4 17 59 5	11 11 25 1	0 14 18 15	0 8 47 19	6 4 44 33	7 15 23 41	7 14 45 5	-4 49	2 18	-5 0
9	11 8 20	10 24 47 17	5 2 59 19	4 17 35 43	11 11 58 39	0 14 29 49	0 9 52 48	6 4 41 38	7 15 20 31	7 14 33 18	-4 25	-3 11	-4 46
10	11 12 17	10 25 47 14	5 17 48 47	4 17 12 33	11 12 23 36	0 14 41 27	0 10 58 1	6 4 38 38	7 15 17 20	7 14 22 58	-4 2	-8 33	-4 12
11	11 16 14	10 26 47 8	6 2 38 44	4 16 49 38	11 12 39 43	0 14 53 11	0 12 2 58	6 4 35 33	7 15 14 9	7 14 15 4	-3 38	-13 24	-3 21
12	11 20 10	10 27 47 1	6 17 21 30	4 16 26 59	11 12 46 58	0 15 5 0	0 13 7 39	6 4 32 24	7 15 10 58	7 14 10 3	-3 15	-17 25	-2 17
13	11 24 7	10 28 46 53	7 1 51 21	4 16 4 40	11 12 45 27	0 15 16 55	0 14 12 2	6 4 29 10	7 15 7 48	7 14 7 43	-2 51	-20 16	-1 5
14	11 28 3	10 29 46 42	7 16 4 59	4 15 42 42	11 12 35 25	0 15 28 54	0 15 16 9	6 4 25 51	7 15 4 37	7 14 7 17	-2 27	-21 48	0 10
15	11 32 0	11 0 46 30	8 0 1 14	4 15 21 8	11 12 17 13	0 15 40 58	0 16 19 57	6 4 22 28	7 15 1 26	7 14 7 34	-2 4	-21 55	1 23
16	11 35 56	11 1 46 16	8 13 40 31	4 15 0 0	11 11 51 23	0 15 53 6	0 17 23 28	6 4 19 1	7 14 58 16	7 14 7 12	-1 40	-20 43	2 30
17	11 39 53	11 2 46 1	8 27 4 9	4 14 39 21	11 11 18 35	0 16 5 19	0 18 26 39	6 4 15 30	7 14 55 5	7 14 5 0	-1 16	-18 22	3 27
18	11 43 49	11 3 45 43	9 10 13 39	4 14 19 12	11 10 39 37	0 16 17 37	0 19 29 32	6 4 11 54	7 14 51 54	7 14 0 12	-0 53	-15 7	4 12
19	11 47 46	11 4 45 25	9 23 10 25	4 13 59 35	11 9 55 26	0 16 30 0	0 20 32 5	6 4 8 14	7 14 48 43	7 13 52 32	-0 29	-11 11	4 43
20	11 51 43	11 5 45 4	10 5 55 29	4 13 40 32	11 9 7 3	0 16 42 26	0 21 34 17	6 4 4 31	7 14 45 33	7 13 42 20	-0 5	-6 48	5 0
21	11 55 39	11 6 44 41	10 18 29 30	4 13 22 5	11 8 15 36	0 16 54 57	0 22 36 9	6 4 0 44	7 14 42 22	7 13 30 25	0 19	-2 13	5 1
22	11 59 36	11 7 44 17	11 0 52 53	4 13 4 15	11 7 22 14	0 17 7 32	0 23 37 39	6 3 56 53	7 14 39 11	7 13 17 52	0 42	2 24	4 48
23	12 3 32	11 8 43 50	11 13 6 6	4 12 47 5	11 6 28 7	0 17 20 11	0 24 38 47	6 3 52 59	7 14 36 0	7 13 5 50	1 6	6 51	4 23
24	12 7 29	11 9 43 22	11 25 9 58	4 12 30 35	11 5 34 23	0 17 32 55	0 25 39 31	6 3 49 1	7 14 32 50	7 12 55 20	1 30	10 59	3 45
25	12 11 25	11 10 42 51	0 7 5 48	4 12 14 47	11 4 42 6	0 17 45 42	0 26 39 52	6 3 45 0	7 14 29 39	7 12 47 8	1 53	14 39	2 58
26	12 15 22	11 11 42 18	0 18 55 41	4 11 59 42	11 3 52 13	0 17 58 32	0 27 39 48	6 3 40 56	7 14 26 28	7 12 41 34	2 17	17 41	2 3
27	12 19 18	11 12 41 43	1 0 42 29	4 11 45 21	11 3 5 35	0 18 11 27	0 28 39 19	6 3 36 49	7 14 23 18	7 12 38 35	2 40	19 59	1 3
28	12 23 15	11 13 41 6	1 12 29 55	4 11 31 44	11 2 22 57	0 18 24 25	0 29 38 23	6 3 32 40	7 14 20 7	7 12 37 45	3 4	21 25	0 1
29	12 27 12	11 14 40 26	1 24 22 23	4 11 18 53	11 1 44 52	0 18 37 26	1 0 37 0	6 3 28 27	7 14 16 56	7 12 38 15	3 27	21 53	-1 3
30	12 31 8	11 15 39 44	2 6 24 52	4 11 6 48	11 1 11 48	0 18 50 31	1 1 35 8	6 3 24 12	7 14 13 45	7 12 39 10	3 50	21 22	-2 4
31	12 35 5	11 16 39 0	2 18 42 39	4 10 55 29	11 0 44 5	0 19 3 39	1 2 32 47	6 3 19 55	7 14 10 35	7 12 39 29	4 14	19 49	-3 1

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अप्रैल 2012 ई. को अयनांश 24° 1' 57''

तारीख	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	12 39 1	11 17 38 14	3 1 20 52	4 10 44 58	11 0 21 55	0 19 16 50	1 3 29 56	6 3 15 35	7 14 7 24	7 12 38 23	4 37	17 16	-3 51
2	12 42 58	11 18 37 25	3 14 24 4	4 10 35 13	11 0 5 26	0 19 30 4	1 4 26 33	6 3 11 13	7 14 4 13	7 12 35 20	5 0	13 47	-4 31
3	12 46 54	11 19 36 33	3 27 55 26	4 10 26 15	10 29 54 38	0 19 43 21	1 5 22 37	6 3 6 50	7 14 1 3	7 12 30 13	5 23	9 30	-4 57
4	12 50 51	11 20 35 40	4 11 56 1	4 10 18 5	10 29 49 28	0 19 56 41	1 6 18 8	6 3 2 24	7 13 57 52	7 12 23 22	5 46	4 34	-5 7
5	12 54 47	11 21 34 44	4 26 23 58	4 10 10 41	10 29 49 52	0 20 10 4	1 7 13 4	6 2 57 57	7 13 54 41	7 12 15 32	6 9	-0 47	-4 58
6	12 58 44	11 22 33 47	5 11 14 11	4 10 4 5	10 29 55 41	0 20 23 29	1 8 7 24	6 2 53 28	7 13 51 30	7 12 7 40	6 31	-6 12	-4 29
7	13 2 41	11 23 32 47	5 26 18 44	4 9 58 16	11 0 6 44	0 20 36 58	1 9 1 6	6 2 48 58	7 13 48 20	7 12 0 45	6 54	-11 21	-3 41
8	13 6 37	11 24 31 45	6 11 27 56	4 9 53 13	11 0 22 51	0 20 50 28	1 9 54 10	6 2 44 26	7 13 45 9	7 11 55 36	7 16	-15 49	-2 37
9	13 10 34	11 25 30 42	6 26 31 59	4 9 48 56	11 0 43 48	0 21 4 2	1 10 46 35	6 2 39 54	7 13 41 58	7 11 52 34	7 39	-19 12	-1 22
10	13 14 30	11 26 29 36	7 11 22 31	4 9 45 26	11 1 9 23	0 21 17 37	1 11 38 17	6 2 35 20	7 13 38 47	7 11 51 35	8 1	-21 15	-0 3
11	13 18 27	11 27 28 29	7 25 53 40	4 9 42 41	11 1 39 24	0 21 31 15	1 12 29 18	6 2 30 45	7 13 35 37	7 11 52 8	8 23	-21 48	1 15
12	13 22 23	11 28 27 19	8 10 2 17	4 9 40 42	11 2 13 38	0 21 44 56	1 13 19 34	6 2 26 10	7 13 32 26	7 11 53 24	8 45	-20 56	2 27
13	13 26 20	11 29 26 9	8 23 47 44	4 9 39 28	11 2 51 51	0 21 58 39	1 14 9 5	6 2 21 34	7 13 29 15	7 11 54 25	9 7	-18 49	3 28
14	13 30 16	0 0 24 56	9 7 11 6	4 9 38 59	11 3 33 54	0 22 12 23	1 14 57 49	6 2 16 58	7 13 26 5	7 11 54 21	9 28	-15 44	4 15
15	13 34 13	0 1 23 42	9 20 14 32	4 9 39 14	11 4 19 33	0 22 26 10	1 15 45 44	6 2 12 21	7 13 22 54	7 11 52 39	9 50	-11 56	4 49
16	13 38 10	0 2 22 26	10 3 0 40	4 9 40 13	11 5 8 38	0 22 39 59	1 16 32 48	6 2 7 44	7 13 19 43	7 11 49 7	10 11	-7 41	5 7
17	13 42 6	0 3 21 8	10 15 32 10	4 9 41 55	11 6 1 0	0 22 53 50	1 17 19 0	6 2 3 7	7 13 16 32	7 11 43 55	10 32	-3 12	5 10
18	13 46 3	0 4 19 49	10 27 51 30	4 9 44 20	11 6 56 28	0 23 7 43	1 18 4 18	6 1 58 31	7 13 13 22	7 11 37 34	10 53	1 21	4 58
19	13 49 59	0 5 18 28	11 10 0 51	4 9 47 27	11 7 54 55	0 23 21 37	1 18 48 39	6 1 53 54	7 13 10 11	7 11 30 46	11 14	5 47	4 33
20	13 53 56	0 6 17 5	11 22 2 6	4 9 51 17	11 8 56 13	0 23 35 33	1 19 32 1	6 1 49 18	7 13 7 0	7 11 24 13	11 35	9 57	3 56
21	13 57 52	0 7 15 40	0 3 56 58	4 9 55 48	11 10 0 13	0 23 49 31	1 20 14 23	6 1 44 43	7 13 3 49	7 11 18 36	11 55	13 42	3 9
22	14 1 49	0 8 14 13	0 15 47 12	4 10 0 59	11 11 6 51	0 24 3 30	1 20 55 41	6 1 40 9	7 13 0 39	7 11 14 23	12 16	16 53	2 15
23	14 5 45	0 9 12 45	0 27 34 46	4 10 6 51	11 12 16 0	0 24 17 31	1 21 35 53	6 1 35 35	7 12 57 28	7 11 11 49	12 36	19 21	1 14
24	14 9 42	0 10 11 14	1 9 21 58	4 10 13 22	11 13 27 33	0 24 31 33	1 22 14 57	6 1 31 2	7 12 54 17	7 11 10 52	12 56	21 0	0 10
25	14 13 39	0 11 9 41	1 21 11 35	4 10 20 33	11 14 41 28	0 24 45 36	1 22 52 49	6 1 26 31	7 12 51 6	7 11 11 19	13 15	21 43	-0 55
26	14 17 35	0 12 8 7	2 3 6 55	4 10 28 21	11 15 57 39	0 24 59 41	1 23 29 27	6 1 22 1	7 12 47 56	7 11 12 42	13 35	21 27	-1 58
27	14 21 32	0 13 6 30	2 15 11 47	4 10 36 47	11 17 16 3	0 25 13 46	1 24 4 48	6 1 17 32	7 12 44 45	7 11 14 29	13 54	20 11	-2 56
28	14 25 28	0 14 4 51	2 27 30 25	4 10 45 49	11 18 36 35	0 25 27 53	1 24 38 48	6 1 13 6	7 12 41 34	7 11 16 5	14 13	17 58	-3 48
29	14 29 25	0 15 3 10	3 10 7 9	4 10 55 28	11 19 59 14	0 25 42 0	1 25 11 25	6 1 8 41	7 12 38 23	7 11 17 0	14 31	14 51	-4 30
30	14 33 21	0 16 1 27	3 23 6 10	4 11 5 42	11 21 23 57	0 25 56 8	1 25 42 35	6 1 4 17	7 12 35 13	7 11 16 55	14 50	10 56	-4 59

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टैं.टा.), 1 मई 2012 ई. को अयनांश 24° 2' 0''

ता.	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्यक्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	14	37	18	0	16	59	42	4	6	30	51	4	11	16	30	11	22	50	41	0	26	10	17	1	26	12	14	6	0	59	56	7	12	32	2	7	11	15	45	15	8	6	23	-5	14
2	14	41	14	0	17	57	55	4	20	23	12	4	11	27	53	11	24	19	26	0	26	24	27	1	26	40	20	6	0	55	38	7	12	28	51	7	11	13	38	15	26	1	21	-5	11
3	14	45	11	0	18	56	6	5	4	42	59	4	11	39	48	11	25	50	9	0	26	38	38	1	27	6	49	6	0	51	21	7	12	25	40	7	11	10	56	15	44	-3	55	-4	49
4	14	49	8	0	19	54	15	5	19	27	13	4	11	52	16	11	27	22	50	0	26	52	48	1	27	31	37	6	0	47	7	7	12	22	30	7	11	8	8	16	1	-9	7	-4	8
5	14	53	4	0	20	52	22	6	4	29	54	4	12	5	15	11	28	57	28	0	27	7	0	1	27	54	41	6	0	42	55	7	12	19	19	7	11	5	42	16	18	-13	53	-3	8
6	14	57	1	0	21	50	27	6	19	42	37	4	12	18	46	0	0	34	3	0	27	21	12	1	28	15	57	6	0	38	46	7	12	16	8	7	11	4	0	16	35	-17	48	-1	55
7	15	0	57	0	22	48	31	7	4	55	33	4	12	32	47	0	2	12	34	0	27	35	24	1	28	35	21	6	0	34	40	7	12	12	57	7	11	3	14	16	52	-20	28	-0	34
8	15	4	54	0	23	46	33	7	19	59	6	4	12	47	18	0	3	53	0	0	27	49	37	1	28	52	51	6	0	30	37	7	12	9	47	7	11	3	22	17	8	-21	40	0	49
9	15	8	50	0	24	44	34	8	4	45	13	4	13	2	17	0	5	35	24	0	28	3	50	1	29	8	23	6	0	26	37	7	12	6	36	7	11	4	9	17	24	-21	18	2	8
10	15	12	47	0	25	42	33	8	19	8	17	4	13	17	46	0	7	19	43	0	28	18	3	1	29	21	53	6	0	22	40	7	12	3	25	7	11	5	15	17	40	-19	32	3	16
11	15	16	43	0	26	40	31	9	3	5	30	4	13	33	42	0	9	6	0	0	28	32	16	1	29	33	18	6	0	18	46	7	12	0	14	7	11	6	18	17	56	-16	39	4	10
12	15	20	40	0	27	38	27	9	16	36	31	4	13	50	6	0	10	54	13	0	28	46	30	1	29	42	34	6	0	14	56	7	11	57	3	7	11	6	59	18	11	-12	56	4	49
13	15	24	37	0	28	36	22	9	29	42	55	4	14	6	57	0	12	44	24	0	29	0	43	1	29	49	39	6	0	11	9	7	11	53	53	7	11	7	7	18	26	-8	42	5	11
14	15	28	33	0	29	34	16	10	12	27	34	4	14	24	15	0	14	36	31	0	29	14	56	1	29	54	30	6	0	7	25	7	11	50	42	7	11	6	41	18	40	-4	13	5	17
15	15	32	30	1	0	32	9	10	24	53	58	4	14	41	58	0	16	30	35	0	29	29	10	1	29	57	4	6	0	3	46	7	11	47	31	7	11	5	47	18	55	0	21	5	8
16	15	36	26	1	1	30	1	11	7	5	52	4	15	0	8	0	18	26	35	0	29	43	23	1	29	57	18	6	0	0	10	7	11	44	20	7	11	4	34	19	9	4	49	4	45
17	15	40	23	1	2	27	51	11	19	6	57	4	15	18	42	0	20	24	28	0	29	57	36	1	29	55	11	5	29	56	38	7	11	41	10	7	11	3	18	19	22	9	2	4	10
18	15	44	19	1	3	25	40	0	1	0	33	4	15	37	41	0	22	24	13	1	0	11	48	1	29	50	41	5	29	53	10	7	11	37	59	7	11	2	9	19	35	12	52	3	24
19	15	48	16	1	4	23	28	0	12	49	40	4	15	57	4	0	24	25	47	1	0	26	1	1	29	43	47	5	29	49	46	7	11	34	48	7	11	1	17	19	48	16	10	2	30
20	15	52	12	1	5	21	15	0	24	37	0	4	16	16	51	0	26	29	4	1	0	40	12	1	29	34	28	5	29	46	26	7	11	31	37	7	11	0	46	20	1	18	49	1	30
21	15	56	9	1	6	19	0	1	6	24	57	4	16	37	1	0	28	34	1	1	0	54	23	1	29	22	43	5	29	43	11	7	11	28	26	7	11	0	35	20	13	20	40	0	26
22	16	0	6	1	7	16	44	1	18	15	50	4	16	57	35	1	0	40	29	1	1	8	34	1	29	8	35	5	29	40	1	7	11	25	16	7	11	0	40	20	25	21	36	-0	40
23	16	4	2	1	8	14	27	2	0	11	51	4	17	18	30	1	2	48	20	1	1	22	44	1	28	52	3	5	29	36	54	7	11	22	5	7	11	0	54	20	37	21	34	-1	45
24	16	7	59	1	9	12	8	2	12	15	20	4	17	39	48	1	4	57	26	1	1	36	53	1	28	33	10	5	29	33	53	7	11	18	54	7	11	1	10	20	48	20	32	-2	45
25	16	11	55	1	10	9	48	2	24	28	46	4	18	1	27	1	7	7	34	1	1	51	1	1	28	12	1	5	29	30	56	7	11	15	43	7	11	1	21	20	59	18	32	-3	39
26	16	15	52	1	11	7	26	3	6	54	51	4	18	23	27	1	9	18	31	1	2	5	8	1	27	48	38	5	29	28	4	7	11	12	33	7	11	1	25	21	9	15	39	-4	23
27	16	19	48	1	12	5	3	3	19	36	27	4	18	45	48	1	11	30	4	1	2	19	14	1	27	23	7	5	29	25	16	7	11	9	22	7	11	1	21	21	20	12	0	-4	56
28	16	23	45	1	13	2	38	4	2	36	26	4	19	8	28	1	13	41	58	1	2	33	19	1	26	55	36	5	29	22	34	7	11	6	11	7	11	1	13	21	29	7	42	-5	14
29	16	27	41	1	14	0	12	4	15	57	22	4	19	31	29	1	15	53	55	1	2	47	23	1	26	26	11	5	29	19	57	7	11	3	0	7	11	1	7	21	39	2	56	-5	17
30	16	31	38	1	14	57	44	4	29	41	2	4	19	54	48	1	18	5	40	1	3	1	25	1	25	55	2	5	29	17	25	7	10	59	49	7	11	1	9	21	48	-2	7	-5	1
31	16	35	35	1	15	55	15	5	13	48	2	4	20	18	27	1	20	16	57	1	3	15	27	1	25	22	18	5	29	14	58	7	10	56	39	7	11	1	21	21	56	-7	12	-4	27

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टैं.टा.), 1 जून 2012 ई. को अयनांश 24° 2' 4"

दिन	सम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्यक्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	16	39	31	1	16	52	45	5	28	17	4	4	20	42	23	1	22	27	28	1	3	29	26	1	24	48	11	5	29	12	36	7	10	53	28	7	11	1	44	22	5	-12	2	-3	36
2	16	43	28	1	17	50	14	6	13	4	41	4	21	6	38	1	24	36	58	1	3	43	25	1	24	12	54	5	29	10	19	7	10	50	17	7	11	2	12	22	13	-16	14	-2	29
3	16	47	24	1	18	47	41	6	28	5	3	4	21	31	10	1	26	45	14	1	3	57	22	1	23	36	38	5	29	8	8	7	10	47	6	7	11	2	35	22	20	-19	27	-1	11
4	16	51	21	1	19	45	7	7	13	10	28	4	21	55	59	1	28	52	1	1	4	11	18	1	22	59	38	5	29	6	1	7	10	43	55	7	11	2	42	22	27	-21	19	0	12
5	16	55	17	1	20	42	32	7	28	12	11	4	22	21	6	2	0	57	8	1	4	25	12	1	22	22	9	5	29	4	1	7	10	40	45	7	11	2	25	22	34	-21	39	1	34
6	16	59	14	1	21	39	57	8	13	1	39	4	22	46	28	2	3	0	25	1	4	39	4	1	21	44	25	5	29	2	6	7	10	37	34	7	11	1	39	22	40	-20	27	2	48
7	17	3	10	1	22	37	20	8	27	31	45	4	23	12	7	2	5	1	43	1	4	52	55	1	21	6	40	5	29	0	16	7	10	34	23	7	11	0	28	22	46	-17	55	3	50
8	17	7	7	1	23	34	43	9	11	37	31	4	23	38	2	2	7	0	55	1	5	6	43	1	20	29	11	5	28	58	31	7	10	31	12	7	10	59	1	22	52	-14	23	4	36
9	17	11	4	1	24	32	5	9	25	16	38	4	24	4	13	2	8	57	55	1	5	20	30	1	19	52	11	5	28	56	53	7	10	28	1	7	10	57	34	22	57	-10	12	5	5
10	17	15	0	1	25	29	27	10	8	29	12	4	24	30	39	2	10	52	39	1	5	34	16	1	19	15	56	5	28	55	20	7	10	24	51	7	10	56	23	23	1	-5	39	5	17
11	17	18	57	1	26	26	48	10	21	17	18	4	24	57	21	2	12	45	2	1	5	47	59	1	18	40	37	5	28	53	52	7	10	21	40	7	10	55	43	23	6	-0	59	5	12
12	17	22	53	1	27	24	9	11	3	44	24	4	25	24	17	2	14	35	1	1	6	1	40	1	18	6	29	5	28	52	30	7	10	18	29	7	10	55	42	23	10	3	35	4	52
13	17	26	50	1	28	21	29	11	15	54	46	4	25	51	28	2	16	22	36	1	6	15	19	1	17	33	43	5	28	51	14	7	10	15	18	7	10	56	22	23	13	7	55	4	20
14	17	30	46	1	29	18	49	11	27	52	59	4	26	18	54	2	18	7	43	1	6	28	56	1	17	2	30	5	28	50	4	7	10	12	7	7	10	57	34	23	16	11	53	3	37
15	17	34	43	2	0	16	8	0	9	43	35	4	26	46	34	2	19	50	22	1	6	42	31	1	16	33	0	5	28	49	0	7	10	8	56	7	10	59	3	23	19	15	21	2	45
16	17	38	39	2	1	13	27	0	21	30	47	4	27	14	28	2	21	30	32	1	6	56	3	1	16	5	22	5	28	48	1	7	10	5	46	7	11	0	29	23	21	18	11	1	46
17	17	42	36	2	2	10	46	1	3	18	23	4	27	42	37	2	23	8	11	1	7	9	33	1	15	39	43	5	28	47	8	7	10	2	35	7	11	1	29	23	23	20	15	0	43
18	17	46	33	2	3	8	4	1	15	9	41	4	28	10	59	2	24	43	18	1	7	23	0	1	15	16	9	5	28	46	21	7	9	59	24	7	11	1	42	23	24	21	27	-0	23
19	17	50	29	2	4	5	21	1	27	7	25	4	28	39	35	2	26	15	54	1	7	36	25	1	14	54	46	5	28	45	40	7	9	56	13	7	11	0	53	23	25	21	41	-1	28
20	17	54	26	2	5	2	39	2	9	13	46	4	29	8	23	2	27	45	55	1	7	49	47	1	14	35	38	5	28	45	5	7	9	53	2	7	10	58	56	23	26	20	55	-2	29
21	17	58	22	2	5	59	55	2	21	30	28	4	29	37	26	2	29	13	21	1	8	3	7	1	14	18	49	5	28	44	36	7	9	49	52	7	10	55	54	23	26	19	9	-3	25
22	18	2	19	2	6	57	12	3	3	58	49	5	0	6	40	3	0	38	11	1	8	16	23	1	14	4	20	5	28	44	13	7	9	46	41	7	10	52	4	23	26	16	27	-4	11
23	18	6	15	2	7	54	27	3	16	39	56	5	0	36	8	3	2	0	21	1	8	29	37	1	13	52	13	5	28	43	56	7	9	43	30	7	10	47	52	23	25	12	57	-4	46
24	18	10	12	2	8	51	42	3	29	34	44	5	1	5	48	3	3	19	51	1	8	42	47	1	13	42	29	5	28	43	45	7	9	40	19	7	10	43	50	23	24	8	48	-5	8
25	18	14	8	2	9	48	57	4	12	44	12	5	1	35	40	3	4	36	38	1	8	55	55	1	13	35	8	5	28	43	40	7	9	37	8	7	10	40	31	23	23	4	10	-5	13
26	18	18	5	2	10	46	10	4	26	9	12	5	2	5	44	3	5	50	38	1	9	8	59	1	13	30	10	5	28	43	41	7	9	33	58	7	10	38	19	23	21	-0	45	-5	2
27	18	22	2	2	11	43	24	5	9	50	27	5	2	36	0	3	7	1	48	1	9	22	0	1	13	27	32	5	28	43	48	7	9	30	47	7	10	37	27	23	19	-5	44	-4	34
28	18	25	58	2	12	40	36	5	23	48	12	5	3	6	27	3	8	10	4	1	9	34	58	1	13	27	14	5	28	44	1	7	9	27	36	7	10	37	47	23	16	-10	31	-3	49
29	18	29	55	2	13	37	48	6	8	1	59	5	3	37	5	3	9	15	23	1	9	47	53	1	13	29	14	5	28	44	20	7	9	24	25	7	10	38	54	23	13	-14	50	-2	49
30	18	33	51	2	14	35	0	6	22	30	6	5	4	7	55	3	10	17	38	1	10	0	44	1	13	33	29	5	28	44	44	7	9	21	14	7	10	40	11	23	9	-18	20	-1	38

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जुलाई 2012 ई. को अयनांश 24° 2' 10"

जुलाई	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	18 37 48	2 15 32 12	7 7 9 21	5 4 38 55	3 11 16 46	1 10 13 31	1 13 39 56	5 28 45 15	7 9 18 4	7 10 40 55	23 5	-20 43	- 0 19
2	18 41 44	2 16 29 23	7 21 54 52	5 5 10 6	3 12 12 39	1 10 26 15	1 13 48 34	5 28 45 52	7 9 14 53	7 10 40 27	23 1	-21 41	1 1
3	18 45 41	2 17 26 34	8 6 40 18	5 5 41 28	3 13 5 12	1 10 38 56	1 13 59 18	5 28 46 35	7 9 11 42	7 10 38 22	22 56	-21 9	2 17
4	18 49 37	2 18 23 44	8 21 18 34	5 6 12 59	3 13 54 17	1 10 51 32	1 14 12 6	5 28 47 23	7 9 8 31	7 10 34 37	22 51	-19 11	3 23
5	18 53 34	2 19 20 55	9 5 42 41	5 6 44 41	3 14 39 48	1 11 4 5	1 14 26 55	5 28 48 18	7 9 5 20	7 10 29 28	22 46	-16 2	4 15
6	18 57 31	2 20 18 6	9 19 46 55	5 7 16 33	3 15 21 37	1 11 16 34	1 14 43 39	5 28 49 18	7 9 2 10	7 10 23 30	22 40	-12 2	4 51
7	19 1 27	2 21 15 17	10 3 27 26	5 7 48 35	3 15 59 36	1 11 29 0	1 15 2 18	5 28 50 24	7 8 58 59	7 10 17 28	22 34	- 7 31	5 8
8	19 5 24	2 22 12 28	10 16 42 46	5 8 20 47	3 16 33 38	1 11 41 21	1 15 22 45	5 28 51 36	7 8 55 48	7 10 12 6	22 27	- 2 47	5 8
9	19 9 20	2 23 9 39	10 29 33 42	5 8 53 9	3 17 3 34	1 11 53 38	1 15 44 59	5 28 52 54	7 8 52 37	7 10 8 0	22 20	1 56	4 53
10	19 13 17	2 24 6 51	11 12 2 51	5 9 25 40	3 17 29 17	1 12 5 51	1 16 8 55	5 28 54 18	7 8 49 26	7 10 5 30	22 12	6 27	4 24
11	19 17 13	2 25 4 4	11 24 14 12	5 9 58 21	3 17 50 38	1 12 18 0	1 16 34 30	5 28 55 47	7 8 46 16	7 10 4 36	22 5	10 36	3 43
12	19 21 10	2 26 1 16	0 6 12 31	5 10 31 11	3 18 7 31	1 12 30 4	1 17 1 39	5 28 57 22	7 8 43 5	7 10 5 0	21 56	14 16	2 53
13	19 25 6	2 26 58 30	0 18 2 56	5 11 4 11	3 18 19 49	1 12 42 4	1 17 30 21	5 28 59 3	7 8 39 54	7 10 6 9	21 48	17 19	1 57
14	19 29 3	2 27 55 44	0 29 50 33	5 11 37 20	3 18 27 26	1 12 54 0	1 18 0 31	5 29 0 50	7 8 36 43	7 10 7 19	21 39	19 38	0 55
15	19 33 0	2 28 52 58	1 11 40 13	5 12 10 39	3 18 30 17	1 13 5 51	1 18 32 5	5 29 2 43	7 8 33 32	7 10 7 45	21 29	21 7	- 0 8
16	19 36 56	2 29 50 13	1 23 36 13	5 12 44 7	3 18 28 20	1 13 17 37	1 19 5 1	5 29 4 41	7 8 30 22	7 10 6 43	21 20	21 40	- 1 12
17	19 40 53	3 0 47 28	2 5 42 4	5 13 17 43	3 18 21 33	1 13 29 18	1 19 39 16	5 29 6 45	7 8 27 11	7 10 3 45	21 10	21 13	- 2 13
18	19 44 49	3 1 44 44	2 18 0 26	5 13 51 29	3 18 9 58	1 13 40 55	1 20 14 46	5 29 8 55	7 8 24 0	7 9 58 37	20 59	19 45	- 3 9
19	19 48 46	3 2 42 1	3 0 33 0	5 14 25 24	3 17 53 40	1 13 52 26	1 20 51 28	5 29 11 10	7 8 20 49	7 9 51 28	20 48	17 19	- 3 57
20	19 52 42	3 3 39 18	3 13 20 23	5 14 59 27	3 17 32 47	1 14 3 52	1 21 29 20	5 29 13 31	7 8 17 38	7 9 42 49	20 37	14 0	- 4 34
21	19 56 39	3 4 36 35	3 26 22 22	5 15 33 40	3 17 7 32	1 14 15 13	1 22 8 18	5 29 15 58	7 8 14 28	7 9 33 28	20 26	9 58	- 4 58
22	20 0 35	3 5 33 53	4 9 37 57	5 16 8 0	3 16 38 11	1 14 26 29	1 22 48 21	5 29 18 30	7 8 11 17	7 9 24 25	20 14	5 25	- 5 5
23	20 4 32	3 6 31 11	4 23 5 49	5 16 42 29	3 16 5 6	1 14 37 40	1 23 29 26	5 29 21 7	7 8 8 6	7 9 16 36	20 2	0 31	- 4 57
24	20 8 29	3 7 28 30	5 6 44 37	5 17 17 7	3 15 28 44	1 14 48 45	1 24 11 30	5 29 23 50	7 8 4 55	7 9 10 48	19 49	- 4 27	- 4 31
25	20 12 25	3 8 25 48	5 20 33 11	5 17 51 52	3 14 49 35	1 14 59 44	1 24 54 32	5 29 26 38	7 8 1 44	7 9 7 20	19 36	- 9 17	- 3 50
26	20 16 22	3 9 23 7	6 4 30 37	5 18 26 46	3 14 8 15	1 15 10 38	1 25 38 29	5 29 29 32	7 7 58 34	7 9 6 1	19 23	-13 40	- 2 54
27	20 20 18	3 10 20 27	6 18 36 10	5 19 1 48	3 13 25 24	1 15 21 26	1 26 23 20	5 29 32 31	7 7 55 23	7 9 6 12	19 10	-17 20	- 1 47
28	20 24 15	3 11 17 47	7 2 48 52	5 19 36 57	3 12 41 46	1 15 32 8	1 27 9 2	5 29 35 36	7 7 52 12	7 9 6 49	18 56	-20 0	- 0 34
29	20 28 11	3 12 15 7	7 17 7 15	5 20 12 14	3 11 58 5	1 15 42 44	1 27 55 34	5 29 38 45	7 7 49 1	7 9 6 43	18 42	-21 24	0 43
30	20 32 8	3 13 12 28	8 1 28 51	5 20 47 39	3 11 15 11	1 15 53 14	1 28 42 53	5 29 42 0	7 7 45 51	7 9 4 51	18 27	-21 25	1 56
31	20 36 4	3 14 9 50	8 15 50 3	5 21 23 11	3 10 33 49	1 16 3 38	1 29 30 59	5 29 45 20	7 7 42 40	7 9 0 31	18 13	-20 2	3 3

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अगस्त 2012 ई. को अयनांश 24° 2' 15"

अगस्त	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	20	40	1	3	15	7	12	9	0	6	14	5	21	58	50	3	9	54	49	1	16	13	56	2	0	19	50	5	29	48	45	7	7	39	29	7	8	53	34	17	58	-17	24	3	57
2	20	43	58	3	16	4	35	9	14	12	12	5	22	34	37	3	9	18	55	1	16	24	8	2	1	9	25	5	29	52	15	7	7	36	18	7	8	44	23	17	42	-13	46	4	36
3	20	47	54	3	17	1	59	9	28	2	59	5	23	10	31	3	8	46	49	1	16	34	14	2	1	59	41	5	29	55	49	7	7	33	7	7	8	33	48	17	27	-9	27	4	58
4	20	51	51	3	17	59	24	10	11	34	40	5	23	46	32	3	8	19	10	1	16	44	13	2	2	50	38	5	29	59	29	7	7	29	57	7	8	22	54	17	11	-4	46	5	2
5	20	55	47	3	18	56	50	10	24	44	58	5	24	22	41	3	7	56	33	1	16	54	5	2	3	42	14	6	0	3	14	7	7	26	46	7	8	12	48	16	55	0	1	4	50
6	20	59	44	3	19	54	16	11	7	33	32	5	24	58	57	3	7	39	28	1	17	3	51	2	4	34	28	6	0	7	4	7	7	23	35	7	8	4	23	16	38	4	40	4	24
7	21	3	40	3	20	51	45	11	20	1	55	5	25	35	20	3	7	28	20	1	17	13	30	2	5	27	19	6	0	10	58	7	7	20	24	7	7	58	14	16	22	9	1	3	46
8	21	7	37	3	21	49	14	0	2	13	12	5	26	11	50	3	7	23	30	1	17	23	2	2	6	20	45	6	0	14	57	7	7	17	14	7	7	54	27	16	5	12	53	2	58
9	21	11	33	3	22	46	45	0	14	11	39	5	26	48	27	3	7	25	16	1	17	32	28	2	7	14	45	6	0	19	1	7	7	14	3	7	7	52	41	15	48	16	11	2	2
10	21	15	30	3	23	44	17	0	26	2	18	5	27	25	11	3	7	33	48	1	17	41	46	2	8	9	19	6	0	23	10	7	7	10	52	7	7	52	16	15	30	18	46	1	3
11	21	19	27	3	24	41	50	1	7	50	34	5	28	2	2	3	7	49	15	1	17	50	57	2	9	4	24	6	0	27	23	7	7	7	41	7	7	52	15	15	12	20	32	0	0
12	21	23	23	3	25	39	25	1	19	41	53	5	28	39	0	3	8	11	43	1	18	0	1	2	10	0	1	6	0	31	41	7	7	4	31	7	7	51	38	14	55	21	25	-1	2
13	21	27	20	3	26	37	1	2	1	41	25	5	29	16	5	3	8	41	12	1	18	8	57	2	10	56	6	6	0	36	4	7	7	1	20	7	7	49	28	14	36	21	19	-2	3
14	21	31	16	3	27	34	39	2	13	53	37	5	29	53	17	3	9	17	41	1	18	17	46	2	11	52	41	6	0	40	31	7	6	58	9	7	7	45	3	14	18	20	14	-2	59
15	21	35	13	3	28	32	18	2	26	22	2	6	0	30	37	3	10	1	5	1	18	26	28	2	12	49	44	6	0	45	2	7	6	54	58	7	7	38	2	13	59	18	9	-3	47
16	21	39	9	3	29	29	59	3	9	8	52	6	1	8	3	3	10	51	18	1	18	35	1	2	13	47	13	6	0	49	38	7	6	51	48	7	7	28	33	13	40	15	8	-4	25
17	21	43	6	4	0	27	41	3	22	14	51	6	1	45	35	3	11	48	8	1	18	43	27	2	14	45	8	6	0	54	18	7	6	48	37	7	7	17	11	13	21	11	20	-4	51
18	21	47	2	4	1	25	24	4	5	39	5	6	2	23	15	3	12	51	26	1	18	51	44	2	15	43	29	6	0	59	2	7	6	45	26	7	7	4	54	13	2	6	53	-5	1
19	21	50	59	4	2	23	8	4	19	19	11	6	3	1	1	3	14	0	56	1	18	59	54	2	16	42	14	6	1	3	51	7	6	42	15	7	6	52	54	12	42	2	1	-4	54
20	21	54	56	4	3	20	54	5	3	11	42	6	3	38	54	3	15	16	22	1	19	7	55	2	17	41	22	6	1	8	44	7	6	39	5	7	6	42	23	12	23	-3	1	-4	30
21	21	58	52	4	4	18	41	5	17	12	48	6	4	16	53	3	16	37	25	1	19	15	48	2	18	40	53	6	1	13	41	7	6	35	54	7	6	34	15	12	3	-7	58	-3	49
22	22	2	49	4	5	16	29	6	1	18	52	6	4	54	59	3	18	3	46	1	19	23	33	2	19	40	46	6	1	18	42	7	6	32	43	7	6	28	58	11	43	-12	30	-2	54
23	22	6	45	4	6	14	19	6	15	27	1	6	5	33	11	3	19	35	0	1	19	31	9	2	20	41	1	6	1	23	47	7	6	29	32	7	6	26	21	11	22	-16	22	-1	49
24	22	10	42	4	7	12	9	6	29	35	13	6	6	11	30	3	21	10	45	1	19	38	37	2	21	41	37	6	1	28	56	7	6	26	22	7	6	25	39	11	2	-19	16	-0	36
25	22	14	38	4	8	10	1	7	13	42	15	6	6	49	55	3	22	50	33	1	19	45	55	2	22	42	34	6	1	34	9	7	6	23	11	7	6	25	43	10	41	-20	58	0	38
26	22	18	35	4	9	7	54	7	27	47	12	6	7	28	25	3	24	33	59	1	19	53	5	2	23	43	50	6	1	39	26	7	6	20	0	7	6	25	9	10	20	-21	21	1	50
27	22	22	31	4	10	5	48	8	11	49	5	6	8	7	2	3	26	20	34	1	20	0	6	2	24	45	26	6	1	44	47	7	6	16	49	7	6	22	45	10	0	-20	23	2	55
28	22	26	28	4	11	3	44	8	25	46	26	6	8	45	45	3	28	9	52	1	20	6	59	2	25	47	21	6	1	50	11	7	6	13	39	7	6	17	43	9	38	-18	11	3	50
29	22	30	25	4	12	1	40	9	9	37	8	6	9	24	34	4	0	1	25	1	20	13	42	2	26	49	35	6	1	55	39	7	6	10	28	7	6	9	48	9	17	-14	58	4	30
30	22	34	21	4	12	59	39	9	23	18	26	6	10	3	29	4	1	54	47	1	20	20	15	2	27	52	6	6	2	1	10	7	6	7	17	7	5	59	21	8	56	-10	58	4	54
31	22	38	18	4	13	57	38	10	6	47	24	6	10	42	30	4	3	49	36	1	20	26	40	2	28	54	56	6	2	6	45	7	6	4	7	7	5	47	16	8	34	-6	29	5	1

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 सितंबर 2012 ई. को अयनांश 24° 2' 18"

सितंबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	राअं. क. वि.	रा.अं. क. वि.	रा.अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	22 42 14	4 14 55 39	10 20 1 20	6 11 21 36	4 5 45 26	1 20 32 55	2 29 58 3	6 2 12 23	7 6 0 56	7 5 34 43	8 12	-1 47	4 51
2	22 46 11	4 15 53 42	11 2 58 21	6 12 0 49	4 7 41 59	1 20 39 1	3 1 1 28	6 2 18 5	7 5 57 45	7 5 22 56	7 51	2 54	4 27
3	22 50 7	4 16 51 47	11 15 37 49	6 12 40 7	4 9 38 55	1 20 44 57	3 2 5 9	6 2 23 50	7 5 54 34	7 5 12 55	7 29	7 21	3 50
4	22 54 4	4 17 49 53	11 28 0 30	6 13 19 31	4 11 35 59	1 20 50 44	3 3 9 6	6 2 29 38	7 5 51 24	7 5 5 20	7 7	11 25	3 3
5	22 58 0	4 18 48 1	0 10 8 32	6 13 59 1	4 13 32 56	1 20 56 20	3 4 13 19	6 2 35 30	7 5 48 13	7 5 0 25	6 44	14 55	2 8
6	23 1 57	4 19 46 11	0 22 5 18	6 14 38 37	4 15 29 34	1 21 1 47	3 5 17 48	6 2 41 25	7 5 45 2	7 4 57 54	6 22	17 45	1 8
7	23 5 54	4 20 44 24	1 3 55 5	6 15 18 18	4 17 25 43	1 21 7 4	3 6 22 32	6 2 47 23	7 5 41 51	7 4 57 9	6 0	19 48	0 6
8	23 9 50	4 21 42 38	1 15 42 56	6 15 58 5	4 19 21 16	1 21 12 10	3 7 27 32	6 2 53 24	7 5 38 41	7 4 57 13	5 37	20 58	-0 57
9	23 13 47	4 22 40 54	1 27 34 15	6 16 37 58	4 21 16 4	1 21 17 7	3 8 32 45	6 2 59 28	7 5 35 30	7 4 57 7	5 15	21 13	-1 57
10	23 17 43	4 23 39 12	2 9 34 31	6 17 17 57	4 23 10 3	1 21 21 53	3 9 38 13	6 3 5 35	7 5 32 19	7 4 55 51	4 52	20 30	-2 53
11	23 21 40	4 24 37 33	2 21 48 55	6 17 58 2	4 25 3 7	1 21 26 28	3 10 43 54	6 3 11 45	7 5 29 9	7 4 52 41	4 29	18 49	-3 42
12	23 25 36	4 25 35 55	3 4 21 54	6 18 38 13	4 26 55 15	1 21 30 53	3 11 49 49	6 3 17 58	7 5 25 58	7 4 47 10	4 6	16 12	-4 22
13	23 29 33	4 26 34 20	3 17 16 45	6 19 18 29	4 28 46 23	1 21 35 7	3 12 55 57	6 3 24 14	7 5 22 47	7 4 39 20	3 43	12 44	-4 50
14	23 33 29	4 27 32 46	4 0 35 3	6 19 58 51	5 0 36 29	1 21 39 10	3 14 2 18	6 3 30 32	7 5 19 36	7 4 29 41	3 20	8 33	-5 3
15	23 37 26	4 28 31 15	4 14 16 20	6 20 39 19	5 2 25 33	1 21 43 3	3 15 8 51	6 3 36 53	7 5 16 26	7 4 19 5	2 57	3 50	-4 59
16	23 41 23	4 29 29 45	4 28 17 56	6 21 19 52	5 4 13 33	1 21 46 44	3 16 15 36	6 3 43 17	7 5 13 15	7 4 8 36	2 34	-1 12	-4 37
17	23 45 19	5 0 28 17	5 12 35 13	6 22 0 31	5 6 0 30	1 21 50 15	3 17 22 32	6 3 49 44	7 5 10 4	7 3 59 22	2 11	-6 16	-3 58
18	23 49 16	5 1 26 52	5 27 2 17	6 22 41 16	5 7 46 24	1 21 53 34	3 18 29 41	6 3 56 12	7 5 6 54	7 3 52 14	1 48	-11 3	-3 3
19	23 53 12	5 2 25 28	6 11 32 56	6 23 22 6	5 9 31 15	1 21 56 42	3 19 37 0	6 4 2 44	7 5 3 43	7 3 47 41	1 24	-15 12	-1 56
20	23 57 9	5 3 24 5	6 26 1 36	6 24 3 1	5 11 15 4	1 21 59 39	3 20 44 30	6 4 9 17	7 5 0 32	7 3 45 36	1 1	-18 25	-0 41
21	0 1 5	5 4 22 45	7 10 24 3	6 24 44 2	5 12 57 51	1 22 2 24	3 21 52 12	6 4 15 53	7 4 57 21	7 3 45 24	0 38	-20 27	0 36
22	0 5 2	5 5 21 26	7 24 37 31	6 25 25 8	5 14 39 38	1 22 4 58	3 23 0 3	6 4 22 31	7 4 54 11	7 3 46 3	0 14	-21 8	1 49
23	0 8 58	5 6 20 9	8 8 40 34	6 26 6 19	5 16 20 26	1 22 7 20	3 24 8 5	6 4 29 11	7 4 51 0	7 3 46 25	-0 9	-20 29	2 56
24	0 12 55	5 7 18 53	8 22 32 35	6 26 47 36	5 18 0 15	1 22 9 31	3 25 16 17	6 4 35 53	7 4 47 49	7 3 45 24	-0 32	-18 35	3 51
25	0 16 52	5 8 17 39	9 6 13 22	6 27 28 57	5 19 39 6	1 22 11 30	3 26 24 40	6 4 42 38	7 4 44 39	7 3 42 18	-0 56	-15 40	4 32
26	0 20 48	5 9 16 27	9 19 42 42	6 28 10 24	5 21 17 1	1 22 13 17	3 27 33 12	6 4 49 24	7 4 41 28	7 3 36 52	-1 19	-11 57	4 57
27	0 24 45	5 10 15 17	10 3 0 15	6 28 51 56	5 22 54 0	1 22 14 53	3 28 41 54	6 4 56 12	7 4 38 17	7 3 29 20	-1 42	-7 42	5 6
28	0 28 41	5 11 14 8	10 16 5 27	6 29 33 33	5 24 30 5	1 22 16 17	3 29 50 45	6 5 3 2	7 4 35 6	7 3 20 24	-2 6	-3 9	4 59
29	0 32 38	5 12 13 2	10 28 57 41	7 0 15 14	5 26 5 16	1 22 17 29	4 0 59 46	6 5 9 53	7 4 31 56	7 3 11 1	-2 29	1 27	4 36
30	0 36 34	5 13 11 57	11 11 36 31	7 0 57 1	5 27 39 34	1 22 18 30	4 2 8 56	6 5 16 47	7 4 28 45	7 3 2 9	-2 52	5 55	4 0

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अक्तूबर 2012 ई. को अयनांश 24° 2' 21"

अक्तूबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा.अं. क. वि.	रा.अं. क. वि.	रा.अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	0 40 31	5 14 10 54	11 24 2 0	7 1 38 53	5 29 13 0	1 22 19 18	4 3 18 15	6 5 23 42	7 4 25 34	7 2 54 40	-3 16	10 4	3 14
2	0 44 27	5 15 9 53	0 6 14 51	7 2 20 49	6 0 45 34	1 22 19 55	4 4 27 44	6 5 30 38	7 4 22 23	7 2 49 10	-3 39	13 44	2 18
3	0 48 24	5 16 8 54	0 18 16 40	7 3 2 51	6 2 17 18	1 22 20 19	4 5 37 21	6 5 37 36	7 4 19 13	7 2 45 52	-4 2	16 46	1 18
4	0 52 21	5 17 7 58	1 0 9 55	7 3 44 57	6 3 48 11	1 22 20 32	4 6 47 8	6 5 44 36	7 4 16 2	7 2 44 37	-4 25	19 3	0 14
5	0 56 17	5 18 7 4	1 11 57 58	7 4 27 8	6 5 18 13	1 22 20 32	4 7 57 3	6 5 51 37	7 4 12 51	7 2 44 59	-4 48	20 29	-0 50
6	1 0 14	5 19 6 12	1 23 44 52	7 5 9 25	6 6 47 25	1 22 20 21	4 9 7 6	6 5 58 39	7 4 9 41	7 2 46 17	-5 11	21 1	-1 52
7	1 4 10	5 20 5 22	2 5 35 19	7 5 51 46	6 8 15 46	1 22 19 57	4 10 17 18	6 6 5 43	7 4 6 30	7 2 47 47	-5 34	20 37	-2 49
8	1 8 7	5 21 4 35	2 17 34 22	7 6 34 12	6 9 43 17	1 22 19 21	4 11 27 37	6 6 12 48	7 4 3 19	7 2 48 42	-5 57	19 17	-3 40
9	1 12 3	5 22 3 50	2 29 47 12	7 7 16 43	6 11 9 56	1 22 18 33	4 12 38 5	6 6 19 54	7 4 0 8	7 2 48 26	-6 20	17 3	-4 21
10	1 16 0	5 23 3 7	3 12 18 46	7 7 59 19	6 12 35 44	1 22 17 33	4 13 48 41	6 6 27 1	7 3 56 58	7 2 46 36	-6 43	13 58	-4 52
11	1 19 56	5 24 2 27	3 25 13 13	7 8 42 0	6 14 0 38	1 22 16 21	4 14 59 24	6 6 34 10	7 3 53 47	7 2 43 10	-7 5	10 9	-5 9
12	1 23 53	5 25 1 49	4 8 33 28	7 9 24 46	6 15 24 37	1 22 14 56	4 16 10 14	6 6 41 19	7 3 50 36	7 2 38 24	-7 28	5 44	-5 10
13	1 27 50	5 26 1 13	4 22 20 27	7 10 7 37	6 16 47 40	1 22 13 20	4 17 21 12	6 6 48 29	7 3 47 25	7 2 32 51	-7 50	0 52	-4 53
14	1 31 46	5 27 0 39	5 6 32 39	7 10 50 33	6 18 9 43	1 22 11 31	4 18 32 16	6 6 55 40	7 3 44 15	7 2 27 13	-8 13	-4 11	-4 18
15	1 35 43	5 28 0 7	5 21 5 56	7 11 33 33	6 19 30 46	1 22 9 30	4 19 43 28	6 7 2 52	7 3 41 4	7 2 22 14	-8 35	-9 8	-3 26
16	1 39 39	5 28 59 38	6 5 53 52	7 12 16 38	6 20 50 43	1 22 7 17	4 20 54 46	6 7 10 4	7 3 37 53	7 2 18 32	-8 57	-13 37	-2 19
17	1 43 36	5 29 59 10	6 20 48 33	7 12 59 48	6 22 9 32	1 22 4 52	4 22 6 10	6 7 17 17	7 3 34 43	7 2 16 24	-9 19	-17 17	-1 2
18	1 47 32	6 0 58 45	7 5 41 52	7 13 43 2	6 23 27 7	1 22 2 16	4 23 17 41	6 7 24 31	7 3 31 32	7 2 15 50	-9 41	-19 47	0 19
19	1 51 29	6 1 58 21	7 20 26 37	7 14 26 21	6 24 43 25	1 21 59 27	4 24 29 18	6 7 31 45	7 3 28 21	7 2 16 30	-10 3	-20 55	1 38
20	1 55 25	6 2 57 59	8 4 57 19	7 15 9 45	6 25 58 18	1 21 56 27	4 25 41 1	6 7 39 0	7 3 25 10	7 2 17 49	-10 24	-20 36	2 50
21	1 59 22	6 3 57 39	8 19 10 36	7 15 53 13	6 27 11 40	1 21 53 15	4 26 52 50	6 7 46 14	7 3 22 0	7 2 19 6	-10 46	-18 58	3 50
22	2 3 19	6 4 57 21	9 3 4 59	7 16 36 45	6 28 23 23	1 21 49 52	4 28 4 45	6 7 53 30	7 3 18 49	7 2 19 44	-11 7	-16 14	4 35
23	2 7 15	6 5 57 4	9 16 40 26	7 17 20 22	6 29 33 19	1 21 46 17	4 29 16 45	6 8 0 45	7 3 15 38	7 2 19 19	-11 28	-12 41	5 3
24	2 11 12	6 6 56 49	9 29 57 54	7 18 4 3	7 0 41 17	1 21 42 31	5 0 28 51	6 8 8 0	7 3 12 27	7 2 17 41	-11 49	-8 34	5 14
25	2 15 8	6 7 56 36	10 12 58 47	7 18 47 48	7 1 47 6	1 21 38 34	5 1 41 2	6 8 15 16	7 3 9 17	7 2 14 57	-12 10	-4 9	5 9
26	2 19 5	6 8 56 24	10 25 44 44	7 19 31 37	7 2 50 32	1 21 34 26	5 2 53 19	6 8 22 31	7 3 6 6	7 2 11 29	-12 30	0 23	4 49
27	2 23 1	6 9 56 14	11 8 17 22	7 20 15 31	7 3 51 20	1 21 30 7	5 4 5 41	6 8 29 47	7 3 2 55	7 2 7 45	-12 51	4 49	4 14
28	2 26 58	6 10 56 6	11 20 38 14	7 20 59 28	7 4 49 13	1 21 25 37	5 5 18 8	6 8 37 2	7 2 59 44	7 2 4 15	-13 11	9 0	3 29
29	2 30 54	6 11 56 0	0 2 48 48	7 21 43 30	7 5 43 53	1 21 20 57	5 6 30 41	6 8 44 17	7 2 56 34	7 2 1 23	-13 31	12 45	2 34
30	2 34 51	6 12 55 55	0 14 50 36	7 22 27 36	7 6 34 56	1 21 16 6	5 7 43 18	6 8 51 32	7 2 53 23	7 1 59 28	-13 50	15 56	1 33
31	2 38 47	6 13 55 53	0 26 45 19	7 23 11 45	7 7 22 0	1 21 11 5	5 8 56 1	6 8 58 47	7 2 50 12	7 1 58 33	-14 10	18 25	0 29

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 नवंबर 2012 ई. को अयनांश 24° 2' 24"

नवंबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	2	42	44	6	14	55	52	1	8	34	59	7	23	55	59	7	8	4	37	1	21	5	54	5	10	8	49	6	9	6	1	7	2	47	1	7	1	58	37	-14	29	20	5	-0	37
2	2	46	41	6	15	55	54	1	20	22	3	7	24	40	17	7	8	42	17	1	21	0	33	5	11	21	42	6	9	13	15	7	2	43	51	7	1	59	25	-14	48	20	52	-1	40
3	2	50	37	6	16	55	57	2	2	9	31	7	25	24	39	7	9	14	28	1	20	55	2	5	12	34	39	6	9	20	28	7	2	40	40	7	2	0	41	-15	7	20	43	-2	40
4	2	54	34	6	17	56	2	2	14	0	51	7	26	9	5	7	9	40	32	1	20	49	22	5	13	47	41	6	9	27	41	7	2	37	29	7	2	2	4	-15	26	19	39	-3	33
5	2	58	30	6	18	56	10	2	26	0	1	7	26	53	35	7	9	59	53	1	20	43	32	5	15	0	48	6	9	34	53	7	2	34	18	7	2	3	17	-15	44	17	42	-4	17
6	3	2	27	6	19	56	19	3	8	11	20	7	27	38	9	7	10	11	51	1	20	37	33	5	16	14	0	6	9	42	5	7	2	31	8	7	2	4	5	-16	2	14	56	-4	51
7	3	6	23	6	20	56	31	3	20	39	17	7	28	22	47	7	10	15	45	1	20	31	25	5	17	27	15	6	9	49	15	7	2	27	57	7	2	4	22	-16	20	11	27	-5	11
8	3	10	20	6	21	56	45	4	3	28	12	7	29	7	29	7	10	10	56	1	20	25	9	5	18	40	35	6	9	56	25	7	2	24	46	7	2	4	8	-16	37	7	22	-5	18
9	3	14	16	6	22	57	1	4	16	41	44	7	29	52	15	7	9	56	51	1	20	18	44	5	19	53	59	6	10	3	34	7	2	21	35	7	2	3	29	-16	54	2	48	-5	7
10	3	18	13	6	23	57	19	5	0	22	16	8	0	37	4	7	9	33	1	1	20	12	10	5	21	7	27	6	10	10	42	7	2	18	25	7	2	2	39	-17	11	-2	4	-4	40
11	3	22	10	6	24	57	38	5	14	30	18	8	1	21	58	7	8	59	10	1	20	5	29	5	22	20	59	6	10	17	49	7	2	15	14	7	2	1	48	-17	28	-6	59	-3	55
12	3	26	6	6	25	58	0	5	29	3	46	8	2	6	56	7	8	15	18	1	19	58	41	5	23	34	35	6	10	24	55	7	2	12	3	7	2	1	8	-17	44	-11	40	-2	53
13	3	30	3	6	26	58	23	6	13	57	48	8	2	51	57	7	7	21	45	1	19	51	44	5	24	48	14	6	10	32	0	7	2	8	52	7	2	0	44	-18	0	-15	44	-1	39
14	3	33	59	6	27	58	48	6	29	5	1	8	3	37	3	7	6	19	18	1	19	44	41	5	26	1	57	6	10	39	3	7	2	5	41	7	2	0	37	-18	16	-18	49	-0	16
15	3	37	56	6	28	59	15	7	14	16	17	8	4	22	11	7	5	9	10	1	19	37	31	5	27	15	43	6	10	46	5	7	2	2	31	7	2	0	42	-18	32	-20	35	1	8
16	3	41	52	6	29	59	44	7	29	22	3	8	5	7	24	7	3	53	6	1	19	30	15	5	28	29	32	6	10	53	6	7	1	59	20	7	2	0	52	-18	47	-20	50	2	26
17	3	45	49	7	1	0	13	8	14	13	47	8	5	52	40	7	2	33	16	1	19	22	53	5	29	43	24	6	11	0	5	7	1	56	9	7	2	0	59	-19	1	-19	37	3	34
18	3	49	45	7	2	0	44	8	28	45	3	8	6	37	59	7	1	12	9	1	19	15	25	6	0	57	20	6	11	7	3	7	1	52	58	7	2	1	1	-19	16	-17	8	4	26
19	3	53	42	7	3	1	17	9	12	52	3	8	7	23	22	6	29	52	28	1	19	7	51	6	2	11	18	6	11	13	59	7	1	49	48	7	2	0	57	-19	30	-13	41	5	1
20	3	57	39	7	4	1	51	9	26	33	33	8	8	8	49	6	28	36	49	1	19	0	13	6	3	25	19	6	11	20	53	7	1	46	37	7	2	0	51	-19	44	-9	37	5	17
21	4	1	35	7	5	2	26	10	9	50	27	8	8	54	18	6	27	27	40	1	18	52	30	6	4	39	22	6	11	27	45	7	1	43	26	7	2	0	50	-19	57	-5	11	5	15
22	4	5	32	7	6	3	2	10	22	45	4	8	9	39	51	6	26	27	2	1	18	44	43	6	5	53	28	6	11	34	36	7	1	40	15	7	2	1	0	-20	10	-0	38	4	58
23	4	9	28	7	7	3	39	11	5	20	35	8	10	25	27	6	25	36	27	1	18	36	51	6	7	7	37	6	11	41	24	7	1	37	4	7	2	1	25	-20	23	3	49	4	26
24	4	13	25	7	8	4	18	11	17	40	29	8	11	11	6	6	24	56	58	1	18	28	56	6	8	21	48	6	11	48	11	7	1	33	54	7	2	2	4	-20	35	8	3	3	43
25	4	17	21	7	9	4	57	11	29	48	12	8	11	56	48	6	24	29	3	1	18	20	58	6	9	36	2	6	11	54	56	7	1	30	43	7	2	2	50	-20	47	11	53	2	50
26	4	21	18	7	10	5	38	0	11	47	0	8	12	42	33	6	24	12	47	1	18	12	57	6	10	50	18	6	12	1	38	7	1	27	32	7	2	3	35	-20	58	15	12	1	50
27	4	25	14	7	11	6	20	0	23	39	44	8	13	28	21	6	24	7	51	1	18	4	53	6	12	4	37	6	12	8	19	7	1	24	21	7	2	4	7	-21	9	17	51	0	47
28	4	29	11	7	12	7	3	1	5	28	56	8	14	14	12	6	24	13	41	1	17	56	48	6	13	18	58	6	12	14	57	7	1	21	10	7	2	4	13	-21	20	19	44	-0	19
29	4	33	8	7	13	7	47	1	17	16	51	8	15	0	6	6	24	29	33	1	17	48	40	6	14	33	21	6	12	21	32	7	1	18	0	7	2	3	44	-21	30	20	45	-1	24
30	4	37	4	7	14	8	33	1	29	5	34	8	15	46	3	6	24	54	35	1	17	40	31	6	15	47	47	6	12	28	6	7	1	14	49	7	2	2	35	-21	40	20	51	-2	24

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 दिसंबर 2012 ई. को अयनांश 24° 2' 28"

दिसंबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	4 41 1	7 15 9 20	2 10 57 12	8 16 32 3	6 25 27 56	1 17 32 21	6 17 2 15	6 12 34 37	7 1 11 38	7 2 0 50	-21 50	20 1	-3 19
2	4 44 57	7 16 10 8	2 22 53 58	8 17 18 5	6 26 8 42	1 17 24 10	6 18 16 45	6 12 41 5	7 1 8 27	7 1 58 36	-21 59	18 18	-4 6
3	4 48 54	7 17 10 58	3 4 58 21	8 18 4 11	6 26 56 3	1 17 15 59	6 19 31 18	6 12 47 31	7 1 5 16	7 1 56 11	-22 7	15 45	-4 42
4	4 52 50	7 18 11 49	3 17 13 13	8 18 50 19	6 27 49 12	1 17 7 48	6 20 45 52	6 12 53 55	7 1 2 6	7 1 53 53	-22 15	12 29	-5 6
5	4 56 47	7 19 12 41	3 29 41 44	8 19 36 31	6 28 47 27	1 16 59 37	6 22 0 29	6 13 0 15	7 0 58 55	7 1 52 5	-22 23	8 38	-5 16
6	5 0 43	7 20 13 35	4 12 27 15	8 20 22 45	6 29 50 7	1 16 51 27	6 23 15 7	6 13 6 33	7 0 55 44	7 1 51 2	-22 31	4 18	-5 11
7	5 4 40	7 21 14 30	4 25 33 6	8 21 9 1	7 0 56 39	1 16 43 18	6 24 29 48	6 13 12 48	7 0 52 33	7 1 50 54	-22 37	-0 19	-4 50
8	5 8 37	7 22 15 26	5 9 2 9	8 21 55 21	7 2 6 32	1 16 35 11	6 25 44 30	6 13 19 0	7 0 49 22	7 1 51 38	-22 44	-5 5	-4 12
9	5 12 33	7 23 16 23	5 22 56 19	8 22 41 43	7 3 19 19	1 16 27 6	6 26 59 14	6 13 25 9	7 0 46 12	7 1 52 56	-22 50	-9 44	-3 19
10	5 16 30	7 24 17 22	6 7 15 49	8 23 28 8	7 4 34 37	1 16 19 2	6 28 14 0	6 13 31 15	7 0 43 1	7 1 54 24	-22 55	-13 59	-2 12
11	5 20 26	7 25 18 22	6 21 58 33	8 24 14 36	7 5 52 5	1 16 11 2	6 29 28 47	6 13 37 18	7 0 39 50	7 1 55 27	-23 1	-17 30	-0 55
12	5 24 23	7 26 19 22	7 6 59 38	8 25 1 6	7 7 11 25	1 16 3 5	7 0 43 35	6 13 43 18	7 0 36 39	7 1 55 37	-23 5	-19 55	0 28
13	5 28 19	7 27 20 24	7 22 11 28	8 25 47 38	7 8 32 23	1 15 55 11	7 1 58 25	6 13 49 14	7 0 33 28	7 1 54 33	-23 9	-20 55	1 49
14	5 32 16	7 28 21 27	8 7 24 33	8 26 34 13	7 9 54 45	1 15 47 21	7 3 13 17	6 13 55 7	7 0 30 18	7 1 52 9	-23 13	-20 23	3 3
15	5 36 12	7 29 22 30	8 22 28 45	8 27 20 50	7 11 18 20	1 15 39 35	7 4 28 9	6 14 0 56	7 0 27 7	7 1 48 37	-23 16	-18 24	4 3
16	5 40 9	8 0 23 33	9 7 15 2	8 28 7 30	7 12 42 59	1 15 31 54	7 5 43 3	6 14 6 42	7 0 23 56	7 1 44 27	-23 19	-15 13	4 46
17	5 44 6	8 1 24 38	9 21 36 41	8 28 54 12	7 14 8 33	1 15 24 18	7 6 57 57	6 14 12 25	7 0 20 45	7 1 40 15	-23 21	-11 13	5 9
18	5 48 2	8 2 25 43	10 5 30 7	8 29 40 56	7 15 34 56	1 15 16 47	7 8 12 53	6 14 18 3	7 0 17 34	7 1 36 41	-23 23	-6 44	5 13
19	5 51 59	8 3 26 48	10 18 54 46	9 0 27 41	7 17 2 1	1 15 9 22	7 9 27 49	6 14 23 38	7 0 14 24	7 1 34 15	-23 25	-2 5	4 59
20	5 55 55	8 4 27 53	11 1 52 31	9 1 14 29	7 18 29 44	1 15 2 3	7 10 42 46	6 14 29 9	7 0 11 13	7 1 33 14	-23 26	2 31	4 31
21	5 59 52	8 5 28 59	11 14 27 0	9 2 1 19	7 19 58 1	1 14 54 50	7 11 57 44	6 14 34 37	7 0 8 2	7 1 33 35	-23 26	6 53	3 50
22	6 3 48	8 6 30 5	11 26 42 43	9 2 48 10	7 21 26 48	1 14 47 44	7 13 12 43	6 14 40 0	7 0 4 51	7 1 34 59	-23 26	10 52	3 0
23	6 7 45	8 7 31 11	0 8 44 31	9 3 35 4	7 22 56 3	1 14 40 45	7 14 27 43	6 14 45 20	7 0 1 40	7 1 36 49	-23 26	14 21	2 2
24	6 11 41	8 8 32 17	0 20 37 7	9 4 21 58	7 24 25 42	1 14 33 53	7 15 42 43	6 14 50 35	6 29 58 30	7 1 38 25	-23 25	17 11	1 0
25	6 15 38	8 9 33 24	1 2 24 53	9 5 8 55	7 25 55 45	1 14 27 8	7 16 57 44	6 14 55 46	6 29 55 19	7 1 39 1	-23 23	19 17	-0 4
26	6 19 35	8 10 34 30	1 14 11 36	9 5 55 53	7 27 26 11	1 14 20 31	7 18 12 46	6 15 0 53	6 29 52 8	7 1 38 2	-23 21	20 34	-1 8
27	6 23 31	8 11 35 37	1 26 0 22	9 6 42 53	7 28 56 57	1 14 14 3	7 19 27 48	6 15 5 56	6 29 48 57	7 1 35 3	-23 19	20 55	-2 9
28	6 27 28	8 12 36 44	2 7 53 37	9 7 29 54	8 0 28 4	1 14 7 43	7 20 42 51	6 15 10 55	6 29 45 46	7 1 30 0	-23 16	20 21	-3 4
29	6 31 24	8 13 37 51	2 19 53 15	9 8 16 57	8 1 59 31	1 14 1 31	7 21 57 55	6 15 15 49	6 29 42 36	7 1 23 3	-23 13	18 52	-3 52
30	6 35 21	8 14 38 59	3 2 0 40	9 9 4 1	8 3 31 17	1 13 55 28	7 23 13 0	6 15 20 39	6 29 39 25	7 1 14 47	-23 9	16 31	-4 29
31	6 39 17	8 15 40 6	3 14 17 3	9 9 51 7	8 5 3 23	1 13 49 34	7 24 28 5	6 15 25 25	6 29 36 14	7 1 5 57	-23 5	13 25	-4 55

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जनवरी 2013 ई. को अयनांश 24° 2' 34"

जनवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	6 43 14	8 16 41 14	3 26 43 34	9 10 38 14	8 6 35 49	1 13 43 49	7 25 43 11	6 15 30 6	6 29 33 3	7 0 57 27	-23 0	9 42	-5 7
2	6 47 10	8 17 42 23	4 9 21 31	9 11 25 23	8 8 8 35	1 13 38 14	7 26 58 18	6 15 34 42	6 29 29 52	7 0 50 12	-22 55	5 31	-5 5
3	6 51 7	8 18 43 31	4 22 12 34	9 12 12 33	8 9 41 40	1 13 32 48	7 28 13 25	6 15 39 14	6 29 26 42	7 0 44 51	-22 49	1 1	-4 47
4	6 55 4	8 19 44 40	5 5 18 35	9 12 59 44	8 11 15 7	1 13 27 33	7 29 28 33	6 15 43 41	6 29 23 31	7 0 41 45	-22 43	-3 38	-4 14
5	6 59 0	8 20 45 49	5 18 41 40	9 13 46 57	8 12 48 54	1 13 22 27	8 0 43 42	6 15 48 3	6 29 20 20	7 0 40 45	-22 37	-8 12	-3 27
6	7 2 57	8 21 46 59	6 2 23 44	9 14 34 11	8 14 23 3	1 13 17 32	8 1 58 51	6 15 52 20	6 29 17 9	7 0 41 16	-22 30	-12 28	-2 26
7	7 6 53	8 22 48 8	6 16 26 3	9 15 21 26	8 15 57 35	1 13 12 47	8 3 14 1	6 15 56 33	6 29 13 58	7 0 42 19	-22 22	-16 10	-1 16
8	7 10 50	8 23 49 18	7 0 48 36	9 16 8 43	8 17 32 30	1 13 8 13	8 4 29 11	6 16 0 40	6 29 10 48	7 0 42 49	-22 15	-18 58	0 1
9	7 14 46	8 24 50 27	7 15 29 20	9 16 56 0	8 19 7 50	1 13 3 50	8 5 44 21	6 16 4 43	6 29 7 37	7 0 41 43	-22 6	-20 35	1 19
10	7 18 43	8 25 51 37	8 0 23 37	9 17 43 19	8 20 43 34	1 12 59 38	8 6 59 32	6 16 8 40	6 29 4 26	7 0 38 18	-21 58	-20 47	2 32
11	7 22 39	8 26 52 46	8 15 24 19	9 18 30 38	8 22 19 44	1 12 55 37	8 8 14 43	6 16 12 33	6 29 1 15	7 0 32 21	-21 48	-19 30	3 36
12	7 26 36	8 27 53 56	9 0 22 29	9 19 17 59	8 23 56 22	1 12 51 48	8 9 29 55	6 16 16 20	6 28 58 4	7 0 24 11	-21 39	-16 54	4 24
13	7 30 33	8 28 55 5	9 15 8 49	9 20 5 20	8 25 33 26	1 12 48 10	8 10 45 6	6 16 20 1	6 28 54 54	7 0 14 37	-21 29	-13 13	4 54
14	7 34 29	8 29 56 13	9 29 35 8	9 20 52 42	8 27 10 59	1 12 44 43	8 12 0 18	6 16 23 38	6 28 51 43	7 0 4 45	-21 19	-8 50	5 5
15	7 38 26	9 0 57 21	10 13 35 43	9 21 40 5	8 28 49 2	1 12 41 29	8 13 15 29	6 16 27 9	6 28 48 32	6 29 55 43	-21 8	-4 7	4 56
16	7 42 22	9 1 58 29	10 27 7 56	9 22 27 28	9 0 27 34	1 12 38 26	8 14 30 41	6 16 30 34	6 28 45 21	6 29 48 27	-20 56	0 39	4 31
17	7 46 19	9 2 59 35	11 10 12 7	9 23 14 52	9 2 6 37	1 12 35 35	8 15 45 52	6 16 33 55	6 28 42 10	6 29 43 30	-20 45	5 15	3 53
18	7 50 15	9 4 0 41	11 22 50 58	9 24 2 17	9 3 46 12	1 12 32 56	8 17 1 4	6 16 37 9	6 28 39 0	6 29 40 54	-20 33	9 28	3 4
19	7 54 12	9 5 1 46	0 5 8 49	9 24 49 41	9 5 26 18	1 12 30 29	8 18 16 15	6 16 40 18	6 28 35 49	6 29 40 12	-20 20	13 10	2 7
20	7 58 8	9 6 2 50	0 17 10 53	9 25 37 6	9 7 6 57	1 12 28 15	8 19 31 26	6 16 43 22	6 28 32 38	6 29 40 37	-20 8	16 15	1 6
21	8 2 5	9 7 3 54	0 29 2 42	9 26 24 32	9 8 48 9	1 12 26 12	8 20 46 37	6 16 46 20	6 28 29 27	6 29 41 3	-19 55	18 36	0 3
22	8 6 2	9 8 4 56	1 10 49 39	9 27 11 57	9 10 29 53	1 12 24 22	8 22 1 48	6 16 49 12	6 28 26 16	6 29 40 26	-19 41	20 8	-0 59
23	8 9 58	9 9 5 57	1 22 36 42	9 27 59 22	9 12 12 10	1 12 22 44	8 23 16 59	6 16 51 58	6 28 23 6	6 29 37 48	-19 27	20 48	-1 59
24	8 13 55	9 10 6 58	2 4 28 5	9 28 46 48	9 13 54 58	1 12 21 18	8 24 32 10	6 16 54 39	6 28 19 55	6 29 32 31	-19 13	20 32	-2 54
25	8 17 51	9 11 7 57	2 16 27 10	9 29 34 14	9 15 38 17	1 12 20 5	8 25 47 20	6 16 57 14	6 28 16 44	6 29 24 20	-18 58	19 20	-3 42
26	8 21 48	9 12 8 56	2 28 36 23	10 0 21 39	9 17 22 5	1 12 19 4	8 27 2 30	6 16 59 43	6 28 13 33	6 29 13 31	-18 43	17 16	-4 20
27	8 25 44	9 13 9 53	3 10 57 11	10 1 9 5	9 19 6 21	1 12 18 15	8 28 17 41	6 17 2 6	6 28 10 23	6 29 0 42	-18 28	14 23	-4 46
28	8 29 41	9 14 10 50	3 23 30 6	10 1 56 31	9 20 51 2	1 12 17 38	8 29 32 51	6 17 4 23	6 28 7 12	6 28 46 59	-18 12	10 49	-5 0
29	8 33 37	9 15 11 46	4 6 15 3	10 2 43 56	9 22 36 5	1 12 17 14	9 0 48 1	6 17 6 35	6 28 4 1	6 28 33 35	-17 56	6 43	-4 58
30	8 37 34	9 16 12 41	4 19 11 34	10 3 31 22	9 24 21 25	1 12 17 2	9 2 3 11	6 17 8 40	6 28 0 50	6 28 21 45	-17 40	2 15	-4 42
31	8 41 31	9 17 13 36	5 2 19 11	10 4 18 47	9 26 6 57	1 12 17 2	9 3 18 21	6 17 10 40	6 27 57 39	6 28 12 27	-17 24	-2 23	-4 10

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 फरवरी 2013 ई. को अयनांश 24° 2' 38"

फरवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	8	45	27	9	18	14	29	5	15	37	44	10	5	6	13	9	27	52	34	1	12	17	14	9	4	33	31	6	17	12	33	6	27	54	29	6	28	6	13	-17	7	-6	58	-3	24
2	8	49	24	9	19	15	22	5	29	7	25	10	5	53	38	9	29	38	10	1	12	17	39	9	5	48	41	6	17	14	20	6	27	51	18	6	28	2	56	-16	50	-11	16	-2	27
3	8	53	20	9	20	16	14	6	12	48	54	10	6	41	3	10	1	23	33	1	12	18	16	9	7	3	51	6	17	16	2	6	27	48	7	6	28	1	55	-16	32	-15	3	-1	20
4	8	57	17	9	21	17	5	6	26	42	55	10	7	28	27	10	3	8	33	1	12	19	5	9	8	19	1	6	17	17	37	6	27	44	56	6	28	1	58	-16	14	-18	3	-0	7
5	9	1	13	9	22	17	56	7	10	49	53	10	8	15	52	10	4	52	55	1	12	20	6	9	9	34	11	6	17	19	6	6	27	41	46	6	28	1	41	-15	56	-20	0	1	7
6	9	5	10	9	23	18	45	7	25	9	10	10	9	3	16	10	6	36	25	1	12	21	19	9	10	49	20	6	17	20	28	6	27	38	35	6	27	59	42	-15	38	-20	42	2	18
7	9	9	6	9	24	19	34	8	9	38	37	10	9	50	40	10	8	18	42	1	12	22	45	9	12	4	30	6	17	21	45	6	27	35	24	6	27	55	6	-15	19	-20	2	3	21
8	9	13	3	9	25	20	21	8	24	14	2	10	10	38	3	10	9	59	26	1	12	24	22	9	13	19	39	6	17	22	55	6	27	32	13	6	27	47	29	-15	0	-18	3	4	11
9	9	17	0	9	26	21	8	9	8	49	26	10	11	25	26	10	11	38	13	1	12	26	12	9	14	34	48	6	17	23	59	6	27	29	3	6	27	37	10	-14	41	-14	54	4	45
10	9	20	56	9	27	21	53	9	23	17	42	10	12	12	48	10	13	14	35	1	12	28	13	9	15	49	56	6	17	24	57	6	27	25	52	6	27	25	2	-14	22	-10	53	4	59
11	9	24	53	9	28	22	37	10	7	31	43	10	13	0	10	10	14	48	1	1	12	30	27	9	17	5	4	6	17	25	49	6	27	22	41	6	27	12	19	-14	2	-6	18	4	55
12	9	28	49	9	29	23	19	10	21	25	39	10	13	47	30	10	16	17	57	1	12	32	52	9	18	20	12	6	17	26	34	6	27	19	30	6	27	0	22	-13	42	-1	31	4	34
13	9	32	46	10	0	24	0	11	4	55	49	10	14	34	50	10	17	43	47	1	12	35	29	9	19	35	19	6	17	27	13	6	27	16	20	6	26	50	18	-13	22	3	13	3	57
14	9	36	42	10	1	24	40	11	18	1	1	10	15	22	10	10	19	4	51	1	12	38	18	9	20	50	26	6	17	27	45	6	27	13	9	6	26	42	52	-13	2	7	40	3	9
15	9	40	39	10	2	25	18	0	0	42	28	10	16	9	28	10	20	20	27	1	12	41	19	9	22	5	32	6	17	28	11	6	27	9	58	6	26	38	13	-12	42	11	38	2	13
16	9	44	35	10	3	25	54	0	13	3	17	10	16	56	45	10	21	29	54	1	12	44	30	9	23	20	37	6	17	28	31	6	27	6	47	6	26	36	1	-12	21	15	0	1	11
17	9	48	32	10	4	26	28	0	25	7	54	10	17	44	1	10	22	32	29	1	12	47	54	9	24	35	42	6	17	28	45	6	27	3	37	6	26	35	26	-12	0	17	38	0	8
18	9	52	29	10	5	27	1	1	7	1	36	10	18	31	16	10	23	27	30	1	12	51	29	9	25	50	46	6	17	28	52	6	27	0	26	6	26	35	25	-11	39	19	28	-0	55
19	9	56	25	10	6	27	32	1	18	50	1	10	19	18	30	10	24	14	18	1	12	55	14	9	27	5	50	6	17	28	54	6	26	57	15	6	26	34	49	-11	18	20	26	-1	55
20	10	0	22	10	7	28	1	2	0	38	39	10	20	5	42	10	24	52	17	1	12	59	11	9	28	20	52	6	17	28	49	6	26	54	4	6	26	32	36	-10	56	20	30	-2	50
21	10	4	18	10	8	28	28	2	12	32	37	10	20	52	53	10	25	20	58	1	13	3	19	9	29	35	55	6	17	28	37	6	26	50	54	6	26	28	1	-10	35	19	38	-3	38
22	10	8	15	10	9	28	53	2	24	36	20	10	21	40	3	10	25	39	56	1	13	7	38	10	0	50	56	6	17	28	20	6	26	47	43	6	26	20	42	-10	13	17	54	-4	17
23	10	12	11	10	10	29	17	3	6	53	13	10	22	27	12	10	25	48	59	1	13	12	8	10	2	5	57	6	17	27	56	6	26	44	32	6	26	10	47	-9	51	15	19	-4	45
24	10	16	8	10	11	29	39	3	19	25	31	10	23	14	19	10	25	47	59	1	13	16	48	10	3	20	57	6	17	27	26	6	26	41	21	6	25	58	52	-9	29	11	59	-4	59
25	10	20	4	10	12	29	59	4	2	14	13	10	24	1	25	10	25	37	6	1	13	21	39	10	4	35	57	6	17	26	50	6	26	38	11	6	25	45	54	-9	7	8	3	-4	59
26	10	24	1	10	13	30	17	4	15	18	57	10	24	48	29	10	25	16	36	1	13	26	40	10	5	50	55	6	17	26	8	6	26	35	0	6	25	33	5	-8	44	3	40	-4	44
27	10	27	58	10	14	30	33	4	28	38	14	10	25	35	32	10	24	47	3	1	13	31	52	10	7	5	54	6	17	25	19	6	26	31	49	6	25	21	40	-8	22	-0	58	-4	13
28	10	31	54	10	15	30	48	5	12	9	52	10	26	22	33	10	24	9	12	1	13	37	14	10	8	20	52	6	17	24	25	6	26	28	39	6	25	12	36	-7	59	-5	38	-3	27

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 मार्च 2013 ई. को अयनांश 24° 2' 42"

मिति	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	10 35 51	10 16 31 2	5 25 51 25	10 27 9 33	10 23 24 3	1 13 42 46	10 9 35 49	6 17 23 25	6 26 25 28	6 25 6 29	-7 36	-10 4	-2 29
2	10 39 47	10 17 31 14	6 9 40 44	10 27 56 32	10 22 32 44	1 13 48 28	10 10 50 46	6 17 22 18	6 26 22 17	6 25 3 16	-7 14	-14 1	-1 21
3	10 43 44	10 18 31 24	6 23 36 8	10 28 43 29	10 21 36 35	1 13 54 20	10 12 5 42	6 17 21 6	6 26 19 6	6 25 2 24	-6 51	-17 13	-0 8
4	10 47 40	10 19 31 33	7 7 36 33	10 29 30 24	10 20 37 3	1 14 0 22	10 13 20 37	6 17 19 47	6 26 15 56	6 25 2 49	-6 28	-19 24	1 6
5	10 51 37	10 20 31 40	7 21 41 14	11 0 17 18	10 19 35 36	1 14 6 33	10 14 35 32	6 17 18 23	6 26 12 45	6 25 3 13	-6 4	-20 24	2 17
6	10 55 33	10 21 31 45	8 5 49 25	11 1 4 11	10 18 33 43	1 14 12 55	10 15 50 27	6 17 16 52	6 26 9 34	6 25 2 22	-5 41	-20 7	3 19
7	10 59 30	10 22 31 50	8 19 59 50	11 1 51 1	10 17 32 49	1 14 19 25	10 17 5 21	6 17 15 16	6 26 6 23	6 24 59 22	-5 18	-18 33	4 10
8	11 3 27	10 23 31 52	9 4 10 20	11 2 37 50	10 16 34 12	1 14 26 5	10 18 20 14	6 17 13 34	6 26 3 13	6 24 53 48	-4 55	-15 52	4 45
9	11 7 23	10 24 31 53	9 18 17 46	11 3 24 38	10 15 39 0	1 14 32 55	10 19 35 6	6 17 11 46	6 26 0 2	6 24 45 53	-4 31	-12 15	5 2
10	11 11 20	10 25 31 52	10 2 18 8	11 4 11 23	10 14 48 11	1 14 39 54	10 20 49 58	6 17 9 53	6 25 56 51	6 24 36 17	-4 8	-8 0	5 2
11	11 15 16	10 26 31 49	10 16 7 10	11 4 58 7	10 14 2 31	1 14 47 1	10 22 4 49	6 17 7 53	6 25 53 41	6 24 26 6	-3 44	-3 23	4 43
12	11 19 13	10 27 31 45	10 29 40 54	11 5 44 49	10 13 22 34	1 14 54 18	10 23 19 40	6 17 5 49	6 25 50 30	6 24 16 25	-3 20	1 19	4 9
13	11 23 9	10 28 31 38	11 12 56 27	11 6 31 29	10 12 48 44	1 15 1 44	10 24 34 29	6 17 3 38	6 25 47 19	6 24 8 17	-2 57	5 52	3 22
14	11 27 6	10 29 31 30	11 25 52 27	11 7 18 7	10 12 21 16	1 15 9 18	10 25 49 18	6 17 1 22	6 25 44 8	6 24 2 18	-2 33	10 1	2 25
15	11 31 2	11 0 31 19	0 8 29 10	11 8 4 43	10 12 0 15	1 15 17 1	10 27 4 5	6 16 59 1	6 25 40 58	6 23 58 45	-2 9	13 38	1 22
16	11 34 59	11 1 31 7	0 20 48 26	11 8 51 16	10 11 45 42	1 15 24 53	10 28 18 52	6 16 56 35	6 25 37 47	6 23 57 23	-1 46	16 34	0 17
17	11 38 56	11 2 30 52	1 2 53 26	11 9 37 48	10 11 37 29	1 15 32 53	10 29 33 37	6 16 54 3	6 25 34 36	6 23 57 40	-1 22	18 41	-0 48
18	11 42 52	11 3 30 35	1 14 48 22	11 10 24 17	10 11 35 27	1 15 41 1	11 0 48 22	6 16 51 26	6 25 31 26	6 23 58 46	-0 58	19 58	-1 50
19	11 46 49	11 4 30 16	1 26 38 7	11 11 10 44	10 11 39 22	1 15 49 17	11 2 3 6	6 16 48 44	6 25 28 15	6 23 59 49	-0 35	20 20	-2 47
20	11 50 45	11 5 29 54	2 8 27 55	11 11 57 9	10 11 49 1	1 15 57 42	11 3 17 48	6 16 45 57	6 25 25 4	6 24 0 1	-0 11	19 48	-3 37
21	11 54 42	11 6 29 30	2 20 23 2	11 12 43 31	10 12 4 7	1 16 6 14	11 4 32 29	6 16 43 5	6 25 21 53	6 23 58 42	0 13	18 23	-4 18
22	11 58 38	11 7 29 4	3 2 28 28	11 13 29 51	10 12 24 23	1 16 14 54	11 5 47 10	6 16 40 9	6 25 18 43	6 23 55 33	0 37	16 8	-4 48
23	12 2 35	11 8 28 35	3 14 48 33	11 14 16 8	10 12 49 34	1 16 23 41	11 7 1 49	6 16 37 7	6 25 15 32	6 23 50 32	1 0	13 8	-5 5
24	12 6 31	11 9 28 5	3 27 26 43	11 15 2 24	10 13 19 22	1 16 32 36	11 8 16 27	6 16 34 2	6 25 12 21	6 23 44 1	1 24	9 28	-5 8
25	12 10 28	11 10 27 32	4 10 25 2	11 15 48 36	10 13 53 32	1 16 41 38	11 9 31 4	6 16 30 51	6 25 9 11	6 23 36 38	1 47	5 17	-4 56
26	12 14 25	11 11 26 57	4 23 44 2	11 16 34 46	10 14 31 49	1 16 50 48	11 10 45 40	6 16 27 36	6 25 6 0	6 23 29 10	2 11	0 44	-4 27
27	12 18 21	11 12 26 19	5 7 22 31	11 17 20 54	10 15 13 58	1 17 0 5	11 12 0 15	6 16 24 17	6 25 2 49	6 23 22 29	2 34	-3 59	-3 43
28	12 22 18	11 13 25 40	5 21 17 42	11 18 6 59	10 15 59 47	1 17 9 28	11 13 14 49	6 16 20 54	6 24 59 38	6 23 17 18	2 58	-8 34	-2 45
29	12 26 14	11 14 24 59	6 5 25 39	11 18 53 2	10 16 49 3	1 17 18 59	11 14 29 22	6 16 17 26	6 24 56 28	6 23 14 3	3 21	-12 46	-1 35
30	12 30 11	11 15 24 16	6 19 41 52	11 19 39 3	10 17 41 34	1 17 28 36	11 15 43 54	6 16 13 55	6 24 53 17	6 23 12 45	3 45	-16 16	-0 19
31	12 34 7	11 16 23 31	7 4 1 54	11 20 25 1	10 18 37 9	1 17 38 21	11 16 58 25	6 16 10 20	6 24 50 6	6 23 13 5	4 8	-18 47	0 59

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अप्रैल 2013 ई. को अयनांश 24° 2' 44"

साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
12	38	4	11	17	22	44	7	18	21	51	11	21	10	56	10	19	35	39	1	17	48	11	11	18	12	55	6	16	6	40	6	24	46	56	6	23	14	23	4	31	-20	5	2	13
12	42	0	11	18	21	56	8	2	38	37	11	21	56	49	10	20	36	54	1	17	58	9	11	19	27	25	6	16	2	57	6	24	43	45	6	23	15	50	4	54	-20	5	3	19
12	45	57	11	19	21	6	8	16	49	52	11	22	42	40	10	21	40	45	1	18	8	13	11	20	41	53	6	15	59	11	6	24	40	34	6	23	16	39	5	17	-18	49	4	12
12	49	54	11	20	20	14	9	0	53	51	11	23	28	28	10	22	47	6	1	18	18	23	11	21	56	21	6	15	55	21	6	24	37	23	6	23	16	14	5	40	-16	24	4	49
12	53	50	11	21	19	20	9	14	49	14	11	24	14	13	10	23	55	50	1	18	28	39	11	23	10	47	6	15	51	27	6	24	34	13	6	23	14	20	6	3	-13	4	5	9
12	57	47	11	22	18	24	9	28	34	44	11	24	59	56	10	25	6	50	1	18	39	2	11	24	25	13	6	15	47	31	6	24	31	2	6	23	11	1	6	26	- 9	4	5	11
13	1	43	11	23	17	27	10	12	9	4	11	25	45	37	10	26	20	1	1	18	49	30	11	25	39	38	6	15	43	31	6	24	27	51	6	23	6	43	6	48	- 4	39	4	56
13	5	40	11	24	16	28	10	25	30	56	11	26	31	15	10	27	35	19	1	19	0	5	11	26	54	2	6	15	39	28	6	24	24	40	6	23	2	1	7	11	- 0	5	4	24
13	9	36	11	25	15	27	11	8	39	11	11	27	16	50	10	28	52	38	1	19	10	45	11	28	8	24	6	15	35	23	6	24	21	30	6	22	57	35	7	33	4	25	3	39
13	13	33	11	26	14	24	11	21	33	0	11	28	2	22	11	0	11	55	1	19	21	31	11	29	22	46	6	15	31	14	6	24	18	19	6	22	53	57	7	56	8	39	2	44

अक्षांशभेद से भारत में चन्द्रदर्शन की तारीखें और चन्द्र के उन्नत शृंग की दिशा तथा अंश (सं. 2069 वि.)

मास	चैत्र		वैशा.		ज्येष्ठ		आषाढ़		श्रावण		प्र. भाद्रपद		द्वि. भाद्रपद		आश्विन		कार्तिक		मार्गशीर्ष		पौष		माघ		फाल्गुन	
भारतीय अक्षांश	चन्द्रदर्शन (2012 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2012 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2012 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2012 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2012 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2012 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2012 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2012 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2012 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2012 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2013 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2013 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2013 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)
+ 5°	24 मार्च	द. 29	22 अप्रै.	द. 22	22 मई	द. 2	21 जून	उ. 16	20 जुला.	उ. 33	19 अग.	उ. 38	17 सितं.	उ. 40	17 अक्टू.	उ. 33	15 नवं.	उ. 15	14 दिसं.	द. 5	13 जन.	द. 17	11 फर	द. 32	13 मार्च	द. 28
+ 15°	24 "	द. 16	22 "	द. 12	22 "	उ. 8	21 "	उ. 26	20 "	उ. 43	19 "	उ. 49	17 "	उ. 50	17 "	उ. 44	15 "	उ. 26	14 "	उ. 5	13 "	द. 7	11 "	द. 22	13 "	द. 18
+ 25°	24 "	द. 8	22 "	द. 2	22 "	उ. 18	21 "	उ. 36	20 "	उ. 53	19 "	उ. 58	17 "	उ. 60	17 "	उ. 54	15 "	उ. 36	14 "	उ. 16	13 "	उ. 5	11 "	द. 12	13 "	द. 7
+ 35°	24 "	उ. 3	22 "	उ. 8	22 "	उ. 28	21 "	उ. 48	20 "	उ. 63	19 "*	उ. 68	17 "	उ. 70	17 "	उ. 64	15 "	उ. 46	14 "	उ. 26	13 "	उ. 15	11 "	द. 1	13 "	उ. 3

नोट– यहां दिए गए शृङ्गोन्नति के अंश लगभग हैं।

* 35° (उ.)अक्षांश से अधिक अक्षांश वाले स्थलों पर 19 अगस्त को भी चन्द्रदर्शन शायद ही होगा।

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्तकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2012 ई.

तारीख	जनवरी 2012				फरवरी 2012				मार्च 2012				अप्रैल 2012				मई 2012				जून 2012				जुलाई 2012				अगस्त 2012				तारीख
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
1	11	52	0	6	12	13	1	30	11	37	1	6	13	6	2	6	13	54	1	58	15	58	2	25	17	4	2	42	18	31	4	38	1
2	12	24	0	59	12	57	2	24	12	28	1	56	14	6	2	47	14	57	2	34	17	8	3	10	18	7	3	40	19	13	5	43	2
3	12	59	1	53	13	46	3	16	13	23	2	45	15	8	3	25	16	3	3	12	18	17	4	0	19	4	4	44	19	51	6	46	3
4	13	36	2	47	14	40	4	7	14	21	3	31	16	13	4	3	17	11	3	51	19	24	4	57	19	55	5	50	20	26	7	46	4
5	14	18	3	41	15	37	4	55	15	22	4	14	17	19	4	41	18	22	4	35	20	25	6	0	20	40	6	57	21	0	8	45	5
6	15	5	4	35	16	38	5	41	16	25	4	55	18	27	5	20	19	32	5	23	21	19	7	6	21	19	8	1	21	33	9	42	6
7	15	57	6	20	17	41	6	23	17	29	5	33	19	37	6	2	20	41	6	18	22	6	8	12	21	55	9	3	22	7	10	37	7
8	16	53	6	17	18	44	7	2	18	35	6	11	20	47	6	48	21	45	7	18	22	47	9	17	22	29	10	2	22	42	11	32	8
9	17	52	7	4	19	48	7	40	19	42	6	50	21	56	7	39	22	41	8	21	23	23	10	18	23	1	10	58	23	20	12	26	9
10	18	53	7	48	20	53	8	17	20	50	7	29	23	1	8	35	23	30	9	26	23	57	11	17	23	34	11	53	--	--	13	19	10
11	19	55	8	28	21	58	8	54	21	59	8	12	23	59	9	35	--	--	10	30	--	--	12	14	--	--	12	48	0	2	14	11	11
12	20	57	9	5	23	4	9	33	23	6	8	58	--	--	10	37	0	13	11	31	0	29	13	8	0	8	13	42	0	47	15	1	12
13	22	00	9	41	--	--	10	15	--	--	9	49	0	50	11	39	0	50	12	30	1	1	14	2	0	44	14	35	1	36	15	50	13
14	23	3	10	17	0	11	11	2	0	11	10	45	1	35	12	40	1	24	13	26	1	34	14	56	1	23	15	28	2	29	16	35	14
15	--	--	10	53	1	16	11	53	1	11	11	44	2	14	13	39	1	57	14	21	2	8	15	49	2	6	16	20	3	24	17	17	15
16	0	7	11	32	2	18	12	49	2	5	12	45	2	50	14	36	2	28	15	14	2	45	16	42	2	53	17	9	4	22	17	57	16
17	1	12	12	15	3	16	13	48	2	53	13	45	3	23	15	31	3	0	16	8	3	26	17	35	3	44	17	57	5	22	18	35	17
18	2	18	13	3	4	8	14	50	3	36	14	45	3	54	16	25	3	33	17	1	4	10	18	26	4	38	18	41	6	22	19	12	18
19	3	23	13	56	4	55	15	51	4	13	15	44	4	26	17	19	4	8	17	55	4	59	19	15	5	35	19	22	7	23	19	48	19
20	4	25	14	55	5	36	16	52	4	48	16	40	4	58	18	12	4	46	18	48	5	51	20	0	6	33	20	0	8	25	20	25	20
21	5	23	15	57	6	13	17	51	5	21	17	36	5	31	19	6	6	16	19	40	6	46	20	43	7	32	20	36	9	29	21	4	21
22	6	14	17	1	6	47	18	48	5	52	18	30	6	7	19	59	6	14	20	30	7	42	21	22	8	32	21	12	10	33	21	47	22
23	6	59	18	3	7	20	19	43	6	24	19	24	6	47	20	52	7	3	21	17	8	40	21	59	9	32	21	47	11	39	22	34	23
24	7	39	19	4	7	51	20	38	6	56	20	18	7	30	21	44	7	56	22	1	9	38	22	34	10	33	22	24	12	43	23	25	24
25	8	15	20	3	8	23	21	32	7	31	21	12	8	16	22	33	8	51	22	42	10	38	23	9	11	36	23	3	13	46	--	--	25
26	8	49	21	00	8	56	22	26	8	8	22	5	9	7	23	19	9	47	23	21	11	38	23	45	12	40	23	47	14	44	0	22	26
27	9	20	21	55	9	31	23	20	8	48	22	58	10	0	--	--	10	45	23	57	12	40	--	--	13	46	--	--	15	38	1	23	27
28	9	52	22	49	10	9	--	--	9	32	23	49	10	56	0	2	11	44	--	--	13	44	0	22	14	51	0	35	16	26	2	26	28
29	10	23	23	42	10	51	0	13	10	20	--	--	11	54	0	43	12	44	0	32	14	50	1	3	15	53	1	29	17	9	3	29	29
30	10	57	--	--					11	12	0	37	12	53	1	21	13	46	1	8	15	57	1	50	16	52	2	29	17	47	4	32	30
31	11	33	0	36					12	8	1	23					14	51	1	45					17	44	3	33	18	23	5	33	31

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्तकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2012–13 ई.

तारीख	सितंबर 2012				अक्तूबर 2012				नवंबर 2012				दिसंबर 2012				जनवरी 2013				फरवरी 2013				मार्च 2013				तारीख
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
1	18	58	6	32	18	39	7	11	19	18	8	39	19	43	8	58	21	18	9	34	23	7	9	57	22	3	8	37	1
2	19	31	7	29	19	15	8	6	20	6	9	29	20	37	9	40	22	15	10	8	--	--	10	36	23	6	9	19	2
3	20	5	8	25	19	55	9	0	20	56	10	16	21	32	10	20	23	13	10	42	0	10	11	18	--	--	10	5	3
4	20	40	9	21	20	37	9	53	21	48	11	0	22	27	10	56	--	--	11	17	1	13	12	6	0	10	10	57	4
5	21	18	10	15	21	22	10	45	22	43	11	41	23	24	11	32	0	12	11	55	2	17	13	0	1	11	11	53	5
6	21	58	11	9	22	11	11	34	23	38	12	20	--	--	12	6	1	14	12	35	3	19	13	59	2	10	12	54	6
7	22	41	12	2	23	2	12	20	--	--	12	57	0	21	12	41	2	18	13	21	4	17	15	3	3	4	13	57	7
8	23	28	12	53	23	57	13	4	0	35	13	32	1	21	13	18	3	24	14	13	5	11	16	9	3	53	15	1	8
9	--	--	13	41	--	--	13	45	1	34	14	8	2	24	13	57	4	30	15	11	6	0	17	16	4	37	16	5	9
10	0	19	14	27	0	53	14	24	2	35	14	45	3	29	14	42	5	33	16	15	6	43	18	21	5	18	17	8	10
11	1	12	15	11	1	50	15	1	3	38	15	24	4	37	15	32	6	31	17	23	7	24	19	24	5	56	18	9	11
12	2	9	15	51	2	50	15	38	4	44	16	8	5	45	16	30	7	24	18	31	8	1	20	25	6	33	19	9	12
13	3	7	16	30	3	52	16	15	5	53	16	57	6	52	17	33	8	11	19	38	8	37	21	24	7	9	20	7	13
14	4	7	17	7	4	55	16	54	7	3	17	52	7	54	18	40	8	52	20	42	9	13	22	22	7	45	21	4	14
15	5	8	17	44	6	1	17	36	8	11	18	52	8	49	19	48	9	30	21	43	9	49	23	18	8	23	22	0	15
16	6	11	18	22	7	9	18	22	9	15	19	57	9	38	20	55	10	6	22	42	10	27	--	--	9	2	22	55	16
17	7	15	19	2	8	18	19	13	10	12	21	3	10	20	21	59	10	41	23	39	11	7	0	12	9	45	23	47	17
18	8	21	19	44	9	26	20	9	11	2	22	8	10	59	22	59	11	16	--	--	11	50	1	5	10	29	--	--	18
19	9	28	20	31	10	30	21	10	11	45	23	11	11	34	23	57	11	52	0	34	12	36	1	56	11	17	0	37	19
20	10	35	21	22	11	29	22	13	12	24	--	--	12	8	--	--	12	30	1	29	13	25	2	45	12	7	1	24	20
21	11	39	22	18	12	20	23	16	13	0	0	11	12	42	0	53	13	11	2	22	14	16	3	31	13	0	2	8	21
22	12	39	23	18	13	6	--	--	13	34	1	9	13	16	1	48	13	55	3	14	15	10	4	14	13	54	2	49	22
23	13	34	--	--	13	47	0	18	14	7	2	5	13	52	2	43	14	42	4	4	16	6	4	55	14	49	3	28	23
24	14	23	0	20	14	24	1	19	14	40	3	0	14	31	3	36	15	32	4	52	17	2	5	33	15	46	4	5	24
25	15	7	1	22	14	58	2	17	15	15	3	54	15	13	4	29	16	25	5	37	18	0	6	9	16	45	4	41	25
26	15	46	2	24	15	32	3	14	15	52	4	48	15	58	5	20	17	20	6	19	18	59	6	45	17	45	5	17	26
27	16	23	3	24	16	5	4	9	16	32	5	41	16	47	6	10	18	16	6	58	19	59	7	21	18	47	5	54	27
28	16	57	4	22	16	39	5	4	17	15	6	34	17	38	6	56	19	12	7	35	21	0	7	58	19	50	6	33	28
29	17	30	5	19	17	15	5	59	18	2	7	25	18	32	7	40	20	10	8	11					20	55	7	15	29
30	18	4	6	15	17	53	6	53	18	51	8	13	19	27	8	20	21	8	8	45					22	1	8	1	30
31					18	34	7	46					20	22	8	58	22	7	9	20					23	5	8	53	31

(शेष पृ. 150 पर)

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2012 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2012 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जन. 1	11 6 49	10 4 52	8 13 17	6 37	2 56	-22 8	0 55	10 28	-1 14	-18 26	-1 50	-8 36	2 25	-0 20	-0 43	-12 22	-0 33	-19 19	3 55
4	11 6 52	10 4 57	8 13 24	6 25	3 1	-22 47	0 30	10 31	-1 13	-17 18	-1 48	-8 39	2 26	-0 18	-0 43	-12 21	-0 33	-19 19	3 55
7	11 6 56	10 5 2	8 13 30	6 16	3 7	-23 19	0 7	10 34	-1 12	-16 7	-1 46	-8 42	2 27	-0 16	-0 43	-12 19	-0 33	-19 19	3 55
10	11 7 1	10 5 7	8 13 36	6 8	3 12	-23 40	-0 16	10 38	-1 11	-14 51	-1 43	-8 45	2 27	-0 15	-0 43	-12 17	-0 33	-19 19	3 55
13	11 7 6	10 5 13	8 13 43	6 3	3 17	-23 52	-0 37	10 42	-1 10	-13 32	-1 39	-8 47	2 28	-0 13	-0 43	-12 15	-0 33	-19 19	3 54
16	11 7 11	10 5 19	8 13 49	5 59	3 22	-23 52	-0 56	10 47	-1 9	-12 10	-1 34	-8 49	2 29	-0 10	-0 43	-12 13	-0 33	-19 19	3 54
19	11 7 16	10 5 25	8 13 55	5 59	3 27	-23 41	-1 14	10 53	-1 8	-10 46	-1 28	-8 51	2 30	-0 8	-0 43	-12 11	-0 33	-19 18	3 54
22	11 7 23	10 5 31	8 14 1	6 0	3 33	-23 18	-1 29	10 59	-1 7	-9 18	-1 22	-8 52	2 31	-0 6	-0 43	-12 9	-0 33	-19 18	3 54
25	11 7 29	10 5 37	8 14 7	6 5	3 38	-22 42	-1 42	11 5	-1 7	-7 49	-1 15	-8 53	2 31	-0 3	-0 43	-12 6	-0 33	-19 18	3 54
28	11 7 36	10 5 43	8 14 13	6 12	3 43	-21 54	-1 52	11 12	-1 6	-6 18	-1 7	-8 53	2 32	-0 0	-0 42	-12 4	-0 33	-19 18	3 54
31	11 7 43	10 5 50	8 14 19	6 21	3 48	-20 52	-2 0	11 20	-1 5	-4 46	-0 58	-8 54	2 33	0 3	-0 42	-12 2	-0 33	-19 17	3 53
फर. 1	11 7 45	10 5 52	8 14 21	6 25	3 50	-20 28	-2 2	11 23	-1 5	-4 15	-0 55	-8 54	2 33	0 4	-0 42	-12 1	-0 33	-19 17	3 53
4	11 7 53	10 5 59	8 14 26	6 38	3 54	-19 9	-2 5	11 31	-1 4	-2 41	-0 45	-8 53	2 34	0 7	-0 42	-11 59	-0 33	-19 17	3 53
7	11 8 1	10 6 5	8 14 31	6 54	3 59	-17 37	-2 4	11 39	-1 3	-1 7	-0 35	-8 53	2 35	0 10	-0 42	-11 56	-0 33	-19 17	3 53
10	11 8 9	10 6 12	8 14 37	7 11	4 3	-15 51	-2 0	11 48	-1 2	0 27	-0 24	-8 52	2 36	0 13	-0 42	-11 54	-0 33	-19 17	3 53
13	11 8 17	10 6 19	8 14 42	7 31	4 6	-13 53	-1 50	11 58	-1 2	2 1	-0 13	-8 51	2 36	0 17	-0 42	-11 52	-0 33	-19 16	3 53
16	11 8 26	10 6 26	8 14 46	7 54	4 9	-11 42	-1 36	12 8	-1 1	3 35	-0 1	-8 49	2 37	0 20	-0 42	-11 49	-0 33	-19 16	3 53
19	11 8 35	10 6 32	8 14 51	8 17	4 11	-9 20	-1 16	12 18	-1 0	5 8	0 12	-8 48	2 38	0 24	-0 42	-11 47	-0 33	-19 16	3 53
22	11 8 44	10 6 39	8 14 55	8 42	4 12	-6 50	-0 50	12 28	-0 59	6 41	0 25	-8 45	2 39	0 28	-0 42	-11 45	-0 33	-19 16	3 53
25	11 8 53	10 6 46	8 15 0	9 8	4 13	-4 16	-0 19	12 39	-0 59	8 12	0 38	-8 43	2 39	0 31	-0 42	-11 42	-0 33	-19 15	3 53
28	11 9 3	10 6 53	8 15 3	9 35	4 13	-1 44	0 18	12 50	-0 58	9 41	0 52	-8 40	2 40	0 35	-0 42	-11 40	-0 33	-19 15	3 53
मार्च 1	11 9 9	10 6 57	8 15 6	9 52	4 12	-0 7	0 45	12 57	-0 58	10 39	1 2	-8 38	2 41	0 38	-0 42	-11 38	-0 33	-19 15	3 53
4	11 3 19	10 7 4	8 15 9	10 18	4 10	2 4	1 27	13 8	-0 57	12 5	1 16	-8 35	2 41	0 42	-0 42	-11 36	-0 33	-19 14	3 53
7	11 9 29	10 7 11	8 15 13	10 43	4 8	3 52	2 9	13 20	-0 57	13 29	1 30	-8 32	2 42	0 46	-0 42	-11 34	-0 33	-19 14	3 53
10	11 9 39	10 7 17	8 15 16	11 7	4 4	5 6	2 46	13 31	-0 56	14 50	1 45	-8 28	2 42	0 50	-0 41	-11 31	-0 33	-19 14	3 53
13	11 9 49	10 7 24	8 15 19	11 29	4 0	5 41	3 15	13 43	-0 55	16 8	1 59	-8 24	2 43	0 54	-0 41	-11 29	-0 33	-19 14	3 53
16	11 9 59	10 7 30	8 15 21	11 48	3 55	5 35	3 32	13 55	-0 55	17 23	2 14	-8 20	2 44	0 58	-0 41	-11 27	-0 33	-19 14	3 53
19	11 10 9	10 7 37	8 15 23	12 6	3 49	4 49	3 32	14 7	-0 54	18 34	2 28	-8 16	2 44	1 2	-0 41	-11 24	-0 33	-19 13	3 53
22	11 10 19	10 7 43	8 15 25	12 21	3 43	3 32	3 15	14 19	-0 54	19 42	2 43	-8 12	2 44	1 6	-0 41	-11 22	-0 33	-19 13	3 53
25	11 10 30	10 7 49	8 15 27	12 33	3 36	2 0	2 43	14 31	-0 53	20 46	2 57	-8 7	2 45	1 10	-0 41	-11 20	-0 33	-19 13	3 54
28	11 10 40	10 7 55	8 15 28	12 42	3 29	0 26	2 1	14 44	-0 53	21 46	3 10	-8 2	2 45	1 14	-0 41	-11 18	-0 34	-19 13	3 54
31	11 10 50	10 8 0	8 15 29	12 49	3 21	-0 56	1 15	14 56	-0 53	22 41	3 24	-7 58	2 45	1 18	-0 41	-11 16	-0 34	-19 13	3 54

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2012 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2012 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अप्रैल 1	11 10 54	10 8 2	8 15 30	12 50	3 19	-1 19	0 59	15 0	-0 52	22 59	3 28	-7 56	2 46	1 19	-0 41	-11 16	-0 34	-19 13	3 54
4	11 11 4	10 8 8	8 15 30	12 53	3 11	-2 15	0 13	15 12	-0 52	23 48	3 40	-7 51	2 46	1 23	-0 41	-11 14	-0 34	-19 12	3 54
7	11 11 14	10 8 13	8 15 31	12 53	3 3	-2 47	-0 30	15 25	-0 52	24 33	3 52	-7 46	2 46	1 27	-0 41	-11 12	-0 34	-19 12	3 54
10	11 11 24	10 8 18	8 15 31	12 51	2 56	-2 57	-1 7	15 37	-0 51	25 14	4 3	-7 41	2 46	1 31	-0 41	-11 10	-0 34	-19 12	3 54
13	11 11 34	10 8 23	8 15 31	12 46	2 48	-2 45	-1 39	15 49	-0 51	25 50	4 13	-7 36	2 46	1 35	-0 41	-11 8	-0 34	-19 12	3 54
16	11 11 44	10 8 28	8 15 31	12 38	2 40	-2 14	-2 5	16 1	-0 50	26 21	4 21	-7 31	2 46	1 39	-0 41	-11 7	-0 34	-19 12	3 54
19	11 11 53	10 8 32	8 15 30	12 29	2 33	-1 26	-2 25	16 13	-0 50	26 47	4 29	-7 26	2 46	1 43	-0 41	-11 5	-0 34	-19 12	3 54
22	11 12 3	10 8 36	8 15 29	12 17	2 26	-0 23	-2 39	16 25	-0 50	27 9	4 35	-7 21	2 46	1 47	-0 41	-11 4	-0 34	-19 12	3 54
25	11 12 12	10 8 40	8 15 28	12 3	2 18	0 54	-2 47	16 37	-0 49	27 26	4 39	-7 16	2 46	1 51	-0 42	-11 2	-0 34	-19 12	3 54
28	11 12 22	10 8 44	8 15 26	11 47	2 11	2 23	-2 50	16 49	-0 49	27 38	4 42	-7 12	2 46	1 54	-0 42	-11 1	-0 34	-19 12	3 54
मई 1	11 12 31	10 8 48	8 15 25	11 30	2 5	4 2	-2 48	17 0	-0 49	27 46	4 42	-7 7	2 46	1 58	-0 42	-11 0	-0 34	-19 12	3 54
4	11 12 39	10 8 51	8 15 23	11 10	1 58	5 52	-2 41	17 12	-0 49	27 49	4 40	-7 3	2 45	2 1	-0 42	-10 59	-0 34	-19 12	3 54
7	11 12 48	10 8 54	8 15 20	10 50	1 52	7 49	-2 29	17 23	-0 48	27 48	4 35	-6 59	2 45	2 4	-0 42	-10 58	-0 35	-19 13	3 54
10	11 12 56	10 8 56	8 15 18	10 27	1 46	9 53	-2 12	17 35	-0 48	27 42	4 26	-6 55	2 45	2 8	-0 42	-10 57	-0 35	-19 13	3 54
13	11 13 4	10 8 59	8 15 15	10 3	1 40	12 1	-1 51	17 46	-0 48	27 32	4 15	-6 51	2 44	2 11	-0 42	-10 56	-0 35	-19 13	3 54
16	11 13 12	10 9 1	8 15 13	9 38	1 34	14 13	-1 26	17 56	-0 48	27 17	3 59	-6 47	2 44	2 14	-0 42	-10 56	-0 35	-19 13	3 54
19	11 13 19	10 9 2	8 15 9	9 11	1 28	16 24	-0 58	18 7	-0 48	26 56	3 39	-6 44	2 43	2 17	-0 42	-10 55	-0 35	-19 13	3 54
22	11 13 26	10 9 4	8 15 6	8 43	1 23	18 31	-0 27	18 17	-0 47	26 29	3 14	-6 41	2 43	2 19	-0 42	-10 55	-0 35	-19 14	3 54
25	11 13 33	10 9 5	8 15 3	8 14	1 18	20 28	0 5	18 28	-0 47	25 57	2 44	-6 38	2 42	2 22	-0 42	-10 54	-0 35	-19 14	3 54
28	11 13 40	10 9 6	8 14 59	7 44	1 13	22 11	0 36	18 38	-0 47	25 18	2 11	-6 35	2 41	2 24	-0 42	-10 54	-0 35	-19 14	3 54
31	11 13 46	10 9 7	8 14 55	7 12	1 8	23 35	1 4	18 47	-0 47	24 33	1 33	-6 33	2 41	2 27	-0 42	-10 54	-0 35	-19 15	3 54
जून 1	11 13 48	10 9 7	8 14 54	7 2	1 6	23 58	1 13	18 51	-0 47	24 17	1 20	-6 33	2 41	2 28	-0 42	-10 54	-0 35	-19 15	3 54
4	11 13 53	10 9 7	8 14 50	6 29	1 1	24 50	1 35	19 0	-0 47	23 26	0 38	-6 31	2 40	2 30	-0 42	-10 54	-0 35	-19 15	3 54
7	11 13 59	10 9 7	8 14 46	5 55	0 57	25 17	1 51	19 9	-0 47	22 32	-0 4	-6 29	2 39	2 32	-0 42	-10 54	-0 35	-19 16	3 53
10	11 14 4	10 9 7	8 14 42	5 20	0 53	25 21	2 0	19 18	-0 47	21 38	-0 46	-6 28	2 39	2 34	-0 43	-10 54	-0 36	-19 16	3 53
13	11 14 8	10 9 6	8 14 37	4 45	0 48	25 4	2 3	19 27	-0 46	20 44	-1 27	-6 27	2 38	2 35	-0 43	-10 54	-0 36	-19 17	3 53
16	11 14 12	10 9 5	8 14 33	4 8	0 44	24 30	1 59	19 36	-0 46	19 55	-2 4	-6 27	2 37	2 37	-0 43	-10 55	-0 36	-19 17	3 53
19	11 14 16	10 9 4	8 14 29	3 31	0 40	23 41	1 48	19 44	-0 46	19 12	-2 38	-6 27	2 36	2 38	-0 43	-10 55	-0 36	-19 18	3 53
22	11 14 19	10 9 2	8 14 24	2 53	0 36	22 41	1 31	19 52	-0 46	18 35	-3 7	-6 27	2 35	2 39	-0 43	-10 56	-0 36	-19 18	3 52
25	11 14 22	10 9 0	8 14 20	2 14	0 33	21 34	1 9	20 0	-0 46	18 6	-3 31	-6 27	2 35	2 40	-0 43	-10 57	-0 36	-19 19	3 52
28	11 14 25	10 8 58	8 14 15	1 35	0 29	20 21	0 42	20 7	-0 46	17 45	-3 51	-6 28	2 34	2 41	-0 43	-10 58	-0 36	-19 19	3 52

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2012 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2012 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जुलाई 1	11 14 27	10 8 56	8 14 10	0 55	0 25	19 6	0 10	20 14	-0 46	17 31	-4 7	-6 30	2 33	2 42	-0 43	-10 58	-0 36	-19 20	3 52
4	11 14 28	10 8 54	8 14 6	0 14	0 22	17 51	-0 27	20 21	-0 46	17 24	-4 20	-6 31	2 32	2 43	-0 43	-10 59	-0 36	-19 20	3 51
7	11 14 29	10 8 51	8 14 1	-0 27	0 18	16 39	-1 7	20 28	-0 46	17 23	-4 28	-6 33	2 32	2 43	-0 43	-11 1	-0 36	-19 21	3 51
10	11 14 30	10 8 48	8 13 57	-1 9	0 15	15 34	-1 50	20 34	-0 46	17 28	-4 34	-6 35	2 31	2 43	-0 44	-11 2	-0 36	-19 22	3 51
13	11 14 30	10 8 45	8 13 52	-1 51	0 12	14 38	-2 33	20 40	-0 46	17 36	-4 37	-6 38	2 30	2 43	-0 44	-11 3	-0 36	-19 22	3 50
16	11 14 30	10 8 41	8 13 48	-2 33	0 9	13 54	-3 17	20 46	-0 46	17 47	-4 37	-6 40	2 29	2 43	-0 44	-11 4	-0 37	-19 23	3 50
19	11 14 29	10 8 37	8 13 44	-3 16	0 6	13 26	-3 56	20 52	-0 46	18 1	-4 35	-6 43	2 28	2 43	-0 44	-11 6	-0 37	-19 24	3 49
22	11 14 28	10 8 34	8 13 39	-3 59	0 3	13 15	-4 29	20 57	-0 46	18 17	-4 32	-6 47	2 28	2 42	-0 44	-11 7	-0 37	-19 24	3 49
25	11 14 27	10 8 30	8 13 35	-4 42	0 0	13 22	-4 50	21 2	-0 46	18 33	-4 26	-6 51	2 27	2 41	-0 44	-11 9	-0 37	-19 25	3 48
28	11 14 25	10 8 25	8 13 31	-5 26	-0 3	13 46	-4 58	21 7	-0 46	18 49	-4 20	-6 55	2 26	2 41	-0 44	-11 10	-0 37	-19 26	3 48
31	11 14 23	10 8 21	8 13 28	-6 10	-0 6	14 25	-4 50	21 12	-0 46	19 5	-4 12	-6 59	2 25	2 40	-0 44	-11 12	-0 37	-19 26	3 47
अगस्त 1	11 14 22	10 8 20	8 13 26	-6 24	-0 7	14 40	-4 44	21 13	-0 46	19 10	-4 9	-7 0	2 25	2 39	-0 44	-11 12	-0 37	-19 27	3 47
4	11 14 19	10 8 15	8 13 23	-7 8	-0 9	15 28	-4 16	21 17	-0 47	19 25	-3 59	-7 5	2 24	2 38	-0 44	-11 14	-0 37	-19 27	3 47
7	11 14 16	10 8 11	8 13 19	-7 52	-0 12	16 18	-3 36	21 21	-0 47	19 37	-3 49	-7 10	2 24	2 37	-0 44	-11 16	-0 37	-19 28	3 46
10	11 14 12	10 8 6	8 13 16	-8 35	-0 14	17 3	-2 49	21 25	-0 47	19 47	-3 38	-7 15	2 23	2 35	-0 44	-11 17	-0 37	-19 29	3 46
13	11 14 8	10 8 1	8 13 13	-9 19	-0 17	17 37	-1 59	21 29	-0 47	19 55	-3 26	-7 20	2 22	2 34	-0 45	-11 19	-0 37	-19 29	3 45
16	11 14 4	10 7 56	8 13 10	-10 2	-0 19	17 56	-1 9	21 32	-0 47	19 59	-3 13	-7 26	2 22	2 32	-0 45	-11 21	-0 37	-19 30	3 45
19	11 13 59	10 7 51	8 13 7	-10 46	-0 22	17 54	-0 22	21 35	-0 47	20 0	-3 0	-7 31	2 21	2 30	-0 45	-11 23	-0 37	-19 31	3 44
22	11 13 54	10 7 47	8 13 5	-11 29	-0 24	17 29	0 20	21 38	-0 47	19 58	-2 47	-7 37	2 21	2 28	-0 45	-11 24	-0 37	-19 32	3 43
25	11 13 49	10 7 42	8 13 3	-12 11	-0 26	16 38	0 54	21 40	-0 47	19 51	-2 33	-7 43	2 20	2 26	-0 45	-11 26	-0 37	-19 32	3 43
28	11 13 43	10 7 37	8 13 1	-12 53	-0 28	15 22	1 20	21 43	-0 48	19 40	-2 19	-7 50	2 20	2 24	-0 45	-11 28	-0 37	-19 33	3 42
31	11 13 37	10 7 32	8 12 59	-13 35	-0 31	13 43	1 36	21 45	-0 48	19 26	-2 5	-7 56	2 19	2 21	-0 45	-11 30	-0 37	-19 34	3 42
सितं. 1	11 13 35	10 7 30	8 12 58	-13 49	-0 31	13 6	1 40	21 45	-0 48	19 20	-2 1	-7 58	2 19	2 20	-0 45	-11 30	-0 37	-19 34	3 41
4	11 13 29	10 7 25	8 12 57	-14 30	-0 33	11 6	1 47	21 47	-0 48	18 59	-1 46	-8 5	2 18	2 18	-0 45	-11 32	-0 37	-19 35	3 41
7	11 13 23	10 7 20	8 12 56	-15 10	-0 35	8 54	1 46	21 49	-0 48	18 33	-1 32	-8 12	2 18	2 15	-0 45	-11 34	-0 37	-19 35	3 40
10	11 13 16	10 7 16	8 12 55	-15 49	-0 37	6 35	1 40	21 50	-0 48	18 4	-1 18	-8 19	2 17	2 13	-0 45	-11 36	-0 37	-19 36	3 40
13	11 13 9	10 7 11	8 12 54	-16 28	-0 39	4 13	1 29	21 52	-0 48	17 29	-1 4	-8 26	2 17	2 10	-0 45	-11 37	-0 37	-19 37	3 39
16	11 13 3	10 7 7	8 12 54	-17 6	-0 41	1 50	1 15	21 53	-0 48	16 51	-0 51	-8 33	2 17	2 7	-0 45	-11 39	-0 37	-19 37	3 38
19	11 12 56	10 7 2	8 12 54	-17 43	-0 43	-0 31	0 58	21 54	-0 49	16 8	-0 37	-8 40	2 16	2 4	-0 45	-11 40	-0 37	-19 38	3 38
22	11 12 48	10 6 58	8 12 54	-18 19	-0 45	-2 50	0 40	21 54	-0 49	15 21	-0 24	-8 48	2 16	2 2	-0 45	-11 42	-0 37	-19 39	3 37
25	11 12 41	10 6 54	8 12 55	-18 53	-0 46	-5 6	0 20	21 55	-0 49	14 29	-0 12	-8 55	2 16	1 59	-0 45	-11 43	-0 37	-19 39	3 36
28	11 12 34	10 6 50	8 12 56	-19 27	-0 48	-7 17	-0 1	21 55	-0 49	13 34	0 1	-9 2	2 15	1 56	-0 45	-11 45	-0 37	-19 40	3 36

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2012 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2012 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अक्तू. 1	11 12 27	10 6 46	8 12 57	-19 59	-0 50	-9 23	-0 23	21 55	-0 49	12 35	0 12	-9 10	2 15	1 53	-0 45	-11 46	-0 37	-19 40	3 35
4	11 12 19	10 6 43	8 12 58	-20 30	-0 51	-11 24	-0 45	21 55	-0 49	11 33	0 24	-9 17	2 15	1 50	-0 45	-11 47	-0 37	-19 41	3 34
7	11 12 12	10 6 39	8 13 0	-20 59	-0 53	-13 18	-1 6	21 55	-0 50	10 27	0 34	-9 25	2 15	1 47	-0 45	-11 49	-0 37	-19 41	3 34
10	11 12 5	10 6 36	8 13 1	-21 27	-0 54	-15 6	-1 27	21 55	-0 50	9 18	0 44	-9 33	2 14	1 45	-0 45	-11 50	-0 37	-19 42	3 33
13	11 11 58	10 6 33	8 13 4	-21 53	-0 55	-16 46	-1 47	21 54	-0 50	8 7	0 53	-9 40	2 14	1 42	-0 45	-11 51	-0 37	-19 43	3 33
16	11 11 51	10 6 31	8 13 6	-22 17	-0 57	-18 18	-2 5	21 54	-0 50	6 53	1 2	-9 48	2 14	1 39	-0 45	-11 52	-0 37	-19 43	3 32
19	11 11 44	10 6 28	8 13 9	-22 40	-0 58	-19 41	-2 22	21 53	-0 50	5 37	1 10	-9 55	2 14	1 37	-0 45	-11 52	-0 37	-19 44	3 31
22	11 11 38	10 6 26	8 13 12	-23 1	-0 59	-20 54	-2 36	21 52	-0 50	4 19	1 17	-10 3	2 14	1 34	-0 45	-11 53	-0 37	-19 44	3 31
25	11 11 31	10 6 24	8 13 15	-23 20	-1 0	-21 55	-2 48	21 50	-0 50	2 59	1 24	-10 10	2 14	1 32	-0 45	-11 54	-0 37	-19 44	3 30
28	11 11 25	10 6 23	8 13 18	-23 37	-1 1	-22 45	-2 55	21 49	-0 50	1 38	1 29	-10 18	2 14	1 29	-0 45	-11 54	-0 37	-19 45	3 29
31	11 11 19	10 6 21	8 13 22	-23 51	-1 2	-23 19	-2 56	21 47	-0 50	0 16	1 34	-10 25	2 14	1 27	-0 45	-11 55	-0 37	-19 45	3 29
नवं. 1	11 11 18	10 6 21	8 13 23	-23 56	-1 3	-23 27	-2 55	21 47	-0 50	-0 12	1 36	-10 28	2 14	1 26	-0 45	-11 55	-0 37	-19 45	3 29
4	11 11 12	10 6 20	8 13 28	-24 8	-1 4	-23 37	-2 47	21 45	-0 50	-1 35	1 40	-10 35	2 14	1 24	-0 44	-11 55	-0 37	-19 46	3 28
7	11 11 7	10 6 19	8 13 32	-24 17	-1 4	-23 25	-2 27	21 43	-0 50	-2 58	1 43	-10 42	2 14	1 22	-0 44	-11 55	-0 37	-19 46	3 28
10	11 11 2	10 6 19	8 13 36	-24 25	-1 5	-22 45	-1 55	21 41	-0 50	-4 21	1 45	-10 49	2 14	1 20	-0 44	-11 55	-0 37	-19 46	3 27
13	11 10 57	10 6 19	8 13 41	-24 30	-1 6	-21 33	-1 8	21 39	-0 49	-5 44	1 47	-10 56	2 14	1 19	-0 44	-11 55	-0 37	-19 46	3 27
16	11 10 53	10 6 19	8 13 46	-24 33	-1 7	-19 51	-0 10	21 36	-0 49	-7 6	1 47	-11 3	2 14	1 17	-0 44	-11 55	-0 37	-19 47	3 26
19	11 10 49	10 6 20	8 13 51	-24 33	-1 7	-17 55	0 51	21 34	-0 49	-8 27	1 47	-11 10	2 15	1 16	-0 44	-11 55	-0 37	-19 47	3 25
22	11 10 46	10 6 21	8 13 56	-24 31	-1 8	-16 13	1 43	21 31	-0 49	-9 47	1 47	-11 16	2 15	1 14	-0 44	-11 55	-0 37	-19 47	3 25
25	11 10 43	10 6 22	8 14 1	-24 26	-1 8	-15 9	2 17	21 28	-0 49	-11 5	1 45	-11 23	2 15	1 13	-0 44	-11 54	-0 37	-19 47	3 25
28	11 10 41	10 6 24	8 14 7	-24 19	-1 9	-14 49	2 33	21 26	-0 48	-12 20	1 43	-11 29	2 15	1 12	-0 44	-11 53	-0 37	-19 47	3 24
दिसं. 1	11 10 38	10 6 26	8 14 13	-24 10	-1 9	-15 8	2 34	21 23	-0 48	-13 34	1 40	-11 35	2 16	1 12	-0 44	-11 53	-0 37	-19 48	3 24
4	11 10 37	10 6 28	8 14 18	-23 58	-1 9	-15 53	2 25	21 20	-0 47	-14 44	1 37	-11 41	2 16	1 11	-0 43	-11 52	-0 37	-19 48	3 23
7	11 10 35	10 6 30	8 14 24	-23 43	-1 10	-16 55	2 10	21 17	-0 47	-15 51	1 33	-11 47	2 16	1 11	-0 43	-11 51	-0 37	-19 48	3 23
10	11 10 35	10 6 33	8 14 30	-23 27	-1 10	-18 3	1 51	21 14	-0 47	-16 55	1 28	-11 52	2 17	1 10	-0 43	-11 50	-0 37	-19 48	3 22
13	11 10 34	10 6 36	8 14 36	-23 7	-1 10	-19 13	1 29	21 11	-0 46	-17 54	1 23	-11 58	2 17	1 10	-0 43	-11 49	-0 37	-19 48	3 22
16	11 10 34	10 6 40	8 14 43	-22 46	-1 10	-20 21	1 6	21 8	-0 46	-18 50	1 18	-12 3	2 18	1 11	-0 43	-11 48	-0 37	-19 48	3 22
19	11 10 35	10 6 43	8 14 49	-22 22	-1 10	-21 23	0 43	21 5	-0 45	-19 41	1 12	-12 8	2 18	1 11	-0 43	-11 46	-0 37	-19 48	3 21
22	11 10 36	10 6 47	8 14 55	-21 56	-1 10	-22 18	0 20	21 2	-0 44	-20 27	1 5	-12 13	2 19	1 12	-0 43	-11 45	-0 37	-19 48	3 21
25	11 10 38	10 6 51	8 15 2	-21 27	-1 10	-23 5	-0 2	21 0	-0 44	-21 7	0 59	-12 17	2 19	1 12	-0 43	-11 44	-0 37	-19 47	3 21
28	11 10 40	10 6 56	8 15 8	-20 57	-1 9	-23 42	-0 23	20 57	-0 43	-21 43	0 52	-12 22	2 20	1 13	-0 42	-11 42	-0 37	-19 47	3 20
31	11 10 42	10 7 0	8 15 14	-20 24	-1 9	-24 9	-0 43	20 55	-0 43	-22 12	0 44	-12 26	2 20	1 14	-0 42	-11 40	-0 37	-19 47	3 20

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2013 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2013 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जन. 1	11 10 43	10 7 2	8 15 16	-20 12	-1 9	-24 15	-0 49	20 54	-0 42	-22 21	0 42	-12 27	2 20	1 15	-0 42	-11 40	-0 37	-19 47	3 20
4	11 10 46	10 7 7	8 15 23	-19 37	-1 9	-24 26	-1 7	20 52	-0 42	-22 42	0 34	-12 31	2 21	1 16	-0 42	-11 38	-0 37	-19 47	3 20
7	11 10 50	10 7 12	8 15 29	-19 0	-1 8	-24 26	-1 23	20 51	-0 41	-22 58	0 27	-12 34	2 22	1 17	-0 42	-11 36	-0 37	-19 47	3 19
10	11 10 54	10 7 17	8 15 36	-18 20	-1 8	-24 13	-1 36	20 49	-0 40	-23 7	0 19	-12 37	2 22	1 19	-0 42	-11 34	-0 37	-19 47	3 19
13	11 10 58	10 7 23	8 15 42	-17 39	-1 7	-23 47	-1 48	20 48	-0 40	-23 10	0 11	-12 40	2 23	1 21	-0 42	-11 32	-0 37	-19 46	3 19
16	11 11 3	10 7 28	8 15 48	-16 57	-1 7	-23 8	-1 57	20 47	-0 39	-23 6	0 4	-12 43	2 23	1 23	-0 42	-11 30	-0 37	-19 46	3 19
19	11 11 8	10 7 34	8 15 54	-16 13	-1 6	-22 15	-2 3	20 46	-0 38	-22 56	-0 4	-12 45	2 24	1 25	-0 42	-11 28	-0 37	-19 46	3 18
22	11 11 14	10 7 40	8 16 0	-15 27	-1 5	-21 9	-2 5	20 46	-0 38	-22 40	-0 12	-12 47	2 25	1 27	-0 42	-11 26	-0 37	-19 46	3 18
25	11 11 20	10 7 46	8 16 6	-14 40	-1 4	-19 49	-2 4	20 46	-0 37	-22 17	-0 19	-12 49	2 25	1 30	-0 41	-11 24	-0 37	-19 45	3 18
28	11 11 26	10 7 53	8 16 12	-13 51	-1 3	-18 15	-1 59	20 46	-0 36	-21 48	-0 26	-12 51	2 26	1 33	-0 41	-11 21	-0 37	-19 45	3 18
31	11 11 33	10 7 59	8 16 18	-13 1	-1 3	-16 28	-1 48	20 47	-0 36	-21 14	-0 33	-12 52	2 27	1 35	-0 41	-11 19	-0 37	-19 45	3 18
फर. 1	11 11 35	10 8 1	8 16 20	-12 44	-1 2	-15 50	-1 43	20 47	-0 35	-21 1	-0 35	-12 52	2 27	1 36	-0 41	-11 18	-0 37	-19 45	3 18
4	11 11 42	10 8 8	8 16 25	-11 53	-1 1	-13 47	-1 25	20 48	-0 35	-20 19	-0 42	-12 53	2 28	1 39	-0 41	-11 16	-0 37	-19 44	3 18
7	11 11 50	10 8 15	8 16 31	-11 1	-1 0	-11 35	-1 1	20 49	-0 34	-19 31	-0 48	-12 54	2 29	1 42	-0 41	-11 14	0 37	-19 44	3 18
10	11 11 58	10 8 21	8 16 36	-10 8	-0 59	-9 18	-0 30	20 51	-0 33	-18 38	-0 54	-12 54	2 29	1 45	-0 41	-11 11	-0 37	-19 44	3 17
13	11 12 6	10 8 28	8 16 41	-9 14	-0 58	-7 2	0 7	20 53	-0 33	-17 41	-0 59	-12 54	2 30	1 49	-0 41	-11 9	-0 37	-19 43	3 17
16	11 12 14	10 8 35	8 16 46	-8 19	-0 57	-4 55	0 50	20 55	-0 32	-16 39	-1 4	-12 54	2 31	1 52	-0 41	-11 6	-0 37	-19 43	3 17
19	11 12 23	10 8 42	8 16 50	-7 24	-0 55	-3 9	1 37	20 57	-0 31	-15 32	-1 9	-12 53	2 31	1 56	-0 41	-11 4	-0 37	-19 43	3 17
22	11 12 32	10 8 48	8 16 55	-6 28	-0 54	-1 54	2 22	21 0	-0 31	-14 22	-1 13	-12 52	2 32	1 59	-0 41	-11 2	-0 37	-19 43	3 17
25	11 12 41	10 8 55	8 16 59	-5 32	-0 53	-1 18	3 2	21 3	-0 30	-13 8	-1 17	-12 51	2 33	2 3	-0 41	-10 59	-0 37	-19 42	3 17
28	11 12 50	10 9 2	8 17 3	-4 35	-0 51	-1 26	3 30	21 6	-0 29	-11 52	-1 20	-12 50	2 34	2 7	-0 41	-10 57	-0 37	-19 42	3 17
मार्च 1	11 12 53	10 9 4	8 17 4	-4 16	-0 51	-1 38	3 36	21 7	-0 29	-11 25	-1 20	-12 49	2 34	2 8	-0 41	-10 56	-0 37	-19 42	3 17
4	11 13 3	10 9 11	8 17 8	-3 19	-0 49	-2 38	3 41	21 11	-0 29	-10 5	-1 23	-12 48	2 34	2 12	-0 40	-10 53	-0 37	-19 42	3 17
7	11 13 12	10 9 18	8 17 11	-2 22	-0 48	-4 1	3 27	21 14	-0 28	-8 41	-1 24	-12 46	2 35	2 15	-0 40	-10 51	-0 37	-19 41	3 17
10	11 13 22	10 9 25	8 17 15	-1 25	-0 46	-5 30	2 58	21 18	-0 27	-7 16	-1 26	-12 43	2 36	2 19	-0 40	-10 49	-0 37	-19 41	3 17
13	11 13 32	10 9 31	8 17 17	-0 28	-0 45	-6 51	2 18	21 22	-0 27	-5 49	-1 26	-12 41	2 36	2 23	-0 40	-10 46	-0 37	-19 41	3 17
16	11 13 42	10 9 38	8 17 20	0 29	-0 43	-7 55	1 35	21 26	-0 26	-4 21	-1 26	-12 38	2 37	2 27	-0 40	-10 44	-0 37	-19 41	3 17
19	11 13 52	10 9 44	8 17 23	1 26	-0 42	-8 38	0 51	21 30	-0 26	-2 52	-1 26	-12 35	2 37	2 31	-0 40	-10 42	-0 37	-19 40	3 17
22	11 14 2	10 9 50	8 17 25	2 23	-0 40	-9 0	0 9	21 34	-0 25	-1 22	-1 24	-12 32	2 38	2 35	-0 40	-10 40	-0 37	-19 40	3 17
25	11 14 13	10 9 56	8 17 27	3 19	-0 38	-9 1	-0 28	21 39	-0 25	0 9	-1 23	-12 29	2 38	2 40	-0 40	-10 37	-0 37	-19 40	3 17
28	11 14 23	10 10 2	8 17 28	4 15	-0 37	-8 44	-1 1	21 43	-0 24	1 40	-1 20	-12 25	2 39	2 44	-0 40	-10 35	-0 37	-19 40	3 17
31	11 14 33	10 10 8	8 17 29	5 10	-0 35	-8 10	-1 28	21 48	-0 24	3 10	-1 18	-12 22	2 39	2 48	-0 40	-10 33	-0 37	-19 40	3 17

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2013 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2013 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं: क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अप्रैल 1	11 14 37	10 10 10	8 17 30	5 28	- 0 34	- 7 55	- 1 37	21 49	- 0 23	3 40	- 1 17	-12 20	2 39	2 49	- 0 40	-10 32	- 0 37	-19 40	3 17
4	11 14 47	10 10 16	8 17 31	6 23	- 0 32	- 7 1	- 1 58	21 54	- 0 23	5 10	- 1 13	-12 16	2 40	2 53	- 0 40	-10 31	- 0 37	-19 40	3 17
7	11 14 57	10 10 21	8 17 31	7 16	- 0 31	- 5 53	- 2 15	21 58	- 0 23	6 38	- 1 9	-12 12	2 40	2 57	- 0 40	-10 29	- 0 37	-19 40	3 17
10	11 15 7	10 10 27	8 17 32	8 9	- 0 29	- 4 32	- 2 27	22 2	- 0 22	8 6	- 1 5	-12 8	2 40	3 1	- 0 40	-10 27	- 0 37	-19 40	3 17
13	11 15 17	10 10 32	8 17 32	9 1	- 0 27	- 2 59	- 2 34	22 7	- 0 22	9 31	- 1 0	-12 4	2 41	3 5	- 0 40	-10 25	- 0 38	-19 40	3 17
16	11 15 27	10 10 36	8 17 32	9 53	- 0 25	- 1 16	- 2 36	22 11	- 0 21	10 55	- 0 54	-12 0	2 41	3 9	- 0 40	-10 23	- 0 38	-19 40	3 17
19	11 15 37	10 10 41	8 17 31	10 43	- 0 23	0 37	- 2 34	22 15	- 0 21	12 17	- 0 49	-11 56	2 41	3 13	- 0 40	-10 22	- 0 38	-19 40	3 17
22	11 15 47	10 10 45	8 17 31	11 32	- 0 21	2 39	- 2 27	22 20	- 0 20	13 35	- 0 43	-11 51	2 41	3 17	- 0 40	-10 20	- 0 38	-19 40	3 17
25	11 15 57	10 10 50	8 17 30	12 20	- 0 20	4 50	- 2 15	22 24	- 0 20	14 51	- 0 36	-11 47	2 41	3 20	- 0 40	-10 19	- 0 38	-19 40	3 17
28	11 16 6	10 10 54	8 17 28	13 7	- 0 18	7 7	- 1 59	22 28	- 0 20	16 3	- 0 30	-11 43	2 41	3 24	- 0 40	-10 17	- 0 38	-19 40	3 17

(पृष्ठ 155 का शेष)

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र–नक्षत्रचरण		1		2		3		4		चन्द्र–नक्षत्रचरण		1		2		3		4		चन्द्र–नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अप्रैल 2013 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	अप्रैल 2013 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	अप्रैल 2013 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	ज्येष्ठा	2	39	8	14	13	50	19	26	10/11	अश्वि.	21	29	3	50	10	14	16	39	21/22	पू.फा.	20	20	2	27	8	30	14	32
2	मूल	1	3	6	40	12	17	17	55	11/12	भर.	23	6	5	36	12	7	18	40	22/23	उ.फा.	20	30	2	26	8	19	14	9
2/ 3	पू.षा.	23	34	5	13	10	53	16	34	13	कृत्ति.	1	14	7	51	14	29	21	8	23/24	हस्त	19	57	1	43	7	26	13	8
3/ 4	उ.षा.	22	15	3	58	9	41	15	25	14	रोहि.	3	49	10	31	17	14	23	58	24/25	चित्रा	18	47	0	24	6	0	11	34
4/ 5	श्रव.	21	9	2	55	8	42	14	30	15/16	मृग.	6	42	13	28	20	14	3	0	25/26	स्वाती	17	6	22	37	4	7	9	35
5/ 6	धनि.	20	19	2	9	8	0	13	52	16/17	आर्द्रा	9	46	16	32	23	17	6	2	26/27	विशा.	15	3	20	30	1	56	7	21
6/ 7	शत.	19	45	1	40	7	36	13	34	17/18	पुन.	12	46	19	29	2	11	8	52	27/28	अनु.	12	46	18	11	23	36	5	0
7/ 8	पू.भा.	19	33	1	33	7	35	13	38	18/19	पुष्य	15	31	22	8	4	43	11	16	28/29	ज्येष्ठा	10	25	15	50	21	15	2	40
8/ 9	उ.भा.	19	44	1	50	7	59	14	9	19/20	आश्ले.	17	47	0	15	6	41	13	4	29/30	मूल	8	6	13	33	19	1	0	30
9/10	रेव.	20	21	2	35	8	51	15	9	20/21	मघा	19	25	1	43	7	58	14	10	30	पू.षा.	5	59	11	30	17	2	22	35

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र–चरणचार (1 जनवरी, 2012 से 10 अप्रैल, 2013 ई. तक)

सूर्य–चार (सन् 2012–13 ई.)

तारीख 2012 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 1		पू.षा.	2	22 52
5		पू.षा.	3	5 22
8		पू.षा.	4	11 53
11		उ.षा.	1	18 25
15	मकर	उ.षा.	2	0 58
18		उ.षा.	3	7 31
21		उ.षा.	4	14 05
24		श्रव.	1	20 42
28		श्रव.	2	3 21
31		श्रव.	3	10 06
फरवरी 3		श्रव.	4	16 56
6		धनि.	1	23 51
10		धनि.	2	6 52
13	कुम्भ	धनि.	3	13 58
16		धनि.	4	21 08
20		शत.	1	4 24
23		शत.	2	11 45
26		शत.	3	19 15
मार्च 1		शत.	4	2 52
4		पू.भा.	1	10 39
7		पू.भा.	2	18 34
11		पू.भा.	3	2 38
14	मीन	पू.भा.	4	10 50
17		उ.भा.	1	19 10
21		उ.भा.	2	3 37
24		उ.भा.	3	12 13
27		उ.भा.	4	20 58
31		रेव.	1	5 54
अप्रैल 3		रेव.	2	15 01
7		रेव.	3	0 18
10		रेव.	4	9 44

तारीख 2012 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
अप्रैल 13	मेष	अश्वि.	1	19 19
17		अश्वि.	2	5 02
20		अश्वि.	3	14 53
24		अश्वि.	4	0 53
27		भर.	1	11 03
30		भर.	2	21 23
मई 4		भर.	3	7 53
7		भर.	4	18 31
11		कृत्ति.	1	5 17
14	वृष	कृत्ति.	2	16 10
18		कृत्ति.	3	3 09
21		कृत्ति.	4	14 14
25		रोहि.	1	1 25
28		रोहि.	2	12 44
जून 1		रोहि.	3	0 11
4		रोहि.	4	11 43
7		मृग.	1	23 21
11		मृग.	2	11 01
14	मिथुन	मृग.	3	22 45
18		मृग.	4	10 30
21		आर्द्रा	1	22 18
25		आर्द्रा	2	10 08
28		आर्द्रा	3	22 02
जुलाई 2		आर्द्रा	4	9 57
5		पुन.	1	21 54
9		पुन.	2	9 50
12		पुन.	3	21 45
16	कर्क	पुन.	4	9 36
19		पुष्य	1	21 25
23		पुष्य	2	9 12
26		पुष्य	3	20 56

तारीख 2012 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जुलाई 30		पुष्य	4	8 39
अगस्त 2		आश्ले.	1	20 19
6		आश्ले.	2	7 53
9		आश्ले.	3	19 22
13		आश्ले.	4	6 44
16	सिंह	मघा	1	17 59
20		मघा	2	5 07
23		मघा	3	16 10
27		मघा	4	3 06
30		पू.फा.	1	13 56
सितंबर 3		पू.फा.	2	0 38
6		पू.फा.	3	11 12
9		पू.फा.	4	21 36
13		उ.फा.	1	7 50
16	कन्या	उ.फा.	2	17 54
20		उ.फा.	3	3 50
23		उ.फा.	4	13 37
26		हस्त	1	23 16
30		हस्त	2	8 47
अक्तूबर 3		हस्त	3	18 08
7		हस्त	4	3 19
10		चित्रा	1	12 20
13		चित्रा	2	21 10
17	तुला	चित्रा	3	5 50
20		चित्रा	4	14 21
23		स्वाती	1	22 45
27		स्वाती	2	7 00
30		स्वाती	3	15 08
नवम्बर 2		स्वाती	4	23 08
6		विशा.	1	6 58
9		विशा.	2	14 39

तारीख 2012 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
नवम्बर 12		विशा.	3	22 12
16	वृश्चिक	विशा.	4	5 37
19		अनु.	1	12 55
22		अनु.	2	20 08
26		अनु.	3	3 16
29		अनु.	4	10 19
दिसम्बर 2		ज्येष्ठा	1	17 17
6		ज्येष्ठा	2	0 09
9		ज्येष्ठा	3	6 55
12		ज्येष्ठा	4	13 37
15	धनु	मूल	1	20 14
19		मूल	2	2 50
22		मूल	3	9 24
25		मूल	4	15 57
28		पू.षा.	1	22 29
(सन् 2013 ई.)				
जनवरी 1		पू.षा.	2	5 01
4		पू.षा.	3	11 31
7		पू.षा.	4	18 00
11		उ.षा.	1	0 29
14	मकर	उ.षा.	2	6 59
17		उ.षा.	3	13 31
20		उ.षा.	4	20 06
24		श्रव.	1	2 46
27		श्रव.	2	9 29
30		श्रव.	3	16 16
फरवरी 2		श्रव.	4	23 06
6		धनि.	1	5 59
9		धनि.	2	12 57
12	कुम्भ	धनि.	3	20 00
16		धनि.	4	3 10

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र–चरणचार (1 जनवरी, 2012 से 10 अप्रैल, 2013 ई. तक)

सूर्य–चार (सन् 2013)

तारीख 2013 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
फरवरी 19		शत.	1	10 27
22		शत.	2	17 52
26		शत.	3	1 24
मार्च 1		शत.	4	9 05
4		पू.भा.	1	16 51
8		पू.भा.	2	0 45
11		पू.भा.	3	8 46
14	मीन	पू.भा.	4	16 56
18		उ.भा.	1	1 15
21		उ.भा.	2	9 44
24		उ.भा.	3	18 23
28		उ.भा.	4	3 12
31		रेव.	1	12 11
अप्रैल 3		रेव.	2	21 17
7		रेव.	3	6 32
10		रेव.	4	15 56

मंगल–चार (सन् 2012 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
जनवरी 3		उ.फा.	1	17 57
24	वक्री			6 24
फरवरी 12		पू.फा.	4	12 20
23		पू.फा.	3	6 51
मार्च 3		पू.फा.	2	2 54
11		पू.फा.	1	15 40
21		मघा	4	8 15
अप्रैल 6		मघा	3	21 59
14	मार्गी			9 23
22		मघा	4	1 10
मई 10		पू.फा.	1	8 55
21		पू.फा.	2	9 00
30		पू.फा.	3	10 48
जून 7		पू.फा.	4	12 49

मंगल–चार (सन् 2012–2013 ई.)

तारीख 2012 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जून 14		उ.फा.	1	23 49
22	कन्या	उ.फा.	2	0 02
28		उ.फा.	3	16 08
जुलाई 5		उ.फा.	4	1 57
11		हस्त	1	6 43
17		हस्त	2	7 07
23		हस्त	3	3 46
28		हस्त	4	21 11
अगस्त 3		चित्रा	1	11 49
8		चित्रा	2	23 58
14	तुला	चित्रा	3	9 49
19		चित्रा	4	17 32
24		स्वाती	1	23 19
30		स्वाती	2	3 21
सितंबर 4		स्वाती	3	5 48
9		स्वाती	4	6 43
14		विशा.	1	6 11
19		विशा.	2	4 16
24		विशा.	3	1 05
28	वृश्चि.	विशा.	4	20 44
अक्तूबर 3		अनु.	1	15 17
8		अनु.	2	8 47
13		अनु.	3	1 14
17		अनु.	4	16 43
22		ज्येष्ठा	1	7 17
26		ज्येष्ठा	2	21 01
31		ज्येष्ठा	3	9 59
नवंबर 4		ज्येष्ठा	4	22 11
9	धनु	मूल	1	9 39
13		मूल	2	20 26
18		मूल	3	6 34

तारीख 2012 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
नवंबर 22		मूल	4	16 07
27		पू.षा.	1	1 08
दिसंबर 1		पू.षा.	2	9 39
5		पू.षा.	3	17 42
10		पू.षा.	4	1 18
14		उ.षा.	1	8 29
18	मकर	उ.षा.	2	15 17
22		उ.षा.	3	21 48
27		उ.षा.	4	4 02
31		श्रव.	1	10 01

(सन् 2013 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
जनवरी 4		श्रव.	2	15 48
8		श्रव.	3	21 23
13		श्रव.	4	2 48
17		धनि.	1	8 06
21		धनि.	2	13 20
25	कुम्भ	धनि.	3	18 32
29		धनि.	4	23 45
फरवरी 3		शत.	1	4 58
7		शत.	2	10 14
11		शत.	3	15 33
15		शत.	4	21 00
20		पू.भा.	1	2 36
24		पू.भा.	2	8 24
28		पू.भा.	3	14 24
मार्च 4	मीन	पू.भा.	4	20 39
9		उ.भा.	1	3 07
13		उ.भा.	2	9 53
17		उ.भा.	3	16 58
22		उ.भा.	4	0 24
26		रेव.	1	8 13

मंगल–चार (सन् 2013 ई.)

तारीख 2013 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
मार्च 30		रेव.	2	16 26
अप्रैल 4		रेव.	3	1 04
8		रेव.	4	10 06

बुध–चार (सन् 2012 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
जनवरी 1		ज्येष्ठा	4	20 52
4	धनु	मूल	1	7 13
6		मूल	2	15 59
8		मूल	3	23 36
11		मूल	4	6 16
13		पू.षा.	1	12 05
15		पू.षा.	2	17 10
17		पू.षा.	3	21 34
20		पू.षा.	4	1 20
22		उ.षा.	1	4 26
24	मकर	उ.षा.	2	6 55
26		उ.षा.	3	8 44
28		उ.षा.	4	9 54
30		श्रव.	1	10 26
फरवरी 1		श्रव.	2	10 19
3		श्रव.	3	9 32
5		श्रव.	4	8 07
7		धनि.	1	6 04
9		धनि.	2	3 24
11	कुम्भ	धनि.	3	0 10
12		धनि.	4	20 26
14		शत.	1	16 16
16		शत.	2	11 47
18		शत.	3	7 07
20		शत.	4	2 29
21		पू.भा.	1	22 11
23		पू.भा.	2	18 35

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र–चरणचार (1 जनवरी, 2012 से 10 अप्रैल, 2013 ई. तक)

बुध–चार (सन् 2012–13 ई.)

तारीख 2012 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
फरवरी 25		पू.भा.	3	16 16
27	मीन	पू.भा.	4	16 10
29		उ.भा.	1	19 50
मार्च 3		उ.भा.	2	6 19
6		उ.भा.	3	9 00
12	वक्री			13 19
19		उ.भा.	2	3 01
23		उ.भा.	1	0 14
26		पू.भा.	4	22 05
अप्रैल 2	कुम्भ	पू.भा.	3	17 34
4	मार्गी			15 41
6	मीन	पू.भा.	4	14 52
13		उ.भा.	1	21 34
17		उ.भा.	2	22 22
21		उ.भा.	3	5 25
24		उ.भा.	4	2 58
26		रेव.	1	18 28
29		रेव.	2	5 43
मई 1		रेव.	3	13 26
3		रेव.	4	18 24
5	मेष	अश्वि.	1	21 02
7		अश्वि.	2	21 37
9		अश्वि.	3	20 22
11		अश्वि.	4	17 29
13		भर.	1	13 07
15		भर.	2	7 27
17		भर.	3	0 31
18		भर.	4	16 31
20		कृत्ति.	1	7 36
21	वृष	कृत्ति.	2	21 49
23		कृत्ति.	3	11 23

तारीख 2012 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
मई 24		कृत्ति.	4	0 25
26		रोहि.	1	13 04
28		रोहि.	2	1 30
29		रोहि.	3	13 54
31		रोहि.	4	2 24
जून 1		मृग.	1	15 14
3		मृग.	2	4 31
4	मिथुन	मृग.	3	18 32
6		मृग.	4	9 22
8		आर्द्रा	1	1 17
9		आर्द्रा	2	18 29
11		आर्द्रा	3	13 08
13		आर्द्रा	4	9 28
15		पुन.	1	7 48
17		पुन.	2	8 29
19		पुन.	3	11 56
21	कर्क	पुन.	4	18 42
24		पुष्य	1	5 33
26		पुष्य	2	22 09
29		पुष्य	3	22 42
जुलाई 3		पुष्य	4	12 44
8		आश्ले.	1	10 36
15	वक्री			7 46
22		पुष्य	4	4 01
27		पुष्य	3	8 28
अगस्त 1		पुष्य	2	2 19
8	मार्गी			11 11
15		पुष्य	3	4 54
18		पुष्य	4	15 22
21		आश्ले.	1	6 13
23		आश्ले.	2	11 46

तारीख 2012 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
अगस्त 25		आश्ले.	3	12 20
27		आश्ले.	4	9 46
29	सिंह	मघा	1	5 12
30		मघा	2	23 19
सितम्बर 1		मघा	3	16 44
3		मघा	4	9 49
5		पू.फा.	1	2 51
6		पू.फा.	2	20 03
8		पू.फा.	3	13 36
10		पू.फा.	4	7 37
12		उ.फा.	1	2 14
13	कन्या	उ.फा.	2	21 33
15		उ.फा.	3	17 36
17		उ.फा.	4	14 27
19		हस्त	1	12 09
21		हस्त	2	10 43
23		हस्त	3	10 12
25		हस्त	4	10 37
27		चित्रा	1	12 0
29		चित्रा	2	14 20
अक्तूबर 1	तुला	चित्रा	3	17 41
3		चित्रा	4	22 04
6		स्वाती	1	3 30
8		स्वाती	2	10 08
10		स्वाती	3	18 01
13		स्वाती	4	3 17
15		विशा.	1	14 17
18		विशा.	2	3 18
20		विशा.	3	19 09
23	वृश्चिक	विशा.	4	14 55
26		अनु.	1	17 08

तारीख 2012 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
अक्तूबर 30		अनु.	2	8 05
नवम्बर 5		अनु.	3	5 44
7	वक्री			4 34
8		अनु.	2	0 08
13		अनु.	1	21 33
16		विशा.	4	15 27
19	तुला	विशा.	3	3 14
22		विशा.	2	0 22
27	मार्गी			4 18
दिसम्बर 2		विशा.	3	21 22
6	वृश्चिक	विशा.	4	9 04
9		अनु.	1	5 43
11		अनु.	2	20 00
14		अनु.	3	7 01
16		अनु.	4	15 53
18		ज्येष्ठा	1	23 26
21		ज्येष्ठा	2	6 02
23		ज्येष्ठा	3	11 55
25		ज्येष्ठा	4	17 15
27	धनु	मूल	1	22 06
30		मूल	2	2 33
(सन् 2013 ई.)				
जनवरी 1		मूल	3	6 35
3		मूल	4	10 12
5		पू.षा.	1	13 26
7		पू.षा.	2	16 13
9		पू.षा.	3	18 35
11		पू.षा.	4	20 28
13		उ.षा.	1	21 53
15	मकर	उ.षा.	2	22 47
17		उ.षा.	3	23 11

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र चरण–चार (1 जनवरी, 2012 से 10 अप्रैल, 2013 ई. तक)

बुध–चार (सन् 2013 ई.)

तारीख 2013 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (मा.स्टैं.टा.)
जनवरी 19		उ.षा.	4	23 04
21		श्रव.	1	22 27
23		श्रव.	2	21 20
25		श्रव.	3	19 46
27		श्रव.	4	17 48
29		धनि.	1	15 30
31		धनि.	2	13 01
फरवरी 2	कुम्भ	धनि.	3	10 28
4		धनि.	4	8 08
6		शत.	1	6 21
8		शत.	2	5 38
10		शत.	3	6 54
12		शत.	4	11 40
14		पू.भा.	1	23 00
18		पू.भा.	2	2 14
23	वक्री			15 11
मार्च 1		पू.भा.	1	7 24
4		शत.	4	19 58
8		शत.	3	3 08
12		शत.	2	7 19
18	मार्गी			1 32
24		शत.	3	5 57
29		शत.	4	1 05
अप्रैल 1		पू.भा.	1	15 02
4		पू.भा.	2	16 59
7		पू.भा.	3	11 52
10	मीन	पू.भा.	4	1 53

गुरु–चार (सन् 2012 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
जनवरी 8		अश्वि.	3	23 48
फरवरी 11		अश्वि.	4	20 16
मार्च 3		भर.	1	1 31

गुरु–चार (सन् 2012–13 ई.)

तारीख 2012 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (मा.स्टैं.टा.)
मार्च 20		भर.	2	0 49
अप्रैल 4		भर.	3	11 27
19		भर.	4	2 42
मई 3		कृत्ति.	1	7 50
17	वृष	कृत्ति.	2	9 34
31		कृत्ति.	3	13 19
जून 15		कृत्ति.	4	1 03
30		रोहि.	1	4 08
जुलाई 16		रोहि.	2	10 23
अगस्त 3		रोहि.	3	19 21
27		रोहि.	4	5 08
अक्तूबर 4	वक्री			18 48
नवंबर 12		रोहि.	3	0 52
दिसंबर 7		रोहि.	2	15 15
(सन् 2013 ई.)				
जनवरी 5		रोहि.	1	17 22
30	मार्गी			17 08
फरवरी 24		रोहि.	2	21 25
मार्च 25		रोहि.	3	1 10

शुक्र–चार (सन् 2012 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
जनवरी 1		श्रव.	4	9 32
4		धनि.	1	2 47
6		धनि.	2	20 09
9	कुम्भ	धनि.	3	13 38
12		धनि.	4	7 16
जनवरी 15		शत.	1	1 02
17		शत.	2	18 57
20		शत.	3	13 02
23		शत.	4	7 17

शुक्र–चार (सन् 2012 ई.)

तारीख 2012 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (मा.स्टैं.टा.)
जनवरी 26		पू.भा.	1	1 44
28		पू.भा.	2	20 24
31		पू.भा.	3	15 18
फरवरी 3	मीन	पू.भा.	4	10 29
6		उ.भा.	1	5 57
9		उ.भा.	2	1 43
11		उ.भा.	3	21 51
14		उ.भा.	4	18 19
17		रेव.	1	15 12
20		रेव.	2	12 29
23		रेव.	3	10 15
26		रेव.	4	8 31
29	मेष	अश्वि.	1	7 22
मार्च 3		अश्वि.	2	6 52
6		अश्वि.	3	7 06
9		अश्वि.	4	8 09
12		भर.	1	10 06
15		भर.	2	13 04
18		भर.	3	17 11
21		भर.	4	22 36
25		कृत्ति.	1	5 33
28	वृष	कृत्ति.	2	14 20
अप्रैल 1		कृत्ति.	3	1 19
4		कृत्ति.	4	15 01
8		रोहि.	1	8 09
12		रोहि.	2	5 42
16		रोहि.	3	9 12
20		रोहि.	4	21 17
25		मृग.	1	23 14
मई 2		मृग.	2	5 12
15	वक्री			20 03

तारीख 2012 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (मा.स्टैं.टा.)
मई 28		मृग.	1	18 25
जून 3		रोहि.	4	16 20
9		रोहि.	3	0 24
14		रोहि.	2	23 41
27	मार्गी			20 38
जुलाई 11		रोहि.	3	10 29
17		रोहि.	4	19 37
23		मृग.	1	0 02
27		मृग.	2	14 18
31	मिथुन	मृग.	3	19 48
अगस्त 4		मृग.	4	19 12
8		आर्द्रा	1	14 05
12		आर्द्रा	2	5 30
15		आर्द्रा	3	18 10
19		आर्द्रा	4	4 36
22		पुन.	1	13 10
25		पुन.	2	20 11
29		पुन.	3	1 49
सितम्बर 1	कर्क	पुन.	4	6 14
4		पुष्य	1	9 35
7		पुष्य	2	11 57
10		पुष्य	3	13 28
13		पुष्य	4	14 13
16		आश्ले.	1	14 15
19		आश्ले.	2	13 41
22		आश्ले.	3	12 33
25		आश्ले.	4	10 53
28	सिंह	मघा	1	8 43
अक्तूबर 1		मघा	2	6 06
4		मघा	3	3 03
6		मघा	4	23 35

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र–चरणचार (1 जनवरी, 2012 से 10 अप्रैल, 2013 ई. तक)

शुक्र–चार (सन् 2012–13 ई.)

तारीख 2012 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
अक्तूबर 9		पू.फा.	1	19 45
12		पू.फा.	2	15 34
15		पू.फा.	3	11 04
18		पू.फा.	4	6 17
21		उ.फा.	1	1 13
23	कन्या	उ.फा.	2	19 54
26		उ.फा.	3	14 21
29		उ.फा.	4	8 35
नवम्बर 1		हस्त	1	2 36
3		हस्त	2	20 24
6		हस्त	3	14 01
9		हस्त	4	7 28
12		चित्रा	1	0 45
14		चित्रा	2	17 53
17	तुला	चित्रा	3	10 53
20		चित्रा	4	3 47
22		स्वाती	1	20 34
25		स्वाती	2	13 15
28		स्वाती	3	5 50
30		स्वाती	4	22 20
दिसम्बर 3		विशा.	1	14 44
6		विशा.	2	7 04
8		विशा.	3	23 19
11	वृश्चिक	विशा.	4	15 31
14		अनु.	1	7 39
16		अनु.	2	23 45
19		अनु.	3	15 48
22		अनु.	4	7 50
24		ज्येष्ठा	1	23 50
27		ज्येष्ठा	2	15 48
30		ज्येष्ठा	3	7 44

तारीख 2013 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 1		ज्येष्ठा	4	23 39
4	धनु	मूल	1	15 33
7		मूल	2	7 25
9		मूल	3	23 16
12		मूल	4	15 06
15		पू.षा.	1	6 56
17		पू.षा.	2	22 47
20		पू.षा.	3	14 37
23		पू.षा.	4	6 28
25		उ.षा.	1	22 19
28	मकर	उ.षा.	2	14 10
31		उ.षा.	3	6 01
फरवरी 2		उ.षा.	4	21 53
5		श्रव.	1	13 45
8		श्रव.	2	5 37
10		श्रव.	3	21 29
13		श्रव.	4	13 23
16		धनि.	1	5 18
18		धनि.	2	21 14
21	कुम्भ	धनि.	3	13 12
24		धनि.	4	5 12
26		शत.	1	21 13
मार्च 1		शत.	2	13 15
4		शत.	3	5 18
6		शत.	4	21 23
9		पू.भा.	1	13 29
12		पू.भा.	2	5 37
14		पू.भा.	3	21 46
17	मीन	पू.भा.	4	13 58
20		उ.भा.	1	6 12
22		उ.भा.	2	22 29

तारीख 2013 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
मार्च 25		उ.भा.	3	14 48
28		उ.भा.	4	7 10
30		रेव.	1	23 34
अप्रैल 2		रेव.	2	16 00
5		रेव.	3	8 28
8		रेव.	4	0 58
10	मेष	अश्वि.	1	17 31

केतु–चार (सन् 2012–13 ई.)

तारीख 2012-13 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
फरवरी 13		रोहि.	2	5 23
अप्रैल 16		रोहि.	1	3 22
जून 18		कृत्ति.	4	0 59
अगस्त 19		कृत्ति.	3	22 32
अक्तूबर 21		कृत्ति.	2	20 33
दिसम्बर 23	मेष	कृत्ति.	1	18 07
फरवरी 24		भर.	4	15 45

शनि–चार (सन् 2012–13 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
फरवरी 7	वक्री			19 34
मार्च 31		चित्रा	3	5 01
मई 16	कन्या	चित्रा	2	6 35
जून 25	मार्गी			13 31
अगस्त 4	तुला	चित्रा	3	8 49
सितंबर 12		चित्रा	4	13 18
अक्तूबर 12		स्वाती	1	1 06
नवंबर 8		स्वाती	2	17 31
दिसंबर 8		स्वाती	3	9 23
जनवरी 19		स्वाती	4	3 09
फरवरी 18	वक्री			22 33
मार्च 22		स्वाती	3	6 40

यूरेनस–चार (सन् 2012–13 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
मार्च 16		उ.भा.	3	13 54
मई 19		उ.भा.	4	12 23
जुलाई 13	वक्री			15 21
सितंबर 8		उ.भा.	3	13 03
दिसंबर 13	मार्गी			17 34
मार्च 9		उ.भा.	4	14 07

नेप्च्यून–चार (सन् 2012–13 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
फरवरी 22		शत.	1	13 07
जून 5	वक्री			2 38
अक्तूबर 6		धनि.	4	11 24
नवंबर 11	मार्गी			13 27
दिसंबर 16		शत.	1	15 15
मार्च 27		शत.	2	0 35

राहु–चार (सन् 2012–13 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
फरवरी 13		अनु.	4	5 23
अप्रैल 16		अनु.	3	3 22
जून 18		अनु.	2	0 59
अगस्त 19		अनु.	1	22 32
अक्तूबर 21		विशा.	4	20 33
दिसम्बर 23	तुला	विशा.	3	18 07
फरवरी 24		विशा.	2	15 45

प्लूटो–चार (सन् 2012–13 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
जनवरी 2		पू.षा.	1	12 28
अप्रैल 10	वक्री			21 51
अगस्त 6		मूल	4	12 51
सितंबर 18	मार्गी			10 35
अक्तूबर 29		पू.षा.	1	11 34
फरवरी 12		पू.षा.	2	18 41

ग्रहों के वक्र/मार्ग, उदय–अस्त अगले पृष्ठ पर देखें

ग्रहों के वक्र–मार्ग/उदयास्त की तारीखें

(1 जनवरी, सन् 2012 ई. से 10 अप्रैल, 2013 ई. तक)

ग्रह	वक्र/मार्ग	तारीख	ग्रह	उदय/अस्त	तारीख
मंगल	वक्री	24 जनवरी, 2012 ई.	मंगल	अस्त	29 जन. 2013 (संवत् अंत तक अस्त रहेगा।)
मंगल	मार्गी	14 अप्रैल, 2012 ई.			
बुध	वक्री	12 मार्च, 2012 ई.	बुध	पूर्व में अस्त	17 जन., 2012 ई.
बुध	मार्गी	4 अप्रैल, 2012 ई.	बुध	प. में उदित	23 फर., 2012 ई.
बुध	वक्री	15 जुलाई, 2012 ई.	बुध	प. में अस्त	13 मार्च, 2012 ई.
बुध	मार्गी	8 अगस्त, 2012 ई.	बुध	पूर्व में उदित	29 मार्च, 2012 ई.
बुध	वक्री	7 नवम्बर, 2012 ई.	बुध	पूर्व में अस्त	16 मई, 2012 ई.
बुध	मार्गी	27 नवम्बर, 2012 ई.	बुध	प. में उदित	7 जून, 2012 ई.
बुध	वक्री	23 फरवरी, 2013 ई.	बुध	प. में अस्त	21 जुला. 2012 ई.
बुध	मार्गी	18 मार्च, 2013 ई.	बुध	पूर्व में उदित	7 अग. 2012 ई.
			बुध	पूर्व में अस्त	28 अग., 2012 ई.
गुरु	वक्री	4 अक्तूबर, 2012 ई.	बुध	प. में उदित	28 सितं., 2012 ई.
गुरु	मार्गी	30 जनवरी, 2013 ई.	बुध	प. में अस्त	11 नवं., 2012 ई.
			बुध	पूर्व में उदित	24 नवं., 2012 ई.
			बुध	पूर्व में अस्त	26 दिसं., 2012 ई.
शुक्र	वक्री	15 मई, 2012 ई.	बुध	प. में उदित	6 फर., 2013 ई.
शुक्र	मार्गी	27 जून, 2012 ई.	बुध	प. में अस्त	25 फर., 2013 ई.
			बुध	पूर्व में उदित	12 मार्च, 2013 ई.
शनि	वक्री	7 फरवरी, 2012 ई.			
शनि	मार्गी	25 जून, 2012 ई.	गुरु	अस्त	2 मई, 2012 ई.
शनि	वक्री	18 फरवरी, 2013 ई.	गुरु	उदय	29 मई, 2012 ई.
यूरेनस	वक्री	13 जुलाई, 2012 ई.	शुक्र	पश्चिम–लोप	2 जून, 2012 ई.
यूरेनस	मार्गी	13 दिसम्बर, 2012 ई.	शुक्र	पूर्वदर्शन	11 जून, 2012 ई.
			शुक्र	पूर्व–लोप	10 फर., 2013 ई.
नेप्च्यून	वक्री	5 जून, 2012 ई.	शुक्र	पश्चिम–दर्शन	21 अप्रै., 2013 ई.
नेप्च्यून	मार्गी	11 नवम्बर, 2012 ई.			
			शनि	अस्त	8 अक्तू., 2012 ई.
प्लूटो	वक्री	10 अप्रैल, 2012 ई.	शनि	उदित	11 नवं., 2012 ई.
प्लूटो	मार्गी	18 सितम्बर, 2012 ई.			

आभार प्रदर्शन

हमारे परम सहयोगी मित्रवर ज्ञानी श्री करतार सिंह जी 'गढ'

(मालिक, कंवल फोटोस्टेट, चौक माता रानी, कुराली PH. 0160-2641274)

श्री करतार सिंह जी ज्ञानी, सन् 1992 ई. से हमारी 'शिरोमणि तिथपत्रिका' (पंजाबी) और 'श्री मार्त्तण्ड आलम जन्त्री' (उर्दू) के अनुवाद, पाण्डुलिपि–लेखन, प्रूफरीडिंग आदि का श्रमसाध्य पूरा कार्य अत्यन्त आत्मीयभाव, तन्मयता, परिश्रम तथा निःस्वार्थभाव से करते चले आ रहे हैं; जिससे ये दोनों प्रकाशन प्रतिवर्ष उत्तरोत्तर समृद्ध कलेवर में हमारे पाठकों को उपलब्ध होने लगे हैं। अब तक श्रीमार्त्तण्डपंचांग (हिन्दी) की ही संस्कार–समृद्धि की ओर हमारा अधिक झुकाव रहा । अतः ज्योतिष से सम्बद्ध विशेष लेखमाला तथा अन्य ज्ञानवर्धक स्तम्भ हम इसी (हिन्दी) पंचांग में प्रकाशित करते रहे हैं। उर्दू एवम् पंजाबी की इन जन्त्रियों में ऐसे लेख एवम् स्तम्भों को समाविष्ट करने से, हम अनुवाद आदि के लिए समय की कमी के कारण, आज तक कतराते रहे हैं । लेकिन अब प्रियमित्र ज्ञानी करतार सिंह जी की हमसे निःस्वार्थ घनिष्ठता एवम् उर्दू–पंजाबी भाषाओं में इनकी प्रशंस्य दक्षता के कारण इन दोनों प्रकाशनों को भी हम ऐसे लेख–स्तम्भों से श्री मार्त्तण्डपंचांग की ही भान्ति अलंकृत करने में अपने आप को समर्थ पा रहे हैं। विगत कुछ वर्षों से दिए जा रहे नए–नए आकर्षक, ज्ञानवर्धक विषयों से वर्धमान कलेवर वाली 'शिरोमणि तिथपत्रिका' का श्रेय आपको ही है। इन उर्दू–पंजाबी जन्त्रियों के अनुवाद आदि के भारी उत्तरदायित्व को पूरी तरह निभाते हुए आप जैसे–तैसे समय निकालकर हिन्दी के श्रीमार्त्तण्डपंचांग की प्रूफ–रीडिंग आदि में भी हाथ बंटाने में हर्ष अनुभव करते हैं। अपने प्रति इस निःस्वार्थ सौहार्दातिशय के लिए हम सभी हृदय से ज्ञानी जी के ऋणी है । आप अपने व्यस्त जीवन के क्षणों में भी हमारे लिए प्रचुर पर्याप्त समय सहर्ष निकाल लेते हैं। आपके इस सौहार्दभरे स्पृहणीय सहयोग से हमारा प्रकाशन–कार्यभार काफी कुछ हल्का हुआ है। एतदर्थ हम आपके प्रति विनम्रतापूर्वक आभार प्रकट किए बिना सचमुच नहीं रह सकते।

आपका सहयोग भी हमारे लिए कम महत्त्वपूर्ण नहीं है

श्रीमार्तण्ड ज्योतिष कार्यालय कुराली के प्रबन्धक, हमारे पूज्य पिताजी के प्रियशिष्य, हमारे अनुजकल्प *चि. प्रेमचन्द्र शर्मा;* चि. *श्रीकृष्णशर्मा,* M.A. (संस्कृत), वेदाचार्य, साहित्याचार्य; नालाबलोग (पंचकूला) के निवासी *चि. सुरेशानन्द शर्मा,* बी.ए., सुपुत्र श्री सुन्दरराम शर्मा तथा *चि. दिलबाग शर्मा* सुपुत्र श्री रामचन्द शर्मा, ग्राम एवं डा. सिनन्द (कैथल–हरि.) भी 'श्रीमार्त्तण्डपंचांग' (हिन्दी) की पाण्डुलिपि लेखन, प्रूफरीडिंग आदि का काम बड़ी तत्परता, सावधानी, अपनापन और आदरभाव से करते हैं। इस पंचांग के प्रकाशनकार्य का हमारा भार इन युवाओं के स्वत्व भरे उत्साहपूर्ण सहयोग से हल्का हुआ है। एतदर्थ इनके निरन्तर प्रगतिमय, परमोज्ज्वल भविष्य के लिए हमारा इन्हें सस्नेह–आशीर्वाद है।

सम्पादक–मण्डल

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

संक्षिप्तरूप:– अं. नि.= अण्डेमान एवं निकोबार, अरुणा.= अरुणाचल प्रदेश, आं.=आन्ध्र प्रदेश, आसा.= आसाम , उ.= उड़ीसा, उ.प्र.=उत्तरप्रदेश, उ.आं उत्तरांचल, क.= कर्णाटक , के.= केरल, गु.= गुजरात, गोवा= गोवा, का.= जम्मू–काश्मीर, ता.= तामिलनाडु, त्रि.= त्रिपुरा, दा.ना.= दादर एण्ड नागर हवेली, डा.= डामन ड्यू, ना.= नागालैण्ड, बं.= प. बंगाल, पं.= पंजाब, पां.= पाण्डिचेरी, बि.=बिहार, झा.ख.= झारखण्ड, मणि.= मणिपुर, म.प्र.= मध्यप्रदेश, छ.ग.= छत्तीसगढ़, म.= महाराष्ट्र, मिज़ो.= मिज़ोरम, मे.= मेघालय, रा.= राजस्थान, लक्ष.= लक्षद्वीप, सि.= सिक्किम, ह.= हरियाणा, हि.= हिमाचल प्रदेश,

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
अकबरपुर	(उ.प्र.)	26 25	82 33	+ 0 12	अमीनगांव	(आसा.)	26 13	91 45	+37 00	आडोनी	(आं.)	15 38	77 16	−20 56
अंकलेश्वर	(गु.)	21 38	73 02	−37 52	अमृतसर	(पं.)	31 37	74 55	−30 20	आदिलाबाद	(आं.)	19 40	78 31	−15 56
अकोला	(म.)	20 40	77 05	−21 40	अमेठी	(उ.प्र.)	26 08	81 50	− 2 40	आनन्द	(गु.)	22 34	73 01	−37 56
अखनूर	(का.)	32 53	74 45	−31 00	अम्ब	(हि.)	31 42	76 07	−25 32	आनन्दपुरसाहिब	(पं.)	31 15	76 31	−23 56
अगरतला	(त्रि.)	23 48	91 15	+35 00	अम्बाला	(ह.)	30 21	76 52	−22 32	आनी	(हि.)	31 27	77 25	−20 20
अगरोहा	(ह.)	29 21	75 38	−27 28	अम्बाह	(उ.प्र.)	26 43	78 15	−17 00	आबू	(रा.)	24 40	72 45	−39 00
अंगुल	(उ.)	20 48	85 04	+10 16	अम्बिकापुर	(छ.ग.)	23 07	83 12	+ 2 48	आरा	(बि.)	25 34	84 40	+ 8 40
अच्छीवाल	(का.)	33 41	75 14	−29 04	अयोध्या	(उ.प्र.)	26 48	82 12	− 1 12	आरामबाग	(बं.)	22 53	87 47	+21 08
अजन्ता	(म.)	20 30	75 48	−26 48	अरकोट	(ता.)	12 54	79 20	−12 40	आसनसोल	(बं.)	23 41	86 59	+17 56
अजनाला	(पं.)	31 51	74 48	−30 48	अरकोणम्	(ता.)	13 05	79 40	−11 20	आसिन्द	(रा.)	25 42	74 21	−32 36
अजमेर	(रा.)	26 27	74 42	−31 12	अर्की	(हि.)	31 09	76 58	−22 08	इच्छापुरम्	(उ.)	19 10	84 43	+ 8 52
अटारी	(पं.)	31 36	74 35	−31 40	अर्वी.	(म.)	21 00	78 18	−16 48	इटारसी	(म.प्र.)	22 37	77 45	−19 00
अतनेर	(म.प्र.)	21 40	77 59	−18 04	अररिया	(बि.)	26 08	87 24	+19 36	इटावा	(उ.प्र.)	26 47	79 02	−13 52
अनन्तनाग	(का.)	33 44	75 10	−29 20	अल्मोड़ा	(उ.आं.)	29 37	79 40	−11 20	इन्दौर	(म.प्र.)	22 44	75 50	−26 40
अनन्तपुर	(आं.)	14 42	77 36	−19 36	अलवर	(रा.)	27 34	76 38	−23 28	इन्दौरा	(हि.)	32 07	75 40	−27 20
अनामलै	(ता.)	10 34	76 50	−22 40	अलीगंज	(उ.प्र.)	27 30	79 11	−13 16	इम्फाल	(मणि.)	24 47	93 57	+45 48
अनूपगढ़	(रा.)	29 07	73 06	−37 36	अलीगढ़	(उ.प्र.)	27 53	78 05	−17 40	इलाहाबाद	(उ.प्र.)	देखें	प्रयाग	—
अनूपशहर	(उ.प्र.)	28 22	78 16	−16 56	अलीपुर	(बं.)	22 32	88 20	+23 20	ईटानगर	(अरुणा.)	27 05	93 40	+44 40
अबोहर	(पं.)	30 09	74 11	−33 16	अलीपुर दुआर	(बं.)	26 29	89 44	+28 56	ईसागढ़	(म.प्र.)	24 50	77 53	−18 28
अमरकंटक	(म.प्र.)	22 40	81 45	− 3 00	अलीबाग	(म.)	18 38	72 55	−38 20	उखरूल	(मणि.)	25 07	94 23	+47 32
अमरनाथगुफा	(का.)	34 13	75 32	−27 52	अवनिगड्डा	(आं.)	16 03	80 59	− 6 04	उगाला	(ह.)	30 11	76 59	−22 04
अमरावती	(म.)	20 56	77 45	−19 00	अशोकनगर	(म.प्र.)	24 33	77 43	−19 08	उज्जैन	(म.प्र.)	23 09	75 43	−27 08
अमरावती	(आं.)	16 35	80 20	− 8 40	अहमदनगर	(म.)	19 05	74 44	−31 04	उड़ी	(का.)	34 05	74 01	−33 56
अमरेली	(गु.)	21 36	71 18	−44 48	अहमदाबाद	(गु.)	23 03	72 40	−39 20	उडुपी	(क.)	13 23	74 45	−31 00
अमरोहा	(उ.प्र.)	28 54	78 29	−16 04	अहवा	(गु.)	20 44	73 41	−35 16	उत्तरकाशी	(उ.आं.)	30 44	78 27	−16 12
अमलापुरम्	(आं.)	16 36	82 03	− 1 48	आगरा	(उ.प्र.)	27 11	78 01	−17 56	उदयगिरि	(उ.)	19 08	84 10	+ 6 40
अमलोह	(पं.)	30 37	76 14	−25 04	आजमगढ़	(उ.प्र.)	26 04	83 11	+ 2 44	उदयपुर	(त्रि.)	23 32	91 29	+35 56

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
उदयपुर	(रा.)	24 35	73 41	−35 16
उन्नाव	(उ.प्र.)	26 32	80 30	− 8 00
उपशी	(का.)	33 52	77 50	−18 40
उमरकोट	(उ.)	19 39	82 18	− 0 48
उरई	(उ.प्र.)	25 59	79 28	−12 08
उल्हासनगर	(म.)	19 13	73 07	−37 32
ऊटकमण्ड	(ता.)	11 24	76 44	−23 04
ऊधमपुर	(का.)	32 54	75 06	−29 36
ऊना	(हि.)	31 29	76 17	−24 52
एकलिंगजी	(रा.)	24 43	73 46	−34 56
एटा	(उ.प्र.)	27 38	78 40	−15 20
एरोड	(ता.)	11 20	77 46	−18 56
एर्नाकुलम्	(के.)	10 00	76 16	−24 56
एलिचपुर	(म.)	21 18	77 33	−19 48
एलुरु	(आं.)	16 43	81 09	− 5 24
एलेप्पे	(के.)	9 30	76 22	−24 32
एलोरा	(म.)	20 04	75 15	−29 00
ऐजावल	(मिज़ो.)	23 43	92 44	+40 56
ओखा	(गु.)	22 26	69 02	−53 52
ओंगोल	(आं.)	15 30	80 06	− 9 36
औरैय्या	(उ.प्र.)	26 28	79 31	−11 56
ओस्मानाबाद	(म.)	18 09	76 06	−25 36
औट	(हि.)	31 47	77 11	−21 16
औरंगाबाद	(म.)	19 52	75 22	−28 32
कटक	(उ.)	20 26	85 56	+13 44
कटनी	(म.प्र.)	23 47	80 27	− 8 12
कटरा	(का.)	32 59	74 57	−30 12
कटराई	(हि.)	32 07	77 07	−21 32
कटिहार	(बि.)	25 30	87 35	+20 20
कठुआ	(का.)	32 22	75 32	−27 52
कण्डाघाट	(हि.)	30 58	77 07	−21 32
कन्नूर	(के.)	11 52	75 25	−28 20
कन्नौज	(उ.प्र.)	27 04	79 55	−10 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
कपूरथला	(पं.)	31 23	75 23	−28 28
करतारपुर	(पं.)	31 27	75 30	−28 00
कर्णप्रयाग	(उ.आं.)	30 13	79 17	−12 52
करनाल	(ह.)	29 42	77 02	−21 52
करसोग	(हि.)	31 23	77 13	−21 08
कराड	(म.)	17 15	74 12	−33 12
करूर	(ता.)	10 58	78 03	−17 48
कालाअम्ब	(हि.)	30 30	77 13	−21 08
काल्पा	(हि.)	31 32	78 15	−17 00
करीमगंज	(आसा.)	24 48	92 30	+40 00
करीमनगर	(आं.)	18 27	79 06	−13 36
करौली	(रा.)	26 30	77 01	−21 56
कर्नूल	(आं.)	15 50	78 05	−17 40
कल्याण	(म.)	19 17	73 11	−37 16
कवरत्ती	(लक्ष.)	10 33	72 38	−39 28
कवार्धा	(छ.ग.)	22 00	81 15	− 5 00
कसारागोड	(के.)	12 30	75 00	−30 00
कसौली	(हि.)	30 55	76 57	−22 12
काकिनाडा	(आं.)	16 56	82 13	− 1 08
कांकेर	(म.प्र.)	20 17	81 32	− 3 52
कांगड़ा	(हि.)	32 05	76 18	−24 48
कांचीपुरम्	(ता.)	12 50	79 44	−11 04
काठगोदाम	(उ.आं.)	29 16	79 32	−11 52
काठियावाड़	(गु.)	22 00	71 00	−46 00
कादियां	(पं.)	31 49	75 23	−28 28
कानपुर	(उ.प्र.)	26 28	80 21	− 8 36
कामठी (काम्पटी)	(म.)	21 12	79 16	−12 56
कारकाल	(क.)	13 12	74 59	−30 04
कारगिल	(का.)	34 31	76 13	−25 08
कारवाड़	(क.)	14 50	74 09	−33 24
कारिकाल	(पां.)	10 55	79 50	−10 40
कालका	(ह.)	30 50	76 56	−22 16
कालाहस्ती	(आं.)	13 48	79 42	−11 12

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
कालिकट	(के.)	11 15	75 46	−26 56
कालिम्पोंग	(बं.)	27 04	88 29	+23 56
काशी	(उ.प्र.)	देखें	वाराणसी	− −
कियारीघाट	(हि.)	31 00	77 05	−21 40
किरकी	(म.)	18 36	73 57	−34 12
किश्तवाड़	(का.)	33 19	75 48	−26 48
किशनगंज	(बि.)	26 10	87 56	+21 44
किशनगढ़ (अजमेर)	(रा.)	26 34	74 52	−30 32
कीरतपुरसाहिब	(पं.)	31 11	76 34	−23 44
कुड्डप्पा	(ता.)	14 28	78 50	−14 40
कुड्डालूर	(ता.)	11 43	79 49	−10 44
कुफरी	(हि.)	31 06	77 12	−21 12
कुंभकोणम्	(ता.)	10 59	79 24	−12 24
कुमारी अन्तरीप	(ता.)	8 05	77 34	−19 44
कुम्हारहट्टी	(हि.)	30 53	77 03	−21 48
कुराली	(पं.)	30 50	76 35	−23 40
कुरुक्षेत्र	(ह.)	29 59	76 50	−22 40
कुल्लू	(हि.)	31 58	77 06	−21 36
कूच बिहार	(बं.)	26 19	89 26	+27 44
कृष्णानगर	(बं.)	23 24	88 30	+24 00
केओंजरगढ़	(उ.)	21 38	85 35	+12 20
केन्द्रपाड़ा	(उ.)	20 30	86 25	+15 40
केदारनाथ	(उ.आं.)	30 44	79 04	−13 44
केप कैमोरिन	(ता.)	देखें	कुमारी	अन्तरीप
केसरी	(ह.)	30 14	76 54	−22 24
कैथल	(ह.)	29 48	76 26	−24 16
कैलाशहर	(त्रि.)	24 18	92 01	+38 04
कोचीन	(के.)	9 58	76 14	−25 04
कोटकपूरा	(पं.)	30 36	74 54	−30 24
कोटखाई	(हि.)	31 08	77 36	−19 36
कोटगढ़	(हि.)	31 19	77 29	−20 04
कोटा	(रा.)	25 10	75 52	−26 32
कोट्टागुडम्	(आं.)	17 32	80 39	− 7 24

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
कोट्टायम्	(के.)	9 34	76 31	−23 56
कोटद्वारा	(उ.आं.)	29 45	78 32	−15 52
कोंटई	(बं.)	21 50	87 48	+21 12
कोडैकनाल	(ता.)	10 14	77 29	−20 04
कोणार्क	(उ.)	19 54	86 07	+14 28
कोप्पल	(क.)	15 21	76 09	−25 24
कोयम्बटूर	(ता.)	11 00	77 00	−22 00
कोरबा	(छ.ग.)	22 22	82 42	+ 0 48
कोरापुट	(उ.)	18 48	82 41	+ 0 44
कोलकाता	(बं.)	22 34	88 24	+23 36
कोल्हापुर	(म.)	16 42	74 19	−32 44
कोलार	(क.)	13 10	78 10	−17 20
कोल्लेगाल	(क.)	12 08	77 06	−21 36
कोलेबीरा	(बि.)	22 43	84 42	+ 8 48
कोहिमा	(नागा.)	25 39	94 08	+46 32
क्विलोन	(के.)	8 54	76 38	−23 28
खजियार	(हि.)	32 32	76 04	−25 44
खड़गपुर	(बं.)	22 20	87 20	+19 20
खंडवा	(म.प्र.)	21 50	76 23	−24 28
खतौली	(उ.प्र.)	29 17	77 43	−19 08
खन्ना	(पं.)	30 42	76 13	−25 08
खम्भालिया	(गु.)	22 12	69 39	−51 24
खम्मम्	(आं.)	17 16	80 13	− 9 08
खरगोन	(म.प्र.)	21 52	75 36	−27 36
खरड़	(पं.)	30 45	76 37	−23 32
खलीलाबाद	(उ.प्र.)	26 47	83 04	+ 2 16
खुर्जा	(उ.प्र.)	28 13	77 50	−18 40
खुर्दा	(उ.)	20 10	85 38	+12 32
खेड़ा	(गु.)	22 45	72 45	−39 00
खेमकरण	(पं.)	31 08	74 34	−31 44
गगरेट	(हि.)	31 40	76 04	−25 44
गंगटोक	(सि.)	27 22	88 36	+24 24
गंजम्	(उ.)	19 28	85 05	+10 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
गढ़चिराली	(म.)	20 12	80 00	−10 00
गढ़मुक्तेश्वर	(उ.प्र.)	28 48	78 06	−17 36
गढ़वा (गरवा)	(झा.खं.)	24 10	83 52	+ 5 28
गढ़शंकर	(पं.)	31 13	76 08	−25 28
गदग	(क.)	15 26	75 42	−27 12
गया	(बि.)	24 49	85 01	+10 04
गाजियाबाद	(उ.प्र.)	28 40	77 26	−20 16
गाजीपुर	(उ.प्र.)	25 35	83 34	+ 4 16
गांधीधाम	(गु.)	23 06	70 08	−49 28
गिरडीह	(झा.खं.)	24 12	86 21	+15 24
गिलगित	(का.)	35 55	74 21	−32 36
गुड़गांव	(ह.)	28 27	77 04	−21 44
गुंटकल	(आं.)	15 11	77 24	−20 24
गुंटूर	(आं.)	16 20	80 27	− 8 12
गुड़ीवाड़ा	(आं.)	16 27	81 00	− 6 00
गुडूर	(आं.)	14 10	79 51	−10 36
गुना	(म.प्र.)	24 40	77 20	−20 40
गुम्मा	(हि.)	31 06	77 28	−20 08
गुरदासपुर	(पं.)	32 02	75 27	−28 12
गुलबर्गा	(क.)	17 20	76 50	−22 40
गुलमर्ग	(का.)	34 05	74 25	−32 20
गुवाहाटी	(आसा.)	26 10	91 45	+37 00
गोइन्दवाल	(पं.)	31 22	75 08	−29 28
गोंडल	(गु.)	21 56	70 50	−46 40
गोंडा	(उ.प्र.)	27 08	82 01	− 1 56
गोधरा	(गु.)	22 49	73 40	−35 20
गोपालगंज	(बि.)	26 28	84 26	+ 7 44
गोम्पा	(का.)	35 02	77 20	−20 40
गोरखपुर	(उ.प्र.)	26 45	83 22	+ 3 28
गोरस	(म.प्र.)	25 32	76 56	−22 16
गोहाना	(ह.)	29 08	76 42	−23 12
गौंडीया	(म.)	21 26	80 14	− 9 04
ग्वालियर	(म.प्र.)	26 14	78 10	−17 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
घरौण्डा	(ह.)	29 33	76 58	−22 08
घाटल	(बं.)	22 40	87 43	+20 52
घाटसिला	(झा.खं.)	22 36	86 29	+15 56
घुमारवीं	(हि.)	31 26	76 43	−23 08
चच्योट	(हि.)	31 32	77 01	−21 56
चण्डीगढ़	(यू.टी.)	30 45	76 50	−22 40
चण्डीमन्दिर कैंट	(ह.)	30 42	76 52	−22 32
चन्दननगर	(बं.)	22 51	88 21	+23 24
चन्दौसी	(उ.प्र.)	28 27	78 46	−14 56
चन्द्रपुर	(म.)	19 57	79 18	−12 48
चम्बा	(हि.)	32 34	76 08	−25 28
चमौली	(उ.आं.)	30 24	79 21	−12 36
चरखी दादरी	(ह.)	28 37	76 18	−24 48
चामुण्डा जी	(हि.)	32 07	76 23	−24 28
चायल	(हि.)	30 59	77 12	−21 12
चास	(झा.खं.)	23 38	86 10	+14 40
चिक मंगलूर	(क.)	13 19	75 47	−26 52
चिंगलपुट	(ता.)	12 42	80 01	− 9 56
चित्तरंजन	(बं.)	23 52	86 52	+17 28
चित्तूर	(आं.)	13 12	79 07	−13 32
चितौड़गढ़	(रा.)	24 54	74 40	−31 20
चित्रदुर्ग	(क.)	14 14	76 24	−24 24
चित्रौद	(गु.)	23 25	70 42	−47 12
चिदम्बरम्	(ता.)	11 25	79 42	−11 12
चिन्तपूरणी	(हि.)	31 49	76 07	−25 32
चिनसुरा	(बं.)	22 53	88 25	+23 40
चिरगांव	(उ.प्र.)	25 35	78 49	−14 44
चिराला	(आं.)	15 50	80 21	− 8 36
चुंगतास	(का.)	35 37	78 37	−15 32
चुनार	(उ.प्र.)	25 08	82 56	+ 1 44
चुशुल	(का.)	33 34	78 38	−15 28
चूड़चांदपुर	(मणि.)	24 19	93 40	+44 40
चूरू	(रा.)	28 19	75 01	−29 56

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
चेन्नई	(ता.)	देखें	मद्रास	–
चेरापूंजी	(मे.)	25 17	91 42	+36 48
चौपाल	(हि.)	30 57	77 36	–19 36
छतरपुर	(उ.)	19 24	85 00	+10 00
छतरपुर	(म.प्र.)	24 54	79 38	–11 28
छपरा	(बि.)	25 47	84 45	+ 9 00
छिंदवाड़ा	(म.प्र.)	22 03	78 58	–14 08
छिब्रामऊ	(उ.प्र.)	27 09	79 31	–11 56
छोटा उदयपुर	(गु.)	22 19	74 01	–33 56
जगदलपुर	(छ.ग.)	19 05	82 04	– 1 44
जगरांव	(पं.)	30 47	75 29	–28 04
जगाधरी	(ह.)	30 10	77 18	–20 48
जंगीपुर	(बं.)	24 28	88 04	+22 16
जण्ड्याला	(पं.)	31 36	75 03	–29 48
जतोग	(हि.)	31 06	77 07	–21 32
जनगांव	(आं.प्र.)	17 44	79 10	–13 20
जबलपुर	(म.प्र.)	23 10	79 59	–10 04
जम्बूसार	(गु.)	22 00	72 50	–38 40
जमशेदपुर	(बि.)	22 50	86 10	+14 40
जमालपुर	(बि.)	25 19	86 32	+16 08
जमूई	(बि.)	24 55	86 13	+14 52
जम्मू	(का.)	32 43	74 54	–30 24
जयपुर	(आसा.)	27 14	95 24	+51 36
जयपुर	(रा.)	26 55	75 52	–26 32
जलगांव	(म.)	21 03	75 39	–27 24
जलपाईगुड़ी	(बं.)	26 31	88 44	+24 56
जलालाबाद	(उ.प्र.)	27 43	79 40	–11 20
जशपुरनगर	(छ.ग.)	22 53	84 12	+ 6 48
जसरा	(उ.प्र.)	25 17	81 48	– 2 48
जसरोटा	(का.)	32 29	75 27	–28 12
जाखल	(ह.)	29 48	75 50	–26 40
जामनगर	(गु.)	22 28	70 06	–49 36
जालना	(म.)	19 50	75 58	–26 08

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
जालन्धर	(पं.)	31 19	75 34	–27 44
जालेश्वर	(उ.)	21 48	87 14	+18 56
जालोर	(रा.)	25 22	72 38	–39 28
जालौन	(उ.प्र.)	26 09	79 21	–12 36
ज़िरो	(अरुणा.)	27 32	93 47	+45 08
जींद	(ह.)	29 19	76 19	–24 44
ज़ीरा	(पं.)	30 58	74 59	–30 04
जुब्बल	(हि.)	31 07	77 39	–19 14
जूनागढ़	(गु.)	21 32	70 34	–47 44
जेतपुर	(गु.)	21 43	70 42	–47 12
जैतों	(पं.)	30 28	74 53	–30 28
जैसलमेर	(रा.)	26 55	70 54	–46 24
जोगिन्द्रनगर	(हि.)	31 59	76 46	–22 56
जोधपुर	(रा.)	26 18	73 04	–37 44
जोरहाट	(आसा.)	26 45	94 12	+46 48
जौनपुर	(उ.प्र.)	25 44	82 41	+ 0 44
ज्वालाजी	(हि.)	31 53	76 22	–24 32
ज्वालामुखी	(हि.)	31 53	76 19	–24 44
झज्जर	(ह.)	28 37	76 39	–23 24
झाबुआ	(म.प्र.)	22 45	74 38	–31 28
झरिया	(झा.खं.)	23 45	86 24	+15 36
झांसी	(उ.प्र.)	25 26	78 35	–15 40
झालरापाटन	(रा.)	24 33	76 10	–25 20
झालावाड़	(रा.)	24 36	76 09	–25 24
झुंझुनू	(रा.)	28 06	75 25	–28 20
टांडा उरमुर	(पं.)	31 42	75 38	–27 28
टिकापाड़ा डैम	(उ.)	20 32	84 56	+ 9 44
टिथवाल	(का.)	34 24	73 47	–34 52
टिहरी	(उ.आं.)	30 20	78 30	–16 00
टीकमगढ़	(म.प्र.)	24 45	78 53	–14 28
टीहरा सुजानपुर	(हि.)	31 51	76 32	–23 52
टुंकुरें	(क.)	13 21	77 05	–21 40
टूटीकोरिन	(ता.)	8 48	78 11	–17 16

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
टुण्डला	(उ.प्र.)	27 12	78 17	–16 52
टोंक	(रा.)	26 11	75 50	–26 40
टोडा रायसिंह	(रा.)	26 00	75 29	–28 04
टोहाना	(ह.)	29 42	75 54	–26 24
ट्रावनकोर	(के.)	9 00	77 00	–22 00
ठयोग	(हि.)	31 07	77 21	–20 36
डगशई	(हि.)	30 53	77 03	–21 48
डबवाली	(पं.)	29 58	74 45	–31 00
डमटाल	(हि.)	32 12	75 40	–27 20
डलहौज़ी	(हि.)	32 32	75 59	–26 04
डामन	(डा.)	20 25	72 53	–38 28
डायमंड हार्बर	(बं.)	22 12	88 12	+22 48
डालटनगंज	(झा.खं.)	24 02	84 04	+ 6 16
डिगबोई	(आसा.)	27 22	95 40	+52 40
डिंडीगुल	(क.)	10 22	78 00	–18 00
डिबाई	(उ.प्र.)	28 13	78 15	–17 00
डिब्रूगढ़	(आसा.)	27 29	94 56	+49 44
डीडवाना	(रा.)	27 24	74 34	–31 44
डीसा	(गु.)	24 14	72 13	–41 08
डूंगरपुर	(रा.)	23 50	73 43	–35 08
डोडा	(का.)	33 10	75 35	–27 40
ड्यू	(डा.)	20 42	71 01	–45 56
ढुबरी	(आसा.)	26 02	39 58	+29 52
तंजावर	(ता.)	10 46	79 09	–13 24
तपा	(पं.)	30 19	75 21	–28 36
तरनतारन	(पं.)	31 27	74 58	–30 08
तवांग	(अरुणा.)	27 35	91 52	+37 28
तांगला	(आसा.)	26 40	91 57	+37 48
ताड़पत्री	(आं.)	14 55	77 59	–18 04
तामलुक	(बं.)	22 18	87 55	+21 40
ताम्बरम्	(ता.)	12 55	80 07	– 9 32
तारकेश्वर	(बं.)	22 54	88 02	+22 08
तारा	(गु.)	24 00	71 51	–42 36

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
तारादेवी	(हि.)	31 03	77 08	−21 28	दुर्गापुर	(बं.)	23 29	87 20	+19 20	नडियाद	(गु.)	22 42	72 55	−38 20
तिनसुकिया	(आसा.)	27 28	95 20	+51 20	देओगढ़	(उ.)	21 32	84 46	+ 9 04	नन्दापुर	(उ.)	18 32	82 52	+ 1 28
तिरुवनन्तपुरम्	(के.)	8 30	76 58	−22 08	देओट सिद्ध	(हि.)	31 28	76 34	−23 44	नन्दुरबार	(म.)	21 22	74 15	−33 00
तिरुपति	(आं.)	13 39	79 25	−12 20	देवघर	(बि.)	24 30	86 42	+16 48	नयागढ़	(उ.)	20 10	85 08	+10 32
तिरुप्पर	(क.)	11 05	77 20	−20 40	देवप्रयाग	(उ.आं.)	30 09	78 37	−15 32	नरवाणा	(ह.)	29 37	76 07	−25 32
तिरुवन्नामलै	(ता.)	12 13	79 04	−13 44	देवबन्द	(उ.प्र.)	29 42	77 41	−19 16	नरसिंहपुरा	(उ.)	20 28	85 08	+10 32
तुर्रा	(मे.)	25 30	90 13	+30 52	देवरिया	(उ.प्र.)	26 31	83 47	+ 5 08	नरेन्द्रनगर	(उ.आं.)	30 10	78 20	−16 40
तेजपुर	(आसा.)	26 38	92 49	+41 16	देवलाली	(म.)	19 58	73 52	−34 32	नरैना	(रा.)	26 50	74 11	−33 16
तेनाली	(आं.)	16 13	80 36	− 7 36	देवास	(म.प्र.)	22 58	76 06	−25 36	नवद्वीप	(बं.)	23 25	88 22	+23 28
तेरुनेलवेली	(ता.)	8 45	77 43	−19 08	देहरा गोपीपुर	(हि.)	31 54	76 13	−25 08	नवरंगपुर	(उ.)	19 15	82 39	+ 0 36
त्रिचुरापल्ली	(ता.)	10 49	78 41	−15 16	देहरादून	(उ.आं.)	30 19	78 02	−17 52	नवलगढ़	(रा.)	27 51	75 18	−28 48
त्रिचूर	(के.)	10 32	76 14	−25 04	देहरी	(बि.)	24 52	84 11	+ 6 44	नवसारी	(गु.)	20 52	72 56	−38 16
त्रिवेन्द्रम्	(के.)	देखें —	तिरुवनन्तपुरम्		दोराहा मण्डी	(पं.)	30 49	76 02	−25 52	नवांशहर	(पं.)	31 07	76 08	−25 28
थराड़	(गु.)	24 26	71 40	−43 20	दौसा	(रा.)	26 51	76 21	−24 36	नसीराबाद	(रा.)	26 18	74 46	−30 56
थानेधार	(हि.)	31 20	77 34	−19 44	द्रास	(का.)	34 27	75 46	−26 56	नागापट्टनम्	(ता.)	10 45	79 50	−10 40
थानेसर	(ह.)	29 58	76 56	−22 16	द्वारिका	(गु.)	22 14	69 02	−53 52	नागपुर	(म.)	21 10	79 10	−13 20
दतिया	(म.प्र.)	25 39	78 27	−16 12	धनबाद	(झा.खं.)	23 47	86 30	+16 00	नागरकोयल	(ता.)	8 10	77 26	−20 16
दन्तेवाड़ा	(छ.ग.)	18 52	81 22	− 4 32	धनुष्कोडी	(ता.)	9 12	79 25	−12 20	नागौर	(रा.)	27 11	73 44	−35 04
दभोई	(गु.)	22 08	73 28	−36 08	धमतरी	(छ.ग.)	20 42	81 34	− 3 44	नाचना	(रा.)	27 29	71 45	−43 00
दमोह	(म.प्र.)	23 50	79 29	−12 04	धर्मजयगढ़	(म.प्र.)	22 28	83 13	+ 2 52	नाथद्वारा	(रा.)	24 56	73 50	−34 40
दरभंगा	(बि.)	26 10	85 57	+13 48	धर्मपुर	(हि.)	30 53	77 02	−21 52	नान्देड़	(म.)	19 11	77 21	−20 36
दसूहा	(पं.)	31 49	75 38	−27 28	धर्मशाला	(हि.)	32 16	76 23	−24 28	नानपाड़ा	(उ.प्र.)	27 52	81 30	− 4 00
दादरी	(ह.)	28 34	77 33	−19 48	ध्रांगधरा	(गु.)	22 59	71 29	−44 04	नान्दोड़	(गु.)	21 52	73 32	−35 52
दानापुर	(बि.)	25 38	85 05	+10 20	धार	(म.प्र.)	22 35	75 20	−28 40	नाभा	(पं.)	30 22	76 08	−25 28
दार्जिलिंग	(बं.)	27 02	88 16	+23 04	धारवाड़	(क.)	15 30	75 04	−29 44	नारकण्डा	(हि.)	31 16	77 27	−20 12
दावनगेरे	(क.)	14 30	75 52	−26 32	धुले	(म.)	20 58	74 47	−30 52	नारनौल	(ह.)	28 03	76 14	−25 04
दिल्ली	(यू.टी.)	28 38	77 12	−21 12	धेन कानाल	(उ.)	20 40	85 39	+12 36	नारायणगढ़	(ह.)	30 29	77 08	−21 28
दीनानगर	(पं.)	32 09	75 28	−28 08	धौलपुर	(रा.)	26 42	77 53	−18 28	नालगोंडा	(आं.)	17 04	79 15	−13 00
दीमापुर	(नागा.)	25 53	93 43	+44 52	नईहाटी	(बं.)	22 57	88 25	+23 40	नालन्दा	(बि.)	25 07	85 25	+11 40
दुजाना	(ह.)	28 41	76 37	−23 32	नकोदर	(पं.)	31 07	75 29	−28 04	नालागढ़	(हि.)	31 03	76 42	−23 12
दुमका	(झा.खं.)	24 16	87 15	+19 00	नगर	(हि.)	32 07	77 08	−21 28	नालिया	(गु.)	23 19	68 51	−54 36
दुर्ग	(म.प्र.)	21 11	81 17	− 4 52	नगरोटा बगवां	(हि.)	32 06	76 22	−24 32	नासिक	(म.)	20 00	73 52	−34 32
					नजीबाबाद	(उ.प्र.)	29 38	78 20	−16 40	नाहन	(हि.)	30 33	77 21	−20 36

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
निज़ामाबाद	(आं.)	18 40	78 07	−17 40	पाटलगांव	(म.प्र.)	22 34	83 28	+ 3 52	फतेहपुर	(उ.प्र.)	25 56	80 52	− 6 32
निम्बहेड़ा	(रा.)	24 37	74 45	−31 00	पाण्डिचेरी	(पां.)	11 58	79 54	−10 24	फतेहपुर सीकरी	(उ.प्र.)	27 06	77 40	−19 20
निरमण्ड	(हि.)	31 27	77 34	−19 44	पणजी	(गोवा)	15 29	73 50	−34 40	फतेहाबाद	(उ.प्र.)	27 01	78 19	−16 44
नीमच	(म.प्र.)	24 27	74 52	−30 32	पानीपत	(ह.)	29 23	77 00	−22 00	फतेहाबाद	(ह.)	29 31	75 28	−28 08
नीलगिरि	(उ.)	21 29	86 49	+17 16	पापड़हांडी	(उ.)	19 22	82 34	+ 0 16	फरीदकोट	(पं.)	30 40	74 40	−31 20
नीलोखेड़ी	(ह.)	29 51	76 55	−22 20	पालनपुर	(गु.)	24 12	72 29	−40 04	फरीदाबाद	(ह.)	28 26	77 19	−20 44
नूरपुर	(हि.)	32 18	75 54	−26 24	पालमपुर	(हि.)	32 07	76 33	−23 48	फर्रुखाबाद	(उ.प्र.)	27 24	79 34	−11 44
नूरपुरबेदी	(पं.)	31 09	76 29	−24 04	पालिताणा	(गु.)	21 30	71 50	−42 40	फाज़िल्का	(पं.)	30 25	74 04	−33 44
नैनवा	(रा.)	25 45	75 57	−26 12	पाली	(रा.)	25 46	73 20	−36 40	फिरोज़पुर	(पं.)	30 55	74 40	−31 20
नैनीताल	(उ.आं.)	29 23	79 27	−12 12	पालयंकोट्टै	(ता.)	8 42	77 46	−18 56	फिरोज़ाबाद	(उ.प्र.)	27 09	78 24	−16 24
नैल्लूर	(आं.)	14 29	80 00	−10 00	पांवटा साहिब	(हि.)	30 27	77 37	−19 32	फिल्लौर	(पं.)	31 01	75 47	−26 52
नोखामण्डी	(रा.)	27 35	73 29	−36 04	पासीघाट	(अरुणा.)	28 05	95 20	+51 20	फुलेरा	(रा.)	26 52	75 16	−28 56
नोंगस्टोइन	(मे.)	25 31	91 16	+35 04	पिठोरागढ़	(उ.आं.)	29 35	80 13	− 9 08	फूलबानी	(उ.)	20 30	84 18	+ 7 12
नोहर	(रा.)	29 11	74 46	−30 56	पिपली	(ह.)	29 58	76 53	−22 28	फैज़ाबाद	(उ.प्र.)	26 47	82 08	− 1 28
नौशहरा	(का.)	33 10	74 15	−33 00	पिहोवा	(ह.)	29 57	76 37	−23 32	बक्सर	(बि.)	25 34	83 59	+ 5 56
पचपदरा	(रा.)	25 55	72 21	−40 36	पीलीभीत	(उ.प्र.)	28 38	79 48	−10 48	बंगलौर	(क.)	13 00	77 35	−19 40
पंचकूला	(ह.)	30 42	76 52	−22 32	पुंछ	(का.)	33 51	74 06	−33 36	बंगा	(पं.)	31 11	75 59	−26 04
पंचमढ़ी	(म.प्र.)	22 28	78 26	−16 16	पुट्टापर्त्ती	(आं.)	14 15	77 45	−19 00	बटाला	(पं.)	31 48	75 12	−29 12
पंजिम	(गोवा)	15 29	73 50	−34 40	पुदुक्कोट्टै	(ता.)	10 23	78 49	−14 44	बठिण्डा	(पं.)	30 11	75 00	−30 00
पटना	(बि.)	25 37	85 13	+10 52	पुरनिया	(बि.)	25 49	87 31	+20 04	बड़ानगर	(बं.)	22 38	88 22	+23 28
पटियाला	(पं.)	30 20	76 25	−24 20	पुरी	(उ.)	19 48	85 52	+13 28	बड़ौदा	(गु.)	22 18	73 13	−37 08
पट्टी	(पं.)	31 17	74 51	−30 36	पुरुलिया	(बं.)	23 20	86 22	+15 28	बदायूं	(उ.प्र.)	28 03	79 07	−13 32
पटौदी	(ह.)	28 18	76 48	−22 48	पुष्कर	(रा.)	26 30	74 33	−31 48	बद्दी	(हि.)	30 55	76 48	−22 48
पठानकोट	(पं.)	32 17	75 42	−27 12	पूना	(म.)	18 34	73 53	−34 28	बद्रीनाथ	(उ.आं.)	30 44	79 29	−12 04
पंढरपुर	(म.)	17 42	75 24	−28 24	पोरबन्दर	(गु.)	21 40	69 36	−51 36	बनगांव	(बं.)	23 04	88 49	+25 16
पन्ना	(म.प्र.)	24 44	80 14	− 9 04	पोर्टब्लेयर	(अं.नि.)	11 41	92 43	+40 52	बनिहाल	(का.)	33 30	75 18	−28 48
परभनी	(म.)	19 16	76 51	−22 36	पोलाची	(ता.)	10 38	77 00	−22 00	बबीना	(उ.प्र.)	25 15	78 28	−16 08
पराकसम	(आं.)	15 30	80 06	− 9 36	पौड़ी	(उ.आं.)	30 09	78 47	−14 52	बंबई	(म.)	देखें —	मुम्बई	
पलवल	(ह.)	28 09	77 20	−20 40	प्रतापगढ़	(उ.प्र.)	25 50	81 59	− 2 04	बरवाला	(ह.)	29 22	75 54	−26 24
पहलगाम	(का.)	34 01	75 20	−28 40	प्रतापगढ़	(म.प्र.)	24 02	74 47	−30 52	बरेली	(उ.प्र.)	28 22	79 27	−12 12
पाकौर	(झा.खं.)	24 38	87 54	+21 36	प्रयाग	(उ.प्र.)	25 28	81 54	− 2 24	बरौनी	(बि.)	25 30	85 53	+13 52
पाटन	(गु.)	23 50	72 09	−41 24	प्रोद्दातूर	(ता.)	14 45	78 35	−15 40	बर्दवान	(बं.)	23 16	87 52	+21 28
पाटनगढ़	(उ.)	20 43	83 09	+ 2 36	फगवाड़ा	(पं.)	31 14	75 46	−26 56	बलरामपुर	(उ.प्र.)	27 26	82 11	− 1 16

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
बलिया	(उ.प्र.)	25 45	84 10	+ 6 40	बिलासपुर	(हि.)	31 20	76 47	−22 52	ब्यास	(पं.)	31 31	75 18	−28 48
बल्लभगढ़	(ह.)	28 21	77 19	−20 44	बिलासीपाड़ा	(आसा.)	26 13	90 13	+30 52	भटिण्डा	(पं.)	देखें	बठिण्डा	(पं.)
बसीरहाट	(बं.)	22 40	88 53	+25 32	बिष्णुपुर	(बं.)	23 05	87 19	+19 16	भण्डारा	(म.)	21 10	79 41	−11 16
बस्ति	(उ.प्र.)	26 48	82 43	+ 0 52	बिहारशरीफ	(बि.)	25 11	85 32	+12 08	भदोही	(उ.प्र.)	25 25	82 34	+ 0 16
ब्रह्मकुण्ड	(आसा.)	27 52	96 23	+55 32	बीकानेर	(रा.)	28 01	73 20	−36 40	भद्रक	(उ.)	21 05	86 30	+16 00
बहराईच	(उ.प्र.)	27 35	81 36	− 3 36	बीजापुर	(क.)	16 50	75 45	−27 00	भद्रवाह	(का.)	32 59	75 43	−27 08
बागलकोट	(क.)	16 14	75 47	−26 52	बीड़	(म.)	18 59	75 46	−28 56	भद्राचलम्	(आं.)	17 42	80 53	− 6 28
बाघ	(म.प्र.)	22 22	74 49	−30 44	बीदर	(क.)	17 56	77 35	−19 40	भरतपुर	(रा.)	27 15	77 30	−20 00
बातल	(हि.)	32 22	77 36	−19 36	बुक्क पत्तनम	(आं.)	14 12	77 46	−18 56	भरमौर	(हि.)	32 27	76 32	−23 52
बांकीपुर	(बि.)	25 40	85 12	+10 48	बुढलाडा	(पं.)	29 56	75 34	−27 44	भरूच	(गु.)	21 40	72 58	−38 08
बांकुरा	(बं.)	23 15	87 04	+18 16	बुटाणा	(ह.)	29 11	76 38	−23 28	भवानीपत्तन	(उ.)	19 54	83 10	+ 2 40
बाघपत	(उ.प्र.)	28 57	77 13	−21 08	बुद्धगया	(बि.)	24 41	84 58	+ 9 52	भागलपुर	(बि.)	25 15	87 00	+18 00
बाटानगर	(बं.)	22 31	88 15	+23 00	बुरनपुर	(बं.)	23 42	86 58	+17 52	भातपाड़ा	(बं.)	22 52	88 24	+23 36
बाड़मेर	(रा.)	25 45	71 25	−44 20	बुरहानपुर	(म.प्र.)	21 18	76 14	−25 04	भादसों	(पं.)	30 31	76 15	−25 00
बांदा	(उ.प्र.)	25 29	80 20	− 8 40	बुलन्दशहर	(उ.प्र.)	28 24	77 51	−18 36	भाभर	(गु.)	24 08	71 42	−43 12
बामनघाटी	(उ.)	22 13	86 15	+15 00	बुलसार	(गु.)	20 36	72 56	−38 16	भावनगर	(गु.)	21 46	72 10	−41 20
बारपेटा	(आसा.)	26 20	91 02	+34 08	बूंदी	(रा.)	25 27	75 40	−27 20	भिंड	(म.प्र.)	26 35	78 46	−14 56
बारसी	(म.)	18 14	75 44	−27 04	बृन्दावन	(उ.प्र.)	27 33	77 44	−19 04	भिलाई	(छ.ग.)	21 13	81 26	− 4 16
बारागढ़	(उ.)	21 25	83 35	+ 4 20	बेगूसराय	(बि.)	25 25	86 08	+14 32	भिवंडी	(गु.)	19 18	73 04	−37 44
बाराबंकी	(उ.प्र.)	26 55	81 12	− 5 12	बेट्टिया	(बि.)	26 48	84 33	+ 8 12	भिवानी	(ह.)	28 48	76 08	−25 28
बारामूला	(का.)	34 12	74 20	−32 40	बेलगांव	(क.)	15 54	74 36	−31 36	भीनमाल	(रा.)	25 00	72 19	−40 44
बारासत	(बं.)	22 43	88 29	+23 56	बेला	(पं.)	30 56	76 23	−24 28	भीमावरम्	(आं.)	16 34	81 35	− 3 40
बारीपाड़ा	(उ.)	21 56	86 44	+16 56	बेला(प्रतापगढ़)	(उ.प्र.)	25 54	82 01	− 1 56	भीलवाड़ा	(रा.)	25 21	74 40	−31 20
बालाघाट	(म.प्र.)	21 48	80 11	− 9 16	बेल्लारी	(क.)	15 11	76 54	−22 24	भुज	(गु.)	23 16	69 40	−51 20
बलामऊ	(उ.प्र.)	27 15	80 23	− 8 28	बैकुण्ठपुर	(छ.ग.)	23 15	82 33	+ 0 12	भुवनेश्वर	(उ.)	20 13	85 50	+13 20
बालासौर	(उ.)	21 31	86 54	+17 36	बैजनाथ	(हि.)	32 04	76 37	−23 32	भुसावल	(म.)	21 01	75 50	−26 40
बालीपाड़ा	(आसा.)	26 09	92 09	+38 36	बैरकपुर	(बं.)	22 46	88 24	+23 36	भोपाल	(म.प्र.)	23 16	77 24	−20 24
बालूरघाट	(बं.)	25 13	88 46	+25 04	बोम्डिला	(अरुणा.)	27 19	92 25	+39 40	मऊ	(उ.प्र.)	25 17	81 23	− 4 28
बालेश्वर	(उ.)	21 31	86 59	+17 56	बोरसाद	(गु.)	22 24	72 59	−38 04	मंगलोर	(क.)	12 54	74 51	−30 36
बालोतरा	(रा.)	25 49	72 14	−41 04	बोलपुर	(बं.)	23 40	87 43	+20 52	मंगलौर	(उ.आं.)	29 48	77 52	−18 32
बांस्वाड़ा	(रा.)	23 30	74 24	−32 24	बोलानगिर	(उ.)	20 41	83 30	+ 4 00	मंगालादै	(आसा.)	26 23	92 02	+38 08
बिजनौर	(उ.प्र.)	29 22	78 08	−17 28	बौडा	(उ.)	20 50	84 22	+ 7 28	मछलीपट्टणम्	(आं.)	16 10	81 08	− 5 28
बिलासपुर	(छ.ग.)	22 05	82 09	− 1 24	ब्यावर	(रा.)	26 06	74 20	−32 40	मजीठा	(पं.)	31 46	74 57	−30 12

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर)		रेखांश (पूर्व)		स्टैंडर्ड अन्तर		नगर		अक्षांश (उत्तर)		रेखांश (पूर्व)		स्टैंडर्ड अन्तर		नगर		अक्षांश (उत्तर)		रेखांश (पूर्व)		स्टैंडर्ड अन्तर	
		अं.	क.	अं.	क.	मि.	से.			अं.	क.	अं.	क.	मि.	से.			अं.	क.	अं.	क.	मि.	से.
मण्डला	(म.प्र.)	22	37	80	22	− 8	32	माहे	(पां.)	11	42	75	32	−27	52	मोरेना (मुरैना)	(म.प्र.)	26	23	78	04	−17	44
मण्ड्या	(क.)	12	34	76	55	−22	20	मिदनापुर	(बं.)	22	25	87	21	+19	24	मोहनिया	(बि.)	25	11	83	37	+ 4	28
मण्डी	(हि.)	31	43	76	58	−22	08	मिराज	(म.)	16	51	74	42	−31	12	मोहाना	(म.)	25	54	77	45	−19	00
मणिकर्ण	(हि.)	32	02	77	21	−20	36	मिर्जापुर	(उ.प्र.)	25	09	82	35	+ 0	20	मोहाली	(पं.)	30	43	76	42	−23	12
मथुरा	(उ.प्र.)	27	30	77	41	−19	16	मीरपुर	(का.)	33	32	73	51	−34	36	यनम्	(पां.)	16	44	82	13	− 1	08
मदुरै	(ता.)	9	58	78	10	−17	20	मुक्तसर	(पं.)	30	29	74	31	−31	56	यमुनानगर	(ह.)	30	07	77	18	−20	48
मद्रास	(ता.)	13	05	80	18	− 8	48	मुकेरियां	(पं.)	31	57	75	37	−27	32	यवतमाल	(म.)	20	24	78	08	−17	28
मधुपुर	(झा.खं.)	24	16	86	39	+16	36	मुगलसराय	(उ.प्र.)	25	18	83	07	+ 2	28	योल	(हि.)	32	11	76	23	−24	28
मधुबनी	(बि.)	26	22	86	05	+14	20	मुंगेर	(बि.)	25	23	86	30	+16	00	रक्सौल	(बि.)	26	58	84	51	+ 9	24
मधीपुरा	(बि.)	25	55	86	47	+17	08	मुजफ्फरनगर	(उ.प्र.)	29	28	77	41	−19	16	रंगिया	(आसा.)	26	28	91	35	+36	20
मनाली	(हि.)	32	16	77	10	−21	20	मुजफ्फरपुर	(बि.)	26	07	85	27	+11	48	रतलाम	(म.प्र.)	23	21	75	07	−29	32
मन्दसोर	(म.प्र.)	24	05	75	06	−29	36	मुजफ्फराबाद	(का.)	34	23	73	30	−36	00	रतनगढ़	(रा.)	28	05	74	39	−31	24
मन्सूरी	(उ.आं.)	30	27	78	07	−17	32	मुद्रा	(म.प्र.)	24	43	77	35	−19	40	रत्नागिरि	(म.)	17	00	73	22	−36	32
मनसादेवी	(ह.)	30	43	76	51	−22	36	मुन्दरा	(गु.)	22	50	69	48	−50	48	राऊरकेला	(उ.)	22	15	84	52	+ 9	28
मनीमाजरा	(ह.)	30	42	76	52	−22	32	मुम्बई	(म.)	19	00	72	54	−38	24	रांची	(झा.खं.)	23	23	85	23	+11	32
मलोट	(पं.)	30	13	74	29	−32	04	मुरवाड़ा	(म.प्र.)	23	51	80	22	− 8	32	राजकोट	(गु.)	22	18	70	53	−46	28
मवाना	(उ.प्र.)	29	06	77	55	−18	20	मुरादाबाद	(उ.प्र.)	28	50	78	47	−14	52	राजगढ़	(म.प्र.)	24	01	76	45	−23	00
महबूबनगर	(आं.)	16	44	77	59	−18	04	मुरी	(झा.खं.)	23	51	82	34	+ 0	16	राजनन्दगांव	(छ.ग.)	21	05	81	05	− 5	40
महवा	(रा.)	27	03	76	56	−22	16	मुलाना	(ह.)	30	17	77	03	−21	48	राजपालैयम्	(ता.)	9	27	77	34	−19	44
महाबलिपुरम्	(ता.)	12	37	80	12	− 9	12	मुर्शिदाबाद	(बं.)	24	11	88	16	+23	04	राजपुरा	(पं.)	30	29	76	36	−23	36
महाबलेश्वर	(गु.)	17	58	73	43	−35	08	मेतूर	(ता.)	11	50	77	51	−18	36	राजमहल	(झा.खं.)	25	03	87	53	+21	32
महुआ	(गु.)	21	05	71	48	−42	48	मेढ़क	(आं.)	18	03	78	15	−17	00	राजमहेन्द्री	(आं.)	17	05	81	48	− 2	48
महेन्द्रगढ़	(ह.)	28	17	76	09	−25	24	मेरठ	(उ.प्र.)	28	59	77	42	−19	12	राजुला	(गु.)	21	01	71	26	−44	16
महेसाणा	(गु.)	23	37	72	28	−40	08	मेलघाट	(म.)	21	44	77	12	−21	12	राजौरी	(का.)	33	22	74	17	−32	52
माछीवाड़ा	(पं.)	30	55	76	11	−25	16	मैनपुरी	(उ.प्र.)	27	14	79	01	−13	56	रादौर	(ह.)	30	01	77	08	−21	28
मांगरोल	(गु.)	21	07	70	08	−49	28	मैसूर	(क.)	12	18	76	37	−23	32	राधनपुर	(गु.)	23	52	71	36	−43	36
माण्डवी (कच्छ)	(गु.)	22	50	69	28	−52	08	मैहर	(म.प्र.)	24	16	80	45	− 7	00	रानाघाट	(बं.)	23	11	88	35	+24	20
मानसा	(पं.)	29	59	75	23	−28	28	मोकोक चुंग	(नागा.)	26	19	94	32	+48	08	रानीखेत	(उ.आं.)	29	39	79	25	−12	20
मायूरम्	(ता.)	11	08	79	40	−11	20	मोगा	(पं.)	30	48	75	10	−29	20	रापर	(गु.)	23	33	70	38	−47	28
मारवाड़ जं.	(रा.)	25	43	73	36	−35	36	मोतीहारी	(बि.)	26	40	84	57	+ 9	48	राबर्ट्सगंज	(उ.प्र.)	24	42	83	04	+ 2	16
मालदा	(बं.)	25	05	88	09	+22	36	मोरवी	(गु.)	22	50	70	50	−46	40	रामनाथपुरम्	(ता.)	9	23	78	53	−14	28
मालेगांव(नासिक)	(म.)	20	32	74	38	−31	28	मोरार	(म.प्र.)	26	13	78	14	−17	04	रामपुर	(उ.प्र.)	28	49	79	02	−13	52
मालेरकोटला	(पं.)	30	31	75	52	−26	32	मोरिण्डा	(पं.)	30	48	76	30	−24	00	रामबन	(का.)	33	15	75	15	−29	00

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
रामपुरबुशहर	(हि.)	31 27	77 38	−19 28	लुम्डिंग	(आसा.)	25 46	93 10	+42 40	शाहदरा	(दिल्ली)	28 41	77 17	−20 52
रामपुराफूल	(पं.)	30 17	75 14	−29 04	लूनावाड़ा	(गु.)	23 08	73 37	−35 32	शाहपुर	(हि.)	32 12	76 10	−25 20
रामानुजगंज	(छ.ग.)	23 48	83 42	+ 4 48	लूनी	(रा.)	26 00	73 00	−38 00	शाहाबाद	(ह.)	30 10	76 52	−22 32
रामेश्वरम्	(ता.)	9 18	79 19	−12 44	लेह	(का.)	34 09	77 35	−19 40	शाहाबाद	(उ.प्र.)	27 39	79 57	−10 12
रायकोट	(पं.)	30 39	75 36	−27 36	लैंस डाऊन	(उ.आं.)	29 50	78 41	−15 16	शिकोहाबाद	(उ.प्र.)	27 06	78 36	−15 36
रायगढ़	(छ.ग.)	21 54	83 26	+ 3 44	लोहारू	(ह.)	28 27	75 49	−26 44	शिमला	(हि.)	31 06	77 10	−21 20
रायचूर	(क.)	16 15	77 20	−20 40	वर्धा	(म.)	20 42	78 40	−15 20	शिमोग	(क.)	13 56	75 34	−27 44
रायपुर	(उ.प्र.)	30 19	78 06	−17 36	वलपरै	(ता.)	10 22	76 58	−22 08	शिलांग	(मे.)	25 36	91 53	+37 32
रायपुर	(छ.ग.)	21 15	81 41	− 3 16	वल्लभीपुर	(गु.)	20 52	71 58	−42 08	शिवपुरी	(म.प्र.)	25 26	77 40	−19 20
रायबरेली	(उ.प्र.)	26 14	81 16	− 4 56	वलसाड़	(गु.)	20 40	72 55	−38 20	शिवसागर	(आसा.)	26 58	94 39	+48 36
रायसिंहनगर	(रा.)	29 32	73 27	−36 12	वारंगल	(आं.)	18 00	79 35	−11 40	शिवहार (शिवविहार)	(बि.)	26 35	85 18	+11 12
रायसेन	(म.प्र.)	23 18	77 47	−18 52	वाल्टेअर	(आं.)	17 47	83 22	+ 3 28	शिवाकाशी	(ता.)	9 26	77 50	−18 40
रियांग	(अरुणा.)	27 32	92 55	+41 40	वाराणसी	(उ.प्र.)	25 20	83 00	+ 2 00	शेखपुरा	(बि.)	25 09	85 53	+13 32
रिवालसर	(हि.)	31 38	76 50	−22 40	विजयनगर	(क.)	15 20	76 30	−24 00	शैलभ्	(आं.)	16 02	78 56	−14 16
रीवां	(म.प्र.)	24 31	81 19	− 4 44	विजयपुरी	(आं.)	16 52	79 35	−11 40	शोलापुर	(म.)	17 43	75 56	−26 16
रुड़की	(उ.आं.)	29 52	77 53	−18 28	विजयवाड़ा	(आं.)	16 31	80 39	− 7 24	श्योपुर	(म.प्र.)	25 40	76 40	−23 20
रुद्रप्रयाग	(उ.आं.)	30 16	78 59	−14 04	विदिशा	(म.प्र.)	23 32	77 50	−18 40	श्रीकाकुलम्	(आं.)	18 19	84 00	+ 6 00
रिवाड़ी	(ह.)	28 12	76 40	−23 20	विरामग्राम	(गु.)	23 08	72 04	−41 44	श्रीकालाहस्ती	(आं.)	13 48	79 42	−11 12
रोन्दू	(का.)	35 37	75 06	−29 36	विरुदुनगर	(ता.)	9 36	77 58	−18 08	श्रीगंगानगर	(रा.)	29 49	73 50	−34 40
रोपड़	(पं.)	30 57	76 32	−23 52	विल्लुपुरम्	(ता.)	11 56	79 29	−12 04	श्रीनगर	(उ.आं.)	30 13	78 47	−14 52
रोहडू	(हि.)	31 13	77 45	−19 00	विशाखापट्टनम्	(आं.)	17 42	83 18	+ 3 12	श्रीनगर	(का.)	34 07	74 50	−30 40
रोहतक	(ह.)	28 54	76 38	−23 28	विसनगर	(गु.)	23 41	72 36	−39 36	श्रीमाधोपुर	(रा.)	27 25	75 32	−27 52
लक्सर	(उ.आं.)	29 48	78 02	−17 52	वेंकटपलम्	(उ.)	18 05	81 40	− 3 20	श्रीरंगम्	(ता.)	10 52	78 40	−15 20
लखनऊ	(उ.प्र.)	26 51	80 55	− 6 20	वेरावल	(गु.)	20 53	70 28	−48 08	संगरूर	(पं.)	30 12	75 53	−26 28
लखपत	(गु.)	23 49	68 47	−54 52	वेल्लूर	(ता.)	12 56	79 09	−13 24	संगारेड्डी पेठ	(आं.)	17 37	78 04	−17 44
लखीमपुर	(उ.प्र.)	27 57	80 49	− 6 44	वैष्णोदेवी	(का.)	33 02	74 57	−30 12	सढौरा	(हि.)	30 23	77 13	−21 08
लखीसराय	(बि.)	25 12	86 06	+14 24	व्यारा	(गु.)	21 09	73 28	−36 08	सतना	(म.प्र.)	24 34	80 55	− 6 20
ललितपुर	(उ.प्र.)	24 41	78 25	−15 20	शहडोल	(म.प्र.)	23 20	81 22	− 4 32	सतारा	(म.)	17 49	74 05	−33 40
लातूर	(म.)	18 24	76 34	−23 44	शाजापुर	(म.प्र.)	23 26	76 18	−24 48	सदरा	(गु.)	23 20	72 48	−38 48
लाडवा	(ह.)	29 59	77 05	−21 40	शान्ति निकेतन	(बं.)	23 40	87 42	+20 48	सदिया	(अरुणा.)	27 48	95 38	+52 32
लालसोत	(रा.)	26 34	76 23	−24 28	शान्तिपुर	(बं.)	22 15	88 26	+23 44	सनौर	(पं.)	30 18	76 28	−24 08
लिम्बडी	(गु.)	22 36	71 48	−42 48	शामली	(उ.प्र.)	29 27	77 19	−20 44	सपाटू	(हि.)	30 59	76 59	−22 04
लुधियाना	(पं.)	30 55	75 54	−26 24	शाहजहांपुर	(उ.प्र.)	27 53	79 55	−10 20	समराला	(पं.)	30 51	76 11	−25 16

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
समाना	(पं.)	30 09	76 12	−25 12
समस्तीपुर	(बि.)	25 55	85 50	+13 20
सम्बलपुर	(उ.)	21 28	84 01	+ 6 04
सरदारशहर	(रा.)	28 27	74 30	−32 00
सरहिंद	(पं.)	30 38	76 22	−24 32
सलीम	(म.)	11 39	78 12	−17 12
सवाई माधोपुर	(रा.)	25 58	76 25	−24 20
सहरसा	(बि.)	25 55	86 35	+16 20
सहसवां	(उ.प्र.)	28 05	78 45	−15 00
सहारनपुर	(उ.प्र.)	29 58	77 33	−19 48
सागर	(म.प्र.)	23 50	78 50	−14 40
सांगला	(हि.)	31 29	78 12	−17 12
सांगली	(म.)	16 55	74 37	−31 32
सांगानेर	(रा.)	26 49	75 49	−26 44
सांचोर	(रा.)	24 40	71 50	−42 40
साम्बा	(का.)	32 32	75 08	−29 28
सांभर	(रा.)	26 54	75 13	−29 08
सारनाथ	(उ.प्र.)	25 24	83 01	+ 2 04
सासनी	(उ.प्र.)	27 43	78 05	−17 40
सासाराम	(बि.)	24 57	84 03	+ 6 12
साहिबगंज	(झा.खं.)	25 13	87 40	+20 40
सिऊनी	(म.प्र.)	22 06	79 35	−11 40
सिऊरी	(बं.)	23 55	87 32	+20 08
सिकती	(बि.)	26 24	87 33	+20 12
सिकन्दराबाद	(आं.)	17 27	78 30	−16 00
सिकन्दराराऊ	(उ.प्र.)	27 42	78 27	−16 12
सिन्दरी	(रा.)	25 33	71 55	−42 20
सिन्दरी	(बं.)	23 45	86 42	+16 48
सिवाना	(रा.)	25 36	72 27	−40 12
सिरसा	(ह.)	29 32	75 04	−29 44
सिरोही	(रा.)	24 53	72 54	−38 24
सिल्चर	(आसा.)	24 49	92 47	+41 08
सिल्वासा	(दा.ना.)	20 17	72 59	−38 04
सिलीगुडी	(बं.)	26 42	88 26	+23 44
सिहोरा	(म.प्र.)	23 29	80 07	− 9 32
सिंहभूम	(झा.खं.)	22 24	85 30	+12 00
सीकर	(रा.)	27 36	75 09	−29 24
सीतापुर	(उ.प्र.)	27 34	80 41	− 7 16
सीतामढ़ी	(बि.)	26 35	85 32	+12 08
सीवां	(बि.)	26 12	84 23	+ 7 32
सुईगांव	(गु.)	24 10	71 23	−44 28
सुन्दरगढ़	(उ.)	22 07	84 02	+ 6 08
सुन्दरनगर	(हि.)	31 32	76 53	−22 28
सुनाम	(पं.)	30 08	75 48	−26 48
सुपौल	(बि.)	26 07	86 36	+16 24
सुरेन्द्रनगर	(गु.)	22 42	71 41	−43 16
सुल्तानपुर	(उ.प्र.)	26 16	82 04	− 1 44
सूरत	(गु.)	21 10	72 50	−38 40
सूरतगढ़	(रा.)	29 19	73 57	−34 12
सूरी	(बं.)	23 55	87 32	+20 08
सेरमपुर	(बं.)	22 45	88 21	+23 24
सैंज	(हि.)	31 49	77 19	−20 44
सोजत	(रा.)	25 56	73 42	−35 12
सोनगढ़	(गु.)	21 42	71 58	−42 08
सोनपुर	(बि.)	25 42	85 12	+10 48
सोनपुर	(उ.)	20 50	83 58	+ 5 52
सोनहाट	(छ.ग.)	23 29	82 30	0 00
सोनामर्ग	(का.)	34 18	75 18	−28 48
सोनीपत	(ह.)	28 59	77 01	−21 56
सोमनाथ	(गु.)	21 04	70 26	−48 16
सोलन	(हि.)	30 55	77 09	−21 24
हजारीबाग़	(झा.खं.)	23 59	85 25	+11 40
हडसर	(हि.)	32 22	76 33	−23 48
हनुमानगढ़	(रा.)	29 35	74 21	−32 36
हफलोंग	(आसा.)	25 11	93 02	+42 08
हमीरपुर	(उ.प्र.)	25 57	80 09	− 9 24
हमीरपुर	(हि.)	31 41	76 31	−23 56
हरदोई	(उ.प्र.)	27 25	80 07	− 9 32
हरसीपत्तन	(हि.)	31 53	76 39	−23 24
हरिद्वार	(उ.आं.)	29 58	78 13	−17 08
हरिपुर	(हि.)	31 59	76 05	−25 40
हरिपुरधार	(हि.)	30 52	77 28	−20 08
हरीकेपत्तन	(पं.)	31 30	74 57	−30 12
हल्दवानी	(उ.आं.)	29 13	79 31	−11 56
हल्दिया	(बं.)	22 02	88 05	+22 20
हास्सन	(क.)	13 01	76 03	−25 48
हसनपुर	(ह.)	27 58	77 30	−20 00
हसनपुर	(उ.प्र.)	28 43	78 17	−16 52
हाजीपुर	(बि.)	25 43	85 14	+10 56
हाटकोटी	(हि.)	31 08	77 45	−19 00
हाथरस	(उ.प्र.)	27 36	78 03	−17 48
हापुड़	(उ.प्र.)	28 43	77 47	−18 52
हालीशहर	(बं.)	22 56	88 25	+23 40
हावड़ा	(बं.)	22 36	88 19	+23 16
हावेरी	(क.)	14 46	75 26	−28 16
हासपेट	(क.)	15 16	76 26	−24 16
हांसी	(हि.)	32 27	77 50	−18 40
हांसी	(ह.)	29 06	76 00	−26 00
हिंगनघाट	(म.)	20 32	78 52	−14 32
हिम्मतनगर	(गु.)	23 35	73 00	−38 00
हिसार	(ह.)	29 10	75 46	−26 56
हीराकुण्ड डैम	(उ.)	21 31	83 57	+ 5 48
हुबली	(क.)	15 20	75 14	−29 04
हैदराबाद	(आं.)	17 22	78 30	−16 00
होडल	(ह.)	27 53	77 22	−20 32
होशंगाबाद	(म.प्र.)	22 46	77 45	−19 00
होशियारपुर	(पं.)	31 32	75 57	−26 12
होसुर	(ता.)	12 45	77 51	−18 36

कुछ विदेशी प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
		अं. क.	अं. क.	अं. क.	मि. से.	घं. मि.
*Abadan	Iran	52 30 पू.	30 20 उ.	48 16 पू.	−16 56	+02 00
*Abbottabad	Pakistan	75 00 पू.	34 09 उ.	73 13 पू.	−07 08	+00 30
Abu Dhabi	U.A.E.	60 00 पू.	24 28 उ.	54 22 पू.	−22 32	+01 30
Accra	Ghana	00 00	05 33 उ.	00 13 प.	−00 52	+05 30
Addis Ababa	Ethiopia	45 00 पू.	09 02 उ	38 44 पू.	−25 04	+02 30
Aden	Yemen	45 00 पू.	12 45 उ.	45 04 पू.	+00 16	+02 30
Akyab	Myanmar	97 30 पू.	20 09 उ.	92 55 पू.	−18 20	−01 00
*Alexandria	Egypt	30 00 पू.	31 12 उ.	29 53 पू.	−00 28	+03 30
Algiers	Algeria	15 00 पू.	36 47 उ.	03 03 पू.	−47 48	+04 30
*Amman	Jordan	30 00 पू.	31 57 उ	35 56 पू.	+23 44	+03 30
*Amsterdam	Netherlands	15 00 पू.	52 22 उ.	04 53 पू.	−40 28	+04 30
*Angmagssalik	Greenland	45 00 प.	65 36 उ.	37 41 प.	+29 16	+08 30
*Ankara	Turkey	30 00 पू.	39 57 उ.	32 54 पू.	+11 36	+03 30
Anuradhapur	Sri Lanka	82 30 पू.	08 21 उ.	80 23 पू.	−08 28	00 00
*Athens	Greece	30 00 पू.	37 54 उ	23 43 पू.	−25 08	+03 30
*Auckland	New Zealand	180 00 पू.	36 52 द.	174 42 पू.	−21 12	−06 30
*Austin (Texas)	U.S.A.	90 00 प.	30 16 उ.	97 44 प.	−30 56	+11 30
Bacolod	Phill.	120 00 पू.	10 40 उ.	122 57 पू.	+11 48	−02 30
*Baghdad	Iraq	45 00 पू.	33 20 उ.	44 27 पू.	−02 12	+02 30
*Bahawalpur	Pakistan	75 00 पू.	29 59 उ	73 16 पू.	−06 56	+00 30
Bangkok	Thailand	105 00 पू.	13 44 उ.	100 30 पू.	−18 00	−01 30
Batticoloa	Sri Lanka	82 30 पू.	07 43 उ.	81 45 पू.	−03 00	00 00
Beijing	China	120 00 पू.	39 55 उ.	116 25 पू.	−14 20	−02 30
*Beirut	Lebanon	30 00 पू.	33 50 उ.	35 25 पू.	+21 40	+03 30
*Belgrade	Yugoslavia	15 00 पू.	44 50 उ.	20 30 पू.	+22 00	+04 30
*Berlin	Germany	15 00 पू.	52 32 उ.	13 25 पू.	−06 20	+04 30
*Berne	Switzerland	15 00 पू.	46 57 उ.	07 26 पू.	−30 16	+04 30
Biratnagar	Nepal	86 15 पू.	26 29 उ.	87 17 पू.	+04 08	−00 15
*Birmingham	England	00 00	52 30 उ.	01 50 प.	−07 20	+05 30
Bogota	Colombia	75 00 प.	04 36 उ.	74 05 प.	+03 40	+10 30
Bogra	Bangladesh	90 00 पू.	24 51 उ.	89 22 पू.	−02 32	−00 30
*Bonn	Germany	15 00 पू.	50 44 उ.	07 04 पू.	−31 44	+04 30
*Boston	U.S.A.	75 00 प.	42 21 उ.	71 04 प.	+15 44	+10 30
*Brasilia	Brazil	45 00 प.	15 47 द.	47 55 प.	−11 40	+08 30
*Bratislava	Slovakia	15 00 पू.	48 09 उ.	17 07 पू.	+08 28	+04 30
Brazzaville	Congo	15 00 पू.	04 16 द.	15 17 पू.	+01 08	+04 30
*Brisbane	Australia	150 00पू.	27 28 द.	153 02 पू.	+12 08	−04 30
*Brussels	Belgium	15 00 पू.	50 52 उ.	04 22 पू.	−42 32	+04 30
*Bucharest	Romania	30 00 पू.	44 25 उ.	26 07 पू.	−15 32	+03 30
*Budapest	Hungary	15 00 पू.	47 29 उ.	19 03 पू.	+16 12	+04 30
Buenos Aires	Argentina	45 00 प.	34 35 द.	58 27 प.	−53 48	+08 30
*Buffalo (N.Y.)	U.S.A.	75 00 प.	42 55 उ.	78 50 प.	−15 20	+10 30
*Cairo	Egypt	30 00 पू.	30 03 उ.	31 14 पू.	+04 56	+03 30
*California City	U.S.A.	120 00प.	35 07 उ.	117 59प.	+08 04	+13 30
*Canberra	Australia	150 00पू.	35 19 द.	149 08पू.	−03 28	−04 30
*Cape Town	South Africa	30 00 पू.	33 56 द.	18 22 पू.	−46 32	+03 30
Caracas	Venezuela	60 00 प.	10 30 उ.	66 56 प.	−39 44	+09 30
*Charlotti Amali	Virgin Is (U.K.)	60 00 प.	18 21 उ.	64 56 प.	−19 44	+09 30
*Chicago	U.S.A.	90 00 प.	41 53 उ.	87 38 प.	+09 28	+11 30
Chittagong	Bangla.	90 00 पू.	22 20 उ.	91 50 पू.	+07 20	−00 30
*Cleveland (Ohio)	U.S.A.	75 00 प.	41 30 उ.	81 41 प.	−26 44	+10 30
Colombo	Sri Lanka	82 30 पू.	06 56 उ.	79 51 पू.	−10 36	00 00
Comilla	Bangladesh	90 00 पू.	23 27 उ.	91 12 पू.	+04 48	−00 30
*Copenhagen	Denmark	15 00 पू.	55 40 उ.	12 35 पू.	−09 40	+04 30
Dakar	Senegal	00 00	14 40 उ.	17 26 प.	−69 44	+05 30
*Dallas (Texas)	U.S.A.	90 00 प.	32 47 उ.	96 48 प.	−27 12	+11 30

* इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय(Summer Time) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय क्षेत्रीय स्टैं. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।

* इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय(Summer Time) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय क्षेत्रीय स्टैं. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।

कुछ विदेशी प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
		अं. क.	अं. क.	अं. क.	मि. से.	घं. मि.
*Damascus	Syria	30 00 पू.	33 30 उ.	36 18 पू.	+25 12	+03 30
Dar-es-salaam	Tanzania	45 00 पू.	06 50 द.	39 17 पू.	−22 52	+02 30
*Detroit (Mich.)	U.S.A.	75 00 प.	42 23 उ.	83 05 प.	−32 20	+10 30
Dhaka	Bangla.	90 00 पू.	23 43 उ.	90 25 पू.	+01 40	−00 30
Djibouti	Djibouti	45 00 पू.	11 36 उ.	43 09 पू.	−07 24	+02 30
Dinajpur	Bangla.	90 00 पू.	25 38 उ.	88 38 पू.	−05 28	−00 30
Doha	Qatar	45 00 पू.	25 17 उ.	51 32 पू.	+26 08	+02 30
*Dublin	Ireland	00 00	53 20 उ.	06 15 प.	−25 00	+05 30
Dubai	U.A.E.	60 00 पू.	25 18 उ.	55 18 पू.	−18 48	+01 30
*Edinburgh	Scotland	00 00	55 56 उ.	03 11 प.	−12 44	+05 30
*Edmonton	Canada	105 00 प.	53 33 उ.	113 28 प.	−33 52	+12 30
*Florida City	U.S.A.	75 00 प.	25 27 उ.	80 29 प.	−21 56	+10 30
*Frankfurt	Germany	15 00 पू.	50 06 उ.	08 40 पू.	−25 20	+04 30
Fukuoka	Japan	135 00 पू.	35 34 उ.	137 27 पू.	+09 48	−03 30
Galle	Sri Lanka	82 30 पू.	06 02 उ.	80 13 पू.	−09 08	00 00
Guatemala	Guatemala	90 00 प.	14 38 उ.	90 31 प.	−02 04	+11 30
*Geneva	Switzerland	15 00 पू.	46 12 उ.	06 09 पू.	−35 24	+04 30
*Glasgow	Scotland	00 00	55 52 उ.	04 15 प.	−17 00	+05 30
*Greenwich	England	00 00	51 29 उ.	00 00	00 00	+05 30
Guiyang	China	120 00 पू.	26 35 उ.	106 43 पू.	−53 08	−02 30
*Hamilton	Canada	75 00 प.	43 15 उ.	79 50 प.	−19 20	+10 30
Hanoi	North Vietnam	105 00 पू.	21 02 उ.	105 52 पू.	+03 28	−01 30
*Havana	Cuba	75 00 प.	23 08 उ.	82 22 प.	−29 28	+10 30
*Heidelberg	Germany	15 00 पू.	49 24 उ.	08 43 पू.	−25 08	+04 30
*Helsinki	Finland	30 00 पू.	60 09 उ.	24 57 पू.	−20 12	+03 30
Hiroshima	Japan	135 00 पू.	34 24 उ.	132 27 पू.	−10 12	−03 30
Hongkong	China	120 00 पू.	22 18 उ.	114 10 पू.	−23 20	−02 30
Honolulu	Hawai Island	150 00 प.	21 19 उ.	157 52 प.	−31 28	+15 30
*Houston (Texas)	U.S.A.	90 00 प.	29 45 उ.	95 21 प.	−21 24	+11 30
*Hyderabad	Pakistan	75 00 पू.	25 22 उ.	68 22 पू.	−26 32	+00 30
*Isfahan	Iran	52 30 पू.	32 40 उ.	51 38 पू.	−03 28	+02 00
*Islamabad	Pakistan	75 00 पू.	33 42 उ.	73 10 पू.	−07 20	+00 30
*Istanbul	Turkey	30 00 पू.	41 00 उ.	29 00 पू.	−04 00	+03 30
Jaffna	Sri Lanka	82 30 पू.	09 40 उ.	80 00 पू.	−10 00	00 00
Jakarta	Indonesia	105 00 पू.	06 10 द.	106 49 पू.	+07 16	−01 30
Jamaica	West Indies	75 00 प.	18 00 उ.	76 48 प.	−07 12	+10 30
*Jerusalem	Israel	30 00 पू.	31 46 उ.	35 14 पू.	+20 56	+03 30
Jessore	Bangla	90 00 पू.	23 10 उ.	89 13 पू.	−03 08	−00 30
Johannesburg	South Africa	30 00 पू.	26 15 द.	28 00 पू.	−08 00	+03 30
Kabul	Afghanistan	67 30 पू.	34 33 उ.	69 12 पू.	+06 48	+01 00
Kampala	Uganda	45 00 पू.	00 19 उ.	32 25 पू.	−50 20	+02 30
Kandahar	Afghanistan	67 30 पू.	31 32 उ.	65 30 पू.	−08 00	+01 00
Kandy	SriLanka	82 30 पू.	07 18 उ.	80 38 पू.	−07 28	00 00
*Karachi	Pakistan	75 00 पू.	24 52 उ.	67 03 पू.	−31 48	+00 30
Kathmandu	Nepal	86 15 पू.	27 43 उ.	85 19 पू.	−03 44	−00 15
Khartoum	Sudan	30 00 पू.	15 35 उ.	32 35 पू.	+10 20	+03 30
Kingston	*Jamaica*	75 00 प.	18 00 उ.	76 48 प.	−07 12	+10 30
Khulna	Bangla.	90 00 पू.	22 48 उ.	89 33 पू.	−01 48	−00 30
Kuala Lumpur	Malaysia	120 00 पू.	03 09 उ.	101 43 पू.	−73 08	−02 30
Kushtia	Bangla.	90 00 पू.	23 55 उ.	89 07 पू.	−03 32	−00 30
Kuwait	Kuwait	45 00 पू.	29 20 उ.	47 59 पू.	+11 56	+02 30
Kwangchow	China	120 00 पू.	23 06 उ.	113 16 पू.	−26 56	−02 30
Lagos	Nigeria	15 00 पू.	06 25 उ.	03 27 पू.	−46 12	+04 30
*Leeds	England	00 00	53 50 उ.	01 35 प.	−06 20	+05 30
*Leipzig	Germany	15 00 पू.	51 20 उ.	12 23 पू.	−10 28	+04 30
*Leningrad	Russia	30 00 पू.	59 57 उ.	30 18 पू.	+01 12	+03 30

* इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय(Summer Time) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय क्षेत्रीय स्टैं. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।

कुछ विदेशी प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
		अं. क.	अं. क.	अं. क.	मि. से.	घं मि.
Leopoldville	Zaire	15 00 पू.	04 18 द.	15 18 पू.	+01 12	+04 30
Lhasa	China	120 00 पू.	29 40 उ.	91 07 पू.	−115 32	−02 30
Lima	Peru	75 00 प.	12 92 द.	77 02 प.	−08 08	+10 30
*Lisbon	Portugal	00 00	38 43 उ.	09 11 प.	−36 44	+05 30
*Liverpool	England	00 00	53 25 उ.	02 55 प.	−11 40	+05 30
*London	England	00 00	51 32 उ.	00 05 प.	−00 20	+05 30
*Long Beach,Ca.	U.S.A.	120 00 प.	33 46 उ.	118 12 प.	+07 12	+13 30
*Los Angeles	U.S.A.	120 00 प.	34 03 उ.	118 14 प.	+07 04	+13 30
Luanda	Angola	15 00 पू.	08 48 द.	13 14 पू.	−07 04	+04 30
Lusaka	Zambia	30 00 पू.	15 25 द.	28 17 पू.	−06 52	+03 30
*Luxembourg	Luxembourg	15 00 पू.	49 36 उ..	06 09 पू.	−35 24	+04 30
*Madrid	Spain	15 00 पू.	40 25 उ.	03 41 प.	−74 44	+04 30
*Manchester	England	00 00	53 30 उ.	02 15 प.	−09 00	+05 30
Mandlay	Myanmar	97 30 पू.	22 00 उ.	96 05 पू.	−05 40	−01 00
Manila	Philippines	120 00 पू.	14 35 उ.	121 00 पू.	+04 00	−02 30
Mecca	SaudiArabia	45 00 पू.	21 25 उ.	39 54 पू.	−20 24	+02 30
*Melbourne	Australia	150 00 पू.	37 50 द.	144 59 पू.	−20 04	−04 30
*Mexico City	Mexico	90 00 प.	19 26 उ.	99 10 प.	−36 40	+11 30
*Milan	Italy	15 00 पू.	45 28 उ.	09 11 पू.	−23 16	+04 30
Mombasa	Kenya	45 00 पू.	04 00 द	39 40 पू.	−21 20	+02 30
*Montreal	Canada	75 00 प.	45 30 उ.	73 34 प.	+05 44	+10 30
*Moscow	Russia	45 00 पू.	55 45 उ.	37 34 पू.	−29 44	+02 30
Moulmein	Myanmar	97 30 पू.	16 30 उ.	97 38 पू.	+00 32	−01 00
* Multan	Pakistan	75 00 पू.	30 11 उ.	71 29 पू.	−14 04	+00 30
*Munich	Germany	15 00 पू.	48 08 उ.	11 35 पू.	−13 40	+04 30
Muscat	Oman	60 00 पू.	23 37 उ.	58 35 पू.	−05 40	+01 30
Mymensingh	Bangla.	90 00 पू.	24 45 उ.	90 24 पू.	+01 36	−00 30
Nagoya	Japan	135 00 पू.	35 10 उ.	136 55 पू.	+07 40	−03 30
Nairobi	Kenya	45 00 पू.	01 18 द.	36 52 पू.	−32 32	+02 30
*New Castle	England	00 00	52 27 उ.	03 06 प.	−12 24	+05 30
*New Orleans	U.S.A.	90 00 प.	29 57 उ.	90 04 प.	−00 16	+11 30
*New York	U.S.A.	75 00 प.	40 43 उ.	74 00 प.	+04 00	+10 30
Noakhali	Bangla.	90 00 पू.	22 49 उ.	91 06 पू.	+04 24	−00 30
*Nuuk	Greenland	45 00 प.	64 11 उ.	51 44 प.	+26 56	+08 30
Osaka	Japan	135 00 पू.	34 40 उ.	135 30 पू.	+02 00	−03 30
*Oslo	Norway	15 00 पू.	59 54 उ.	10 45 पू.	−17 00	+04 30
*Ottawa	Canada	75 00 प.	45 24 उ.	75 43 प.	−02 52	+10 30
Pabna	Bangla.	90 00 पू.	24 00 उ.	89 15 पू.	−03 00	−00 30
Paramaribo	Suriname	45 00 प.	05 50 उ.	55 10 प.	−40 40	+08 30
*Paris	France	15 00 पू.	48 50 उ.	02 20 पू.	−50 40	+04 30
Pegu	Myanmar	97 30 पू.	17 20 उ.	96 29 पू.	−04 04	−01 00
Peking	China	देखें − Beijing		--	--	--
Penang	Malaysia	120 00 पू.	05 25 उ.	100 20 पू.	−78 40	−02 30
Perth	Australia	120 00 पू.	32 00 द.	115 50 पू.	−16 40	−02 30
*Peshawar	Pakistan	75 00 पू.	34 01 उ.	71 33 पू.	−13 48	+00 30
*Philadelphia, Pa.	U.S.A.	75 00 प.	39 58 उ.	75 10 प.	−00 40	+10 30
Phnom penh	Cambodia	105 00 पू.	11 35 उ.	104 57 पू.	−00 12	−01 30
*Pittsburgh, Pa.	U.S.A.	75 00 प.	40 25 उ.	79 55 प.	−19 40	+10 30
Port Elizabeth	South Africa	30 00 पू.	33 58 द.	25 40 पू.	−17 20	+03 30
Port Louis	Mauritius	60 00 पू.	20 10 द.	57 30 पू.	−10 00	+01 30
Port of Spain	Trininad and Tobago	60 00 प.	10 39 उ.	61 31 प.	−06 04	+09 30
*Prague	Czecho.	15 00 पू.	50 05 उ.	14 24 पू.	−02 24	+04 30
Prome	Myanmar	97 30 पू.	18 47 उ.	95 15 पू.	−09 00	−01 00
Punakha	Bhutan	90 00 पू.	27 42 उ.	89 52 पू.	−00 32	−00 30
* Quetta	Pakistan	75 00 पू.	30 12 उ.	67 00 पू.	−32 00	+00 30
Rabat*	Morocco	00 00	34 02 उ.	06 51 प.	−27 24	+05 30

* इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (Summer Time) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय क्षेत्रीय स्टैं. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।

* इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय(Summer Time) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय क्षेत्रीय स्टैं. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।

कुछ विदेशी प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन अं. क.	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर) मि. से.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं मि.
Rangoon	Myanmar	97 30 पू.	16 47 उ.	96 10 पू.	−05 20	−01 00
Rangpur	Bangla.	90 00 पू.	25 45 उ.	89 15 पू.	−03 00	−00 30
Rajshahi	Bangla.	90 00 पू.	24 22 उ.	88 36 पू.	−05 36	−00 30
*Rawalpindi	Pakistan	75 00 पू.	33 36 उ.	73 04 पू.	−07 44	+00 30
Riyadh	Saudi Arabia	45 00 पू.	24 39 उ.	46 41 पू.	+06 44	+02 30
Road Town	Virgin Is. (U.K.)	60 00 प.	18 27 उ.	64 37 प.	−18 28	+09 30
*Rome	Italy	15 00 पू.	41 55 उ.	12 27 पू.	−10 12	+04 30
Saigon	SouthVietnam	105 00 पू.	10 49 उ.	106 41 पू.	+06 44	−01 30
Salisbury(Harare)	Zimbabwe	30 00 पू.	17 50 द.	31 03 पू.	+04 12	+03 30
San'a'	Yeman	45 00 पू.	15 23 उ.	44 12 पू.	−03 12	+02 30
*San Diego, Ca.	U.S.A.	120 00 प.	32 43 उ.	117 10 प.	+10 40	+13 30
*San Francisco	U.S.A.	120 00 प.	37 48 उ.	122 25 प.	−09 40	+13 30
*San Juan	Puetro Rico	60 00 प.	18 28 उ.	66 07 प.	−24 28	+09 30
Santiago	Chile	60 00 प.	33 27 द.	70 40 प.	−42 40	+09 30
*Seattle	U.S.A	120 00 प.	47 41 उ.	122 15 प	−09 00	+13 30
Seoul	South Korea	135 00 पू.	37 31 उ.	126 58 पू.	−32 08	−03 30
Shanghai	China	120 00 पू.	31 14 उ.	121 28 पू.	+05 52	−02 30
Sharjah	U.A.E.	60 00 पू.	25 20 उ.	55 24 पू.	−18 24	+01 30
Singapore	Singapore	120 00 पू.	01 17 उ.	103 54 पू.	−64 24	−02 30
*Sofia	Bulgaria	30 00 पू.	42 41 उ.	23 21 पू.	−26 36	+03 30
*Stanley	Falkland Is.	60 00 प.	51 42 द.	57 51 प.	+08 36	+09 30
*Stockholm	Sweden	15 00 पू.	59 20 उ.	18 00 पू.	+12 00	+04 30
*Sukkur	Pakistan	75 00 पू.	27 42 उ.	68 52 पू.	−24 32	+00 30
Suva	Fiji	180 00 पू.	18 08 द.	178 25 पू.	−06 20	−06 30

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन अं. क.	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर) मि. से.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं मि.
*Sydney	Australia	150 00 पू.	33 52 द.	151 12 पू.	+04 48	−04 30
Sylhet	Bangla.	90 00 पू.	24 54 उ.	91 52 पू.	+07 28	−00 30
Taipei	Taiwan	120 00 पू.	25 03 उ.	121 30 पू.	+06 00	−02 30
Taskent	Uzbekistan	75 00 पू.	41 20 उ.	69 18 पू.	−22 48	+00 30
*Tehran	Iran	52 30 पू.	35 41 उ.	51 26 पू.	−04 16	+02 00
Thimpu	Bhutan	90 00 पू.	27 28 उ.	89 39 पू.	−01 24	−00 30
*Tirane	Albania	15 00 पू.	41 20 उ.	19 50 पू.	+19 20	+04 30
Tokyo	Japan	135 00 पू.	35 40 उ.	139 46 पू.	+19 04	−03 30
*Toronto	Canada	75 00 प.	43 39 उ.	79 23 प.	−17 32	+10 30
Trincomalee	Sri Lanka	82 30 पू.	08 31 उ.	81 14 पू.	−05 04	00 00
Tripoli	Libya	30 00 पू.	32 54 उ.	13 15 पू.	−67 00	+03 30
*Ulan Bator	Mongolia	105 00 पू.	47 55 उ.	106 53 पू.	+07 32	−01 30
*Vancouver	Canada	120 00 प.	49 16 उ.	123 07 प.	−12 28	+13 30
Vatican City	Vatican City	15 00 पू.	41 54 उ.	12 27 पू.	−10 12	+04 30
*Vienna	Austria	15 00 पू.	48 12 उ.	16 22 पू.	+05 28	+04 30
*Volgograd	Russia	45 00 पू.	48 44 उ.	44 25 पू.	−02 20	+02 30
Wakayama	Japan	135 00 पू.	34 13 उ.	135 11 पू.	+00 44	−03 30
*Warsaw	Poland	15 00 पू.	52 12 उ.	21 00 पू.	+24 00	+04 30
*Washington (D.C.)	U.S.A.	75 00 प.	38 55 उ.	77 04 प.	−08 16	+10 30
*Wellington	New Zealand	180 00 पू.	41 16 द.	174 47 पू.	−20 52	−06 30
Yokohama	Japan	135 00 पू.	35 27 उ.	139 39 पू.	+18 36	−03 30
Zanzibar	Tanzania	45 00 पू.	06 10 द.	39 11 पू.	−23 16	+02 30
*Zurich	Switzerland	15 00 पू.	47 23 उ.	08 32 पू.	−25 52	+04 30

* इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय(Summer Time) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय क्षेत्रीय स्टैं. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।

स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी

(विश्व के लगभग सभी मुख्य देशों / कालक्षेत्रों की स्टैंडर्ड टाईम मेरिडियन्स)

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
Afghanistan	67 30 पू.	+ 01 00
*Albania	15 00 पू.	+ 04 30
Algeria	15 00 पू.	+ 04 30
Angola	15 00 पू.	+ 04 30
Argentina	45 00 प.	+ 08 30
*AUSTRALIA यह देश इन 3 कालक्षेत्रों (Time Zones) में बटा है –		
(i) **E.S.T.** (Eastern St. Time) (इस कालक्षेत्र में Victoria, Tasmania आदि क्षेत्र आते हैं)	150 00 पू.	– 04 30
(ii) **C.S.T.** (Central St. Time) (इस कालक्षेत्र में South Australia, Broken Hill Area आदि आते हैं।)	142 30 पू.	– 04 00
(iii) **W.S.T.** (इस कालक्षेत्र में Western Australia आता है)	120 00 पू.	– 02 30
*Austria	15 00 पू.	+ 04 30
Bahrain	45 00 पू.	+ 02 30
Bangladesh	90 00 पू.	– 00 30
*Belgium	15 00 पू.	+ 04 30
Bhutan	90 00 पू.	– 00 30
Bolivia	60 00 प.	+ 09 30
*Bulgaria	30 00 पू.	+ 03 30
Burundi	30 00 पू.	+ 03 00
Cameroon	15 00 पू.	+ 04 30
*CANADA यह देश मुख्यत: इन 4 कालक्षेत्रों (Time Zones) में बटा है –		
(i) **E.S.T.** (Eastern St. Time) इस काल-क्षेत्र में N.W. Territories और Ontario का पू. भाग पड़ता है।	75 00 प.	+ 10 30

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
(ii) **C.S.T.** (Central St. Time) इसमें N.W. Territories का मध्यभाग और Ontario का प. भाग पड़ता है।	90 00 प.	+ 11 30
(iii) **M.S.T.** (Mountain St. Time इसमें N.W. Territories का कुछ प. भाग तथा Alberta आदि प्रान्त पड़ते हैं।	105 00 प.	+12 30
(iv) **P.S.T.** (Pacific St. Time) इस कालक्षेत्र में N.W. Territories का अन्तिम प. भाग तथा B.Columbia पड़ता है।	120 00 प.	+ 13 30
*Chile	60 00 प.	+ 09 30
China	120 00 पू.	– 02 30
Colombia	75 00 प.	+ 10 30
Congo	15 00 पू.	+ 04 30
*Cuba	75 00 प.	+ 10 30
Ceylon	देखें ——	Sri Lanka
Cyprus	30 00 पू.	+ 03 30
*Denmark	15 00 पू.	+ 04 30
Ecuador	75 00 प.	+ 10 30
*Egypt	30 00 पू.	+ 03 30
*England(U.K.)	00 00	+ 05 30
Ethiopia	45 00 पू.	+ 02 30
*Falkland Islands	60 00 प.	+ 09 30
Fiji	180 00 पू.	– 06 30
*Finland	30 00 पू.	+ 03 30
*France	15 00 पू.	+ 04 30
Gambia	00 00	+ 05 30
*Germany	15 00 पू.	+ 04 30
Ghana	00 00	+ 05 30
*Greece	30 00 पू.	+ 03 30

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
*Guatemala	90 00 प.	+ 11 30
Honduras	90 00 प.	+ 11 30
Hong Kong	120 00 पू.	– 02 30
*Iceland	00 00	+ 05 30
India	82 30 पू.	00 00
INDONESIA, REPUBLIC OF:- यह देश छोटे–बड़े 13000 से भी अधिक द्वीपों से बना है। पहिले यह 30–30 मिनटों के अन्तर वाले छः कालक्षेत्रों में विभाजित था। अब इसे एक–एक घण्टा के अन्तर वाले इन तीन कालक्षेत्रों में विभाजित किया गया है–		
(i) Bali, Bangka, Enggano, Java, Madura एवम् Sumatra द्वीप;........................	105 00 पू.	– 1 30
(ii) Alore, Borneo, Celebes (Sulawesi), Flores, Kabaena , Lombok, Sangihe , Talaud , Sumba, Sumbawa (Soembawa) और Timor (Timur) (द्वीपसमूह)	120 00 पू.	– 2 30
(iii) Aru, Babar, Buru, Cerem (Seram), Irian Jaya (West Irian), Larat , Maluku(Moluccas = Molukken), Schouten , Tanah Merah और Tanimbar (द्वीपसमूह)...	135 00 पू.	– 3 30

स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी (विश्व के लगभग सभी मुख्य देशों / कालक्षेत्रों की स्टैंडर्ड टाईम मेरिडियन्स)

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
	अं. क.	घं. मि.
*Iran	52 30 पू.	+ 02 00
*Iraq	45 00 पू.	+ 02 30
*Irish Republic	00 00	+ 05 30
*Israel	30 00 पू.	+ 03 30
*Italy	15 00 पू.	+ 04 30
*Jamaica	75 00 प.	+ 10 30
Japan	135 00 पू.	− 03 30
*Jordan	30 00 पू.	+ 03 30
***KAZAKHSTAN –** यह देश, जो पहिले Soviet Union का भाग था, इन तीन कालक्षेत्रों में बंटा है:-		
(i) Kazakhstan (West) .	60 00 पू.	+ 01 30
(ii) Kazakhstan (Central)..	75 00 पू.	+ 0 30
(iii) Kazakhstan (East) ..	90 00 पू.	− 0 30
Kumpuchia	105 00 पू.	− 01 30
Kenya	45 00 पू.	+ 02 30
Korea	135 00 पू.	− 03 30
Kuwait	45 00 पू.	+ 02 30
Laos	105 00 पू.	− 01 30
* Lebanon	30 00 पू.	+ 03 30
Libya	30 00 पू.	+ 03 30
Macao	120 00 पू.	− 02 30
Madagascar	45 00 पू.	+ 02 30
Malaysia	120 00 पू.	− 02 30
Maldive Islands	75 00 पू.	+ 00 30
Maurtius	60 00 पू.	+ 01 30

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
	अं. क.	घं. मि.
*KYRGHIZSTAN (KIRGIZSTAN= KIRGHIZIA= KIRGIZIA) (यह पहिले Soviet Union का भाग था)......	0 00 पू.	+ 0 30
*MEXICO यह देष इन 3 कालक्षेत्रों में बंटा है:–		
(i) **E.S.T.** (Eastern St. Time) (इस कालक्षेत्र में Compeche, Chiapas आदि प्रान्त आते हैं)	90 00 प.	+ 11 30
(ii) **C.S.T.** (Central St. Time) (इस कालक्षेत्र में Baja California, Sur, Nayarit आदि पड़ते हैं।)	105 00 प.	+ 12 30
(iii) **W.S.T.** (Western St. Time) (इस कालक्षेत्र में Baja California- Norte आते हैं)	120 00 प.	+ 13 30
Morocco	00 00	+ 05 30
Mozambique	30 00 पू.	+ 03 30
Myanmar (Burma)	97 30 पू.	− 01 00
Nepal	86 15 पू.	− 00 15
Netherlands	15 00 पू.	+ 04 30
*New Zealand	180 00 पू.	− 06 30
Nicaragua	90 00 प.	+ 11 30
Nigeria	15 00 पू.	+ 04 30
*Northern Ireland (U.K.)	00 00	+ 05 30
*Norway	15 00 पू.	+ 04 30
Oman (Muscat and Oman)	60 00 पू.	+ 01 30
*Pakistan	75 00 पू.	+ 00 30
Panama	75 00 प.	+ 10 30

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
	अं. क.	घं. मि.
*Paraguay	60 00 प.	+ 09 30
Peru	75 00 प.	+ 10 30
Philippines	120 00 पू.	− 02 30
*Poland	15 00 पू.	+ 04 30
*Portugal	00 00	+ 05 30
Qatar	45 00 पू.	+ 02 30
Rwanda	30 00 पू.	+ 03 30
Romania	30 00 पू.	+ 03 30
*RUSSIA यह महादेश, जो Soviet Union का मूल घटक राष्ट्र रहा है, यह इन ग्यारह कालक्षेत्रों में बंटा है–		
(i)कालक्षेत्र Kaliningrad area	30 00 पू.	+ 3 30
(ii) कालक्षेत्र Novaja Zemla, European RSFSR (पश्चिमी भाग)....	45 00 पू.	+ 2 30
(iii) कालक्षेत्र European RSFSR (मध्य भाग).............	60 00 पू.	+ 1 30
(iv) कालक्षेत्र European RSFSR (पू. भाग), Asian RSFSR (प. भाग)	75 00 पू.	+ 0 30
(v) कालक्षेत्र Asian RSFSR ...	90 00 पू.	− 0 30
(vi) कालक्षेत्र Asian RSFSR, Severnaja Zemla	105 00 पू.	− 1 30
(vii) कालक्षेत्र Asian RSFSR ...	120 00 पू.	− 2 30
(viii) कालक्षेत्र Asian RSFSR...	135 00 पू.	− 3 30
(ix) कालक्षेत्र Asian RSFSR, Novosibirskije Ostrova	150 00 पू.	− 4 30
(x) कालक्षेत्र Asian RSFSR (पू. भाग) , Ostrov Sachalin, Kuril Islands	165 00 पू.	− 5 30
(xi) कालक्षेत्र Asian RSFSR (अन्तिम पूर्वी छोर), Komandorskije Ostrova...	180 00 पू.	− 6 30

स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी

(विश्व के लगभग सभी मुख्य देशों/कालक्षेत्रों की स्टैंडर्ड टाईम मेरिडियन्स)

देश/प्रदेश/कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
	अं. क.	घं. मि.
Saudi Arabia	45 00 पू.	+ 02 30
*Scotland (U.K.)	00 00	+ 05 30
Singapore	120 00 पू.	− 02 30
South Africa	30 00 पू.	+ 03 30
*Spain	15 00 पू.	+ 04 30
Sri Lanka	82 30 पू.	00 00
Sudan	30 00 पू.	+ 03 30
Suriname	45 00 प.	+ 08 30
*Sweden	15 00 पू.	+ 04 30
*Switzerland	15 00 पू.	+ 04 30
*Syria	30 00 पू.	+ 03 30
TAJIKISTAN (TADZHIKISTAN) (यह पहिले Soviet Union का भाग था)......	75 00 पू.	+ 00 30
Taiwan	120 00 पू.	− 02 30
Tanzania	45 00 पू.	+ 02 30
Thailand	105 00 पू.	− 01 30
Trinidad andTobago	60 00 प.	+ 09 30
Tunisia	15 00 पू.	+ 04 30
*Turkey	30 00 पू.	+ 03 30

देश/प्रदेश/कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
	अं. क.	घं. मि.
U.A.E. (UNITED ARAB EMIRATES) .[Abu Dhabi, Ajman, Dubai, Fujairah, Ras-al-Khaimah, .Sharjah, और Umma-al-Quiwain)	60 00 पू.	+ 01 30
Uganda	45 00 पू.	+ 02 30
*U.K.	00 00	+ 05 30
Uruguay	45 00 प.	+ 08 30
UKRAIN यह पहिले Soviet Union का भाग था। यह इन दो कालक्षेत्रों में बँटा है–		
(i) इस कालक्षेत्र में Ukraine का प्रमुख भाग [Black और Azov Sea से घिरे दक्षिणी भाग (द्वीप) को छोड़ कर शेष पूरा भाग आता है।........................	30 00 पू.	+ 03 30
(ii) इसमें Black और Azov Sea से घिरा इसका केवल दक्षिणी भाग(द्वीप) आता है।....	45 00 पू.	+ 02 30
UZBEKISTAN.................. (यह पहले Soviet Union का भाग था)	75 00 पू.	+ 00 30

देश/प्रदेश/कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
	अं. क.	घं. मि.
*U.S.A. यह देश इन 4 कालक्षेत्रों (Time Zones) में बंटा है :-		
(i) **E.S.T.** (Eastern St. Time) (इस कालक्षेत्र में Delaware, Florida, Ohio आदि States पड़ती हैं।)	75 00 प.	+ 10 30
(ii) **C.S.T.** (Centrar St. Time) (इस कालक्षेत्र में Alabama, Illinois आदि States पड़ती हैं।)	90 00 प.	+ 11 30
(iii) **M.S.T.** (Mountain St. Time) (इस कालक्षेत्र में Arizona, Colorado आदि States पड़ती हैं।)	105 00 प.	+ 12 30
(iv) **P.S.T.** (Pacific St. Time) (इस कालक्षेत्र में California, Nevada आदि States पड़ती हैं।)	120 00 प.	+ 13 30
Vatican State	15 00 पू.	+ 04 30
Venezuela	60 00 प.	+ 09 30
Vietnam	105 00 पू.	− 01 30
*Wales(U.K.)	00 00	+ 05 30
*Yugoslavia	15 00 पू.	+ 04 30
Zamibia	30 00 पू.	+ 03 30
Zaire	30 00 पू.	+ 03 30
Zimbabwe	30 00 पू.	+ 03 30

* इन देशों में ग्रीष्मकालीन समय (**Summer Time**) प्रचलित है। **Summer Time** के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए हमारी पुस्तक " विश्वलग्न सारणी " देखें।

धन (+) चिह्न वाले 'अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर ' का अर्थ है, कि भा. स्टैं. टा. अभीष्ट स्थानीय (देश/कालक्षेत्रीय) स्टैं. टा. से आगे है। इसी प्रकार ऋण (–) चिह्न वाला "अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर" बतलाता है, कि भा. स्टैं. टा. अभीष्ट स्थानीय (देश/कालक्षेत्रीय) स्टैं. टा. से पीछे है।

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

वैशाख

	अंग्रेज़ी तारीख	वैशाख तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अप्रैल	१३	१	७ ३६	९ ३०	११ ४४	१४ ०७	१६ २७	१८ ४४	२१ ०६	२३ २६	१ ३१	३ १२	४ ३७	५ ५९
	१४	२	७ ३२	९ २६	११ ४०	१४ ०३	१६ २३	१८ ४०	२१ ०२	२३ २२	१ २७	३ ०८	४ ३३	५ ५५
	१५	३	७ २८	९ २२	११ ३७	१३ ५९	१६ १९	१८ ३६	२० ५८	२३ १८	१ २३	३ ०४	४ २९	५ ५१
	१६	४	७ २४	९ १८	११ ३३	१३ ५५	१६ १५	१८ ३३	२० ५४	२३ १४	१ १९	३ ००	४ २५	५ ४७
	१७	५	७ २०	९ १४	११ २९	१३ ५१	१६ ११	१८ २९	२० ५०	२३ १०	१ १५	२ ५६	४ २१	५ ४३
	१८	६	७ १६	९ ११	११ २५	१३ ४७	१६ ०७	१८ २५	२० ४६	२३ ०६	१ ११	२ ५२	४ १७	५ ३९
	१९	७	७ १२	९ ०७	११ २१	१३ ४३	१६ ०३	१८ २१	२० ४२	२३ ०२	१ ०७	२ ४८	४ १३	५ ३५
	२०	८	७ ०८	९ ०३	११ १७	१३ ३९	१५ ५९	१८ १७	२० ३८	२२ ५८	१ ०३	२ ४४	४ ०९	५ ३१
	२१	९	७ ०४	८ ५९	११ १३	१३ ३५	१५ ५५	१८ १३	२० ३४	२२ ५४	० ५९	२ ४०	४ ०५	५ २८
	२२	१०	७ ००	८ ५५	११ ०९	१३ ३१	१५ ५१	१८ ०९	२० ३०	२२ ५१	० ५५	२ ३६	४ ०१	५ २४
	२३	११	६ ५६	८ ५१	११ ०५	१३ २७	१५ ४७	१८ ०५	२० २७	२२ ४७	० ५१	२ ३२	३ ५७	५ २०
	२४	१२	६ ५२	८ ४७	११ ०१	१३ २३	१५ ४३	१८ ०१	२० २३	२२ ४३	० ४७	२ २८	३ ५३	५ १६
	२५	१३	६ ४८	८ ४३	१० ५७	१३ १९	१५ ३९	१७ ५७	२० १९	२२ ३९	० ४३	२ २४	३ ४९	५ १२
	२६	१४	६ ४४	८ ३९	१० ५३	१३ १६	१५ ३६	१७ ५३	२० १५	२२ ३५	० ३९	२ २०	३ ४५	५ ०८
	२७	१५	६ ४१	८ ३५	१० ४९	१३ १२	१५ ३२	१७ ४९	२० ११	२२ ३१	० ३५	२ १६	३ ४२	५ ०४
	२८	१६	६ ३७	८ ३१	१० ४५	१३ ०८	१५ २८	१७ ४५	२० ०७	२२ २७	० ३२	२ १३	३ ३८	५ ००
	२९	१७	६ ३३	८ २७	१० ४२	१३ ०४	१५ २४	१७ ४१	२० ०३	२२ २३	० २८	२ ०९	३ ३४	४ ५६
	३०	१८	६ २९	८ २३	१० ३८	१३ ००	१५ २०	१७ ३७	१९ ५९	२२ १९	० २४	२ ०५	३ ३०	४ ५२
मई	१	१९	६ २५	८ १९	१० ३४	१२ ५६	१५ १६	१७ ३४	१९ ५५	२२ १५	० २०	२ ०१	३ २६	४ ४८
	२	२०	६ २१	८ १६	१० ३०	१२ ५२	१५ १२	१७ ३०	१९ ५१	२२ ११	० १६	१ ५७	३ २२	४ ४४
	३	२१	६ १७	८ १२	१० २६	१२ ४८	१५ ०८	१७ २६	१९ ४७	२२ ०७	० १२	१ ५३	३ १८	४ ४०
	४	२२	६ १३	८ ०८	१० २२	१२ ४४	१५ ०४	१७ २२	१९ ४३	२२ ०३	० ०८	१ ४९	३ १४	४ ३६
	५	२३	६ ०९	८ ०४	१० १८	१२ ४०	१५ ००	१७ १८	१९ ३९	२१ ५९	० ०४	१ ४५	३ १०	४ ३२
	६	२४	६ ०५	८ ००	१० १४	१२ ३६	१४ ५६	१७ १४	१९ ३५	२१ ५६	० ००	१ ४१	३ ०६	४ २९
	७	२५	६ ०१	७ ५६	१० १०	१२ ३२	१४ ५२	१७ १०	१९ ३२	२१ ५२	२३ ५६	१ ३७	३ ०२	४ २५
	८	२६	५ ५७	७ ५२	१० ०६	१२ २८	१४ ४८	१७ ०६	१९ २८	२१ ४८	२३ ५२	१ ३३	२ ५८	४ २१
	९	२७	५ ५३	७ ४८	१० ०२	१२ २४	१४ ४४	१७ ०२	१९ २४	२१ ४४	२३ ४८	१ २९	२ ५४	४ १७
	१०	२८	५ ४९	७ ४४	९ ५८	१२ २०	१४ ४०	१६ ५८	१९ २०	२१ ४०	२३ ४४	१ २५	२ ५०	४ १३
	११	२९	५ ४६	७ ४०	९ ५४	१२ १७	१४ ३६	१६ ५४	१९ १६	२१ ३६	२३ ४०	१ २१	२ ४६	४ ०९
	१२	३०	५ ४२	७ ३६	९ ५०	१२ १३	१४ ३३	१६ ५०	१९ १२	२१ ३२	२३ ३७	१ १८	२ ४३	४ ०५
	१३	३१	५ ३८	७ ३२	९ ४६	१२ ०९	१४ २९	१६ ४६	१९ ०८	२१ २८	२३ ३३	१ १४	२ ३९	४ ०१
	१४	अमा१	५ ३४											

ज्येष्ठ

	अंग्रेज़ी तारीख	ज्येष्ठ तिथि	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
मई	१४	१	७ २८	९ ४३	१२ ०५	१४ २५	१६ ४२	१९ ०४	२१ २४	२३ २९	१ १०	२ ३५	३ ५७	५ ३०
	१५	२	७ २४	९ ३९	१२ ०१	१४ २१	१६ ३९	१९ ००	२१ २०	२३ २५	१ ०६	२ ३१	३ ५३	५ २६
	१६	३	७ २०	९ ३५	११ ५७	१४ १७	१६ ३५	१८ ५६	२१ १६	२३ २१	१ ०२	२ २७	३ ४९	५ २२
	१७	४	७ १७	९ ३१	११ ५३	१४ १३	१६ ३१	१८ ५२	२१ १२	२३ १७	० ५८	२ २३	३ ४५	५ १८
	१८	५	७ १३	९ २७	११ ४९	१४ ०९	१६ २७	१८ ४८	२१ ०८	२३ १३	० ५४	२ १९	३ ४१	५ १४
	१९	६	७ ०९	९ २३	११ ४५	१४ ०५	१६ २३	१८ ४४	२१ ०४	२३ ०९	० ५०	२ १५	३ ३७	५ १०
	२०	७	७ ०५	९ १९	११ ४१	१४ ०१	१६ १९	१८ ४०	२१ ०१	२३ ०५	० ४६	२ ११	३ ३४	५ ०६
	२१	८	७ ०१	९ १५	११ ३७	१३ ५७	१६ १५	१८ ३६	२० ५७	२३ ०१	० ४२	२ ०७	३ ३०	५ ०२
	२२	९	६ ५७	९ ११	११ ३३	१३ ५३	१६ ११	१८ ३३	२० ५३	२२ ५७	० ३८	२ ०३	३ २६	४ ५८
	२३	१०	६ ५३	९ ०७	११ २९	१३ ४९	१६ ०७	१८ २९	२० ४९	२२ ५३	० ३४	१ ५९	३ २२	४ ५४
	२४	११	६ ४९	९ ०३	११ २५	१३ ४५	१६ ०३	१८ २५	२० ४५	२२ ४९	० ३०	१ ५५	३ १८	४ ५०
	२५	१२	६ ४५	८ ५९	११ २२	१३ ४१	१५ ५९	१८ २१	२० ४१	२२ ४५	० २६	१ ५१	३ १४	४ ४७
	२६	१३	६ ४१	८ ५५	११ १८	१३ ३८	१५ ५५	१८ १७	२० ३७	२२ ४२	० २२	१ ४८	३ १०	४ ४३
	२७	१४	६ ३७	८ ५१	११ १४	१३ ३४	१५ ५१	१८ १३	२० ३३	२२ ३८	० १९	१ ४४	३ ०६	४ ३९
	२८	१५	६ ३३	८ ४७	११ १०	१३ ३०	१५ ४७	१८ ०९	२० २९	२२ ३४	० १५	१ ४०	३ ०२	४ ३५
	२९	१६	६ २९	८ ४४	११ ०६	१३ २६	१५ ४३	१८ ०५	२० २५	२२ ३०	० ११	१ ३६	२ ५८	४ ३१
	३०	१७	६ २५	८ ४०	११ ०२	१३ २२	१५ ४०	१८ ०१	२० २१	२२ २६	० ०७	१ ३२	२ ५४	४ २७
	३१	१८	६ २२	८ ३६	१० ५८	१३ १८	१५ ३६	१७ ५७	२० १७	२२ २२	० ०३	१ २८	२ ५०	४ २३
जून	१	१९	६ १८	८ ३२	१० ५४	१३ १४	१५ ३२	१७ ५३	२० १३	२२ १८	२३ ५९	१ २४	२ ४६	४ १९
	२	२०	६ १४	८ २८	१० ५०	१३ १०	१५ २८	१७ ४९	२० ०९	२२ १४	२३ ५५	१ २०	२ ४२	४ १५
	३	२१	६ १०	८ २४	१० ४६	१३ ०६	१५ २४	१७ ४५	२० ०५	२२ १०	२३ ५१	१ १६	२ ३८	४ ११
	४	२२	६ ०६	८ २०	१० ४२	१३ ०२	१५ २०	१७ ४१	२० ०२	२२ ०६	२३ ४७	१ १२	२ ३४	४ ०७
	५	२३	६ ०२	८ १६	१० ३८	१२ ५८	१५ १६	१७ ३७	१९ ५८	२२ ०२	२३ ४३	१ ०८	२ ३१	४ ०३
	६	२४	५ ५८	८ १२	१० ३४	१२ ५४	१५ १२	१७ ३४	१९ ५४	२१ ५८	२३ ३९	१ ०४	२ २७	३ ५९
	७	२५	५ ५४	८ ०८	१० ३०	१२ ५०	१५ ०८	१७ ३०	१९ ५०	२१ ५४	२३ ३५	१ ००	२ २३	३ ५५
	८	२६	५ ५०	८ ०४	१० २६	१२ ४६	१५ ०४	१७ २६	१९ ४६	२१ ५०	२३ ३१	० ५६	२ १९	३ ५१
	९	२७	५ ४६	८ ००	१० २३	१२ ४३	१५ ००	१७ २२	१९ ४२	२१ ४६	२३ २७	० ५२	२ १५	३ ४८
	१०	२८	५ ४२	७ ५६	१० १९	१२ ३९	१४ ५६	१७ १८	१९ ३८	२१ ४३	२३ २३	० ४९	२ ११	३ ४४
	११	२९	५ ३८	७ ५२	१० १५	१२ ३५	१४ ५२	१७ १४	१९ ३४	२१ ३९	२३ २०	० ४५	२ ०७	३ ४०
	१२	३०	५ ३४	७ ४९	१० ११	१२ ३१	१४ ४८	१७ १०	१९ ३०	२१ ३५	२३ १६	० ४१	२ ०३	३ ३६
	१३	३१	५ ३०	७ ४५	१० ०७	१२ २७	१४ ४५	१७ ०६	१९ २६	२१ ३१	२३ १२	० ३७	१ ५९	३ ३२
	१४	अमा१	५ २६											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

आषाढ़

मास	अंग्रेज़ी तारीख	आषाढ़ प्रविष्टे	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.
जून	१४	१	७ ४१	१० ०३	१२ २३	१४ ४१	१७ ०२	१९ २२	२१ २७	२३ ०८	० ३३	१ ५५	३ २८	५ २३
जून	१५	२	७ ३७	९ ५९	१२ १९	१४ ३७	१६ ५८	१९ १८	२१ २३	२३ ०४	० २९	१ ५१	३ २४	५ १९
जून	१६	३	७ ३३	९ ५५	१२ १५	१४ ३३	१६ ५४	१९ १४	२१ १९	२३ ००	० २५	१ ४७	३ २०	५ १५
जून	१७	४	७ २९	९ ५१	१२ ११	१४ २९	१६ ५०	१९ १०	२१ १५	२२ ५६	० २१	१ ४३	३ १६	५ ११
जून	१८	५	७ २५	९ ४७	१२ ०७	१४ २५	१६ ४६	१९ ०६	२१ ११	२२ ५२	० १७	१ ३९	३ १२	५ ०७
जून	१९	६	७ २१	९ ४३	१२ ०३	१४ २१	१६ ४२	१९ ०३	२१ ०७	२२ ४८	० १३	१ ३६	३ ०८	५ ०३
जून	२०	७	७ १७	९ ३९	११ ५९	१४ १७	१६ ३९	१८ ५९	२१ ०३	२२ ४४	० ०९	१ ३२	३ ०४	४ ५९
जून	२१	८	७ १३	९ ३५	११ ५५	१४ १३	१६ ३५	१८ ५५	२० ५९	२२ ४०	० ०५	१ २८	३ ००	४ ५५
जून	२२	९	७ ०९	९ ३१	११ ५१	१४ ०९	१६ ३१	१८ ५१	२० ५५	२२ ३६	० ०१	१ २४	२ ५६	४ ५१
जून	२३	१०	७ ०५	९ २७	११ ४७	१४ ०५	१६ २७	१८ ४७	२० ५१	२२ ३२	२३ ५७	१ २०	२ ५३	४ ४७
जून	२४	११	७ ०१	९ २४	११ ४४	१४ ०१	१६ २३	१८ ४३	२० ४८	२२ २८	२३ ५४	१ १६	२ ४९	४ ४३
जून	२५	१२	६ ५७	९ २०	११ ४०	१३ ५७	१६ १९	१८ ३९	२० ४४	२२ २५	२३ ५०	१ १२	२ ४५	४ ३९
जून	२६	१३	६ ५३	९ १६	११ ३६	१३ ५३	१६ १५	१८ ३५	२० ४०	२२ २१	२३ ४६	१ ०८	२ ४१	४ ३५
जून	२७	१४	६ ५०	९ १२	११ ३२	१३ ४९	१६ ११	१८ ३१	२० ३६	२२ १७	२३ ४२	१ ०४	२ ३७	४ ३१
जून	२८	१५	६ ४६	९ ०८	११ २८	१३ ४६	१६ ०७	१८ २७	२० ३२	२२ १३	२३ ३८	१ ००	२ ३३	४ २७
जून	२९	१६	६ ४२	९ ०४	११ २४	१३ ४२	१६ ०३	१८ २३	२० २८	२२ ०९	२३ ३४	० ५६	२ २९	४ २४
जून	३०	१७	६ ३८	९ ००	११ २०	१३ ३८	१५ ५९	१८ १९	२० २४	२२ ०५	२३ ३०	० ५२	२ २५	४ २०
जुलाई	१	१८	६ ३४	८ ५६	११ १६	१३ ३४	१५ ५५	१८ १५	२० २०	२२ ०१	२३ २६	० ४८	२ २१	४ १६
जुलाई	२	१९	६ ३०	८ ५२	११ १२	१३ ३०	१५ ५१	१८ ११	२० १६	२१ ५७	२३ २२	० ४४	२ १७	४ १२
जुलाई	३	२०	६ २६	८ ४८	११ ०८	१३ २६	१५ ४७	१८ ०८	२० १२	२१ ५३	२३ १८	० ४१	२ १३	४ ०८
जुलाई	४	२१	६ २२	८ ४४	११ ०४	१३ २२	१५ ४३	१८ ०४	२० ०८	२१ ४९	२३ १४	० ३७	२ ०९	४ ०४
जुलाई	५	२२	६ १८	८ ४०	११ ००	१३ १८	१५ ४०	१८ ००	२० ०४	२१ ४५	२३ १०	० ३३	२ ०५	४ ००
जुलाई	६	२३	६ १४	८ ३६	१० ५६	१३ १४	१५ ३६	१७ ५६	२० ००	२१ ४१	२३ ०६	० २९	२ ०१	३ ५६
जुलाई	७	२४	६ १०	८ ३२	१० ५२	१३ १०	१५ ३२	१७ ५२	१९ ५६	२१ ३७	२३ ०२	० २५	१ ५७	३ ५२
जुलाई	८	२५	६ ०६	८ २९	१० ४९	१३ ०६	१५ २८	१७ ४८	१९ ५२	२१ ३३	२२ ५८	० २१	१ ५४	३ ४८
जुलाई	९	२६	६ ०२	८ २५	१० ४५	१३ ०२	१५ २४	१७ ४४	१९ ४९	२१ २९	२२ ५५	० १७	१ ५०	३ ४४
जुलाई	१०	२७	५ ५८	८ २१	१० ४१	१२ ५८	१५ २०	१७ ४०	१९ ४५	२१ २६	२२ ५१	० १३	१ ४६	३ ४०
जुलाई	११	२८	५ ५५	८ १७	१० ३७	१२ ५४	१५ १६	१७ ३६	१९ ४१	२१ २२	२२ ४७	० ०९	१ ४२	३ ३६
जुलाई	१२	२९	५ ५१	८ १३	१० ३३	१२ ५०	१५ १२	१७ ३२	१९ ३७	२१ १८	२२ ४३	० ०५	१ ३८	३ ३२
जुलाई	१३	३०	५ ४७	८ ०९	१० २९	१२ ४७	१५ ०८	१७ २८	१९ ३३	२१ १४	२२ ३९	० ०१	१ ३४	३ २९
जुलाई	१४	३१	५ ४३	८ ०५	१० २५	१२ ४३	१५ ०४	१७ २४	१९ २९	२१ १०	२२ ३५	२३ ५७	१ ३०	३ २५
जुलाई	१५	३२	५ ३९	८ ०१	१० २१	१२ ३९	१५ ००	१७ २०	१९ २५	२१ ०६	२२ ३१	२३ ५३	१ २६	३ २१
जुलाई	१६	आ.१	५ ३५											

श्रावण

मास	अंग्रेज़ी तारीख	श्रावण प्रविष्टे	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.
जुलाई	१६	१	७ ५७	१० १७	१२ ३५	१४ ५६	१७ १६	१९ २१	२१ ०२	२२ २७	२३ ४९	१ २२	३ १७	५ ३१
जुलाई	१७	२	७ ५३	१० १३	१२ ३१	१४ ५२	१७ १२	१९ १७	२० ५८	२२ २३	२३ ४५	१ १८	३ १३	५ २७
जुलाई	१८	३	७ ४९	१० ०९	१२ २७	१४ ४८	१७ ०९	१९ १३	२० ५४	२२ १९	२३ ४१	१ १४	३ ०९	५ २३
जुलाई	१९	४	७ ४५	१० ०५	१२ २३	१४ ४५	१७ ०५	१९ ०९	२० ५०	२२ १५	२३ ३८	१ १०	३ ०५	५ १९
जुलाई	२०	५	७ ४१	१० ०१	१२ १९	१४ ४१	१७ ०१	१९ ०५	२० ४६	२२ ११	२३ ३४	१ ०६	३ ०१	५ १५
जुलाई	२१	६	७ ३७	९ ५७	१२ १५	१४ ३७	१६ ५७	१९ ०१	२० ४२	२२ ०७	२३ ३०	१ ०२	२ ५७	५ ११
जुलाई	२२	७	७ ३३	९ ५३	१२ ११	१४ ३३	१६ ५३	१८ ५७	२० ३८	२२ ०३	२३ २६	० ५८	२ ५३	५ ०७
जुलाई	२३	८	७ ३०	९ ५०	१२ ०७	१४ २९	१६ ४९	१८ ५३	२० ३४	२१ ५९	२३ २२	० ५५	२ ४९	५ ०३
जुलाई	२४	९	७ २६	९ ४६	१२ ०३	१४ २५	१६ ४५	१८ ५०	२० ३०	२१ ५६	२३ १८	० ५१	२ ४५	४ ५९
जुलाई	२५	१०	७ २२	९ ४२	११ ५९	१४ २१	१६ ४१	१८ ४६	२० २७	२१ ५२	२३ १४	० ४७	२ ४१	४ ५६
जुलाई	२६	११	७ १८	९ ३८	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ४२	२० २३	२१ ४८	२३ १०	० ४३	२ ३७	४ ५२
जुलाई	२७	१२	७ १४	९ ३४	११ ५२	१४ १३	१६ ३३	१८ ३८	२० १९	२१ ४४	२३ ०६	० ३९	२ ३३	४ ४८
जुलाई	२८	१३	७ १०	९ ३०	११ ४८	१४ ०९	१६ २९	१८ ३४	२० १५	२१ ४०	२३ ०२	० ३५	२ ३०	४ ४४
जुलाई	२९	१४	७ ०६	९ २६	११ ४४	१४ ०५	१६ २५	१८ ३०	२० ११	२१ ३६	२२ ५८	० ३१	२ २६	४ ४०
जुलाई	३०	१५	७ ०२	९ २२	११ ४०	१४ ०१	१६ २१	१८ २६	२० ०७	२१ ३२	२२ ५४	० २७	२ २२	४ ३६
जुलाई	३१	१६	६ ५८	९ १८	११ ३६	१३ ५७	१६ १७	१८ २२	२० ०३	२१ २८	२२ ५०	० २३	२ १८	४ ३२
अगस्त	१	१७	६ ५४	९ १४	११ ३२	१३ ५३	१६ १३	१८ १८	१९ ५९	२१ २४	२२ ४७	० १९	२ १४	४ २८
अगस्त	२	१८	६ ५०	९ १०	११ २८	१३ ४९	१६ १०	१८ १४	१९ ५५	२१ २०	२२ ४३	० १५	२ १०	४ २४
अगस्त	३	१९	६ ४६	९ ०६	११ २४	१३ ४६	१६ ०६	१८ १०	१९ ५१	२१ १६	२२ ३९	० ११	२ ०६	४ २०
अगस्त	४	२०	६ ४२	९ ०२	११ २०	१३ ४२	१६ ०२	१८ ०६	१९ ४७	२१ १२	२२ ३५	० ०७	२ ०२	४ १६
अगस्त	५	२१	६ ३८	८ ५८	११ १६	१३ ३८	१५ ५८	१८ ०२	१९ ४३	२१ ०८	२२ ३१	० ०३	१ ५८	४ १२
अगस्त	६	२२	६ ३४	८ ५४	११ १२	१३ ३४	१५ ५४	१७ ५८	१९ ३९	२१ ०४	२२ २७	० ००	१ ५४	४ ०८
अगस्त	७	२३	६ ३१	८ ५१	११ ०८	१३ ३०	१५ ५०	१७ ५५	१९ ३५	२१ ०१	२२ २३	२३ ५६	१ ५०	४ ०४
अगस्त	८	२४	६ २७	८ ४७	११ ०४	१३ २६	१५ ४६	१७ ५१	१९ ३२	२० ५७	२२ १९	२३ ५२	१ ४६	४ ००
अगस्त	९	२५	६ २३	८ ४३	११ ००	१३ २२	१५ ४२	१७ ४७	१९ २८	२० ५३	२२ १५	२३ ४८	१ ४२	३ ५७
अगस्त	१०	२६	६ १९	८ ३९	१० ५६	१३ १८	१५ ३८	१७ ४३	१९ २४	२० ४९	२२ ११	२३ ४४	१ ३८	३ ५३
अगस्त	११	२७	६ १५	८ ३५	१० ५३	१३ १४	१५ ३४	१७ ३९	१९ २०	२० ४५	२२ ०७	२३ ४०	१ ३४	३ ४९
अगस्त	१२	२८	६ ११	८ ३१	१० ४९	१३ १०	१५ ३०	१७ ३५	१९ १६	२० ४१	२२ ०३	२३ ३६	१ ३१	३ ४५
अगस्त	१३	२९	६ ०७	८ २७	१० ४५	१३ ०६	१५ २६	१७ ३१	१९ १२	२० ३७	२१ ५९	२३ ३२	१ २७	३ ४१
अगस्त	१४	३०	६ ०३	८ २३	१० ४१	१३ ०२	१५ २२	१७ २७	१९ ०८	२० ३३	२१ ५५	२३ २८	१ २३	३ ३७
अगस्त	१५	३१	५ ५९	८ १९	१० ३७	१२ ५८	१५ १८	१७ २३	१९ ०४	२० २९	२१ ५१	२३ २४	१ १९	३ ३३
अगस्त	१६	भा.१	५ ५५											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

भाद्रपद

अंग्रेज़ी मास	अंग्रेज़ी तारीख	भाद्रपद प्रविष्टे	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.
अगस्त	१६	१	८ १५	१० ३३	१२ ५४	१५ १५	१७ १९	१९ ००	२० २५	२१ ४८	२३ २०	१ १५	३ २९	५ ५१
	१७	२	८ ११	१० २९	१२ ५०	१५ ११	१७ १५	१८ ५६	२० २१	२१ ४४	२३ १६	१ ११	३ २५	५ ४७
	१८	३	८ ०७	१० २५	१२ ४७	१५ ०७	१७ ११	१८ ५२	२० १७	२१ ४०	२३ १२	१ ०७	३ २१	५ ४३
	१९	४	८ ०३	१० २१	१२ ४३	१५ ०३	१७ ०७	१८ ४८	२० १३	२१ ३६	२३ ०८	१ ०३	३ १७	५ ३९
	२०	५	७ ५९	१० १७	१२ ३९	१४ ५९	१७ ०३	१८ ४४	२० ०९	२१ ३२	२३ ०४	० ५९	३ १३	५ ३६
	२१	६	७ ५६	१० १३	१२ ३५	१४ ५५	१६ ५९	१८ ४०	२० ०५	२१ २८	२३ ०१	० ५५	३ ०९	५ ३२
	२२	७	७ ५२	१० ०९	१२ ३१	१४ ५१	१६ ५६	१८ ३६	२० ०२	२१ २४	२२ ५७	० ५१	३ ०५	५ २८
	२३	८	७ ४८	१० ०५	१२ २७	१४ ४७	१६ ५२	१८ ३३	१९ ५८	२१ २०	२२ ५३	० ४७	३ ०२	५ २४
	२४	९	७ ४४	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४८	१८ २९	१९ ५४	२१ १६	२२ ४९	० ४३	२ ५८	५ २०
	२५	१०	७ ४०	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४४	१८ २५	१९ ५०	२१ १२	२२ ४५	० ३९	२ ५४	५ १६
	२६	११	७ ३६	९ ५४	१२ १५	१४ ३५	१६ ४०	१८ २१	१९ ४६	२१ ०८	२२ ४१	० ३६	२ ५०	५ १२
	२७	१२	७ ३२	९ ५०	१२ ११	१४ ३१	१६ ३६	१८ १७	१९ ४२	२१ ०४	२२ ३७	० ३२	२ ४६	५ ०८
	२८	१३	७ २८	९ ४६	१२ ०७	१४ २७	१६ ३२	१८ १३	१९ ३८	२१ ००	२२ ३३	० २८	२ ४२	५ ०४
	२९	१४	७ २४	९ ४२	१२ ०३	१४ २३	१६ २८	१८ ०९	१९ ३४	२० ५६	२२ २९	० २४	२ ३८	५ ००
	३०	१५	७ २०	९ ३८	११ ५९	१४ १९	१६ २४	१८ ०५	१९ ३०	२० ५२	२२ २५	० २०	२ ३४	४ ५६
	३१	१६	७ १६	९ ३४	११ ५५	१४ १६	१६ २०	१८ ०१	१९ २६	२० ४९	२२ २१	० १६	२ ३०	४ ५२
सितम्बर	१	१७	७ १२	९ ३०	११ ५२	१४ १२	१६ १६	१७ ५७	१९ २२	२० ४५	२२ १७	० १२	२ २६	४ ४८
	२	१८	७ ०८	९ २६	११ ४८	१४ ०८	१६ १२	१७ ५३	१९ १८	२० ४१	२२ १३	० ०८	२ २२	४ ४४
	३	१९	७ ०४	९ २२	११ ४४	१४ ०४	१६ ०८	१७ ४९	१९ १४	२० ३७	२२ ०९	० ०४	२ १८	४ ४०
	४	२०	७ ००	९ १८	११ ४०	१४ ००	१६ ०४	१७ ४५	१९ १०	२० ३३	२२ ०६	० ००	२ १४	४ ३७
	५	२१	६ ५७	९ १४	११ ३६	१३ ५६	१६ ००	१७ ४१	१९ ०६	२० २९	२२ ०२	२३ ५६	२ १०	४ ३३
	६	२२	६ ५३	९ १०	११ ३२	१३ ५२	१५ ५७	१७ ३८	१९ ०३	२० २५	२१ ५८	२३ ५२	२ ०६	४ २९
	७	२३	६ ४९	९ ०६	११ २८	१३ ४८	१५ ५३	१७ ३४	१८ ५९	२० २१	२१ ५४	२३ ४८	२ ०३	४ २५
	८	२४	६ ४५	९ ०२	११ २४	१३ ४४	१५ ४९	१७ ३०	१८ ५५	२० १७	२१ ५०	२३ ४४	१ ५९	४ २१
	९	२५	६ ४१	८ ५९	११ २०	१३ ४०	१५ ४५	१७ २६	१८ ५१	२० १३	२१ ४६	२३ ४०	१ ५५	४ १७
	१०	२६	६ ३७	८ ५५	११ १६	१३ ३६	१५ ४१	१७ २२	१८ ४७	२० ०९	२१ ४२	२३ ३७	१ ५१	४ १३
	११	२७	६ ३३	८ ५१	११ १२	१३ ३२	१५ ३७	१७ १८	१८ ४३	२० ०५	२१ ३८	२३ ३३	१ ४७	४ ०९
	१२	२८	६ २९	८ ४७	११ ०८	१३ २८	१५ ३३	१७ १४	१८ ३९	२० ०१	२१ ३४	२३ २९	१ ४३	४ ०५
	१३	२९	६ २५	८ ४३	११ ०४	१३ २४	१५ २९	१७ १०	१८ ३५	१९ ५७	२१ ३०	२३ २५	१ ३९	४ ०१
	१४	३०	६ २१	८ ३९	११ ००	१३ २१	१५ २५	१७ ०६	१८ ३१	१९ ५४	२१ २६	२३ २१	१ ३५	३ ५७
	१५	३१	६ १७	८ ३५	१० ५६	१३ १७	१५ २१	१७ ०२	१८ २७	१९ ५०	२१ २२	२३ १७	१ ३१:	३ ५३
	१६	आ.१	६ १३											

आश्विन

अंग्रेज़ी मास	अंग्रेज़ी तारीख	आश्विन प्रविष्टे	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.
सितम्बर	१६	१	८ ३१	१० ५३	१३ १३	१५ १७	१६ ५८	१८ २३	१९ ४६	२१ १८	२३ १३	१ २७	३ ४९	६ ०९
	१७	२	८ २७	१० ४९	१३ ०९	१५ १३	१६ ५४	१८ १९	१९ ४२	२१ १४	२३ ०९	१ २३	३ ४५	६ ०५
	१८	३	८ २३	१० ४५	१३ ०५	१५ ०९	१६ ५०	१८ १५	१९ ३८	२१ १०	२३ ०५	१ १९	३ ४२	६ ०१
	१९	४	८ १९	१० ४१	१३ ०१	१५ ०५	१६ ४६	१८ ११	१९ ३४	२१ ०७	२३ ०१	१ १५	३ ३८	५ ५८
	२०	५	८ १५	१० ३७	१२ ५७	१५ ०२	१६ ४२	१८ ०८	१९ ३०	२१ ०३	२२ ५७	१ ११	३ ३४	५ ५४
	२१	६	८ ११	१० ३३	१२ ५३	१४ ५८	१६ ३९	१८ ०४	१९ २६	२० ५९	२२ ५३	१ ०७	३ ३०	५ ५०
	२२	७	८ ०७	१० २९	१२ ४९	१४ ५४	१६ ३५	१८ ००	१९ २२	२० ५५	२२ ४९	१ ०४	३ २६	५ ४६
	२३	८	८ ०३	१० २५	१२ ४५	१४ ५०	१६ ३१	१७ ५६	१९ १८	२० ५१	२२ ४५	१ ००	३ २२	५ ४२
	२४	९	८ ००	१० २१	१२ ४१	१४ ४६	१६ २७	१७ ५२	१९ १४	२० ४७	२२ ४१	० ५६	३ १८	५ ३८
	२५	१०	७ ५६	१० १७	१२ ३७	१४ ४२	१६ २३	१७ ४८	१९ १०	२० ४३	२२ ३८	० ५२	३ १४	५ ३४
	२६	११	७ ५२	१० १३	१२ ३३	१४ ३८	१६ १९	१७ ४४	१९ ०६	२० ३९	२२ ३४	० ४८	३ १०	५ ३०
	२७	१२	७ ४८	१० ०९	१२ २९	१४ ३४	१६ १५	१७ ४०	१९ ०२	२० ३५	२२ ३०	० ४४	३ ०६	५ २६
	२८	१३	७ ४४	१० ०५	१२ २५	१४ ३०	१६ ११	१७ ३६	१८ ५८	२० ३१	२२ २६	० ४०	३ ०२	५ २२
	२९	१४	७ ४०	१० ०१	१२ २२	१४ २६	१६ ०७	१७ ३२	१८ ५५	२० २७	२२ २२	० ३६	२ ५८	५ १८
	३०	१५	७ ३६	९ ५७	१२ १८	१४ २२	१६ ०३	१७ २८	१८ ५१	२० २३	२२ १८	० ३२	२ ५४	५ १४
अक्टूबर	१	१६	७ ३२	९ ५४	१२ १४	१४ १८	१५ ५९	१७ २४	१८ ४७	२० १९	२२ १४	० २८	२ ५०	५ १०
	२	१७	७ २८	९ ५०	१२ १०	१४ १४	१५ ५५	१७ २०	१८ ४३	२० १५	२२ १०	० २४	२ ४६	५ ०६
	३	१८	७ २४	९ ४६	१२ ०६	१४ १०	१५ ५१	१७ १६	१८ ३९	२० ११	२२ ०६	० २०	२ ४३	५ ०३
	४	१९	७ २०	९ ४२	१२ ०२	१४ ०६	१५ ४७	१७ १२	१८ ३५	२० ०८	२२ ०२	० १६	२ ३९	४ ५९
	५	२०	७ १६	९ ३८	११ ५८	१४ ०३	१५ ४३	१७ ०९	१८ ३१	२० ०४	२१ ५८	० १२	२ ३५	४ ५५
	६	२१	७ १२	९ ३४	११ ५४	१३ ५९	१५ ४०	१७ ०५	१८ २७	२० ००	२१ ५४	० ०८	२ ३१	४ ५१
	७	२२	७ ०८	९ ३०	११ ५०	१३ ५५	१५ ३६	१७ ०१	१८ २३	१९ ५६	२१ ५०	० ०५	२ २७	४ ४७
	८	२३	७ ०५	९ २६	११ ४६	१३ ५१	१५ ३२	१६ ५७	१८ १९	१९ ५२	२१ ४६	० ०१	२ २३	४ ४३
	९	२४	७ ०१	९ २२	११ ४२	१३ ४७	१५ २८	१६ ५३	१८ १५	१९ ४८	२१ ४३	२३ ५७	२ १९	४ ३९
	१०	२५	६ ५७	९ १८	११ ३८	१३ ४३	१५ २४	१६ ४९	१८ ११	१९ ४४	२१ ३९	२३ ५३	२ १५	४ ३५
	११	२६	६ ५३	९ १४	११ ३४	१३ ३९	१५ २०	१६ ४५	१८ ०७	१९ ४०	२१ ३५	२३ ४९	२ ११	४ ३१
	१२	२७	६ ४९	९ १०	११ ३०	१३ ३५	१५ १६	१६ ४१	१८ ०३	१९ ३६	२१ ३१	२३ ४५	२ ०७	४ २७
	१३	२८	६ ४५	९ ०६	११ २६	१३ ३१	१५ १२	१६ ३७	१७ ५९	१९ ३२	२१ २७	२३ ४१	२ ०३	४ २३
	१४	२९	६ ४१	९ ०२	११ २३	१३ २७	१५ ०८	१६ ३३	१७ ५६	१९ २८	२१ २३	२३ ३७	१ ५९	४ १९
	१५	३०	६ ३७	८ ५९	११ १९	१३ २३	१५ ०४	१६ २९	१७ ५२	१९ २४	२१ १९	२३ ३३	१ ५५	४ १५
	१६	का.१	६ ३३											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

अंग्रेज़ी तारीख		कार्तिक प्रविष्टे	कार्तिक											
			तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अक्टूबर	१६	१	८ ५५	११ १५	१३ १९	१५ ००	१६ २५	१७ ४८	१९ २०	२१ १५	२३ २९	१ ५१	४ ११	६ २९
	१७	२	८ ५१	११ ११	१३ १५	१४ ५६	१६ २१	१७ ४४	१९ १६	२१ ११	२३ २५	१ ४७	४ ०७	६ २५
	१८	३	८ ४७	११ ०७	१३ ११	१४ ५२	१६ १७	१७ ४०	१९ १३	२१ ०७	२३ २१	१ ४४	४ ०४	६ २१
	१९	४	८ ४३	११ ०३	१३ ०८	१४ ४८	१६ १४	१७ ३६	१९ ०९	२१ ०३	२३ १७	१ ४०	४ ००	६ १७
	२०	५	८ ३९	१० ५९	१३ ०४	१४ ४५	१६ १०	१७ ३२	१९ ०५	२० ५९	२३ १३	१ ३६	३ ५६	६ १३
	२१	६	८ ३५	१० ५५	१३ ००	१४ ४१	१६ ०६	१७ २८	१९ ०१	२० ५५	२३ ०९	१ ३२	३ ५२	६ ०९
	२२	७	८ ३१	१० ५१	१२ ५६	१४ ३७	१६ ०२	१७ २४	१८ ५७	२० ५१	२३ ०६	१ २८	३ ४८	६ ०६
	२३	८	८ २७	१० ४७	१२ ५२	१४ ३३	१५ ५८	१७ २०	१८ ५३	२० ४७	२३ ०२	१ २४	३ ४४	६ ०२
	२४	९	८ २३	१० ४३	१२ ४८	१४ २९	१५ ५४	१७ १६	१८ ४९	२० ४४	२२ ५८	१ २०	३ ४०	५ ५८
	२५	१०	८ १९	१० ३९	१२ ४४	१४ २५	१५ ५०	१७ १२	१८ ४५	२० ४०	२२ ५४	१ १६	३ ३६	५ ५४
	२६	११	८ १५	१० ३५	१२ ४०	१४ २१	१५ ४६	१७ ०८	१८ ४१	२० ३६	२२ ५०	१ १२	३ ३२	५ ५०
	२७	१२	८ ११	१० ३१	१२ ३६	१४ १७	१५ ४२	१७ ०४	१८ ३७	२० ३२	२२ ४६	१ ०८	३ २८	५ ४६
	२८	१३	८ ०७	१० २८	१२ ३२	१४ १३	१५ ३८	१७ ०१	१८ ३३	२० २८	२२ ४२	१ ०४	३ २४	५ ४२
	२९	१४	८ ०३	१०-२४	१२ २८	१४ ०९	१५ ३४	१६ ५७	१८ २९	२० २४	२२ ३८	१ ००	३ २०	५ ३८
	३०	१५	८ ००	१० २०	१२ २४	१४ ०५	१५ ३०	१६ ५३	१८ २५	२० २०	२२ ३४	० ५६	३ १६	५ ३४
	३१	१६	७ ५६	१० १६	१२ २०	१४ ०१	१५ २६	१६ ४९	१८ २१	२० १६	२२ ३०	० ५२	३ १२	५ ३०
नवम्बर	१	१७	७ ५२	१० १२	१२ १६	१३ ५७	१५ २२	१६ ४५	१८ १७	२० १२	२२ २६	० ४८	३ ०९	५ २६
	२	१८	७ ४८	१० ०८	१२ १२	१३ ५३	१५ १८	१६ ४१	१८ १३	२० ०८	२२ २२	० ४५	३ ०५	५ २२
	३	१९	७ ४४	१० ०४	१२ ०९	१३ ४९	१५ १५	१६ ३७	१८ ०९	२० ०४	२२ १८	० ४१	३ ०१	५ १८
	४	२०	७ ४०	१० ००	१२ ०५	१३ ४६	१५ ११	१६ ३३	१८ ०६	२० ००	२२ १५	० ३७	२ ५७	५ १४
	५	२१	७ ३६	९ ५६	१२ ०१	१३ ४२	१५ ०७	१६ २९	१८ ०२	१९ ५६	२२ ११	० ३३	२ ५३	५ १०
	६	२२	७ ३२	९ ५२	११ ५७	१३ ३८	१५ ०३	१६ २५	१७ ५८	१९ ५२	२२ ०७	० २९	२ ४९	५ ०७
	७	२३	७ २८	९ ४८	११ ५३	१३ ३४	१४ ५९	१६ २१	१७ ५४	१९ ४९	२२ ०३	० २५	२ ४५	५ ०३
	८	२४	७ २४	९ ४४	११ ४९	१३ ३०	१४ ५५	१६ १७	१७ ५०	१९ ४५	२१ ५९	० २१	२ ४१	४ ५९
	९	२५	७ २०	९ ४०	११ ४५	१३ २६	१४ ५१	१६ १३	१७ ४६	१९ ४१	२१ ५५	० १७	२ ३७	४ ५५
	१०	२६	७ १६	९ ३६	११ ४१	१३ २२	१४ ४७	१६ ०९	१७ ४२	१९ ३७	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ५१
	११	२७	७ १२	९ ३२	११ ३७	१३ १८	१४ ४३	१६ ०५	१७ ३८	१९ ३३	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ४७
	१२	२८	७ ०८	९ २९	११ ३३	१३ १४	१४ ३९	१६ ०२	१७ ३४	१९ २९	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ ४३
	१३	२९	७ ०५	९ २५	११ २९	१३ १०	१४ ३५	१५ ५८	१७ ३०	१९ २५	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ ३९
	१४	३०	७ ०१	९ २१	११ २५	१३ ०६	१४ ३१	१५ ५४	१७ २६	१९ २१	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ ३५
	१५	मा. १	६ ५७											

अंग्रेज़ी तारीख		मार्गशीर्ष प्रविष्टे	मार्गशीर्ष											
			वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
नवम्बर	१५	१	९ १७	११ २१	१३ ०२	१४ २७	१५ ५०	१७ २२	१९ १७	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ ३१	६ ५३
	१६	२	९ १३	११ १७	१२ ५८	१४ २३	१५ ४६	१७ १८	१९ १३	२१ २७	२३ ५०	२ १०	४ २७	६ ४९
	१७	३	९ ०९	११ १३	१२ ५४	१४ १९	१५ ४२	१७ १५	१९ ०९	२१ २३	२३ ४६	२ ०६	४ २३	६ ४५
	१८	४	९ ०५	११ १०	१२ ५०	१४ १६	१५ ३८	१७ ११	१९ ०५	२१ १९	२३ ४२	२ ०२	४ १९	६ ४१
	१९	५	९ ०१	११ ०६	१२ ४७	१४ १२	१५ ३४	१७ ०७	१९ ०१	२१ १६	२३ ३८	१ ५८	४ १५	६ ३७
	२०	६	८ ५७	११ ०२	१२ ४३	१४ ०८	१५ ३०	१७ ०३	१८ ५७	२१ १२	२३ ३४	१ ५४	४ १२	६ ३३
	२१	७	८ ५३	१० ५८	१२ ३९	१४ ०४	१५ २६	१६ ५९	१८ ५३	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	४ ०८	६ २९
	२२	८	८ ४९	१० ५४	१२ ३५	१४ ००	१५ २२	१६ ५५	१८ ५०	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	४ ०४	६ २५
	२३	९	८ ४५	१० ५०	१२ ३१	१३ ५६	१५ १८	१६ ५१	१८ ४६	२१ ००	२३ २२	१ ४२	४ ००	६ २१
	२४	१०	८ ४१	१० ४६	१२ २७	१३ ५२	१५ १४	१६ ४७	१८ ४२	२० ५६	२३ १८	१ ३८	३ ५६	६ १७
	२५	११	८ ३७	१० ४२	१२ २३	१३ ४८	१५ १०	१६ ४३	१८ ३८	२० ५२	२३ १४	१ ३४	३ ५२	६ १३
	२६	१२	८ ३३	१० ३८	१२ १९	१३ ४४	१५ ०७	१६ ३९	१८ ३४	२० ४८	२३ १०	१ ३०	३ ४८	६ ०९
	२७	१३	८ ३०	१० ३४	१२ १५	१३ ४०	१५ ०३	१६ ३५	१८ ३०	२० ४४	२३ ०६	१ २६	३ ४४	६ ०६
	२८	१४	८ २६	१० ३०	१२ ११	१३ ३६	१४ ५९	१६ ३१	१८ २६	२० ४०	२३ ०२	१ २२	३ ४०	६ ०२
	२९	१५	८ २२	१० २६	१२ ०७	१३ ३२	१४ ५५	१६ २७	१८ २२	२० ३६	२२ ५८	१ १८	३ ३६	५ ५८
	३०	१६	८ १८	१० २२	१२ ०३	१३ २८	१४ ५१	१६ २३	१८ १८	२० ३२	२२ ५४	१ १४	३ ३२	५ ५४
दिसम्बर	१	१७	८ १४	१० १८	११ ५९	१३ २४	१४ ४७	१६ २०	१८ १४	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ २८	५ ५०
	२	१८	८ १०	१० १५	११ ५५	१३ २१	१४ ४३	१६ १६	१८ १०	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ २४	५ ४६
	३	१९	८ ०६	१० ११	११ ५२	१३ १७	१४ ३९	१६ १२	१८ ०६	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ २०	५ ४२
	४	२०	८ ०२	१० ०७	११ ४८	१३ १३	१४ ३५	१६ ०८	१८ ०२	२० १७	२२ ३९	० ५९	३ १६	५ ३८
	५	२१	७ ५८	१० ०३	११ ४४	१३ ०९	१४ ३१	१६ ०४	१७ ५८	२० १३	२२ ३५	० ५५	३ १३	५ ३४
	६	२२	७ ५४	९ ५९	११ ४०	१३ ०५	१४ २७	१६ ००	१७ ५४	२० ०९	२२ ३१	० ५१	३ ०९	५ ३०
	७	२३	७ ५०	९ ५५	११ ३६	१३ ०१	१४ २३	१५ ५६	१७ ५१	२० ०५	२२ २७	० ४७	३ ०५	५ २६
	८	२४	७ ४६	९ ५१	११ ३२	१२ ५७	१४ १९	१५ ५२	१७ ४७	२० ०१	२२ २३	० ४३	३ ०१	५ २२
	९	२५	७ ४२	९ ४७	११ २८	१२ ५३	१४ १५	१५ ४८	१७ ४३	१९ ५७	२२ १९	० ३९	२ ५७	५ १८
	१०	२६	७ ३८	९ ४३	११ २४	१२ ४९	१४ ११	१५ ४४	१७ ३९	१९ ५३	२२ १५	० ३५	२ ५३	५ १४
	११	२७	७ ३५	९ ३९	११ २०	१२ ४५	१४ ०८	१५ ४०	१७ ३५	१९ ४९	२२ ११	० ३१	२ ४९	५ १०
	१२	२८	७ ३१	९ ३५	११ १६	१२ ४१	१४ ०४	१५ ३६	१७ ३१	१९ ४५	२२ ०७	० २७	२ ४५	५ ०७
	१३	२९	७ २७	९ ३१	११ १२	१२ ३७	१४ ००	१५ ३२	१७ २७	१९ ४१	२२ ०३	० २३	२ ४१	५ ०३
	१४	३०	७ २३	९ २७	११०८	१२ ३३	१३ ५६	१५ २८	१७ २३	१९ ३७	२१ ५९	० १९	२ ३७	४ ५९
	१५	पौ. १	७ १९											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

पौष

मास	अंग्रेज़ी तारीख	पौष प्रविष्टे	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.
दिसम्बर	१५	१	९ २३	११ ४	१२ २९	१३ ५२	१५ २४	१७ १९	१९ ३३	२१ ५६	० १६	२ ३३	४ ५५	७ १५
	१६	२	९ १९	११ ००	१२ २५	१३ ४८	१५ २१	१७ १५	१९ २९	२१ ५२	० १२	२ २९	४ ५१	७ ११
	१७	३	९ १६	१० ५६	१२ २२	१३ ४४	१५ १७	१७ ११	१९ २५	२१ ४८	० ०८	२ २५	४ ४७	७ ०७
	१८	४	९ १२	१० ५३	१२ १८	१३ ४०	१५ १३	१७ ०७	१९ २२	२१ ४४	० ०४	२ २१	४ ४३	७ ०३
	१९	५	९ ०८	१० ४९	१२ १४	१३ ३६	१५ ०९	१७ ०३	१९ १८	२१ ४०	० ००	२ १७	४ ३९	६ ५९
	२०	६	९ ०४	१० ४५	१२ १०	१३ ३२	१५ ०५	१६ ५९	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ १४	४ ३५	६ ५५
	२१	७	९ ००	१० ४१	१२ ०६	१३ २८	१५ ०१	१६ ५६	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	२ १०	४ ३१	६ ५१
	२२	८	८ ५६	१० ३७	१२ ०२	१३ २४	१४ ५७	१६ ५२	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	२ ०६	४ २७	६ ४७
	२३	९	८ ५२	१० ३३	११ ५८	१३ २०	१४ ५३	१६ ४८	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	२ ०२	४ २३	६ ४३
	२४	१०	८ ४८	१० २९	११ ५४	१३ १६	१४ ४९	१६ ४४	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ५८	४ १९	६ ३९
	२५	११	८ ४४	१० २५	११ ५०	१३ १२	१४ ४५	१६ ४०	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ५४	४ १५	६ ३६
	२६	१२	८ ४०	१० २१	११ ४६	१३ ०९	१४ ४१	१६ ३६	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ५०	४ १२	६ ३२
	२७	१३	८ ३६	१० १७	११ ४२	१३ ०५	१४ ३७	१६ ३२	१८ ४६	२१ ०८	२३ २८	१ ४६	४ ०८	६ २८
	२८	१४	८ ३२	१० १३	११ ३८	१३ ०१	१४ ३३	१६ २८	१८ ४२	२१ ०४	२३ २४	१ ४२	४ ०४	६ २४
	२९	१५	८ २८	१० ०९	११ ३४	१२ ५७	१४ २९	१६ २४	१८ ३८	२१ ००	२३ २०	१ ३८	४ ००	६ २०
	३०	१६	८ २४	१० ०५	११ ३०	१२ ५३	१४ २६	१६ २०	१८ ३४	२० ५७	२३ १७	१ ३४	३ ५६	६ १६
	३१	१७	८ २०	१० ०१	११ २६	१२ ४९	१४ २२	१६ १६	१८ ३०	२० ५३	२३ १३	१ ३०	३ ५२	६ १२
जनवरी	१	१८	८ १६	९ ५७	११ २२	१२ ४४	१४ १७	१६ ११	१८ २६	२० ४८	२३ ०८	१ २५	३ ४७	६ ०७
	२	१९	८ १२	९ ५३	११ १८	१२ ४०	१४ १३	१६ ०७	१८ २२	२० ४४	२३ ०४	१ २१	३ ४३	६ ०३
	३	२०	८ ०८	९ ४९	११ १४	१२ ३६	१४ ०९	१६ ०३	१८ १८	२० ४०	२३ ००	१ १७	३ ३९	५ ५९
	४	२१	८ ०४	९ ४५	११ १०	१२ ३२	१४ ०५	१५ ५९	१८ १४	२० ३६	२२ ५६	१ १४	३ ३५	५ ५५
	५	२२	८ ००	९ ४१	११ ०६	१२ २८	१४ ०१	१५ ५६	१८ १०	२० ३२	२२ ५२	१ १०	३ ३१	५ ५१
	६	२३	७ ५६	९ ३७	११ ०२	१२ २४	१३ ५७	१५ ५२	१८ ०६	२० २८	२२ ४८	१ ०६	३ २७	५ ४७
	७	२४	७ ५२	९ ३३	१० ५८	१२ २०	१३ ५३	१५ ४८	१८ ०२	२० २४	२२ ४४	१ ०२	३ २३	५ ४३
	८	२५	७ ४८	९ २९	१० ५४	१२ १६	१३ ४९	१५ ४४	१७ ५८	२० २०	२२ ४०	० ५८	३ १९	५ ३९
	९	२६	७ ४४	९ २५	१० ५०	१२ १३	१३ ४५	१५ ४०	१७ ५४	२० १६	२२ ३६	० ५४	३ १५	५ ३६
	१०	२७	७ ४०	९ २१	१० ४६	१२ ०९	१३ ४१	१५ ३६	१७ ५०	२० १२	२२ ३२	० ५०	३ १२	५ ३२
	११	२८	७ ३६	९ १७	१० ४२	१२ ०५	१३ ३७	१५ ३२	१७ ४६	२० ०८	२२ २८	० ४६	३ ०८	५ २८
	१२	२९	७ ३२	९ १३	१० ३८	१२ ०१	१३ ३३	१५ २८	१७ ४२	२० ०४	२२ २४	० ४२	३ ०४	५ २४
	१३	मा.१	७ २८											

माघ

मास	अंग्रेज़ी तारीख	माघ प्रविष्टे	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.
जनवरी	१३	१	९ ०९	१० ३४	११ ५७	१३ २९	१५ २४	१७ ३८	२० ००	२२ २०	० ३८	३ ००	५ २०	७ २४
	१४	२	९ ०५	१० ३०	११ ५३	१३ २६	१५ २०	१७ ३४	१९ ५७	२२ १७	० ३४	२ ५६	५ १६	७ २०
	१५	३	९ ०१	१० २७	११ ४९	१३ २२	१५ १६	१७ ३०	१९ ५३	२२ १३	० ३०	२ ५२	५ १२	७ १७
	१६	४	८ ५८	१० २३	११ ४५	१३ १८	१५ १२	१७ २६	१९ ४९	२२ ०९	० २६	२ ४८	५ ०८	७ १३
	१७	५	८ ५४	१० १९	११ ४१	१३ १४	१५ ०८	१७ २३	१९ ४५	२२ ०५	० २२	२ ४४	५ ०४	७ ०९
	१८	६	८ ५०	१० १५	११ ३७	१३ १०	१५ ०४	१७ १९	१९ ४१	२२ ०१	० १९	२ ४०	५ ००	७ ०५
	१९	७	८ ४६	१० ११	११ ३३	१३ ०६	१५ ०१	१७ १५	१९ ३७	२१ ५७	० १५	२ ३६	४ ५६	७ ०१
	२०	८	८ ४२	१० ०७	११ २९	१३ ०२	१४ ५७	१७ ११	१९ ३३	२१ ५३	० ११	२ ३२	४ ५२	६ ५७
	२१	९	८ ३८	१० ०३	११ २५	१२ ५८	१४ ५३	१७ ०७	१९ २९	२१ ४९	० ०७	२ २८	४ ४८	६ ५३
	२२	१०	८ ३४	९ ५९	११ २१	१२ ५४	१४ ४९	१७ ०३	१९ २५	२१ ४५	० ०३	२ २४	४ ४४	६ ४९
	२३	११	८ ३०	९ ५५	११ १७	१२ ५०	१४ ४५	१६ ५९	१९ २१	२१ ४१	२३ ५९	२ २०	४ ४१	६ ४५
	२४	१२	८ २६	९ ५१	११ १४	१२ ४६	१४ ४१	१६ ५५	१९ १७	२१ ३७	२३ ५५	२ १६	४ ३७	६ ४१
	२५	१३	८ २२	९ ४७	११ १०	१२ ४२	१४ ३७	१६ ५१	१९ १३	२१ ३३	२३ ५१	२ १३	४ ३३	६ ३७
	२६	१४	८ १८	९ ४३	११ ०६	१२ ३८	१४ ३३	१६ ४७	१९ ०९	२१ २९	२३ ४७	२ ०९	४ २९	६ ३३
	२७	१५	८ १४	९ ३९	११ ०२	१२ ३४	१४ २९	१६ ४३	१९ ०५	२१ २५	२३ ४३	२ ०५	४ २५	६ २९
	२८	१६	८ १०	९ ३५	१० ५८	१२ ३०	१४ २५	१६ ३९	१९ ०२	२१ २२	२३ ३९	२ ०१	४ २१	६ २५
	२९	१७	८ ०६	९ ३१	१० ५४	१२ २७	१४ २१	१६ ३५	१८ ५८	२१ १८	२३ ३५	१ ५७	४ १७	६ २२
	३०	१८	८ ०२	९ २८	१० ५०	१२ २३	१४ १७	१६ ३१	१८ ५४	२१ १४	२३ ३१	१ ५३	४ १३	६ १८
	३१	१९	७ ५९	९ २४	१० ४६	१२ १९	१४ १३	१६ २८	१८ ५०	२१ १०	२३ २७	१ ४९	४ ०९	६ १४
फरवरी	१	२०	७ ५५	९ २०	१० ४२	१२ १५	१४ ०९	१६ २४	१८ ४६	२१ ०६	२३ २३	१ ४५	४ ०५	६ १०
	२	२१	७ ५१	९ १६	१० ३८	१२ ११	१४ ०५	१६ २०	१८ ४२	२१ ०२	२३ २०	१ ४१	४ ०१	६ ०६
	३	२२	७ ४७	९ १२	१० ३४	१२ ०७	१४ ०२	१६ १६	१८ ३८	२० ५८	२३ १६	१ ३७	३ ५७	६ ०२
	४	२३	७ ४३	९ ०८	१० ३०	१२ ०३	१३ ५८	१६ १२	१८ ३४	२० ५४	२३ १२	१ ३३	३ ५३	५ ५८
	५	२४	७ ३९	९ ०४	१० २६	११ ५९	१३ ५४	१६ ०८	१८ ३०	२० ५०	२३ ०८	१ २९	३ ४९	५ ५४
	६	२५	७ ३५	९ ००	१० २२	११ ५५	१३ ५०	१६ ०४	१८ २६	२० ४६	२३ ०४	१ २५	३ ४५	५ ५०
	७	२६	७ ३१	८ ५६	१० १९	११ ५१	१३ ४६	१६ ००	१८ २२	२० ४२	२३ ००	१ २१	३ ४२	५ ४६
	८	२७	७ २७	८ ५२	१० १५	११ ४७	१३ ४२	१५ ५६	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	१ १७	३ ३८	५ ४२
	९	२८	७ २३	८ ४८	१० ११	११ ४३	१३ ३८	१५ ५२	१८ १४	२० ३४	२२ ५२	१ १४	३ ३४	५ ३८
	१०	२९	७ १९	८ ४४	१० ०७	११ ३९	१३ ३४	१५ ४८	१८ १०	२० ३०	२२ ४८	१ १०	३ ३०	५ ३४
	११	३०	७ १५	८ ४०	१० ०३	११ ३५	१३ ३०	१५ ४४	१८ ०६	२० २६	२२ ४४	१ ०६	३ २६	५ ३०
	१२	फा.१	७ ११											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

फाल्गुन

माह	अंग्रेज़ी तारीख	फाल्गुन प्रविष्टे	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.
फरवरी	१२	१	८ ३६	९ ५९	११ ३२	१३ २६	१५ ४०	१८ ०३	२० २३	२२ ४०	१ ०२	३ २२	५ २६	७ ०७
	१३	२	८ ३३	९ ५५	११ २८	१३ २२	१५ ३६	१७ ५९	२० १९	२२ ३६	० ५८	३ १८	५ २३	७ ०४
	१४	३	८ २९	९ ५१	११ २४	१३ १८	१५ ३२	१७ ५५	२० १५	२२ ३२	० ५४	३ १४	५ १९	७ ००
	१५	४	८ २५	९ ४७	११ २०	१३ १४	१५ २९	१७ ५१	२० ११	२२ २८	० ५०	३ १०	५ १५	६ ५६
	१६	५	८ २१	९ ४३	११ १६	१३ १०	१५ २५	१७ ४७	२० ०७	२२ २५	० ४६	३ ०६	५ ११	६ ५२
	१७	६	८ १७	९ ३९	११ १२	१३ ०६	१५ २१	१७ ४३	२० ०३	२२ २१	० ४२	३ ०२	५ ०७	६ ४८
	१८	७	८ १३	९ ३५	११ ०८	१३ ०३	१५ १७	१७ ३९	१९ ५९	२२ १७	० ३८	२ ५८	५ ०३	६ ४४
	१९	८	८ ०९	९ ३१	११ ०४	१२ ५९	१५ १३	१७ ३५	१९ ५५	२२ १३	० ३४	२ ५४	४ ५९	६ ४०
	२०	९	८ ०५	९ २७	११ ००	१२ ५५	१५ ०९	१७ ३१	१९ ५१	२२ ०९	० ३०	२ ५०	४ ५५	६ ३६
	२१	१०	८ ०१	९ २३	१० ५६	१२ ५१	१५ ०५	१७ २७	१९ ४७	२२ ०५	० २६	२ ४६	४ ५१	६ ३२
	२२	११	७ ५७	९ २०	१० ५२	१२ ४७	१५ ०१	१७ २३	१९ ४३	२२ ०१	० २२	२ ४३	४ ४७	६ २८
	२३	१२	७ ५३	९ १६	१० ४८	१२ ४३	१४ ५७	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १९	२ ३९	४ ४३	६ २४
	२४	१३	७ ४९	९ १२	१० ४४	१२ ३९	१४ ५३	१७ १५	१९ ३५	२१ ५३	० १५	२ ३५	४ ३९	६ २०
	२५	१४	७ ४५	९ ०८	१० ४०	१२ ३५	१४ ४९	१७ ११	१९ ३१	२१ ४९	० ११	२ ३१	४ ३५	६ १६
	२६	१५	७ ४१	९ ०४	१० ३६	१२ ३१	१४ ४५	१७ ०७	१९ २७	२१ ४५	० ०७	२ २७	४ ३१	६ १२
	२७	१६	७ ३७	९ ००	१० ३३	१२ २७	१४ ४१	१७ ०४	१९ २४	२१ ४१	० ०३	२ २३	४ २८	६ ०८
	२८	१७	७ ३४	८ ५६	१० २९	१२ २३	१४ ३७	१७ ००	१९ २०	२१ ३७	२३ ५९	२ १९	४ २४	६ ०५
	१	१८	७ ३०	८ ५२	१० २५	१२ १९	१४ ३३	१६ ५६	१९ १६	२१ ३३	२३ ५५	२ १५	४ २०	६ ०१
	२	१९	७ २६	८ ४८	१० २१	१२ १५	१४ ३०	१६ ५२	१९ १२	२१ २९	२३ ५१	२ ११	४ १६	५ ५७
	३	२०	७ २२	८ ४४	१० १७	१२ ११	१४ २६	१६ ४८	१९ ०८	२१ २६	२३ ४७	२ ०७	४ १२	५ ५३
	४	२१	७ १८	८ ४०	१० १३	१२ ०८	१४ २२	१६ ४४	१९ ०४	२१ २२	२३ ४३	२ ०३	४ ०८	५ ४९
	५	२२	७ १४	८ ३६	१० ०९	१२ ०४	१४ १८	१६ ४०	१९ ००	२१ १८	२३ ३९	१ ५९	४ ०४	५ ४५
	६	२३	७ १०	८ ३२	१० ०५	१२ ००	१४ १४	१६ ३६	१८ ५६	२१ १४	२३ ३५	१ ५५	४ ००	५ ४१
	७	२४	७ ०६	८ २८	१० ०१	११ ५६	१४ १०	१६ ३२	१८ ५२	२१ १०	२३ ३१	१ ५१	३ ५६	५ ३७
	८	२५	७ ०२	८ २४	९ ५७	११ ५२	१४ ०६	१६ २८	१८ ४८	२१ ०६	२३ २७	१ ४८	३ ५२	५ ३३
	९	२६	६ ५८	८ २१	९ ५३	११ ४८	१४ ०२	१६ २४	१८ ४४	२१ ०२	२३ २३	१ ४४	३ ४८	५ २९
	१०	२७	६ ५४	८ १७	९ ४९	११ ४४	१३ ५८	१६ २०	१८ ४०	२० ५८	२३ २०	१ ४०	३ ४४	५ २५
	११	२८	६ ५०	८ १३	९ ४५	११ ४०	१३ ५४	१६ १६	१८ ३६	२० ५४	२३ १६	१ ३६	३ ४०	५ २१
	१२	२९	६ ४६	८ ०९	९ ४१	११ ३६	१३ ५०	१६ १२	१८ ३२	२० ५०	२३ १२	१ ३२	३ ३६	५ १७
	१३	३०	६ ४२	८ ०५	९ ३८	११ ३२	१३ ४६	१६ ०९	१८ २९	२० ४६	२३ ०८	१ २८	३ ३२	५ १३
	१४	चै.१	६ ३८											

चैत्र

माह	अंग्रेज़ी तारीख	चैत्र प्रविष्टे	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.
मार्च	१४	१	८ ०१	९ ३४	११ २८	१३ ४२	१६ ०५	१८ २५	२० ४२	२३ ०४	१ २४	३ २९	५ ०९	६ ३५
	१५	२	७ ५७	९ ३०	११ २४	१३ ३८	१६ ०१	१८ २१	२० ३८	२३ ००	१ २०	३ २५	५ ०६	६ ३१
	१६	३	७ ५३	९ २६	११ २०	१३ ३५	१५ ५७	१८ १७	२० ३४	२२ ५६	१ १६	३ २१	५ ०२	६ २७
	१७	४	७ ४९	९ २२	११ १६	१३ ३१	१५ ५३	१८ १३	२० ३०	२२ ५२	१ १२	३ १७	४ ५८	६ २३
	१८	५	७ ४५	९ १८	११ १२	१३ २७	१५ ४९	१८ ०९	२० २७	२२ ४८	१ ०८	३ १३	४ ५४	६ १९
	१९	६	७ ४१	९ १४	११ ०९	१३ २३	१५ ४५	१८ ०५	२० २३	२२ ४४	१ ०४	३ ०९	४ ५०	६ १५
	२०	७	७ ३७	९ १०	११ ०५	१३ १९	१५ ४१	१८ ०१	२० १९	२२ ४०	१ ००	३ ०५	४ ४६	६ ११
	२१	८	७ ३३	९ ०६	११ ०१	१३ १५	१५ ३७	१७ ५७	२० १५	२२ ३६	० ५६	३ ०१	४ ४२	६ ०७
	२२	९	७ २९	९ ०२	१० ५७	१३ ११	१५ ३३	१७ ५३	२० ११	२२ ३२	० ५२	२ ५७	४ ३८	६ ०३
	२३	१०	७ २५	८ ५८	१० ५३	१३ ०७	१५२९	१७ ४९	२० ०७	२२ २८	० ४९	२ ५३	४ ३४	५ ५९
	२४	११	७ २२	८ ५४	१० ४९	१३ ०३	१५ २५	१७ ४५	२० ०३	२२ २५	० ४५	२ ४९	४ ३०	५ ५५
	२५	१२	७ १८	८ ५०	१० ४५	१२ ५९	१५ २१	१७ ४१	१९ ५९	२२ २१	० ४१	२ ४५	४ २६	५ ५१
	२६	१३	७ १४	८ ४६	१० ४१	१२ ५५	१५ १७	१७ ३७	१९ ५५	२२ १७	० ३७	२ ४१	४ २२	५ ४७
	२७	१४	७ १०	८ ४२	१० ३७	१२ ५१	१५ १३	१७ ३३	१९ ५१	२२ १३	० ३३	२ ३७	४ १८	५ ४३
	२८	१५	७ ०६	८ ३८	१० ३३	१२ ४७	१५ १०	१७ ३०	१९ ४७	२२ ०९	० २९	२ ३३	४ १४	५ ३९
	२९	१६	७ ०२	८ ३४	१० २९	१२ ४३	१५ ०६	१७ २६	१९ ४३	२२ ०५	० २५	२ ३०	४ १०	५ ३६
	३०	१७	६ ५८	८ ३१	१० २५	१२ ३९	१५ ०२	१७ २२	१९ ४०	२२ ०१	० २१	२ २६	४ ०७	५ ३२
	३१	१८	६ ५४	८ २७	१० २१	१२ ३६	१४ ५८	१७ १८	१९ ३६	२१ ५७	० १७	२ २२	४ ०३	५ २८
अप्रैल	१	१९	६ ५०	८ २३	१० १७	१२ ३२	१४ ५४	१७ १४	१९ ३२	२१ ५३	० १३	२ १८	३ ५९	५ २४
	२	२०	६ ४६	८ १९	१० १३	१२ २८	१४ ५०	१७ १०	१९ २८	२१ ४९	० ०९	२ १४	३ ५५	५ २०
	३	२१	६ ४२	८ १५	१० १०	१२ २४	१४ ४६	१७ ०६	१९ २४	२१ ४५	० ०५	२ १०	३ ५१	५ १६
	४	२२	६ ३८	८ ११	१० ०६	१२ २०	१४ ४२	१७ ०२	१९ २०	२१ ४१	० ०१	२ ०६	३ ४७	५ १२
	५	२३	६ ३४	८ ०७	१० ०२	१२ १६	१४ ३८	१६ ५८	१९ १६	२१ ३७	२३ ५७	२ ०२	३ ४३	५ ०८
	६	२४	६ ३०	८ ०३	९ ५८	१२ १२	१४ ३४	१६ ५४	१९ १२	२१ ३३	२३ ५३	१ ५८	३ ३९	५ ०४
	७	२५	६ २७	७ ५९	९ ५४	१२ ०८	१४ ३०	१६ ५०	१९ ०८	२१ २९	२३ ५०	१ ५४	३ ३५	५ ००
	८	२६	६ २३	७ ५५	९ ५०	१२ ०४	१४ २६	१६ ४६	१९ ०४	२१ २६	२३ ४६	१ ५०	३ ३१	४ ५६
	९	२७	६ १९	७ ५१	९ ४६	१२ ००	१४ २२	१६ ४२	१९ ००	२१ २२	२३ ४२	१ ४६	३ २७	४ ५२
	१०	२८	६ १५	७ ४७	९ ४२	११ ५६	१४ १८	१६ ३८	१८ ५६	२१ १८	२३ ३८	१ ४२	३ २३	४ ४८
	११	२९	६ ११	७ ४३	९ ३८	११ ५२	१४ १४	१६ ३४	१८ ५२	२१ १४	२३ ३४	१ ३८	३ १९	४ ४४
	१२	३०	६ ०७	७ ४०	९ ३४	११ ४८	१४ ११	१६ ३१	१८ ४८	२१ १०	२३ ३०	१ ३५	३ १५	४ ४१
	१३	वै.१	६ ०३											

भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल

यहां पीछे जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह चण्डीगढ़ में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बतलाती है। इसी लग्नसारणी से नीचे दिए गए कोष्ठक की सहायता से भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है :-दैनिक लग्नसारणी से अपनी अभीष्ट तारीख को चण्डीगढ़ में लग्न का समाप्तिकाल जान लीजिए और उसमें अपने नगर के आगे और लग्न के नीचे इस कोष्ठक में लिखे मिनटों को चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने से उस नगर में लग्न का समाप्ति काल मालूम हो जाएगा। **जैसे**-मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुन लग्न का समाप्ति काल जानना है। ९ अप्रैल को चण्डीगढ़ में मिथुन का समाप्तिकाल १२ घं. ० मि. है, यह हमने दैनिक लग्नसारणी से ज्ञात किया। नीचे कोष्ठक में मद्रास, के आगे मिथुन के नीचे + १९ मिनट लिखे हैं। + होने से १९ मिनटों को १२ घं. ० मिनट में जोड़ने पर १२ घं. १९ मिनट मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुनलग्न का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बन गया।

लग्न / नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
अजमेर	+१७	+१८	+१७	+१४	+१०	+६	+१	-१	०	+४	+८	+१२
अम्बाला	०	०	०	०	०	०	-१	-१	-१	०	०	०
अमृतसर	+७	+६	+६	+७	+८	+९	+१०	+१०	+१०	+९	+८	+७
अलवर	+७	+८	+७	+५	+२	-२	-५	-६	-६	-३	०	+४
अलीगढ़	+१	+२	+१	-१	-४	-८	-११	-१२	-१२	-९	-६	-२
अहमदाबाद	+३०	+३३	+३१	+२५	+१८	+११	+४	-१	+१	+८	+१५	+२३
आगरा	+१	+३	+२	-१	-४	-८	-११	-१३	-१३	-९	-६	-२
उज्जैन	+१८	+२१	+१९	+१३	+६	-१	-८	-१३	-११	-४	+३	+११
उदयपुर	+२४	+२६	+२५	+२०	+१४	+८	+२	-२	०	+५	+१२	+१८
इन्दौर	+१८	+२२	+२०	+१४	+५	-३	-१०	-१५	-१३	-६	+३	+१०
करनाल	+१	+१	+१	०	०	-१	-२	-२	-२	-१	-१	०
कलकत्ता	-३२	-२८	-३०	-३६	-४५	-५३	-६०	-६५	-६३	-५६	-४७	-४०
कांगड़ा	०	-१	-१	+१	+२	+३	+५	+६	+५	+४	+३	+१
कानपुर	-६	-५	-६	-९	-१३	-१७	-२२	-२४	-२३	-१९	-१५	-११
काशी	-१५	-१३	-१४	-१८	-२४	-२९	-३४	-३७	-३६	-३१	-२५	-२०
कुरुक्षेत्र	+२	+२	+२	+१	+१	०	-१	-१	-१	०	०	+१
कोटा	+१४	+१६	+१५	+११	+५	०	-५	-८	-७	-२	+४	+९
गुड़गांव	+४	+४	+४	+२	०	-२	-४	-५	-५	-३	-१	+१
गुरदासपुर	+३	+२	+२	+४	+५	+६	+८	+९	+८	+७	+६	+४
गोरखपुर	-१८	-१७	-१८	-२१	-२५	-२९	-३४	-३६	-३५	-३१	-२७	-२३
ग्वालियर	+३	+५	+४	०	-४	-९	-१३	-१६	-१५	-११	-६	-२
चम्बा	-१	-२	-१	०	+२	+५	+७	+८	+७	+६	+३	+१
जम्मू	+४	+३	+४	+५	+७	+१०	+१२	+१३	+१२	+११	+८	+६
जयपुर	+११	+१२	+११	+८	+५	+१	-३	-५	-४	०	+३	+७
जालन्धर	+५	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+५
जीन्द	+५	+६	+५	+४	+३	+१	०	-१	-१	+१	+२	+४
जैसलमेर	+३१	+३२	+३१	+२८	+२५	+२१	+१७	+१५	+१६	+२०	+२३	+२७
जोधपुर	+२३	+२५	+२४	+२०	+१६	+११	+७	+४	+५	+९	+१४	+१८
झांसी	+३	+५	+४	०	-६	-११	-१६	-१९	-१८	-१३	-७	-२
दिल्ली	+३	+३	+३	+१	-१	-३	-५	-६	-६	-४	-२	०
देहरादून	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-६	-६	-६	-५	-५	-५
नागपुर	+८	+११	+१०	+२	-७	-१७	-२६	-३१	-३९	-२०	-११	-२
नाभा	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+२	+२	+३	+३	+३

लग्न / नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
नैनीताल	-८	-७	-८	-९	-१०	-१२	-१३	-१४	-१४	-१२	-११	-९
पटियाला	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१	+१	+१	+२	+२	+२
पठानकोट	+१	+१	+१	+३	+४	+६	+८	+९	+८	+७	+५	+३
पटना	-२४	-२२	-२३	-२७	-३२	-३८	-४२	-४५	-४४	-३९	-३४	-२९
पुंछ	+४	+३	+४	+७	+१०	+१४	+१८	+२०	+१९	+१५	+१२	+८
प्रयाग	-११	-९	-१०	-१४	-१९	-२४	-२९	-३१	-३१	-२६	-२१	-१६
फरीदकोट	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८
फिरोजपुर	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९
बम्बई	+३६	+४१	+३८	+२९	+१८	+७	-४	-१०	-८	+३	+१४	+२५
बरेली	-६	-६	-६	-८	-१०	-१२	-१४	-१५	-१५	-१३	-११	-९
बंगलौर	+२६	+३३	+३०	+१७	०	-१६	-३२	-४०	-३७	-२२	-६	+११
बुलन्दशहर	०	०	०	-२	-४	-६	-८	-९	-९	-७	-५	-३
भटिण्डा	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+७	+७	+७	+८	+८	+८
भरतपुर	+३	+५	+४	+१	-२	-६	-९	-११	-११	-७	-४	०
भुवनेश्वर	-१८	-१४	-१६	-२४	-३४	-४४	-५४	-५८	-५७	-४८	-३८	-२८
भोपाल	+११	+१४	+१२	+६	-२	-८	-१५	-२०	-१८	-११	-४	+४
मद्रास	+१५	+२२	+१९	+६	-११	-२७	-४३	-५१	-४८	-३३	-१७	०
मथुरा	+३	+४	+३	+१	-२	-६	-९	-१०	-१०	-७	-४	०
मण्डी (हि.प्र.)	-२	-३	-३	-२	-१	०	+२	+२	+२	+१	०	-१
मलेरकोटला	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३	+३	+३	+४	+४	+४
मेरठ	-१	०	-१	-२	-३	-५	-६	-७	-७	-५	-४	-२
रोपड़	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१
रोहतक	+४	+५	+४	+३	+१	०	-२	-३	-३	-१	+१	+२
लखनऊ	-९	-८	-९	-१२	-१५	-१९	-२३	-२५	-२४	-२०	-१७	-१३
लुधियाना	+३	+३	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३
शिमला	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-२
श्रीनगर (का.)	+१	०	+१	+४	+७	+११	+१५	+१७	+१६	+१२	+९	+५
सहारनपुर	-१	-१	-१	-२	-२	-३	-४	-४	-४	-३	-३	-२
हरिद्वार	-४	-४	-४	-५	-५	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-५
हिसार	+७	+८	+७	+६	+५	+३	+२	+१	+१	+३	+४	+६
हैदराबाद	+१५	+२१	+१८	+८	-५	-१७	-२९	-३५	-३३	-२२	-९	+३
होशियारपुर	+२	+१	+१	+२	+३	+४	+५	+५	+५	+४	+३	+२

प्राचीन पद्धति द्वारा लग्न एवं दशम का साधन

जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि की गणित मे शुद्ध लग्न का साधन सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं श्रमसाध्य विषय है। इसके लिए ज्योतिषी को स्थानीयकाल का ज्ञान होना चाहिए, नगरो के अक्षांश-रेखांशों की प्रामाणिक सूची भी उसके पास होनी चाहिए, किन्च भिन्न-भिन्न अक्षांशों की लग्नसारणियां उसके पास होना नितान्त आवश्यक है, क्योंकि किसी स्थान पर लग्न स्पष्ट करने के लिए उस स्थान के अक्षांश की लग्नसारणी का ही प्रयोग होता है। आगे हमने साम्पातिक काल द्वारा लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट करने की नवीन विधि दी है। यह विधि अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म और सुविधाजनक है। इस विधि में अभीष्ट नगर का सूर्योदय, सूर्योदयात् इष्ट काल, दिनमान और इष्टकालिक सूर्य की ज़रुरत नहीं होती, जबकि प्रचीन विधि में इनकी ज़रूरत रहती है। यहां हम लग्न एवं दशम साधन की प्राचीन विधि दे रहे हैं।

लग्न साधनविधि

जिस नगर में लग्न स्पष्ट करना है, उस नगर में उस दिन का सूक्ष्म सूर्योदयकाल ज्ञात कीजिए। सूर्योदयकाल से अभीष्ट समय का सूर्योदयात् इष्ट (घ. प.) बना लीजिए और इष्टकालिक सूर्य स्पष्ट कर लीजिए। इस पंचांग में दी गई **"अक्षांशादि सारणी"** से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश ज्ञात कर लीजिए। अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्नसारणी द्वारा इस प्रकार लग्न स्पष्ट कीजिए:—

आगे 29, 30, 31 अक्षांशों की तीन लग्नसारणियां दी गई हैं, जो दिल्ली, पंजाब, तथा हरियाणा के लगभग सभी नगरों के लिए पर्याप्त हैं। अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्नसारणी में इष्टकालिक स्पष्ट सूर्य की राशि के आगे और अंश के नीचे लिखे घडी, पलों को लेकर अलग लिख लीजिए। सारणी में इन घडी, पलों के दाईं ओर अगले अंश के नीचे जो घडी–पल दिए गए हैं, उनसे इन अलग लिखे गए घडी, पलों का अन्तर जानिए। अन्तर के इन पलों को **"सहायक सारणी"** (जो अगले पृष्ठ पर दी गई है) के बाईं ओर पहले कॉलम में देखिए। इसके आगे इस सारणी में जहां स्पष्ट सूर्य की कला–विकलाओं के बराबर या लगभग बराबर कला–विकलाएं लिखी हों, उनके बिल्कुल ऊपर सारणी की पहली लाईन में जो पल लिखे हों, उन्हें लेकर अलग लिखे हुए घडी, पलों में जोड दीजिए और उसमें इष्टकाल के घडीपल भी जोड दीजिए। इसे हम **"अभीष्ट घड़ी–पल"** कहेंगे। "अभीष्ट घड़ी–पल" यदि 60 घडी से अधिक हों तो उनमें से 60 घडी घटाकर, शेष ग्रहण करना चाहिए। "अभीष्ट घड़ी– पलों" के बराबर (बराबर न मिलें तो उनसे कुछ कम) घडी, पल लग्नसारणी में ढूंढिये, जिन्हें **"सारणीस्थ घड़ी–पल"** कहा जाएगा। "सारणीस्थ घडी–पलों" के बाईं ओर लग्नसारणी के पहले कॉलम में लिखी राशि और सबसे ऊपर लिखे अंशों को अलग लिख लीजिए। "सारणीस्थ घडी–पलों" के दाईं ओर सारणी के अगले अंश के नीचे दिए गए घडी–पलों का "सारणीस्थ घडी-पलों" से अन्तर कीजिए। इसे "सारणीस्थ अन्तर" कहेंगे। "सारणीस्थ घडी–पलों" और "अभीष्ट घड़ी–पलों "का भी अन्तर कीजिए। अन्तर के ये पल "सहायक सारणी" के बिल्कुल ऊपर वाली लाईन में जहां लिखे हैं, उसके नीचे "सारणीस्थ अन्तर" के बराबर पलों के आगे जो कला– विकला मिलें, उन्हें अलग लिखे राशि, अंशों में जोड दें। अब इसमें अगले पृष्ठ पर दी गई "अयनांश संस्कार सारणी" से अपने संवत् के आगे दी गई कलाओं को लेकर चिन्ह के अनुसार जोड़ने या घटाने पर निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण— मान लीजिए— वि. सं. 2029 के वैशाख प्रविष्टे 3 को 58 घ. 45 प. इष्ट पर शिमला (हि.प्र.) में लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य 0 रा., 2 अंश 37 क. 47 वि. है। शिमला के अक्षांश 31 अंश 6 क. (उत्तर) हैं, अतः 31 अक्षांश वाली लग्नसारणी में स्पष्ट सूर्य की 0 (मेष) राशि के आगे 2 अंश के नीचे 2 घ. 55 प. हैं, इन्हें अलग लिखा। सारणी में 2 घ. 55 प. के दाईं ओर 3 अंश के नीचे 3 घ. 2 प. लिखे हैं। इनका 2 घ. 55 प. से अन्तर 7 पल है। "सहायक सारणी" के बाईं ओर पहले कॉलम में लिखे हुए 7 पल के आगे वाली पंक्ति में स्पष्ट सूर्य की 37 क. 47 वि. नहीं मिलीं। अतः सारणी में इनके लगभग बराबर 34 क. 17 वि. देखें, जिनके बिल्कुल ऊपर 4 पल लिखे हैं। इन्हें अलग लिखे 2 घ. 55 पल में जोड़ा और इष्टकाल के घ. प. भी इसमें जोड़े तो 61 घ. 44 प. (60 घ. घटाने पर 1 घ. 44 प.) 'अभीष्ट घड़ी--पल' हुए। लग्नसारणी में 'अभीष्ट घड़ी–पल' 1 घ. 44 प. नहीं हैं, अतः इससे कुछ कम 1 घ. 40 प. सारणी में देखें, जो "सारणीस्थ घड़ी पल" हैं। इनके बाईं ओर सारणी के पहले कॉलम में 11 राशि और बिल्कुल ऊपर की लाईन में 21 अंश लिखे हैं। इन 11 रा. 21 अं. को अलग लिखा। लग्न सारणी में "सारणीस्थ घडी–पलों" (1 घ. 40 प.) के दाईं ओर 22 अंश के नीचे 1 घ. 46 प. का 1 घ. 40 प. से अन्तर 6 पल 'सारणीस्थ अन्तर' है। "अभीष्ट घड़ी–पल" (1 घ. 44 प.) और सारणीस्थ घड़ी–पल (1 घ. 40 प.) का अन्तर 4 पल है। 'सहायक सारणी' की ऊपर वाली लाईन में लिखे गए 4 पल के नीचे सारणीस्थ अन्तर के बराबर 6 पल के आगे 40क. 00वि. लिखा है। इन्हें 11रा. 21 अं. में जोड़ने पर 11 रा. और 21अं. 40क. 00 वि. हुआ। "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. 2029 के आगे +1 कला लिखा है। इसे चिन्हानुसार 11 रा. 21 अं. 40 क. 0 वि. में जोड़ने पर 11 रा. 21 अं. 41 क. 00 वि. निरयण लग्न स्पष्ट हुआ।

दशम लग्नसाधन

आगे साम्पातिक काल द्वारा दशम लग्न साधन की सरल पद्धति दी है, जिससे अभीष्ट स्थल का सूर्योदय, दिनमान तथा तात्कालिक सूर्यस्पष्ट जानने की अवश्यकता नहीं होती है। प्राचीन पद्धति से, जिसका निर्देश यहां किया जा रहा है, इन सब की आवश्यकता रहती है।

सारणी (अक्षांश २९° उत्तर) (पलभा ६।३९।६)

दिल्ली, मेरठ, रोहतक, हिसार, जींद, नैनीताल, मुरादाबाद आदि के लिए।

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
० प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
वृष घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१ प.	४८	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
मि. घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
२ प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
३ प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
सिं. घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
७ प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
धनु घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
८ प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९ प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२
कु. घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१० प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४८

लग्न सारणी ३०° उत्तर (पलभा ६।५५।४२)

अम्बाला, करनाल, कुरुक्षेत्र, देहरादून, नाभा, पटियाला, भटिण्डा, जैसलमेर, अल्मोड़ा, सहारनपुर और हरिद्वार आदि के लिए

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
वृष घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
मि. घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२ प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
सिं. घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५२	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
७ प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
धनु घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
९ प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
कु. घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	३	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

लग्न सारणी (अक्षांश ३१ उत्तर) (पलभा ७।१२।३७)

कपूरथला, चण्डीगढ़ , जालंधर, फरीदकोट, फिरोजपुर, रोपड़, लुधियाना, शिमला आदि के लिए

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२७	३५
वृष घ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
मि. घ	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२ प	२१	३१	४१	५१	१	१०	२०	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६
क. घ	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१५	२७	३९	५१	३	१५	२७	३८	५०
सिं. घ	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४१
क. घ	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३१
तु. घ	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
६ प	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६
वृ. घ	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
७ प	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५
धनु घ	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
म. घ	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
९ प	२६	३६	४६	५६	६	१५	२५	३५	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५३	१	९	१७	२५	३३	४१
कु. घ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	८	१५
मीं. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३४	४१

दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी)

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
० प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृष घ	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
१ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
मि. घ	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
२ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
क. घ	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
३ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
सिं. घ	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९
४ प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४०	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
क. घ	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३
५ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८
तु. घ	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८
६ प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृ. घ	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
७ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२४	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
धनु घ	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९
८ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
म. घ	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
९ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
कु. घ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१० प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४१	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
मीं. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
११ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८

दशमलग्न साधनविधि

इष्टकाल के घ. प. में से दिनार्ध (अभीष्ट नगर के दिनमान का आधा) घटाएं। यदि दिनार्ध से इष्ट कम हो तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर दिनार्ध घटाएं, जो शेष बचे वह नतकाल होगा। नतकाल के घ. प. को इष्ट के घ. प. समझकर तात्कालिक स्पष्ट सूर्य द्वारा दशम लग्नसारणी से ठीक उसी तरह दशम लग्न स्पष्ट कीजिए जैसे कि ऊपर लग्नसारणी से लग्न स्पष्ट किया गया है। दशम लग्नसारणी सभी नगरों के लिए एक ही होती है।

दशमलग्न साधन का उदाहरणः— वि. सं. २०२६ के वैशाख प्रविष्टे ३ को शिमला में ५८घ. ४५ प. इष्ट पर दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा. २ अं. ३७ क. ४७ वि. है। इस दिन शिमला में दिनमान ३१ घ. ५६ प. है, अतः दिनार्ध १६ घ. ० प. हुआ। इष्ट काल ५८ घ. ४५ प. में से दिनार्ध घटाने पर ४२ घ. ४५ प. नतकाल हुआ, जो दशमसाधन के लिए इष्टकाल है। दशमलग्न सारणी में स्पष्ट सूर्य की ० राशि के आगे २ अंश के नीचे ३ घ. ५६ प. मिला। इसे पृथक् लिखा। सारणी में ३ घ. ५६ प. के दाईं ओर (३ अं. के नीचे) ४ घ. ०६ प. लिखा है। ३।५६ और ४।६ का अन्तर १० पल है। सहायक सारिणी में १० पल के आगे स्पष्ट सूर्य की ३७ क. ४७ वि. के लगभग बराबर ३६ क. ०० वि. है। इसके ऊपर सारिणी में ६ पल लिखा है। इन ६ पलों को अलग लिखे ३ घ. ५६ प. में जोड़कर इसमें नतकाल जोड़ा तो ४६ घ. ४७ प. 'अभीष्ट घड़ी–पल' हुए। "दशम लग्नसारणी" में इन "अभीष्ट घड़ी–पलों" से कुछ कम घ. प. ४६।४२ 'गारणीस्थ घड़ी पल' धनु (८) राशि के आगे १६ अंश के नीचे लिखे हैं। अतः ८ रा. १६ अं. को अलग लिखा। सारणी में ४६।४२ के दाईं ओर (१७ अं. के नीचे) लिखे ४६।५२ का ४६।४२ से अन्तर १० पल का "सारणीस्थ अन्तर" हुआ। 'सारणीस्थ घड़ी–पल' ४६।४२ और अभीष्ट घड़ीपल ४६।४७ का अन्तर ५ पल है। अब 'सहायक सारणी' में १० पल के आगे ५ पल के नीचे ३० क. ०० वि. मिली। इन्हें अलग लिखे ८ रा. १६ अं. में जोड़ने पर ८ रा.१६ अं. में जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३० क. ० वि. हुई। इसमें "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. २०२६ के आगे दिया गया अयनांश संस्कार + १क. चिह्नानुसार जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३१ क. ०० वि. निरयण दशमलग्न स्पष्ट हुआ।

सहायक सारणी

पल	१		२		३		४		५		६		७		८		९		१०		११		१२		१३	
→ ↓	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.
६	१०	०	२०	०	३०	०	४०	०	५०	०	६०	०														
७	८	३४	१७	९	२५	४३	३४	१७	४२	५१	५१	२६	६०	०												
८	७	३०	१५	०	२२	३०	३०	०	३७	३०	४५	०	५२	३०	६०	०										
९	६	४०	१३	२०	२०	०	२६	४०	३३	२०	४०	०	४६	४०	५३	२०	६०	०								
१०	६	०	१२	०	१८	०	२४	०	३०	०	३६	०	४२	०	४८	०	५४	०	६०	०						
११	५	२७	१०	५५	१६	२२	२१	४९	२७	१६	३२	४४	३८	११	४३	३८	४९	५	५४	३३	६०	०				
१२	५	०	१०	०	१५	०	२०	०	२५	०	३०	०	३५	०	४०	०	४५	०	५०	०	५५	०	६०	०		
१३	४	३७	९	१४	१३	५१	१८	२८	२३	५	२७	४२	३२	१९	३६	५६	४१	३३	४६	१०	५०	४७	५५	२३	६०	०

अयनांश संस्कार सारणी

विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला
२०२३	+ ७	२०३१	०	२०३९	— ७	२०४७	— १३	२०५५	— २०	२०६३	—२६	२०७१	—३३
२०२४	+ ६	२०३२	— १	२०४०	— ८	२०४८	— १४	२०५६	— २१	२०६४	—२७	२०७२	—३४
२०२५	+ ५	२०३३	— २	२०४१	— ९	२०४९	— १५	२०५७	— २२	२०६५	—२८	२०७३	—३५
२०२६	+ ४	२०३४	— ३	२०४२	— ९	२०५०	— १६	२०५८	—२२	२०६६	—२९	२०७४	—३६
२०२७	+ ३	२०३५	— ४	२०४३	—१०	२०५१	— १७	२०५९	—२३	२०६७	—३०	२०७५	—३६
२०२८	+ २	२०३६	— ४	२०४४	—११	२०५२	— १८	२०६०	—२४	२०६८	—३१	२०७६	—३७
२०२९	+ १	२०३७	— ५	२०४५	—१२	२०५३	— १८	२०६१	—२५	२०६९	—३१	२०७७	—३८
२०३०	+ १	२०३८	— ६	२०४६	— १३	२०५४	— १९	२०६२	—२६	२०७०	—३२	२०७८	—३९

सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि

यहां हम सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की एक नवीन सरल विधि दे रहे है । स्पष्ट सूर्य द्वारा लग्न स्पस्ट करने में अधिक परिश्रम होता है, इसलिए इस विषय में पाश्चात्य ज्योतिषियों ने 'साम्पातिककाल' की पद्धति को अपनाया है । यहां हम ''साम्पातिककाल क्या है''- इस विषय का कुछ सैद्धान्तिक- विवेचन न करते हुए, इससे लग्न स्पष्ट-करने की सर्व- साधारणोपयोगी विधि प्रस्तुत कर रहे हैं ।

विधि:- सां. का. (साम्पतिककाल)से लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम नीचे लिखे उपकरण (चीजें), जो इस पंचांग में दिए गए कोष्ठकों (सारणियों)से बिना किसी परिश्रम के तैयार किए जा सकते है, तैयार करें -

(१) अभीष्ट नगर के अक्षांश (उत्तर या दक्षिण)
(२) अभीष्ट नगर के रेखांश (पूर्व या पश्चिम)
(३) अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर(+या-)

ये तीनों उपकरण 'अक्षांशादि सारणी 'से उठाइये ।

विशेष- यदि ''अक्षांशादि सारणी ''में अभीष्ट नगर न मिले तो उसके निकटतम किसी अन्य नगर के अक्षांशादि प्रयोग में लाए जा सकते है ।

ध्यान रहे- भारत के सभी नगरों के अक्षांश उत्तर और रेखांश पूर्व ही है ।

(४) अभीष्ट नगर का स्थानीयमध्यमकाल- जिस समय लग्न स्पष्ट करना हो उस समय के स्वदेशीय स्टैण्डर्ड - टाईम में अभीष्ट नगर (जहां का लग्न स्पष्ट करना हो, वहां) के स्टैण्डर्ड - अन्तर के मिनटादि(या घण्टादि) को चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगर का **''स्थानीयमध्यमकाल''** बन जाता है + यह चिह्न जोड़ने की एवं- यह चिह्न घटाने की प्रक्रिया को बतलाता है ।

जैसे- चण्डीगढ में दोपहर के १२घं. ५७ मि. (भा. स्टैं टा.) पर स्थानीयमध्यकाल जानने के लिए इस (भा. स्टैं टा.)में से चण्डीगढ का स्टैण्डर्ड अन्तर -२२ मिनट ३२ सेकण्ड चिन्हानुसार घटाया, तो १२ घं. ३४ मि. २८ सें. स्थानीयमध्यमकाल बना।

१सितं.१९४२ ई. से १५ अक्तू १९४५ ई. तक भारत में युद्ध के कारण घड़ियां एक घण्टा आगे की गई थी । अत: इन दिनों में घड़ियों द्वारा जाने गए टाईम में से १ घण्टा घटा कर उसे भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समझना चाहिए।

जैसे- सन्१९४४ की २० अग. को काई बच्चा भारत में युद्ध के समयानुसार दिन में १२ बज कर ४५ मि. पर पैदा हुआ । इसका जन्मपत्र बनाने के लिए हमें इस बच्चे का जन्म काल भा. स्टै.टा. के अनुसार ११ घं ४५ मि. मानना होगा ।

(५) अभीष्ट तारीख का अयनांश - आगे दो [नं.(१) और नं.(२)]अयनांशसारणियां दी गई है । अयनांशसारणी नं.(१) में से अभीष्ट सन् के आगे लिखाअंशादि अयनांश लें, और अयनांशसारणी नं. (२) में से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का विकलादि फल लेकर उसमें जोड़ दें; - यह अभीष्ट तारीख का अयनांश होगा ।

जैसे - १५ जुलाई १९६९ ई. को अयनांश जानने के लिए अयनांशसारणी नं.(१) में से सन् १९६९ ई. के आगे लिखा अयनांश २३अं.२५ क २६ वि. प्राप्त किया । इसमें अयनांशसारणी नं.(२)से प्राप्त की गई १५ जुलाई की २७ वि. जोडने पर २३ अं.२५क. ५६ वि. हमारा अभीष्ट अयनांश हुआ ।

(६) इष्टकालिक साम्पातिककाल - आगे साम्पातिककाल के चार कोष्ठक दिए गये है । इनके आधार पर इष्टकालिक साम्पातिककाल इस प्रकार सरलता से बनाया जा सकता है-

सां. का. कोष्ठक नं. (१) में से अभीष्ट सन् का सां. का. उठाएं। उसमें साम्पातिक काल कोष्ठक नं.(२)से अभीष्टमास की अभीष्ट तारीख का (लीप ईयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख की जगह उससे एक आगे की तारीख का) सां. का. लेकर जोड़ें । इसमें सां. का. कोष्ठक नं.(३)से अभीष्ट नगर के रेखांशों द्वारा सैकण्डात्मक संस्कार उठा कर चिन्हानुसार जोडें या घटाएं । इस प्रकार मिले सां. का के घं. मि. में अभीष्ट स्थानीयमध्यमकाल(जिसका साधन पहले बताया जा चुका है) के घण्टा- मिनटादि जोडें और फिर इस योगफल में स्थानीयमध्यमकाल के घण्टा- मिनटों द्वारा सां. का. कोष्ठक नं.(४)से प्राप्त किए गए मिनटादि जोड़ देने से इष्टसमय का घण्टादि सां. का बन जाएगा । इस प्रकार बना सां. का. यदि २४ घं. से अधिक हो तो उसमें से २४ घटा कर शेष ही ग्रहण करना चाहिए ।

साम्पातिककाल साधन का उदाहरण - यहां हम १५ जुलाई १९६९ को भा. स्टै.टा. के अनुसार प्रात: १०घं.४५मि. पर चम्बा (हि. प्र.)में सां. का. स्पष्ट करेगें । अक्षांशादि सारणी में चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. (उत्तर), रेखांश७६ अं. १०क.(पूर्व)एंव स्टैं. अन्तर - २५ मि. २० से. है । स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण चिह्न वाला है, अत: इसे १० घण्टे४५ मि. में से घटाने पर १० घं. १९ मि. ४० से. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल हुआ । सां. का . कोष्ठक नं. (१)से सन् १९६९ ई. का सां. का. (६घं.४१ मि. २ से.) लिया । इसमें कोष्ठक नं.(२)सें लिया गया १५ जुला. का सां.का. (१२घं. ४८ मि. ४९ से.)जोड़ा तो १९ घं.२९ मि. ५१ सै. हुआ । चम्बा के रेखांश७६अं.१० क. के लिए कोष्ठक नं.(३)वाला संस्कार तो० है। अब १९घं. २९ मि. ५१सैं. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल १०घं.१९मि ४० सै. जोडा तो २९घं. ४९मि. ३१ सै. हुए। इसमें कोष्ठक न. (४)से स्थानीयमध्यमकाल के १०घं. २० मि. उठाए गए १ मि. ४२सै. जोड़ने पर २९ घं. ५१ मि. १३ से. हुए । क्योकि यहां घण्टे२४से अधिक हैं अत:२४ घं. घटाए तो ५घं. ५१मि. १३से. अभीष्ट साम्पातिककाल हुआ ।

साम्पातिककाल बनाते समय नीचे लिखी इन बातों को भी ध्यान में रखें:-

(१)यदि धन (+)चिह्न वाले स्टैण्डर्डअन्तर (स्टैं. अं.)के मिनटों को स्टैण्डर्ड टाईम में जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. या इससे ज्यादा हो जाए तब उसमें से २४ घण्टा घटा दें और ऊपर बतलाई विधि से प्राप्त साम्पातिककाल में ४ मि. जोड कर उसे शुद्ध साम्पातिककाल समझें । जैसे - कलकता में २जन. १९७४ ई. को २३ घंटा ५५ मि. (रात के ११ बज कर ५५ मि.) भा. स्टै. टा. पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । कलकत्ता का रेखांश ८८अं. २४ क, (पूर्व)और स्टैं. अन्तर +२३ मि. ३६ से. है। **स्थानीयमध्यमकाल बनाने** के लिए२३ घं. ५५ मि. में २३ मि. ३६ सै. जोड़े तो २४ घं. १८ मि. ३६से. हुए यह २४ घं. से ज्यादा हो गया है , अत: इसमें से २४ घं. घटाने पर ० घं. १८ मि. ३६ से.

स्थानीयमध्यमकाल हुआ । अब सां. का. बनाने के लिए कोष्टक नं.(१) से १९७४ के आगे लिखे ६ घं. ४० मि. १२ से. में कोष्ठक नं.(२) से लिए गए २ जन. के ० घं. ३ मि. ५७ से. जोडने पर ६ घं. ४४ मि. ९ से. हुए। इसमें कोष्ठक नं. (३) से कलकता के रेखांश ८८ से प्राप्त −८ से. चिह्न के अनुसार घटाए, तो ६ घं. ४४ मि. १ से. हुए । इसमें स्थानीयमध्यमकाल जोड़ने पर ७ घं., २ मि. ३७ से. हुए । इसमें कोष्ठक नं.(४) से स्थानीयमध्यमकाल के ० घं. १९ मि. द्वारा प्राप्त ३ से. जोडने पर ७घं. २ मि. ४० से. हुए । क्योंकि स्टैं .टा. में स्टैं. अन्तर के मिनट जोडने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. से ज्यादा हो गया था । अतः उपरोक्त नियमानुसार इसमें ४ मि. और जोड़ने पर ७ घं. ६ मि. ४० से. हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल बना । लग्न और दशम को स्पष्ट करने के लिए इसी सां. का. को प्रयोग में लाइए ।

(२)सां. का. बनाते समय दूसरी ज्ञात यह भी ध्यान में रखें कि यदि स्टैं. टा. से ऋण चिह्न वाले स्टैं. अन्तर के मिनटादि अधिक हों तो स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए स्टैं. टा. में २४ घंटे जोड कर स्टैं. अन्तर घटाना चाहिए और ऐसी स्थिति में सा.का. कोष्ठक नं. (४)का प्रयोग नहीं करना चाहिए । जैसे- जयपुर में १५ मार्च १९७० को ०घं. १५ मि.(भा. स्टै. टा.) पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । जयपुर के रेखांश ७५ अं. ५२ क. (पूर्व)और स्टैं अं.- २६ मि. ३२ से. है । यहां स्टैं टा. के घं. मि. में से स्टैं. अं. ज्यादा है, अतः स्टैं. टा. में २४ घं. जोड़ कर स्टैं अं. घटाने पर २३ घं. ४८ मि. २८ से. स्थानीयमध्यमकाल बना । सां. का. के कोष्ठक नं.(१)से प्राप्त १९७० ई. के ६ घं. ४० मि. ५ से. में कोष्ठक नं. (२) से प्राप्त १५ मार्च के ४ घं. ४७ मि. ४९ से जोड़ने पर ११ घं. २७ मि. ५४ से. हुए । जयपुर के रेखांश ७६ (पूर्व) का कोष्ठक नं. ३ वाला संस्कार लगभग ० है । अब ११ घं. २७ मि. ५४ से. में स्थानीयमध्यमकाल जोड़ा तो ३५ घं. १६ मि. २२ से. हुए । क्योंकि हमारा स्टैं. टा. हमारे नगर के ऋण स्टैं. अं. से कम था अतः यहां साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(४)का प्रयोग हम नहीं करेंगे । इसलिए हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल ११घं. १६ मि. २२ से. ही हुआ । यहां घंटे २४ से अधिक होने से उसमें से २४ घंटे घटा दिए गए हैं।

(३)जैसाकि हम पहिले भी लिख चुके हैं - लीप इयर (२९ फरवरी वाले साल)में फरवरी के बाद के महीनों की किसी तारीख का सां. का. बनाना हो तो उस तारीख में एक जोड़ कर साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२) को प्रयोग में लाना चाहिए। जैसे -मान लीजिए, १५ मार्च सन् १९८४ को किसी नगर में सां. का. स्पष्ट करना है। साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (१) में सन् १९८४ के आगे लिखे ६ घं. ३७ मि. १७ से. मिलें । क्योंकि हमारा सन् लीप इयर है और हमारी तारीख (१५ मार्च)फरवरी के बाद की भी है, इसलिए ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)'' में से हम १५ मार्च की जगह १६ मार्च के घं. मि. सै. (४ घं.५१ मि. ४५ से.)ही लेगें और इन्हें ही ६ घं. ३७मि. १७ से. में जोड़ेंगे । ध्यान रहे- यदि सन् १९८४ की १० फर. को हमें सां. का. स्पष्ट करना हो तो ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(२)''से १० फर.के ही घं. मि. से. उठाने होगें ।

साम्पातिककाल से लग्नसाधन की विधिः-

उपर दी गई विधि से जाने गए अभीष्ट सां. का. (साम्पातिककाल) के घं. मि. को आगे दी गई लग्नसारणी के बाईं और वाले पहिले कालम में देखें । इसके आगे अभीष्ट नगर के अक्षांश के नीचे जो लग्न की अंश कला लिखी हैं, उन्हें अलग नोट कर लें। क्योंकि सारणी में सां. का. ३०-३० मिनटों के अन्तर पर और लग्नसारणी ३-३ अक्षांशों के अन्तर पर दी हुई है । अतः अधिकतर यहां सम्भव है कि आपको लग्न सारणी में अभीष्ट सां. का. के घं. मिं. न मिले और यह भी अधिकतर सभव है कि आपको लग्नसारणी में अभीष्ट सां का. के घं. मि. न मिलें और यह भी सम्भव है कि अभीष्ट अक्षांश वाली लग्नसारणी भी न मिले । ऐसी स्थिति में सारणी में अभीष्ट सां. का. के समीपतम (अभीष्ट सां. का. से कम)सां. का. के आगे और अपने अभीष्ट अक्षांश के समीपतम(अभीष्ट अक्षांश से कम) अक्षांश वाली लग्नसारणी में लिखीं लग्न की अंश - कलाएं नोट करें - यह ''स्थूलतम लग्न''है । अब ३० मि. में लग्न की गति सारणी से ही ज्ञात कीजिए, (अर्थात् यह ज्ञात कीजिए कि ३०मि. में लग्न कितना आगे बढ़ता है) ३० मि. की लग्नगति की कलाओं को सां. का. के शेष मिनटों से गुणा करके ३० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''स्थूलतम लग्न'' में जोड़ देने से ''स्थूललग्न'' बन जाएगा। अब सारणी से ही ३ अक्षांशों की लग्न की गति मालूम करें । ३ अक्षांशों में लग्न घटता है तो यह ''३ अक्षाशों की लग्नगति'' ऋण, अन्यथा धन होगी । अपने अक्षांश की शेष अंश - कलाओं की कलाएं बना कर उन्हें ''३ अक्षाशों की लग्नगति'' की कलाओं से गुणा करके १८० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''३ अक्षाशों की लग्नगति'' के धन,ऋण चिह्न के अनुसार स्थूललग्न में जोड़ने या घटाने से सायनलग्न स्पष्ट होगा । इसमें से उस दिन के अयनांश घटा देने पर फलितोपयोगी निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

दशमलग्न स्पष्ट करने की विधि :- लग्नसारणी के दूसरे कालम में दशम (दशमलग्न)दिया गया है । इससे सभी नगरों में दशमलग्न स्पष्ट किया जा सकता है (अर्थात् -दशम स्पष्ट करने के लिए अंक्षाशों की जरूरत नहीं होती।) अभीष्ट सां. का. के घं. मि. के आगे सारणी में दशम (दशमलग्न)की अंश-कलाएं उठा लें। यह ''स्थूलदशमलग्न'' है। सां.का. के शेष मिनटों से दशमलग्न की ३० मि. की गति की कलाओं को गुणा करके ३०से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी। इन्हें ''स्थूलदशमलग्न'' में जोड़ने पर इष्टकालिक सायनदशम होगा । इसमें से उसदिन का अयनांश घटा देने पर निरयण दशमलग्न स्पष्ट हो जाएगा।

लग्नसाधन का उदाहरणः-चम्बा (हि.प्र.) में १५ जुलाई सन् १९६९ को प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा. स्टै. टा.)पर लग्न स्पष्ट करना है ।

ऊपर हमने चम्बा में १५ जुलाई १९६९ को प्रातः १० घंटे ४५मि. (भा. स्टै. टा.)पर सां.का. ५ घं. ५१ मि. १३ सै. स्पष्ट किया है । चम्बा के अक्षांश ३२ अं.२९ क. है । लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे लग्न १७३ अं. ३४ क. लिखा है । यह ''स्थूलतम लग्न''है । लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां का. ५ घं. ३० मि. के आगे १७३ अं. ३४ क. और सां. का.६घं. ० मि. के आगे १८० अं.० क. लिखा है । इन दोनों का अन्तर ६अं. २६ क. (=३८६क.) लग्न की ३० मि. की गति है । हमारे अभीष्ट सां. का. ५ घं. ५१ मि. और ५ घं. ३० मि. का अन्तर २१ मि. है । इन २१ मि. (सा.का.के शेष मिनटों) से लग्न की ३० मिनट की गति कलाओं (३८६) को गुणा करके ३० का भाग देने पर २७० क. (= ४ अं. ३० क.) मिलीं। इन्हें '' स्थूलतम लग्न '' में जोड़ने पर १७८ अं. ४ क. ''स्थूल लग्न '' हुआ ।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) {भाग १ म}

साम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए		अक्षांश ८°(उ.)		अक्षांश ११°(उ.)		अक्षांश १४°(उ.)		अक्षांश १७°(उ.)		अक्षांश २०°(उ.)	
		दशम		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
०	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४
०	३०	८	१०	१००	३	१०१	१५	१०२	२७	१०३	४१	१०४	५७
१	०	१६	१७	१०६	५४	१०८	३	१०९	१३	११०	२४	१११	३६
१	३०	२४	१८	११३	४७	११४	५३	११५	५९	११७	६	११८	१४
२	०	३२	११	१२०	४३	१२१	४५	१२२	४७	१२३	५०	१२४	५२
२	३०	३९	५५	१२७	४५	१२८	४३	१२९	४०	१३०	३६	१३१	३३
३	०	४७	२८	१३४	५४	१३५	४५	१३६	३६	१३७	२७	१३८	१८
३	३०	५४	५१	१४२	१०	१४२	५५	१४३	३९	१४४	२२	१४५	६
४	०	६२	५	१४९	३३	१५०	१०	१५०	४६	१५१	२३	१५१	५८
४	३०	६९	१२	१५७	३	१५७	३१	१५८	०	१५८	२७	१५८	५५
५	०	७६	११	१६४	३८	१६४	५८	१६५	१७	१६५	३६	१६५	५४
५	३०	८३	७	१७२	१८	१७२	२८	१७२	३८	१७२	४७	१७२	५७
६	०	९०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०
६	३०	९६	५३	१८७	४२	१८७	३२	१८७	२२	१८७	१३	१८७	३
७	०	१०३	४९	१९५	२२	१९५	२	१९४	४३	१९४	२४	१९४	६
७	३०	११०	४८	२०२	५७	२०२	२९	२०२	०	२०१	३३	२०१	५
८	०	११७	५५	२१०	२७	२०९	५०	२०९	१४	२०८	३७	२०८	२
८	३०	१२५	९	२१७	५०	२१७	५	२१६	२१	२१५	३८	२१४	५४
९	०	१३२	३२	२२५	६	२२४	१५	२२३	२४	२२२	३३	२२१	४२
९	३०	१४०	५	२३२	१५	२३१	१७	२३०	२०	२२९	२४	२२८	२७
१०	०	१४७	४९	२३९	१७	२३८	१५	२३७	१३	२३६	१०	२३५	८
१०	३०	१५५	४२	२४६	१३	२४५	७	२४४	१	२४२	५४	२४१	४६
११	०	१६३	४३	२५३	६	२५१	५७	२५०	४७	२४९	३६	२४८	२४
११	३०	१७१	५०	२५९	५७	२५८	४५	२५७	३३	२५६	१९	२५५	३
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६

साम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए		अक्षांश ८°(उ.)		अक्षांश ११°(उ.)		अक्षांश १४°(उ.)		अक्षांश १७°(उ.)		अक्षांश २०°(उ.)	
		दशम		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६
१२	३०	१८८	१०	२७३	४१	२७२	२७	२७१	११	२६९	५३	२६८	३३
१३	०	१९६	१७	२८०	३९	२७९	२५	२७८	९	२७६	५०	२७५	२९
१३	३०	२०४	१८	२८७	४३	२८६	३०	२८५	१५	२८३	५७	२८२	३५
१४	०	२१२	११	२९४	५७	२९३	४६	२९२	३३	२९१	१६	२८९	५५
१४	३०	२१९	५५	३०२	२१	३०१	१४	३००	४	२९८	५०	२९७	३२
१५	०	२२७	२८	३०९	५८	३०८	५६	३०७	५१	३०६	४२	३०५	२८
१५	३०	२३४	५१	३१७	४९	३१६	५४	३१५	५५	३१४	५३	३१३	४५
१६	०	२४२	५	३२५	५४	३२५	७	३२४	१७	३२३	२३	३२२	२५
१६	३०	२४९	१२	३३४	१२	३३३	३५	३३२	५५	३३२	१२	३३१	२६
१७	०	२५६	११	३४२	४१	३४२	१५	३४१	४८	३४१	१८	३४०	४५
१७	३०	२६३	७	३५१	१८	३५१	५	३५०	५१	३५०	३६	३५०	१९
१८	०	२७०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८	३०	२७६	५३	८	४१	८	५५	९	९	९	२४	९	४१
१९	०	२८३	४९	१७	१९	१७	४५	१८	१२	१८	४२	१९	१५
१९	३०	२९०	४८	२५	४८	२६	२५	२७	५	२७	४८	२८	३४
२०	०	२९७	५५	३४	६	३४	५३	३५	४३	३६	३७	३७	३५
२०	३०	३०५	९	४२	११	४३	६	४४	५	४५	७	४६	१४
२१	०	३१२	३२	५०	२	५१	४	५२	९	५३	१८	५४	३२
२१	३०	३२०	५	५७	३९	५८	४६	५९	५६	६१	१०	६२	२८
२२	०	३२७	४९	६५	३	६६	१४	६७	२७	६८	४४	७०	५
२२	३०	३३५	४२	७२	१७	७३	३०	७४	४५	७६	३	७७	२५
२३	०	३४३	४३	७९	२१	८०	३५	८१	५१	८३	१०	८४	३१
२३	३०	३५१	५०	८६	१९	८७	३३	८८	४९	९०	७	९१	२७
२४	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४

अब लग्न सारणी में ३२ अक्षांश और ३५ अक्षांश वाले कालमों में सां.का. ५घं. ३० मि. के आगे क्रमशः १७३ अं. ३४ क. और १७३ अं. ४४ क. लिखा है। इन दोनों का अन्तर १० क. हुआ। यह लग्न की "३ अक्षांश की गति" है। क्योंकि लग्न ३५ अक्षांश में बढ़ रहा है। अतः यह गति धन है। ३२ अक्षांश और चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. का अन्तर २९ क. है। इससे ३ अक्षांश की लग्न की गति कलाओं (१०) को गुणा करके १८० से भाग देने पर लब्धि १ क. मिली। क्योंकि ३ अक्षांशों की लग्न गति धन है अतः इसे "स्थूल लग्न" में जोड़ने पर १७८ अं. ५ क. सायन लग्न हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३अं. २६क. घटा देने पर १५४ अं. ३९ क. (=५ रा ४ अं. ३९ क.) निरयणलग्न बन गया।

दशमलग्न साधन का उदाहरण- १५ जुला. १९६९ ई. को प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा.स्टै.टा.) पर को चम्बा, हि.प्र. में दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय चम्बा में सां का ५ घं. ५१ मि. है। लग्नसारणी के दूसरे कालम में सां.का. ५ घं. ३० मिनट के आगे दशमलग्न८३ अं.७क. है, यह "स्थूल दशमलग्न" है। सारणी में सां.का. ५ घं.३०मि. और ६ घं. ० मि. के आगे क्रमशः ८३ अं. ७ क. एवं ९० अं. ० क. है इन दोनों का अन्तर ६ अं. ५३ क. (=४१३ क.) है, यह ३० मि. की दशमलग्न की गति है। इन कलाओं को सां. का. के शेष मि. (५ घं. ५१ मि.- ५घं. ३० मि.=२१ मि.) से गुणा करके ३० का भाग देने पर २८९ क. (=४अं.४९क.) मिली। इन्हें "स्थूलदशमलग्न" में जोड़ने पर ८७ अं. ५६ क. सायन दशमलग्न स्पष्ट हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २६ क. घटा देने पर ६४ अं.३० क. (=२ रा.४अं. ३०क.) इष्टकालिक निरयण दशम लग्न हुआ।

ध्यान दें- यहां हमने सां.का. के सेकण्ड और अयनांश की विकलाओं को अनावश्यक समझकर छोड़ दिया है। क्योंकि लग्न और दशम में विकलाओं तक की सूक्ष्मता लाने का प्रयास वस्तुतः अर्थहीन है। कला तक की सूक्ष्मता भी लग्न में संभव नहीं है; इस तथ्य का विस्तार पूर्वक स्पष्टीकरण गणित द्वारा "गणकमार्तण्ड" में हमने किया है वहाँ पढ़ें।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) {भाग २ य}

साम्पातिक काल		सभी स्थानों के लिए		अंक्षाश २३° (उ.)		अंक्षाश २६° (उ.)		अंक्षाश २९° (उ.)		अंक्षाश ३२° (उ.)		अंक्षाश ३५° (उ.)	
		दशम		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
०	०	०	०	९९	३५	१००	५९	१०२	२६	१०३	५७	१०५	३४
०	३०	८	१०	१०६	१४	१०७	३४	१०८	५७	११०	२४	१११	५३
१	०	१६	१७	११२	४९	११४	४	११५	२२	११६	४३	११८	७
१	३०	२४	१८	११९	२२	१२०	३३	१२१	४५	१२३	०	१२४	१७
२	०	३२	११	१२५	५६	१२७	०	१२८	७	१२९	१७	१३०	२५
२	३०	३९	५५	१३२	३१	१३३	२९	१३४	२९	१३५	३०	१३६	३२
३	०	४७	२८	१३९	३	१४०	००	१४०	५२	१४१	४५	१४२	४०
३	३०	५४	५१	१४५	५०	१४६	३४	१४७	१८	१४८	४	१४८	५०
४	०	६२	५	१५२	३४	१५३	१०	१५३	४७	१५४	२४	१५५	९
४	३०	६९	१२	१५९	२२	१५९	५०	१६०	१७	१६०	४६	१६१	१४
५	०	७६	११	१६६	१३	१६६	३२	१६६	५०	१६७	९	१६७	२८
५	३०	८३	७	१७३	६	१७३	१५	१७३	२५	१७३	३४	१७३	४४
६	०	९०	०	१८०	००	१८०	००	१८०	०	१८०	०	१८०	०
६	३०	९६	५३	१८६	५४	१८६	४५	१८६	३५	१८६	२६	१८६	१६
७	०	१०३	४९	१९३	४७	१९३	२८	१९३	१०	१९२	५१	१९२	३२
७	३०	११०	४८	२००	३८	२००	१०	१९९	४३	१९९	१४	१९८	४६
८	०	११७	५५	२०७	२६	२०६	५०	२०६	१३	२०५	३६	२०४	५९
८	३०	१२५	५९	२१४	१०	२१३	२६	२१२	४२	२११	५६	२११	१०
९	०	१३२	३२	२२०	५१	२२०	००	२१९	८	२१८	१५	२१७	२०
९	३०	१४०	५	२२७	२९	२२६	३१	२२५	३१	२२४	३०	२२३	२८
१०	००	१४७	४९	२३४	४	२३३	०	२३१	५३	२३०	४५	२२९	३५
१०	३०	१५५	४२	२४०	३८	२३९	२७	२३८	१५	२३७	०	२३५	४३
११	०	१६३	४३	२४७	११	२४५	५६	२४४	३८	२४३	१७	२४१	५३
११	३०	१७१	५०	२५३	४६	२५२	२६	२५१	३	२४९	३६	२४८	७
१२	०	१८०	००	२६०	२५	२५९	३	२५७	३४	२५६	३	२५४	२६

साम्पातिक काल		सभीस्थलों के लिए		अंक्षाश २३° (उ.)		अंक्षाश २६° (उ.)		अंक्षाश २९° (उ.)		अंक्षाश ३२° (उ.)		अंक्षाश ३५° (उ.)	
		दशम		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
१२	०	१८०	००	२६०	२५	२५९	१	२५७	३४	२५६	३	२५४	२६
१२	३०	१८८	१०	२६७	१०	२६५	४३	२६४	१२	२६२	३६	२६०	५४
१३	०	१९६	१७	२७४	३	२७२	३४	२७१	०	२६९	२१	२६७	३३
१३	३०	२०४	१८	२८१	९	२७९	३९	२७८	२	२७६	१९	२७४	२९
१४	०	२१२	११	२८८	३०	२८६	५९	२८५	२२	२८३	३६	२८१	४५
[illegible]	[illegible]	२१९	५५	२९६	९	२९४	४०	२९३	४	२९१	२०	२८९	२६
१५	०	२२७	२८	३०४	१०	३०२	४४	३०१	१२	२९९	२८	२९७	३८
१५	३०	२३४	५१	३१२	३३	३११	१५	३०९	४८	३०८	१३	३०६	२५
१६	०	२४२	५	३२१	२२	३२०	१३	३१८	५६	३१७	३०	३१५	५४
१६	३०	२४९	१२	३३०	३५	३२९	३९	३२८	३६	३२७	२५	३२६	४
१७	०	२५६	११	३४०	९	३३९	३०	३३८	४५	३३७	५४	३३६	५५
१७	३०	२६३	७	३५०	००	३४९	४०	३४९	१६	३४८	४९	३४८	१९
१८	०	२७०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८	३०	२७६	५३	१०	०	१४	२०	१०	४४	११	११	११	४१
१९	०	२८३	४९	१९	५१	२०	३०	२१	१५	२२	६	२३	४
१९	३०	२९०	४८	२९	२५	३०	२१	३१	२४	३२	३५	३३	५६
२०	०	२९७	५५	३८	३८	३९	४७	४१	४	४२	३०	४४	६
२०	३०	३०५	९	४७	२७	४८	४५	५०	१२	५१	४७	५३	३५
२१	०	३१२	३२	५५	५०	५७	१६	५८	४८	६०	३२	६२	२२
२१	३०	३२०	५	६३	५१	६५	२०	६६	५६	६८	४०	७०	३४
२२	०	३२७	४९	७१	३०	७३	१	७४	३८	७६	२४	७८	१५
२२	३०	३३५	४२	७८	५१	८०	२१	८१	५८	८३	४१	८५	३१
२३	०	३४३	४३	८५	५६	८७	२६	८९	०	९०	३९	९२	२६
२३	३०	३५१	५०	९२	५०	९४	१७	९५	४८	९७	२४	९९	६
२४	०	०००	०	९९	३५	१००	५९	१०२	२६	१०३	५७	१०५	३४

साम्पातिककाल कोष्ठक नं. १

सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.
१९७१	६ ३९ ०७	१९७८	६ ४० १९	१९८५	६ ४१ ३२	१९९२	६ ३८ ४७	१९९९	६ ३९ ५९	२००६	६ ४१ ११	२०१३	६ ४२ २३	२०२०	६ ३९ ३९
१९७२	६ ३८ १०	१९७९	६ ३९ २२	१९८६	६ ४० ३५	१९९३	६ ४१ ४६	२०००	६ ३९ ०२	२००७	६ ४० १४	२०१४	६ ४१ २६	२०२१	६ ४२ ३८
१९७३	६ ४१ १०	१९८०	६ ३८ २४	१९८७	६ ३९ ३८	१९९४	६ ४० ४९	२००१	६ ४२ ०१	२००८	६ ३९ १७	२०१५	६ ४० २९	२०२२	६ ४१ ४०
१९७४	६ ४० १२	१९८१	६ ४१ २३	१९८८	६ ३८ ४०	१९९५	६ ३९ ५२	२००२	६ ४१ ०४	२००९	६ ४२ १६	२०१६	६ ३९ ३१	२०२३	६ ४० ४३
१९७५	६ ३९ १५	१९८२	६ ४० २६	१९८९	६ ४१ ३९	१९९६	६ ३८ ५४	२००३	६ ४० ०७	२०१०	६ ४१ १९	२०१७	६ ४२ ३१	२०२४	६ ३९ ४६
१९७६	६ ३८ १७	१९८३	६ ३९ २९	१९९०	६ ४० ४१	१९९७	६ ४१ ५३	२००४	६ ३९ ०९	२०११	६ ४० २१	२०१८	६ ४१ ३३	२०२५	६ ४२ ४५
१९७७	६ ४१ १६	१९८४	६ ३८ ३२	१९९१	६ ३९ ४४	१९९८	६ ४० ५६	२००५	६ ४२ ०९	२०१२	६ ३९ २४	२०१९	६ ४० ३६	२०२६	६ ४१ ४८

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० २

ता.	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर	ता.
↓	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	↓
१	० ० ०	२ २ १३	३ ५२ ३७	५ ५४ ५१	७ ५३ ७	९ ५५ २१	११ ५३ ३८	१३ ५५ ५०	१५ ५८ ४	१७ ५६ २१	१९ ५८ ३४	२१ ५६ ५०	१
२	० ३ ५७	२ ६ ९	३ ५६ ३३	५ ५८ ४७	७ ५७ ४	९ ५९ १७	११ ५७ ३४	१३ ५९ ४७	१६ २ ०	१८ ० १७	२० २ ३१	२२ ० ४७	२
३	० ७ ५३	२ १० ६	४ ० ३०	६ २ ४३	८ १ ०	१० ३ १४	१२ १ ३१	१४ ३ ४४	१६ ५ ५७	१८ ४ १४	२० ६ २७	२२ ४ ४३	३
४	० ११ ५०	२ १४ २	४ ४ २६	६ ६ ४०	८ ४ ५७	१० ७ १०	१२ ५ २७	१४ ७ ४०	१६ ९ ५३	१८ ८ १	२० १० २४	२२ ८ ४०	४
५	० १५ ४६	२ १७ ५९	४ ८ २३	६ १० ३६	८ ८ ५३	१० ११ ७	१२ ९ २४	१४ ११ ३६	१६ १३ ५०	१८ १२ ७	२० १४ २०	२२ १२ ३६	५
६	० १९ ४३	२ २१ ५५	४ १२ १९	६ १४ ३३	८ १२ ५०	१० १५ ३	१२ १३ २१	१४ १५ ३३	१६ १७ ४६	१८ १६ ३	२० १८ १७	२२ १६ ३३	६
७	० २३ ३९	२ २५ ५२	४ १६ १६	६ १८ २९	८ १६ ४६	१० १९ ०	१२ १७ १७	१४ १९ २९	१६ २१ ४३	१८ २० ०	२० २२ १३	२२ २० ३०	७
८	० २७ ३६	२ २९ ४८	४ २० १२	६ २२ २६	८ २० ४३	१० २२ ५६	१२ २१ १४	१४ २३ २६	१६ २५ ४०	१८ २३ ५७	२० २६ १०	२२ २४ २७	८
९	० ३१ ३२	२ ३३ ४५	४ २४ ९	६ २६ २२	८ २४ ३९	१० २६ ५३	१२ २५ १०	१४ २७ २३	१६ २९ ३७	१८ २७ ५४	२० ३० ६	२२ २८ २३	९
१०	० ३५ २९	२ ३७ ४२	४ २८ ५	६ ३० १९	८ २८ ३६	१० ३० ४९	१२ २९ ६	१४ ३१ २०	१६ ३३ ३३	१८ ३१ ५०	२० ३४ ३	२२ ३२ २०	१०
११	० ३९ २५	२ ४१ ३९	४ ३२ २	६ ३४ १६	८ ३२ ३२	१० ३४ ४६	१२ ३३ ३	१४ ३५ १६	१६ ३७ ३०	१८ ३५ ४७	२० ३८ ०	२२ ३६ १६	११
१२	० ४३ २२	२ ४५ ३५	४ ३५ ५९	६ ३८ १२	८ ३६ २९	१० ३८ ४२	१२ ३६ ५९	१४ ३९ १३	१६ ४१ २६	१८ ३९ ४३	२० ४१ ५६	२२ ४० १३	१२
१३	० ४७ १८	२ ४९ ३२	४ ३९ ५६	६ ४२ ९	८ ४० २५	१० ४२ ३९	१२ ४० ५६	१४ ४३ ९	१६ ४५ २३	१८ ४३ ४०	२० ४५ ५२	२२ ४४ ९	१३
१४	० ५१ १५	२ ५३ २८	४ ४३ ५२	६ ४६ ६	८ ४४ ४२	१० ४६ ३५	१२ ४४ ५२	१४ ४७ ६	१६ ४९ १९	१८ ४७ ३७	२० ४९ ४९	२२ ४८ ६	१४
१५	० ५५ १२	२ ५७ २५	४ ४७ ४९	६ ५० २	८ ४८ १८	१० ५० ३२	१२ ४८ ४९	१४ ५१ २	१६ ५३ १६	१८ ५१ ३३	२० ५३ ४५	२२ ५२ २	१५
१६	० ५९ ८	३ १ २१	४ ५१ ४५	६ ५३ ५९	८ ५२ १५	१० ५४ २८	१२ ५२ ४५	१४ ५४ ५९	१६ ५७ १२	१८ ५५ ३०	२० ५७ ४२	२२ ५५ ५९	१६
१७	१ ३ ४	३ ५ १८	४ ५५ ४२	६ ५७ ५५	८ ५६ ११	१० ५८ २५	१२ ५६ ४२	१४ ५८ ५५	१७ १ ९	१८ ५९ २६	२१ १ ३९	२२ ५९ ५६	१७
१८	१ ७ १	३ ९ १४	४ ५९ ३८	७ १ ५२	९ ० ८	११ २ २१	१३ ० ३८	१५ २ ५२	१७ ५ ५	१९ ३ २२	२१ ५ ३६	२३ ३ ५३	१८
१९	१ १० ५७	३ १३ ११	५ ३ ३५	७ ५ ४८	९ ४ ४	११ ६ १८	१३ ४ ३५	१५ ६ ४८	१७ ९ २	१९ ७ १९	२१ ९ ३२	२३ ७ ४९	१९
२०	१ १४ ५४	३ १७ ८	५ ७ ३१	७ ९ ४५	९ ८ १	११ १० १५	१३ ८ ३२	१५ १० ४५	१७ १२ ५८	१९ ११ १५	२१ १३ २९	२३ ११ ४६	२०
२१	१ १८ ५१	३ २१ ५	५ ११ २८	७ १३ ४१	९ ११ ५८	११ १४ १२	१३ १२ २९	१५ १४ ४१	१७ १६ ५५	१९ १५ १२	२१ १७ २५	२३ १५ ४२	२१
२२	१ २२ ४८	३ २५ १	५ १५ २५	७ १७ ३८	९ १५ ५५	११ १८ ८	१३ १६ २५	१५ १८ ३८	१७ २० ५१	१९ १९ ८	२१ २१ २२	२३ १९ ३९	२२
२३	१ २६ ४४	३ २८ ५८	५ १९ २२	७ २१ ३४	९ १९ ५१	११ २२ ५	१३ २० २२	१५ २२ ३४	१७ २४ ४८	१९ २३ ५	२१ २५ १८	२३ २३ ३५	२३
२४	१ ३० ४१	३ ३२ ५४	५ २३ १८	७ २५ ३१	९ २३ ४८	११ २६ १	१३ २४ १८	१५ २६ ३१	१७ २८ ४४	१९ २७ १	२१ २९ १५	२३ २७ ३२	२४
२५	१ ३४ ३७	३ ३६ ५१	५ २७ १५	७ २९ २८	९ २७ ४४	११ २९ ५८	१३ २८ १५	१५ ३० २७	१७ ३२ ४१	१९ ३० ५८	२१ ३३ ११	२३ ३१ २८	२५
२६	१ ३८ ३४	३ ४० ४७	५ ३१ ११	७ ३३ २४	९ ३१ ४१	११ ३३ ५४	१३ ३२ ११	१५ ३४ २४	१७ ३६ ३७	१९ ३४ ५४	२१ ३७ ८	२३ ३५ २५	२६
२७	१ ४२ ३०	३ ४४ ४४	५ ३५ ८	७ ३७ २०	९ ३५ ३७	११ ३७ ५१	१३ ३६ ८	१५ ३८ २०	१७ ४० ३४	१९ ३८ ५१	२१ ४१ ४	२३ ३९ २१	२७
२८	१ ४६ २७	३ ४८ ४०	५ ३९ ५	७ ४१ १७	९ ३९ ३४	११ ४१ ४७	१३ ४० ४	१५ ४२ १७	१७ ४४ ३१	१९ ४२ ४८	२१ ४५ १	२३ ४३ १८	२८
२९	१ ५० २३	३ ५२ ३७	५ ४३ १	७ ४५ १३	९ ४३ ३०	११ ४५ ४४	१३ ४४ २	१५ ४६ १४	१७ ४८ २८	१९ ४६ ४५	२१ ४८ ५७	२३ ४७ १४	२९
३०	१ ५४ २०		५ ४६ ५८	७ ४९ १०	९ ४७ २७	११ ४९ ४१	१३ ४८ ५७	१५ ५० ११	१७ ५२ २४	१९ ५० ४१	२१ ५२ ५४	२३ ५१ ११	३०
३१	१ ५८ १६		५ ५० ५४	-	९ ५१ २४		१३ ५१ ५४	१५ ५४ ७		१९ ५४ ३८		२३ ५५ ७	३१
३२												२३ ५९ ३	३२

लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़ कर कोष्ठक नं० २ को प्रयोग में लाइए ।

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ३

...ांश	०°	पू.२०°	पू.४०°	पू.६०°	पू.८०°	पू.१००°	पू.१२०°	पू.१४०°	पू.१६०°
...स्कार सेकण्ड	+५०	+३७	+२४	+११	-२	-१५	-२८	-४१	-५४
...खांश	१८०°	प.१६०°	प.१४०°	प.१२०°	प.१००°	प.८०°	प.६०°	प.४०°	प.२०°
संस्कार सेकण्ड	-६७/+१६१	+१५५	+१४३	+१२९	+११५	+१०३	+८९	+७७	+६३

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ४

मि.	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५
घं.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.
०	० ००	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ७	० ७	० ८	० ९
१	० १०	० ११	० ११	० १२	० १३	० १४	० १५	० १६	० १६	० १७	० १८	० १९
२	० २०	० २१	० २१	० २२	० २३	० २४	० २५	० २५	० २६	० २७	० २८	० २९
३	० ३०	० ३०	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३४	० ३५	० ३६	० ३७	० ३८	० ३९
४	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४३	० ४४	० ४४	० ४५	० ४६	० ४७	० ४८	० ४८
५	- ४९	० ५०	० ५१	० ५२	० ५३	० ५३	० ५४	० ५५	० ५६	० ५७	० ५७	० ५८
६	० ५९	१ ००	१ १	१ २	१ २	१ ३	१ ४	१ ५	१ ६	१ ७	१ ७	१ ८
७	१ ९	१ १०	१ ११	१ ११	१ १२	१ १३	१ १४	१ १५	१ १६	१ १६	१ १७	१ १८
८	१ १९	१ २०	१ २०	१ २१	१ २२	१ २३	१ २४	१ २५	१ २५	१ २६	१ २७	१ २८
९	१ २९	१ ३०	१ ३०	१ ३१	१ ३२	१ ३३	१ ३४	१ ३४	१ ३५	१ ३६	१ ३७	१ ३८
१०	१ ३९	१ ३९	१ ४०	१ ४१	१ ४२	१ ४३	१ ४३	१ ४४	१ ४५	१ ४६	१ ४७	१ ४८
११	१ ४८	१ ४९	१ ५०	१ ५१	१ ५२	१ ५३	१ ५३	१ ५४	१ ५५	१ ५६	१ ५७	१ ५७
१२	१ ५८	१ ५९	२ ०	२ १	२ २	२ २	२ ३	२ ४	२ ५	२ ६	२ ६	२ ७
१३	२ ८	२ ९	२ १०	२ ११	२ ११	२ १२	२ १३	२ १४	२ १५	२ १६	२ १६	२ १७
१४	२ १८	२ १९	२ २०	२ २०	२ २१	२ २२	२ २३	२ २४	२ २५	२ २५	२ २६	२ २७
१५	२ २८	२ २९	२ २९	२ ३०	२ ३१	२ ३२	२ ३३	२ ३४	२ ३४	२ ३५	२ ३६	२ ३७
१६	२ ३८	२ ३९	२ ३९	२ ४०	२ ४१	२ ४२	२ ४३	२ ४३	२ ४४	२ ४५	२ ४६	२ ४७
१७	२ ४८	२ ४८	२ ४९	२ ५०	२ ५१	२ ५२	२ ५२	२ ५३	२ ५४	२ ५५	२ ५६	२ ५७
१८	२ ५७	२ ५८	२ ५९	३ ०	३ १	३ २	३ २	३ ३	३ ४	३ ५	३ ६	३ ६
१९	३ ७	३ ८	३ ९	३ १०	३ ११	३ ११	३ १२	३ १३	३ १४	३ १५	३ १५	३ १६
२०	३ १७	३ १८	३ १९	३ २०	३ २०	३ २१	३ २२	३ २३	३ २४	३ २५	३ २५	३ २६
२१	३ २७	३ २८	३ २९	३ २९	३ ३०	३ ३१	३ ३२	३ ३३	३ ३४	३ ३४	३ ३५	३ ३६
२२	३ ३७	३ ३८	३ ३८	३ ३९	३ ४०	३ ४१	३ ४२	३ ४३	३ ४३	३ ४४	३ ४५	३ ४६
२३	३ ४७	३ ४८	३ ४८	३ ४९	३ ५०	३ ५१	३ ५२	३ ५२	३ ५३	३ ५४	३ ५५	३ ५६

अयनांश सारणी नं० १

ई. सन्	अयनांश	ई. सन्	अयनांश	ई. सन्	अयनांश
	अं. क. वि.		अं. क. वि.		अं. क. वि.
१९५१	२३ १० २१	१९७५	२३ ३० २८	१९९९	२३ ५० ३४
१९५२	२३ ११ १२	१९७६	२३ ३१ १७	२०००	२३ ५१ २४
१९५३	२३ १२ ०२	१९७७	२३ ३२ ०८	२००१	२३ ५२ १५
१९५४	२३ १२ ५२	१९७८	२३ ३२ ५९	२००२	२३ ५३ ०५
१९५५	२३ १३ ४२	१९७९	२३ ३३ ४९	२००३	२३ ५३ ५५
१९५६	२३ १४ ३३	१९८०	२३ ३४ ३९	२००४	२३ ५४ ४६
१९५७	२३ १५ २३	१९८१	२३ ३५ २९	२००५	२३ ५५ ३६
१९५८	२३ १६ १३	१९८२	२३ ३६ २०	२००६	२३ ५६ २६
१९५९	२३ १७ ०३	१९८३	२३ ३७ १०	२००७	२३ ५७ १७
१९६०	२३ १७ ५४	१९८४	२३ ३८ ००	२००८	२३ ५८ ०७
१९६१	२३ १८ ४४	१९८५	२३ ३८ ५१	२००९	२३ ५८ ५७
१९६२	२३ १९ ३५	१९८६	२३ ३९ ४१	२०१०	२३ ५९ ४८
१९६३	२३ २० २५	१९८७	२३ ४० ३१	२०११	२४ ०० ३८
१९६४	२३ २१ १५	१९८८	२३ ४१ २१	२०१२	२४ ०१ २८
१९६५	२३ २२ ०५	१९८९	२३ ४२ १२	२०१३	२४ ०२ १८
१९६६	२३ २२ ५५	१९९०	२३ ४३ ०२	२०१४	२४ ०३ ०९
१९६७	२३ २३ ४६	१९९१	२३ ४३ ५२	२०१५	२४ ०३ ५९
१९६८	२३ २४ ३६	१९९२	२३ ४४ ४२	२०१६	२४ ०४ ४९
१९६९	२३ २५ २६	१९९३	२३ ४५ ३३	२०१७	२४ ०५ ४०
१९७०	२३ २६ १६	१९९४	२३ ४६ २३	२०१८	२४ ०६ ३०
१९७१	२३ २७ ०७	१९९५	२३ ४७ १३	२०१९	२४ ०७ २०
१९७२	२३ २७ ५७	१९९६	२३ ४८ ०३	२०२०	२४ ०८ १०
१९७३	२३ २८ ४७	१९९७	२३ ४८ ५४	२०२१	२४ ०९ ०१
१९७४	२३ २९ ३७	१९९८	२३ ४९ ४४	२०२२	२४ ०९ ५१

अयनांश सारणी नं. २

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जनवरी	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२
अप्रैल	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९
अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३
सितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७
अक्तूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४१
नवम्बर	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४६
दिसम्बर	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४९	४९	४९	५०

महर्षि–पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा ज्ञान–चक्र

सूर्यदशा वर्ष ६ एक घड़ी में ३६ दिन	चंद्रदशा वर्ष १० एक घड़ी में ६० दिन	भौम दशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	राहु दशा वर्ष १८ एक घड़ी में १०८ दिन	गुरु दशा वर्ष १६ एक घड़ी में ९६ दिन	शनिदशा वर्ष १९ एक घड़ी में ११४ दिन	बुधदशा वष १७ एक घड़ी में १०२ दिन	केतुदशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	शुक्रदशा वर्ष २० एक घड़ी में १२० दिन
कृ. उ.फा. उ.षा.	रो. ह. श्रव.	मृ. चि. ध.	आर्द्रा स्वा. श.	पुन. वि. पू.भा.	पु. अनु. उ.भा.	आश्ले. ज्ये. रे.	म. मू. अश्वि.	पू.फा. पूषा. भ.
तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्
ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.
र. ० ३ १८	चं. ० १० ०	मं. ० ४ २७	रा. २ ८ १२	बृ. २ १ १८	श. ३ ० ३	बु. २ ४ २७	के. ० ४ २७	शु. ३ ४ ०
चं. ० ६ ०	मं. ० ७ ०	रा. १ ० १८	बृ. २ ४ २४	श. २ ६ १२	बु. २ ८ ९	के. ० ११ २७	शु. १ २ ०	र. १ ० ०
मं. ० ४ ६	रा. १ ६ ०	बृ. ० ११ ६	श. २ १० ६	बु. २ ३ ६	के. १ १ ९	शु. २ १० ०	र. ० ४ ६	चं. १ ८ ०
रा. ० १० २४	बृ. १ ४ ०	श. १ १ ९	बु. २ ६ १८	के. ० ११ ६	शु. ३ २ ०	र. ० १० ६	चं. ० ७ ०	मं. १ २ ०
बृ. ० ९ १८	श. १ ७ ०	बु. ० ११ २७	के. १ ० १८	शु. २ ८ ०	र. ० ११ १२	चं. १ ५ ०	मं. ० ४ २७	रा. ३ ० ०
श. ० ११ १२	बु. १ ५ ०	के. ० ४ २७	शु. ३ ० ०	र. ० ९ १८	चं. १ ७ ०	मं. ० ११ २७	रा. १ ० १८	बृ. २ ८ ०
बु. ० १० ६	के. ० ७ ०	शु. १ २ ०	र. ० १० २४	चं. १ ४ ०	मं. १ १ ९	रा. २ ६ १८	बृ. ० ११ ६	श. ३ २ ०
के. ० ४ ६	शु. १ ८ ०	र. ० ४ ६	चं. १ ६ ०	मं. ० ११ ०६	रा. २ १० ६	बृ. २ ३ ६	श. १ १ ९	बु. २ १० ०
शु. १ ० ०	र. ० ६ ०	चं. ० ७ ०	मं. १ ० १८	रा. २ ४ २४	बृ. २ ६ १२	श. २ ८ ९	बु. ० ११ २७	के. १ २ ०

शिवोक्त योगिनी–दशाऽन्तर्दशा ज्ञानार्थ चक्र

मंगला व. १	पिंगला व. २	धान्या व. ३	भ्रामरी व. ४	भद्रा व. ५	उल्का व. ६	सिद्धा व. ७	संकटा व. ८	दशा तथा वर्ष
चन्द्र	सूर्य	गुरु	मंगल	बुध	शनि	शुक्र	केतु	दशेश ग्रह
आर्द्रा चि. श्रव.	पुन. स्वा. ध.	पुष्य वि. श.	अश्वि आश्ले अनु पूभा	भ. म. ज्ये. उ.भा.	कृ. पूफा. मू. रे.	रो. उ.फा. पूषा.	मृ. ह. उ.षा.	जन्म नक्षत्र
मं. ० १०	पिं. १ १०	धा. ३ ०	भ्रा. ५ १०	भ. ८ १०	उ. १२ ०	सि. १६ १०	सं. २१ १०	
पिं. ० २०	धा. २ ०	भ्रा. ४ ०	भ. ६ २०	उ. १० ०	सि. १४ ०	सं. १८ २०	मं. २ २०	
धा. १ ०	भ्रा. २ २०	भ. ५ ०	उ. ८ ०	सि. ११ २०	सं. १६ ०	मं. २ १०	पिं. ५ १०	
भ्रा. १ १०	भ. ३ १०	उ. ६ ०	सि. ९ १०	सं. १३ १०	मं. २ ०	पिं. ४ २०	धा. ८ ०	अन्तर्दशा के
भ. १ २०	उ. ४ ०	सि. ७ ०	सं. १० २०	मं. १ २०	पिं. ४ ०	धा. ७ ०	भ्रा. १० २०	मास, दिन
उ. २ ०	सि. ४ २०	सं. ८ ०	मं. १ १०	पिं ३ १०	धा. ६ ०	भ्रा. ९ १०	भ. १३ १०	
सि. २ १०	सं. ५ १०	मं. १ ०	पिं. २ २०	धा. ५ ०	भ्रा. ८ ०	भ. ११ २०	उ. १६ ०	
सं. २ २०	मं. ० २०	पिं. २ ०	धा. ४ ०	भ्रा. ६ २०	भ. १० ०	उ. १४ ०	सि. १८ २०	

वर्षकुण्डली में १२ भावों में स्थित ग्रहों का फल

ग्रह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	चिन्ता	नृपभय	धनलाभ	हानि	कष्ट	शत्रुनाश	पीड़ा	कष्ट	धर्मनाश	सुख	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्र	पीड़ा	धनलाभ	हर्ष	शत्रुनाश	सुख	पीड़ा	कष्ट	दुःख	भाग्योदय	विजय	धनलाभ	व्यय
भौम	ज्वर	धननाश	जय	व्यसन	दुर्गति	शत्रुनाश	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्यलाभ	धनलाभ	विरोध
बुध	सुख	धनलाभ	सुख	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुख	मानलाभ	सुखलाभ	विग्रह
गुरु	सुख	धनलाभ	जय	वाहनलाभ	पुत्रलाभ	कष्ट	सुख	रोग	धर्मलाभ	राज्यलाभ	धनलाभ	शोक
शुक्र	मानप्राप्ति	धनप्राप्ति	कीर्तिलाभ	सुखलाभ	धनलाभ	शत्रुभीति	स्त्रीसुख	कष्ट	धर्मोदय	मानलाभ	धनलाभ	व्यय
शनि	वायुरोग	पीड़ा	धनलाभ	दुःख	पुत्रप्राप्ति	जय	स्त्रीकष्ट	रोग	भाग्यहानि	धनहानि	धनलाभ	चिन्ता
राहु	सिरदर्द	राजभय	सुख	दुःख	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	रोगभय	दुःख	हानि	विजय	सुखलाभ	व्याधि
केतु	चिन्ता	क्लेश	आरोग्य	राजभय	दुर्बुद्धि	सुख	क्लेश	पीड़ा	भाग्यनाश	धनलाभ	लाभ	शोक
मुन्था	सुख	यश, अर्थ	पुष्टि	दुःख	सुखप्राप्ति	कष्ट	व्यसन	दुःख	भाग्योदय	राज्यप्राप्ति	लाभ	कष्ट

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट–घटीपल जोडने से भयात होता है। ६० में से घटाए हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र के घट्यादि जोडने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें। भयात के पलों को दशा के वर्षों से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध अंक वर्ष, फिर शेषांक को १२ से गुणा करें, भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध मास; फिर शेषांक को ३० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध दिन, फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें, लब्धांक घटी; फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध पल होंगे। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा होगी।

वर्षादि दशा की भुक्त होती है। इसको दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा होगी।

सूर्यसिद्धान्तीय वर्षप्रवेश–सारणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

सूचना– वेधसिद्ध वर्षमान सूर्य सिद्धान्तीय वर्षमान से ८.५पल कम है। अतः सूक्ष्म–वर्षप्रवेशकालिक इष्ट निकालने के लिए गताब्दों को ८.५ से गुणा करके पलात्मक फल को सारणी से साधित इष्ट में से घटा देना चाहिए। यही सूक्ष्म–वर्ष मानानुसारी इष्ट होगा, चाहो तो इस इष्ट पर भी फल अनुमव करें।

वर्षफलसाधन–प्रकारः– (१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष निकालना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे उसे गतवर्ष, (गताब्द) जानें। स्मरण रहे, कि– मेषार्कप्रवेश से प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनतर का यदि वर्ष करना हो तो पिछले संवत् से करना होगा–वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्– इस प्रकार गताब्द निकालकर उसी गताब्द अंक के नीचे सारणी में जो वारादि अंक हैं, उनमें जन्म का वार, इष्ट, घड़ी, पल जोड़ने से वर्षप्रवेशकालिक वारादि इष्ट ज्ञात हो जाता है। यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना। ऊपर से वारांक में सात से अधिक आ जाए तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से शेष को वर्षप्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट समझें।

(२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्ट सूर्यतुल्य वर्ष में सूर्य मिले, उसी दिन वर्षप्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी–कभी वार नहीं मिलता। वहां पर गणितागत वार को ठीक जानें। इस इष्ट के अनुसार स्वदेशीय लग्नसारणी से लग्नसाधन करके वर्षकुण्डली लगाएं।

मुन्थानयनप्रकार– गताब्दसंख्या में जन्मलग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे उसे मुन्था जानें। यह मुन्था प्रति दिन पांच कला चलती है।

मुद्दा दशा– गत वर्ष में जन्मनक्षत्र जोड़कर, उसमें से दो घटाएं, ९ का भाग देने से जो शेष बचे उसे दशा समझें। १ शेष से सूर्य, २ से चन्द्रमा, ३ से मंगल, ४ से राहु, ५ से गुरु, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु और ९ शेष से शुक्र की दशा जानें।

दशा के दिन– सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा के ३०, मंगल २१, राहु ५४, गुरु ४८, शनि ५७, बुध ५१, केतु २१, शुक्र ६० – ये दशा के दिन हैं।

हर्ष स्थान बल– सूर्य वर्ष लग्न से ९, चन्द्रमा ३, मंगल ६, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५वें और शनि १२ वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वोच्च बल– सू. १।५, च. २।४, मं. १।८।१०, बुध ३।६, गुरु ९।१२।४, शु. २।७।१२ तथा श. १०।११ ७ राशियों में ५ बल देते हैं।

पुरुषस्त्री–ग्रह–बल– स्त्रीग्रह (चं., बु., शु., श.) १।२।३।७।८।९ और पुरुष ग्रह (सू., मं., बृ.) ४।५।६।१०।११।१२वें स्थानों में ५ बल देते हैं। **दिनरात्रि बल–** दिन के वर्षेष्ट में पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्रीग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

राशि→	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
दिनलग्नपति→	सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	गु..	चं.
रात्रिलग्नपति→	गु.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.

वर्ष में दृष्टि–ज्ञान और फल

❖ वर्ष में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो उस भाव से ५वें, ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। फल– कार्य में शीघ्र सफलता, सुख, प्रेम, लाभ और जिन मनुष्यों के साथ पहले शत्रुता होती है, उनसे प्रेम होता है। ❖ तीसरे ग्यारहवें गुप्त मित्र दृष्टि से देखता है। फल– कार्य कठिनता से एवं गुप्त भाव से सफल हो।❖ पहले, सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि होती है। फल– शत्रुता करे, मित्र से बैर, धनहानि, बनते काम को बिगड़ना आदि फल होते हैं।❖ ४–१०वें गुप्तशत्रु दृष्टि से देखता है। फल– कार्य बड़ी कठिनता से सफल हो, गुप्तरूप से शत्रु भी उत्पन्न होते हैं।

अथ वर्षेश निर्णयः– जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५ (दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी समयेश होता है।) इन पांच अधिकारियों में से जो सबसे बलवान् हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होता है। यदि पांचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उन में से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा। कई ग्रहों का बल समान हों तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह और बल, दृष्टि, अधिकार– तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश हो। यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे या जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश हो। फल– वर्षेश ६। ८। १२ वें व अस्तंगत, हीनबली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भयविशेष होगा। यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो।

वर्ष में तबदीली का योग– वर्षकुण्डली में लग्नेश– तृतीयेश वा चतुर्थेश–नवमेश एक घर में हों या एक–दूसरे को मित्रदृष्टि से देखें तो उस वर्ष तबदीली होगी। अगर वर्षलग्नेश वक्री हो और वह मित्रग्रह से दृष्ट हो तो भी तबदीली का योग बनेगा।

सूक्ष्म, शुद्ध वर्षमान के अनुसार वर्षप्रवेशकाल

वेध द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि– सूर्यसिद्धान्तीय वर्षमान वास्तविक (शुद्ध) वर्षमान से [illegible] मिनट अधिक है। शुद्ध वर्षफल बनाने के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल का होना आवश्यक है। हम यहां "सूक्ष्म वर्ष–प्रवेश–सारणी" दे रहे हैं। जो दैवज्ञ वर्षफल के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल जानना चाहते हैं, उन्हें इसी सारणी का प्रयोग करना चाहिए।

इस सारणी में घं. मि. का प्रयोग है, अतः इससे वर्षप्रवेशकाल जानने के लिए जातक के जन्म का स्टैं. टा. ही यहां प्रयोग में लाना होगा। जैसे– मान लीजिए, किसी व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेशकाल जानना है। उस व्यक्ति के जन्म का वार चन्द्र और जन्मकाल (भा. स्टैं. टा.) ८घं. २०मि. (प्रातः) है। उसके वारादि जन्मकाल (2 वा. 8 घं. 20 मि.) में सारणी से गताब्द 9 द्वारा प्राप्त वारादि काल 4 वा. 7 घं. 22 मि. जोड़ने पर 6 वा. 15 घं. 42 मि. मिले। इसका अर्थ हुआ कि इस व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेश शुक्रवार को 15 घं. 42 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर होगा।

ध्यान रहे– इस सारणी के प्रयोग से प्राप्त वार रात्रि के 12 बजे बदलने वाला होगा। अतः यहां प्रयोग में लाया जाने वाला जन्मकालिक वार भी इसी प्रकार होना चाहिए।

सूक्ष्म वर्षप्रवेश सारणी

ाब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.
	१/६/९	१३	२/७/५९	२५	३/९/४९	३७	४/११/३९	४९	५/१३/२९	६१	६/१५/१९	७३	०/१७/९	८५	१/१८/५९	९७	२/२०/४९	१०९	३/२२/३९
	२/१२/१८	१४	३/१४/८	२६	४/१५/५८	३८	५/१७/४८	५०	६/१९/३८	६२	०/२१/२८	७४	१/२३/१८	८६	३/१/८	९८	४/२/५८	११०	५/४/४८
	३/१८/२७	१५	४/२०/१७	२७	५/२२/७	३९	६/२३/५७	५१	१/१/४७	६३	२/३/३७	७५	३/५/२७	८७	४/७/१७	९९	५/९/७	१११	६/१०/५७
	५/०/३७	१६	६/२/२७	२८	०/४/१६	४०	१/६/६	५२	२/७/५६	६४	३/९/४६	७६	४/११/३६	८८	५/१३/२६	१००	६/१५/१६	११२	०/१७/६
	६/६/४६	१७	०/८/३६	२९	१/१०/२६	४१	२/१२/१६	५३	३/१४/०६	६५	४/१५/५६	७७	५/१७/४५	८९	६/१९/३५	१०१	०/२१/२५	११३	१/२३/१५
	०/१२/५५	१८	१/१४/४५	३०	२/१६/३५	४२	३/१८/२५	५४	४/२०/१५	६६	५/२२/५	७८	६/२३/५५	९०	१/१/४५	१०२	२/३/३४	११४	३/५/२४
	१/१९/०४	१९	२/२०/५४	३१	३/२२/४४	४३	५/०/३४	५५	६/२/२४	६७	०/४/१४	७९	१/६/४	९१	२/७/५४	१०३	३/९/४४	११५	४/११/३४
	३/१/१३	२०	४/३/३	३२	५/४/५३	४४	६/६/४३	५६	०/८/३३	६८	१/१०/२३	८०	२/१२/१३	९२	३/१४/३	१०४	४/१५/५३	११६	५/१७/४३
	४/७/२२	२१	५/९/१२	३३	६/११/२	४५	०/१२/५२	५७	१/१४/४२	६९	२/१६/३२	८१	३/१८/२२	९३	४/२०/१२	१०५	५/२२/२	११७	६/२३/५२
	५/१३/३२	२२	६/१५/२२	३४	०/१७/११	४६	१/१९/१	५८	२/२०/५१	७०	३/२२/४१	८२	५/०/३१	९४	६/२/२१	१०६	०/४/११	११८	१/६/१
	६/१९/४१	२३	०/२१/३१	३५	१/२३/२१	४७	३/१/११	५९	४/०३/१	७१	५/४/५०	८३	६/६/४०	९५	०/८/३०	१०७	१/१०/२०	११९	२/१२/१०
	१/१/५०	२४	२/३/४०	३६	३/५/३०	४८	४/७/२०	६०	५/९/१०	७२	६/११/०	८४	०/१२/५०	९६	१/१४/४०	१०८	२/१६/२९	१२०	३/१८/१९

वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए।

जिस प्रकार जातक का जन्म जिस स्थान पर होता है उसी स्थान के अक्षांश–[रेखां]शानुसार ही लग्न का निर्णय किया जाता है, ठीक उसी प्रकार वर्षप्रवेश के समय [जा]तक जिस स्थान पर हो उसी स्थान के अक्षांश–रेखांशानुसार ही वर्षप्रवेश का लग्न होना [चा]हिए, क्योंकि वर्ष प्रवेश भी जातक का एक 'उपजन्म' ही है। इस प्रकार न्यूयार्क [(अ)]मेरिका) में जन्म लेने वाला जातक यदि अपने किसी वर्ष के प्रवेश के समय दिल्ली [(भ)]ारत) में मौजूद है तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न दिल्ली के [अ]क्षांश–रेखांशानुसार ही लगाना चाहिए। इसी तरह यदि दिल्ली में जन्म लेने वाला जातक वर्षप्रवेश के समय न्यूयार्क में हो तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न न्यूयार्क के अक्षांश–रेखांशानुसार ही होना चाहिए। क्योंकि प्राचीनकाल में अधिकतर लोग अपने जन्मस्थान को छोड़कर बहुत कम दूसरे स्थान पर जाते थे, अतः ज्योतिषी लोगों में वर्षप्रवेश के लग्न को जन्मस्थान से ही जोड़ने की परम्परा बन गई, जो तर्कसंगत नहीं है।

इस विषय को विस्तार से जानने के लिए सं. 2052 वि. के "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" [illegible] पढ़ें।

मास प्रवेशकाल

भिन्न–भिन्न राशियों में संचार करता हुआ सूर्य जब–जब जातक के जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य की अंश, कला, विकलाओं के तुल्य अंश, कला, विकलाओं पर आता है, तब–तब जातक के मासों का प्रारम्भ (मासप्रवेश) होता है। उदाहरणार्थ– यदि जातक का जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य 2 रा. 10 अं. 25 क. 40 वि. है, तो जब जब (सूर्य) जातक की आयु के विभिन्न वर्षों में मेष आदि राशियों के 10 अं. 25 क. 40 वि. पर पहुँचेगा– इसका निर्णय सूर्य की मास–प्रवेश वाले दिन की गति और उस दिन के पंचांगस्थ दैनिक सूर्य तथा मास–प्रवेशकालिक सूर्य के अन्तर से त्रैराशिक द्वारा किया जा सकता है। (इसके लिए सं. 2050 वि. के "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" में पृष्ठ 41 पर दिया गया मेरा लेख "स्पष्टमान से मास–प्रवेशकाल" पढ़ें।)

–प्रियव्रत शर्मा

ग्रहशील-चक्र

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाः
३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	०	३/१०	३/१०	एकपाददृष्टिः
५/९	५/९	५/९	५/९	०	५/९	५/९	५/९	५/९	द्विपाददृष्टिः
४/८	४/८	०	४/८	४/८	४/८	४/८	४/८	४/८	त्रिपाददृष्टिः
७	७	४/७/८	७	५/७/९	७	३/७/१०	७	७	सम्पूर्णदृष्टिः
चं. मं. गु.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बुध	मित्र–ग्रहाः
बु.	मं.श.गु.शु.	शु. श.	मं. गु. श.	रा. श.	मं. गु.	गु.	गु.	०	समग्रहाः
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रुग्रहाः
मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	मिथुन	धनु	उच्चराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	परमोच्चांशाः
तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	धनु	मिथुन	नीचराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे., वृश्चि.	मि., क.	ध., मी.	वृष, तुला	म., कुं.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्णः
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पुरुष, स्त्री, नपुंसकः
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लौह	लौह	लौह	धातु
चतुष्पद्	बहुपद्	चतुष्पद्	द्विपद्	द्विपद्	द्विपद्	भुजंगपद्	अपद्	अपद्	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्त्व	सत्त्व	तम	रज	सत्त्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षी,स्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभू	दुग्ध	श्मशान	वाणी	जल	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर	स्थानम्

वर्ष में योगिनी के लिए जन्म–नक्षत्रसंख्या में गताब्द जोड़ें, 3 और जोड़ें, 8 से भाग दें, तो शेष मंगलादि योगिनी दशा होती है।

वर्षयोगिनीमतेन मुद्ददादशा (मास–दिन)

मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

गर्भयोग—

वर्ष–कुण्डली में लग्नेश पांचवें या सातवें पड़ा हो व पंचमेश और सप्तमेश लग्न में पड़े हों तो उस वर्ष गर्भयोग होता है। मुंथेश और चन्द्रमा बली होकर पांचवें हो और पंचमेश भी बली हो तो गर्भ होता है।

जन्मपत्री न हो तो वर्ष बनाने की रीति

स्पष्ट प्रश्नलग्न की राशि को छोड़कर अंशादिक की कला करें, फिर उसमें १५० (डेढ़ सौ) का भाग दें। लब्ध, जो राश्यादि चार फल आवे उसकी राशि के अंक में प्रश्नलग्न की राशि के अंक मिलाएं। प्राप्तांक को मुन्था का स्पष्ट लग्न समझें और प्रश्नलग्न से चतुर्थराशि के स्वामी को जन्मलग्नेश जानें अर्थात् पंचाधिकारियों में जन्मलग्नपति के स्थान में प्रश्नलग्न से चतुर्थराशि का स्वामी जो हो उसे लग्नेश समझिए। प्रश्नपत्र पर वर्ष बनाने में इतना ही विशेष है। अन्य सर्व रीति में कुछ न्यूनाधिक नहीं है।

अरिष्ट योग

यदि जन्मलग्न ही वर्ष लग्न हो और जन्मनक्षत्र भी वर्ष में आ जाए तो यह द्विजन्मा वर्ष अशुभ है। वर्ष में गुरु, चन्द्र शुभ न हों तो अशुभ, कष्टभय होता है। वर्ष में गुरु, चन्द्र शुभ हों तो अशुभ फल नहीं होगा।

आवश्यक मुहूर्त

कोई भी कार्य यदि शास्त्र-सम्मत शुभ-मुहूर्त में किया जाए तो वह अवश्य सफल होकर सुखप्रद होता है। गया-गोदावरी-यात्रा में, नवरात्रकृत्य में एवम् चातुर्मास्य व्रत में गुरु-शुक्रास्त का दोष नहीं होता।

गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त

शुभ तिथियां– १ २ ३ ५ ७ १० ११, १२, १३। **शुभ नक्षत्र–**तीनों उत्तरा, मृ. ह. अनु. रे. स्वा. श्र. ध. श.। **शुभ लग्न–** जब लग्न और ४ ५ ७ ९ १० स्थानों में शुभग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, सूर्य, मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांश में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से पहली चार रात्रि छोड कर १६ रात्रि तक समरात्रि में गर्भ हो तो पुत्र, विषम में हो तो कन्या होती है।

चित्रा, पुन. पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिए मध्यम हैं।

गर्भाधान के लिए अशुभकाल

भद्रा, ४ ६ ८ ९ १४ १५ ३० तिथियां, संक्रान्ति का दिन, सन्ध्याकाल, मंगल, रवि, शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां; ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो-दो घड़ी, मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २-२ घड़ी; ४, ८, १२ लग्नों के अन्त की आधी-आधी घड़ी; ५, ९, १ लग्नों की आधी-आधी घड़ी, ५ १ १५ तिथियों के अन्त की एक-एक घड़ी; ६, ११, १ तिथियों के आदि की एक-एक घड़ी, निर्बल तारा, जन्मनक्षत्र, मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा नक्षत्र एवम् ग्रहण के दिन, व्यतिपात, वैधृति योग; माता-पिता के श्राद्ध का दिन, दिन का समय, परिघ योग का आधा भाग; उत्पात से हत नक्षत्र; जन्मराशि से अष्टमलग्न, पापयुक्त लग्न तथा पापाक्रान्त नक्षत्र गर्भाधान के लिए वर्जित हैं।

गर्भमासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भाधान समय का लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री-पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल देखना चाहिए और अन्यकार्यों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए– यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन संस्कार का मुहूर्त

यह संस्कार गर्भाधान के तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृग., पुन., पु. ह. मू. और श्रवण नक्षत्रों में; १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ १५ तिथियों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तो शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी, रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं।

सीमान्त संस्कार का मुहूर्त

गर्भाधान के छठे या आठवें मास में जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त में निर्दिष्ट तिथियों, वारों, नक्षत्रों और लग्नों में सीमान्त शुभ होता है। "सीमान्त जातकादीनि प्राशनान्तानि यानि वै। न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः।।"

गर्भ-रक्षा के लिए विष्णुपूजा

गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में; शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब गर्भ की रक्षा के लिए विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधाजनन संस्कार

बालक के उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्णसहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर "ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भू र्भुवः स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्व त्वयि दधामि"– इन पांचों मन्त्रों से बालक को थोड़ा-थोड़ा चार बार मधु चटावें– ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तनपान कराने व सूतिकापथ्य का मुहूर्त

रिक्ता., अमा, भद्रा, व्यतिपात एवं वैधृति को छोड़कर शुभ तिथियां हों; वार चं. बु. गु. श. हों; नक्षत्र मृग., पुन., पु., श्र., रे., म. हों– तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि, नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त्त

रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृग., ह., स्वा., अश्वि. और अनु. नक्षत्रों में; रवि, गुरु और भोम वारों में; १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियों में शुभ हैं। आर्द्रा, पुन., पु., श्र., म., भ., कृ., वि. मू और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं।

प्रसूता स्त्री द्वारा जलपूजन का मुहूर्त्त

मास समाप्त होने पर बुध, गुरु या चन्द्रवार को ४, ९, १४, तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में श्र., पुन., पु., मृ., ह., मू., अनु., नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है। परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में; चैत्र, पौष या अधिक मास में (मास पूरा होने पर भी) जलपूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकरण का मुहूर्त्त

संक्रान्तिदिन, भद्रा और व्यतिपात को छोड़कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११ १२, १३ तिथियों में जन्मकाल से ११वें या १२वें दिन सोम, बुध और शुक्रवार को मृ., रे., चि., अनु., तीनों उत्तरा, रो., ह., अश्विनी, पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहणमुहूर्त्त

जन्म दिन से १०, १२, १६, १८, ३२वें दिन शुक्रवार में; मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि., तीनों उत्तरा, रो. नक्षत्रों में ४, ९, १४, ३० तिथियों के अलावा अन्य तिथियों में; १, ४, ७, १० लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर एवं १, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११ वें शुभग्रह हों तथा ३, ६, ११ वें पापग्रह हो तो उत्तम होता है।

निष्क्रमण का मुहूर्त्त

सूर्य नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५	५	५	५	७
नैरोग्य	मरण	कृषता	व्याधि	सौख्य

स्वा., अश्वि., पुन., ह., मू., पु., अनु., श्र., रो., ध. नक्षत्रों में; भौम एवं शनि को छोड़कर अन्य वारों में, रिक्ता, अमा, भद्रादि से रहित शुभ दिन में; तीसरे, चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होने पर १२वें दिन बालक का निष्क्रमण करें। इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करा दें।

भूम्युपवेशन–मुहूर्त्त

पांचवें महीने में पृथ्वी, वाराह का पूजन करके भौम के पूर्ण बल में तीनों उत्तरा, रो., मृग., ज्ये., अनु., अश्वि., हस्त, पुष्य, अभि– इन नक्षत्रों में; ४, ९, १४, ३०– इन तिथियों को छोड़कर स्थिर लग्न एवं शुभ दिन में बालक के करधनी का त्रिसूत्र बांधकर पृथ्वी पर बैठाएं।

भूम्युपवेशन के लिए मंत्र– " रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये।" इति।।

इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखें। जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी आजीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त्त

जन्ममास से ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११ वें मास में कन्या का भद्रादि दोषरहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में; सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को म., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पु., अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में; जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष, वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़कर शेष लग्नों में; १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों या शुभ ग्रह की दृष्टि हो; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; दशम स्थान पापग्रहरहित हो; १, ६, ८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी–किसी के मत से जन्मनक्षत्र अनु., शततारिका (शतभिषा) और स्वाती अशुभ हैं।

कर्णवेध का मुहूर्त्त

चैत्र, पौष देवशयन (आषाढ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक), जन्ममास, जन्मनक्षत्र, ४, ९, १४ तिथियां, जन्मतारा, क्षयतिथि और सम वर्षों को छोड़कर जन्म के १२वें या १६वें दिन; ६वें, ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को श्र., ध., पुन., मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो; १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; तुला, वृष, धनु या मीन लग्न में बृहस्पतिवार हो तो कर्णच्छेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के समय पर करने से मनुष्य के हर्निया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या के नासिकाच्छेदन का मुहूर्त्त

कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत., स्वा. में शुभ तिथ्यादिक, शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका वेध शुभ है।

मुण्डनमुहूर्त्त

गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३रे, ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोडकर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोड़कर; २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रान्तिदिन को छोड़कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रहरहित) हो; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; ज्ये., मृ., रे., चि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., ह., अश्वि., पुष्य और अभिजित् नक्षत्रों में मुण्डन शुभ है।

ध्यान रहे– लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु पांच वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।

मुण्डनकर्म में विशेष–स्वकुल–शिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र, तिथ्यादि; शुभ समय में अपने–अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, जो **"यथा कुलधर्मं वः"**– इस स्मृति के अनुसार से ठीक ही है।

क्षौर बनवाने का मुहूर्त्त

मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाये गए हैं वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ हैं– वर्जित काल–शनि, रवि, भौमवार; हजामत में नौवें दिन, संध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रान्तिदिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर और भोजन के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल– यज्ञ, विवाह, मृतककर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय(बिना मुहूर्त्त के भी) हजामत बनवाई जा सकती है। किसी–किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे रूपजीवी (जैसे– नट–भांड आदि) किसी भी दिन हजामत बनवा सकते हैं।

कर्णवेध और क्षौर का वार– ब्राह्मण रविवार को., क्षत्रिय सोमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त्त

जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., श्र., स्वा., रे., पुन., आर्द्रा, चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में बुरे योगों और भद्रा को छोड़कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है। लग्न में मेष, कर्क तुला और मकर राशियां नहीं होनी चाहिए।

विद्यारम्भ का मुहूर्त्त

उत्तरायण में (कुम्भ के सूर्य को छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को; २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में; भ.., आर्द्रा, पुन., हस्त, चि., स्वा., श्र., ध., शत., अश्वि., म., तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, आश्ले., अनु., रेवती नक्षत्रों में; जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी, अंग्रेज़ी विद्यारम्भ का मुहूर्त्त

सूर्य, भौम, शनिवार हों; ४, ९, १४ तिथि हों; ज्ये., आश्ले., म., तीनों पूर्वा, भ., कृ., वि., आर्द्रा, उ. षा., शत. नक्षत्र शुभ हैं।

सीने–पिरोने (सूचिकर्म) का मुहूर्त्त

अश्वि., पु., चि., अनु., ध. नक्षत्र; सूर्य, बुध, चन्द्र, गुरु, शनि वार एवम् १; २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९ १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार का मुहूर्त्त

यज्ञ और उपवीत– इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है। देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हों, उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत का अर्थ है– पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु–धागाविशेष)– यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु, चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से **(गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः)** ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें, वर्ष में करें। यदि इन वर्षो में न किया जा सके तो ब्राह्मण १६, क्षत्रिय २२ और वैश्य २५वें वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं। उसके बाद सावित्रीपतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह., अश्वि., पुष्य, अभि., ३ उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा., श्र., ध., मू., मृग., रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेधरहित, इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय, वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू., चं., बु., (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श., गुरुवार को शुक्ल २, ३, १०, ११, १२ तथा कृष्ण पक्ष की २, ३, ५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि (जैसे– आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२), संक्रान्तिदिन तथा रोगबाण को छोड़कर मध्याह्न से पहले शुभ है। शु., गु., चं. और लग्नेश ६, ८ स्थानों में चं., शु. १२वें स्थान में और १, ५, ८वें भावों में पापग्रह अशुभ है। शुभ ग्रह ६, ८, १२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में; पाप ग्रह ३, ६, ११ स्थानों; वृष या कर्क का पूर्ण चन्द्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु, शुक्र के बाल्य–वृद्धत्त्व–अस्त के समय को छोड़कर उपनयन शुभ है। यदि गोचराष्टक वर्ग से बालक के उपनयन संस्कार के लिए समयशुद्धि न मिले अथवा सिंह, मकर किंवा अशुभ स्थान में गुरु हो तो सौर चैत्र में उपनयन संस्कार किया जा सकता है–ऐसी शास्त्र की आज्ञा है।

छोड़कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है। लग्न में मेष, कर्क तुला और मकर राशियां नहीं होनी चाहिएं।

समयशुद्धि न मिले अथवा सिंह, मकर किंवा अशुभ स्थान में गुरु हो तो सौर चैत्र में उपनयन संस्कार किया जा सकता है—ऐसी शास्त्र की आज्ञा है।

मेलापक सारणी देखने की रीति और अष्टकूट दोषों के परिहार

लेखकः- प्रियव्रत शर्मा

आगे चार पृष्ठों पर 'मेलापक सारणी' दी गई है । इसके बाई ओर पहिले,दूसरे कालमों में लड़की की और सबसे ऊपर वाली पहिली,दूसरी पंक्तियों में लड़के की राशियां तथा चरण-नक्षत्र दिए गए हैं । लड़की के नक्षत्र चरण के आगे लड़के के नक्षत्र-चरण के नीचे वर्ण आदि अष्टकूटों के गुण और मिलान में होने वाले वर्ण आदि दोषों का निर्देश है । वर्ण आदि दोषों के लिए नीचे लिखे सांकेतिक अक्षरों का इस सारणी में प्रयोग किया गया है:-

वर्ण दोष के लिए	= ब	राशीश दोष के लिए	= र
वश्य दोष के लिए	= व	गण दोष के लिए	= ग
तारा दोष के लिए	= त	भकूट दोष के लिए	= भ
योनि दोष के लिए	= य	नाडी दोष के लिए	= न

उदाहरणार्थ - यदि लड़की का जन्म चित्रा के ४ र्थ चरण में और लड़के का पू. भा. के ३ य चरण में हुआ हो तो इनके मिलान में इस मेलापक सारणीसे अष्टकूटों के गुण १८ ½ मिले, और ज्ञात हुआ कि इस मिलान में त (तारा), य (योनि), ग (गण), तथा भ (भकूट) दोष हैं ।

अष्टकूट दोषों के परिहार-

वर, कन्या के राशीशों अथवा नवमांशेशों की मैत्री तथा राशीशों , नवशांशेशों की एकता द्वारा नाड़ी दोष के अलावा शेष सभी दोषों का परिहार हो जाता है । राशीश-नवमांशेशों की मैत्री-एकता के अलावा अन्य और भी अनेक परिहार हैं, जिनसे वर्ण आदि दोष दूर हो जाते हैं । इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है -

(१) वर्ण दोष का परिवार:- वर की राशि के वर्ण से कन्या की राशि का वर्ण उत्तम होने पर वर्ण दोष होता है । लेकिन यदि वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो तो वर्ण दोष का परिहार हो जाता है । सभी ग्रहों के वर्ण इस प्रकार हैं:-

रवि का वर्ण क्षत्रिय,चन्द्र का वैश्य,मंगल का क्षत्रिय,बुध का शूद्र, गुरु का ब्राह्मण, शुक्र का ब्राह्मण और शनि का शूद्र है ।

(२) वश्य दोष का परिहार:- वर कन्या की राशियों की योनिमैत्री होने पर वश्य दोष दूर हो जाता है ।

(३) तारा दोष का परिहार:-वर कन्या के राशीशों, नवमांशेशों की मैत्री या एकता के अलावा तारा दोष का दूसरा कोई परिहार नहीं है ।

(४) योनि दोष का परिहार:- भकूट और वश्य कूटों में से कोई एक भी यदि शुभ(ठीक) हों तो योनिदोष का परिहार हो जाता है ।

(५) राशीश दोष का परिहार:- भकूट शुभ होने पर (यानि द्विर्द्वादश, नवपंचम और षडष्टक का अभाव होने पर) राशीश दोष दूर हो जाता है ।

(६) गण दोष का परिहार:- वर -कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों या भकूट दोष न हों तो गण दोष दूर हो जाता है।

(७) भकूट दोष का परिहार :- वर कन्या के राशीशों, नवांशेशों की मैत्री या एकता ही भकूट दोष का प्रमुख परिहार है। यदि इसके साथ ताराशुद्धि या वश्यशुद्धि भी हो तो भकूट दोष का उत्तम परिहार माना जाता है ।

(८) नाड़ी दोष का परिहार :- वर,कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों, अथवा नक्षत्र एक और राशियां, भिन्न-भिन्न हों तो नाड़ी दोष दूर हो जाता है । दोनों के नक्षत्रों के चरणों का वेध न होने की स्थिति में भी नाड़ी दोष का परिहार माना जाता है ।

नाड़ी दोष के परिहार के प्रसंगमें वर-कन्या में से किसी एक का जन्म नक्षत्र के प्रथम चरण में और दूसरे का चतुर्थ चरण में अथवा एक का द्वितीय चरण में और दूसरे का तृतीय चरण में हुआ हो तो पादवेध मान लिया जाता है । लेकिन यह नियम सर्वत्र लागू नहीं होता । इसके स्पष्टीकरण के लिए सं. २०४७ के 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' में पृष्ठ ३४ पर दिया गया मेरा लेख **''पाद वेध द्वारा नाड़ी दोष के परिहार में परम्परागत एक भ्रांति''** पढ़ना चाहिए । यह लेख मेरी पुस्तक **'ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन'** में भी है ।

ध्यान दें:-जैसा कि ऊपर भी बता चुके हैं,वर,कन्या के राशीशों,नवमांशों की मैत्री और एकता तो वर्ण,वश्य,तारा,योनि,राशीश,गण और भकूट दोषों का परिहार कर देती है,लेकिन नाड़ी दोष का परिहार इनसे नहीं होता । नाड़ी दोष का परिहार तो केवल उपरोक्त स्थितियों में ही होता है ।

दैवज्ञ को यह विशेष रूप से ध्यान में रखना चाहिए,कि नाड़ीदोष का यदि परिहार नहीं मिले तो किसी भी स्थिति में (भले ही अन्य सातों कूट शुद्ध क्यों न हों, मिलान में गुण अठाईस भी क्यों न प्राप्त हों), सम्बन्ध करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए । इस बारे में मुहूर्तशास्त्रकारों का यही स्पष्ट निर्णय है ।

'नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्'-वाक्य को संहिताकारों ने मान्यता नहीं दी है । 'मुहूर्त चिन्तामणि' आदि अन्य प्रामाणिक मुहूर्तग्रन्थों ने भी इसकी उपेक्षा की है,अतः इसे मान्यता नहीं दी जा सकती।

'एकनक्षत्र जातानां नाड़ीदोषो न विद्यते'- वाक्य भी प्रामाणिक नहीं है । एक ही नक्षत्र में उत्पन्न वर,कन्या को नाड़ी दोष तब नहीं माना जाता, जबकि उनका जन्म भिन्न-भिन्न चरणों में हुआ हो । 'मुहूर्तचिन्तामणि' का वाक्य है -**'नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्'** (अर्थात् दोनों का नक्षत्र एक होने पर दोष (नाड़ीदोष) की निवृत्ति तभी होती है,जबकि दोनों के चरण भिन्न-भिन्न हों)। **ध्यान रहे, दोनों का जन्म एक ही नक्षत्र के एक ही चरण में होने पर नाड़ी दोष परमाधिक माना जाता है।** एक ही नक्षत्र में पादवेध भी नहीं माना जाता ।

दोषपूर्ण अष्टकूटों के ,परिहारों को प्रमाणित करने वाले शास्त्रवाक्य बहुत हैं,उनको विस्तारभय से यहां उद्धृत नहीं किया गया। उन्हें मेरी पुस्तक **''ग्रहयोग एवं दाम्पत्यजीवन''** में आप देख सकते हैं)

सरलता पूर्वक एक ही दृष्टि में सभी अष्टकूटों के परिहार आ जाएं- इसके लिए नीचे दिया गया यह कोष्ठक देखें :-

अष्टकूट परिहार कोष्ठक

कूट	परिहार
वर्ण	१ राशीशों या नवमाशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो।
वश्य	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ योनिमैत्री हो ।
तारा	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।
योनि	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वश्यशुद्धि हो। ३ सद्भकूट हो।
राशीश	१ दोनों के नवमांशेशों में मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो।
गण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो। ३ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों ।
भकूट	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।*
नाडी	१ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न - भिन्न हों । २ दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों । ३ दोनों का नक्षत्र एक और चरण भिन्न - भिन्न हों । ४ पाद वेध न हो।

* यदि इस परिहार के साथ ताराशुद्धि , वश्यशुद्धि में से कोई एक भी हो तो यह परिहार उत्तम माना जाता है।

परिहृत कूट के गुण

वर्ण आदि जो कूट दोषपूर्ण होता है, उसके लिए निर्धारित पूरे गुणों को छोड़ दिया जाता है। जब उस दोषपूर्ण कूट का कोई उपरोक्त परिहार मिल जाए तब उसके पूरे गुणों को पुनः स्वीकार कर उन्हें मेलापक सारणी से प्राप्त गुण संख्या में जोड़कर उस गुणसंख्या को वास्तविक गुणसंख्या माना जाए- ऐसा कुछ आचार्यों का मत है। कुछ आचार्यों का मत है कि परिहार द्वारा दोष का पूर्ण नहीं, अपितु आंशिक निवारण होता है,अतः परिहृत कूट के आधे गुणों को ही स्वीकार करना चाहिए । यह (दूसरा) मत तर्कसंगत है। इसके अनुसार परिहृत कूट के आधे गुण(उस कूट के लिए निर्धारित पूरे गुणों का आधा भाग) मेलापक सारणी से मिली गुणसंख्या में जोड़कर उसे ही यथार्थ गुणसंख्या मानना युक्तियुक्त है ।

कितने गुण मिलने पर सम्बन्ध कर देना चाहिए ?

परिहृत कूटों की आधी गुणसंख्या को मेलापक सारणी में उपलब्ध गुणसंख्या में जोड़ने. पर मिली गुणसंख्या यदि १६ १/२ से कम है तो सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । यदि षडष्टक भकूट का परिहार न मिल रहा हो तब २० से कम गुण संख्या होने पर सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । ध्यान रहे- यहां प्रत्येक स्थिति में नाड़ी दोष का परिहार मिलना नितान्त आवश्यक है। यदि नाड़ी दोष के उपरोक्त परिहारों में से कोई एक भी परिहार न मिल रहा हो तब तो २८ गुण मिलने पर भी सम्बन्ध करने की अनुमति शास्त्रकारों ने नहीं दी है ।

यदि किसी विशेष कारण (विवशता) वश सम्बन्ध करना आवश्यक (अपरिहार्य)हो जाए, तब १६ से कम गुणों और षडष्टक तथा नाड़ीदोष के अपरिहार की स्थिति में भी गाय,अन्न,वस्त्र,सुवर्ण का यथाशक्ति दान, तथा जप -शान्ति करके सम्बन्ध किया जा सकता है । इस स्थिति में कन्या का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने की भी परम्परा है । लेकिन दान,जप,शान्ति करना भी इस स्थिति में अत्यन्त आवश्यक है । साधाराण स्थिति में (नितान्त विवशता की स्थिति के अभाव में) लड़की का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाना सर्वथा अशास्त्रीय है । नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने का 'सिद्धान्त' अपनाने पर तो किसी भी लड़की का किसी भी लड़के के साथ और किसी भी लड़के का किसी भी लड़की के साथ सम्बन्ध बेरोक-टोक किया जा सकता है और वहां अष्टकूटों के गुण इच्छानुसार अधिकाधिक प्राप्त किए जा सकते हैं, जिससे दोषपूर्ण कूटों का परिहार बतलाने वाले सभी शास्त्रवाक्य अर्थहीन हो जायेंगे।

मिलान में कुछ और विचार्य विषय

यद्यपि संहिताओं में इन आठ कूटों के अतिरिक्त अनेक और भी विचार्य विषय मिलते हैं, लेकिन वर्गमैत्री और नृदूर का भी विचार करने की भी कुछ दैवज्ञों में परम्परा हैं,इन दोनों का विवेचन इस प्रकार है-

वर्गमैत्री-।

वर्गमैत्री का विचार वर,कन्या के नाम के आदिम वर्णो से सम्बद्ध है। हिन्दी वर्णमाला के अकार आदि स्वर 'अवर्ग'; 'क' आदि पांच वर्ण 'कवर्ग', 'च' आदि पांच वर्ण 'चवर्ग', 'ट' आदि पाँच वर्ग 'टवर्ग' त आदि पांच वर्ण 'तवर्ग','प'आदि पांच वर्ण 'पवर्ग', 'य' आदि पांच वर्ण 'यवर्ग' तथा 'श' आदि पांच वर्ण 'शवर्ग' कहलाते हैं। इन अवर्ग आदि आठ वर्गों को उपरोक्त क्रमानुसार क्रमशः प्रथम वर्ग, द्वितीय वर्ग, आदि संज्ञाएं दी गई हैं। इन आठ वर्गों के स्वामी क्रमशः गरुड़, मार्जार,सिंह, श्वान,

सर्प, मूषक, मृग और मेष माने गये हैं । प्रत्येक वर्गेश अपने से पंचम वर्ग के स्वामी का शत्रु माना गया है । जैसे :- गरुड़ और सर्प तथा मूषक और मार्जार परस्पर शत्रु हैं ।

नामाक्षरों से वर्ग ज्ञान कोष्ठक :

वर्ग	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्ग के वर्ण	अ, इ, उ,ए	क, ख, ग, घ,ङ	च,छ,ज, झ,ञ	ट,ठ,ड, ढ,ण	त,थ,द, ध,न	प, फ,ब, भ,म	य,र, ल,व	श,ष, स,ह
वर्गेश	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष

वर, कन्या के नामों के आदिम वर्णों के वर्गों के स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अच्छा नहीं माना जाता, उनका जीवन दु:खमय रहता है ।

यदि वर्गेशों में शत्रुता है तो अष्टकूटों से प्राप्त गुण १७ से अधिक होने पर ही सम्बन्ध करना चाहिए। यदि मिलान में अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १४,१५ ही हों और नाडी दोष न हो तब वर्गेश की एकता (अभिन्नता) होने पर सम्बन्ध किया जा सकता है-ऐसा कुछ लोगों का मत है

नृदूर

वर का नक्षत्र या नक्षत्र चरण यदि कन्या के नक्षत्र या नक्षत्र चरण से तुरन्त परवर्ती हो तो 'नृदूर' दोष कहलाता है। जैसे - कन्या का जन्म नक्षत्र अश्विनी और वर का भरणी, अथवा कन्या का जन्म अश्विनी के प्रथम चरण में और वर का अश्विनी के द्वितीय चरण में हो तो भी नृदूर दोष होगा।'नृदूर' दोष का फल मुहूर्त्त शास्त्रों में बहुत अशुभ लिखा है।

दोनों (वर ,कन्या) की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न या दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों तों नृदूर का परिहार हो जाता है।

अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १६ $\frac{3}{4}$,१७,१८ हों और 'नृदूर' दोष का परिहार न मिले, तब नाड़ी दोष के अभाव में भी मिलान को कुछ मुहूर्त्तकार अच्छा नहीं मानते । १८ से अधिक गुण होने पर 'नृदूर' की उपेक्षा की जा सकती है।

नामराशि से अष्टकूटों का निर्णय

वर और कन्या-दोनों का यदि जन्मकाल ज्ञात न हो, तब दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों (नामों के आदिम अक्षरों से अवकहड़ा चक्र द्वारा निर्णीत राशि और नक्षत्रों) के आधार पर ही मेलापक सारणी से अष्ट कूटों के गुणों का निर्णय करना चाहिए। अपिच यदि वर, कन्या-दोनों में से किसी एक का जन्मकाल ज्ञात न हो तो भी दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों के आधार पर ही अष्टकूटों का निर्णय करना चाहिए। एक की जन्मराशि, जन्मनक्षत्र और दूसरे की नामराशि, नाम नक्षत्र के आधार पर अष्टकूटों का निर्णय करने की अनुमति शास्त्र नहीं देते ।

कुज (मंगली) दोष-

निम्नलिखित स्थितियों में कुजदोष (मंगली दोष) माना गया है -

(१) जन्म कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भावमें मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो।
(२) चन्द्र कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या कोई क्रूर ग्रह हो ।
(३) शुक्र से १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो ।

कुजदोष बनाने वाला ग्रह अस्त, नीचस्थ या शत्रुराशिस्थ हो तो कुजदोष का फल अधिक माना गया है । कुजदोष दाम्पत्य जीवन के लिए अच्छा नहीं माना जाता ।

कुजदोष के सामान्य कुछ परिहार -

इन स्थितियों में वर, कन्या का कुज दोष दूर हो जाता है -

(१) कुजदोष बनाने वाला ग्रह (क्रूरग्रह) उच्चस्थ स्वराशिस्थ, स्वनवांशस्थ, मित्रराशिस्थ, उच्चनवांश या मित्रनवांश में हो।
(२) कुजदोष बनाने वाले ग्रह पर वृहस्पति की पूर्णदृष्टि हो ।
(३) वर-कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोष विद्यमान हो तो दोनों के कुजदोष समाप्त हो जाते हैं।

ध्यान रहे, कुजदोष वाले वर और कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोषों का परिहार मिलने पर कुजदोष का कुफल समाप्त हो जाता है । दोनों की कुण्डलियों में से किसी एक की कुण्डली में ही कुजदोष परिहार हो तो कुजदोष का कुप्रभाव रहता है ।

कुण्डली मिलान की प्रामाणिकता

हमारे ज्योतिष के मानक ग्रन्थों (संहिता, जातक, मुहूर्त्त ग्रन्थों) में वर, कन्या का सम्बन्ध करने से पूर्व उनकी कुण्डलियों में ग्रहस्थितियों के मिलान द्वारा कुजदोष के परिहार की चर्चा कहीं भी नहीं की गई है। पुनरपि कुण्डली मिलान की परम्परा सभी भारतीय प्रदेशों में प्रचलित है । इसका शास्त्रीय मूल अभी तक अज्ञात है। आश्चर्य है- सभी वशिष्ठ, नारद, गर्ग आदि की संहिताओं, मुहूर्त्तमार्तण्ड, मुहूर्त्तचिन्तामणि आदि मुहूर्त्तग्रन्थों तथा वर-कन्या के सम्बन्ध की अनुकूलता के परीक्षण के लिए रचित 'विवाहवृन्दावन' आदि सभी ग्रन्थों में वर-कन्या के सम्बन्ध के लिए केवल अष्टकूटों के परीक्षण का ही निर्देश है, कुण्डली मिलान का कहीं भी नहीं ।

षट्कूट चक्र

वर्ण, वश्य, योनि, राशीश, गण और नाड़ी ज्ञापक चक्र।

राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्र	अश्वि.	भर	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चि.
चरण	१, २ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२
वर्ण	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.
वश्य	च.	च.	च.	च.	च.	च.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	व.	व.	व.	द्वि.	द्वि.	द्वि.
योनि	अ.	ग.	मे.	मे.	स.	स.	स.	श्वा.	मा.	मा.	मे.	मा.	मू.	मू.	गौ.	गौ.	म	व्या.
राशीश	म.	म.	म.	शु.	शु.	शु.	ब.	बु.	बु.	[illegible]	च.	च.	सू.	सू.	सू.	बु.	बु.	बु.
गण	दे.	म.	रा.	रा.	म.	दे.	दे.	म.	दे.	दे.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.
नाड़ी	आ.	म.	अ.	अ.	अ.	म.	म	आ.	आ.	आ.	म.	अ.	अ.	म.	आ.	आ.	आ.	म.

राशि	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
नक्षत्र	चि.	स्वा	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	ध.	ध.	श.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा	रेव.
चरण	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४
वर्ण	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.
वश्य	द्वि.	द्वि.	द्वि.	की.	की.	की.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.
योनि	व्या.	म.	व्या.	व्या.	मृ.	मृ.	श्वा.	वा.	न.	न.	वा.	सि.	सि.	अ.	सि.	सि	गौ.	ग.
राशीश	शु.	शु.	शु.	म.	म.	म.	गु.	गु.	गु.	श.	श.	श.	श.	श.	श.	गु.	गु.	गु.
गण	रा.	दे.	रा.	रा.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.
नाड़ी	म.	अं.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	अं.	म.	म.	आ.	आ.	आ.	म.	अं.

वर्ण- ब्रा.= ब्राह्मण, क्ष= क्षत्रिय, वै= वैश्य, शू.=शूद्र

योनि- अ.=अश्व, ग=गज, मे=मेष, स=सर्प, श्वा.=श्वान, मा.=मार्जार, मू = मूषक, म=महिष, व्या=व्याघ्र, मृ=मृग, वा=वानर, न=नकुल, सिं=सिंह

गण- दे=देव, म=मनुष्य, रा=राक्षस

वश्य- च=चतुष्पद, की=कीट, व= वनचर, द्वि=द्विपद, ज=जलचर

राशीश- सू=सूर्य, चं=चन्द्र, मं.=मंगल, बु=बुध, गु=गुरु, शु=शुक्र, श=शनि

नाड़ी- आ=आद्य, म=मध्य, अं=अन्त्य

मेलापक सारणी (भाग 1)

वर / कन्या		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. 1,2,3,4	भर. 1,2,3,4	कृत्ति. 1	कृत्ति. 2,3,4	रोहि. 1,2,3,4	मृग. 1,2	मृग. 3,4	आर्द्रा 1,2,3,4	पुन. 1,2,3	पुन. 4	पुष्य 1,2,3,4	आश्ले. 1,2,3,4	मघा 1,2,3,4	पू.फा. 1,2,3,4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1,2,3,4	चित्रा 1,2
मेष	अश्वि. 1,2,3,4	28 न	33	28½ त	18½ ब भ त	21½ ब भ त	22½ ब भ त	26 ब त र	17 ब न त र	19 ब न त र	23½ न त	31½ त	28 ग	21 व भ ग	25 व भ	15½ व भ न त	11 ब भ नतर	9 तबभ यनर	13 व भ त र
	भर. 1,2,3,4	34	28 न	29 ग	19 ब ग भ	21½ ब भ त	14½ ब भ त न	18 न ब त र	26 ब त र	27 ब त र	31½ त	23½ न त	25½ ग त	20 ग व भ	18 व भ न	26 व भ	21½ ब भ र	20 ब भ र त	4 बभग नतर
	कृत्ति. 1	27½ ग त	29 ग	28 न	18 ब भ न	10 ग ब न भ	16½ ग ब भ त	20 ग ब त	20 ग ब त	21 ग ब त र	25½ ग त	26½ ग त	23½ न त	16½ व भ न त	20 ग व भ	20 ग व भ	15½ ग व भ	15½ ग व भ र	18 ब भ त
वृष	कृत्ति. 2,3,4	18½ ग भ त	20 ग भ	19 भ न	28 न	20 ग न	26½ ग त	17½ ग ब भ त	17½ ब ग भ त	18½ ग ब भ त	22 ग त र	23 ग त र	20 न त र	18½ न व त र	22 र व ग	22 र व ग	21 ग भ	21 ग भ	23½ भ त
	रोहि. 1,2,3,4	23½ भ त	23½ भ त	11 ग भ न	20 ग न	28 न	36	27½ ब भ	23½ ब भ त	22½ भ ब त य	26 त र य	27 त र	12 ग न तरय	10½ रवग नतय	24½ र व त य	27 र व	26 भ	26 भ	20 ग भ
	मृग. 1,2	23½ भ त	14½ भ न त	18½ भ त ग	27½ त ग	35	28 न	19 ब भ न	24 ब भ	22½ ब भ त य	26 त य र	19 त र न	21 त र य ग	19½ गरव त य	15½ र व नतय	24½ र व त	23½ भ त	26 भ	13 भ न ग
मिथुन	मृग. 3,4	27 तर	18 न त र	22 त र ग	19½ भ ग त	27 भ	20 भ न	28 न	33	31½ त य	19 भ व तयर	12 भ न वतर	14 भवत यगर	23½ व त य ग	19½ व न त य	28½ व त	31½ त	34	21 न ग
	आर्द्रा 1,2,3,4	19 त र न	27 त र	21 त र ग	18½ ग भ त	24½ भ त	26 भ	34	28 न	25 न य	12½ भ न तयर	20 भ व त र	13 गभर वतय	23½ ग त व	29½ व त	21½ न व त	24½ न त	24½ न त	27 ग य
	पुन. 1,2,3	20 न त र	27 त र	23 त र	20½ भ त ग	22½ भ त	23½ भ त य	31½ त य	24 न य	28 न	15½ न भ व र	22½ भ व र	17 भ व तरग	22½ य व त ग	26½ य व त	21½ न व त	24½ न त	25½ न त	27½ त ग
कर्क	पुन. 4	22½ ब न त	29½ ब त	25½ ब त ग	22 ब ग त र	24 ब त य र	25 ब त य र	18 बभव रतय	10½ बभव नयर	14½ ब भ रनत	28 न	35	29½ त ग	16½ बभय ग त	20½ ब भ त य	15½ ब भ न त	18 न भ त र	19 न ब वतर	21 ब ग वतर
	पुष्य 1,2,3,4	30½ ब त	21½ ब न त	26½ ब त ग	23 ब त र ग	25 ब त र	18 ब न त र	11 बभन वतर	18 ब भ वतर	21½ ब भ व र	35	28 न	30 ग	19½ ब भ ग त	15½ ब भ न त	23½ ब भ त	26 ब व त र	27 ब व त र	12 नबवय तरग
	आश्ले. 1,2,3,4	26 ब ग	24½ ब ग त	22½ न ब त	19 न ब त र	11 गबत नयर	19 ग ब तयर	12 गबत भवयर	12 गबभ वतयर	15 गबत भवर	28½ ग त	29 ग	28 न	15 य ब भ न	15½ गबय भ त	18½ ग व भ त	21 ग ब वतर	21 ग ब वतर	26 ब व त र
सिंह	मघा 1,2,3,4	20 ग व भ	20 ग व भ	16½ व भ न त	17½ वब रनत	9½ वबत गरनय	17½ वबत गरय	21½ व ब गतय	22½ व ब ग त	20½ व ब गयत	16½ ग भ य त	19½ ग भ त	16 न भ य	28 न	30 ग	27½ ग त	16½ व ब गभत	16½ व ब गभत	21½ व ब भ त
	पू.फा. 1,2,3,4	26 व भ	18 व भ न	20 ग व भ	21 ब व र ग	23½ व ब रतय	15½ वबन रतय	19½ व ब नतय	28½ व ब त	26½ व ब त य	22½ य भ त	17½ भ न त	16½ ग भ य त	30 ग	28 न	35	24 व ब भ	22½ व ब भ त	7½ वबत गनभ
	उ.फा. 1	16½ व न त न	26 व भ	20 व ग भ	21 व ब ग र	26 व ब र	24½ व ब र त	28½ व ब त	20½ व ब न त	21½ व ब न त	17½ भ न त	25½ भ त	19½ ग भ त	27½ ग त	35	28 न	17 व ब भ न	16 व ब भ न	13½ वयब तगभ
कन्या	उ.फा. 2,3,4	13 भ न त र	22½ भ र	16½ ग भ र	21 ग भ	26 भ	24½ भ त	31½ ब त	23½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	22 ग व त र	17½ ग व भ त	25 भ व	18 व भ न	28 न	27 न	24½ य ग त
	हस्त 1,2,3,4	10 य भ नतर	20 भ त र	17½ भ र ग	22 भ ग	25 भ	26 भ	33 ब	22½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	23 व त र ग	18½ व भ त ग	22½ व भ त	16 व भ न	26 न	28 न	28 य ग
	चित्रा 1,2	13 गभत यर	5 गभन तयर	19 भ त य र	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	19 ग ब न	26 ग ब य	25½ ग ब त	21 ग व त र	12 गनव तयर	27 व त र	22½ व भ त	8½ ग व भनत	14½ व य गभत	24½ ग य त	27 ग य	28 न

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 2)

वर / कन्या		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वाती 1,2,3,4	विशा. 1,2,3	विशा. 4	अनु. 1,2,3,4	ज्ये. 1,2,3,4	मूल 1,2,3,4	पूषा. 1,2,3,4	उ.षा. 1,	उ.षा. 2,3,4	श्रव. 1,2,3,4	धनि. 1,2,	धनि. 3,4	शत. 1,2,3,4	पूभा. 1,2,3	पूभा. 4	उ.भा. 1,2,3,4	रेव. 1,2,3,4
मेष	अश्वि. 1,2,3,4	22½ ब य त ग	26½ ब य त	22½ त ब य ग	18½ ग भ त य	25½ भ त	14 भ न ग	13½ भ न ग	25 भ	23½ भ त	25 ब त र	26 ब त र	20 ब त यरग	20 ब त यरग	15 ब न तरग	16 ब न तयर	14½ न भ त य	24½ भ त	26 भ
	भर. 1,2,3,4	13½ बगन तय	29½ ब त	21½ ग ब त य	17½ ग भ त य	17½ न भ त	19½ ग भ त	20 ग भ	18 न भ	26 भ	27½ ब र	26 ब त र	10 ब य गनतर	10 ब य गनतर	20 ग ब त र	24 ब य त र	22½ त भ य	17½ न भ त	26½ भ त
	कृति. 1	27½ ब त य	15½ ब ग न त	19½ ब न त य	15½ भ न त य	19½ ग भ त	25½ भ त	24½ भ त	18 ग भ य	12 ग भ न	13½ ब ग न र	11½ ब य रगन	25 ब त य र	25 ब त य र	27 ब त र	19 ब ग तयर	17½ ग भ त य	19½ ग भ त	11½ ग भ त न
वृष	कृति. 2,3,4	22½ ब भ त य	10½ ग ब भनत	14½ ब भ तनय	20½ न त य	24½ ग त	30½ त	20 भ तर	13½ य ग भ र	7½ ग भ न र	12 ग भ न	10 य ग भ न	23½ भ त य	29½ ब त य	31½ ब त	23½ ग ब त य	20 ग त य र	22 ग त र	14 ग न त र
	रोहि. 1,2,3,4	19 ग ब भ	15½ ब भ न त	9½ तबग न भ	15½ ग न त	29½ त	23½ ग त	14 ग भ त र	19 र भ त य	11½ य भ न र	16 भ य न	17 न भ य	20 ग भ	26½ ग ब	24½ ग ब त	30½ ब त	27 त र	27 त र	19 र न त
	मृग. 1,2	12 ब भ न ग	25 ब भ	18½ ब भ त ग	24½ त ग	21½ न त	24½ त ग	15 भ त र ग	10 न भ तयर	17 य भ तर	21½ भ य त	25 भ य	13 न भ ग	19 ब ग न	27 ब ग	29½ ब त	26 त र	18 न त र	27 त र
मिथुन	मृग. 3,4	14 न भ ग	27 भ	20½ भ त ग	14 भ व तरग	11 भवन त र	14 भ व तरग	23 त र ग	18 न त य र	25 य त र	20 भ य व त	23½ भ व य	11½ न भ व ग	13 न भ ग	21 भ ग	23½ भ त	25½ त व र	17½ न व त र	26½ व त र
	आर्द्रा 1,2,3,4	20 ग भ य	27 भ	20 ग भ य	13½ रगव भ य	17 त भ वयर	3 यतगव भनर	16 ग न त र	28 त र	28 त र	23 भ व त	23 भ व त	17½ ग भ व य	19 ग भ य	12 ग भ न	17 न भ य	19 न र व य	26½ व त र	26½ व त र
	पुन. 1,2,3	20½ भ त ग	28 भ	22 भ ग	15½ व भ र ग	21½ व भ र	7 रगव भनत	14 यरत न ग	27 त र	27 त र	22 व त भ	23 व त भ	17 वतभ य ग	18½ भ ग त य	14 न भ ग	16 न भ य	18 र न य व	28 र व	27½ व त र
कर्क	पुन. 4	20½ ब त र ग	28 व र ब	22 व र ब ग	20 ग भ	26 भ	11½ त ग भ न	8 वतब भगनय	21 ब भ व त	21 ब भ व त	26 ब त र	27 ब त र	21 बगत य र	12½ बभव तयगर	8 बभव नगर	10 बभर नवय	16 न भ य	26 भ	25½ भ त
	पुष्य 1,2,3,4	11½ गनबव तयर	26½ ब व त र	21 रबग व य	19 भ य ग	18 भ न	21 भ ग	17 गबभ व त	11 यबभ तनव	21 ब भ व त	26 ब त र	25 ब य त र	13 गबन तयर	4½ भबगय वनतर	14½ बवत रगभ	18 बभव य र	24 भ य	18 न भ	27 भ
	आश्ले. 1,2,3,4	25½ ब व त र	12½ गबव तरन	17½ नबव त र	15½ न भ त	20 ग भ	26 भ	22½ ब भ व य	16 गबव भ त	8 गबव भनत	13 गबर न त	13 बगत न र	26 ब त य र	17½ बभव तरय	19½ बभव त र	11½ गबभ वतयर	17½ ग भ त य	21 ग भ	13 ग भ न
सिंह	मघा 1,2,3,4	24½ ब व त र	11½ बवत रगन	16½ बवत र न	22½ न व त	25½ ग व त	33 व	25 भ व	19 ग व भ	8½ वगभ नतय	3½ बरतय गभन	4½ बरत गभन	18½ ब र त भ	24½ ब व त र	25½ ब व त र	18½ बवर ग त	18½ ग भ त	19½ ग भ त	13 ग भ न
	पूफा. 1,2,3,4	10½ बवत रगन	25½ ब व त र	18½ बवर ग त	24½ ग व त	23½ न व त	25½ ग व त	19 ग व भ	17 भ व न	24 भ व न	17 ब र भ य	18½ ब त भ त	4½ बरत गभन	10½ बवत रगन	19½ बवर ग त	24½ ब व र त	24½ भ त	17½ न भ त	25½ भ त
	उ.फा. 1	16½ बवत यगर	25½ ब व त र	16½ बवय गतर	22½ य व ग त	31½ व त	17½ ग व त न	9½ ग व नभत	25 भ व	25 भ व	20 ब र भ	20 ब र भ	11½ बरत गभय	17½ बवत गरय	11½ बवत गनर	15½ बवत नरय	15½ न भ त य	26½ भ त	25½ भ त
कन्या	उ.फा. 2,3,4	16½ गबय भ त	25½ ब भ त	16½ गबय भ त	18 यवत ग र	27 व त र	13 गवत न र	14 ग न त र	29½ र	29½ र	24½ भ व	24½ भ व	16 ग भ वतय	16½ गबभ त य	10½ गबन भ त	14½ बभन तय	17½ तनव य र	28½ व त र	27½ व त र
	हस्त 1,2,3,4	20 ब भ य ग	26½ ब भ त	18½ ब भ तयग	20 व ग तयर	26 व त र	13 न व तरग	15 न त र ग	27 त र	28½ र	23½ भ व	24½ भ व	18½ भ ग व र	19 ब भ य ग	8½ बयभ नतग	13½ ब भ नतय	16½ वनत य र	26½ व त र	27½ व त र
	चित्रा 1,2	20 ब भ न	19 ग ब भ य	26½ ब भ त	28 व त र	11 गवन तयर	25 व त य र	27 त य र	14 ग न त र	22 ग त र	17 ग भ त	18½ ग भ व	15½ भ व न य	16 ब य भ न	24 ब भ य	16½ गबत भ य	19½ गवत य र	10½ गयव नतर	19½ वगत य र

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीशदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 3)

कन्या \ वर		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. 1,2,3,4	भर. 1,2,3,4	कृत्ति. 1	कृत्ति. 2,3,4	रोहि. 1,2,3,4	मृग. 1,2	मृग. 3,4	आर्द्रा 1,2,3,4	पुन. 1,2,3	पुन. 4	पुष्य 1,2,3,4	आश्ले. 1,2,3,4	मघा 1,2,3,4	पू.फा. 1,2,3,4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1,2,3,4	चित्रा 1,2
तुला	चित्रा 3,4	22½ ग त य	14½ ग न त य	28½ त य	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	13 ग भ न	21 ग भ	19½ ग भ त	20½ ग र व त	11½ गनय वरत	26½ व त र	25½ व र त	11½ वरग न त	17½ व य गरत	17½ य ग भ त	20 ग भ य	21 भ न
	स्वाती 1,2,3,4	27½ य त	29½ त	17½ न त	12½ भ न त	15½ भ न त	26 भ	27 भ	26 भ	28 भ	29 व र	27½ व त र	14½ न व त र	13½ व न त ग	25½ व र त	25½ व र त	25½ भ त	27½ भ त	21 भ य ग
	विशा. 1, 2,3	22½ त य ग	22½ त य ग	20½ त य न	15½ त भ न य	10½ ग भ त न	18½ ग भ त	19½ ग भ त	20 ग भ य	21 ग भ	22 ग व र	21 ग त र	18½ न व त र	17½ व र त न	19½ व र त ग	17½ वयर ग त	17½ य ग भ त	18½ ग भ त य	27½ भ त
वृश्चिक	विशा. 4	16½ बगभ य त	16½ बगभ य त	14½ ब भ नयत	19½ ब न य त	14½ ब ग न त	22½ ब ग त	12 बवर गभत	12½ वबय गभर	13½ ब व गभर	19 ग भ	18 ग भ य	15½ भ न त	21½ ब व न त	23½ ब व ग त	21½ ब व गयत	17 तबव गयर	18 बवग तयर	27 ब व त र
	अनु. 1,2,3,4	24½ ब भ त	15½ ब भ न त	19½ ब भ ग त	24½ ब त ग	27½ ब त	20½ ब न त	10 बवत नभर	15½ तबव रभय	20½ ब व भ र	26 भ	18 भ न	21 भ ग	24½ ब व त ग	20½ ब व त न	29½ ब व त	25 ब व त र	26 ब व त	11 बरव नतय
	ज्येष्ठा 1,2, 3,4	12 ब ग भ न	18½ ब ग त भ	24½ ब भ त	29½ ब त	22½ ब ग त	22½ ब ग त	12 तबव गभर	2 तवबय गभनर	5 तबवर गभन	10½ त ग भ न	20 ग भ	26 भ	31 ब व	23½ ब व ग त	16½ तबव ग न	12 तबव गनर	12 तबव गनर	24 बवत य र
धनु	मूल 1,2,3,4	12 ग भ न	20 ग भ	24½ भ त	19 ब भ त र	13 ब ग तभर	13 रबग त भ	21 ब ग त र	15 बगन त र	12 रबग तनय	8 यगभ वनत	17 ग भ व त	23½ भ व य	25 व भ	19 व ग भ	9½ तवग भ न	13 तरब ग न	13 तरब ग न	26 र ब त य
	पू.षा. 1,2,3,4	26 भ	18 भ न	18 ग भ य	12½ ब य गभर	18 ब भ तयर	10 रबभ तनय	18 ब न तयर	27 ब त र	27 ब त र	23 भ व त	13 य भ नवत	17 ग भ व त	19 व ग भ	17 व भ न	25 व भ	28½ ब र	27 ब त र	13 तबग न र
	उ.षा 1	24½ भ त	26 भ	12 ग भ न	6½ रबय भ न	10½ बयर भ न	17 ब य तभर	25 ब य त र	27 ब त र	27 ब त र	23 भ व त	23 भ व त	9 ग भ वनत	8½ तगव यभन	24 व भ य	25 व भ	28½ ब र	28½ ब र	21 ग ब त र
मकर	उ.षा. 2,3,4	27 त र	28½ र	14½ ग न र	12 ग भ न	16 भ न य	22½ य भ त	20 ब य त भ	22 ब भ त	22 ब भ व त	28 त र	28 त र	14 ग न त र	4½ तयर गभन	20 र भ य	21 र भ	24½ भ त	24½ व भ	17 ग भ व त
	श्रव. 1,2,3,4	27 त र	26 त र	13½ य न र	11 य भ ग न	16 भ न य	25 भ य	22½ ब भ व य	21 ब भ व त	22 ब भ व त	28 त	26 य त र	15 न त र	6½ तगर भ न	18½ र भ त	20 भ र	23½ भ व	24½ भ व	19½ भ व
	धनि. 1,2	20 ग त य र	11 यगन त र	26 त य र	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	9½ वबग भ न	16½ वयब ग भ	16 बगव त भ	22 ग त र	13 रगन तय	28 त र	19½ र भ त	5½ तगर भ न	12½ तयर ग भ	16 गभव त य	17½ ग भ व	15½ भ न व य
कुम्भ	धनि. 3,4	20 ग त य र	11 यगत न र	26 त य र	30½ त य	27 ग	19 ग न	12 ग भ न	19 ग भ य	18½ ग भ त	13½ ग भ वतर	4½ तयर गभनव	19½ भ व त र	25½ व त र	11½ वतर ग न	18½ वरग त य	17½ ग भ त य	19 ग भ य	17 य भ न
	शत. 1,2,3,4	15 ग न त र	21 ग त र	28 त र	32½ त	25½ ग त	27 ग	20 ग भ	12 ग भ न	13 ग भ न	8 गभव न र	14½ गभव त र	20½ व भ त र	26½ व र त	20½ व र ग त	12½ वरत ग न	11½ त ग न भ	8½ तयग न भ	25 भ य
	पू.भा. 1,2,3	18 न त य र	25 य त र	20 ग र त य	24½ ग त य	31½ त	31½ त	24½ भ त	17 भ न य	18 भ न	13 भ न व	20 भ र व य	13½ गभव त र	19½ व र त ग	25½ व र त	16½ वरय न त	15½ भ न त	15½ भ न त य	17½ ग भ त य
मीन	पू.भा. 4	14½ बभत न य	21½ ब य त भ	16½ गबत भ य	19 गबत य र	26 ब त र	26 ब त र	25½ ब व त र	18 बनव य र	19 न ब व र	18 न भ	25 भ य	18½ ग भ त	17½ ब ग त भ	23½ ब भ त	14½ बभत न य	16½ रबन वतय	16½ रबन वतय	18½ रबग वतय
	उ.भा. 1,2,3,4	24½ ब भ त	16½ ब भ त न	18½ ग ब त भ	21 ग ब त र	26 ब त र	18 न ब त र	17½ न ब वतर	25½ ब र व त	28 ब व र	27 भ	19 भ न	21 ग भ	18½ ग ब त भ	16½ ब भ न	25½ ब भ त	27½ ब व त र	26½ ब व त र	9½ बतर वयगन
	रेव. 1,2,3,4	25 ब भ	24½ ब भ त	11½ तगब भ न	14 गबन त र	17 व न त र	26 ब त र	25½ ब र व त	24½ र ब व त	26½ र ब व त	25½ भ त	27 भ	14 भ न ग	13 ब भ ग न	23½ ब भ त	23½ ब भ त	25½ ब र व त	26½ ब र व त	19½ बयर वतग

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 4)

वर / कन्या		तुला चित्रा 3,4	तुला स्वाती 1,2,3,4	तुला विशा. 1,2,3	वृश्चिक विशा. 4	वृश्चिक अनु. 1,2,3,4	वृश्चिक ज्ये. 1,2,3,4	धनु मूल 1,2,3,4	धनु पूषा. 1,2,3,4	धनु उ.षा. 1	मकर उ.षा. 2,3,4	मकर श्रव. 1,2,3,4	मकर धनि. 1,2	कुम्भ धनि. 3,4	कुम्भ शत. 1,2,3,4	कुम्भ पूभा. 1,2,3	मीन पूभा. 4	मीन उ.भा. 1,2,3,4	मीन रेव. 1,2,3,4
तुला	चित्रा 3,4	28 न	27 ग य	34½ त	23½ भ द त	6½ यगव तनभ	20½ भ व त य	27 त य र	14 ग भ त र	22 ग त र	25 ग त व	26½ ग व	23½ न व य	18 न भ य	26 भ य	18½ ग भ त य	12½ गभव तयर	3½ वतयग भनर	12½ यरग भवत
	स्वाती 1,2,3,4	28 य ग	28 न	20 न य ग	9 भवय नगत	21½ भ व त	16½ भ व त ग	23 त र ग	27 त र ग	19 त न र	22 न व त	23 न व त	26½ व य ग	21 य ग भ	20 ग य भ	25 य भ	19 व भ य र	19½ व त भ र	12½ वतभ नर
	विशा. 1,2,3	34½ त	19 ग न य	28 न	17 भ व न	16 ग व भ य	20½ भ व त य	27 त य र	22 ग त र	14 ग न त र	17 ग न व त	17 ग न व त	30 व त य	24½ भ त य	26 भ य	20 ग भ य	14 गभव यर	13 गयभ तर	4½ गभव नतयर
वृश्चिक	विशा. 4	22½ ब व भ त	7 बवग नभय	16 ब व न भ	28 न	27 ग य	31½ त य	21½ बवत यभ	16½ बवग भत	8½ दवग नभत	12 गबन तर	12 बनग तर	25 ब त य र	24 बवत यर	25½ ब व य र	19½ बवग यर	19 ग भ य	18 ग य भ	9½ गभन तय
	अनु. 1,2,3,4	6½ बवतभ यगन	21½ ब व भ त	16 बवभ यग	28 य ग	28 न	31 ग	15½ बवत गयभ	13½ तबव नभ	21½ ब व त भ	25 ब त र	26 ब त र	12 तयब नरग	11 तयबव नरग	21 बवत रग	24½ ब व य र	24 भ य	18 न भ	27 भ
	ज्येष्ठा 1,2,3,4	19½ बवत भय	15½ तबव गभ	19½ बवभ तय	31½ त य	30 ग	28 न	14 बवन भय	16½ बवत गभ	16½ बवत गभ	20 ग व त र	20 ग ब त र	25 ब त य र	24 बवत यर	18 बवन रत	10 तबवय गनर	9½ गभत नय	21 ग भ	21 ग भ
धनु	मूल 1,2,3,4	26 त ब य र	21 ग ब त र	26 त ब य र	22½ भ व त य	15½ गवभ यत	15 य व न भ	28 न	28 ग	26½ ग त	15 गबभ वत	15 गबभ वत	20 बभव तय	28½ ब व य	21½ ब न त	14½ गनब तय	16 गनव तय	25 ग व त	26 ग व
	पू.षा. 1,2,3,4	13 गबत नर	27 ब त र	21 ग ब त र	17½ ग व भ त	15½ भ व न त	17½ ग व भ त	28 ग	28 न	34	22½ ब भ व	23 ब भ व त	6 गबवभ नतय	14½ गबत नय	23½ ग ब त	28½ ब त य	30 व त य	23 न व त	31 व त
	उ.षा 1	21 ग ब त र	19 न ब त र	13 गबन तर	9½ गवभ नत	23½ भ व त	17½ ग व भ त	26½ ग त	34	28 न	16½ ब भ व न	14½ ब भ व न	15 गबव भत	23½ ग ब त	23½ ग ब त	29½ ब त	31 व त	31 व त	23 न व त
मकर	उ.षा. 2,3,4	24 ग ब त	22 न ब व त	16 ग ब न त	13 ग न त र	27 त र	21 ग त र	16 ग भ व त	23½ भ व	17½ न भ व	28 न	26 न	26½ ग त	17 गबभ वत	17 गबव भत	23 ब भ व त	30½ त	30½ त	22½ न त
	श्रव. 1,2,3,4	26½ ब व ग	22 न ब व त	17 नबग वत	14 न त र	27 त र	22 त र	17 भ व त ग	23 भ व त	14½ न भ व	25 न	28 न	28 य ग	18½ बभव यग	18 बभव तग	21 बभव तय	28½ त य	29½ त	22½ न त
	धनि. 1,2	22½ न ब व य	24½ ग ब व य	29 ब व त य	26 त य र	12 गनत यर	26 त य र	21 भ व त य	7 गभय वनत	16 ग भ व त	26½ ग त	27 ग य	28 न	18½ ब भ न व	23½ ब भ व य	19 गबव तभ	26½ ग त	15½ ग न त य	22½ ग य त
कुम्भ	धनि. 3,4	18 न भ य	20 ग भ य	24½ भ त य	25 त व य र	11 गवय तनर	25 त व य र	29½ त य	15½ ग त न य	24½ त ग	18 ग भ व त	18½ ग भ व य	19½ भ व न	28 न	33 य	28½ ग त	18 ग भ व त	7 तगभ वनय	14 गयव भत
	शत. 1,2,3,4	26 भ य	19 भ य ग	26 भ य	26½ य व र	21 ग व त र	19 न व त र	22½ न त	24½ ग त	24½ ग त	18 ग भ व त	18 ग भ व त	24½ भ व य	33 य	28 न	19 ग न य	8½ गभव नय	17 ग भ व त	16 ग भ व त
	पूभा. 1,2,3	18½ ग भ त य	26 भ य	20 ग भ य	20½ ग व य र	26½ व य र	11 गवत यनर	15½ न ग त य	29½ त य	30½ त	24 भ व त	23 भ व त य	20 भ ग व त	28½ ग त	19 न ग य	28 न	17½ न भ व	22½ भ व य	20 भ य व त
मीन	पूभा. 4	11½ गबवभ तयर	19 बभव यर	13 गबव भयर	19 ग भ य	25 भ य	9½ गभन तय	15 गबत नय	29 ब व त य	30 ब व त	29½ ब त	28½ ब त य	25½ ग ब त	17 ग ब भ त	7½ गबय भतन	16½ ब भ त न	28 न	33 य	30½ य त
	उ.भा. 1,2,3,4	2½ यवबर गभनत	19½ भवब तर	12 गवर भयब	18 ग य भ	19 न भ	21 ग भ	24 ग ब व त	22 न ब व त	30 ब व त	29½ ब त	29½ ब त	14½ गबत नय	6 गबवन भतय	16 गबव भत	21½ ब भ त य	33 य	28 न	35
	रेव. 1,2,3,4	12½ बभव तयर	11½ बभत दनर	4½ बभवन तगयर	10½ नभत यग	27 भ	22 भ ग	26½ ब ग व	29 ब व त	21 न ब व त	20½ न ब त	21½ न ब त	22½ ब य त ग	14 बवय भतग	16 बभव तग	18 बयभ वत	29½ य त	34	28 न

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

लग्न–गण्डान्त

कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु, मीन और मेष के अन्त एवम् आदि की आधी–आधी घड़ी लग्नगण्डान्त होता है। वह जन्म में ही भयप्रद होता है।

अथ विवाहमासाः–आचार्य चूड़ामणौ–"माङ्गल्येषु विवाहेषु कन्या–संवरणेषु च। दशमासाः प्रशस्यन्ते चैत्र–पौष–विवर्जिताः॥" वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद्वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र॥ केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया॥

अथ जन्म–मासादिषु निषेधः– सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्ममास (अर्थात् जन्मतिथि से ३० दिन) जन्मनक्षत्र अथवा जन्मतिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं है। **अत्यावश्यके परिहारः–** जातं दिनं दूषयते वशिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो– एक घर में दो शुभ काम करना मना है, परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग–अलग मण्डप गाड़कर और जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका हो, उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावें। इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मण्डप गाड़कर कार्य को करें।

अथ ज्येष्ठ विचारः– ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृत्तिका के सूर्य को छोड़कर दानादि पूर्वक करें।

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय– दो सगी बहनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करें तो निरसंदेह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट्मास तक कन्या का विवाह न करें और कन्या व पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करें, अर्थात् पहले कर लें और मंगलकार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्ध, तिलतर्पण भी न करें। मुण्डन भी विवाह, जनेऊ के पीछे न करें। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभकार्य कर लें। वहां छः मास का विचार नहीं है। यह ६ महीने का निषेध तीन पीढ़ी तक ही है।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच– साहे चिट्ठी (कुंकम पत्रिका) आने पर विवाह दिन निश्चित हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से एक साल, स्त्री के मरण से तीन मास, भाई व पुत्र के मरण से १$\frac{1}{2}$ मास, कुल वालों के मरण से २२$\frac{1}{2}$ दिन तक कोई शुभ कार्य न करें। अति संकट में ३० दिन बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करें।

त्रिबल शुद्धि विचार

विवाह के शुद्ध मुहूर्त पंचांग के अन्त में दिए गए हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त देखकर और उसी दिन वर की राशि से सूर्य, चन्द्र देखिए तथा कन्या राशि से चन्द्र, गुरु देखिए। बस, इसी को त्रिबलशुद्धि कहते है। यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह–दिन उत्तम है। यदि रवि, गुरु पूज्य हों तो मध्यम है, यदि सूर्य नेष्ट हो तो विवाह नहीं बनेगा–ऐसा समझें। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु.सू.चं.) शुद्धि प्रथम देखें– **"झष–चाप–कुलीरस्थो जीवोप्यशुभगोचरः अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु॥ (बृहस्पतिः)॥** अत्यावश्यकता में **"द्विरर्च्यो द्वादशस्तुर्योऽथाष्टमस्त्रिगुणार्चनात्। उच्च उच्चांशके ग्राह्यः चन्द्रादष्टमगो रविः। नीचे नीचांशके त्याज्यः अरिलाभादिगोऽपि चेत्॥"**

तुलाराशौ अपूज्यःरविः–धर्म–धी–धनगतो दिवाकरस्तौलिराशि–जनितस्य शोभनः।।

आवश्यके पूज्यरवि–परिहारः– गार्ग्याङ्गिरोवत्स वशिष्ठ गौतम पराशराद्याः मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहः॥ (मु.प्र.सा.)।

विवाहादौ त्रिबल–शोधनम्

पूज्यगुरुः– १०/६/३/१
श्रेष्ठगुरुः–९/५/११/२/७
नेष्टगुरुः– ४/८/१२
श्रेष्ठरविः– ३/६/१०/११
पूज्यरविः– २/५/९
विशेष पूज्य रविः– १/७
नेष्टरविः– ४/८/१२
नेष्टचन्द्रः– ४/८
श्रेष्ठचन्द्रः–१/२/३/५/६/७/९/१०/११/१२

कन्या–वरयोःतैलादि–लापन (बन्न)–दिन–संख्या

राशि →	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैल सं.	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

अथ विवाहे तिथि–वार–नक्षत्राणि–रो., मृ., उत्तरा. ३, म., ह., स्वा., अनु., मू., रे. एतद्वेध–रहितेषु शुभेऽह्नि। अमाक्षय–रहित–तिथिषु कात्यायनमते अश्वि., चि., श्र., धनिष्ठास्वपि शुभम्॥

अथ विवाहांगकृत्यारम्भ मुहूर्त्तः

वर, कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाहदिन से पहिले ३/६/९– इन दिनो को छोड़कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना, पीसना, कूटना, मंगलकशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगनसफाई, भूषण घढ़ाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना, चन्दोया बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध, मंगलस्नानादि सर्वकार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाह–मुहूर्त्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चवाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि– इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सबका विचार करके इस वर्ष के विवाहमुहूर्त्त लग्न दिए हुए हैं। इन दसों दोषों में जो दोष जिस मुहूर्त्त में हैं, वे क्रमानुसार टेढी रेखा से सूचित किए गए हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है।

(१) लत्तादोष–ज्ञान चक्र

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	← लग्न नक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	← दिशा
धननाशः	भयम्	मृत्यु	भयम्	बन्धुनाशः	कार्यहानिः	कुलक्षयः	मरणम्	← फलम्

यथा–सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ.फा. का हो। सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ.फा. १२वां हुआ, यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जानें।

(२) पातदोष ज्ञानचक्र

विवाह नक्षत्र	रो.	मृ.	मघा	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.
सूर्याधिष्ठित नक्षत्र	आर्द्रा पुन. श. पू.फा. चि. मू.	मृ. आ. ज्ये ध. म. ह.	अ. मृ. ज्ये. पुष्य ह. रे.	कृ. आ. वि. पू.फा. उ.भा. पू.भा.	भ. मृ. श. पू.भा. स्वा. म.	कृ. श्र. ध. पुष्य ह. रे.	अ. आ. उ.षा. पू.भा. पू.षा. पू.फा.	रो. ज्ये. ध. आश्ले. मू. उ.भा.	भ. पुन. श. वि. अनु. उ.षा.	भ. श. वि. उ.फा. पू.फा. मू.	अ. ज्ये. ध. म. पू.फा. स्वा.

हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।

(३) युतिदोष

जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो वहां उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च, मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता, किन्तु श्रेष्ठ है। सू., मं., शु., श., रा., के. की युति दारिद्र्य, मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

(४) वेध दोषचक्र

अश्वि.	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
पू.फा.	अभि.	उ.षा.	श्रव.	रेव.	उ.भा.	पू.भा.	शत.	भर.	पुन.	मृग.	मघा	आश्ले.	हस्त	उ.फा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेधदोष होता है। यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग देना चाहिए।

(५) जामित्र दोषचक्र

विवाह नक्षत्र→	रो.	मृग.	म.	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.
ग्रह नक्षत्र→	अनु.	ज्ये.	ध.	पू.भा.	उ.भा.	अ.	कृ.	मृग.	पुन.	उ.फा.	ह.

विवाहलग्न से सातवें ग्रह होने से जामित्रदोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र और नीचे ग्रह नक्षत्र हैं। यानी 14वें नक्षत्र में पापी ग्रह का जामित्रदोष वर्जनीय है।

(६) बाणज्ञान–चक्र

बाण नाम	गतांशाः प्रति राशौ अर्कस्य	कर्मसु वर्ज्याः	वारे वर्ज्याः	समयपरत्वेन वर्ज्याः
रोगः	८/१७/२६	व्रतबंध	रवौ	रात्रौ त्याज्यम्
अग्निः	२/११/२०/२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृपः	४/१३/२२	नृपसेवायम्	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चौरः	६/१५/२४	यात्रायाम्	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्युः	१/१०/१९/२८	विवाहे	बुधे	संध्ययोः वर्ज्यम्

(७) एकार्गल दोष

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड–ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

(८) उपग्रहदोष

सूर्य के नक्षत्र से ५, ७, ८, १०, १४, १५, १८, १९, २१, २२, २३, २४ और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

(९) स्थूल–क्रान्तिसाम्य–दोषचक्र

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला
सिंह	मकर	धनु	वृश्चि.	मीन	कुम्भ

नीचे और ऊपर की राशि पर कहीं भी सूर्य एवं चन्द्रमा हो तो स्थूल रूप से क्रान्तिसाम्य दोष होता है। यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे–मेष के सूर्य और सिंह के चन्द्रमा में या सिंह के सूर्य और मेष के चन्द्रमा मे। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित है। जिसका निर्णय महापातगणित से करना चाहिए।

(१०) दग्धातिथि–दोषचक्र

९	२	४	६	५	१०	← सूर्य राशयः
१२	११	१	३.	८	७	
२	४	६	८	१०	१२	← तिथयः

इन संक्रान्तियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं। विशेषतः ये मध्यप्रदेश में ही वर्ज्य हैं।

"भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीन–विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत्।। *–कश्यपः*

लत्तादि–दोषाणां परिहारवाक्यानि

लत्ता मालवके (उज्जैन प्रान्ते) देशे, पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्रबांगरे) जांगले (फिरोज़पुर–भटिण्डाप्रान्ते)। एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्।। उपग्रहर्क्षं कुरुवाह्लिकेषु (कुरुक्षेत्र, आगराप्रान्ते) कलिंगबंगेषु (जगन्नाथपुरी–बंगाल–अयोध्यायां) च पातितं भम्। सौराष्ट्रे (काठियावाड़े) शाल्वे (उज्जैनप्रान्ते) च लत्तितं भं त्यजेत्तु विद्धं किल सर्वदेशे।। युतिदोषो भवेद्गौडे (बंगाले) जामित्रस्य च यामुने (मथुराप्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः।।

विशेष परिहारः– चित्रांगते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः।।

युतिपरिहारः–स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः।
युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा ॥

अत्यावश्यके वेध–परिहारः–"पादमेकं शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः।" –(नारदः)

ग्रह प्रथम चरण में हो तो चतुर्थ चरण में वेध होता है, यदि चतुर्थ चरण में हो तो प्रथम चरण विद्ध होता है। द्वितीय में हो तो तृतीय, तथा तृतीय चरण में ग्रह हो तो द्वितीय चरण विद्ध होता है। आवश्यकता में चरणमात्र का त्याग किया जाता है– भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः ॥

अस्यापवादः– ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण युक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते।।

एकार्गलोपग्रह-पात-लत्ता-जामित्रकर्तर्युदयास्त दोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्क-बलोपपन्ने लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः॥ - (मु.चिं.)

उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः।
केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान् गरुडो यथा।।

विवाहे लग्न–शुद्धिचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	←भावाः
चं. पाप.	०	शु.	रा.	०	चं. शु. लग्नेश	सर्वे	चं. मं. शुभाः लग्नेश	०	मं.	०	श.	← त्याज्याः
चं. मं.	कुलिकं क्रान्तिसाम्यश्च				चं.	मं.	चं. मं.	विद्धभश्च				← गोधूलौ त्याज्याः

लग्नभंगयोगा :– व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः। लग्नेट् कविग्लौ च रिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे न सर्वे (अस्तेऽब्जगुरु समौ)॥ वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रदः। वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नन्त्वष्टमो राशिरेव च। यदि लग्नंगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः॥ पंगुवन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः। बादरायणः मासशून्याह्वयास्तारा राशयो वधिरादयः। गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः।।

कर्तरी दोषः— लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोश्च साध्वोः सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः। तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्तरी चेति पितामहोक्तिः॥ इय कर्तरी चन्द्रस्यपि द्रष्टव्या। **केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहाराः** —पापौ कर्तरिकारकौ रिपुगृहनीचास्तंगौ कर्तरी दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्पष्ठदोषेऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे— दोषाश्च बहव सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह॥

अपवादान्तरम्— उक्तानुक्ताश्च ये दोषस्तान्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्र-संस्थः सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा॥ मुहूर्तलग्नषड्वर्गकुनवांश ग्रहोद्भवाः। ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगःशशी॥ अब्दायनर्तुमासोत्थाः पक्षतिथ्यृक्षसम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये। सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत्॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोष-शतत्रयम्। द्यूनं विहाय दैत्येज्यः सहस्रं लक्षमंगिरा॥ स्मरण रहे कि— पूवोक्त अपवाद वाक्यों में सप्तमरहित केन्द्र (१/४/१०) ही ग्रहण करना चाहिए।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रद–स्थानानि

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहाः	मुहूर्त गणपतौ
३	२	३	१	१	१	३	३	३		लग्नं शुभं विवाहे स्याद्
६	३	६	२	२	२	६	६	६		दशविंशोपकाधिकम्।
८	११	११	३	३	४	८	८	८		
११			४	४	५	११	११	११		
			५	५	९					
			६	६	१०					
			९	९	११					
			१०	१०						
			११	११						
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विंशोपकबलम्

अथ गोघूलि लग्नविचारः— लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी। तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोघूलिकं साधु तदा वदन्ति। लग्ने विशुद्धे सति वीर्ययुक्ते गोघूलिकं नैव फलं विधत्ते॥ मार्ग., माघ, फाल्गुन में संध्यासमय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर चैत्र, वैशाख में गौओं की धूली से आकाश आच्छादित होने पर, ज्येष्ठ, आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर, श्रावण भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है।

गोधूलिके त्याज्या दोषाः— कुलिकं क्रातिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तथा गोधूलिके त्याज्यं पञ्चदोषैस्तु दूषितम्। अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के। अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे।क्योंकि सूर्य अस्त से पहले वारबेला होगी और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने में कुलिकं मुहूर्त्त होगा) गोधूलि समझना चाहिए।

संकीर्ण वर्णसंकर चाण्डालादि जाति का विवाह मुहूर्त्त

कृष्णपक्ष क्रूरवार निषिद्ध नक्षत्र योगों में संकीर्ण जाति वालों का विवाह धन, पुत्र आयु प्रीती लाभ देता है। ऐसा शौनकादि मुनि कहते हैं।

पुनर्विवाहे (रीत) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम्								
नक्षत्र→	३	३	३	३	३	३	३	३
फल→	मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	दुर्भग	श्री	उन्नति

अन्यच्च— सूर्यभात् ४/११/१८/२५ संख्यकसाभिजिदभेषु पुनर्विवाहे मृत्युः। अत्र तिथि–गासवेध भृगु–गुर्वस्तादि दोषोऽपि नावलोकनीयः।

वधु प्रवेश का मुहूर्त्त

जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहले आती है वह वधू प्रवेश कहा जाता है। विवाह के १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन; इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में; एकवर्ष के भीतर विषम मास में; एक वर्ष के उपरान्त ३रे, ५वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ है। ५वर्ष के उपरान्त जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता है। १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि, चन्द्रबल, गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना— व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा अमासंक्रान्ति–तिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत्॥ रेव., अश्वि., रोहि., मृग., श्रव., धनि., हस्त, चित्रा, स्वा., मघा, मूल, उत्तरा ३, पुष्य, अनु., इन नक्षत्रों में और चं., बु., बृ. शु. श. इन वारों में १/२/३/५/६/७/८/१०/११/१२/१३/१५ तिथियों में, ५/८/११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हों तो वधु प्रवेश शुभ है।

वधु–प्रवेश–समय

वधुप्रवेशो न दिवा–प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि–प्रशस्तः।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः॥

विवाहतः प्रथम वर्षे वधू–निवासफलम्– विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को और अधिक मास में पति को नाश करती है। विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं होता।

द्विरागमन का मुहूर्त्त

प्योके (पितृगृह) से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं। विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवें वर्ष वृश्चिक कुम्भ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को २, ३, ६, ७ या १२ वीं राशि के लग्न में हस्त, अश्वि., पुष्य, अभिजित्, तीनों उत्तरा, रोहि. स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत., मूल, मृग., रेव., चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है।

विशेषः– द्विरागमं षोडशवासरान्ते एकादशाहे समवासरेषु। न चात्र ऋक्षं न तिथिर्न योगो न वारशुद्ध्यादि विचारणीयम्।।

शुक्र सम्मुख व दक्षिण में निषेध– सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि नूतन वधू जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे। यदि ऐसे समय राजविद्रोह–राजपीड़न आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवम् विवाह सम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं, क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है।

विशेषः– सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे सम्मुखेऽस्तंगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे।।

अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः– राजते वाथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुनः। शुक्लपुष्पांबरयुते श्वेततण्डुलपुरिते।। निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ता फलान्वितम्। महाश्वेत गवायुक्तं सामगाय निवेदयेत्।

प्रथम स्त्रीसंगम मुहूर्त्त

रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त, ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो., मृ., पुष्य, ह., चि. अनु., ध., उत्तरा. ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम पहर को छोड़कर। शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर, प्रथम दिन स्त्री संगम करें।

मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्त्तव्य– स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करें, आदर सत्कार करें। विशेष गुप्त बात न कहें और विशेषाधिकार भी न दें, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती। अपवाद में एक–दो हो सकती है। प्रभुकृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिए। उसका दिल और दिमाग तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है। पशुओं में भी घोड़े, हाथी, सांड, भैंसा आदि अपनी स्त्री जाति पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं।

नववधुद्वारा पाककर्म मुहूर्त्त

द्विरागमनोत्तरं मृग., उत्तरा. ३, पुष्य, कृ., ज्ये., श्रव., धनि., श., रो., वि., रे. एषु नक्षत्रेषु शुभवासरे (रविभौमवर्जिते), रिक्ताक्षयरहिततिथौ, २/५/८/११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टमशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाक्कर्म शुभम्।

सधवा स्त्री का वस्त्र, सुवर्णरत्नभूषणादिधारण करने का मुहूर्त्त

हस्त., चित्रा., स्वा., अनु., धनि., रेवती., अश्वि. एषु भेषु, बु., गु., शु., वारेषु रिक्तामावस्यारहित तिथिषु, नूतन वस्त्रसौवर्णरत्नरजत–दन्तादि भूषणानां धारणं प्रशस्तम्।।

चूड़ीचक्र में विशेषः– सूर्य नक्षत्र से गणना करने पर ८ अशुभ। ३ शुभ। २ अशुभ। ७ शुभ। २ अशुभ। ४ शुभ। १ अशुभ। गुरुशुक्रोदय में शुभ।

वस्त्रधारणे विशेषः– विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्षमापालने समर्पितम्। निन्द्येपि धिष्ण्ये वारादौ धारयेच्च नवाम्बरम्।।

आभूषण बनवाने का मुहूर्त्त

हस्त., अ., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रव., धनि., शत., उत्तरा.३, रोहि. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षयरहित तिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम्।।

दुकान खेलने का मुहूर्त्त

हस्त, चित्रा, रोहि., रेव., उत्तरा. ३, पुष्य, अश्वि., अभि. इन नक्षत्रों में ४। ९। १४। ३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़कर अन्यवारों में, कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में, २। १०। ११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३। ६ में पापग्रह हों, ८। १२ वां स्थान पाप रहित हो, शुभ दशा भी हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है।

भर्तृगृह से पितृ गृहागमन मुहूर्त्त

पूर्वा.३, भ., मू., म. ज्ये., आर्द्रा, आश्ले. एतद्भिन्नेषु, चं., बु., शु., वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः।।

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त्त

भ., आर्द्रा, आश्ले., म., पूर्वा. 3, ज्ये., मू. इन नक्षत्रों को छोड़कर, शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है।

हट्टचक्रः— सूर्य नक्षत्र से दुकान खेलने के दिन तक, नक्षत्र गिन कर चक्र से शुभाशुभ फल जानें।

हट्टचक्र								
नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैर्ऋत	सम्मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोरभय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवाकर्म (नौकरी) मुहूर्त्त

अ., मृ., चि., ह., पुष्य, अनु., रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, र., बु., बृ., शु. वारेषु शुभः। लग्नस्थे, १०, ११ सूर्ये—भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशीश—योनि—मैत्र्यां सत्यां शुभः।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भ मुहूर्त्त

अश्वि., रो., मू., पुन., पु., उत्तरा. ३, ह., चि., अनु., श्रव., रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू., चं., बु., बृ., श. वारेषु शुभे युते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्यायाष्टरहिते पापैः केन्द्रकोणगैः शुभैः स्यात्।।

द्रव्यप्रयोगमुहूर्त्त

पुन., स्वा., मृग., रे., चि., अनु., वि., पुष्य., श्रव., ध., श., अश्वि. एषु नक्षत्रेषु १। ४। ७। १०, लग्नेषु ९। ८। ५ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रावसरे ९। ५ शुभः, ग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः।।

ऋण लेने के लिए वर्जितकाल

मंगलवार, संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवार को धन न देना चाहिए। कृ., रो., आर्द्रा, आश्ले., उत्तरा ३, वि., ज्ये., मू. नक्षत्रों में भद्रा, व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है।

श्रीकाशीनाथ के मत से क्रयविक्रय मुहूर्त्त

पुष्य, पू.भा., अनु., श्रव., ह., म., स्वा., उत्तरा.३, आश्ले., रे., एषु भेषु सत्तिथौ, शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम्।

वस्तु खरीदने के नक्षत्रः— रे., शत., अश्वि., स्वा., श्रव., चि., वारों में. बुध, रवि श्रेष्ठ माने गए हैं।

वस्तु बेचने के नक्षत्रः— पू. फा., पू. षा., पू. भा., वि., कृ., आश्ले., भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गए हैं।

नोटः— बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ फीसदी नुकसान रहेगा, इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने—बेचने के नक्षत्र दिखाए गए हैं, परन्तु सम्प्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना। ऐसे व्यापारी क्या करेंगे, इन नक्षत्रों को।

१० बार बेचना, २० बार खरीदना। ऐसे व्यापारी क्या करेंगे, इन नक्षत्रों को।

लेकिन हमारा कहना है कि विश्वास करके परीक्षा तो कीजिये, बात कहां तक सच है। सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सत्य हैं।

प्रार्थनापत्र (अर्जी) देने का मुहूर्त्त

४। ९। १४ तिथि हों, मं., श. वार हों, कृ., आर्द्रा, भ., अश्वि., आश्ले., म., ज्ये., मू., वि., पूर्वा. ३ नक्षत्र हों, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई–चौड़ाई को परस्परगुणाकर, आठ का भाग देवें, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वज, २ धुम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ, ७ हस्ति, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और २ आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शुद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ है।

ग्रामभात् वासकर्तुः नक्षत्रं यावद् सामिजित् गणना कार्या

स्थान	नक्षत्र	फलम्
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान

घर केक्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई–चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणाकर २७ का भाग दें। जो अंक शेष रहे, तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जानें। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवें। शेषांक तुल्य व्यय जानें। आय से व्यय कम हो तो शुभ, अन्यथा अशुभ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भुमिपूजन पूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा, एक हाथ लम्बा और एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर, उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा

मकान की नींव को इतना गहरा खोदें कि जल दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक निकले अथवा साढे तीन हाथ गहरी खोदें अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदें। खोदते समय यदि ज़मीन में पत्थर निकले तो धन–आयु की वृद्धि हो; अगर गुठली निकले तो धननाश हो और अगर अस्थि, राख, बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि–पीड़ा हो।

गृहारम्भमुहूर्त्त

वैशा., श्रा., मार्ग., माघ, फाल्गुन सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं; भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २। ३। ५। ६। ७। १०। ११। १२। १३। १५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा, इन तिथियों में चं., बु., गु., शु., श. वारों में; रो., मृ., चि., ह., स्वा., अनु., उत्तरा. ३, ध., श., रे. वेधरहित नक्षत्रों में; २। ३। ५। ६। ८। ११। १२ लग्नों में; पञ्चवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में; लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३। ६। ११ वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्सचक्र व मासादि का विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्

सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।

स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाहः
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेषः– पुष्य, उत्तरा. ३, रो., म., आश्ले., पू.षा., इनमें से जिस पर बृहस्पति हो, उस नक्षत्र में बृहस्पतिवार को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो., ह., अ., उ. फा., चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। वि., अ., चि., ध., श., आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्:– "संक्रान्ति मिति दिन पांचवें सप्तम नवम जोय।

१०। २१। २४ में षंड्दिन पृथ्वी सोय।। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५। ११। ७। ६। २। १० एताः घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः।" **अन्यच्च—** सूर्य के नक्षत्र से ५। ७। ९। १२। १९। २६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्य में कूपविचार								
मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
र्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्ति	पुत्रनाश	स्त्रीनाश	गृहेशनाश	संपत्	सुख	शत्रुभय

अथ चुल्लिचक्र—विचार

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्रपीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर—सुख—भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डित जन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चुल्हा बनावें तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावें।

नूतनगृह प्रवेश मुहूर्त्त

माघ—फाल्गुन—वैशाख—ज्येष्ठ मासेषु शोभनाः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग.)कार्तिक मासयोः।। (यहां चन्द्रमास लेना) उत्तरा. ३, अनु., रो., मृ., चि., रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामारहित तिथियों में। चं., बृ., श. इन वारों में। २। ५। ८। ११ लग्नों में; **अत्यावश्यके** ३। ६। ९। १२ लग्नों में भी; लग्न से १। २। ३। ५। ७। ९। १० इन स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३। ६। ११ में क्रूर हों १। ६। ८। १२वें चन्द्रमा न हो; चौथा, ८वां स्थान शुद्ध हो; जन्म लग्न या जन्म राशि से ८वीं राशि लग्न में न हो; चन्द्र—तारा शुभ हो और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो, तो आगे गौ, कन्या, जलपूर्ण—पुष्पमाला युक्तकलश, शंखध्वनि व मंगलगान के साथ दम्पति का गृह प्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त्त

पुराने अर्थात् जीर्ण या तृणकुटीर अथवा अग्नि—वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वैशाख., श्रावण, कार्त्तिक., मार्गशीर्ष और फाल्गुन मास में शत., पुष्य, स्वा. और धनि. नक्षत्रों तथा गुरु, शुक्र के अस्त में भी गृह प्रवेश हो सकता है।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्				
खाते राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भागःशुभदो भवेत्।				
राहुमुखम्	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालया-रम्भे सूर्यः	मीन, मेष, वृष	मिथुन, कर्क,सिंह	कन्या,तुला, वृश्चिक	धनु,मकर, कुम्भ
गृहारम्भे सूर्यः	सिंह, कन्या, तुला	वृश्चि., धनु, मकर	कुम्भ, मीन, मेष,	वृष, मिथुन, कर्क
जलाशया-रम्भे सूर्यः	मकर,कुम्भ, मीन	मेष, वृष, मिथुन	कर्क, सिंह, कन्या	तुला,वृश्चि., धनु
खातदिशा-ज्ञानम्	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम्		
सूर्यनक्षत्रात्		
स्थान.	न	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोणे	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाशः
मध्ये	४	सौख्यम्
चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम्।		

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्			
सूर्यभात्			
५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप, तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त्त

अनु., हस्त., उत्तरा. ३, रोहि., धनि., शत., भरणी, पू.षा., रेवती, पुष्य, मृग. नक्षत्र हों व चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध, मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १०वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २। १०। ४। ११। १२ लग्न हों तो अत्यउत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूप—नलचक्रम्			सूर्यभात्तड़ागचक्रम्		
ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल	ईशान २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आग्ने. २ जलाधिक्य
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल	उत्तर २ अमृतजल	मध्य ५ बहुजल	दक्षिण २ जलनाश
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्यां ३ अमृतजल	वायव्य ३ जलनाश	पश्चिम २ बहुजल	नैर्ऋत्य २ अमृतजल

गणनाक्रमः–मध्य–पूर्व–आग्नेय–दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्– अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति। तत्फलम्–वारिवाहे वारिहानिः। गणनाक्रमः– पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, मध्य में वारिवाह।

रोहिणीभात् वापीचक्रम्

ईशान अश्विनी, भरणी, कृत्तिका मध्यजलम्	पूर्व पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा जलाभावः	आग्ने. मघा, पू.फा., उ.षा. मध्यजलम्
उत्तर पू.भा., उ.भा., रेवती मिष्ठजलम्	मध्य रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा शीघ्रजलम्	दक्षिण हस्त, चित्रा., स्वाती जलाभाव
वायव्य श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा. क्षारजलम्	पश्चिम मूल, .पू.षा., उ.षा. अमृतजलम्	नैर्ऋत्यां विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा बहुजलम्

जलाशयारामदेवप्रतिष्ठामुहूर्त

"देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे। माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने।। मातृ–भैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः। महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने।।"

अश्वि., रोहिणी, मृग., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु., श्रवण, धनि., शत., उत्तरा. 3, रेवती एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २। ३। ५। ७। ८। १०। ११। १२। १३ तिथिषु शुक्ले १। २। ३। ५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्ब–लास्तादिरहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२। ५। ८। ११) लग्नेषु लग्नात् १। ४। ७। १०। ९। ५। २। ११ स्थानेषु शुभैः, ६। ११ सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्ने देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवता–विशेषेण लग्नम्ः– सिंहे सूर्यः शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः। कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्राद्यंगदेव्यः स्थिरेऽखिलाः।। यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिनेयदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्त्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः।।

वास्तुशान्ति मुहूर्त

श्रव., धनि., मृग., मूल, अनु., रेवती, हस्त, चित्रा, स्वा., उत्तरा. 3, पुन., पुष्य, रोहि., अश्वि. एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है

जिस दिन हवन करना हो, उस दिन तिथि और वार क संख्या जोड़कर एक ओर जोड़ना, पुनः ४ का भाग देना। यदि पूरा भाग लग जाए, (०–शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे, तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानिकारक, शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से तथा वार की गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुतिचक्र जरूर देखिए।

विशेषः– यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्याखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्।। महारुद्रे व्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कास्तराहुणा। नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत्।। दिग्दाहेप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत्।। लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणेमहाविधौ। देवखातभवने सुरालयादग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः।। दुर्गभंगे गृहे वापि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकार्ये नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत्।।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्

(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

ग्रहाः	सू.	बु.	शु.	श.	चं.	मं.	गु.	रा.	के.
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फलम्	नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट

पापग्रहमुखे–हवने कृते शान्तिः–क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शान्तिं विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने। आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेतामधोमुखीम्। गोमूत्र–मधुगन्धाद्यैरर्चितां प्रतिमां ततः। कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते।।

अथ ऋणी–धनी विचार– स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत्।।(अर्थात् अपने वर्ग को दूना कर, दूसरे के वर्ग में जोड़ना, फिर ८ का भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दूना करके, अपना वर्ग जोड़ना, फिर ८ का भाग देना। जिसका शेषांक अधिक बचे, वह दूसरे का ऋणी होगा।), लेकिन वशिष्ठ आदि का मत है कि जिसका शेषांक कम बचे, वह दूसरे का ऋणी होता है– यही प्रामाणिक है।

हलप्रवहण मुहूर्त्त

मृग., रेव., चित्रा, अनु., रोहि., उत्तरा.३, हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रवण, धनि., श., मूल, मघा, विशा. एषु भेषु रिक्तामाषष्ट्यष्ठमीरहित सत्तिथौ शुभ–ग्रहस्य वासरे, १। ५। ७। १०। ११ लग्नेषु भूमिशयन–भद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हलचक्रम्					बीजवपने राहुचक्रम्								
सूर्यमुक्तनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें					राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
नक्षत्र	३	७	९	८	८	३	१	३	१	३	१	३	४
फल	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्त्त

हस्त, अश्वि., पुष्य, उत्तरा. 3, चित्रा, अनु., मृग., रेवती, स्वा., धनि., मघा, मूल एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः।

विशेषः– रवौ रौद्रा(आर्द्रा) द्यपादस्थे भूमेः संजायते रजः।
तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत्।।

नवान्न–भक्षण–मुहूर्त्त

मृग., रेवती, चित्रा, अनु., हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत. एवम् विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है, नन्दा–रिक्ता तिथियों और पौष–चैत्र को छोड़कर अन्य मासों में सू., बु., गु., शुक्रवार शुभ है।

गौ, बैल आदि पशु लेने का मुहूर्त्त

अश्वि., पुन., पुष्य, हस्त, विशा., ज्ये., धनि., शत., रेव. नक्षत्र में गौ लेना–बेचना। अन्य पशु पुन., पूर्वा. 3, हस्त, अनु., ज्ये., मूल, धनि., रेवती में लेना–बेचना शुभ है। गाय लेनी हो तो उ.फा. से दिन नक्षत्र तक गिने। ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है। वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक; फिर दो–दो के क्रम से गाय के समानफल जानें। महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौ नक्षत्रगणना क्रम से शुभाशुभफल हेतु सूर्य नक्षत्र तक गिनें– नौमी चौदस चौथ चौपाया। मंगल हान करे घर आया।।

सूर्यनक्षत्रात्काष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापनचक्रम्							
नक्षत्र संख्या	६	२	४	४	४	४	४
	उत्तमपाक	शवदहन	सर्पभय	मित्रलाभ	रोगभय	क्वाथकर्म	सुख
फल	शुभ	नेष्ट	नेष्ट	शुभ	नेष्ट	नेष्ट	शुभ

लतावृक्षाद्यारोपण मुहूर्त्त

मृग., रेवती, चित्रा, अनु., उत्तरा. 3, रोहि., हस्त., पुष्य, अश्वि., शत., मूल, विशा. नक्षत्रों में रिक्तामारहित शुभ तिथियों में और चं., बु., बृ., शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४। १०। ११। १२ लग्न में शुभ हैं।

तृणकाष्ठादिसंग्रहे निषेधः – तृण–काष्ठ का सञ्चय और पलंग बनवाना आदि कर्म कुम्भ–मीन के चन्द्रमा (पञ्चककाल) में नहीं करना चाहिए।

औषधसेवन का मुहूर्त्त

हस्त, अ., पुष्य, अभि., मृग., रेवती, चित्रा, अनु., स्वा., पुन., श्रव., धनि., शत. व मूल में जन्मनक्षत्र को छोड़कर, इन नक्षत्रों में ४। ९। १४ को छोड़कर, शुभ तिथियों में, भौम–शनि को छोड़कर, अन्यवारों में शुभ है।

अथ यात्रा–मुहूर्त–विचारः

हस्त, मघा, श्रव., अश्वि., पुष्य, पुन., धनि., अनु., रेवती, एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रोहि., उत्तरा. ३, पूर्वा. ३, एषु भेषु मध्या; भरणी, कृत्ति., आर्द्रा, आश्ले., मघा, चित्रा, स्वा., विशा., ज्ये., एतद्भेषु निन्द्याः। त्रात्यावश्यकेऽपि यात्रायां भरण्यादि भानां क्रमात् ७। २१। १४। १४। ११। ०। १४। १४। १४ एता घटिकाः गमन कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः। २। ३। ५। ।१०।११।१२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु द्विग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा।

द्विग्द्वारलग्नानि

दिशा→	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
शुभम्→	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	४।८।१२
मध्यमम्→	२।६ १०	३।७।११	४।८।१२	१।५।९
भयम्→	४।८ १२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११
महद्भयम्→	३।७।११	४।८।१२	१।५।९	२।६।१०

यात्रा में शुभाशुभ लग्नः– जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें। शुभलग्न वह है, जब १। ४। ५। ७। ९। १० स्थानों में शुभ ग्रह और ३। ६। १०। ११ वें पापग्रह हों। अशुभ लग्न वह है– जब १। ६। ८। १२वें चन्द्रमा, १०वें शनि, ६वें शुक्र, १२। ६। ८वें लग्नेश हो। **अन्यच्च–** यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने।।

जन्मलग्नेश, दशेश अस्त हों व मारकदशा हो तो सुमुहूर्त में भी दूर की यात्रा न करें, प्रथम तीर्थयात्रा व देवदर्शन गुरु–शुक्रास्त में वर्जित है।

दिक्शूलज्ञानाय चक्रम्									नक्षत्रशूलचक्रम्			
दिशा	पूर्व	आ.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.	पू.	द.	प.	उ.
वार	चं.,श.	चं.,बृ.	गुरु	सू.,शु.	सू.,शु.	भौम	मं.	बु.,श.	ज्ये.	पू.भा.	रोहि.	उ.फा.

दिक्शूलपरिहारः– न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम्। दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः॥१॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्य चन्द्रवारे पयस्तथा। गुड़मंगारके वारे बुधवारे तिलानपि। गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि। माषान्भुक्त्वा शनेर्वारि शूले गच्छञ्छूले न दोषभाक् ॥२॥

यात्रायां कालज्ञान चक्रम्

सम्मुखे	शनौ	शुक्रे	गुरौ	बुधे	भौमे	चन्द्रे	रवौ
नेष्टः	पूर्वे	आग्नेय्यां	दक्षिणे	नैर्ऋत्यां	पश्चिमे	वायव्ये	उत्तरे

योगिनीवास–चक्रम्

दिशा	पूर्व	आग्ने.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.
तिथि	१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बाएं की शुभ किंवा युद्ध यात्रा में बाएं ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है।

समयशूलः– उषाकाल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्धरात्रि उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए।

गर्ग–गुरु–अङ्गिरामत– गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे तो गमन करें। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करें। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाए। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पंच–पंच (५५) उषाकालः सप्तपञ्चाशद (५७) रुणोदयः। अष्ट पंच (५८) भवेत्प्रातः शेषः सूर्योदयो भवेत्।।

चन्द्रवासचक्रम्

पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यके तात्कालिक–यात्रायां घट्यात्मकं चन्द्रवासचक्रम्

दिशा	पू.	द.	प.	उ.	पू.	द.	प.	उ.
घटी	१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४

घट्यात्मक चन्द्रवास

जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए। कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जाएं।

चन्द्रफलम्ः– सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुख–सम्पदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषाःलयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे॥

सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा–भगणदोषं वार–संक्रान्ति–दोषं कुतिथिकुलिकदोषं यामयामार्धदोषम्। कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादि दोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमाः सम्मुखस्थः॥

सर्वाङ्कसिद्धियोग–यात्राकालिक शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या को जोड़कर तीन जगह रखें। क्रमशः ७। ८। ३ का भाग दें। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अङ्क आने से सौख्य, जयलाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वाकादि मुहूर्त्त के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत्य को मत जाएँ, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो भी कदापि न जाएं, क्योंकि मुहूर्त्त एवम् शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

वर्ण के क्रम से प्रस्थान का विधान– यदि यात्रा मुहूर्त्त में किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय, तो उसी मुहूर्त्त में ब्राह्मण जनेऊ, माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु–घृत व रुपया और शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध, किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान के समय रखे। अथवा मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख देना चाहिए।

यात्रा से पहले त्याज्य वस्तुः– यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दें, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन और समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य ही करें।

दिने चतुर्घटिका मुर्हूत्तम्		रात्रौ चतुर्घटिका मुर्हूत्तम्
सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि	घटि.	सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३॥।	शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ
चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ	७॥	अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग
लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग	११।	चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ
अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग	१५	रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत
काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर	१८॥।	काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर,
शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ	२२॥	लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग
रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत	२६।	उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३०	शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ

सूचनाः– यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी–पल ज्ञात होंगे।

यात्रा में शुभ शकुन– मृग बाएं ते दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी बहू मिले चलते प्रातःकाल॥ विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल, निर्मलवस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुत–स्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धि वाक्य, जलपूर्णघट। यात्रा पश्चात् रिक्तघट यात्रा के समय देखने में शुभ है।

यात्रा में अशुभ शकुन :– बन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जारयुद्ध, कुटुम्बकलह, विधवास्त्री, जातिभ्रष्ट, अङ्गहीन, छिक्का, दुष्टवाणी यात्रा के समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

आवश्यके रामदैवज्ञोक्त यात्रामुहूर्त्तचक्रम्

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चि.	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्रय	दारिद्रय	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	लाभ	सुख
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तृतीया–त्रयोदशी, चतुर्थी–चतुर्दशी, पञ्चमी–पूर्णमासी का फल समान जानना। अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े। कार्य सिद्ध हो, यात्रा सफल होगी।

नौकायात्रा–मुहूर्त्तः

चित्रा, हस्त, पु., मृग., पूर्वा. 3, अनु., श्रव., धनि.–एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽह्नि चन्द्र–तारानुकूल्ये सति शुभः।

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशमुहूर्त्तः

मृग., रेवती, अनु., रोहि., उत्तरा. 3, हस्त, अश्वि., पुष्य, स्वा., श्रवण, धनि. –एषु भेषु; चं., बु., बृ., शु., श. वारेषु; १। २। ३। ५। ७। १०। ११। १३ तिथिषु; ३। ।। ८। ९। ११। १२ एषु लग्नेषु; १। ४। ७। १०। ५। ९ स्थानेषु शुभैः; ३। ६। .१ स्थानेषु पापैः; ४। ८ शुद्धौ शुभः। विशा., कृत्ति., पूर्वा. ३, भरणी, मघा, मूल, ज्ये., आर्द्रा, आश्ले., नक्षत्राणि; ४। ९। १४। ६। १२। ८। ३० तिथयः; सू., मं. वारौ; १। ४। ७। १० लंग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि।

मंगलवार को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है।

विशेषः– प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्। नवमे जातु नो कुर्यादिने वारे तिथावििति।।

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

राशि→	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
घात चन्द्र	मे.	क.	कुं.	सिं.	म.	मि.	ध.	वृष	मी.	सिंह	ध.	कुम्भ
घात वार	र.	श.	चं.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	शु.
घात नक्षत्र	म.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	आश्ले.
स्त्री चन्द्रघात	मे.	ध.	ध.	मि.	वृश्चि.	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि.	मि.	मेष
घात मास	का.	मार्ग.	पौ.	मा.	फा.	चैत्र	वैशा.	ज्ये.	आषा.	श्रावण	भाद्र.	आ.
घातयोग	वि.	सु.	प.	धृ.	प्री.	सु.	अ.गं.	वृ.	वै.	गं.	व्या.	वै.
घातलग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घाततिथि	१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५
घाततिथि	६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०
घाततिथि	११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	४	१३	१५

युद्ध, विवाद, राजसेवा,वाहन, रोगादि कार्यों में घातचक्र देखना और तीर्थयात्रा तथा विवाहादि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं होती। **"घाततिथिर्घातवारः घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसु शोभनम्।।"**

वाम–दक्षिणनिर्देश

अग्रे चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ, भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का है, वही सरट (गिरगिट) के चढ़ने का समझें। सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथाङ्ग विभाग में पल्ली–(छिपकली, कोढ़किरली) पतन का फल

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयम्	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्रलाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्नभोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धिः	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	रणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द.मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षिणांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यर्क्षाणि

यदि छिपकली १। २। ३। ५। ६। १०। ११। १२। १३– इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है तथा चं., बु., गु., शु.– इन वारों में भी शुभ फल देती है। पुष्य, अश्वि., रोहि., मूल, पुन., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., धनि., रेवती, अनु., शत.– ये नक्षत्र शुभफलदायक हैं। इसके अलावा अन्य नक्षत्रों में गिरे तो शुभ नहीं– अतोऽन्यदभेषु निन्द्याः।

पल्ली (किरली) पतनोपरान्त कर्तव्य—पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगिट) स्पर्श होने पर वस्त्रसहित स्नान करें। जन्मनक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धा-तिथि, भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय जाप एवम् तिल, स्वर्ण, दान और पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान भी करना उत्तम है।

छिक्का फलम्

छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है। गौ की छिक्का मरण करती है– "मदिरा के योग अथवा छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं, पीन सरदी घास फल हीनी। छींक पीठी की कुशवाल उचारे; बाईं कारज सवै सवारे॥१॥ सम्मुख छींक लड़ाई भापै; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ॥२॥ ऊंची छींक कहे जयकारी; नीची छींक होय भयकारी। अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई ॥३॥

कन्या, विधवा, मालिन, धोबिन, रजस्वला, वैश्या, चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्काः— आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहाः। एक नाक से दो छींक भी शुभ मानी जाती है– एक नाक दो छींक; काम बने सब ठींक॥

तीर्थ में मुण्डनविचार

मुण्डनं चोपवासञ्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः। वर्जयित्वा कुरुक्षेत्र विशालां (उज्जयिनी) गिरिजां गयाम्।।

अथ वारंपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं-विधिश्च								तैलाभ्यंगे वर्ज्यानि
सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः	तदत्राह–
तापम्	सुकीर्ति	मृतिः	श्री.	वित्त हानि	विपत्ति	सुख सुयोग	फलम्	रवौ भौमे व्यतिपाते संक्रांतौ वैधृतावपि । षष्ट्यष्टम्योश्च विष्ट्यां च तैलाभ्यंगो न पर्वसु।।
पुष्पं	०	मृत्तिका	०	दूर्वा	गोमय	०	पातनम्	

विशेष— यदि प्रतिदिन तेल लगाने का स्वभाव हो तब अथवा उत्सव के दिन व वातरोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल व सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

अंग-स्फुरण का फल

पुरुषों का दायां और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।
मस्तक का स्फुरण (फरकना) स्त्री-पुरुष दोनों के लिए शुभ है।

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तुप्राप्ति
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग्य
स्कन्ध	भोगवृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधोभाग	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभप्राप्ति	आन्त्रिक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनप्राप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्ष	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर	कोषलाभ	वस्तिदेश	भाग्योन्नति
नेत्रपक्षम	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोर्ध्व	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्व-बुद्धि		

इन्ही अंगो मे तिल, लसन, मस्सा हो व खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानें। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल व खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

काकस्पर्श का फल

मस्तक पर काक स्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है। कमर, कन्धे पर अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति-पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दही आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काकमैथुन का देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट व इच्छितकार्य का नाश करता है। इसके दोष दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काकप्रतिमा मृण्मय (मिट्टी के) पात्र में स्थापित कर उड़द, चावल, घी, मीठे का नैवेद्य देवें। ग्राम में दक्षिण की ओर बाहर चौराहे पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय मन्त्र का यथाशक्ति जप करें (या करावें), घृतच्छाया-पात्र दान, पञ्चगव्य से स्नान भी करे। इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नष्ट होते हैं।

काकविष्ठा विचार :— शिरसि-मृत्युः वा कष्टम्। स्कन्धयोः रोगः। भुजयोः प्रियार्तिः। उदरे शोकः। गुह्ये सन्तानकष्टम्। जंघयोः वाहनपीड़ा। पादयोः प्रवासः।

कौवा उड़ता हुआ या किसी सूखे पेड़ पर बैठा हुआ किंवा पूर्व की तरफ बैठा हुआ अथवा दक्षिण दिशा की ओर मुंह किए किसी के ऊपर काली बीठ कर दे तो अशुभ होता है। यदि किसी हरे-भरे या फूले-फले पीपल, बड आदि श्रेष्ठ पेड़ पर बैठा हुआ सफेद बीठ कर दे तो शुभ जानिए।

....

सरसों का तेल व सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

विवाहादि मुहूर्त्त (सं. २०६९वि.)

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), P.O. पंचकूला–134 109;

(इन विवाहादि मुहूर्त्तों के शोधन में नालाबलोग (पंचकूला) निवासी, मेरे योग्य शिष्य चि. सुरेशानन्द शर्मा, B.A. का पर्याप्त सहयोग मिला है।)

–: समय-शुद्धि :–

गुरु-अस्त :- इस वर्ष गुरु वैशा. शु. ११ बु. से ज्ये. शु. ७ चं. (२ से २८ मई, २०१२ ई.) तक अस्त रहेगा।

शुक्र-अस्त :- इस वर्ष में शुक्र दो बार अस्त होगा। पहले ज्ये. शु. १३ श. से आषा. कृ. ७ र. (२ से १० जून, २०१२ ई.) तक तथा बाद में माघी अमा रविवार (१० फर., २०१३ ई.) से वर्षान्त तक।

अधिक मास :- इस वर्ष १८ अग. से १६ सितं., २०१२ ई. तक भाद्रपद अधिक मास है। अतः इस समयावधि में भी शुभकृत्य वर्जित रहेंगे।

गुरु-शुक्र के अस्त का यह उपरोक्त काल पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली आदि के लिए है। क्योंकि, अक्षांशभेद से इन ग्रहों के उदय-अस्त की तारीखें भिन्न-भिन्न होती हैं, इसलिए अपने अभीष्ट स्थल के अक्षांशानुसार उस स्थल के गुरु-शुक्र की उदय-अस्त की तारीख नीचे दिएं गए कोष्ठक से जानकर विवाहादि मुहूर्त्तों का दैवज्ञ को निर्णय करना चाहिए।

अक्षांशभेद से भारत के विभिन्न स्थलों पर गुरु–शुक्र का उदय–अस्त 'सं. २०६९ वि.'

अक्षांश →	+५°	+१५°	+२५°	+३५°
गुरु अस्त	३ मई, '१२ ई.	३ मई, '१२ ई.	३ मई, '१२ ई.	२ मई, '१२ ई.
गुरु उदित	२५ मई, '१२ ई.	२६ मई, '१२ ई.	२८ मई, '१२ ई.	३० मई, '१२ ई.
शुक्र पश्चिम में अस्त	२ जून, '१२ ई.	२ जून, '१२ ई.	२ जून, '१२ ई.	२ जून, '१२ ई.
शुक्र पूर्व में उदित	१० जून, '१२ ई.	१० जून, '१२ ई.	१० जून, '१२ ई.	११ जून, '१२ ई.
शुक्र पूर्व में अस्त	२७ फर. '१३ ई.	२३ फर. '१३ ई.	१६ फर. '१३ ई.	५ फर. '१३ ई.

शुक्र का पश्चिम में उदय सं. २०७० वि. में लगभग २१ अप्रैल, २०१३ ई. को होगा।

ध्यान रहे :- गुरु-शुक्र के अस्तकाल में तो शुभकृत्य वर्जित रहते ही हैं, इनके अस्तदिन से ३ दिन पहले वार्धक्यदोष और उदयदिन के ३ दिन बाद तक भी बाल्यदोष के कारण शुभकृत्य नहीं किए जाते।

ध्यान दें - मुहूर्त्तों में जिस लग्न का कुछ भाग किसी विशेष दोष के कारण वर्जित है, उस लग्न के आगे कोष्ठक में भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार यह निर्देश दिया गया है कि- इस लग्न को इस टाईम के बाद अथवा पहले ही मुहूर्त्तों में स्वीकार करें।

यहां मुहूर्त्तों में क्रान्तिसाम्य(महापात)दोष का विचार सूक्ष्मगणित से किया गया है। सूर्य एवं चन्द्र की राशियों के आधार पर निर्णीत क्रान्तिसाम्य नितांत स्थूल होता है। भास्कर आदि आचार्यों ने इसके निर्णय के लिए एक विशेष गणितप्रक्रिया (महापात-गणित) निर्दिष्ट की है। कई पंचांगकार इसकी जटिल गणित-प्रक्रिया से डरकर स्थूल क्रान्तिसाम्य के आधार पर ही मुहूर्त्तों का निर्णय कर देते हैं, जो सर्वथा भ्रामक है। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ और समाप्तिकाल पृष्ठ 61 पर दिया गया है।

यहां दिए गए मुहूर्त्तों में जहां युति, वेध, कर्त्तरी, दग्धातिथि, अष्टमस्थ भौम, षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र-शुक्र आदि दोषों के परिहार मिल गए हैं, उन मुहूर्त्तों को शास्त्रानुसार शुद्ध माना गया है और वहां विवाह-लग्न लगा दिए गए हैं।

ध्यान रहे -यहां मुहूर्त्तों में दी गई अंग्रेजी तारीखें सूर्योदयकालिक हैं। जो मुहूर्त्तकाल (लग्न) रात के १२ बजे के बाद और सूर्योदय से पहिले पड़ता है, वहां अंग्रेजी तारीख अग्रिम (परवर्ती) समझनी चाहिए।

इन विवाहमुहूर्त्तों में प्रयुक्त सांकेतिक शब्दों का स्पष्टीकरण

आवश्यकता में = लग्न निर्बल है। अत्यावश्यकता में ही इस लग्न में विवाह किया जा सकता है।

दि.ल. = दिन का लग्न।

ल. = रा. ल. = रात्रि का लग्न।

पादवेध = विवाहलग्नकालिक नक्षत्रचरण को शुभग्रह का वेध है।

पादवेधाभाव = विवाहलग्नकालिक नक्षत्रचरण को शुभग्रह का वेध नहीं है।

दा. = इस ग्रह की दान-पूजा करके इस लग्न में विवाह किया जा सकता है। जैसे-"मं.दा." का अभिप्राय है, इस विवाहलग्न में मंगल की दान-पूजा आवश्यक है। लग्न के समय ३, ४, १०, १२ भावों में स्थित क्रमशः शुक्र, राहु, मंगल, शनि तथा सप्तम में स्थित गुरु, चन्द्र की दान, पूजा आवश्यक मानी गई है।

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०६९ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१२ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
वैशा. कृ. १० र.	वैशा. ३	अप्रै. १५	धनि.	कुम्भ	मेष	मेष	।। ।। ।। ।ऽ ।।	ल. १२(शु.दा.), (१३/५३ से १६/२७ तक क्रान्तिसाम्य), (२०/२० तक मृत्युबाण,
वैशा. कृ. ११ चं.	वैशा. ४	अप्रै. १६	धनि.	कुम्भ	मेष	मेष	।। ।। । ऽअ. ।ऽ ।।	दि. ल. ३ (११/१६ तक),
आषा. कृ. ११ शु.	आषा. २	जून १५	अश्वि.	मेष	मिथुन	वृष	ऽबु.। ।। ऽश.। ऽ। ।।	दि. ल. ४ (आवश्यकता में)
आषा. शु. ५ र.	आषा. ११	जून २४	मघा	सिंह	मिथुन	वृष	।। ।। ।ऽरो. ऽऽ ।।	दि. ल. ४, गोधू.,
आषा. शु. ८ बु.	आषा. १४	जून २७	हस्त	कन्या	मिथुन	वृष	।। ।। ।ऽअ. ।। ।।	दि. ल. ४ (८/५७ बाद), ५ (रा.दा.),
आषा. शु. ९ गु.	आषा. १५	जून २८	चित्रा	कन्या	मिथुन	वृष	ऽमं.। ।। ।ऽनृ. ऽ। ।।	दि. ल. ४, ५ (रा.दा.), (१६/०० बाद अपरिहार्य शनियुति),
आषा. शु. १० शु.	आषा. १६	जून २९	स्वा.	तुला	मिथुन	वृष	।। ।। ।ऽनृ. ।ऽ ।।	दि. ल. ४, ५ (रा.दा.), गोधू.,
श्राव. कृ. ३ शु.	आषा. २३	जुला. ६	श्रव.	मकर	मिथुन	वृष	।। ।। ऽबु. ऽअ. ऽ। ।।	दि. ल. ४ (६/३२ तक) (चं. दा.),
श्राव. कृ. ३ शु.	आषा. २३	जुला. ६	धनि.	मकर	मिथुन	वृष	।। ।। ।ऽअ. ।। ।।	ल. गोधू.,
श्राव. कृ. ४ श.	आषा. २४	जुला. ७	धनि.	कुम्भ	मिथुन	वृष	।। ।। ।। ।। ।।	दि. ल. ५ (१०/०२ तक) (रा. चं. दा.),
श्राव. कृ. ८ बु.	आषा. २८	जुला. ११	रेव.	मीन	मिथुन	वृष	ऽशु.। ।। । ।। ऽ ।।	दि. ल. ४ (६/४३ बाद), (६/४३ तक भौमवेध),
श्राव. कृ. ८ बु.	आषा. २८	जुला. ११	अश्वि.	मेष	मिथुन	वृष	।। ।। ऽश.। ।ऽ ।।	ल. गोधू.,
श्राव. कृ. ९ गु.	आषा. २९	जुला. १२	अश्वि.	मेष	मिथुन	वृष	।। ।। ऽश. ऽरो. ।ऽ ।।	दि. ल. ४, ५ (रा.दा.),
श्राव. शु. ४ चं.	श्राव. ८	जुला. २३	उ.फा.	कन्या	कर्क	वृष	।। ।। ।ऽचौ. ऽऽ ।।	ल. गोधू., ३, (मिथुन लग्न आवश्यकता में),
श्राव. शु. ५ मं.	श्राव. ९	जुला. २४	उ.फा.	कन्या	कर्क	वृष	।। ।। ।। ऽऽ ।।	दि. ल. ५ (रा.दा.),
श्राव. शु. ५ मं.	श्राव. ९	जुला. २४	हस्त	कन्या	कर्क	वृष	।। ।। ।ऽरो. ।। ।।	ल. गोधू., ३, (मिथुन लग्न आवश्यकता में),
श्राव. शु. ७ बु.	श्राव. १०	जुला. २५	हस्त	कन्या	कर्क	वृष	।। ।। ।ऽरो. ।। ।।	दि. ल. ५ (९/०९ तक) (रा.दा.),
श्राव. शु. ७ बु.	श्राव. १०	जुला. २५	चित्रा	कन्या	कर्क	वृष	।। ।। ।ऽरो. ।ऽ ।।	ल. गोधू., (२१/४६ बाद अपरिहार्य शनियुति),
श्राव. शु. ८ गु.	श्राव. ११	जुला. २६	स्वा.	तुला	कर्क	वृष	ऽमं.ऽ ।। ।। ।ऽ ।।	ल. गोधू., (२०/५७ बाद मृत्युबाण),
श्राव. शु. ११ र.	श्राव. १४	जुला. २९	मूल	धनु	कर्क	वृष	ऽसू.। ।। ऽशु.ऽनृ. ऽ। ।।	ल. ३ (२७/४९ बाद) (चं. दा.) (आवश्यकता में),
श्राव. शु. १२ चं.	श्राव. १५	जुला. ३०	मूल	धनु	कर्क	वृष	ऽसू.। ।। ऽशु. ऽनृ. ऽ। ।।	दि. ल. ५ (८/३६ तक) (रा.दा.),
श्राव. शु. १३ मं.	श्राव. १६	जुला. ३१	उ.षा.	धनु	कर्क	वृष	ऽश.। ।। ।ऽचौ. ।ऽ ।।	ल. ३ (चं. दा.) (आवश्यकता में), (२९/२१ बाद शुक्रपादवेध),
प्र.भाद्र.कृ. ४ चं.	श्राव. २२	अग. ६	उ.भा.	मीन	कर्क	वृष	।। ।। ।ऽअ. ।ऽ ।।	ल. गोधू., ११, (७/५२ तक मृत्युबाण),
प्र.भाद्र.कृ. ४ चं.	श्राव. २२	अग. ६	रेव.	मीन	कर्क	वृष	।। ।। ।ऽअ. ।ऽ ।।	ल. ३,

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०६९ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१२ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
प्र.भाद्र.कृ. ५ मं.	श्राव. २३	अग. ७	रेव.	मीन	कर्क	वृष	।। ।। ।। ।ऽ ।।	ल. गोधू., ११,
प्र.भाद्र.कृ. ६ श.	श्राव. २७	अग. ११	रोहि.	वृष	कर्क	वृष	।। ऽगु.। ऽरा.ऽचौ. ऽऽ ।।	ल. गोधू., ३,
प्र.भाद्र.कृ. १० र.	श्राव. २८	अग. १२	मृग.	वृष	कर्क	वृष	।। ।। ।ऽरो. ।ऽ ।।	ल. गोधू., ११, ३ (२६/०८ तक),
प्र.भाद्र.कृ. ११ चं.	श्राव. २९	अग. १३	मृग.	मिथुन	कर्क	वृष	।। ।। ।ऽरो. ।ऽ ।।	दि. ल. ५ (रा.दा.),
द्वि.भाद्र शु. २ चं.	आश्वि. २	सितं. १७	हस्त	कन्या	कन्या	वृष	।। ।। ।। ।। ।।	ल. गोधू., (१८/२८ बाद मृत्युबाण),
द्वि.भाद्र शु. ३ मं.	आश्वि. ३	सितं. १८	स्वा.	तुला	कन्या	वृष	।। ।। ।ऽअ. ।। ।।	ल. ३, ४ (२६/५६ तक), (२६/५६ बाद चन्द्रपादवेध),
द्वि.भाद्र शु. ७ श.	आश्वि. ७	सितं. २२	मूल	धनु	कन्या	वृष	।। ।। ।ऽचौ. ।ऽ ।।	ल. ५ (रा.दा.),
द्वि.भाद्र शु. ९ चं.	आश्वि. ९	सितं. २४	उ.षा.	धनु/मकर	कन्या	वृष	ऽश.। ।। ।ऽरो. ।ऽ ।।	दि. ल. ११ (१६/३७ तक), रा. ल. ४ (चं.दा.),
द्वि.भाद्र शु. १० मं.	आश्वि.१०	सितं. २५	श्रव.	मकर	कन्या	वृष	।। ।। ।ऽरो. ।। ।।	दि. ल. ११, गोधू.,
द्वि.भाद्र शु. ११ बु.	आश्वि.११	सितं. २६	धनि.	मकर	कन्या	वृष	ऽसू.। ।। ।। ।। ।।	ल. गोधू., (१८/०३ तक शुक्रपादवेध), (२३/१५ बाद मृत्युबाण),
आश्वि. शु. ५ शु.	कार्त्ति. ४	अक्तू. १९	मूल	धनु	तुला	वृष	ऽमं.। ।। ।ऽअ. ।। ।।	ल. ३ (२२/०३ बाद) (चं.शु.दा.), ५(२७/५२ तक)(रा.दा.), ६(२६/५६ बाद),
आश्वि. शु. ६ श.	कार्त्ति. ५	अक्तू. २०	मूल	धनु	तुला	वृष	ऽमं.। ।। ।। ।। ।।	दि. ल. १०, १२, गोधू., (मीन लग्न आवश्यकता में),
आश्वि. शु. ७ र.	कार्त्ति. ६	अक्तू. २१	उ.षा.	धनु	तुला	वृष	।। ।। ।ऽनृ. ।ऽ ।।	ल. ३ (२१/४६ तक) (चं.शु.दा.),
आश्वि. शु. ८ चं.	कार्त्ति. ७	अक्तू. २२	उ.षा.	मकर	तुला	वृष	।। ।। ।। ।ऽ ।।	दि. ल. १२ (१६/२७ तक) (आवश्यकता में),
आश्वि. शु. ८ चं.	कार्त्ति. ७	अक्तू. २२	श्रव.	मकर	तुला	वृष	ऽश.। ।। ।। ।। ।।	ल. गोधू., ४ (चं.दा.), ६,
आश्वि. शु. ९ मं.	कार्त्ति. ८	अक्तू. २३	श्रव.	मकर	तुला	वृष	ऽश.। ।। ।ऽचौ. ।। ।।	दि. ल. १२ (१६/१६ तक) (आवश्यकता में),
आश्वि. शु. ९ मं.	कार्त्ति. ८	अक्तू. २३	धनि.	मकर/कुम्भ	तुला	वृष	।। ।। ।ऽचौ. ।। ।।	ल. ४ (चं.दा.), ६,
आश्वि. शु. १० बु.	कार्त्ति. ९	अक्तू. २४	धनि.	कुम्भ	तुला	वृष	।। ।। ।। ।। ।।	दि. ल. १०,
आश्वि. शु. १२ शु.	कार्त्ति. ११	अक्तू. २६	उ.भा.	मीन	तुला	वृष	ऽसू.। ।। ऽशु.। ।। ।।	ल. ४ (शु.दा.), ६ (चं.दा.),
आश्वि. शु. १४ र.	कार्त्ति. १३	अक्तू. २८	रेव.	मीन	तुला	वृष	।ऽ ।। ।ऽअ. ।। ।।	दि. ल. १०, ११(१४/४५ तक) (मं.दा.), गोधू., (१०/४६ तक शुक्रपादवेध)
आश्वि. शु. १५ चं.	कार्त्ति. १४	अक्तू. २९	अश्वि.	मेष	तुला	वृष	।। ।। ।। ऽऽ ।।	दि. ल. १०, ११(मं.दा.), रा. ल.४ (शु.दा.), ५ (रा.दा.),
कार्त्ति. कृ. ३ गु.	कार्त्ति. १७	नवं. १	रोहि.	वृष	तुला	वृष	।। ।। ऽबु. ऽचौ. ।। ।।	दि. ल. १०, ११ (मं.दा.),
कार्त्ति. कृ. ३ शु.	कार्त्ति. १८	नवं. २	मृग.	वृष/मिथुन	तुला	वृष	।। ।। ऽमं.। ऽऽ ।।	दि. ल. १०, ११ (मं.दा.), गोधू., ४ (शु.दा.), ५ (रा.दा.), ६,

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०६९ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१२-१३ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
कार्त्ति. कृ. ८ बु.	कार्त्ति. २३	नवं. ७	मघा	सिंह	तुला	वृष	॥ ॥ ॥ ॥ ॥	ल. ४ (२३/०४ बाद) (शु.दा.), ६,
कार्त्ति. कृ. ९ गु.	कार्त्ति. २४	नवं. ८	मघा	सिंह	तुला	वृष	॥ ॥ ।ऽनृ. ।ऽ ॥	दि. ल. ११ (चं.मं.दा.), गोधू., ४(२२/१६ तक) (शु.दा.),
कार्त्ति. कृ. ११ श.	कार्त्ति. २६	नवं. १०	हस्त	कन्या	तुला	वृष	॥ ॥ ।ऽचौ. ।ऽ ॥	ल. ४ (२१/५६ बाद) (शु.दा.), ५ (रा.दा.),
कार्त्ति. कृ. १२ र.	कार्त्ति. २७	नवं. ११	हस्त	कन्या	तुला	वृष	॥ ॥ ॥ ।ऽ ॥	दि. ल. १०,
कार्त्ति. शु. ५ र.	मार्ग. ४	नवं. १८	श्रव.	मकर	वृश्चिक	वृष	ऽश.। ॥ ।ऽअ. ।ऽ ॥	ल. ६,
कार्त्ति. शु. ६ चं.	मार्ग. ५	नवं. १९	श्रव.	मकर	वृश्चिक	वृष	ऽश.। ॥ ॥ ।ऽ ॥	दि. ल. ११, गोधू., ४ (२२/३५ तक) (चं.शु.दा.),
कार्त्ति. शु. ६ चं.	मार्ग. ५	नवं. १९	धनि.	मकर	वृश्चिक	वृष	॥ ॥ ॥ ।ऽ ॥	ल. ६,
कार्त्ति. शु. ९ गु.	मार्ग. ८	नवं. २२	उ.भा.	मीन	वृश्चिक	वृष	॥ ॥ ।ऽचौ. ऽऽ ॥	ल. ६ (चं. दा.),
कार्त्ति. शु. १० शु.	मार्ग. ९	नवं. २३	उ.भा.	मीन	वृश्चिक	वृष	॥ ॥ ॥ ऽऽ ॥	दि. ल. १०, ११, गोधू., ४(२१/५२ तक),
कार्त्ति. शु. ११ श.	मार्ग. १०	नवं. २४	रेव.	मीन	वृश्चिक	वृष	॥ ॥ ।ऽरो. ॥ ॥	दि. ल. १०, ११, गोधू.,
कार्त्ति. शु. १२ र.	मार्ग. ११	नवं. २५	अश्वि.	मेष	वृश्चिक	वृष	ऽसू. ऽ ॥ ॥ ऽ। ॥	ल. ४, ५ (शु.रा.दा.), (२७/१७ बाद मृत्युबाण),
कार्त्ति. शु. १५ बु.	मार्ग. १४	नवं. २८	रोहि.	वृष	वृश्चिक	वृष	॥ ॥ ऽसू.। ।ऽ ॥	ल. ४, ५ (शु.रा.दा.), ६,
मार्ग. कृ. १ गु.	मार्ग. १५	नवं. २९	रोहि.	वृष	वृश्चिक	वृष	॥ ॥ ऽसू. ऽनृ. ।ऽ ॥	दि. ल. १०, ११,
मार्ग. कृ. १ गु.	मार्ग. १५	नवं. २९	मृग.	वृष	वृश्चिक	वृष	॥ ॥ ।ऽनृ. ॥ ॥	ल. ४, ५ (शु.रा.दा.), ६,
मार्ग. कृ. २ शु.	मार्ग. १६	नवं. ३०	मृग.	मिथुन	वृश्चिक	वृष	॥ ॥ ॥ ॥ ॥	दि. ल. ११, गोधू.,
मार्ग. कृ. ६ बु.	मार्ग. २१	दिसं. ५	मघा	सिंह	वृश्चिक	वृष	ऽचं.बु. ऽ ॥ ।ऽअ. ऽ। ॥	ल. ६ (२६/०४ बाद),
मार्ग. कृ. ८ शु.	मार्ग. २३	दिसं. ७	उ.फा.	सिंह/कन्या	वृश्चिक	वृष	ऽशु.। ॥ ॥ ।ऽ ॥	दि. ल. ११ (चं.दा.), गोधू., ४, ५ (शु.रा.दा.),
मार्ग. कृ. ९ श.	मार्ग. २४	दिसं. ८	हस्त	कन्या	वृश्चिक	वृष	॥ ॥ ।ऽनृ. ।ऽ ॥	दि. ल. १०, गोधू.,
मार्ग. कृ. ११ र.	मार्ग. २५	दिसं. ९	चित्रा	कन्या/तुला	वृश्चिक	वृष	॥ ॥ ।ऽचौ. ।ऽ ॥	दि. ल. १०, ४, ५ (शु.रा.दा.), ६,
पौष शु. ३ चं.	माघ २	जन. १४	धनि.	कुम्भ	मकर	वृष	॥ ॥ ॥ ॥ ॥	दि. ल. १२ (११/३१ तक),
पौष शु. ५ बु.	माघ ४	जन. १६	उ.भा.	मीन	मकर	वृष	॥ ॥ ।ऽअ. ऽ। ॥	ल. ६ (चं.दा.), ८ (गु.श.दा.),
पौष शु. ६ गु.	माघ ५	जन. १७	उ.भा.	मीन	मकर	वृष	॥ ॥ ॥ ऽ। ॥	दि. ल. ११,
पौष शु. ६ गु.	माघ ५	जन. १७	रेव.	मीन	मकर	वृष	॥ ॥ ॥ ।ऽ ॥	ल. गोधू., ६(चं.दा.), ८(गु.श.दा.),
पौष शु. ७ शु.	माघ ६	जन. १८	रेव.	मीन	मकर	वृष	॥ ॥ ।ऽनृ. ।ऽ ॥	दि. ल. ११,

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०६९ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१३ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
पौष शु. ८ श.	माघ ७	जन. १९	अश्वि.	मेष	मकर	वृष	।। ।। ।। ।ऽ ।।	दि. ल. ११, १२, गोधू.,
माघ कृ. ३ बु.	माघ १८	जन. ३०	उ.फा.	सिंह/कन्या	मकर	वृष	।। ।। ।ऽरो. ।। ।।	ल. ६, ८ (गु.शु.श.दा.),
माघ कृ. ४ गु.	माघ १९	जन. ३१	उ.फा.	कन्या	मकर	वृष	।। ।। ।ऽरो. ।। ।।	दि. ल. १२ (चं.दा.), २ (मं.दा.), गोधू.,
माघ कृ. ५ शु.	माघ २०	फर. १	हस्त	कन्या	मकर	वृष	।। ।। ।। ।ऽ ।।	दि. ल. १२ (चं.दा.), २ (मं.दा.), गोधू.,
माघ कृ. ९ चं.	माघ २३	फर. ४	अनु.	वृश्चिक	मकर	वृष	ऽबु.शु.। ।। ऽके.। ।ऽ ।।	ल. गोधू.,
माघ कृ. १० मं.	माघ २४	फर. ५	अनु.	वृश्चिक	मकर	वृष	ऽबु.शु.। ।। ऽके.ऽनृ. ।। ।।	दि. ल. १२, २ (चं.मं.दा.),
माघ कृ. ११ गु.	माघ २५	फर. ६	मूल	धनु	मकर	वृष	।ऽ ।। ।ऽचौ. ।ऽ ।।	ल. ८ (गु.शु.श.दा.),

आगामी संवत् २०७० वि. में गुरु-शुक्रास्त- वर्षारम्भ से २१ अप्रैल, २०१३ ई. तक शुक्र अस्त रहेगा । बाद में ९ से १५ जनवरी, २०१४ ई. तक भी शुक्र अस्त रहेगा । गुरु इस संवत् में ६ जून से १ जुलाई, २०१३ ई. तक अस्त रहेगा ।

विवाहमुहूर्त्तों के शोधन में वेध–युति आदि दोषों के शास्त्रीय परिहार

इस पंचांग में दिए जाने वाले विवाहमुहूर्त्तों में जहां वेध, युति, कर्त्तरी, दग्धातिथि, षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र, भौम, शुक्र के दोषों के परिहार मिल जाते हैं, वहां उन मुहूर्त्तों को शास्त्रानुसार शुद्ध मान लिया जाता है और विवाहलग्न लगा दिए जाते हैं। इन दोषों के परिहार निम्नांकित स्थितियों में माने गए हैं:- *वेध परिहार*- सप्तशलाका एवं पंचशलाका वेध में क्रूरग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र के तो चारों चरण दूषित माने जाते हैं, वेध का वहां परिहार नहीं है। सौम्य ग्रह द्वारा वेध होने पर पादवेधपद्धति से केवल विद्ध चरण को ही दूषित माना जाता है। वहां शेष तीनों चरण वेधदोष से मुक्त रहते हैं। पादवेधपद्धति में वेधक सौम्यग्रह-नक्षत्र के पहिले चरण में हो तो वह वेध्य नक्षत्र के चौथे चरण को, चतुर्थ चरण में स्थित वेधक सौम्य ग्रह वेध्य नक्षत्र के पहिले चरण को, द्वितीय चरणस्थ वेधक ग्रह वेध्य नक्षत्र के तृतीय चरण को एवं तृतीय चरणस्थ वेधक ग्रह वेध्य नक्षत्र के द्वितीय चरण को विद्ध करता है। *युतिदोष का परिहार*- नक्षत्र के साथ सौम्यग्रह की युति का दोष सामान्य माना जाता है, लेकिन क्रूरग्रह की युति बहुत ही अशुभ फलप्रद मानी जाती है। यदि चन्द्रमा अपनी उच्च राशि (वृष) या मित्रराशि (सिंह, मिथुन, कन्या) में हो तो क्रूरग्रह की युति का दोष भी समाप्त हो जाता है। *कर्त्तरीदोष का परिहार*- मुहूर्त्त के लग्न से सप्तमरहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध स्थित हो तो कर्त्तरीदोष का परिहार हो जाता है। कर्त्तरी बनाने वाले ग्रह यदि शत्रुराशि या अपनी नीचराशि में हों या दोनों अस्त हों, तो भी लग्न का कर्त्तरीदोष नहीं रहता। यदि मुहूर्त्तलग्न से द्वितीय भाव में कोई शुभ ग्रह बैठा हो अथवा बारहवें भाव में गुरु बैठा हो तो भी कर्त्तरीदोष निष्प्रभाव हो जाता है और ऐसा कर्त्तरीदोष विवाहमुहूर्त्त को अग्राह्य नहीं बना सकता। चन्द्र-कर्त्तरीदोष का परिहार भी चन्द्रमा के स्थान को लग्न समझकर, इन्हीं योगों से देखना चाहिए। *दग्धातिथि का परिहार*- मुहूर्त्त के लग्न से सप्तमरहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध बैठा हो, तो दग्धातिथि का परिहार हो जाता है, इस परिहार की स्थिति में दग्धातिथि में विवाहलग्न शुद्ध माना जाता है। *षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र का परिहार*- नीचराशि (वृश्चिक) में चन्द्रमा हो तो वह लग्न से छठे या आठवें भाव में होने पर भी दोषकारक नहीं होता। यदि चन्द्रमा लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो, तब तो उसका कोई परिहारल शास्त्रों में नहीं मिलता। *अष्टमस्थ मंगल का परिहार*- मंगल अस्त (अदृश्य) हो या वह नीचराशि (कर्क) अथवा शत्रु राशि (मिथुन या कन्या) में हो, तो लग्न से अष्टमस्थ होने पर भी वह दोषकारक नहीं होता। यदि मंगल लग्नेश होकर अष्टम में हो, तो किसी भी स्थिति में उसके दोष का परिहार नहीं माना जाता। *षष्ठाष्टमस्थ शुक्र का परिहार*- शुक्र यदि नीचराशि (कन्या) अथवा शत्रुराशि (कर्क या सिंह) में हो, तो वह षष्ठाष्टमस्थ होने पर भी अशुभ फल नहीं करता। यदि शुक्र लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो, तो उसका भी कोई परिहार नहीं है। 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' में दिए जाने वाले मुहूर्त्तों में उपरोक्त सभी दोषों के परिहारों का प्रयोग किया जाता है।

सं. २०६९ वि. में भिन्न-भिन्न राशि वाले वरों और कन्याओं के विवाह-निर्णय के लिए त्रिबल-शुद्धि

(अर्थात् किस राशि वाले वर और कन्या के लिए सं. २०६९ वि. में कुल कितने विवाहमुहूर्त्त किन-किन तारीखों को शुद्ध (ग्राह्य) बनते हैं ?)

लोग अपनी सुविधा के अनुसार किसी खास महीने में या किसी खास तारीख के आस-पास ही विवाह-मुहूर्त्त (साहा) निकालने के लिए ज्योतिषियों से अनुरोध किया करते हैं। ऐसी स्थिति में ज्योतिषी को विवाहमुहूर्त्तों में जगह-जगह त्रिबल-शुद्धि जानने का झंझट करना पड़ता है। इस झंझट से ज्योतिषियों को छुटकारा दिलाने के लिए हम यहां नीचे 'त्रिबलशुद्धि कोष्ठक' दे रहे हैं। संवत् २०६९ वि. के शुद्ध विवाह-मुहूर्त्त इस पंचांग में पृ. 249 पर दिए गए हैं । किस-किस महीने में किस-किस तारीख वाले विवाहमुहूर्त्त में, किस-किस राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं, यह त्रिबलशुद्धि के अनुसार नीचे दिए गए 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' में लिख दिया गया है । अमुक राशि वाले लड़के (वर) और अमुक राशि वाली कन्या के लिए इस वर्ष कुल कितने विवाहमुहूर्त्त किन-किन तारीखों को बनते हैं- इस कोष्ठक द्वारा साधारण व्यक्ति भी एक ही नजर में यह तुरन्त जान सकता है। इस कोष्ठक से यह भी तुरन्त जाना जा सकता है, कि अमुक राशि वाली लड़कियों और लड़कों का विवाह इस वर्ष किन-किन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में हो सकता है। वर के लिए 'सूर्य की पूजा' और कन्या के लिए 'गुरु की पूजा' वाला समय भी इस कोष्ठक में दिया गया है ।

लड़का-लड़की की राशियों वाले कॉलमों/कोष्ठकों में जो-जो तारीखें समानरूप से मिलती हों, उन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में उस लड़के-लड़की का विवाह हो सकता है। जैसे- मेषराशि वाले लड़के और वृष राशि वाली लड़की का विवाह सं. २०६९ वि. में जुलाई (२०१२ ई.) के महीने में किन-किन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में हो सकता है ?- यह मालूम करना है। नीचे 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' देखें,-लड़के वाले कॉलम में जन्मराशि मेष के आगे जुलाई २०१२ ई. की ६, ७, ११, १२ तारीखें हैं, जबकि लड़की वाले कॉलम में जन्मराशि वृष के आगे जुलाई की ६, ७, ११, १२, २३, २४, २५, २६ तारीखें हैं । इसलिए यह समझना चाहिए कि जुलाई, २०१२ ई. में मेष राशि वाले लड़के और वृष राशि वाली लड़की का विवाह त्रिबलशुद्धि के अनुसार जुलाई की केवल ६, ७, ११, १२ तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में ही हो सकता है, क्योंकि जुलाई की केवल यही तारीखें, दोनों (लड़का-लड़की) की राशियों (मेष-वृष) वाले कॉलमों (कोष्ठकों) में एक-सी मिलती हैं । इस प्रकार विवाह की तारीखों का निश्चय करके शुद्ध विवाह-मुहूर्त्तों से उस दिन विवाह के लग्न का निर्णय कर लीजिए । क्योंकि, आजकल लड़कियों का विवाह बड़ी अवस्था में होता है, अतः चतुर्थ-अष्टम-द्वादश गुरु को शास्त्रनिर्देशानुसार नेष्ट न मानकर पूज्य ही माना गया है ।

ध्यान दें- लड़के की राशि से १, २, ५, ७, ९ वें स्थित सूर्य एवं कन्या की राशि से १, ३, ६, १०वें स्थित गुरु यदि स्वराशि, मित्रराशि या स्वोच्चराशि में हो तो उन्हें शास्त्र-निर्देशानुसार यहां पूज्य न मानकर शुभ ही माना जाता है । इस वर्ष १६ अप्रैल, २०१२ ई. तक गुरु मित्र राशि (मेष) में होने से सभी राशि वाली कन्याओं के लिए सामान्यतः शुभ है । इसके बाद वर्षान्त तक गुरु वृष (शत्रु) राशि में संचार करेगा । अतः यह कुम्भ, तुला व मिथुन राशि वाली कन्याओं के लिए क्रमशः चतुर्थ, अष्टम एवम् द्वादशस्थ होने से विशेष पूज्य रहेगा ।

नाम/ जन्म-राशि	त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०६९ वि.) (२३ मार्च, सन् २०१२ ई. से १० अप्रैल, सन् २०१३ ई. तक) (कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)			इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है ।	लड़की	
मेष	अप्रैल १५, १६; जून १५, २४, २७, २८, २९; जुला. ६, ७, ११, १२; सितं. १७, १८, २२, २४, २५, २६; अक्तू. १९, २०, २१, २२, २३, २४, २६, २८, २९; नवं. १, २, ७, ८, १०, ११; जन. १४, १६, १७, १८, १९, ३०, ३१; फर. १, ६;	ज्येष्ठ , कार्तिक ,	अप्रैल १५, १६; जून १५, २४, २७, २८, २९; जुला. ६, ७, ११, १२, २३, २४, २५, २६, २९, ३०, ३१; अग. ६, ७, ११, १२, १३; सितं. १७, १८, २२, २४, २५, २६; अक्तू. १९, २०, २१, २२, २३, २४, २६, २८, २९; नवं. १, २, ७, ८, १०, ११, १८, १९, २२, २३, २४, २५, २८, २९, ३०; दिसं. ५, ७, ८, ९; जन. १४, १६, १७, १८, १९, ३०, ३१; फर. १, ६;	- - -
वृष	जून १५, २७, २८, २९; जुला. ६, ७, ११, १२, २३, २४, २५, २६; अग. ६, ७, ११, १२, १३; सितं. १७, १८, २४(१८/३२ बाद), २५, २६; अक्तू. २२, २३, २४, २६, २८, २९; नवं. १, २, १०, ११, १८, १९, २२, २३, २४, २५, २८, २९, ३०; दिसं. ७(१३/३० बाद), ८, ९; जन. १४, १६, १७, १८, १९, ३०(२५/१७ बाद), ३१; फर. १, ४, ५;	ज्येष्ठ , आषाढ़ , आश्विन , माघ ,	अप्रैल १५, १६; जून १५, २७, २८, २९; जुला. ६, ७, ११, १२, २३, २४, २५, २६; अग. ६, ७, ११, १२, १३; सितं. १७, १८, २४(१८/३२ बाद), २५, २६; अक्तू. २२, २३, २४, २६, २८, २९; नवं. १, २, १०, ११, १८, १९, २२, २३, २४, २५, २८, २९, ३०; दिसं. ७(१३/३० बाद), ८, ९; जन. १४, १६, १७, १८, १९, ३०(२५/१७ बाद), ३१; फर. १, ४, ५;	- - -

नाम/ जन्म-राशि	त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०६९ वि.) (२३ मार्च, सन् २०१२ ई. से १० अप्रैल, सन् २०१३ ई. तक) (कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)			इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है।	लड़की	
मिथुन	अप्रैल १५, १६; जून १५, २४, २९; जुला. ७, ११, १२, २६, २९, ३०, ३१; अग. ६, ७, ११, १२, १३; अक्तू. १९, २०, २१, २३(२९/३४ बाद), २४, २६, २८, २९; नवं. १, २, ७, ८, २२, २३, २४, २५, २८, २९, ३०; दिसं. ५, ७(१३/३० तक), ९(१७/२५ बाद);	आषाढ़ , कार्त्तिक, फाल्गुन,	अप्रैल १५, १६; जून १५, २४, २९; जुला. ७, ११, १२, २६, २९, ३०, ३१; अग. ६, ७, ११, १२, १३; सितं. १८, २२, २४(१८/३२ तक); अक्तू. १९, २०, २१, २३(२९/३४ बाद), २४, २६, २८, २९; नवं. १, २, ७, ८, २२, २३, २४, २५, २८, २९, ३०; दिसं. ५, ७(१३/३० तक), ९(१७/२५ बाद); जन. १४, १६, १७, १८, १९, ३०(२५/१७ तक); फर. ४, ५, ६;	वृष
कर्क	जुला. २३, २४, २५, २९, ३०, ३१; अग. ६, ७, ११, १२, १३; सितं. १७, २२, २४, २५, २६; नवं. १८, १९, २२, २३, २४, २५, २८, २९, ३०; दिसं. ५, ७, ८, ९(१७/२५ तक) ; जन. १६, १७, १८, १९ ३०, ३१; फर. १, ४, ५, ६;	माघ,	जून १५, २४, २७, २८; जुला. ६, ११, १२, २३, २४, २५, २९, ३०, ३१; अग. ६, ७, ११, १२, १३; सितं. १७, २२, २४, २५, २६; अक्तू. १९, २०, २१, २२, २३(२९/३४ तक), २६, २८, २९; नवं. १, २, ७, ८, १०, ११, १८, १९, २२, २३, २४, २५, २८, २९, ३०; दिसं. ५, ७, ८, ९(१७/२५ तक), ; जन. १६, १७, १८, १९, ३०, ३१; फर. १, ४, ५, ६;	---
सिंह	अप्रैल १५, १६; जून १५, २४, २७, २८, २९; जुला. ६, ७, ११, १२; सितं. १७, १८, २२, २४, २५, २६; अक्तू. १९, २०, २१, २२, २३, २४, २९; नवं. १, २, ७, ८, १०, ११; जन. १४, १९, ३०, ३१; फर. १, ६;	आश्विन, फाल्गुन,	अप्रैल १५, १६; जून १५, २४, २७, २८, २९; जुला. ६, ७, ११, १२, २३, २४, २५, २६, २९, ३०, ३१; अग. ११, १२, १३; सितं. १७, १८, २२, २४, २५, २६; अक्तू. १९, २०, २१, २२, २३, २४, २९; नवं. १, २, ७, ८, १०, ११, १८, १९, २५, २८, २९, ३०; दिसं. ५, ७, ८, ९; जन. १४, १९, ३०, ३१; फर. १, ६;	---
कन्या	जून २४, २७, २८, २९; जुला. ६, ७, ११, २३, २४, २५, २६; अग. ६, ७, ११, १२, १३; सितं. १७, १८, २४(१८/३२ बाद), २५, २६; अक्तू. २२, २३, २४, २६, २८; नवं. १, २, ७, ८, १०, ११, १८, १९, २२, २३, २४, २८, २९, ३०; दिसं. ५, ७, ८, ९; जन. १४, १६, १७, १८, ३०, ३१; फर. १, ४, ५;	ज्येष्ठ , आश्विन, कार्त्तिक, माघ ,	अप्रैल १५, १६; जून २४, २७, २८, २९; जुला. ६, ७, ११, २३, २४, २५, २६; अग. ६, ७, ११, १२, १३; सितं. १७, १८, २४(१८/३२ बाद), २५, २६; अक्तू. २२, २३, २४, २६, २८; नवं. १, २, ७, ८, १०, ११, १८, १९, २२, २३, २४, २८, २९, ३०; दिसं. ५, ७, ८, ९; जन. १४, १६, १७, १८, ३०, ३१; फर. १, ४, ५;	---
तुला	अप्रैल १५, १६; जून १५, २४, २७, २८, २९; जुला. ७, ११, १२, २३, २४, २५, २६, २९, ३०, ३१; अग. ६, ७, १३; अक्तू. १९, २०, २१, २३(२९/३४ बाद), २४, २६, २८, २९; नवं. २(२५/०७ बाद), ७, ८, १०, ११, २२, २३, २४, २५, ३०; दिसं. ५, ७, ८, ९;	आषाढ़ , कार्त्तिक, फाल्गुन,	अप्रैल १५, १६; जून १५, २४, २७, २८, २९; जुला. ७, ११, १२, २३, २४, २५, २६, २९, ३०, ३१; अग. ६, ७, १३; सितं. १७, १८, २२, २४(१८/३२ तक); अक्तू. १९, २०, २१, २३(२९/३४ बाद), २४, २६, २८, २९; नवं. २(२५/०७ बाद), ७, ८, १०, ११, २२, २३, २४, २५, ३०; दिसं. ५, ७, ८, ९; जन. १४, १६, १७, १८, १९, ३०, ३१; फर. १, ४, ५, ६;	वृष

नाम/जन्म-राशि	त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०६९ वि.) (२३ मार्च, सन् २०१२ ई. से १० अप्रैल, सन् २०१३ ई. तक) (कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)			इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है।	लड़की	
वृश्चिक	जुला. २३, २४, २५, २६, २९, ३०, ३१; अग. ६, ७, ११, १२ ; सितं. १७, १८, २२, २४, २५, २६; नवं. १८, १९, २२, २३, २४,२५, २८, २९; दिसं. ५, ७, ८, ९; जन. १६, १७, १८, १९, ३०, ३१; फर. १, ४, ५, ६;	ज्येष्ठ,	जून १५, २४, २७, २८, २९; जुला. ६, ११, १२, २३, २४, २५, २६, २९, ३०, ३१; अग. ६, ७, ११, १२; सितं. १७, १८, २२, २४, २५, २६; अक्तू. १९, २०, २१, २२, २३(२९/३४ तक), २६, २८, २९; नवं. १, २(२५/०७ तक), ७, ८, १०, ११, १८, १९, २२, २३, २४, २५, २८, २९; दिसं. ५, ७, ८, ९; जन. १६, १७, १८, १९, ३०, ३१; फर. १, ४, ५, ६;	---
धनु	अप्रैल १५, १६; जून १५, २४, २७, २८, २९; जुला. ६, ७, ११, १२; सितं. १७, १८, २२, २४, २५, २६; अक्तू. १९, २०, २१, २२, २३, २४, २९; नवं. १, २, ७, ८, १०, ११; जन. १४, १९, ३०, ३१; फर. १, ४, ५, ६;	आषाढ़ , माघ,	अप्रैल १५, १६; जून १५, २४, २७, २८, २९; जुला. ६, ७, ११, १२, २३, २४, २५, २६, २९, ३०, ३१; अग. ११, १२, १३; सितं. १७, १८, २२, २४, २५, २६; अक्तू. १९, २०, २१, २२, २३, २४, २९; नवं. १, २, ७, ८, १०, ११, १८, १९, २५, २८, २९, ३०; दिसं. ५, ७, ८, ९; जन. १४, १९, ३०, ३१; फर. १, ४, ५, ६;	---
मकर	जून २७, २८, २९; जुला. ६, ७, ११, २३, २४, २५, २६, २९, ३०, ३१; अग. ६, ७, ११, १२, १३; सितं. १७, १८, २२, २४, २५, २६; अक्तू. १९, २०, २१, २२, २३, २४, २६, २८; नवं. १, २, १०, ११, १८, १९, २२, २३, २४, २८, २९, ३०; दिसं. ७(१३/३० बाद), ८, ९ ; जन. १४, १६, १७, १८, ३० (२५/१७ बाद), ३१; फर. १, ४, ५, ६;	ज्येष्ठ , आश्विन, माघ ,फाल्गुन,	अप्रैल १५, १६; जून २७, २८, २९; जुला. ६, ७, ११, २३, २४, २५, २६, २९, ३०, ३१; अग. ६, ७, ११, १२, १३; सितं. १७, १८, २२, २४, २५, २६; अक्तू. १९, २०, २१, २२, २३, २४, २६, २८; नवं. १, २, १०, ११, १८, १९, २२, २३, २४, २८, २९, ३०; दिसं. ७ (१३/३० बाद), ८, ९; जन. १४, १६, १७, १८, ३० (२५/१७ बाद), ३१; फर. १, ४, ५, ६;	---
कुम्भ	अप्रैल १५, १६; जून १५, २४, २९; जुला. ६, ७, ११, १२, २६, २९, ३०, ३१; अग. ६, ७, १३; अक्तू. १९, २०, २१, २२, २३, २४, २६, २८, २९; नवं. २(२५/०७ बाद), ७, ८, १८, १९, २२, २३, २४, २५, ३०; दिसं. ५, ७(१३/३० तक), ९(१७/२५ बाद);	आषाढ़ , कार्त्तिक, फाल्गुन,	अप्रैल १५, १६; जून १५, २४, २९; जुला. ६, ७, ११, १२, २६, २९, ३०, ३१; अग. ६, ७, १३; सितं. १८, २२, २४, २५, २६; अक्तू. १९, २०, २१, २२, २३, २४, २६, २८, २९; नवं. २(२५/०७ बाद), ७, ८, १८, १९, २२, २३, २४, २५, ३०; दिसं. ५, ७ (१३/३० तक), ९(१७/२५ बाद); जन. १४, १६, १७, १८, १९, ३० (२५/१७ तक); फर. ४, ५, ६;	वृष
मीन	अप्रैल १५, १६; जुला. २३, २४, २५, २९, ३०, ३१; अग. ६, ७, ११, १२; सितं. १७, २२, २४, २५, २६; नवं. १८, १९, २२, २३, २४, २५, २८, २९; दिसं. ५, ७, ८, ९(१७/२५ तक); जन. १४, १६, १७, १८, १९, ३०, ३१; फर. १, ४, ५, ६;	आश्विन,	अप्रैल १५, १६; जून १५, २४, २७, २८; जुला. ६, ७, ११, १२, २३, २४, २५, २९, ३०, ३१; अग. ६, ७, ११, १२; सितं. १७, २२, २४, २५, २६; अक्तू. १९, २०, २१, २२, २३, २४, २६, २८, २९; नवं. १, २ (२५/०७ तक), ७, ८, १०, ११, १८, १९, २२, २३, २४, २५, २८, २९; दिसं. ५, ७, ८, ९ (१७/२५ तक); जन. १४, १६, १७, १८, १९, ३०, ३१; फर. १, ४, ५, ६;	---

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०६९ वि.)

प्रतिवर्ष हमें ज्योतिषियों एवं अन्य लोगों के ऐसे अनेकों पत्र उपलब्ध होते हैं, जिनमें वे ऐसे अनेक विवाहमुहूर्त्तों के बारे में हमसे स्पष्टीकरण चाहते हैं, जिन्हें हमने अपने पंचांग में तो अशुद्ध विवाहमुहूर्त्तों की कोटि में रखा होता है, लेकिन किसी अन्य पंचांग में उन्हें शुद्ध विवाहमुहूर्त्त मानकर, उनमें विवाहलग्न लगाए होते हैं। इस समस्या को दृष्टि में रखकर अशुद्ध विवाहमुहूर्त्तों का स्पष्टीकरण हम इस स्तम्भ में दिया करते हैं। यह स्तम्भ ज्योतिषियों को शुद्ध और अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त–सम्बन्धी दुविधा से मुक्त कराने में काफी हद तक समर्थ सिद्ध हुआ है और इससे ज्योतिषी लोग स्वयं यह भलीभांति जान सकते हैं कि– अमुक नक्षत्र, अमुक दिन या अमुक समय या अमुक लग्न में विवाह करना शास्त्रविरुद्ध क्यों है ? यहां साथ–साथ उन दोषों का निर्देश भी किया गया है, जिनके कारण विवाहनक्षत्र होते हुए भी, वहां विवाह नहीं किया जा सकता। जहां भद्रा, व्यतीपात, क्रूरग्रहवेध आदि दोषों से रहित होने से विवाहनक्षत्र का काल शुद्ध होने पर भी षष्ठाष्टमस्थ शुक्र, चन्द्र, भौम और लग्नेश आदि के कारण शुद्ध लग्न नहीं बन सका, वहां 'लग्नाभाव' दोष लिखा गया है। *ध्यान रहे–* यहां जिन युति, वेध आदि दोषों का निर्देश किया गया है, वे सभी ऐसे हैं, जिनका कोई परिहार नहीं है। नीचे सं. २०६६ वि. के अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त दिए जा रहे हैं। – प्रियव्रत शर्मा ।

तिथि-वार	तारीख २०१२ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
संवत्सरारम्भ से वैशाख कृ. ६ गु. (१२ अप्रै., २०१२ ई.) तक सूर्य मीनस्थ रहेगा।			
वैशा. कृ. ६ श.	अप्रै. १४	उ.षा.	लग्नाभाव,
वैशा. कृ. ६ श.	अप्रै. १४	श्रव.	भौमवेध,
वैशा. कृ. १० र.	अप्रै. १५	श्रव.	भौमवेध,
वैशा. कृ. १२ बु.	अप्रै. १८	उ.भा.	क्षीणचन्द्र,
वैशा. शु. ३ मं.	अप्रै. २४	रोहि.	ग्रहणनक्षत्र,
वैशा. शु. ४ बु.	अप्रै. २५	रोहि.	ग्रहणनक्षत्र,
वैशा. शु. ४ बु.	अप्रै. २५	मृग.	ग्रहणनक्षत्र, भद्रा,
वैशा. शु. ५ गु.	अप्रै. २६	मृग.	ग्रहणनक्षत्र,

गुरु अस्त : वैशा. शु. ११ बु. से ज्ये. शु. ७ चं. (२ से २८ मई, २०१२ ई.) तक गुरु अस्त रहेगा।

शुक्र अस्त : ज्ये. शु. १३ श. से आषा. कृ. ७ र. (२ से १० जून, २०१२ ई.) तक शुक्र अस्त रहेगा।

तिथि-वार	तारीख २०१२ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
आषा. शु. ६ चं.	जून २५	मघा	नक्षत्रान्त,
आषा. शु. ७ मं.	जून २६	उ.फा.	व्यतीपात, भद्रा,
आषा. शु. ८ बु.	जून २७	उ.फा.	नक्षत्रान्त,
आषा. शु. ८ बु.	जून २७	चित्रा	परिघार्ध,
आषा. शु. ९ गु.	जून २८	स्वा.	लग्नाभाव,
आषा. शु. ११ श.	जून ३०	अनु.	अपरिहार्य राहुयुति,
आषा. शु. १२ र.	जुला. १	अनु.	अपरिहार्य राहुयुति,
आषा. शु. १३ चं.	जुला. २	मूल	लग्नाभाव,
आषा. शु. १५ मं.	जुला. ३	मूल	लग्नाभाव,
श्राव. कृ. १ बु.	जुला. ४	उ.षा.	वैधृति,
श्राव. कृ. २ गु.	जुला. ५	उ.षा.	वैधृति,
श्राव. कृ. २ गु.	जुला. ५	श्रव.	२१/५४ तक मृत्युवाण, लग्नाभाव,
श्राव. कृ. ६ चं.	जुला. ९	उ.भा.	लग्नाभाव,
श्राव. कृ. ७ मं.	जुला. १०	उ.भा.	लग्नाभाव,
श्राव. कृ. ७ मं.	जुला. १०	रेव.	भौमवेध,
श्राव. कृ. ११ श.	जुला. १४	रोहि.	मृत्युवाण, २६/२२ बाद क्रान्तिसाम्य,
श्राव. शु. २ श.	जुला. २१	मघा	व्यतीपात,
श्राव. शु. ३ र.	जुला. २२	मघा	लग्नाभाव,
श्राव. शु. ८ गु.	जुला. २६	चित्रा	भद्रा,
श्राव. शु. ९ शु.	जुला. २७	स्वा.	मृत्युवाण,
श्राव. शु. १० श.	जुला. २८	अनु.	अपरिहार्य राहुयुति,
श्राव. शु. १४ बु.	अग. १	उ.षा.	शुक्र पादवेध,
श्राव. शु. १४ बु.	अग. १	श्रव.	लग्नाभाव,
श्राव. शु. १५ गु.	अग. २	श्रव.	लग्नाभाव,
श्राव. शु. १५ गु.	अग. २	धनि.	सूर्यविध,
प्र.भाद्र.कृ. १ शु.	अग. ३	धनि.	सूर्यविध,
प्र.भाद्र.कृ. ३ र.	अग. ५	उ.भा.	मृत्युबाण,
प्र.भाद्र.कृ. ५ मं.	अग. ७	अश्वि.	भुजंगपात,
प्र.भाद्र.कृ. ६ बु.	अग. ८	अश्वि.	भुजंगपात,
प्र.भाद्र.कृ. १० र.	अग. १२	रोहि.	भद्रा,

अधिकमास : १८ अग. से १६ सितं., २०१२ ई. तक भाद्रपद अधिकमास है।

तिथि-वार	तारीख २०१२ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
द्वि.भाद्र.शु. २ चं.	सितं. १७	चित्रा	मृत्युबाण,
द्वि.भाद्र.शु. ३ मं.	सितं. १८	चित्रा	१६/०३ तक मृत्युवाण, १०/२४ बाद अपरिहार्य शनियुति,
द्वि.भाद्र.शु. ४ बु.	सितं. १९	स्वा.	लग्नाभाव,
द्वि.भाद्र.शु. ५ गु.	सितं. २०	अनु.	अपरिहार्य राहुयुति,
द्वि.भाद्र.शु. ६ शु.	सितं. २१	अनु.	अपरिहार्य राहुयुति,
द्वि.भाद्र.शु. ८ र.	सितं. २३	मूल	लग्नाभाव,
द्वि.भाद्र.शु. १० मं.	सितं. २५	उ.षा	लग्नाभाव,
द्वि.भाद्र.शु. ११ बु.	सितं. २६	श्रव.	लग्नाभाव,
द्वि.भाद्र.शु. १२ गु.	सितं. २७	धनि.	मृत्युबाण,

अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०६९ वि.)

श्राद्धपक्ष : १ से १५ अक्तू., २०१२ ई. तक महालय (श्राद्ध) पक्ष रहेगा ।

तिथि-वार	तारीख २०१२ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
आश्वि. शु. २ बु.	अक्तू. १७	अनु.	अपरिहार्य भौम-राहुयुति,
आश्वि. शु. ३ गु.	अक्तू. १८	अनु.	अपरिहार्य भौम-राहुयुति,
आश्वि. शु. १३ श.	अक्तू. २७	उ.भा.	लग्नाभाव, ७/०० बाद मृत्युबाण,
आश्वि. शु. १३ श.	अक्तू. २७	रेव.	मृत्युबाण, २८/१७ बाद शुक्रपादवेध,
आश्वि. शु. १४ र.	अक्तू. २८	अश्वि.	भद्रा,
कार्ति. कृ. ३ शु.	नवं. २	रोहि.	लग्नाभाव,
कार्ति. कृ. ४ श.	नवं. ३	मृग.	लग्नाभाव,
कार्ति. कृ. १० शु.	नवं. ९	उ.फा.	वैधृति,
कार्ति. कृ. ११ श.	नवं. १०	उ.फा.	लग्नाभाव,
कार्ति. शु. ३ शु.	नवं. १६	मूल	अपरिहार्य भौमयुति,
कार्ति. शु. ४ श.	नवं. १७	उ.षा.	भुजंगपात,
कार्ति. शु. ५ र.	नवं. १८	उ.षा.	भुजंगपात,
कार्ति. शु. ७ मं.	नवं. २०	धनि.	लग्नाभाव,
कार्ति. शु. १० शु.	नवं. २३	रेव.	भद्रा,
कार्ति. शु. ११ श.	नवं. २४	अश्वि.	व्यतीपात,
कार्ति. शु. १३ चं.	नवं. २६	अश्वि.	मृत्युबाण,
मार्ग. कृ. ५ मं.	दिसं. ४	मघा	वैधृति,
मार्ग. कृ. ९ श.	दिसं. ८	चित्रा	लग्नाभाव,
मार्ग. कृ. ११ र.	दिसं. ९	स्वा.	अपरिहार्य शनियुति,
मार्ग. कृ. १२ चं.	दिसं.१०	स्वा.	अपरिहार्य शनियुति,

धनु:स्थ रवि : मार्ग शु. ३ श. से पौष शु. १ श. (१५ दिसं., २०१२ से १२ जन., २०१३ ई.) तक सूर्य धनु:स्थ है।

तिथि-वार	तारीख २०१३ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
पौष शु. ७ शु.	जन. १८	अश्वि.	लग्नाभाव,
पौष शु. १० चं.	जन. २१	रोहि.	क्रान्तिसाम्य, सूर्यवेध,
पौष शु. ११ मं.	जन. २२	रोहि.	सूर्यवेध,
पौष शु. ११ मं.	जन. २२	मृग.	सूर्यवेध,
पौष शु. १२ बु.	जन. २३	मृग.	२६/४६ तक सूर्यवेध, तदनन्तर मृत्युबाण,
पौष शु. १३ गु.	जन. २४	मृग.	मृत्युबाण,
माघ कृ. १ चं.	जन. २८	मघा	सूर्यवेध,
माघ कृ. २ मं.	जन. २९	मघा	सूर्यवेध,
माघ कृ. ४ गु.	जन. ३१	हस्त	लग्नाभाव,
माघ कृ. ५ शु.	फर. १	चित्रा	लग्नाभाव,२३/२६ बाद मृत्युबाण,
माघ कृ. ६ श.	फर. २	चित्रा	मृत्युबाण,
माघ कृ. ६ श.	फर. २	स्वा.	भुजंगपात, भौमवेध, अपरिहार्य शनियुति,
माघ कृ. ७ र.	फर. ३	स्वा.	भुजंगपात, भौमवेध, अपरिहार्य शनियुति,

शुक्र अस्त- माघी अमा रविवार (१० फरवरी, २०१३ ई.) से वर्षान्त तक शुक्र अस्त रहेगा ।

शुक्रास्त की इस अवधि में १६ से २७ मार्च, २०१३ ई. तक होलाष्टक और फाल्गु. शु. ३ गु. (१४ मार्च, २०१३ ई.) से वर्षान्त तक सूर्य मीनस्थ रहेगा।

"अभिजित् प्रकाशन" की पुस्तकें कहां से खरीदें ?

"अभिजित् प्रकाशन", 59/6 (अभिजित्) P. O. पंचकूला (हरि.) द्वारा प्रकाशित प्रो. प्रियव्रत शर्मा की पुस्तकें भारतीय ज्योतिष जगत् की अपूर्व प्रकाशन मानी गई हैं। इनकी लोकप्रियता देखकर कुछ धूर्त बुक्सेलर्स इनकी नकली प्रतियां बेचते हुए पकड़े गए हैं। ऐसे किसी भी बुक्सेलर से खरीदी गई अवैध पुस्तक की अपूर्णता, मुद्रण आदि सम्बन्धी किसी भी प्रकार की अशुद्धि अथवा अन्य किसी भी त्रुटि के लिए हम कदापि उत्तरदायी नहीं हैं। इन पुस्तकों को बेचने का अधिकार दिल्ली या अन्य किसी भी नगर के किसी भी बुक्सेलर को हमने बिल्कुल नहीं दिया है। इन पुस्तकों को प्राप्त करने के लिए ग्राहक केवल सीधा हमसे ['अभिजित् प्रकाशन', 59/6 (अभिजित्) P. O. पंचकूला (हरियाणा) से] ही सम्पर्क करें। अवैधरूप से इन प्रकाशनों का विक्रय करने वाले बुक्सेलर्स के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई करने के लिए हम बाधित हैं। हमारी पुस्तकें बेचने वाले ऐसे किसी भी बुक्सेलर की सूचना देने वाले महानुभाव के हम आभारी होंगे।

–प्रियव्रत शर्मा

मुण्डनादि अन्य मुहूर्त्त (सं.२०६९ वि.) (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)

(मुण्डन, उपनयन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश आदि के शुद्ध मुहूर्त्त प्रतिवर्ष इतने कम क्यों होते हैं ?)

मुण्डनादि इन मुहूर्त्तों के शोधन में भी हम भद्रा, क्रूरग्रहयुति, क्रूरग्रहवेध, क्रान्तिसाम्य, कलशचक्रदोष, वृषवास्तुचक्रदोष, व्यतीपात, अतिगण्ड आदि योग तथा अन्य मुहूर्त्तशास्त्रोक्त निरवशेष निषिद्ध पदार्थों का पूरी तरह विचार कर शुद्धकाल का निर्णय करते हैं, जिससे कई बार तो इनके शुद्ध मुहूर्त्त वर्ष में असह्यरूप से कम (एक-एक या दो-दो भी) हो जाते हैं। सर्वथा दोषमुक्त शास्त्रीय मुहूर्त्तसाधन के आग्रह के कारण इन मुहूर्त्तों की संख्या हमारे पंचांग में अन्य पंचांगों से, जिनके सम्पादक इन विचार्य विषयों की उपेक्षा करके मुहूर्त्तों की संख्या बढ़ाने की शास्त्रविरुद्ध प्रवृत्ति लिए हैं; काफी कम होती है। विश्वास रखिए, हमारे 'मार्त्तण्ड पंचांग' में दिए गए शुद्ध मुहूर्त्तों के अतिरिक्त जो मुहूर्त्त अन्य पंचांगों में आपको मिलते हैं; उनकी मुहूर्त्तशास्त्रीय शुद्धता वस्तुतः विचारणीय है।

मुण्डन मुहूर्त्त (सन् २०१२-१३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. ११ चं.	वैशा. ४	अप्रै. १६	धनि.	११/१६ तक,
आषा. कृ. ११ शु.	आषा. २	जून १५	अश्वि.	११/३८ तक,
पौष शु. ७ शु.	माघ ६	जन. १८	रेव.	१६/२४ तक,
पौष शु. १३ गु.	माघ १२	जन. २४	मृग.	८/४३ तक,
माघ कृ. ५ शु.	माघ २०	फर. १	हस्त	१०/३३ तक,
माघ कृ. ११ बु.	माघ २५	फर. ६	ज्ये.	१२/२१ तक,

मुण्डन में विशेष:- किसी देवस्थल/तीर्थ पर बिना मुहूर्त्त के भी मुण्डन करवाना शुभ माना गया है। नवरात्रों के दिनों में भी शक्तिपीठों (देवी-मन्दिरों) के समीप मुण्डन करवाने की पंजाब, हिमाचल आदि प्रदेशों में पुरानी परम्परा है।

उपनयन मुहूर्त्त (सन् २०१३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टैं.टा.)
माघ कृ. ५ शु.	माघ. २०	फर. १	हस्त	१०/३३ तक,

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त (सन् २०१२-१३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ६ शु.	वैशा. १५	अप्रै. २७	पुन.	१४/५६ बाद,
आषा. कृ. ११ शु.	आषा. २	जून १५	अश्वि.	११/३८ तक,
माघ कृ. ५ शु.	माघ २०	फर. १	हस्त	

विद्यारम्भ मुहूर्त्त (सन् २०१२ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. १० र.	वैशा. ३	अप्रै. १५	श्रव.	१०/०४ तक,
वैशा. कृ. १० र.	वैशा. ३	अप्रै. १५	धनि.	११/१६ से १३/५३ तक, (१३/५३ बाद क्रान्तिसाम्य),

विद्यारम्भ मुहूर्त्त (सन् २०१२-१३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ६ शु.	वैशा. १५	अप्रै. २७	आर्द्रा	१३/३४ तक,
वैशा. शु. ६ शु.	वैशा. १५	अप्रै. २७	पुन.	१४/५६ बाद,
आषा. कृ. ११ शु.	आषा. २	जून १५	अश्वि.	११/३८ तक,
पौष शु. ६ गु.	माघ ५	जन. १७	उ.भा.	१५/१७ तक,
पौष शु. १२ बु.	माघ ११	जन. २३	मृग.	
माघ कृ. ५ शु.	माघ २०	फर. १	हस्त	१८/०३ तक,
माघ कृ. ११ बु.	माघ २५	फर. ६	मूल	१३/३३ बाद,

अक्षरारम्भ और विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोग:- बच्चे को वर्णमाला का ज्ञान करवाने के लिए अक्षरारम्भ के और संस्कृत, अंग्रेजी, गणित, रसायन आदि विषयों का अध्ययन प्रारम्भ करने के लिए विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोग करना चाहिए।

द्विरागमन में विशेष- विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर द्विरागमन के निम्नांकित मुहूर्त्तों के बिना भी द्विरागमन हो सकता है। यदि नव-विवाहिता वधू का द्विरागमन दिवाली के दिन प्रदोष के समय दीपकों के प्रकाश में हो, तो अच्छा माना जाता है।

द्विरागमन मुहूर्त्त (सन् २०१२ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. १२ बु.	वैशा. ६	अप्रै. १८	उ.भा.	१६/१६ बाद
कार्त्ति. शु. १३ चं.	मार्ग. १२	नवं. २६	अश्वि.	७/२५ तक,
कार्त्ति. शु. १५ बु.	मार्ग. १४	नवं. २८	रोहि.	१४/४१ बाद,
मार्ग. कृ. १ गु.	मार्ग. १५	नवं. २९	रोहि.	१६/३६ तक,
मार्ग. कृ. १ गु.	मार्ग. १५	नवं. २९	मृग.	१७/४८ बाद,

द्विरागमन मुहूर्त्त (सन् २०१२ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टैं.टा.)
मार्ग. कृ. २ शु.	मार्ग. १६	नवं. ३०	मृग.	१६/३८ तक,
मार्ग. कृ. ५ चं.	मार्ग. १९	दिसं. ३	पुष्य	२७/१३ तक,

गृहारम्भ मुहूर्त्त (सन् २०१२-१३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टैं.टा.)
*श्राव. कृ. ६ चं.	आषा. २६	जुला. ९	उ.भा.	१२/४१ से १७/०४ तक,
*श्राव. शु. ७ बु.	श्राव. १०	जुला. २५	हस्त	६/०६ तक,
कार्त्ति. कृ. ३ गु.	कार्त्ति. १७	नवं. १	रोहि.	८/२३ से १७/४० तक,
*कार्त्ति. कृ. ४ श.	कार्त्ति. १९	नवं. ३	मृग.	११/३६ से १३/२७ तक,
*कार्त्ति. कृ. ११ श.	कार्त्ति. २६	नवं. १०	उ.फा.	१५/४७ से २०/४४ तक,
कार्त्ति. शु. १० शु.	मार्ग. ९	नवं. २३	उ.भा.	
कार्त्ति. शु. ११ श.	मार्ग. १०	नवं. २४	रेव.	१०/३८ बाद,
कार्त्ति. शु. १५ बु.	मार्ग. १४	नवं. २८	रोहि.	१४/४१ बाद,
मार्ग. कृ. २ शु.	मार्ग. १६	नवं. ३०	मृग.	
*मार्ग. कृ. ५ चं.	मार्ग. १९	दिसं. ३	पुष्य	
*मार्ग. कृ. ९ श.	मार्ग. २४	दिसं. ८	हस्त	७/४८ से १८/५८ तक,
*पौष शु. ६ गु.	माघ ५	जन. १७	उ.भा.	१६/२८ तक,
पौष शु.१३ गु.	माघ १२	जन. २४	मृग.	८/४३ तक,
माघ कृ. ४ गु.	माघ १९	जन. ३१	उ.फा.	११/१२ बाद,
*माघ कृ. ६ श.	माघ २१	फर. २	चित्रा	६/३४ तक,

* तारांकित मुहूर्त्त भी सभी मुहूर्त्तदोषों से मुक्त हैं। इनमें केवल वृष-वास्तुचक्रशुद्धि नहीं है।

नूतन-गृहप्रवेश मुहूर्त्त (सन् २०१२-१३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. १२ बु.	वैशा. ६	अप्रै. १८	उ.भा.	१६/१६ बाद,
*माघ कृ. ४ गु.	माघ १९	जन. ३१	उ.फा.	११/१२ से १८/११ तक,
*माघ कृ. ५ शु.	माघ २०	फर. १	चित्रा	१६/१५ से २६/४१ तक,
				२८/४१ बाद,
*माघ कृ. ६ श.	माघ २१	फर. २	चित्रा	६/३४ तक,
माघ कृ. ९ चं.	माघ २३	फर. ४	अनु.	२८/३२ बाद,

* तारांकित मुहूर्तों में केवल कलशचक्रशुद्धि नहीं है। अन्यथा ये निर्दोष हैं।

पुरातन-गृहप्रवेश मुहूर्त्त (सन् २०१२ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. ११ चं.	वैशा. ४	अप्रै. १६	धनि.	११/१६ तक,
वैशा. कृ. ११ चं.	वैशा. ४	अप्रै. १६	शत.	१२/२८ बाद,
वैशा. कृ. १२ बु.	वैशा. ६	अप्रै. १८	उ.भा.	१६/१६ बाद,
वैशा. शु. ७ श.	वैशा. १६	अप्रै. २८	पुष्य	१६/४० से २७/२० तक,
वैशा. शु. ११ बु.	वैशा. २०	मई २	उ.फा.	२२/२७ बाद,
वैशा. शु. १२ गु.	वैशा. २१	मई ३	उ.फा.	१२/५८ तक,
वैशा. शु. १३ शु.	वैशा. २२	मई ४	चित्रा	११/४४ से १६/३३ तक,
ज्ये. कृ. ५ गु.	वैशा. २८	मई १०	उ.षा.	१८/२१ बाद,
ज्ये. कृ. ६ शु.	वैशा. २९	मई ११	उ.षा.	१६/०५ तक,
ज्ये. कृ. ७ श.	वैशा. ३०	मई १२	धनि.	१७/४३ बाद,
ज्ये. कृ. ११ बु.	ज्ये. ३	मई १६	उ.भा.	२३/२३ तक,
ज्ये. कृ. ११ बु.	ज्ये. ३	मई १६	रेव.	२४/३५ बाद,
ज्ये. कृ. १२ गु.	ज्ये. ४	मई १७	रेव.	२६/१५ तक,
ज्ये. शु. २ बु.	ज्ये. १०	मई २३	मृग.	१७/१३ तक,
ज्ये. शु. ४ शु.	ज्ये. १२	मई २५	पुष्य	२२/३८ बाद,
ज्ये. शु. ५ श.	ज्ये. १३	मई २६	पुष्य	२२/४७ तक,
ज्ये. शु. ९ बु.	ज्ये. १७	मई ३०	उ.फा.	११/३३ से २१/५४ तक,

पुरातन-गृहप्रवेश मुहूर्त्त (सन् २०१२-१३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
ज्ये. शु. ११ शु.	ज्ये. १९	जून १	चित्रा	७/४६ तक,
ज्ये. शु. १३ श.	ज्ये. २०	जून २	स्वा.	१४/०७ से १५/२४ तक,
श्राव. कृ. ४ श.	आषा. २४	जुला. ७	शत.	१६/४२ बाद,
श्राव. कृ. ६ चं.	आषा. २६	जुला. ९	उ.भा.	१२/४१ से १७/०४ तक,
श्राव. कृ. ८ बु.	आषा. २८	जुला. ११	रेव.	६/४४ से १५/४८ तक,
श्राव. कृ. ११ श.	आषा. ३१	जुला. १४	रोहि.	२६/०७ बाद,
श्राव. शु. ४ चं.	श्राव. ८	जुला. २३	उ.फा.	१७/०६ बाद,
श्राव. शु. ७ बु.	श्राव. १०	जुला. २५	चित्रा	१०/१८ से २२/०० तक,
श्राव. शु. ८ गु.	श्राव. ११	जुला. २६	स्वा.	१४/२४ से २५/२३ तक,
श्राव. शु. १५ गु.	श्राव. १८	अग. २	धनि.	२१/१६ बाद,
कार्त्ति. कृ. ३ गु.	कार्त्ति. १७	नवं. १	रोहि.	८/२३ से १७/४० तक,
कार्त्ति. कृ. ४ श.	कार्त्ति. १९	नवं. ३	मृग.	११/३९ से १३/२७ तक,
कार्त्ति. कृ. ११ श.	कार्त्ति. २६	नवं. १०	उ.फा.	१५/५६ से २०/४४ तक,
कार्त्ति. शु. ४ श.	मार्ग. ३	नवं. १७	उ.षा.	२६/०१ बाद,
कार्त्ति. शु. ६ चं.	मार्ग. ५	नवं. १९	धनि.	२३/४७ बाद,
कार्त्ति. शु. ९ गु.	मार्ग. ८	नवं. २२	उ.भा.	२५/३८ बाद,
कार्त्ति. शु. १० शु.	मार्ग. ९	नवं. २३	उ.भा.	२१/५२ तक,
कार्त्ति. शु. ११ श.	मार्ग. १०	नवं. २४	रेव.	१०/३८ से १९/१९ तक,
कार्त्ति. शु. १५ बु.	मार्ग. १४	नवं. २८	रोहि.	१४/४१ बाद,
मार्ग. कृ. १ गु.	मार्ग. १५	नवं. २९	रोहि.	१६/३६ तक,
मार्ग. कृ. १ गु.	मार्ग. १५	नवं. २९	मृग.	१७/४८ बाद,
मार्ग. कृ. २ शु.	मार्ग. १६	नवं. ३०	मृग.	१९/३८ तक,
माघ कृ. ४ गु.	माघ १९	जन. ३१	उ.फा.	११/१२ से १८/११ तक,
माघ कृ. ५ शु.	माघ २०	फर. १	चित्रा	१९/१५ से २६/४१ तक,
माघ कृ. ६ श.	माघ २१	फर. २	चित्रा	६/३४ तक,
माघ शु. ३ बु.	फाल्गु. २	फर. १३	उ.भा.	८/२३ तक,

पुरातन-गृहप्रवेश मुहूर्त्त (सन् २०१३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
माघ शु. ४ गु.	फाल्गु. ३	फर. १४	रेव.	८/१९ से २६/५७ तक,
माघ शु. ८ चं.	फाल्गु. ७	फर. १८	रोहि.	११/३२ सं १३/२० तक,
माघ शु. १० बु.	फाल्गु. ९	फर. २०	मृग.	१६/२८ तक,
माघ शु. १२ शु.	फाल्गु. ११	फर. २२	पुष्य	२२/३६ बाद,
माघ शु. १३ श.	फाल्गु. १२	फर. २३	पुष्य	२३/०४ तक,
फाल्गु. कृ. २ बु.	फाल्गु. १६	फर. २७	उ.फा.	११/२१ तक,
				१३/२१ से २४/२६ तक,
फाल्गु. कृ. ७ चं.	फाल्गु. २१	मार्च ४	अनु.	१६/४५ तक,
फाल्गु. कृ. १० गु.	फाल्गु. २४	मार्च ७	उ.षा.	१६/४७ बाद,
फाल्गु. कृ. ११ शु.	फाल्गु. २५	मार्च ८	उ.षा.	६/०८ तक,

नोट :- सरकारी या अन्य नौकरी वाले तथा दूसरे लोग भी ट्रांसफर आदि के कारण अक्सर किराये वाले पुराने मकानों में यदा-कदा प्रवेश करते रहते हैं। ऐसे लोगों के लिए ही ये पुरातन-गृहप्रवेश मुहूर्त्त हैं। इन मुहूर्त्तों में गुरु-शुक्र अस्त और अधिकमास का दोष नहीं माना जाता। सिंहस्थ गुरु का सिंहांशक भी यहां विचारा नहीं जाता, इसलिए इनका इन मुहूर्त्तों में विचार नहीं किया गया है। कलश-चक्र का विचार भी यहां नहीं किया जाता ।

सर्व-देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०१२-१३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. कृ. १० र.	वैशा. ३	अप्रै. १५	श्रव.	१०/०४ तक,
वैशा. कृ. ११ चं.	वैशा. ४	अप्रै. १६	धनि.	११/१६ तक,
आषा. कृ. ११ शु.	आषा. २	जून १५	अश्वि.	११/३८ तक,
पौष शु. ६ गु.	माघ ५	जन. १७	उ.भा.	
पौष शु. ७ शु.	माघ ६	जन. १८	रेव.	
पौष शु. १५ र.	माघ १५	जन. २७	पुष्य	
माघ कृ. ५ शु.	माघ २०	फर. १	हस्त	

तामसदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०१२ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
आषा. शु. २ गु.	आषा. ८	जून २१	पुन.	
आषा. शु. ३ शु.	आषा. ९	जून २२	पुष्य	
आषा. शु. ८ बु.	आषा.१४	जून २७	हस्त	८/५७ बाद,
आषा. शु. १० शु.	आषा.१६	जून २९	स्वा.	
मार्ग. कृ. ११ र.	मार्ग. २५	दिसं. ९	चित्रा	

श्रीगणेश प्रतिष्ठा मुहूर्त्त(सन् २०१३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
माघ कृ. ४ गु.	माघ १९	जन. ३१	उ.फा.	

श्रीदुर्गा प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०१३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
पौष शु. ९ र.	माघ ८	जन. २०		

श्रीगौरी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त(सन् २०१२-१३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. शु. ३ मं.	वैशा. १२	अप्रै. २४		
पौष शु. ३ चं.	माघ २	जन. १४	धनि.	११/३१ तक,

श्रीशिव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०१२ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. शु. ६ शु.	वैशा. १५	अप्रै. २७	आर्द्रा	

अभिजित् मुहूर्त्त

स्थानीय दिनमानार्ध के घं. मि. को स्थानीय सूर्योदय- काल में जोड़ने पर 'स्पष्ट दिनार्ध' होता है, दिनमान का 30वां भाग मुहूर्त्तार्ध कहलाता है। मुहूर्त्तार्ध को स्पष्ट दिनार्ध में घटाने और जोड़ने पर अभिजित् मुहूर्त्त का क्रमशः प्रारम्भ और समाप्तिकाल ज्ञात हो जाता है। इस काल में लगभग सभी दोषों को समाप्त कर डालने की अद्भुत शक्ति मानी गयी है। जब मुण्डन, अक्षरारम्भ आदि मुहूर्त्तों में शुद्ध लग्न न मिल रहा हो, तब अभिजित् मुहूर्त्तों को प्रयोग में लाना चाहिए।

देवप्रतिष्ठा के विशेष मुहूर्त्तों के बारे में स्पष्टीकरण

श्री विष्णु, राम, कृष्ण, शिव, गणेश, गौरी आदि सात्त्विक देवता हैं, इसलिए इनकी प्रतिष्ठा यद्यपि उपरोक्त " सात्त्विक देव प्रतिष्ठा " वाले मुहूर्त्तों में हो सकती है, फिर भी मुहूर्तशास्त्रों में इनकी प्रतिष्ठा के लिए विशेष मुहूर्त्त-काल बताए गए हैं, जिनका निर्देश हमने यहां नीचे अलग से किया है। यहां यह समझ लेना चाहिए कि सात्त्विक देवप्रतिष्ठा वाले मुहूर्त्त श्री विष्णु, राम, कृष्ण, गणेश, शिव, सरस्वती आदि सभी सत्त्वप्रधान प्रकृति वाले देवी-देवताओं के लिए समानरूप से प्रयोग में लाये जा सकते हैं, जबकि श्री गणेश, दुर्गा, गौरी, शिव आदि देवी- देवताओं के लिए यहां पृथक् रूप से लिखे गए प्रतिष्ठामुहूर्त्त केवल इन्हीं के लिए हैं। सभी देवताओं की प्रतिष्ठा पूर्वाह्णकाल में (मध्याह्न से पूर्व) ही की जाती है। ध्यान दें- गौरी, गणेश, दुर्गा और शिव की प्रतिष्ठा के मुहूर्त्त के लिए शास्त्रों में क्रमशः शुक्ल तृतीया, कृष्ण चतुर्थी, शुक्ल नवमी और कृष्ण चतुर्दशी तिथियां शुभ मानी गई हैं, तदनुसार ही यहां इनके विशेष मुहूर्त्तों में केवल इन तिथियों का निर्देश किया गया है, नक्षत्रों का नहीं। हां, जहां कहीं इन तिथियों के समय कोई देवप्रतिष्ठा मुहूर्त्त का नक्षत्र भी मिल गया है, वहां उस तिथि के साथ उसका भी निर्देश कर दिया गया है। शिवप्रतिष्ठा के लिए आर्द्रा नक्षत्र भी शुभ माना जाता है, अतः यहां आर्द्रा नक्षत्र में भी शिवप्रतिष्ठा-मुहूर्त्त लगाए गए हैं । इन मुहूर्त्तों में भी गुरु-शुक्रास्तकाल तथा सिंहांशकस्थ सिंहगतगुरु को वर्जित किया जाता है।

विपणि मुहूर्त्त (सन् २०१२-१३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ७ श.	वैशा. १६	अप्रै. २८	पुष्य	१६/४० बाद,
आषा. शु. ३ शु.	आषा. ९	जून २२	पुष्य	
श्राव. कृ. ६ चं.	आषा. २६	जुला. ९	उ.भा.	१७/०६ बाद,
श्राव. शु. ४ चं.	श्राव. ८	जुला.२३	उ.फा.	१७/०६ बाद,
श्राव. शु. ७ बु.	श्राव. १०	जुला.२५	हस्त	६/०६ तक,
श्राव. शु. ७ बु.	श्राव. १०	जुला.२५	चित्रा	१०/१८ बाद,
प्र.भाद्र.कृ. ४ चं.	श्राव. २२	अग. ६	उ.भा.	६/१३ बाद,
द्वि.(शुद्ध)भाद्र.शु.२चं.	आश्वि. २	सितं. १७	हस्त	
द्वि.(शुद्ध)भाद्र.शु.९चं.	आश्वि. ९	सितं. २४	उ.षा.	१२/४२ से १६/३७ तक, १९/०१ बाद,
अश्वि. शु. १३ श.	कार्त्ति. १२	अक्तू.२७	उ.भा.	
कार्त्ति. कृ. ४ श.	कार्त्ति. १९	नवं. ३	मृग.	११/३९ से १३/२६ तक,
कार्त्ति. कृ. ११ श.	कार्त्ति. २६	नवं. १०	उ.फा.	१५/४९ बाद,
कार्त्ति. शु. ५ र.	मार्ग. ४	नवं. १८	उ.षा.	११/२४ तक,
कार्त्ति. शु. १० शु.	मार्ग. ९	नवं. २३	उ.भा.	९/०७ तक,
कार्त्ति. शु. ११ श.	मार्ग. १०	नवं. २४	रेव.	१०/३८ बाद,
मार्ग. कृ. २ शु.	मार्ग. १६	नवं. ३०	मृग.	
मार्ग. कृ. ९ श.	मार्ग. २४	दिसं. ८	हस्त	७/४८ बाद,
पौष शु. ७ शु.	माघ ६	जन. १८	रेव.	१६/२४ तक,
पौष शु. १३ गु.	माघ १२	जन. २४	मृग.	८/४३ तक,
माघ कृ. ४ गु.	माघ १९	जन. ३१	उ.फा.	११/१२ बाद,
माघ कृ. ५ शु.	माघ २०	फर. १	हस्त	१०/३३ तक,

दशावतार प्रतिष्ठा

श्रीराम, कृष्ण आदि देवताओं की मूर्त्ति-प्रतिष्ठा इन देवताओं की अपनी-अपनी अवतार तिथियों (श्रीरामनवमी आदि) के दिन पूर्वाह्णकाल में बिना पंचांग-शुद्धि के भी की जा सकती है। अवतार की तिथि यदि गुरु-शुक्रास्तकाल में पड़े, तब तो उस दिन मूर्त्ति-प्रतिष्ठा नहीं करनी चाहिए।

सर्वार्थसिद्धि आदि योग (सं. २०६९ वि.) (भा. स्टैं. टा.)

सर्वार्थसिद्धि योग (सन् २०१२-१३ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त	
२०१२ ई.	घं. मि.	२०१२ ई.	घं. मि.	२०१२ ई.	घं. मि.	२०१२ ई.	घं. मि.	२०१२ ई.	घं. मि.	२०१२ ई.	घं. मि.	२०१२ ई.	घं. मि.	२०१२ ई.	घं. मि.
(मार्च २३	१२ ३४	मार्च २४	सू. उ.)शु.	जून २	सू. उ.	जून २	१६ ३६	अग. १९	१८ १५	अग. २०	सू. उ.	(नवं. ११	सू. उ.	नवं. ११	२० ०८)र.
मार्च २५	सू. उ.	मार्च २५	१८ ०८	जून ४	सू. उ.	जून ४	११ ०४	अग. २६	६ १७	अग. २७	सू. उ.	(नवं. १४	१२ १३	नवं. १५	सू. उ.)बु.
मार्च २७	सू. उ.	मार्च २८	० २५	जून ८	सू. उ.	जून ९	२ ०२	सितं. २	६ ११	सितं. ३	सू. उ.	नवं. १५	सू. उ.	नवं. १५	६ १८
मार्च २८	सू. उ.	मार्च २९	सू. उ.	जून १२	सू. उ.	जून १३	सू. उ.	(सितं. ४	६ २४	सितं. ५	सू. उ.)मं.	नवं. १८	सू. उ.	नवं. १९	० ३४
अप्रै. १	६ १२	अप्रै. २	६ ३५	जून १४	सू. उ.	जून १५	१२ ५०	(सितं. ८	सू. उ.	सितं. ८	२० ५७)श.	नवं. १९	सू. उ.	नवं. १९	२३ ४७
अप्रै. ३	सू. उ.	अप्रै. ३	६ ०६	जून १८	सू. उ.	जून १८	२१ ५५	सितं. १५	३ ५२	सितं. १५	सू. उ.	(नवं. २४	३ ३१	नवं. २४	सू. उ.)शु.
अप्रै. ७	२१ ५४	अप्रै. ८	सू. उ.	(जून १८	२१ ५५	जून १९	सू. उ.)चं.	सितं. १६	सू. उ.	सितं. १७	१ ११	नवं. २५	सू. उ.	नवं. २६	सू. उ.
अप्रै. ९	१६ २६	अप्रै. १०	सू. उ.	जून २१	सू. उ.	जून २२	४ १६	(सितं. १७	१ ११	सितं. १७	सू. उ.)र.	नवं. २७	११ ३६	नवं. २९	सू. उ.
अप्रै. १४	१० ३८	अप्रै. १५	सू. उ.	(जून २२	४ १६	जून २२	सू. उ.)गु.	सितं. २०	१७ ४०	सितं. २१	सू. उ.	दिसं. ३	२ १६	दिसं. ४	४ २५
अप्रै. १९	१८ ४५	अप्रै. २०	सू. उ.	जून २७	५ ४७	जून २८	४ ४२	सितं. २३	सू. उ.	सितं. २३	१३ ३१	दिसं. ४	सू. उ.	दिसं. ५	६ ०५
(अप्रै. २०	सू. उ.	अप्रै. २०	२१ ३१)शु.	जुला. ६	सू. उ.	जुला. ६	११ ४०	सितं. ३०	सू. उ.	सितं. ३०	१५ १३	दिसं. ७	सू. उ.	दिसं. ७	७ ३१
अप्रै. २०	२१ ३१	अप्रै. २१	सू. उ.	जुला. १०	सू. उ.	जुला. १०	१४ ३२	(अक्तू. २	सू. उ.	अक्तू. २	१९ ३६)मं.	(दिसं. १२	सू. उ.	दिसं. १२	२० ४८)बु.
अप्रै. २४	सू. उ.	अप्रै. २४	६ ४७	जुला. १२	सू. उ.	जुला. १२	१९ ५५	अक्तू. ३	२२ २५	अक्तू. ४	सू. उ.	दिसं. १६	सू. उ.	दिसं. १६	१० ०२
अप्रै. २५	सू. उ.	अप्रै. २६	सू. उ.	जुला. १५	२ ०७	जुला. १५	३ ४६	अक्तू. १२	१३ ५४	अक्तू. १३	सू. उ.	दिसं. १७	सू. उ.	दिसं. १७	८ २६
अप्रै. २७	१४ ५६	अप्रै. २८	सू. उ.	(जुला. १५	३ ४६	जुला. १५	सू. उ.)श.	अक्तू. १४	सू. उ.	अक्तू. १४	११ १५	(दिसं. २१	९ ४८	दिसं. २२	० ४४)शु.
अप्रै. २९	सू. उ.	अप्रै. २९	१७ ४२	(जुला. १६	सू. उ.	जुला. १७	सू. उ.)चं.	(अक्तू. १४	११ १५	अक्तू. १५	सू. उ.)र.	दिसं. २२	० ४४	दिसं. २२	सू. उ.
मई ५	८ ५६	मई ६	सू. उ.	जुला. १९	सू. उ.	जुला. १९	१० ४६	(अक्तू. १८	१ ४१	अक्तू. १८	सू. उ.)बु.	दिसं. २३	सू. उ.	दिसं. २३	१४ ४५
मई ७	सू. उ.	मई ८	० ११	(जुला. १९	१० ४६	जुला. २०	सू. उ.)गु.	अक्तू. १८	सू. उ.	अक्तू. १८	२३ १९	दिसं. २५	सू. उ.	दिसं. २५	२० ५८
मई ११	१७ ४०	मई १२	१७ ४३	जुला. २५	सू. उ.	जुला. २५	१० १८	अक्तू. २१	१८ २१	अक्तू. २२	सू. उ.	दिसं. २६	सू. उ.	दिसं. २७	सू. उ.
मई १५	२२ ०३	मई १६	सू. उ.	जुला. ३०	३ ०१	जुला. ३०	सू. उ.	अक्तू. २२	१७ ३९	अक्तू. २३	सू. उ.	दिसं. २९	५ ४३	दिसं. २९	सू. उ.
मई १७	सू. उ.	मई १९	सू. उ.	अग. ५	२१ ३१	अग. ६	सू. उ.	अक्तू. २८	२३ ५५	अक्तू. २९	सू. उ.	दिसं. ३०	८ ०६	दिसं. ३१	१० ०७
मई २१	१२ ४६	मई २२	सू. उ.	(अग. ८	१ ०५	अग. ८	सू. उ.)मं.	अक्तू. ३१	५ १९	नवं. १	सू. उ.	(सन् २०१३ ई.)			
मई २३	सू. उ.	मई २३	१८ २५	(अग. ११	९ ५३	अग. १२	सू. उ.)श.	नवं. ५	२० ००	नवं. ६	सू. उ.	जन. १	सू. उ.	जन. १	११ ४५
मई २४	२० ४५	मई २५	२२ ३८	(अग. १३	सू. उ.	अग. १३	१५ २१)चं.	नवं. ६	२१ ५३	नवं. ७	सू. उ.	जन. १२	२१ ०५	जन. १३	सू. उ.
मई ३०	२३ ०६	मई ३१	सू. उ.	(अग. १६	सू. उ.	अग. १६	१९ २१)गु.	नवं. ९	सू. उ.	नवं. ९	२३ ०५	जन. १७	१७ ४०	जन. १८	सू. उ.

सर्वार्थसिद्धि योग (भा. स्टैं. टा.) | रवि योग (सन् २०१२-१३ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

सर्वार्थसिद्धि योग प्रारम्भ		समाप्त		रवि योग प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त	
२०१३ ई.	घं. मि.	२०१३ ई.	घं. मि.	२०१२ ई.	घं. मि.	२०१२ ई.	घं. मि.	२०१२ ई.	घं. मि.	२०१२ ई.	घं. मि.	२०१२ ई.	घं. मि.	२०१२ ई.	घं. मि.
(जन. १८	सू. उ.	जन. १८	१९ २४)शु.	मार्च २५	१८ ०८	मार्च २६	२१ १६	जुला. २७	७ ५२	जुला. २९	४ ४४	दिसं. ५	६ ०५	दिसं. ६	७ ०८
जन. १८	१९ २४	जन. १९	सू. उ.	मार्च २८	० २५	मार्च २९	३ २५	जुला. ३१	१ १९	जुला. ३१	२३ ४२	दिसं. १५	१२ १५	दिसं. १५	२० १४
जन. २२	३ ४९	जन. २२	सू. उ.	अप्रै. १	९ १२	अप्रै. ३	९ ०६	अग. ८	१ ०५	अग. ९	३ ४६	दिसं. १६	१० ०२	दिसं. १७	८ २६
जन. २३	सू. उ.	जन. २४	सू. उ.	अप्रै. ५	५ ५६	अप्रै. ६	३ ३१	अग. २०	१७ १०	अग. २१	१५ ५६	दिसं. १८	७ ३३	दिसं. १९	७ २९
जन. २५	१२ ३२	जन. २६	सू. उ.	अप्रै. ११	१२ २४	अप्रै. १२	११ ११	अग. २२	१४ ३५	अग. २३	१३ १३	दिसं. २१	९ ४८	दिसं. २३	१४ ४५
जन. २७	सू. उ.	जन. २७	१६ २९	अप्रै. २४	६ ४७	अप्रै. २५	९ ५०	अग. २५	१० ३३	अग. २७	८ ०६	दिसं. २५	२० ५८	दिसं. २७	० ०५
फर. २	१८ ४६	फर. ३	सू. उ.	अप्रै. २६	१२ ३६	अप्रै. २७	११ ०३	अग. २९	६ १०	अग. ३०	५ ३३	(सन् २०१३ ई.)			
फर. ४	१६ ४८	फर. ५	सू. उ.	अप्रै. २७	१४ ५६	अप्रै. २८	१६ ४०	अग. ३०	१३ ५६	अग. ३१	५ १७	जन. ३	१३ ४३	जन. ४	१३ ५८
फर. ९	७ २६	फर. १०	५ ३४	अप्रै. ३०	१७ ५६	मई २	१६ ०७	सितं. ६	१४ ४६	सितं. ७	१७ ५३	जन. १४	१७ ३२	जन. १५	१६ ४५
फर. १३	२ ३७	फर. १३	सू. उ.	मई ४	११ ४४	मई ५	८ ५६	सितं. १८	२१ २६	सितं. १९	१९ ३०	जन. १६	१६ ४७	जन. १७	१७ ४०
फर. १४	सू. उ.	फर. १६	६ ०३	मई १०	१८ २१	मई ११	५ १७	सितं. २०	१७ ४०	सितं. २१	१६ ०२	जन. १९	२१ ४७	जन. २२	३ ४९
फर. १८	११ ३२	फर. १९	सू. उ.	मई ११	१७ ४०	मई १२	१७ ४३	सितं. २३	१३ ३१	सितं. २५	१२ ११	जन. २५	१२ ३२	जन. २६	१४ ४४
फर. २०	सू. उ.	फर. २०	१७ ४१	मई २३	१८ २५	मई २४	२० ४५	सितं. २८	१२ ४५	सितं. २९	१३ ४५	फर. १	१९ १५	फर. २	१८ ४६
फर. २१	२० २३	फर. २२	२२ ३६	मई २५	१ २५	मई २५	२२ ३८	अक्तू. ६	४ ३९	अक्तू. ७	७ ४०	फर. १३	२ ३७	फर. १४	२ ५९
फर. २८	१ ४१	फर. २८	सू. उ.	मई २६	२३ ५९	मई २८	० ४४	अक्तू. १८	१ ४१	अक्तू. १८	२३ १९	फर. १५	४ ०९	फर. १६	६ ०३
मार्च २	सू. उ.	मार्च २	२३ १८	मई ३०	० १७	मई ३१	२१ २२	अक्तू. १९	२१ १५	अक्तू. २०	१९ ३४	फर. १८	११ ३२	फर. २१	२० २३
मार्च ४	सू. उ.	मार्च ४	२० ५७	जून २	१६ ३६	जून ३	१३ ५१	अक्तू. २२	१७ ३९	अक्तू. २५	१८ ३९	फर. २४	० १६	फर. २५	१ २१
मार्च ८	१५ २३	मार्च ९	१४ ०६	जून १०	२ ०९	जून ११	३ ०३	अक्तू. २७	२१ ४५	अक्तू. २८	२३ ५५	मार्च २	२३ १८	मार्च ३	२२ ११
मार्च १२	१२ ०३	मार्च १३	सू. उ.	जून २३	५ ३०	जून २४	६ १६	नवं. ४	१७ ३२	नवं. ५	२० ००	मार्च ४	१६ ५१	मार्च ४	२० ५७
मार्च १४	सू. उ.	मार्च १५	१४ ५३	जून २५	६ ३५	जून २६	६ २५	नवं. ६	६ ५८	नवं. ६	२१ ५३	मार्च १४	१३ १८	मार्च १५	१४ ५३
मार्च १८	सू. उ.	मार्च १९	२२ ४८	जून २८	४ ४२	जून ३०	१ २३	नवं. १६	६ ३१	नवं. १७	४ ०२	मार्च १६	१७ ०५	मार्च १७	१९ ४७
(मार्च १८	२२ ४८	मार्च १९	सू. उ.)चं.	जुला. १	२० ५९	जुला. २	१८ ३८	नवं. १८	२ ०१	नवं. १९	० ३४	मार्च १९	१ १५	मार्च १८	२२ ४८
मार्च २१	सू. उ.	मार्च २२	७ ११	जुला. ९	१२ ४१	जुला. १०	१४ ३२	नवं. १९	१२ ५५	नवं. १९	२३ ४७	मार्च २१	४ ४४	मार्च २३	९ ०४
मार्च २७	१० ०४	मार्च २८	सू. उ.	जुला. २२	१२ ०८	जुला. २३	११ ४८	नवं. २२	० २०	नवं. २४	३ ३१	मार्च २५	१० ४८	मार्च २६	१० ४२
अप्रै. ५	सू. उ.	अप्रै. ५	२० १९	जुला. २४	११ ११	जुला. २५	१० १८	नवं. २६	८ ३७	नवं. २७	११ ३६	अप्रै. २	१ ०३	अप्रै. २	२३ ३४
अप्रै. ९	सू. उ.	अप्रै. ९	२० २१												

सिद्धि योग
(सन् २०१२ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ २०१२ ई.	घं. मि.	समाप्त २०१२ ई.	घं. मि.
अप्रै. ७	२१ ५४	अप्रै. ८	सू. उ.
मई ५	८ ५६	मई ६	सू. उ.
मई १५	२२ ०३	मई १६	सू. उ.
मई २४	२० ४५	मई २५	सू. उ.
जून २	सू. उ.	जून २	१६ ३६
जून १२	सू. उ.	जून १३	सू. उ.
जून २१	सू. उ.	जून २२	४ १६
जुला. १०	सू. उ.	जुला. १०	१४ ३२
जुला. १९	सू. उ.	जुला. १९	१० ४६
जुला. ३०	३ ०१	जुला. ३०	सू. उ.
अग. २६	९ १७	अग. २७	सू. उ.
सितं. १५	३ ५२	सितं. १५	सू. उ.
सितं. २३	सू. उ.	सितं. २३	१३ ३१
अक्तू. ३	२२ २५	अक्तू. ४	सू. उ.
अक्तू. १२	१३ ५४	अक्तू. १३	सू. उ.
अक्तू. २२	१७ ३९	अक्तू. २३	सू. उ.
अक्तू. ३१	सू. उ.	नवं. १	सू. उ.
नवं. ९	सू. उ.	नवं. ९	२३ ०५
नवं. १९	सू. उ.	नवं. १९	२३ ४७
नवं. २८	सू. उ.	नवं. २८	१४ ४१
दिसं. ७	सू. उ.	दिसं. ७	७ ३१
दिसं. १७	सू. उ.	दिसं. १७	८ २६
(सन् २०१३ ई.)			
फर. २	१८ ४६	फर. ३	सू. उ.
फर. १३	२ ३७	फर. १३	सू. उ.

सिद्धि योग
(सन् २०१३ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ २०१३ ई.	घं. मि.	समाप्त २०१३ ई.	घं. मि.
फर. २१	२० २३	फर. २२	सू. उ.
मार्च २	सू. उ.	मार्च २	२३ १८
मार्च १२	१२ ०३	मार्च १३	सू. उ.
मार्च २१	सू. उ.	मार्च २२	सू. उ.
अप्रै. ९	सू. उ.	अप्रै. ९	२० २१

द्विपुष्कर योग
(सन् २०१२ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ	घं. मि.	समाप्त	घं. मि.
अप्रै. ७	२१ ०८	अप्रै. ७	२१ ५४
मई २२	१५ ४३	मई २३	सू. उ.
जुला. १६	४ ५८	जुला. १६	सू. उ.
अक्तू. ६	२१ ४७	अक्तू. ७	७ ४०
नवं. २०	सू. उ.	नवं. २०	८ २०
दिसं. १०	३ ४६	दिसं. १०	४ ३१
(सन् २०१३ ई.)			
जन. १३	१९ ०२	जन. १३	१९ १९
जन. २३	६ ५८	जन. २३	सू. उ.
फर. २	९ ३४	फर. २	१८ ४६
मार्च १९	सू. उ.	मार्च १९	९ ३९
अप्रै. ६	१६ २२	अप्रै. ६	१९ ४६

त्रिपुष्कर योग
(सन् २०१२ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ २०१२ ई.	घं. मि.	समाप्त २०१२ ई.	घं. मि.
अप्रै. १७	१४ ०९	अप्रै. १८	सू. उ.
अप्रै. २३	३ ३८	अप्रै. २३	सू. उ.
अप्रै. २८	सू. उ.	अप्रै. २८	१६ ४०
जून ११	३ ०३	जून ११	३ ४६
जून २६	६ २५	जून २६	२१ ४८
जून ३०	१२ ४१	जून ३०	२३ १६
अग. १४	१७ १९	अग. १४	२१ ३५
अग. १९	१८ १५	अग. १९	१८ ४०
अग. २८	७ ०२	अग. २८	२२ ४७
सितं. १	१९ १५	सितं. २	६ ११
अक्तू. १७	४ १२	अक्तू. १७	सू. उ.
अक्तू. २१	१८ २१	अक्तू. २१	२१ ४६
अक्तू. ३१	५ १९	अक्तू. ३१	सू. उ.
नवं. १०	१५ ४९	नवं. १०	२१ ५६
दिसं. २५	सू. उ.	दिसं. २५	८ ०३
दिसं. २९	१७ ५७	दिसं. ३०	८ ०६
(सन् २०१३ ई.)			
फर. १२	सू. उ.	फर. १२	९ १३
फर. १७	८ ३५	फर. १७	१२ ४६
फर. २७	१ ५८	फर. २७	सू. उ.
मार्च ३	१८ १७	मार्च ३	२२ ११

अमृतसिद्धि योग
(सन् २०१२ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ २०१२ ई.	घं. मि.	समाप्त २०१२ ई.	घं. मि.
(मार्च २३	१२ ३४	मार्च २४	सू. उ.)शु.
(अप्रै. २०	सू. उ.	अप्रै. २०	२१ ३१)शु.
(जून १८	२१ ५५	जून १९	सू. उ.)चं.
(जून २२	४ १६	जून २२	सू. उ.)गु.
(जुला. १५	३ १६	जुला. १५	सू. उ.)श.
(जुला. १६	सू. उ.	जुला. १७	सू. उ.)चं.
(जुला. १९	१० ४६	जुला. २०	सू. उ.)गु.
(अग. ८	१ ०५	अग. ८	सू. उ.)मं.
(अग. ११	९ ५३	अग. १२	सू. उ.)श.
(अग. १३	सू. उ.	अग. १३	१५ २१)चं.
(अग. १६	सू. उ.	अग. १६	१९ २१)गु.
(सितं. ४	९ २४	सितं. ५	सू. उ.)मं.
(सितं. ८	सू. उ.	सितं. ८	२० ५७)श.
(सितं. १७	१ ११	सितं. १७	सू. उ.)र.
(अक्तू. २	सू. उ.	अक्तू. २	१९ ३६)मं.
(अक्तू. १४	११ १५	अक्तू. १५	सू. उ.)र.
(अक्तू. १८	१ ४१	अक्तू. १८	सू. उ.)बु.
(नवं. ११	सू. उ.	नवं. ११	२० ०८)र.
(नवं. १४	१२ १३	नवं. १५	सू. उ.)बु.
(नवं. २४	३ ३१	नवं. २४	सू. उ.)शु.
(दिसं. १२	सू. उ.	दिसं. १२	२० ४८)बु.
(दिसं. २१	९ ४८	दिसं. २२	० ४४)शु.
(सन् २०१३ ई.)			
(जन. १८	सू. उ.	जन. १८	१९ २४)शु.
(मार्च १८	२२ ४८	मार्च १९	सू. उ.)चं.

श्रीमार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग (सं. 2069 वि.) का

आयुसाधन विशेषांक

लेखक एवम् सम्पादक – प्रियव्रत शर्मा

इस विशेषांक के नए विषय :–

विषय पृष्ठ

आयुनिर्णय विशेषांक भाग

योगज आयु

सं. 2069 वि. के श्रीमार्त्तण्ड पंचांग का

चिरप्रतीक्षित

यह आयुसाधन विशेषांक

इस वर्ष अन्य अपरिहार्य विषयों के समावेश के कारण स्थानाल्पता हो जाने से आयुसाधन–पद्धति का आवश्यक, प्रारम्भिक परिचय ही हम दे पाए हैं। इसका शेष समग्र भाग अगले वर्ष (सं. 2070 वि.) के पंचांग में अन्य ज्ञानवर्धक, महत्त्वपूर्ण अनेक लेखों के साथ दिया जाएगा। आयुसाधन की सुदीर्घ जटिल गणितप्रक्रियाओं को संक्षिप्ततम एवं सरलतम बना देने वाले अनेक मौलिक कोष्ठक भी आपको यहां मिलेंगे।

– प्रियव्रत शर्मा

******

प्रो. प्रियव्रत शर्मा की एक और अद्‌भुत कृति

ग्रहोदयास्तनिर्णय

सूर्य, चन्द्र आदि सभी ग्रहों के सूक्ष्म दैनिक उदयास्तकाल, चन्द्रदर्शन की तारीखें तथा मंगल आदि के लोप–दर्शन की तारीखें ज्ञात करने की सरलातिसरल प्रक्रिया इस पुस्तक में आप पाएंगे। प्राचीन एवम् नवीन ज्योतिर्गणित ग्रन्थों में उपलब्ध ग्रहों के दैनिक उदयास्त का काल तथा लोप–दर्शन का दिन जानने की जटिल गणितप्रक्रियाओं को लेखक ने स्वनिर्मित मौलिक सारणियों तथा शैली द्वारा आश्चर्यजनकरूप में सुबोध, सरल बना दिया है। अनेकों उदाहरणों द्वारा सभी गणितप्रक्रियाओं को पूरी तरह स्पष्ट किया गया है।

0° से 62° तक के प्रत्येक अक्षांश का दैनिक सूक्ष्म सूर्योदयास्तकाल 45 पृष्ठों की एक विशाल सारणी में दिया गया है।

गुरु और शुक्र के उदयास्त (लोप–दर्शन) की सन् 2001 से 3000 ई. तक के (एक हज़ार वर्षों के) लिए वेधसिद्ध सूक्ष्म, शुद्ध तारीखें इस पुस्तक की अनुपम विशेषता है। किस वर्ष में किस भारतीय अक्षांश पर गुरु का लोप–दर्शन, शुक्र का पश्चिमलोप– पूर्वदर्शन या पूर्वलोप–पश्चिमदर्शन किस तारीख को होगा; यह पुस्तक में दी गई विलक्षण सारणी पर दृष्टि डालते ही आप विद्युद्गति से जान लेंगे। इसे अतिशयोक्ति न समझें, यह बिल्कुल सच है। लेखक की प्रतिज्ञा है– ग्रहों के उदयास्त, लोप–दर्शन पर उनका यह प्रकाशन अपनी ही तरह का है।

पुस्तक अप्रैल, 2012 ई. तक प्रकाशित हो जाएगी, प्रतीक्षा कीजिए।

मूल्य Rs. 250/– + डाकव्यय Rs. 50/–

सम्पर्कसूत्र– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, 'अभिजित् प्रकाशन' कोठी नं. 59, सैक्टर–6, P.O. पंचकूला (हरियाणा)– 134 109, Phone: 0172-2565303

गुरु–शुक्र–लोप–दर्शनकाल का निर्णय उन्नतांशपद्धति से या कालांशपद्धति से ?

(सं. 2066 वि. के शुक्रपश्चिमोदय–तिथि में विवाद के सन्दर्भ में)

(क्षमा चाहते हैं– सं. 2066 का शुक्रपश्चिमोदय–तिथिसम्बन्धी विवाद शान्त हो गया था, लेकिन इस विवाद को पंजाब के इन समीक्ष्यमाण पंचांगकर्त्ता महोदय ने अपने सं. 2068 के पंचांग में पुनः चर्चा का विषय बनाया है। अतः उसका प्रतिवाद करना आवश्यक समझ कर हमें यहां लेखनी चलाने के लिए बाधित होना पड़ा है। तथापि– हमें विश्वास है, पाठकों का भी इससे कुछ ज्ञानवर्धन अवश्य होगा।)

वि. सं. 2066 के **'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग'** में शुक्र का पश्चिमदर्शन (पश्चिमोदय) 3 फरवरी, 2010 ई. को दिखाया गया था, जबकि हमारे ही प्रदेश (पंजाब) के अन्य एक मान्य पंचांगकार ने इसकी तारीख 8 फर. 2010 ई. लिखी थी, जिससे उस वर्ष फरवरी के प्रथम–द्वितीय सप्ताहों में विवाहादि मुहूर्त्तों के निर्धारणार्थ ज्योतिषियों एवं सामान्यजनों में दुविधावश भारी विक्षोभ देखने को मिला। हमने इस सम्बन्ध में एक प्रज्ञप्तिपत्र मुद्रित कर भ्रान्त ज्योतिषियों एवं जनता में इसे प्रसारित किया और स्पष्टीकरण दिया कि– हमारे पंचांग में दिखाई यह शुक्रपश्चिमदर्शन–तिथि सुपरीक्षित वैज्ञानिक पद्धति (**उन्नतांशपद्धति**) द्वारा निर्णीत होने से पूरी तरह विश्वसनीय है। इस प्रज्ञप्तिपत्र में हमने उन्नतांशपद्धति द्वारा शुक्रदर्शन की इस तिथि के साधन की पूरी गणितप्रक्रिया भी दी थी। हमने इस पंचांगकार महोदय से भी साग्रह यह अनुरोध किया था कि– वे भी इसी प्रकार पूरे गणितविन्यासपूर्वक सिद्ध करें कि– उनकी यह तिथि उपपत्तिसिद्ध है। लेकिन वे गणित द्वारा अपने मत की पुष्टि करने की जगह इसी बात की रट लगाते रहे कि– उनका मत भारतसरकार द्वारा प्रकाशित **राष्ट्रीय पञ्चांग** द्वारा समर्थित है। उन्होंने यह भी उद्घोषणा की, कि "राष्ट्रीय पंचांग **'कालांशपद्धति'** द्वारा गुरु–शुक्र के लोपदर्शन का निर्णय करता है। **'कालांशपद्धति'** से ही परिणाम यथार्थ मिलता है। इसीलिए मैं इस विषय में इस पंचांग द्वारा अनुसृत पद्धति का ही अनुसरण करता हूँ।" अपनी शुक्रपश्चिमोदयतिथि की शुद्धि के प्रमाण में इन पंचांगकार महाभाग ने ऐसे अन्य 8–10 पंचांगो को भी उद्धृत किया, जिनमें से अधिकतर ने तो **राष्ट्रीय पंचांग** की तिथि में ही चतुरता से दो–चार जोड़कर अपने पंचांगों में शुक्रोदय की तिथि लिख डाली थी। इसे हम गणितप्रक्रिया से प्रमाणित भी कर सकते हैं कि– इन पंचांगकारों ने शुक्रपश्चिमोदय–तिथि के निर्णयार्थ मूलतः गणित स्वयं बिल्कुल नहीं की थी। राष्ट्रीय पंचांगस्थ तिथि को ही कुछ इधर–उधर करके उस पर इन्होंने चतुरता से अपनी मोहर लगा दी।

इन पंचांगकार महोदय ने अपने सं. 2068 वि. के पंचांग में यह भी लिखा कि–'उन्नतांशपद्धति' को कुछ ' ज्ञात एवं अज्ञात ' कारणों से मान्यता नहीं मिल पाई, क्योंकि वैज्ञानिक परीक्षण इसे प्रमाणित नहीं कर पाए। इनके इस वक्तव्य से स्पष्ट है, इन्होंनें " Heliacal Rising and Setting of Planet " से सम्बद्ध नव्य सिद्धान्तों को शायद अस्पृश्य मान रखा है, अन्यथा पंचांगसम्पादन के व्यवसाय में परिपक्व आयुतक सुतरां व्यस्त रहने वाले ऐसे पंचांगकार से इसप्रकार का खगोलशास्त्रविरुद्ध वक्तव्य प्रत्याशित नहीं था। यहां दुःख की बात यह भी है कि– ये महोदय 'उन्नतांशपद्धति' की अमान्यता का कारण ' ज्ञात एवं अज्ञात ' बतलाते हैं। हैरानी की बात है, ये विद्वान् इस मत को अग्राह्य सिद्ध करने तो चले हैं, लेकिन यह मत अग्राह्य क्यों है, इसका कारण इन्हें ज्ञात भी है, अज्ञात भी। कितनी अस्पष्टवादिता इनके प्रतिपादन में है, आश्चर्य है। किसी भी सिद्धान्त–मत का प्रतिवाद किसी स्पष्ट परिभाषित कारण से ही तो किया जा सकता है। अनिश्चित, अपरिभाषित कारण तो अप्रमा (अयथार्थ ज्ञान) है। मेरा इन्हें परामर्श है– ज्योतिषशास्त्र के

नवाविष्कृत सिद्धान्तों का वे परिशीलन करें– ताकि हमारे प्राचीन सूर्यसिद्धान्त, सिद्धान्तशिरोमणि, **सिद्धान्ततत्त्व विवेक, ग्रह लाघव** आदि ग्रन्थों में चर्चित अनेक सिद्धान्तों में अपेक्षित अनेक संशोधनों से उनका कुछ परिचय हो। **कालिदास** की इस सूक्ति को वे ध्यान में रखें– 'पुराणमित्येव न साधु सर्वम्'।

लीजिए, अब हम इन पंचांगसम्पादक महोदय के इस स्वार्थसाधक कपोलकल्पित भ्रामक मन्तव्य कि– वैज्ञानिकों ने ' उन्नतांशपद्धति ' को मान्यता नहीं दी, को भी निरस्त किए देते हैं। नीचे हम खगोलशास्त्र के अन्तर्राष्ट्रीय वार्षिक प्रकाशन Nautical Almanac (Astronomical Ephemeris) के Explanation के अन्तर्गत **" Heliacal Rising and Setting of Planets "** शीर्षक विवरण को यहां उद्धृत कर रहे हैं, जो स्पष्ट करता है कि– पंचतारा ग्रहों (मं., बु., गु., शु., श.) के सूर्यकैन्द्रिक लोप–दर्शन की आकाशीय घटनाओं की तारीखें, जो Nautical Almanac में दी जाती हैं, उन्नतांशपद्धति पर ही आधारित हैं, जिसके अनुसार ग्रह की दृश्यादृश्यता का निर्णय सूर्योदय या सूर्यास्त के समय सूर्य की खमध्य से '90°+h' तुल्य दूरी अर्थात् सूर्य के खमध्य से इतने दृग्वृत्तीय अन्तर पर निर्भर करता है, यहां 'h' लुप्त या दृश्य होने जा रहे ग्रह का उन्नतांश (altitude) है। Nautical Almanac का यह उद्धरण देखिए–

Heliacal Rising and Setting of Planets

The planets Mercury to Saturn (as well as the Moon) remain invisible to the naked eye for some days at the time of conjunction with the Sun. This phenomenon of planet's invisibility due to its proximity to the Sun is known as combust or heliacal setting of the planet and it plays an important part in Indian Calendar. **The dates of heliacal setting and rising of the planets marking the period of invisibility have been Calculated assuming that the phenomenon occurs when, at the given station, the Sun attains a zenith distance of '90°+h' at the time when the zenith distance of the planet is 90° . The values of 'h' for different planets adopted for the purpose are as follows :-**

Mercury 10° (Direct) and 11° (Retrograde),Venus 6°, Mars 14°, Jupiter 8°.5 ⊕ and Saturn 12°

यह उपरोक्त उद्धरण इन भ्रान्त पंचांगकर्त्ता को ध्यान से पढ़ लेना चाहिए, जो इनके इस भ्रामक वक्तव्य को, कि विश्व के वैज्ञानिकों ने उन्नतांश–पद्धति को मान्यता नहीं दी है, अविमृश्य उपन्यस्त सिद्ध करता है। **यही नहीं भारत के सभी मूर्धन्य एतद्युगीय ज्योतिर्विदों ने भी कालांशपद्धति को निरुपपत्तिक बतलाते हुए इस विषय में उन्नतांश–पद्धति को ही अपनाने के लिए पंचांगकारों को प्रेरित किया है।** इस सन्दर्भ में इस पंचांगकार को **सर्वश्री वेंकटेश केतकर, सदाशिव आप्टे, बालशंकर दीक्षित, डॉ. गोरखप्रसाद, महावीरप्रसाद** आदि शीर्षस्थ खगोलशास्त्रियों की कृतियों का परिशीलन करने के लिए हमारा आत्मीयभाव से परामर्श है।

इन पंचांगकर्त्ता महोदय के **" मनस्यन्यत् वचस्यन्यत् "** वाले चरित्र को अनावृत्त करने वाले कुछ चुनिन्दा उदाहरण इनके अपने ही पंचांगों से हम यहां उदधृत कर रहे हैं, जिनमें **' वदतो व्याघात '** पदे–पदे देखा जा सकता है–

⊕ इस विवरण से यह स्पष्ट है कि–सूर्यास्त या सूर्योदय के समय जब शुक्र पश्चिमी या पूर्वी क्षितिज से 6 ° ऊपर उठा होगा (यानी उस समय उसके उन्नतांश 6 ° होंगे), तब वह लुप्त या दृश्य होता है। ध्यान रहे– **केतकर** ने यहां शुक्र के उन्नतांश 6°½ माने हैं, जिससे इन दोनों गणनाओं से प्राप्त परिणामों में दो–तीन दिन का अन्तर सम्भव है। गुरु के उन्नतांश भी केतकर ने 11 ° माने हैं। अतः यहां भी दो–तीन दिन का अन्तर सम्भव है।

(i) इन्होंने अपने सं. 2065 वि. के पंचांग में पृष्ठ 67 के 5–6 कॉलमों में लिखा है–

" पाठकों को सूचनार्थ निवेदन है कि– गतवर्ष (सं. 2064) के ' **पंचांग दिवाकर** ' (पृष्ठ 139) पर हमने शुक्रास्त लगभग 27 अप्रैल को लिखा था, शुक्रोदय लगभग 6 जुलाई, 2008 ई. को लिखा गया था.परन्तु सूक्ष्म **'उन्नतांशपद्धति'** के आधार पर **सटीकशुद्ध** तारीखें (30° एवं 31° अक्षांश पर) शुक्रास्त 3 मई को तथा शुक्रोदय (पश्चिम) तारीख 12 जुलाई (प्रातः 4^घं. –31^मि.) को होंगी ' – (सम्पादक)

पाठक देखें– सं 2065 में तो ये महोदय **'उन्नतांशपद्धति'** को **सटीकशुद्ध** लिख रहे हैं। एक ही वर्ष बाद सं 2066 के अपने ही पंचांग में ये इस पद्धति की विश्वसनीयता पर सन्देह प्रकट कर रहे हैं– कितनी विडम्बना है। **तथापि**- इनके उपरोक्त 'संशोधन–निवेदन' से यह तो स्पष्ट हो जाता है कि– ये महानुभाव संवत् 2066 वि. के पंचांग में शुक्रोदयतिथि के ज्ञापन में किसी अज्ञात कारणवश स्खलित हो गए। इन्हें वहां इस स्खलन का समर्थन आत्म हनन करके विवशतावश करना पड़ा, क्योंकि ऐसा न करने पर इन्हें आत्मसम्मान क्षत–विक्षत होता दीख पड़ रहा था। एक और रहस्य की बात मैं पाठकों को बतला देना चाहता हूं कि – ये पंचांगकार विगत आधी शताब्दी से भी अधिक वर्षों से गुरु, शुक्र के लोप–दर्शनकाल का निर्धारण निरपवादरूपेण **उन्नतांशपद्धति** से ही करते चले आ रहे हैं। उनके विगत पंचांगों में दी गई इन ग्रहों के लोप–दर्शन की तारीखों की हमारे **'श्रीमार्त्तण्डपंचांग'स्थ** तारीखों, जो उन्नतांशपद्धति द्वारा ही निर्णीत की गई हैं, से तुलना कर देखिए। आप देखेंगे– इस अवधि में इनका हमसे वहां कोई वैमत्य नहीं रहा। पाठक यह भी जान लें– 'उन्नतांशपद्धति' अपनाने से पहले ये पंचांगकर्त्ता कालांशपद्धति से ही गुरु–शुक्रोदयास्तकाल–निर्णय करते थे। जब अनेकदा ऐसी स्थिति आई, इनके पंचांग द्वारा निर्दिष्ट गुरु–शुक्रास्तोदयकाल में 10–12 दिनों तक का अन्तर जनता को प्रत्यक्ष दिखाई दिया, तब इन्हें 'उन्नतांशपद्धति' को अपनाना पड़ा। यहां प्रसंगवश पाठकों को यह भी अवगत करा दें– कालांशपद्धति की प्रक्रिया अत्यन्त संक्षिप्त, सरल है जबकि, 'उन्नतांशपद्धति' की प्रक्रिया अपेक्षाकृत कहीं अधिक विस्तृत एवं प्रयाससाध्य है।

(ii) सं. 2066 के अपने पंचांग में शुक्रपश्चिमोदय की जो तारीख (8 फरवरी, 2010 ई.) इन पंचांगकर्त्ता महाभाग ने दरसाई है, वह ' राष्ट्रीय पंचांग ' द्वारा दरसाई गई तारीख की ही नकल है। उसमें इन्होंने बस 2 दिन का अन्तर कर दिया है। अगर ये महानुभाव यह कहते हैं कि– ऐसा नहीं किया गया, **तब हम इन्हें सादर आमन्त्रित करते हैं, वे इस तारीख को कालांशपद्धति व उन्नतांशपद्धति में से किसी यथेच्छ एक पद्धति से भी गणितप्रक्रिया प्रदर्शनपुरस्सर सिद्ध कर दिखाएं।** इनका यह कहना कि, यह ता.(8 फरवरी, 2010 ई.) 'कालांशपद्धति ' से प्राप्त है, सर्वथा गलत है। शुक्रपश्चिमोदय के कालांश 10 हैं। जिसका अर्थ है, इस कालांशपद्धति अनुसार (8 फरवरी, 2010 ई.) सूर्यास्त के समय शुक्र 10 कालांश पूर्व की ओर होना चाहिए था। दूसरे सरल शब्दों में यह कह सकते हैं कि– इस दिन सूर्यास्त के $10^\circ \times 4 = 40$ मिनट बाद शुक्र अस्त होना चाहिए था। लेकिन गणित बतलाती है, इसदिन दिल्ली, जालन्धर आदि में सूर्यास्त के केवल 20 मिनट बाद ही शुक्रास्त हुआ ⊗ । इसका अभिप्राय है– इसदिन शुक्र सूर्य से केवल $\frac{20}{4} = 5^\circ$ कालांशान्तर पर ही था। ध्यान रहे– सं. 2066 वि. में शुक्र का सूर्य से दस कालांशतुल्य अन्तर तो लगभग 20 फरवरी, 2010 ई. को था, क्योंकि इस वर्ष (सं. 2066 वि. में) 20 फरवरी, 2010 ई. को ही दिल्ली, जालन्धर आदि में शुक्र सूर्यास्त के 40 मि. बाद अस्त हुआ।*

⊗ *8 फरवरी, 2010 ई. को जालन्धर में सूर्यास्त $18^h\ 06^m$ और शुक्रास्त $18^h\ 26^m$ पर हुआ था।*

* *20 फरवरी, 2010 ई. को I.S.T. अनुसार जालन्धर में सूर्यास्तकाल $18^h\ 17^m$ व शुक्रास्तकाल $18^h\ 59^m$ और दिल्ली में सूर्यास्त $18^h\ 11^m$ व शुक्रास्तकाल $18^h\ 52^m$ था।*

उपरोक्त यह गणितीय विवेचन स्पष्ट कर देता है, यह कहने वाला व्यक्ति, कि– 8 फरवरी, 2010 ई. को कालांशपद्धत्यनुसार शुक्रपश्चिमोदय हुआ, कालांशपद्धति की परिभाषा से सर्वथा अनभिज्ञ है। इन पंचांगकार महोदय को ज्ञात हो जाना चाहिए कि– गणितीय परिणामों को यथेच्छ तोड़ना–मरोड़ना बहुत खतरनाक है।

(iii) ऊपर हम यह बतला चुके हैं कि– ये पंचांगकार विगत 50 से भी अधिक वर्षों से गुरु–शुक्रास्तोदय–साधन में एकमात्र **'उन्नतांशपद्धति'** पर निर्भर रहे हैं, उसे ही ये प्रामाणिक मानते रहे हैं। सं. 2066 वि. में इस पद्धति से इनके शुक्रपश्चिमोदय की तिथि प्रमाणित नहीं हो सकी, जिससे इन्होंने अपनी इस तिथि को कालांशपद्धति का परिणाम बतलाकर अपनी अशुद्धि को छुपाने का व्यर्थ प्रयास किया, यह हम ऊपर दिखा चुके हैं।

अब एक और ऐसी हास्यास्पद बात हम इन पंचांगकार महाभाग के विषय में पाठकों को यहां बतलाने जा रहे हैं, जिससे पता चलेगा– ये पंचांगकार किसी के भी वफादार नहीं हैं– न कालांशपद्धति के न उन्नतांशपद्धति के और न ही राष्ट्रीय पंचांग के। सं. 2066 में अपने बचाव के लिए ये 'राष्ट्रीय पंचांग' की शरण में चले गए, इसे कालांशपद्धत्यनुसारी घोषित किया और अपने शुक्रपश्चिमोदय–काल को इस पंचांग के काल से मिलता–जुलता बनाकर, उसे इस पंचांग की छत्रच्छाया में शुद्ध सिद्ध करने का व्यर्थ प्रयत्न किया। तदनन्तर सं. 2068 वि. के अपने पंचांग में इन्होंने लगभग उन्नतांशपद्धत्यनुसारी शुक्रपश्चिमोदय की तारीख 2 अक्तूबर, 2011 घोषित कर दी और बेचारे ' राष्ट्रीय पंचांग ' द्वारा निर्दिष्ट इसकी (शुक्रपश्चिमोदय की) ता. 12 सितं. 2011 ई. की ओर इन्होंने देखा तक नहीं। यह कृतघ्नता नहीं तो और क्या है ? इस प्रसंग में हम इन 'कृतज्ञ' पंचांगकार महोदय से जानना चाहते हैं– आपके अपने आदर्शभूत 'राष्ट्रीय पंचांग' और आपके पंचांग की शुक्रपश्चिमोदय–तिथियों में 20 दिन का यह विकराल अन्तराल क्यों है ? क्या अब 'राष्ट्रीय पंचांग' अनाप्त हो गया ? इनसे दूसरा प्रश्न यह है– क्या आप 'राष्ट्रीय पंचांग' द्वारा घोषित तिथि (12 सितं., 2011 ई.) को कालांशपद्धत्यनुसारी सिद्ध कर सकते हैं ? क्योंकि आप अपने सं. 2068 वि. के ही पंचांग में इस 'राष्ट्रीय पंचांग' को कालांशपद्धत्यनुसारी 'प्रमाणित' कर इसे अनुसरणीय कह चुके हैं ?

इन उपरोक्त दोनों प्रश्नों के उत्तर गणितनिर्देशपूर्वक अपने आगामी (2069 या 2070 वि. वाले) पंचांग में अवश्य प्रकाशित कीजिए, ताकि एतत्सम्बद्ध वाद–विवाद से उत्पन्न भ्रान्तधारणाओं से पाठकगण मुक्त हो सकें।

ऊपर चर्चित ये पंचांगकार उपरिन्यस्त प्रश्नों के उत्तर दें या न दें, लेकिन हमारे इस विस्तृत विवेचन से पाठकों को इतना तो स्पष्ट संकेत अवश्य मिल गया होगा कि– ये महानुभाव हृदयेन तो मानते हैं, कि गुरु–शुक्रोदयास्त–साधन की प्रामाणिक एकमात्र प्रक्रिया **' उन्नतांशपद्धति '** ही है। लेकिन सं. 2066 वि. के शुक्रपश्चिमोदय–तिथि में घटित अपनी ग़लती को येन–केन–प्रकारेण ठीक सिद्ध करने के अनुचित प्रयास में ये बुरी तरह उलझ गए। अपनी ग़लती को सौजन्यपुरस्सर स्वीकार कर लेना शालीनता है, बुद्धिमत्ता भी– **बुद्धेः फलमनाग्रहः।**

समस्याएं और समाधान

लेखकः– प्रियव्रत शर्मा, कोठी नं. 59, सेक्टर–6 (अभिजित्) , पंचकूला–134 109

फलित एवं गणित (सिद्धांत) ज्योतिष से सम्बद्ध अपनी समस्याएं मुझे भेजिए। आवश्यक समझने पर डाक से उत्तर देने का भी मेरा पूरा प्रयास रहता है। लेकिन इसके लिए कृपया जवाबी पत्र न डालिए। यदि मुझे आपकी समस्या का उत्तर पत्र द्वारा देना होगा, मैं अपने व्यय पर ही दे दूंगा। मुझे प्रतिदिन अनेक पाठकों की समस्याएं पत्रों द्वारा प्राप्त होती हैं। सीमित समय आदि के कारण मैं प्रत्येक पाठक को पत्र द्वारा समस्याओं का समाधान भेजने के लिए किसी भी तरह बाधित नहीं होना चाहता ।

विशेष निर्देश– समस्या भेजने वाले को अपना पूरा साफ–साफ पता और फोन नं. दोनों अनिवार्यतः भेजने होंगे। पता एवं फोन नं. के बिना प्राप्त समस्याओं के समाधान न तो पंचांग में प्रकाशित होंगे और न ही उनका उत्तर डाक से दिया जा सकेगा– यह ध्यान रखें।

चार से अधिक समस्याएं न भेजें।

ध्यान दें– मैं ज्योतिष का व्यवसाय नहीं करता हूँ। अतः अपनी ज्योतिषसम्बन्धी व्यक्तिगत समस्याओं के लिए मुझे कृपया पत्र न लिखें, और न ही इसके लिए मुझे कोई फीस वगैरह भेजिए। इस सम्बन्ध में मैं किसी से मिलता भी नहीं हूँ। कृपया कर्मकाण्डसम्बन्धी समस्याएं मुझे मत भेजिए। यह मेरा विषय नहीं है।

–प्रियव्रत शर्मा

यहां इन समस्याओं के समाधान पढ़िए !

- ❖ भद्रा के परिहारवाक्यों का प्रवृत्तिक्षेत्र क्या है ?
- ❖ क्या माता–पिता के विवाह–मास आदि में पुत्र–पुत्री का विवाह वर्जित है ?
- ❖ वधूप्रवेश रात्रि में शुभ है या दिन में ?
- ❖ क्या गण्डमूलदोष केवल कन्याओं के लिए ही है ?
- ❖ श्रीहनुमान् जयन्ती चैत्र में मनाई जाए या कार्तिक में ?
- ❖ लालकिताब का भारतीय ज्योतिषशास्त्र से क्या कुछ सम्बन्ध है ?
- ❖ क्या स्त्रियों को शिवपूजन करना निषिद्ध है ?
- ❖ गुरु–शुक्र के अस्तकाल में क्या गोदानादि व श्रीमद्भागवत–सप्ताह–श्रवण आदि किए जा सकते हैं ?
- ❖ किसी नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर कैसे ज्ञात करें ?
- ❖ महापात (क्रान्तिसाम्य) की प्रारम्भ–समाप्ति से क्या अभिप्राय है ?
- ❖ Computer से लग्नसाधन में स्था. म. का. का और प्राच्यप्रणाली से लग्नसाधन में स्टैं. टा. का ही प्रयोग करते हैं; दोनों में से किसे ठीक मानें ?
- ❖ सं. 2067 की मकरसंक्रान्ति के पुण्यकाल में पंचांग एकमत क्यों नहीं थे ?

- ❖ 'पञ्चसूना' बलि का अभिप्राय क्या है ?
- ❖ 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' की अक्षांशादि सारणी में दिए गए नगरों के स्टैं.अन्तर क्या उनके सूर्योदयास्तकालों का अन्तर है ?
- ❖ क्या किसी का महालय (आश्विन कृष्ण वाला) श्राद्ध, उसके वार्षिक श्राद्ध से पहले किया जा सकता है ?
- ❖ क्या ग्रहण के सूतक में मन्दिर बन्द करना शास्त्रोचित है ?
- ❖ नाड़ीदोष के "राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षम्......." आदि तीन परिहारों के स्थलों पर क्या नाड़ीपादवेध भी विचारणीय है ?
- ❖ क्या क्षयतिथि में उस तिथि के व्रत का आरम्भ व उद्यापन वर्जित है ?
- ❖ क्या 'ऋषिपंचमी' व्रत केवल ब्राह्मणों और 'चन्द्रषष्ठी' केवल क्षत्रियों के ही लिए है ?
- ❖ क्या अनुकूल रत्न प्रत्येक स्थिति में पहना जा सकता है ?
- ❖ गृहक्षेत्र की पूर्वादि दिशाओं का निर्धारण केसे करें ?
- ❖ क्या गृह के मुख्य(प्रवेश)द्वार को पूर्व–दिशास्थ मानकर तदनुसार गृहक्षेत्र की अन्य दिशाओं का निर्धारण किया जा सकता है ?
- ❖ क्या बरामदा, बालकनी के क्षेत्र को गृहक्षेत्र का भाग माना जाए ?
- ❖ द्वितीया तिथि को मुहूर्त्तग्रन्थों में सिद्धा (शुभा) भी कहा है, विषा (कुफला) भी; किसे प्रामाणिक माना जाए ?
- ❖ संक्रान्ति का पुण्यकाल 32 घटी क्योंकर माना जाता है ?
- ❖ विषुवदिन किसे कहते हैं, विषुवसंक्रान्ति का पुण्यकाल कितना होता है ?
- ❖ लम्बन किसे कहते हैं, इसका चन्द्रोदयास्त पर क्या प्रभाव पड़ता है ?
- ❖ साम्पातिक काल किसे कहते हैं ?
- ❖ क्या क्षीणचन्द्र–क्रूर–युति–वेध के काल में भी मुहूर्त्त हो सकते हैं ?

*****

समस्या– पंजाब के एक अन्य पंचांगकार ने सं. 2068 वि. में 13 अगस्त, 2011 ई. को भद्राकाल में ही भद्रामुख को छोड़ **रक्षाबंधन** का निर्णय अपने पंचांग में दिया था, उनका यह कहना था कि– इस भद्रा का वास पाताल में होने के कारण भी इसका कोई दोष नहीं है। लेकिन आपके **श्रीमार्त्तण्ड पंचांग एवं बनारस** आदि के अन्य सभी भारतीय पंचांगों में रक्षाबंधनकाल भद्रासमाप्ति पर ही लिखा था। धर्मशास्त्र में तो भद्रा में रक्षाबंधन का फल बहुत बुरा लिखा है। इस बारे आपकी क्या प्रतिक्रिया है ?

दैवज्ञ पं. कृष्ण कुमार कौण्डिन्य,
दाना रोड़, पो. रतनगढ़, चूरू (राज.)।

समाधान– ये पंचांगकार भद्रा के परिहारों का सर्वत्र उन्मुक्त प्रयोग करने पर तुले हैं– यह आश्चर्य की बात है, जबकि शुभकृत्यों में भद्रा का दोष प्रमुख माना गया है। भद्रा में किए गए शुभकृत्यों का फल नितान्त भयावह लिखा है– " **विष्ट्याख्योऽयं महादोषः कथितोऽत्र समस्तगः, तदानीं कृतसत्कर्म कर्त्रा सह विनश्यति** "।

भद्रा के दोष के परिहार मुख, पुच्छभाग तथा आकाश, पाताल, भूमिगत स्थिति की दृष्टि से अवश्य मिलते हैं, लेकिन शास्त्रकारों ने इन परिहारों को विशेष स्थिति (आपातकाल) में ही स्वीकारने के लिए सावधान किया है। पीयूषधाराकार ने भद्रा के इन परिहारों के बारे में स्पष्ट लिखा है कि– यदि भद्रारहित काल की प्रतीक्षा कर पाना संभव हो तो सर्वथा भद्रारहित काल में ही शुभकृत्य करना चाहिए। यदि आपातस्थिति में भद्रारहित काल की प्रतीक्षा कर पाना संभव न हो तभी भद्रापरिहार का आश्रय लेना चाहिए, क्योंकि जहां शुभकाल सुलभ हो, वहां अशुभकाल में शुभकृत्य करना न्यायसंगत नहीं है–

" तस्मात् शुभकार्याणां भद्रारूपदुष्टदिन–व्यतिरिक्तकाल–प्रतीक्षायोग्यत्वे तदैव कार्यम् न दुष्टदिने, 'अबाधेनोपपत्तौ बाधो न न्याय्यः ' इति न्यायाद् वचनस्य निषेध एव तात्पर्यात्। अवश्यकर्तव्यस्य तु शुभकर्मणः कालान्तर–प्रतीक्षामसहमानस्य एवमादि परिहारमाश्रित्य दुष्टदिने कृतिरुचितैव।" – (पीयूषधारा, मु. चिं.– 1–44)

ध्यान रहे– हमारे **कालमाधव, निर्णयसिंधु, धर्मसिंधु, पुरुषार्थचिंतामणि, तिथिनिर्णय** आदि सभी व्रत–पर्वनिर्णायक ग्रन्थों में रक्षाबंधन को सर्वथा भद्रारहित काल में ही मनाने का सुदृढ़ निर्देश है। इसके लिए भद्रा के किसी भी परिहारपालन की उन्होंने अनुमति नहीं दी है। इन सभी ने एकस्वर से यही कहा है कि– रक्षाबंधन सर्वथा भद्रारहित काल में ही किया जाए। **पुरुषार्थचिंतामणिकार** तो कहते हैं– यदि भद्रा सारा दिन विद्यमान रहे तो भद्रासमाप्ति पर प्रदोष में रक्षाबंधन किया जाए– **" भद्रान्ते प्रदोषयामेऽनुष्ठानम् "।**

धर्मसिंधु-कार भी कहता है–

"भद्रारहिते प्रदोषादिकाले रक्षाबंधनं कार्यम्"।

निर्णयामृत कार तो किसी भी स्थिति में भद्राकाल को रक्षाबंधन के लिए स्वीकार नहीं करते। वे तो कहते हैं– भद्रारहित काल पूरा दिन न मिले तो भद्रासमाप्ति पर रात्रि में भी रक्षाबंधन करना चाहिए–

" भद्रासत्त्वे तु रात्रावपि तदन्ते (रक्षाबंधनं) कुर्यात् "।

उपरोक्त विवेचन क्या इस बात की पुष्टि नहीं करता कि– रक्षाबंधन में भद्रा का कोई भी परिहार ग्राह्य नहीं है ?

सं. 2068 वि. का **काशी–हिन्दू–विश्वविद्यालय** का सुप्रसिद्ध ' विश्व पंचांग ' देखिए– इसमें भी श्रावण–शुक्ल–15–शनिवार (13 अगस्त, 2011 ई.) को लिखा है– **" भद्रान्ते रक्षाबंधनम् "।** बनारस का एक और प्रसिद्ध ' हृषीकेश पंचांग ' भी इसी दिन लिखता है– **" भद्रा के बाद रक्षाबंधन "** । केवल ये पंचांग ही नहीं, भारत के प्रत्येक पंचांग में इस दिन भद्रोपरांत ही रक्षाबंधन लिखा है, लेकिन ये पंजाबी पंचांगकार तो भद्रा के परिहार का यहां भी प्रयोग करने लगे हैं– **"मुरारेः तृतीयः पन्थाः "।**

यह ध्यान देने योग्य है– इन पंचांगकार महाशय के कुछ वर्ष पूर्व के पंचांग उठाकर देखिए– उनमें इन्होंने भी सर्वत्र रक्षाबन्धन भद्रोपरांत ही लिखा है। वहां कहीं भी भद्रापरिहार की बात इन्होंने नहीं की है।

प्रसंगवश इन पंचांगकार महोदय की ऐसी स्वेच्छाचारिता के बारे में यहां मैं कुछ और भी कह देना चाहता हूँ –

इनके पंचांग में अब कुछ ही वर्षों से विवाहादि मंगलकृत्यों के मुहूर्तों में भी भद्रा के परिहारों का धड़ल्ले से प्रयोग किया जाने लगा है, जबकि इन्होंने अपने पहले पंचांगों में भद्रा को आमूलचूड़ दोषकारक मानकर मुहूर्तों में उसे सर्वथा वर्जित करने की परम्परा को अक्षुण्ण रखा है। आश्चर्य और दुःख की बात है– जिस भद्रा महादोष के आद्योपान्त काल को भारत के शत–प्रतिशत पंचांगकार मंगलकृत्यों में परमसावधानी पूर्वक शताब्दियों से विशेषेण त्याज्य मानते चले आ रहे हैं, उसे ये पंचांगकार परिहारवाक्यों से **'शुद्ध'** सिद्ध करके मुहूर्तों की संख्या बढ़ाने में लगे हैं। इन्हें कुछ भ्रान्त धारणा है कि– जिस पंचांग में विवाहादि मुहूर्तों की भरमार होती है, वह पंचांग अधिक लोकप्रिय होता है और अधिक बिकता है। जो दैवज्ञ, पाठक इस पंचांग में दिए गए विवाहादि मुहूर्तों की भारी संख्या से आकृष्ट हैं, मैं उनका ध्यान भारत के अन्य प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध, प्रामाणिक पंचांगों में दिए जा रहे विवाहादि मुहूर्तों की ओर ले जाना चाहता हूँ। क्या भारत के इन शत–प्रतिशत पंचांगों के धर्मशास्त्र, मुहूर्तशास्त्र एवं खगोल के पारंगत सम्पादक भद्रा के परिहारवाक्यों से

परिचित नहीं हैं ? क्या बात है– ये सभी सैकड़ों भारतीय पंचांगकार शताब्दियों से भद्रा जैसे महादोष से विवाहादि इन मुहूर्तों को सर्वथा अस्पृष्ट रखते चले आ रहे हैं ? भद्रा के परिहारवाक्यों को क्या कारण है, मुहूर्त्तशोधन में वे सर्वथा अप्रयोज्य समझते हैं ? इस समीक्ष्यमाण पंजाबी पंचांग के अनुरागी दैवज्ञों को इस पंचांग के सम्पादक महोदय से उत्तर मांगना चाहिए कि– मुहूर्त्तसाधन–प्रसंग में भद्रा के परिहारवाक्यों से उनका इतना लगाव क्यों है, जबकि भारत के अन्य निरपवाद रूप से सभी (A to Z) पंचांगकार इन्हें इस प्रसंग में बिल्कुल मान्यता नहीं देते ?

एक और बात अन्त में यहां कह देना ज़रूरी समझता हूँ– इस विवेच्यमान पंजाबी पंचांग का पुराना Record उठाइए। आप देखेंगे– वहां किसी भी वर्ष के विवाहादि किसी भी मुहूर्त्त में भद्रा के परिहार का प्रयोग इन्होंने बिल्कुल नहीं किया है। वहां सर्वत्र भद्रा को सर्वथा अशुद्ध मानकर, उसे सभी स्थितियों में आमूलचूड़ त्याज्य मानकर सभी मुहूर्त्त लगाए गए हैं। क्या कारण है– भद्रा के परिहारवाक्यों पर अब इनका इतना अनुराग अकस्मात् जाग उठा है।

समस्या (i) **पंजाबी लोगों में आम धारणा है कि– जिस मास में माता–पिता का विवाह हुआ हो, उस मास में पुत्र या पुत्री का विवाह नहीं करना चाहिए। क्या यह धारणा शास्त्रीय है ?**

(ii) वधूप्रवेश रात्रि में शुभ माना जाता है या दिन में ?

(iii) क्या गण्डमूल का दोष केवल लड़की के लिए ही है, लड़के के लिए नहीं ?

पं. चमनलाल शर्मा,
गांव मझयारी, पो. भ्यूंखरी, सोलन (हि.प्र.)।

समाधान– (i) यह धारणा अशास्त्रीय है। हां, आद्यगर्भोत्पन्न जातक का विवाह उसके जन्ममास, जन्मनक्षत्र और जन्मतिथि में ज़रूर निषिद्ध है–

न जन्ममासे जन्मर्क्षे न जन्मदिवसेऽपि वा।
आद्यगर्भसुतस्याथ दुहितुर्वा करग्रहः।। – (*नारद*)

पंजाबी लोगों में प्रचलित यह धारणा इसी शास्त्रीय निर्णय का व्यर्थ विस्तार है।

(ii) वधूप्रवेश रात्रि में ही शुभ माना गया है–

वधूप्रवेशो न दिवा प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि प्रशस्तः।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात् त्रिविधः प्रवेशः।। –(*स्मृत्यर्थतत्त्व*)

रात्रि के समय स्थिरलग्न एवं स्थिरनवांश में वधूप्रवेश शुभ माना गया है।

(iii) गण्डान्त (गण्डमूल या अभुक्तमूल) में उत्पन्न जातक लड़का हो या लड़की– दोनों समानरूप से अशुभ माने गए हैं। नारद का इस बारे यह वाक्य है–

यो ज्येष्ठा–मूलयोरन्तरालप्रहरजः शिशुः।
अभुक्तमूलजः सार्प–मघा–नक्षत्रयोरपि।। – (*नारद*)

यहां प्रयुक्त **'शिशु'** शब्द सामान्य–लिंगी (Common Gender) है, जो लड़का और लड़की–दोनों के लिए प्रयोग में आता है।

अपि च– नारद का यह एक और वाक्य है, जिसमें गण्डान्त में जन्म का दोष– दोनों के लिए स्पष्ट लिखा है। देखिए–

अभुक्तमूलजं पुत्रं पुत्रीमपि परित्यजेत्।
अथवाब्दाष्टकं तातः तन्मुखं नावलोकयेत्।। – (*नारद*)

हां, एक वाक्य ऐसा भी मिलता है, जिसमें गण्डान्तदोष केवल कन्या के लिए ही लिखा है–

मूलजा श्वशुरं हन्ति व्यालजा च तदंगनाम्।
ऐन्द्री पत्यग्रजं हन्ति देवरन्तु द्विदेवजा।।

इस पद्य को **नारद** के वाक्य के रूप में कुछ लोग उद्धृत करते हैं, जबकि **नारदसंहिता** में यह उपलब्ध नहीं है। **अपि च**– उपरोक्त नारदवाक्य (" **अभुक्तमूलजं पुत्रम्.........** ") से इसका विरोध भी है। **नारद** के इस प्रक्षिप्त वाक्य के विपक्ष में अन्य अनेक वाक्य मुहूर्त्तग्रन्थों, संहिताओं में मिलते हैं, जो गण्डमूल में उत्पन्न सुत को भी समान रूप से अशुभ बतलाते हैं। **वसिष्ठ** का यह वाक्य स्पष्ट कहता है कि– अभुक्तमूल में उत्पन्न लड़की हो या लड़का– दोनों अशुभ हैं–

भुजंग–पौरन्दर–पौष्णभानां तदग्रभाणाञ्च यदन्तरालम्।
अभुक्तमूलं प्रहर–प्रमाणं त्यजेत्सुतं तत्र भवां सुताञ्च।। – (*वसिष्ठ*)

यहां **'त्यजेत्सुतं तत्र भवां सुताञ्च'** इस वाक्य से सुस्पष्ट है, **वसिष्ठ** उस प्रचलित भ्रामक मत का विरोध कर रहे हैं, जो गण्डमूलोत्पन्न केवल सुता को ही कुफला बतलाते हैं।

भारतीय जातक, मुहूर्त्त, संहिताग्रन्थों में अनेकत्र स्त्रीजातक के प्रति ऐसे भेदभावभरे फलादेश मिलते हैं। मिलान में राक्षसवर्णा कन्या को राक्षसवर्ण वर से अधिक दोषकारक माना गया है। कन्या के वैधव्ययोग की शान्ति (विष्णुप्रतिमा–विवाह आदि) को अनिवार्य बतलाया है, जबकि वैधुर्ययोग वाले वर के वैधुर्ययोगजन्य कुफल की शान्ति का विधान ग्रन्थों में लगभग दिखाई ही नहीं देता। विषकन्या योग की कल्पना भी इस भेदभाव का ही ज्वलन्त उदाहरण है। स्त्रीजातक के प्रति इसी भेदभाव–परम्परा के प्रभाव में गण्डान्तजन्या कन्या को ही कुछ वाक्य दुष्टफला कहते हैं, लेकिन **वसिष्ठ** आदि ने इस परम्परा का प्रतिवाद किया है।

समस्या (i) श्रीहनुमान् जयन्ती चैत्र शुक्ल में मनाई जाए या कार्तिक कृष्ण में ?

(ii) आजकल प्रचलित 'लालकिताब' का क्या हमारे भारतीय ज्योतिषशास्त्र से कोई सम्बन्ध है ?

श्री सुनीलकुमार शर्मा,
मु. पो. बन्धड़ा, अलवर (राज.)।

समाधान–(i) परम्परया दक्षिण भारत में यह (हनुमान् जयन्ती) पर्व चैत्री पूर्णिमा को और उत्तर भारत में कार्तिक–कृष्ण–चतुर्दशी को मनाया जाता है।

अनेक और भी व्रत हैं, जिन्हें विभिन्न प्रान्तों में स्व–स्वपरम्परानुसार विभिन्न मासतिथियों में मनाया जाता है। हमारे व्रत–पर्व–निर्णायक ग्रन्थों में उनका प्रान्त–भेदानुसार निर्देश भी किया रहता है।

(ii) **'लालकिताब'** का भारतीय ज्योतिषशास्त्र से कोई संबंध नहीं है। जैसा कि मुझे ज्ञात है–पश्चिमी पाकिस्तान (तात्कालिक भारत) के किसी पंजाबी व्यक्ति की यह उर्दू में लिखी रचना है। शायद यह 20वीं सदी के उत्तरार्द्ध में रची गई। उसके किसी भी सिद्धान्त, नियम का भारतीय ज्योतिष से कोई दूर का भी संबंध नहीं है, जिससे भारतीय ज्योतिषानुसारी भविष्यवाणी आदि से इस लाल किताबानुसारी भविष्यवाणी आदि का कोई समन्वय बिल्कुल नहीं बैठता। **फलित–साहित्य में इस प्रकार परस्पर वैमत्य रखने वाले अनेक सिद्धान्तों का जमघट फलादेश की यथार्थता पर जनसामान्य की अश्रद्धा का बहुत बड़ा कारण है, जो हमारे भारतीय फलित–साहित्य में पदे–पदे उपलब्ध है।**

समस्या– क्या स्त्रियों को शिवलिंगपूजन नहीं करना चाहिए ?

कु. निधि शर्मा,
वार्ड नं. 8, नालागढ़ (हि.प्र.)।

समाधान– ऐसी बात नहीं है। शास्त्रकारों ने स्त्री, क्षत्रिय, वैश्य, अनुपनीत व्यक्ति, पतित तथा शूद्र को शिवलिंग तथा विष्णुप्रतिमा के स्पर्श का निषेध लिखा है, इनकी पूजा का नहीं। 'स्कन्दपुराण' के ये वाक्य देखिए, जो स्पष्टतः कहते हैं कि– स्त्री आदि को विष्णुप्रतिमा (शालग्राम) तथा शिवलिंग का स्पर्श करना सर्वथा निषिद्ध है। इन स्कन्दवाक्यों का यह अर्थ कदापि नहीं है कि– इन्हें इनकी पूजा भी नहीं करनी चाहिए। लीजिए, ये वाक्य ध्यान से पढ़िए–

शूद्रो वाऽनुपनीतो वा स्त्रियो वा पतितोऽपि वा।
केशवं वा शिवं वापि स्पृष्ट्वा नरकमश्नुते।।
ब्राह्मण्यपि हरं विष्णुं न स्पृशेत् श्रेय इच्छती।
सनाथा मृतनाथा वा तस्या नास्तीह निष्कृतिः।।
स्त्रीणामनुपनीतानां शूद्राणां च जनेश्वर।
स्पर्शने नाधिकारोऽस्ति विष्णोर्वा शंकरस्य च।। – (*स्कन्दपुराण*)

इन स्कन्दवाक्यों को उद्धृत कर निर्णयसिन्धुकार ने भी निर्णय दिया है कि– स्त्री आदि द्वारा विष्णु, शिव के स्पर्शमात्र का निषेध है, पूजा का नहीं–

"स्पर्शरहिता पूजा तु तयोः भवत्येव।"– (*निर्णयसिंधु*)

[अर्थात्– इनकी (शिव–विष्णु की) स्पर्शरहित पूजा तो स्त्री आदि द्वारा निश्चित रूप से की जा सकती है।]

समस्या (i) **गुरु और शुक्र के अस्तकाल में महादानादि तथा काम्यप्रयोग का निषेध है। पौराणिक कथाश्रवण, जो एकप्रकार का काम्यप्रयोग ही है, क्या अस्त में वर्जित नहीं होना चाहिए ? प्रथमबार तीर्थयात्रा और देवदर्शन भी गुरु–शुक्रास्त में वर्जित है, लेकिन अब कुछ लोग इसे गुरु–शुक्रास्त में वर्जित नहीं करते, क्या यह शास्त्रोल्लंघन नहीं है ?**

(ii) **आपके पंचांग (श्रीमार्त्तण्ड पंचांग) में देश एवं विदेश के नगरों के जो स्टैंडर्ड अन्तर दिए गए हैं, वे किस स्थान को केन्द्रबिन्दु मानकर निर्धारित किए गए हैं ?**

पं. डिके राम शर्मा,
मु. तरौर, पो. सेगली, मण्डी, (हि. प्र.)।

समाधान–(i) अधिक (मल) मास में वर्ज्य अनुष्ठान गुरु–शुक्रास्तकाल में भी वर्ज्य माने गए हैं–

यन्मलमासे वर्ज्यमुक्तं तद गुरु–शुक्रास्तकालेऽपि ज्ञेयम्।– (*निर्णयसिन्धु*)

गुरु–शुक्रास्त और अधिकमास के काल में काम्य (पुत्रप्राप्ति, दौर्भाग्यनाशन आदि इच्छाओं की पूर्ति के लिए किए जा रहे पुत्रेष्टि यज्ञादि) अनुष्ठानों का विधान निषिद्ध है– 'न कुर्यादधिके मासे काम्यं कर्म कदाचन।' – (*प्रजापति*)

धर्मशास्त्रकारों का प्रतिपादन है कि– अनन्यगतिक (जिन्हें कालान्तर में करना संभव नहीं है, जिन्हें तत्काल करना आवश्यक है, ऐसे) कर्म और नित्य (सन्ध्या, वन्दन, अग्निहोत्रादि) कर्म तथा नैमित्तिक (ग्रहण–संक्रान्त्यादि कालिक स्नान–दान–जपादि)कर्म तो गुरु–शुक्रास्त एवं मलमासकाल में करने ही चाहिएं–

अनन्यगतिकं नित्यं कुर्यान्नैमित्तिकं तथा।
अपि च–
अनन्यगतिकं नित्यमग्निहोत्रादि न त्यजेत्। – (*माधव*)

इससे निष्कर्ष निकलता है कि– मरणासन्न व्यक्ति द्वारा गोदान, श्रीमदभागवत–सप्ताहश्रवणादि गुरु–

शुक्रास्तकाल, अधिकमास में करना शास्त्रानुमत है, क्योंकि ये विधान इस स्थिति में अनन्यगतिक हैं। गुरु–शुक्रास्तकाल, अधिक–मासकाल की समाप्तिपर्यन्त या बाद तक मरणासन्न व्यक्ति जीवित रहेगा या नहीं– यह जान सकना असम्भव होता है, अतः इन्हें कालान्तर में करना अर्थहीन हो सकता है।

लेकिन गुरु–शुक्रास्त व अधिकमासकाल में ईश्वर–प्रीत्यर्थ श्रीमद्भागवत–सप्ताह, पुराणश्रवण तथा गोदानादि करना तो शास्त्रविहित है, क्योंकि ये अनुष्ठान किसी लौकिक कामना (पुत्र–धनप्राप्ति आदि इच्छाओं) से प्रेरित (काम्य) नहीं हैं।

गुरु–शुक्रास्त, मलमास में गया–गोदावरी के बिना किसी भी तीर्थ या देव का कालान्तर में शक्य प्रथमदर्शन भी वर्जित है। कुछ लोग इन धर्मशास्त्रीय निर्देशों का पालन नहीं करते, यह स्पष्ट शास्त्रोल्लंघन है।

(ii) स्थानीय मध्यमकाल और तत्क्षेत्रीय स्टैंडर्ड मेरिडियन के मध्यमकाल का अन्तर स्टैंडर्ड अन्तर कहलाता है। किसी देश/क्षेत्र की स्टैंडर्ड मेरिडियन, उस देश/क्षेत्र के लगभग मध्य या पार्श्व से गुज़रने वाली रेखांशरेखा (Longitude line)से कोई नगर/ग्राम जितने मिनट–सेकण्ड पूर्व या पश्चिम में स्थित है, वही उस नगर/ग्राम का स्टैंडर्ड अन्तर है। (विशेष स्पष्टीकरण के लिए मेरी पुस्तक 'विश्वलग्न सारणी' का द्वितीय प्रकरण देखें।)

समस्या– महापात (क्रान्तिसाम्य) के स्पर्श और मोक्ष की उपपत्ति क्या है ?

श्री जयराज गुप्ता,
आदर्श कॉलोनी, खेडली फाटक, कोटा (राज.)।

समाधान– ग्रह के बिम्ब का केन्द्र विषुवद्वृत्त (नाड़ीवृत्त) से उत्तर या दक्षिण में जितने अंशादि हटा रहता है, उसे उस ग्रह की **क्रान्ति** कहा जाता है। पंचांगों में दी गई ग्रहों की क्रान्ति ग्रहों के बिम्बकेन्द्रों की ही क्रान्ति है। लेकिन सूर्य और चन्द्र के बिम्ब मध्यममानेन लगभग 32–32 कला के हैं, अतः उनके बिंबों के प्रत्येक भाग (कलादि) की क्रान्ति भिन्न–भिन्न होती है। इसलिए जब चन्द्रबिम्ब के पूर्वी भाग (छोर) की क्रान्ति सूर्यबिम्ब के पश्चिमी भाग (छोर) की क्रान्ति के समान होती है, तब दोनों (सूर्य–चन्द्र) की क्रान्तियों में समानता (क्रान्तिसाम्य) का प्रारम्भ माना जाता है और जब पूर्व की ओर द्रुतगति (सूर्यगति से अधिकगति) से चलते हुए चन्द्रबिम्ब के पश्चिमी भाग की क्रान्ति सूर्यबिम्ब के पूर्वीभाग की क्रान्ति के बराबर हो जाती है, तब **क्रान्तिसाम्य** समाप्त हो जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि– सूर्य और चन्द्र के बिम्बों के विभिन्न भागों की क्रान्तियां जितने समय तक समान रहती हैं, उतनी समयावधि को '**क्रान्तिसाम्य (महापात) काल**' कहा जाता है, जो शुभकृत्यों में सर्वथा वर्जित माना गया है।

महापात की अवधि कभी–कभी तो 46 घण्टों तक की भी हो जाती है, जो इन दोनों (सूर्य–चन्द्र) की परमक्रान्तियों के आसन्न घटित हुआ करती है।

ध्यान दें– उपरोक्त महापात–विवेचन में कई जटिल प्रतिपाद्यों को उपेक्षित किया गया है।

समस्या– Computer से लग्नसाधनप्रक्रिया में जन्मकालिक स्टैं. टा. में स्टैं. अन्तर जोड़ा या घटाया जाता है, लेकिन प्राचीन पद्धति से लग्नसाधनप्रक्रिया में तो ऐसा नहीं करते। वहां तो जन्मकालीन स्टैं. टा. में से सूर्योदय घटाकर, इष्ट बनाकर लग्न स्पष्ट किया जाता है। यहां कौन–सी प्रक्रिया ठीक है ?

पं. रामदास शर्मा, ज्योतिर्विद्,
खिज़राबाद (मोहाली), पं.।

समाधान– लग्नसाधन की दो प्रचलित प्रक्रियाएं हैं। एक प्रक्रिया में इष्टदिवसीय सूर्योदयादिष्ट काल का प्रयोग होता है। यह लग्नसाधन की प्राचीन परम्परागत प्रक्रिया है। यहां सूर्योदयादिष्ट काल जानने के लिए जातक के जन्मकालीन स्टैं. टा. और जन्मदिवसीय स्थानीय सूर्योदय के स्टैं. टा. का अन्तर किया जाता है। इस प्रकार इस प्रक्रिया में स्टैं. टा. का ही प्रयोग होता है। **दूसरी प्रक्रिया,** जो नवीन है, में साम्पातिक

काल का प्रयोग होता है। साम्पातिक काल (सां. का.) साधन के लिए स्था. म. का. अपेक्षित होता है। जिसके लिए जन्मकालीन स्टैं. टा. में स्थानीय स्टैं. अंतर चिह्नानुसार जोड़ना या घटाना पड़ता है।

ये दोनों प्रक्रियाएं अपने–अपने स्थान पर शुद्ध हैं। ये प्रक्रियाएं परस्पर भिन्न होने पर भी इन दोनों से प्राप्त परिणाम (स्पष्ट लग्न) एक सा ही आता है। लेकिन ध्यान रहे– नवीन प्रणाली अपेक्षाकृत अधिक सरल है।

समस्या– 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग ' 2067 में मकरसंक्रान्ति का पुण्यकाल 15 जनवरी, 2011 ई. को 8 घटी 12 पल तक' लिखा है। कई पंचांगकारों ने 14 जनवरी को मध्याह्नोत्तर इसका पुण्यकाल लिखा है, क्योंकि यह संक्रान्ति 14 जनवरी को सूर्यास्तबाद अर्धरात्रि से पूर्व घटित हुई है। कौन–सा ठीक है ?

पं. पवन कुमार मिश्र,
हौशंगाबाद (म. प्र.)।

समाधान– मकरसंक्रान्ति का पुण्यकाल संक्रान्ति से 16 घटी पूर्व और 40 घटी बाद तक रहता है। यद्यपि सामान्य निर्णयानुसार सूर्यास्तानन्तर अर्द्धरात्रि से पहले संक्रान्ति होने पर, उसका पुण्यकाल उसी दिन मध्याह्नोत्तर माना गया है, लेकिन यहां मकर–संक्रान्ति का परवर्ती पुण्यकाल 40 घटी विशेषरूपेण निर्दिष्ट है – **"चत्वारिंशत्परा मृगे।"** अतः इस (मकर) संक्रान्ति का विशेष पुण्यकाल दूसरे दिन मकरसंक्रान्तिकाल (14 जनवरी को 28 घटी 12 पल) के 40 घटी बाद (यानी 15 जनवरी को 8 घटी 12 पल) तक रहेगा। **ध्यान रहे–** संक्रान्ति का स्नान–दानादि–माहात्म्य मध्याह्नोत्तरकाल की अपेक्षा प्रातःकाल में अधिक माना गया है, अतः 15 जनवरी को 8 घटी 12 पल तक इसका पुण्यकाल मानना अधिक उपयुक्त है।

समस्या– 'व्रत–पर्व–विवेक' में पृष्ठ 109 पर 'महालयश्राद्ध के संकल्प' में 'पंचसूना जनितदोष' के परिहारार्थ पांच बलियों का दान लिखा है। इस दोष को कृपया स्पष्ट करें।

श्री आर. पी. उपाध्याय,
5–A, शंकरघोष लेन, कोलकाता–6

समाधान– (1) चूल्हा, (2) चक्की, (3) झाडू , (4) मूसल और (5) जलघट– ये पांचसूना (या शूना) कहलाते हैं–

पंचशूना गृहस्थस्य चुल्ली–पेषण्युपस्कराः।
कण्डनी चोदकुम्भश्च वध्यते यास्तु वाहयन्।। – (*मनुस्मृति*)

इन पांच सूनाओं के प्रयोग से गृहस्थी द्वारा जाने–अनजाने चींटियों आदि अनेक छोटे–मोटे जानवरों की हत्या होती रहती है। इनकी हत्या के पाप से विमुक्ति के लिए गृहस्थी को श्राद्ध के समय इन्हें पांच बलियां देने का शास्त्रनिर्देश है।

समस्या– आपके पंचांग में दी गई अक्षांशादि सारणी में वाराणसी का स्टैं. अं. + 02 मि. 00 से. व दिल्ली का –21 मि. 12 से. लिखा है। इसके अनुसार इन दोनों नगरों के सूर्योदयकालों का अन्तर 23 मि. 12 से. हुआ, लेकिन आपके पंचांगानुसार इन दोनों नगरों के सूर्योदयकाल में 38 मिनट तक का अन्तर पाया जाता है– ऐसा क्यों ?

ए. एस. त्यागी,
मु. पो. काकरा, गाज़ियाबाद (उ.प्र.)।

समाधान– स्टैं. अं. नगर के स्थानीय मध्यमकाल (स्था. म. का.) का क्षेत्रीय/देशीय स्टैं. टा. से अन्तर है। वाराणसी के स्था. म. का. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर + 2 मि. है। अर्थात् वाराणसी का स्था. म. का. भा. स्टैं. टा. से 2 मि. आगे रहता है। इसी तरह दिल्ली का स्टैं. अं. –21 मि. 12 से. बतलाता है कि– इस

नगर का स्था. म. का. भा. स्टैं. टा. से 21 मि. 12 से. पीछे है। इस तरह इन दोनों नगरों के स्था. म. का. का अन्तर 23 मि. 12 से. है। इसे आप इन नगरों के सूर्योदयकाल का अन्तर समझ रहे हैं; जो भारी भ्रांति है। दो नगरों के सूर्योदयास्तकालों का अन्तर जानने के लिए उन नगरों के कालात्मक रेखांश तथा उनके अक्षांश एवं अभीष्ट दिनीय सूर्यक्रान्ति से ज्ञात चरकाल भी अपेक्षित होता है। आपने इन दोनों के स्टैं. अन्तरों का जो अन्तर ($23^{m.} - 12^{s.}$) लिखा है, वह इन नगरों के रेखांशों का कालात्मक अन्तर है, सूर्योदयकालों का नहीं।

समस्या– क्या किसी का महालय (आश्विनपक्षीय, कन्यागत) श्राद्ध, उसके प्रथमवर्षीय श्राद्ध से पूर्व किया जा सकता है ?

श्री राजेन्द्र कुमार,
चमकौर साहिब (रोपड़), पं.।

समाधान– प्रथम वार्षिक श्राद्ध हो जाने पर ही मृतक को पितृत्व (पितरों का पद) प्राप्त होता है, अतः वार्षिक श्राद्ध से पूर्व उसका महालयश्राद्ध नहीं होता। धर्मसिंधु का वचन है–**"न दैवं नापि वा पित्र्यं यावत् पूर्णो न वत्सरः।"– इत्यादि वचनेन सर्वस्यापि दर्शादिश्राद्धस्य प्रथमाब्दे निषेधादवर्षान्त एव पितृत्वप्राप्तेः च द्वितीयादिवर्ष एव महालयश्राद्धं कर्तुमुचितम्। – (धर्मसिन्धु)**

समस्या– ग्रहण के सूतक और ग्रहणकाल में अनेकत्र मन्दिरों को बन्द कर देने की परम्परा इन दिनों दीखने लगी है, क्या यह शास्त्रानुमोदित है ?

डॉ. राजीवलोचन, M.A,
495, शिवपुरी, खुर्जा (बुलंदशहर) उ.प्र.।

समाधान– यह माना जाता है कि– ग्रहणकाल और ग्रहणसूतक में व्यक्ति अशुचि हो जाता है। इस दृष्टि से अनेक पुजारी इस भय से कि– कोई अशुचि व्यक्ति देवप्रतिमा का स्पर्शकर, उसे दूषित न कर दे, मन्दिरों के कपाट लगा देते हैं। लेकिन यह शास्त्रानुमोदित नहीं है। शास्त्रों का कथन है– ग्रहणसूतककाल में स्नानकर व्यक्ति देवप्रतिमा की पूजा कर सकता है। इससे प्रतिमा अपवित्र (पुनः प्रतिष्ठायोग्य) नहीं होती। व्याघ्रपद का वचन है कि– ग्रहणकाल के सूतक में व्यक्ति को श्रौत–स्मार्तादि अनुष्ठानों का त्याग नहीं करना चाहिए, क्योंकि वह ग्रहणकाल में तो स्नान करने पर पवित्र हो जाता है, लेकिन ग्रहणसूतक के अलावा अन्य सूतकों (मृति–प्रसूति–आशौचों) में तो स्नान से वह पवित्र नहीं हो पाता, जिससे वहां वह देवार्चन के योग्य नहीं होता–

स्मार्तकर्मणः त्यागः राहोः अन्यत्र सूतके।
श्रौते कर्मणि तत्कालं स्नातः शुद्धिमाप्नुयात्।। – (*व्याघ्रपद*)

'षट्त्रिंशन्मत'कार भी कहते हैं कि–ग्रहण में सभी वर्णों के व्यक्ति अशुद्ध हो जाते हैं। लेकिन वे स्नानानन्तर पूजा–अनुष्ठान के योग्य हो जाते हैं–

सर्वेषामेव वर्णानां सूतकं राहुदर्शने।
स्नात्वा कर्माणि कुर्वीत शृतमन्नं विवर्जयेत्।।

ब्रह्मवैवर्तपुराण का भी कथन है कि– ग्रहणारम्भ में स्नान करे और ग्रहणमध्य में यज्ञ, देव–पूजा करे–

स्नानं स्यादुपरागादौ मध्ये होमः सुरार्चनम्।

इस प्रकार स्पष्ट है– ग्रहण में व्यक्ति अशुचि अवश्य हो जाता है, लेकिन स्नानकर, पवित्र होकर वह देवपूजा करने योग्य माना गया है। अतः ग्रहणकाल में स्नान से पवित्र व्यक्ति को मन्दिर में प्रतिष्ठापित देवप्रतिमा–पूजन से वंचित करना शास्त्रोल्लंघन है। ग्रहणकाल में तो देवार्चनादि का सामान्य काल की अपेक्षा भारी माहात्म्य शास्त्रकारों ने बतलाया है, अतः पूजार्चन के लिए विशिष्ट माहात्म्य वाले ग्रहणकाल में श्रद्धालुओं को मन्दिर में प्रवेश से वंचित करने वाले ये पुजारी लोग महापराधी हैं।

समस्या– अष्टकूट दोषों में 'नाड़ीदोष' के चार परिहार बतलाए गए हैं– (1) वर–कन्या की राशियां भिन्न–भिन्न और नक्षत्र एक, (2) नक्षत्र–भिन्न–भिन्न एवं राशियां एक, (3) नक्षत्र एक एवं नक्षत्रचरण भिन्न–भिन्न तथा (4) दोनों के नक्षत्रों में पादवेध का अभाव। क्या उपरोक्त प्रथम तीन परिहारों में पादवेध का विचार अनिवार्य है ?

श्री आर.डी. अरोड़ा,
4– c, ऋषिनगर, लुधियाना (पं.)।

समाधान– नहीं। पहले तीनों परिहारों में से यदि कोई परिहार मिल जाता है तो वहां पादवेध–परिहार का विचार अर्थहीन है। यदि ये (प्रथम तीन) परिहार न मिलें तो पादवेध का विचार कीजिए।

समस्या– **(i) क्या क्षयतिथि में उस तिथि का व्रतारम्भ या व्रतोद्यापन करना शास्त्रविरुद्ध है ?**

(ii) क्या 'ऋषिपंचमी' का व्रत केवल ब्राह्मणों और 'चन्द्रषष्ठी' का केवल क्षत्रियों के लिए ही है ?

श्री चूनीलाल शर्मा,
मु. पो. टिक्कर, मण्डी (हि.प्र.)।

समाधान– (i) ऐसी बात नहीं है। किसी भी व्रत का आरम्भ एवं समापन व्यतीपात, वैधृति, परिघार्ध, भद्रा, क्रूरवार, गुरु–शुक्रास्तकाल, मघादि पंचपादस्थ तथा मकर के पंचमांश (परमनीचांश) में स्थित गुरु एवं अधिक मास के काल में करने का निषेध है। क्षयतिथि में इन्हें करनें का कोई निषेध नहीं। हां, ऐसी तिथि में व्रत का प्रथमारम्भ और समापन निषिद्ध है, जो दिनार्ध से पहले ही समाप्त हो रही हो–

उदयस्था तिथिर्या हि न भवेद्दिनमध्यभाग्।
सा खण्डा न व्रतानां स्यादारम्भश्च समापनम्।। – (*सत्यव्रत*)

लेकिन इस वाक्य का पालन लोग अक्सर नहीं करते।

(ii) ये दोनों व्रत ब्राह्मणादि सभी वर्णों के लोगों के लिए हैं।

समस्या–(i) अनुकूल रत्न का चुनाव कैसे किया जाए, क्या योगकारक नीचराशि में स्थित ग्रह का रत्न पहना जा सकता हे ?

(ii) गृहक्षेत्र का कौन–सा भाग किस दिशा में पड़ता है, इसका निर्णय कैसे करें ?

(iii) क्या गृह के प्रधानद्वार वाली दिशा को पूर्वदिशा मानकर, तदनुसार क्षेत्र की अन्य दिशाओं का निर्णय करना उपयुक्त है ?

(iv) क्या बरामदा, बालकनी को गृह का अंग मानकर गृहवास्तु–निर्णय करना चाहिए ?

श्री मनुशर्मा, ज्योतिषाचार्य, एम.ए.,
पुरानी धान मण्डी, कुचामन सिटी (नागौर), राज.।

समाधान– (i) शुभ, अशुभफल कारक–दोनों प्रकार के ग्रहों के रत्न पहने जा सकते हैं। अशुभफलप्रद ग्रह के रत्नधारण से उसके अशुभ फल की शान्ति और शुभफल की प्राप्ति होती है। शुभ फलप्रद ग्रह का रत्न धारण किया जाए तो, उसका शुभ फल और अधिक समृद्ध होता है। इसी सिद्धान्त को दृष्टिगत रखते हुए मुहूर्तादि–ग्रन्थों में नवरत्नजड़ित मुद्रिका के निर्माण के प्रकार एवं उसे पहनने का परामर्श दिया है। इस बारे मुहूर्तचिन्तामणि का यह पद्य देखिए–

वज्रं शुक्रेऽब्जे सुमुक्ता प्रवालम् भौमेऽगौ गोमेदमार्कौ सुनीलम्।
केतौ वैडूर्यं गुरौ पुष्पकं ज्ञे पाचिः प्राङ्माणिक्यमर्के तु मध्ये।।

किञ्च – राजा, महाराजा भी अपने मुकूटों में नवरत्न धारण करते थे– यह हमारे पुराणों एवं काव्यग्रन्थों में वर्णित है।

(ii) दिशा किसी स्थल या बिन्दुविशेष के सापेक्ष होती है, अतः गृहक्षेत्र के विभिन्न भागों की दिशाओं के निर्धारणार्थ हमें इस क्षेत्र में कोई एक बिन्दु निर्धारित करना होगा, जहां से उस क्षेत्र के विभिन्न भागों की दिशाएं निर्धारित की जा सकें। इसके लिए सबसे पहले हमें क्षेत्र का मध्यबिन्दु (केन्द्र) जानना होगा। जहां से क्षेत्र की विभिन्न भागों की दिशाएं और उनकी सीमाएं हम जानेंगे। **उदाहरणार्थ–** आयताकार क्षेत्र का मध्यबिन्दु उसके परस्पर सम्मुख कोणों को जोड़ने वाली रेखाओं का सम्पातबिन्दु होता है। इस क्षेत्र के इस मध्यबिन्दु पर गाड़े गए शंकु की स्पष्ट मध्याह्नकालीन छाया से पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण दिशाओं का निर्धारण किया जा सकता है। **[और अधिक स्पष्टता के लिए सं. 2057 वि. वर्षीय श्रीमार्त्तण्ड पंचांग का 'वास्तुशास्त्र विशेषांक' देखें।]**

(iii) कदापि नहीं। गृहपति की राशि अनुसार गृह के प्रधानद्वार की दिशा का निर्णय किया जाता है। तदनुसार यदि वह पूर्व से भिन्न दक्षिण, पश्चिम या उत्तर हो तो उसे आधार मानकर गृहक्षेत्र की दिशाओं का निर्धारण हास्यास्पद होगा।

(iv) नहीं। गृह की नींव के मध्यगत भूमि को ही गृहक्षेत्र माना जाता है। इसी क्षेत्र के फल (Area) के आधार पर निर्णीत गृहक्षेत्र के नक्षत्र का गृहपति के नक्षत्र से मेलापक करने का वास्तुशास्त्र में निर्देश है।

समस्या– हमारे ग्रन्थों में परस्पर विरोधी वाक्य मिलते हैं, जैसे– '' सितज्ञभौमार्कि गुरौ च सिद्धाः –'' के अनुसार भद्रा (2–7–12) तिथियां बुधवार के दिन सिद्धा मानी गई हैं, लेकिन ''वेदांग–सप्ताश्विगजांक शैलाः —'' के अनुसार बुधवारी द्वितीया को विषतुल्य माना गया है,– किसे ठीक मानें ?

पं. रमेश शर्मा,
ग्राम कईल, शिमला (हि.प्र.)।

समाधान– इस प्रकार के परस्पर विरोधी मत फलित ज्योतिष में प्रचुर मिलते हैं। ऐसे स्थलों पर उसी मत को मान्यता देना युक्तिसंगत है, जिसे न मानने पर हानि की आशंका हो। देखिए, यहां एक वाक्य बुधवार की द्वितीया तिथि को विषा (विषतुल्य नाशकारी) तथा दूसरा वाक्य इसी (द्वितीया) तिथि को भद्रा होने के कारण बुध के ही दिन सिद्धा (शुभ, सफलता देने वाली) कहता है। अतः इस विरोध की स्थिति में द्वितीया को बुध के दिन विषा ही मानकर त्याज्य करना युक्तियुक्त है, क्योंकि ऐसा न करने पर (इसे भद्रा के कारण सिद्धा मान लेने पर) इसमें किए शुभकृत्य के विफल या कुफलप्रद होने की आशंका है। इसी युक्ति के आधार पर **मुहूर्त्तचिंतामणि** के वाक्य **" सितज्ञभौमार्किगुरौ च सिद्धाः – – –"** की व्याख्या में **पीयूषधाराकार** ने लिखा है– **" बुधे भद्रारूपः सिद्धियोगस्तु सप्तमी–द्वादश्योः चरितार्थः"**।(अर्थात् "भद्रातिथियां सिद्धा होती हैं" - आचार्य का यह मत सप्तमी और द्वादशी तिथियों पर ही लागू होता है, द्वितीया पर नहीं।)

समस्या– संक्रान्तिकाल से 16 घटी पहले ओर 16 घटी बाद, इसप्रकार कुल 32 घटी संक्रान्ति–पुण्यकाल होता है। इसकी उपपत्ति क्या है ?

श्री हरेकृष्ण श्री वैष्णव शास्त्री,
छातारोड, पो. बरसाना, मथुरा (उ. प्र.)।

समाधान– सूर्यबिम्ब का केन्द्र क्रान्तिवृत्त (राशिवृत्त) में जिस क्षण ठीक राशिप्रारम्भ–बिन्दु पर आता है, वह क्षण संक्रान्तिकाल होता है। सूर्यबिम्ब का मान मध्यममानेन 32 कला है। पूर्वाभिमुख चलते हुए सूर्यबिम्ब का पूर्वी बिन्दु जब क्रान्तिवृत्तस्थ राशिप्रारम्भ–बिन्दु को स्पर्श करता है, तब संक्रान्ति–पुण्यकाल का प्रारम्भ और जब

उसका पश्चिमी बिन्दु उसे स्पर्श करता है (यानी वह जब राशिप्रारम्भ–बिन्दु को पूरी तरह लांघ रहा होता है), तब संक्रान्ति–पुण्यकाल समाप्त माना जाता है। इस प्रकार संक्रान्तिकाल से 16 घटी पहले और 16 घटी बाद (कुल 32 घटी) तक पुण्यकाल रहता है, क्योंकि राशि–प्रारम्भबिन्दु को 32 कलात्मक सूर्यबिम्ब 32 घटी तक स्पर्श किए रहता है।⊗ **(अधिक स्पष्टता के लिए नीचे दिया गया रेखाचित्र देखिए।)**
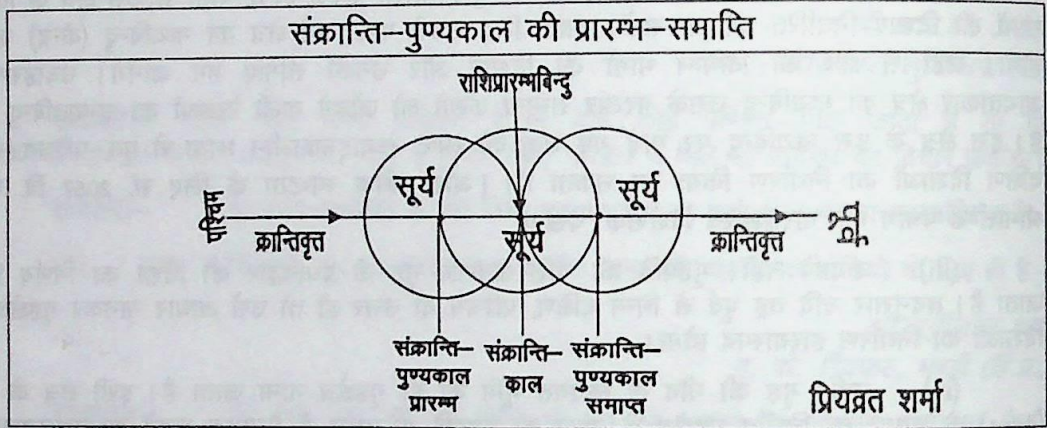
ध्यान रहे– संक्रान्तिकाल से पूर्वापरवर्ती 16–16 घटियों वाला यह संक्रान्ति–पुण्यकाल मध्यममानेन है। सूक्ष्म पुण्यकाल जानने के लिए हमें संक्रान्तिकालिक दैनिक सूर्यगति और तात्कालिक सूर्यबिम्ब का प्रयोग करना होता है। तदनुसार संक्रान्तिकालिक कलात्मक सूर्यबिम्ब को 60 से गुणाकर सूर्य की तात्कालिक कलात्मक दैनिक गति से भाग देना होगा। इस प्रक्रिया से इष्टसंक्रान्ति का सूक्ष्म, सम्पूर्ण पुण्यकाल प्राप्त होगा। **इस प्रक्रिया को सूत्ररूप में इस प्रकार प्रकट कर सकते हैं–**

$$\frac{60 \times \text{सूर्यबिम्बकला}}{\text{सूर्यगतिकला}} = \text{सम्पूर्ण संक्रान्ति–पुण्यकाल–घड़ियां}$$

सूर्यसिद्धान्त में इस प्रक्रिया का ख्यापक पद्य यह है–

अर्कमानकलाः षष्ट्या गुणिताः भुक्तिभाजिताः।
तदर्द्धनाड्यः संक्रान्तेः अर्वाक्पुण्यं तथा परे।।

नीचे इसी प्रक्रिया से साधित 12 राशि–संक्रान्तियों के सूक्ष्म पुण्यकाल दिए जा रहे हैं, जिन्हें इस 21वीं शताब्दी के लिए पर्याप्त सूक्ष्म माना जा सकता है। अयनचलन के कारण इन कालों में भी शनैः शनैः कुछ अन्तर आता रहता है।

12 राशियों के सम्पूर्ण सूक्ष्म संक्रान्ति–पुण्यकाल

संक्रान्ति	पुण्यकाल(घटी / पल)	संक्रान्ति	पुण्यकाल(घटी / पल)
मेष	32 / 33	तुला	32 / 21
वृष	32 / 51	वृश्चिक	32 / 08
मिथुन	33 / 00	धनु	32 / 03
कर्क	33 / 01	मकर	32 / 00
सिंह	32 / 51	कुम्भ	32 / 01
कन्या	32 / 36	मीन	32 / 17

⊗ *यह तो सभी दैवज्ञ जानते हैं कि– सूर्य को एक कला पार करने में एक घटी का समय लगता है।*

और भी सूक्ष्म संक्रान्ति–पुण्यकाल जानने के लिए संक्रान्तिकालिक सूक्ष्म सूर्य–बिम्बमान और सूक्ष्म सूर्यगति को प्रयोग में लाना चाहिए। **ध्यान दें**– कर्कसंक्रान्ति की पहली 30 घटी और मकरसंक्रान्ति की परवर्ती 40 घटी, जो पुण्यकाल माना है, वह खगोलीय सिद्धान्त से उपपन्न नहीं है। यह धर्मशास्त्रीय एक विशेष निर्णय पर आधारित है। उत्तरायण–समाप्ति एवं उत्तरायण के आरम्भ से सम्बद्ध विशेष धर्मकृत्यानुष्ठानों से इसका विशेष सम्बन्ध है। **किञ्च** – हेमाद्रि, माधव आदि आचार्य मेषादि संक्रांतियों के धर्मशास्त्रीय पुण्यकालों में भारी मतभेद रखते हैं।

चन्द्रादि ग्रहों के राशि– संक्रान्तिकालिक बिम्बमान और इनकी गति के आधार पर पूवोक्त सूत्र से इन ग्रहों का भी खगोलीय सिद्धान्तानुसारी संक्रान्ति–पुण्यकाल आप जान सकते हैं। **ध्यान रहे**– भौमादि पंचतारा ग्रहों के बिम्बमानों और गतियों में तात्कालिक उच्च–नीच स्थितिवश भारी अन्तर घटित होते रहने के कारण इनके खगोलीय पुण्यकाल अक्षम्य रूप से अंतरित होते रहते हैं। वैसे, सूर्य के अतिरिक्त अन्य किसी भी ग्रह के संक्रान्ति–पुण्यकाल का कहीं किसी धार्मिक अनुष्ठानादि में प्रयोग नहीं होता। हां, फलित पर आस्थावान् दैवज्ञ इनसे कुछ नए फलितीय परिणामों की कल्पना अवश्य कर सकते हैं।

समस्या–(i) जिस दिन दिनमान और रात्रिमान समान होते हैं, उस दिन को विषुवदिन माना जाए या सायन मेष को ? सायन मेषसंक्रान्ति का पुण्यकाल कितना होता है ?

(ii) क्षितिजलंबन–संस्काररहित चन्द्रमा की क्षितिज में उदयकालिक स्थिति कैसी होती है, लंबनसंस्कार केवल चन्द्रमा के लिए ही क्यों माना गया ?

(iii) ग्रहस्पष्ट के साथ पंचांग में 00^h–00^m G.M.T. का साम्पातिक काल दिया होता है, यह समय कौन–सा है ? साम्पातिककाल किसे कहते हैं ?

प्रियंका शर्मा, बहादुरबाद (U.K.)

समाधान– (i) सायन मेष (वसन्त सम्पात) पर जब सूर्य आता है (अर्थात् जब सायन मेषसंक्रान्ति होती है) तब सूर्यक्रान्ति का अभाव और तदनुसार चर शून्य हो जाने पर भूगोल पर सर्वत्र रात–दिन समान हो जाते हैं। यही स्थिति सायन तुला (शरत्संपात) पर सूर्य के आने पर (अर्थात् सायन तुला–संक्रान्ति के दिन) होती है। ये दोनों स्थितियां क्रमशः लगभग 21 मार्च और 22 सितम्बर को घटित होती हैं। इन दोनों ही दिनों को विषुवदिन–संज्ञा दी गई है। सायन मेषसंक्रान्तिदिन को 'महाविषुवदिन' भी कहा जाता है। खगोलीय सिद्धान्तानुसार तो इन दोनों संक्रान्तियों का पूर्ण पुण्यकाल भी 32–32 घटी ही है, लेकिन धर्मशास्त्रानुसार स्नान–दानादि के लिए इनका पूर्वापर पुण्यकाल 8–8 घड़ियां ही माना गया है। बृहस्पति के मत से तो इनका पूर्वापर पुण्यकाल 5–5 घड़ियां ही हैं।

ध्यान रहे– हमारे प्राचीन मुहूर्त, संहिता–ग्रन्थों में निरयण मेष–तुलासंक्रान्तियों को 'विषुव संक्रान्तियां' लिखा गया है, जो उस समय अयनगति के ज्ञान के अभाव के कारण है। वसिष्ठ ने उनकी इस त्रुटि की ओर अपनी संहिता में पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया है। वसिष्ठ तो निरयण संक्रान्ति को संक्रान्ति ही नहीं मानते। उन्होंने तो सायनसंक्रान्ति को ही वास्तविक संक्रान्ति लिखा है।

(ii) ग्रहों के भोगांश, क्रान्तिशर आदि जो पंचांग में दिए रहते हैं, भूकैन्द्रिक (Geo-centric) हैं। यानी ग्रह भूकेन्द्र से देखने पर खगोल (राशि–नक्षत्रकक्षा) में कितने राशि–अंश आदि पर हमें दीखेगा, यह पंचांगों में दिए गए ग्रहों के स्पष्ट राश्यादि हमें बतलाते हैं। यदि हम इन्हें भूपृष्ठ से देखेंगे तो ये पंचांगस्थ राश्यादि से कुछ पूर्व या पश्चिम में ढुलके हुए दीखते हैं, क्योंकि इन ग्रहों के भ्रमणवृत्त राशि–नक्षत्रकक्षा से कहीं नीचे स्थित हैं। खमध्य से पूर्वस्थ ग्रह को भूपृष्ठ से देखने पर वह अपनी पंचांगस्थ स्थिति से कुछ पूर्व की ओर खगोल (राशि– नक्षत्रकक्षा) में लंबित (ढुलका हुआ) दिखाई देगा। इसी प्रकार खमध्य से पश्चिमस्थ ग्रह को भूपृष्ठ से देखने पर वह पंचांगस्थ अपनी स्थिति से कुछ पश्चिम की ओर खगोल में लंबित (ढुलका) दीखेगा। भूपृष्ठ से देखने पर ग्रह खगोल में पूर्व या पश्चिम में जितना लंबित दीखता है, उतना

उसका लंबन माना जाता है। **ध्यान रहे–** खमध्यस्थ ग्रह का लंबन शून्य होता है, क्योंकि वहां भूमध्य और भूपृष्ठ से देखने पर उसकी स्थिति में कोई विचलन नहीं होता। खमध्य से पूर्व या पश्चिम में ग्रह जितना अधिक हटा होगा, उतना ही उसका लंबन अधिक होगा। जब ग्रह पूर्वी या पश्चिमी क्षितिज में होता है, तब उसका लम्बन (भूपृष्ठ से देखने पर उसका पूर्व–पश्चिम में खगोलीय क्षितिज से ढुलकाव) परम होता है। वहां उसके इस लंबन को क्षितिजलंबन या परमलंबन कहा जाता है। स्पष्टता के लिए चन्द्रलंबन का यह चित्र देखिए–

चित्र–स्पष्टीकरण
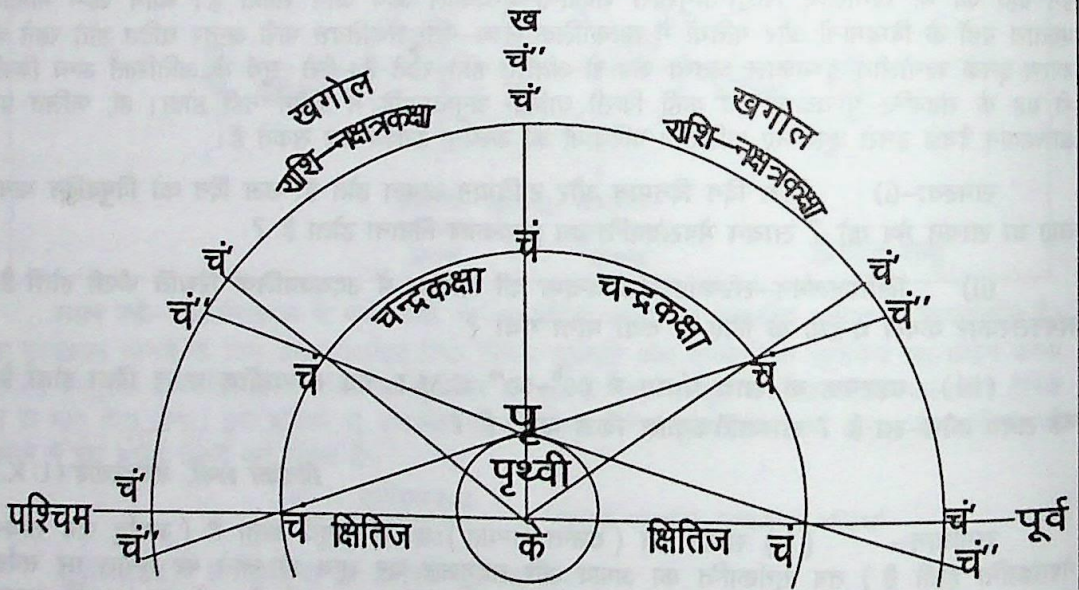
ख = खमध्यविन्दु (द्रष्टा के सिर के विल्कुल ऊपर खगोल का सर्वोच्च विन्दु।)

के = भूकेन्द्र। पृ = भूपृष्ठ। चं = चन्द्रकक्षा में चन्द्रमा।

चं'= भूकेन्द्र से देखने पर खगोल (राशिनक्षत्र–कक्षा) में चन्द्रमा का स्थान।

चं''= भूपृष्ठ से देखने पर खगोल में चन्द्रमा का स्थान।

चं' चं चं''= पूर्वी एवं पश्चिमी क्षितिज में चन्द्रमा का परम(क्षितिज)लम्बन–कोण।

देखिए– (i) खमध्य में स्थित चन्द्र का लम्बन शून्य है।

(ii) भूपृष्ठस्थ द्रष्टा को खमध्य से पूर्व की ओर स्थित चन्द्र राशिनक्षत्रकक्षा (खगोल) में पूर्व की ओर और पश्चिम की ओर स्थित पश्चिम की ओर लम्बित दीखता है।

(iii) खमध्य से चन्द्रमा पूर्व या पश्चिम की ओर जितना अधिक हटा होगा पूर्व और पश्चिम में वह उतना ही अधिक लम्बित होगा।

(iv) पूर्वी और पश्चिमी क्षितिज में स्थित चन्द्र का लम्बन क्रमशः पूर्व एवं पश्चिम में परम होता है।

जो ग्रह पृथ्वी के जितना समीप होता है, उसका लंबन उतना ही अधिक होता है। चन्द्र पृथ्वी के समीपतम घूमने वाला ग्रह है, अतः इसका परमलंबन सर्वाधिक है। सूर्यादि दूसरे ग्रह अपेक्षाकृत पृथ्वी से दूरस्थ

हैं, अतः उनका लंबन सर्वत्र उपेक्ष्य माना गया है।

क्योंकि, चन्द्रमा का क्षितिजलंबन उसकी पृथ्वी से दूरी और समीपता के आधार पर क्रमशः 53 से 62 कला तक होता है, इसलिए उसके गणितागत उदयकाल के समय चन्द्रबिम्ब का केन्द्र क्षितिज से 53 से 62 कला तक नीचे लंबित दिखाई देता है, जिससे उसे क्षितिज में दृश्य होने के लिए लगभग 4 मिनट लगते हैं। यदि वहां किरणवक्रीभवन का भी विचार किया जाए, तब तो उसके केन्द्र को क्षितिज में दृश्य होने के लिए केवल दो मिनट ही लगेंगे।

ध्यान रहे– गणितागत चन्द्रास्तकाल के समय चन्द्रबिम्ब–केन्द्र पश्चिमी क्षितिज से परमलंबनतुल्य नीचे की ओर होता है। यानी गणितागत चन्द्रास्तकाल से लगभग चार मिनट पहले ही वह अस्त हो चुका होता है।

ध्यान दीजिए– लंबन का उपर्युक्त विवेचन सामान्यजन के खगोलज्ञान के स्तर को ध्यान में रखकर सुबोध शैली में लिखा गया है। यहां लंबन के अनेक प्रकारों तथा तत्संबद्ध अनेक सूक्ष्मताओं की उपेक्षा की गई है।

(iii) **वसन्त संपात** (Equinox) या सायन मेषारम्भबिन्दु जब किसी स्थल के याम्योत्तरवृत्त पर होता है, तब उस स्थल (रेखांश) पर साम्पातिक काल (सां. का.) $00^h\ 00^m$ होता है। पृथ्वी के अक्षभ्रमण के कारण पूर्व से पश्चिम की ओर घूमता यह संपात मध्यम सौरकालानुसार $23^h\ 56^m\ 04^s$ बाद पुनः उसी स्थल (रेखांश) पर आ पहुंचता है। इस प्रकार यह संपात $23^h\ 56^m\ 04^s$ में पृथ्वी के सभी रेखांशों पर से गुज़र जाता है। पंचांग में $00^h\ 00^m$ (G.M.T.) वाले कॉलम में दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रहों के साथ दिया गया सां. का. ग्रीनविच के स्थानीय मध्यमकाल (स्था. म. का.) $00^h\ 00^m$ का है। इससे किसी भी रेखांश का सां. का. कुछ मिनट–सेकण्ड जोड़ / घटाकर सरलता से जाना जा सकता है।

वसंत संपात किस स्थल के रेखांश (Longitude) पर कितने बजे स्थानीय स्टैंडर्ड टाईम (स्था. स्टैं. टा.) पर पहुंचेगा, कितने स्टैं. टा. पर किस स्थल पर सां. का. कितना होगा– यह जानने की एक सामान्य प्रक्रिया है। [इसके लिए मेरी पुस्तक **'विश्वलग्न सारणी'** का सांपातिक काल वाला प्रकरण देखें।]

पाठकों की मुहूर्त्तसम्बन्धी कुछ समस्याएं और उनके समाधान

समस्या– आपके सं. 2067 वि. के पंचांग में आपने केतुयुति और मृत्युबाण में 14 फर. 2011 ई. को मृग. में मुण्डन व गृहारम्भमुहूर्त्त लगाए हैं। क्या इन दोषों का कोई परिहार है यहां ?

समाधान– कश्यप के इस निम्नांकित पद्य में शुभदृष्ट चन्द्र होने पर क्रूरयुति का परिहार लिखा है–

तुंग–मित्र–स्वराशिस्थः शुभयुक्तः शुभेक्षितः।
एवंविधः क्रूरयुतः सम्पूर्णफलदः शशी।।

इस अनुसार 14 फर., 2011 को मृगस्थ चन्द्र शुक्रदृष्ट होने से क्रूरयुतिदोष नहीं रहता।

किंच– मृत्युबाण का दोष यहां दोनों मुहूर्त्तों में विचार्य नहीं, क्योंकि यह बाण केवल विवाह में ही वर्जित है– 'त्यजेन्मृत्युं करग्रहे।

समस्या– आपने 3 दिसम्बर, 2010 ई. को गृहारम्भ और 2 मार्च, 2011 ई. को मुण्डनमुहूर्त्त कृष्ण त्रयोदशी में लगाए हैं, क्या यहां क्षीणचन्द्रदोष नहीं है ?

समाधान– त्रयोदशी शुक्ला हो या कृष्णा– दोनों गृहारम्भ और मुण्डन में ग्राह्य मानी गई है। ये प्रमाणवाक्य देखिए–

द्वितीया–पंचमी मुख्या तृतीया–षष्ठिका तथा।
सप्तमी–दशमी चैव द्वादश्येकादशी तथा।।
त्रयोदशी–पंचदशी तिथयः स्युः शुभावहाः।
(गृहारम्भे इत्यनुवर्तते) – (*व्यवहार–समुच्चय*)

तथा च –

पंचमी–सप्तमी चैव दशम्येकादशी तथा।
त्रयोदशी–तृतीया च चौलकर्मणि शोभनाः।। – (वसिष्ठ)

समस्या– क्या कारण है, 8 नवम्बर, 2010 ई. को अनु. में भौमयुति का परिहार न होने पर भी गृहारम्भमुहूर्त्त लगाया गया ?

समाधान– यहां चन्द्र बुधयुक्त (शुभयुक्त) है। अतः उपरोक्त " तुंग–मित्र–स्वराशिस्थः....." वाक्यानुसार यहां क्रूरयुतिदोष परिहृत है।

समस्या– 26 जनवरी, 2011 ई. को स्वाती में भुजंगपातदोष होने पर भी सर्वदेवप्रतिष्ठा–मुहूर्त्त लगाया गया है, क्यों ?

समाधान– विवाहमुहूर्त्त–शोधन में विशेषरूपेण विचार्य/त्याज्य लत्ता आदि 'दस दोषों' में से केवल युति, वेध, बाण और क्रान्तिसाम्य का ही विचार 'अन्य मुहूर्त्तों' में करने की परम्परा है, अतः भुजंगपात यहां उपेक्षित किया गया है।

समस्या– आपने सं. 2067 वि. के अपने पंचांग में कुछ स्थलों पर मंगल और शनि के वेध में भी मुण्डन, द्विरागमन, सर्वदेव–प्रतिष्ठा मुहूर्त्त लगाए हैं। क्या वहां क्रूरवेध का कोई परिहार है ?

समाधान– इन क्रूरग्रहवेधस्थलों पर लग्नकाल में निम्नांकित वसिष्ठवाक्यगत अनेक वेधपरिहारों में से कई भिन्न–भिन्न परिहार उपलब्ध होने पर क्रूरवेध परिहृत माना गया है–

लग्ने शुभे सौम्ययुतेक्षिते वा लग्नाधिनाथे भवगे तथा वा।
कालाख्य–होरा च यदा शुभस्य भवेद्धि वेधस्य तदा विभंगः।। – (*वसिष्ठ*)

आर [illegible] य

(जन्मकालिक [illegible] ादे अनुसार)

(ले [illegible] प्रियव्रत शर्मा)

[विगत अनेक वर्षों से 'आयुसाधन विशेषांक' देने की प्रतिज्ञा भंग होती गई, जिसका एकमात्र कारण मेरा अस्वास्थ्य रहा। मैं अपने पाठकों से अपनी इस विवशता के लिए भी क्षमाप्रार्थी हूँ। अब मैं अपेक्षित स्वास्थ्यलाभ कर 'आयुसाधन' जैसी नितांत श्रमापेक्षी, उलझी एवं वैमत्य की बुरी तरह शिकार इस समस्या पर अपने उन्मुक्त विचार पाठकों के सम्मुख उपस्थापित करने का साहस जुटा पाया हूँ, लेकिन अन्य अनेक अपरिहार्य विषयों के समावेश के कारण स्थानाल्पता हो जाने से इस वर्ष भी इस विस्तारापेक्षी विषय की भूमिकामात्र ही मैं पाठकों के सम्मुख रख पा रहां हूँ, इसका मुझे खेद है। पाठकों को विश्वास दिलाता हूँ– शेष बचे इस विषय का सांगोपांग विशद विवेचन अग्रिम (सं. 2070 वि.) वर्षीय पंचांग के 'आयुसाधन विशेषांक' भाग में आपको अवश्य मिलेगा। विषय के इस अपूर्ण प्रतिपादन के लिए भी मैं पुनः क्षमाप्रार्थी हूँ। – प्रियव्रत शर्मा]

ईस्वी सन् 1972 की बात है– Govt. College Kullu (H.P.) से Transfer होकर मैं Govt. College Solan पहुंचा ही था। दूसरे ही दिन मेरे एक मित्र प्राध्यापक अपनी प्राध्यापिका पत्नी के साथ मेरे आवास पहुंचे। उस समय मैं और मेरी पत्नी– दोनों Truck से उतारी गई अपनी फर्नीचर आदि घरेलु सामग्री को आवास में व्यवस्थित करने में व्यस्त थे। " **ऐसे असमय पर हम आपके यहां आए हैं, क्षमा चाहते हैं**"– ऐसा खेद प्रकट करने के अनन्तर उन्होंने अपने शुभ नाम और अध्यापन–विषय बतलाए। अव्यस्थित पड़े सोफा–कुर्सियों पर हम बैठ गए। अस्त–व्यस्त आवास में संभव आतिथ्य के अनंतर मेरे द्वारा पूछे जाने पर उन्होंने व्याकुलताभरे शब्दों में बतलाया– '**हमारी तीन बेटियां स्कूलछात्राएं हैं और उनसे छोटा एकमात्र बेटा है। एक वर्ष पूर्व एक भृगुशास्त्री ने हमारे बेटे को अति–अल्पायु*** बतलाया। इस त्रासक भविष्यवाणी ने हमारी मानसिक शान्ति सर्वथा समाप्त ही कर दी है। जब कभी बेटे को सामान्य–सी भी तक्लीफ होती है, किसी अचिन्त्य दुर्घटना की आशंका से हम दोनों कॉलेज से अवकाश लेकर इसके पास बैठे रहते हैं। जब हमें पता चला कि– आप कुल्लू से Transfer होकर सोलन आ रहे हैं, हमने अपनी इस भयावह समस्या के समाधान के लिए आप से परामर्श की सोच रखी थी। क्या आप हमें इस मर्मान्तक व्यथा से उबार सकेंगे ?'– कहकर दम्पती की आंखें डबडबा आईं। मैंने उन्हें आश्वासनपूर्वक समझाया कि– " ज्योतिष की किसी भी विधा से किसी की आयु का निर्धारण कदापि संभव नहीं है। ज्योतिषसाहित्य के स्रष्टा ऋषि–मुनि–आचार्य सभी इस विषय में असहय, अक्षम्य वैमत्य रखते हैं। इनके ग्रन्थों में आयुनिर्णायक भिन्न–भिन्न सुदीर्घ गणितप्रक्रियाओं के परिणाम भी परस्पर अक्षम्यरूप से विरोधी तथा यथार्थता से बुरी तरह व्यभिचरित पाए जाते हैं, अतः आप उस तथाकथित भृगुशास्त्री की इस संत्रासक भविष्यवाणी को छद्मभरी, स्वार्थप्रेरित समझकर शान्ति से जीवन बिताइए"– मैंने उन्हें आश्वासित किया। इस पर उन्होंने आत्मीयताभरे शब्दों में मुझसे अनुरोध किया कि– उनके मनस्तोष के लिए मैं उनके बेटे की आयु का निर्णय आयुसाधन की प्रमुख–प्रमुख प्रक्रियाओं से कर सकूं, तो वे अनुगृहीत होंगे। दैन्य से भरे उनके अनुरोध को मैं टाल न सका। मैंने उनसे प्रतिज्ञा की कि– मैं उनके लिए यह श्रम सहर्ष करूंगा और उनके सुपुत्र के जन्मतिथ्यादि मैंने उनसे ले लिए।

सप्ताहबाद ही ग्रीष्मावकाश थे। अपनी मातृभूमि कुराली (पं.) पहुंचकर मैंने चार विभिन्न प्रक्रियाओं से

---

* *यहां 'आयु' शब्द का प्रयोग हमने सर्वत्र 'जीवनावधि' अर्थ में किया है।*

उस मित्र प्राध्यापक दम्पती के हृदयांश बालक की आयुमात्रा की परिगणना (Calculation) गणित के प्रत्येक पद (Step) को अंकित करते हुए सुविस्तार से की। इन चारों प्रक्रियाओं द्वारा, मुझे याद है, उनके बेटे की आयु के लगभग 55, 60, 62, 85 वर्ष प्राप्त हुए। चारों गणितप्रक्रियाओं की पूरी फाईल मैंने उस दम्पती को सौंप दी। धूर्त्त दैवज्ञ द्वारा आरोपित उनकी आशंका, भीति पर्याप्त अपास्त हो गई। उनका सुपुत्र Neurology का सुप्रतिष्ठित डॉक्टर बना, उसे पत्नी भी डॉक्टर मिली। विगत वर्ष ही लगभग 46–47 वर्ष की आयु में हृद्गतिरोध से चण्डीगढ़ में उसका देहावसान हुआ। यहां यह ध्यान देने योग्य है– आयुसाधन की चारों प्रक्रियाएं उसकी आयु का यथार्थ परिमाण बतलाने में शत–प्रतिशत विफल रहीं।

इस यथार्थ घटना को उद्धृत करने का सारांश यह है कि– हम सबके जीवन की डोर बस केवल भगवान् के ही हाथों में है। दैवज्ञों द्वारा आविष्कृत जटिलतर गणितप्रक्रियायों में उलझीं, ज्योतिर्ग्रन्थों में निर्दिष्ट आयुसाधन की ये संख्या में लगभग अगण्य–सी सभी प्रक्रियाएं प्राणी के इस परम रहस्य को सुलझा पाने में तनिक भी सफल न हो सकीं– ऐसा कहने में मुझे रंचमात्र भी संकोच नहीं है। वैसे, अनेक स्पष्टवक्ता संहिता–जातक–ग्रन्थकारों ने इस विषय में ज्योतिर्विद्या की अक्षमता की ओर प्रकारांतर से कुछ संकेत भी किया है। महर्षि दैवज्ञ **पराशर** अपने ग्रन्थ का ' **आयुर्दायाध्याय** ' प्रारम्भ करते हुए लिखते हैं–

कथयाम्यायुषो ज्ञानं दुर्ज्ञेयं यत्सुरैरपि। – (*बृहत्पाराशर होरा* **)**

(अर्थात् – अब मैं आयु जानने का प्रकार बतलाउंगा, जिसे देवता भी जानने में असमर्थ हैं।)

पुनरपि– पाठकों के संतोष के लिए ज्योतिषशास्त्रियों ने इस परम गहन विषय के अन्वेषण में जो अथक परिश्रम किया है, उसका विस्तृत विवेचन एवं विश्लेषण हम यहां करेंगे।

आयुनिर्णय को जातककारों ने मुख्यतः दो भागों में बांटा है–

(i) योगज आयु।

(ii) गणितागत आयु।

(i) योगज आयु का निर्णय– जातकादि ग्रन्थों में दिए जातक–जन्मकालीन ग्रहस्थिति आदि पर आधारित आयु ' **योगज आयु** ' कहलाती है। यानी जिस समय जातक पैदा हुआ है, तात्कालिक लग्न, ग्रहस्थिति, नक्षत्र, योग, करण आदि के आधार पर जो आयु (आयुमात्रा) निर्णीत की जाती है, उसे **'योगज आयु'** कहा जाता है। **यह चार प्रकार की है– (1) रिष्टज (अरिष्टज) आयु, (2) नियतायु, (3) परमायु और (4) अमितायु।**

(1) रिष्टज (अरिष्टज) आयु– इस आयु का संबंध शिशु की आयु से है। बच्चे एवं उसके माता–पिता द्वारा किए गए पूर्वजन्म के दुष्कृतों से संचित शिशु की जन्मकालिक क्रूरग्रहस्थिति आदि को रिष्ट या अरिष्ट कहा गया है[⊕]। इन रिष्ट योगों में से कुछ रिष्टयोग केवल शिशु को, कुछ शिशु की माता को, कुछ पिता को, कुछ पिता और शिशु– दोनों को, कुछ माता–पिता और शिशु– तीनों को कष्ट या मरणप्रद माने गए हैं। कुछ ऐसे भी रिष्ट योग हैं, जो शिशु के भाई–बहन, दादा–दादी, नाना–नानी, मामा–मामी, सास–ससुर, साला, देवर–देवरानी आदि अन्य बन्धुओं के लिए भी जातककारों ने अशुभ माने हैं। जातककारों का मानना है कि– शिशु अपनी कायिक और मानसिक परम कोमलता या दुर्बलता के कारण मृत्युप्रवण (Prone to death) प्राणी है। अतः इसके प्रथम तीन वर्षों में बिना अरिष्ट के भी वह मर सकता है। अतः शिशु

⊕ *रिष्ट और अरिष्ट– ये दोनों पर्यायवाची शब्द हैं। आश्चर्य की बात है– ये दोनों शब्द शुभ (सौभाग्य) एवं अशुभ (दौर्भाग्य)– दोनों अर्थ रखते हैं–* ***रिष्टं क्षेमाशुभाभावेष्वरिष्टे तु शुभाशुभे – (अमरकोष)।*** *परन्तु ध्यान रहे– आयुसाधन-प्रसंग में इन दोनों शब्दों का अर्थ अशुभ (दौर्भाग्य) ही लिया जाता है।*

के आयु के प्रथम तीन वर्षों को उन्होंने शिशु के लिए दुस्तर माना है। उनका मत है कि– उसकी जन्मकालिक ग्रहस्थित्यादि से उसकी जीवनावधि को तीन वर्ष की आयु तक ' इदमित्थम् ' निश्चित नहीं किया जा सकता। इस आधार पर उन्होंने तीन वर्ष की आयु हो जाने पर ही शिशु की जन्मपत्री बनाने का दैवज्ञ को परामर्श दिया है। अपनी जातकपद्धति में आचार्य केशव ने इसे इस प्रकार लिखा है–

जीवेत्क्वापि विभंगरिष्टज-शिशूरिष्टं विना मीयते–
ऽथाद्योब्दः शिशुदुस्तरोऽपि च परौ कार्येषु नो पत्रिका।।

शिशु की आयु के ये पहले तीन वर्ष बहुत संकटपूर्ण (Critical) होते हैं, जिससे ये वर्ष रिष्टज योगों के कुप्रभाव से शीघ्र प्रभावित होने वाले हैं। अनेक जातकग्रन्थों में तो शिशु की रिष्टज फल से प्रभावी आयु 12 वर्ष तक की लिखी है। उनका मत है कि– प्रथम चार वर्षों में माता के पापों (पूर्वजन्मकृत दुष्कृतों), तदनंतर चार वर्षों में पिता के पापों तथा आगे शिशु अपने पापों से ही मृत्यु को प्राप्त करता है–

आद्ये चतुष्के जननीकृताद्यैः मध्ये तु पित्रार्जित– पापसंचयैः।
बालस्तदन्यासु चतुःशरत्सु स्वकीयदौषैः समुपैति नाशम्।। – (*जातक–पारिजात*)

माता–पिता एवं स्वयं शिशु के अपने पापों से जायमान मृत्यु की उपरोक्त सम्भावना के कारण जातककारों ने यह कहा है कि– 12 वर्ष की आयु तक जातक (शिशु) की जीवनावधि के यथार्थ वर्षादि का निर्णय कर सकना सम्भव नहीं है। अतः 12 वर्ष तक उसके माता–पिता को देवपूजन, यज्ञ, चिकित्सा आदि द्वारा उसकी रक्षा में तत्पर/सावधान रहना चाहिए –

आद्वादशाब्दाज्जन्तूनामायुर्ज्ञातुं न शक्यते।
जप–होम–चिकित्साद्यैः बालरक्षां तु कारयेत्।। – (*सर्वार्थ–चिंतामणि*)

हमारे जातकग्रन्थों में रिष्टजनक ग्रहस्थितियां भारी संख्या में निर्दिष्ट हैं, जो शिशु को भिन्न–भिन्न आयुमान देती हैं तथा शिशु एवं तत्संबंधियों को कष्ट या मृत्यु देती हैं। यहां हम अरिष्टकारक ऐसे कुछ योग जातकग्रन्थों से ले उदाहरणार्थ उद्धृत करते हैं। देखिए–

शिशु का तत्काल मृत्युयोग–

चक्रस्य पूर्वापर–भागगेषु क्रूरेषु सौम्येषु च कीटलग्ने।
क्षिप्रं विनाशं समुपैति जातः पापैर्विलग्नास्तमयाभितश्च।। – (*बृहज्जातक*)

पापावुदयास्तगौ क्रूरेण युतश्च शशी।
दृष्टश्च शुभैर्न यदा मृत्युस्तु भवेदचिरात्।। – (*बृहज्जातक*)

शिशु का सप्ताह आयुयोग–

सहितौ चन्द्रजामित्रे यस्यांगारक–भास्करौ।
जातस्य तस्य हि तदा भवेत्सप्ताहजीवितम्।। – (*सारावली*)

एक मास में शिशु-मृत्यु योग–

षष्ठाष्टगा वक्रितपापदृष्टा हन्युः शुभा मासि शुभैरदृष्टाः।
होरापतिः पापजितः स्मरस्थो मासेन तं मारयति प्रसूतम्।। – (*जातक–सारदीप*)

शिशु की एकवर्ष आयु–

अष्टमस्थे निशानाथे केन्द्रे पापेन संयुते।
चतुर्थे स्याद्यदा राहौ वर्षमेकं स जीवति।। – (*चन्द्रिका*)

शिशु की दो वर्ष आयु–

वक्री शनिर्भौमगृहे केन्द्रे षष्ठेऽष्टमेऽपि वा।
कुजेन बलिना दृष्टे हन्ति वर्षद्वये शिशुम्।। – (*चन्द्रिका*)

तीन वर्ष में पितृ–मरणयोग–

द्वादशे चन्द्र–सूर्यौ च क्षीणचन्द्रश्च सप्तमे।
पितुर्मरणदः सद्यः शुभदृष्टे त्रिवर्षके।। – (*जातक–सारदीप*)

शिशु–मातृ–मृत्युयोग–

लग्नात्सप्ताष्टमगैः पापैरभिवीक्षितश्चन्द्रः सह जनन्या।
म्रियते शुभसंदृष्टैः सत्यमतादवदेद् व्याधिम्।। – (*जातक–सारदीप*)

शिशु–पितृ–मृत्युयोग–

राहुश्चतुर्थगः पुत्रं नवमे पितरं तथा।
हन्यात्केतुश्च तद्वत्स्यात् पापदृष्टो दिनत्रये।। – (*जातक–सारदीप*)

शिशु एवं तत्संबंधियों का शीघ्र मृत्युयोग–

तातांबिकासोदर–मातुलाश्च मातामही–मातृ–पिता च बालः।
सूर्यादिकैः पंचम–धर्मयातैः क्रूरर्क्षगैः आशुहताः क्रमेण।। – (*जातक–पारिजात*)

शिशु, उसकी माता एवं भ्राता का मृत्युयोग–

यस्य जन्मनि धीस्थाः स्युः सूर्यार्कीन्दुकुजाभिधाः।
तत्र जातो जनित्री च भ्राता च निधनं व्रजेत्।। – (*होरारत्न*)

इसी तरह अभुक्तमूल, भद्रा, यमघंट, दग्ध, मृत्युयोग, व्यतिपात–वैधृति–वज्रयोग, ग्रहणकाल, सूर्यसंक्रान्ति, अमा, कृष्ण–चतुर्दशी, नक्षत्र–तिथि–विषघटी, चन्द्र एवं लग्न का राशि–मृत्यु अंश आदि अन्य अनेकों–अनेक और भी अशुभकाल जातक–मुहूर्त–ग्रन्थों में वर्णित हैं, जिनमें जन्म शिशु तथा उसके संबंधियों के लिए कष्ट एवं मृत्युकारक लिखा गया है। इन कालों को भी रिष्ट की कोटि में माना जाता है। अपि च– जन्मकालिक वज्रपात, वात्या, उल्कापात, भूकम्प, धूमकेतु–उदय आदि असंख्य अपशकुन भी रिष्ट माने गए हैं, जिनमें जन्म लेना शिशु के लिए शास्त्रों द्वारा अशुभ (अरिष्ट) बतलाया गया है।

ध्यान रहे – जिन रिष्टयोगों में जन्में शिशु या तत्संबन्धी का कष्ट या मृत्युकाल जातककारों ने स्पष्टतः संकेतित नहीं किया है, उनके प्रवृत्तिकाल के बारे में **वराहमिहिर** ने यह लिखा है–

योगे स्थानं गतवति बलिनश्चंद्रे स्वं वा तनुगृहमथवा।
पापैर्दृष्टे बलवति मरणं वर्षस्यान्तः किल मुनिगदितम्।। – (***बृहज्जातक***)

(अर्थात् – अरिष्टयोगकारक ग्रहों में सर्वाधिक बलवान् ग्रह द्वारा अधिष्ठित राशि में चन्द्र के आने पर मृत्यु होती है अथवा जन्मलग्नराशि में चन्द्र के आने पर अथवा जन्मकालिक चन्द्रमा की राशि में पुनः चन्द्रमा के आने पर मृत्यु होती है। ध्यान रहे– यह अरिष्ट–योगफल एक वर्ष के भीतर ही माना गया है।)

अरिष्टयोगों के भंग (परिहार) योगों का भी जातकग्रन्थों में विस्तार से निर्देश है, जो शिशु की जन्मकुण्डली में उपस्थित अरिष्ट योगों को शिथिल या शून्य करते हैं। इनके लिए पाठकों को **बृहज्जातक** आदि ग्रन्थों के **'अरिष्ट'** एवं **'अरिष्टभंगाध्याय'** देखने चाहिएं।

यह अरिष्ट योगागत आयुनिर्णय का विवेचन है।

(2) **नियत आयु** – मनुष्य की पूर्णायु 100 वर्ष मानी गई है। इसे ही जातककारों ने '**नियत आयु**' कहा है। '**नियत आयु**' देने वाले ग्रहयोग भारी संख्या में जातकग्रन्थों में मिलते हैं। इसका एक उदाहरण यहां दे रहे हैं –

लग्नाष्टमारीन्दुयुता न चेत्स्युः क्रूराः स्वमस्थाः यदिखेचरौ द्वौ।
बलान्वितावम्बरगौ भवेतां जातः शतायुः कथितो मुनीन्द्रैः।।

(3) **परमायु** – 120 वर्ष की आयु '**परमायु**' मानी जाती है। परमायु–ज्ञापक ग्रहयोग भी जातकग्रन्थों में पर्याप्त संख्या में हैं। उनमें से एक योग यह है–

अनिमिषपरमांशके विलग्ने शशितनये गविपंचवर्गलिप्ते।
भवति हि परमायुषः प्रमाणं यदि सहिताः सकलाः स्वतुंगभेषु।।

(4) **अमितायु** – जातक–संहिताकारों का यह मत है कि–कुछ सच्चरित्र महान् पुरुष ऐसी ग्रहस्थिति में पैदा होते हैं, जो उन्हें अमित (अपरिमेय) आयु देती है। उनके इस मत को तार्किक लोग अतिरंजित मानते हैं। उन परिगणित अमितायु योगों में से एक योग यहां हम उद्धृत कर रहे हैं–

गुरु–शशिसहिते कुलीरलग्ने शशितनये भृगुजे च केन्द्रयाते।
भवरिपुसहजोपगतैश्च शेषैः अमितमिहायुरनुक्रमाद् विना स्यात्।।

इस अमितायुयोग का समर्थन करने वाले फलितशास्त्रियों का मत है कि– इसका निर्णय गणितागत आयुसाधनपद्धति से नहीं करना चाहिए।

यह '**योगज आयु**' का सामान्य विवेचन है। इसकी आलोचनात्मक समीक्षा अगले वर्ष (सं. 2070 वि. में) '**गणितागत आयु**' के सुविस्तृत गणितीय विवेचन के साथ की जाएगी। वहां आयुर्दाय के इन विविध प्रकारों का तुलनात्मक विश्लेषण किया जाएगा, जिससे पाठकों को अच्छी तरह स्पष्ट हो जाएगा कि– हमारे जातक–संहिताग्रन्थों में वर्णित पारस्परिक मतभेदों की बुरी तरह शिकार, आयु का दिन एवं घटी–पल तक की सूक्ष्मता से निर्णय का दावा करने वालीं, दीर्घ–दीर्घतर गणितप्रक्रियाओं से बुरी तरह आक्रान्त इन विविध आयुसाधन–पद्धतियों में कितना सामंजस्य, समन्वय है। एतदर्थ अगले वर्ष (सं. 2070 वि.) के पंचांग की प्रतीक्षा कीजिए। वहां जटिल व विस्तारी गणनाओं को सरलतम, संक्षिप्तरूप देने वाले अनेक मौलिक कोष्ठक भी पाठकों को मिलेंगे।

पृष्ठ सं. 604
चिरस्थायी बहुमूल्य कागज

विश्वलग्न सारणी

साईज़-24X18½ सें.मी.
सुदृढ़, आकर्षक टाईटल

विश्व के किसी भी स्थल का सूक्ष्म लग्न केवल साधारण जोड़–घटाव द्वारा बतलाने वाला लग्नसम्बन्धी प्रचुर सामग्री से समृद्ध अपूर्व प्रकाशन

(i) 0° से 50° अक्षांश तक 30–30 और 50° से 66° अक्षांश तक 15–15 अक्षांश–कलाओं के अन्तर पर बनाई गईं 332 पृष्ठों पर फैली 166 लग्नसारणियां साम्पातिक काल के 1–1 मिनट के अन्तर पर विकलान्त सूक्ष्म लग्न बतलाती हैं। इनसे विश्व के किसी भी उत्तरी तथा दक्षिणी अक्षांश वाले नगर का इष्टकालिक राश्यादि लग्न स्पष्ट करने के लिए 2 मिनट से अधिक समय नहीं लगता है।

(ii) मेषादि बारह लग्नों का दैनिक प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल बतलाने वाली 25 पृष्ठों की विलक्षण सारणियां 5–5 अक्षांश–कलाओं के अन्तर पर 0° से 60° अक्षांशों के लिए बनाई गई हैं, जिनसे विश्व के किसी भी नगर में किसी भी दिन (तारीख को) किसी भी सायन एवं निरयण लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल (अभीष्ट देश के स्टैं. टा. में) मात्र मौखिक जोड़–घटाव द्वारा तुरन्त (लगभग एक मिनट में ही) जाना जा सकता है। क्योंकि, ये सारणियां लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल सेकण्ड तक सूक्ष्म बतलाती हैं, अतः सन्दिग्ध (सन्धिगत) लग्न का निर्णय इन सारणियों से वस्तुतः चुटकियों में अनायास ही हो जाता है। सन्देहास्पद लग्नराशि के निर्णय का यह नवीनतम अत्यन्त सरल प्रकार है।

(iii) सन् 1900 से 2100 ई. तक का सेकण्ड तक सूक्ष्म साम्पातिक काल और स्पष्ट अयनांश दिया गया है।

(iv) भारत के 4,000 नगर/उपनगरों तथा विश्व के अन्य 210 देशों के प्रसिद्ध लगभग 5,000 नगरों के अक्षांश–रेखांश तथा स्था. म. का. और स्टैं. टा. का अन्तर 80 पृष्ठों पर दिया गया है।

(v) विश्व के लगभग छः सौ (600) देश / द्वीप/ उपद्वीपों की स्टैं. टाईम मेरिडियन्स तथा उनके स्टैं.टा. का G. M. T. एवं भा. स्टैं. टा. से अन्तर 21 पृष्ठों के विशाल कोष्ठक में विवरणसहित दिया है।

(vi) क्रान्ति और अक्षांश की 20–20 कलाओं के अन्तर पर 0° से 66° अक्षांशों के लिए सेकण्ड तक सूक्ष्म 24 पृष्ठों की मौलिक चरसारणी है, जिससे विश्व के किसी भी स्थल का सेकण्ड तक शुद्ध सूर्योदयास्तकाल आसानी से तुरन्त जाना जा सकता है।

(vii) अमेरिका, कनाडा आदि सभी विशाल देशों के अलग–अलग Time-Zones (कालक्षेत्रों) में पड़ने वाले सम्पूर्ण प्रान्तों (राज्यों) की लम्बी सूची दी गई है, जिससे स्पष्ट हो जाता है कि– इन देशों के किस प्रदेश में कौन सा टाईम प्रचलित है और उसका भा. स्टैं. टा. से कितना अन्तर है।

(viii) विश्व के विभिन्न देशों में 1940 ई. के बाद आज तक हुए सभी समय–परिवर्तनों के वर्षादि का विस्तृत रिकॉर्ड 7 पृष्ठों के कोष्ठक में अंकित हैं।

(ix) अमेरिका, कनाडा आदि देशों में प्रचलित समरटाईम (D.S.T.) के प्रारम्भ और समाप्ति की तारीखों तथा प्रथम/द्वितीय विश्वयुद्धों के दौरान विभिन्न देशों द्वारा किए गए सभी समय-परिवर्तनों के वर्ष–मास–तारीखों का विवरण 9 पृष्ठों पर दिया गया है।

(x) सारणियों से लग्नसाधन आदि की प्रत्येक गणित–प्रक्रिया को छः छः, सात–सात विभिन्नदेशीय नगरों के उदाहरणों द्वारा पूरी तरह स्पष्ट किया गया है।

अनेक उपयोगी क्रान्ति, वेलान्तर आदि के कोष्ठक तथा लग्न एवं द्वादशभावसाधन आदि से सम्बद्ध "सन्धिगत लग्न का निर्णय", "विषम विभागात्मकभाव–एक समीक्षा" आदि अनेक मौलिक लेख आप इस पुस्तक में पढ़ेंगे।

इस पुस्तक की सभी सारणियां Electronic Computer द्वारा बनाई और मुद्रित की गई हैं, जिससे इनमें गणित एवं मुद्रणसम्बन्धी अशुद्धि की कोई सम्भावना ही नहीं है।

लग्न पर ऐसी व्यापक जानकारी देने वाली परिपूर्ण, प्रौढ़ एवं प्रामाणिक पुस्तक आपको और कोई नहीं मिलेगी– यह हम विश्वासपूर्वक कह सकते हैं।

मूल्य Rs. 750/– + डाकव्यय Rs. 60/–

विशेष छूट– ज्योतिषशिक्षण-संस्थाओं में पढ़ने वाले छात्रों, ज्योतिष अनुसंधानरत संस्थाकेन्द्रों एवम् सभी पुस्तकालयों के लिए इसका डाकव्ययसहित मूल्य Rs. 500/- है।

पुस्तक मिलने का पता:– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर–6, P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109,
Phone: 0172-2565 303

पृष्ठ संख्या 120 (लगभग)
चिरस्थायी बहुमूल्य काग़ज़ पर मुद्रित

मुहूर्त्त गजानन

साईज़- श्री'मार्त्तण्ड पंचांग' के

(जनवरी, 2012 ई. तक प्रकाशित हो जाएगी–प्रतीक्षा कीजिए।)

लेखकः– प्रियव्रत शर्मा,

(गर्भाधान, पुंसवन, नामकरण, मुण्डन, उपनयन एवम् विवाहादि मुहूर्त्तों के साधन का सरल भाषा/शैली में विस्तृत प्रतिपादन)

वशिष्ठादि संहिताओं, मुहूर्तमार्त्तण्ड, मुहूर्तचिन्तामणि आदि ग्रन्थों में दिया गया मुहूर्त का साधनप्रकार संस्कृत के विद्वान् दैवज्ञों को भी उलझाने वाला है। इस पुस्तक में सभी आवश्यक विभिन्न मुहूर्त्तों के ग्राह्य एवम् वर्ज्य काल आदि का विशद् विवेचन किया गया है, जिसे पढ़कर कोई भी व्यक्ति पंचांग में दिए गए तिथ्यादि के अनुसार अभीष्टकाल में अभीष्ट मुहूर्त का शुद्धकाल एवम् लग्न जान सकता है। किस मुहूर्त में कौन–सी तिथि–वार–नक्षत्र–योग ग्राह्य हैं, कौन–सा काल लग्नमुहूर्त के लिए शास्त्रोक्त है, मृताशौच, जननाशौच जैसी प्रतिकूल स्थिति आ पड़ने पर मंगलकृत्य का विधान कैसे हो–इत्यादि मुहूर्तसम्बन्धी अनेक उलझे प्रश्नों के सुस्पष्ट समाधान मुहूर्तशास्त्रोक्त प्रमाणों द्वारा सुलझाए गए हैं।

शुभकृत्य के मुहूर्त्त को दूषित करने वाले अधिकमास, भद्रा, गुरु–शुक्रास्त, नासान्त–संक्रान्ति, ग्रहणशूल, क्रान्तिसाम्य आदि 57 दोष तथा उनके सम्भव परिहार भी सप्रमाण दिए गए हैं।

देवप्रतिष्ठा, गृहारम्भ, ग्रहप्रवेश, वधूप्रवेश, राज्याभिषेक, विपणि, यात्रा, पुनर्विवाह, मन्त्रदीक्षा, पशु आदि का क्रय–विक्रय आदि अनेकों आवश्यक कृत्यों के शुभमुहूर्त्त–ज्ञान का विस्तृत विवेचन शास्त्रीय प्रमाणवाक्यों–सहित किया गया है। सभी उद्धृत संस्कृत–प्रमाणवाक्यों को हिन्दी में सुस्पष्ट किया गया है।

यमघण्ट, क्रकच आदि कुयोग, सर्वार्थसिद्धि, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर आदि सुयोग तथा गृहप्रवेश, गृहारम्भादि में अपेक्षित वृषवास्तु, भूशयन तथा कलशशुद्धि–ज्ञापक बीसों मौलिक कोष्ठक इसमें दिए गए हैं।

मुहूर्तकालिक लग्न जानने के लिए 40 पृष्ठों की एवम् दैनिक लग्नारम्भ–समाप्ति–सारणी दी गई है, जिससे भारत के 1000 नगर एवम् उपनगरों में अभीष्ट तारीख को मेषादि लग्नों का प्रारम्भ एवम् समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) तुरन्त जाना जा सकता है।

मूल्य Rs. 375/– + डाकव्यय Rs. 50/–

पृष्ठ संख्या 144 (लगभग)
चिरस्थायी बहुमूल्य काग़ज़ पर मुद्रित

लघु लग्नसारणी

साईज़-'मार्चण्ड पंचांग' के बराबर

(अप्रैल, 2012 ई. तक प्रकाशित हो जाएगी–प्रतीक्षा कीजिए।)

लेखकः– प्रियव्रत शर्मा,

[साम्पातिककाल के 5–5 मिनट एवम् आधे–आधे अक्षांशों के अन्तर पर विश्वभर की लग्नसारणियां]

हमारी बड़ी लग्नसारणी (विश्वलग्नसारणी) में लग्नसाधन से सम्बद्ध सभी अपेक्षित छोटे से छोटे बीसों विषयों पर भी विस्तृत प्रकाश डाला गया है। उसकी लग्नसारणियां एक–एक मिनटान्तर पर तथा आधा–आधा अक्षांश (50° अक्षांश के बाद तो 15–15 अक्षांश–कलाओं) के अन्तर पर विकलान्त सूक्ष्म लग्नस्पष्ट बतलाती हैं। यह 'लघुलग्नसारणी' उसका ही संक्षिप्त रूप है। इसमें आधे–आधे अक्षांश–अन्तर और 5–5 साम्पातिककाल मिनटान्तर पर कलान्त सूक्ष्म लग्नस्पष्ट दिया गया है, जो फलादेश के लिए पर्याप्त सूक्ष्म है। आजतक प्रकाशित राफेल आदि की सभी लग्नसारणियों से हमारी यह 'लघुसारणी' सूक्ष्मता में काफी आगे है। प्रत्येक पृष्ठ पर प्रत्येक अक्षांश की लग्नसारणी के नीचे साम्पातिककाल के 1 से 5 मिनट तक की लग्नगति दी गई है, जिसके प्रयोग से 5–5 मिनटान्तर पर बनी इन लग्नसारणियों द्वारा एक–एक मिनटान्तर पर बनी विस्तृत लग्नसारणियों के समान ही सूक्ष्मलग्न बिना गणित के तुरन्त ज्ञात हो जाता है।

भारत के सभी (30)प्रान्तों के लगभग 1000 ज़िला, तहसील नगरों तथा अन्य महत्त्वपूर्ण नगरों–उपनगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टै. अं. (स्थानीय मध्यमकाल और स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर) दिया गया है, तथा इन सभी (1000) नगर–उपनगरों में मेषादि12 लग्नों का दैनिक प्रारम्भ–समाप्तिकाल (भा. स्टै. टा.) ज्ञात करने की एक विस्तृत (33 पृष्ठों की) सारणी दी गई है, जिसकी मदद से केवल दो–तीन मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही अभीष्ट स्थल पर अभीष्ट तारीख को अभीष्ट लग्न का सूक्ष्म प्रारम्भ–समाप्तिकाल (भा. स्टै. टा.) केवल आधा मिनट (30 सेकण्ड) में ही आप जान सकते हैं। ध्यान रहे– भारत के लगभग सभी प्रसिद्ध नगरों में दैनिक लग्नारम्भ–समाप्तिकाल इतनी सरलता से बतलाने वाली ऐसी सारणी हमारी बड़ी लग्नसारणी (विश्वलग्नसारणी) में भी नहीं है। यह विलक्षण दैनिक लग्नसारणी लेखक के भारी परिश्रम का परिणाम है।

विश्व के लगभग सभी देशों की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन्स, अक्षांश, रेखांश तथा उन देशों के स्टैण्डर्ड टाईम का भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम एवम् G.M.T. से अन्तर बतलाने वाली सारणियां भी यहां दी गई हैं। अभीष्ट स्थल एवम् अभीष्ट समय पर दैनिक लग्नारम्भ–समाप्ति तथा स्पष्ट लग्न (रा.अं.क.) ज्ञात करने के अनेकों भारतीय एवम् विदेशी नगरों के उदाहरण दिए गए हैं, ताकि पाठक को कोई अस्पष्टता न रहे।

संक्षेप– सूक्ष्मता एवम् सरलता से इष्टकालिक लग्नारम्भ–समाप्ति तथा स्पष्ट लग्न बतलाने वाली यह 'लघु लग्नसारणी' अपने आप में सचमुच अद्भुत है।

मूल्य Rs. 350/– + डाकव्यय Rs. 50/–

पुस्तक का डाकव्ययसहित मूल्य नीचे लिखे पते पर M.O. द्वारा अथवा "अभिजित् प्रकाशन" के नाम बनवाए गए D.D.(D.D. drawn in favour of 'Abhijit Parkashan') द्वारा भी भेजा जा सकता है। पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजी जाती हैं। V.P.P. से भेजने की व्यवस्था नहीं है।

ध्यान दें– हमारी पुस्तकों को बेचने का अधिकार केवल "अभिजित् प्रकाशन" 59/6, पंचकूला को ही है, अन्य किसी भी विक्रेता को इन्हें बेचने का अधिकार नहीं है।

सम्पर्कसूत्र– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर–6, P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303

मार्त्तण्ड पंचांग के प्रमुख विक्रेता

अग्रवाल बुक डिपो, खारी बावली, दिल्ली
कमल पुस्तकालय, नई सड़क, दिल्ली
अजय पुस्तक भण्डार, नई सड़क, दिल्ली
देहाती पुस्तक भण्डार, नई सड़क, दिल्ली
सुमित पब्लिकेशन्स, चावड़ी बाजार, दिल्ली
रतन बुक कम्पनी, दरीबा कलां, दिल्ली
के.के. गोयल, दरीबा कलां, दिल्ली
नाथ पुस्तक भण्डार, दरीबा कलां, दिल्ली
हिंद पुस्तक भवन, खारी बावली, दिल्ली
अमरनाथ जैन बुकसेलर, बजाजा बाजार, करनाल
परदेसी बुक डिपो, बजाजा बाजार, करनाल
भाई गुरुदयाल सिंह एण्ड संस, रेलवे रोड, अम्बाला शहर
गुजराल पुस्तक भण्डार, रेलवे रोड, अम्बाला शहर
रतन बुक डिपो, मोती बाजार, कुरुक्षेत्र
धार्मिक पुस्तक भण्डार, बिरला मंदिर, कुरुक्षेत्र
ज्ञान गंगा अध्यात्मिक सेवा केन्द्र, बिरला मंदिर, कुरुक्षेत्र
ज्ञान गंगा अध्यात्मिक सेवा केन्द्र, पुराना चौक, इन्द्री
जनरल बुक डिपो, यमुनानगर
पाल प्रकाशन, सै. 45 डी, चंडीगढ़
पापुलर बुक डिपो, सै. 22 डी, चंडीगढ़
नेशनल बुक हाउस, सै. 17 सी, चंडीगढ़
गोयल बुक डिपो, कालका
मंगत राम एण्ड संस, सोलन
भाग्योदय ज्योतिष केन्द्र, सोलन
बुक सेंटर, लोअर बाजार, शिमला
चेतराम तेलू राम, लोअर बाजार, शिमला
पं. सुंदरदास एण्ड संस, लोअर बाजार, शिमला
रमेश बुक डिपो, लोअर बाजार, शिमला
गोयल बुक डिपो, कैथल
मधु बुक डिपो, बिलासपुर (हि.प्र.)
संजीव बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालंधर शहर
जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालंधर शहर
न्यू भारत बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालंधर शहर
हरबंस बुक डिपो, पुस्तक बाजार, लुधियाना
अमित बुक डिपो, पुस्तक बाजार, लुधियाना
न्यू राकेश पुस्तक भण्डार, पुस्तक बाजार, लुधियाना
मोहन पुस्तकालय, पुस्तक बाजार, लुधियाना
जोधसिंह कर्मजीत सिंह बुकसेलर, पटियाला
बी. चतर सिंह जीवन सिंह एण्ड संस, माई सेवा, अमृतसर
कर्मसिंह अमर सिंह बुकसेलर, बड़ा बाजार, हरिद्वार
रणधीर बुक सेल्स, रेलवे रोड, हरिद्वार
सोनी बुक स्टॉल, घाट रोड, ऋषिकेश
राजकुमार जुगल किशोर बुकसेलर, देहरादून
जवाहर बुक डिपो, 300 स्वामी पाड़ा, मेरठ
जवाहर बुक क., बुढाणा गेट, मेरठ
अग्रवाल बुक डिपो, अमरोहा गेट, मुरादाबाद
जनरल बुक डिपो, रेलवे रोड, हिसार
नाथ पुस्तक भण्डार, रेलवे रोड, रोहतक
खन्ना बुक डिपो, प्रताप चौक, रोहतक
पवन पुस्तक भण्डार, 76डी ब्लॉक, श्रीगंगानगर
गीताजी पुस्तक भण्डार, सर्कुलर रोड, भिवानी
रामचंद्र हीरालाल बुकसेलर, खजांची बिल्डिंग, बीकानेर
सरस्वती प्रकाशन, पुरानी मंडी, अजमेर
ईश्वर लाल जी बुकसेलर, 220 त्रिपोलिया बाजार, जयपुर
सुधीर एण्ड ब्रादर्स, 273 त्रिपोलिया बाजार, जयपुर
पदमचनद जैन बुकसेलर, होप सर्कस, अलवर
स. सोहन सिंह बुकसेलर, 35 बक्षी गली, इंदौर
नवभारत स्टोर्स, सिरसा
उप्पल पुस्तक भण्डार, रोशन महल, पानीपत
गुप्ता स्टेशनरी मार्ट, सिटी चौक, जम्मू
बजाज बुक स्टोर, गुम्मट बाजार, जम्मू
सी. एल. अग्रवाल एण्ड संस, अलीगढ़
जनता बुक स्टॉल, चौक, कानपुर
प्रकाश बुक डिपो, श्रीराम रोड, लखनउ
मेहता पुस्तक भण्डार, मैन बाजार, गोहाना
रविन्द्र बुक डिपो, भोपाल
श्री नारायण हरेश चन्द्र बुकसेलर, जौहरी बाजार, आगरा
हिमाचल जनरल किराना स्टोर, कुनिहार
भारत बुक डिपो, रेलवे रोड, सहारनपुर
गिरधारी लाल रिक्खी राम पंसारी, सुबाथु
मोहन न्यूज एजेंसी, रामपुरा बाजार, कोटा
पं. मिश्री लाल मिश्रा, गोल बाजार, बिलासपुर (छ. गढ़)
भारतीय पुस्तक भण्डार, बेगम बाजार, हैदराबाद
गर्ग बुक कं., 106 सी.पी. टैंक, मुम्बई
शर्मा न्यूज एजेंसी, नालागढ़
धनपतराय तरसैन कुमार बुकसेलर, जिंद

इसके अतिरिक्त प्रमुख शहरों के सभी बुक स्टॉल प[illegible] पंचांग, उर्दु जंत्री, शिरोमणी तिथ पत्रिका (पंजाबी), बटुक पंचां[illegible] उपलब्ध हैं। जिन बुकसेलर्स के नाम इस सूची में नहीं आए हैं वे[illegible] हमें (रुचिका पब्लिकेशन्स) अपना नाम व पता भेजकर इस सूची में प्रकाशित करा सकते हैं।

पंचांग खरीदते समय टाइटल पर रुचिका पब्लिकेशन्स का होलोग्राम, जिस पर 'स्व. इन्द्रचन्द गुप्ताजी' की फोटो लगी हुई है, लगा हुआ अवश्य देख लें। यदि पंचांग पर होलोग्राम नहीं लगा हुआ है तो यह समझिए कि यह नकली पंचांग है। इसकी सूचना हमें निम्नलिखित पते पर दिजिए। सूचना देने वाले का नाम गुप्त रखा जाएगा एवं उसको उचित पुरस्कार दिया जाएगा। यदि किसी भी पुस्तक विक्रेता के यहाँ से बिना होलोग्राम लगा हुआ पंचांग प्राप्त होता है तो उसकी जिम्मेवारी उस विक्रेता की होगी, इसका ध्यान रखें। अतः होलोग्राम देखकर ही पंचांग खरीदें एवं बेंचें।

रुचिका पब्लिकेशन्स
459, खारी बावली, दिल्ली -6 फोन : 23977110

श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय के नियम

हमारे यहां **जन्मपत्र** एवं **वर्षफल** शुद्ध गणित से बनाए जाते हैं, जिनमें आयु, रोग, सन्तान, स्त्री, धन एवं भाग्योदय, तरक्की आदि का निर्णय किया जाता है।

जन्मपत्र की फीसः– साधारण जन्मपत्र की फीस कम से कम 600 रु. और बडे जन्मपत्र की फीस 1000 रु. है। डाकव्यय अलग होगा। **विदेशी जन्मपत्र** कम्प्यूटर से तैयार की गई सारणियों से बड़ी सावधानी के साथ बनाए जाते हैं, गणित विशेष परिश्रम से करनी पड़ती है, अतः जिनका जन्म विदेश में हुआ हो, उनके जन्मपत्र की फीस कम से कम 1000 रु. है। यदि आप वर्षफल बनवाना चाहते हैं, तो अपनी जन्मकुण्डली की नकल व पेशा लिखकर भेजें। जन्मपत्र बनवाने के लिए जन्म तारीख, मास, सन्, जन्मसंवत्, जन्मटाईम, जन्मस्थान, जाति, पेशा एवं विशेष विचारणीय विषय भी लिखना न भूलें। टेवा की फीस 100 रु. है एवं दशामात्र टेवे की फीस 300 रु. है।

भारतीय वर्षफल की फीस 500 रु. है। **विदेशी वर्षफल की फीस 800 रु. है।** जिनकी कुण्डली न हो, वे व्यक्ति पत्र लिखने का समय, तारीख एवं अपनी अन्दाजन उम्र, पेशा, जाति अवश्य लिखें। वर्षफल का आर्डर देते समय यह लिखना जरुरी है, कि **इस वर्ष आपके वर्षफल में किन बातों पर विशेष रूप से विचार किया जाए। शुद्ध विवाहमुहूर्त जानने की फीस 251 रु. है और वर–कन्या की कुण्डलीमिलान की फीस 251 रु. है।** जन्मपत्र एवं वर्षफल हिन्दी में सुन्दर और विस्तृत फलादेशसहित बनाए जाते हैं। ऑर्डर के साथ पूरी फीस पेशगी भेजें। **सर्वसाधारण प्रश्न की फीस 201 रु. है।**

नोटः– प्रत्येक काम की पूरी फीस आर्डर के साथ ही भेजें। वी.पी.पी. नहीं की जाएगी। बिना पेशगी के कोई भी कार्य नहीं किया जाएगा।

व्यापारियों के लिए चाँस

हम समय–समय पर रुई, बिनौला, सरसों, गुड़, खाण्ड एवं शेयर मार्कीट आदि के चांस देते हैं। वर्षों से अनेकों व्यापारी हमारे परामर्श से लाभ उठाते आ रहे हैं। **एक जिन्स (चना, ग्वार आदि अनाज; तिल, तेल, सरसों, बिनौला आदि तिलहन; रुई, गुड़, खाण्ड एवं शेयर मार्कीट आदि तथा सोना, चान्दी, तांबा आदि धातुओं) की लिखित रिपोर्ट की अडवांस फीस 5000 + 50 रुपये डाकव्यय प्रतिमास एवम् वर्षभर की फीस 50000 + 500 रु. डाकव्यय के हिसाब से चार्ज किए जाते हैं।** जिन्होंने Advance Fee लिखित Report के लिए भेजी होगी, वे Telephone के माध्यम से भी ताजा मशवरा प्राप्त कर सकेंगें। विस्तृत विज्ञापन **'व्यापार विमर्श'** के अन्त में देखें।

जो व्यापारी साल में प्रमुख–प्रमुख केवल एक–दो हजार व्यापार के चांस ही चाहते हैं, वे 10000 रु. भेजकर रजि. में नाम दर्ज करा सकते हैं। जिन व्यापारियों के नाम रजिस्टर में दर्ज होंगे, हम केवल उन्हें ही अपने विचार भेज सकेंगे।

पत्रव्यवहार करते समय साफ–साफ डाक पते के साथ PHONE No. लिखना न भूलें।

सर्दियों में –
गर्मियों में – प्रातः 8 से 2 बजे तक।

दूर से आने वाले सज्जन पत्र या टेलीफोन से पूज्य पण्डित जी से मिलने का दिन एवं समय पहले ही निश्चित कर लें।

पुंसवनी (अभीष्ट सन्तानप्राप्ति के लिए दिव्य औषधि)

इस ईश्वरप्रदत्त प्रभावयुक्त दिव्यौषधि को गर्भ के दूसरे मास के अन्त में सेवन करने से अभीष्ट (मनचाही) संतान ही उत्पन्न होती है। इस अद्भुत औषधि की प्रशंसा में असंख्य पत्र और ईनाम प्राप्त हुए हैं। **मूल्य 1000 रु. + 50 रु. पैकिंग एवं डाकव्यय, कुल राशि 1050 रु. भेजें।** वी.पी.पी. नहीं की जाएगी।

सिद्ध शनियन्त्र– विधिपूर्वक शुभमुहूर्त में बने इस यन्त्र को धारण करने से शनिजन्य अशुभफल, पीड़ा, चिन्ता आदि से मुक्ति मिलती है, अनुभव करें। **भेंट– 1100 रु.,** डाकव्यय अलग।

श्री लक्ष्मी यन्त्र– अष्टगन्धादि से विधिपूर्वक बनाए गए इस यंत्र को विधिवत् पूजास्थान या गल्ले में रखने से लक्ष्मी की कृपा रहती है, कोष में भारी बरकत रहती है। तुजर्बा लें। **भेंट– 2100 रु.,** डाकव्यय अलग।

अठराहा नाशक यन्त्र– जिन औरतों के प्यारे बच्चे देवदोष, गर्भदोष व अठराहा, मसानदोष के कारण मर जाते हैं, उनके लिए यह यन्त्र वरदानरूप सिद्ध हो चुका है। विधिपूर्वक निर्मित इस यन्त्र के प्रभाव से बच्चे दीर्घायु होकर, सैंकड़ों माता–पिता को सुखी कर रहे हैं। तुजर्बा करके चमत्कार देखें। विधानपत्र साथ भेजा जाता है। **भेंट– 1100 रु.,** डाकव्यय अलग।

सिद्ध गोपाल यन्त्र– इस सिद्ध यन्त्र को विधिपूर्वक श्रद्धासहित स्त्री धारण करे, तो चिरंजीव पुत्र की प्राप्ति होती है। आर्डर देते समय स्त्री का नाम अवश्य लिखें। विधानपत्र साथ भेजा जाएगा। **भेंट– 1100 रु.,** डाकखर्च पृथक्।

गुरुवार को कार्यालय में अवकाश रहता है।
हरवर्ष 21 से 31 दिसंबर तक भी कार्यालय में अवकाश रहता है।

पत्र व्यवहार के लिए पता–

पं. संयमी शर्मा, M.A., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,
सुपुत्र– पं. इन्दुशेखर शास्त्री, ज्योतिषाचार्य, M.A.,
श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, (नजदीक रेलवे स्टेशन),
मु. पो. कुराली (अजीत नगर–मोहाली), पंजाब, PIN– 140 103,
[PHONE– 0160-264 1277, FAX- 264 1577]
Website:www.shrimartand.com

Laser Typesetting by : Gyani Kartar Singh Gadh, at Kanwal Video & Photostat, Kurali, Ph. 0160-2641274, Fax: 0160-5002274

पृष्ठ संख्या 200 (लगभग)
चिरस्थायी बहुमूल्य कागज़ पर मुद्रित

मुहूर्त्त गजानन

साइज़-'मार्त्तण्ड पंचांग' के बराबर

(जनवरी, 2012 ई. तक प्रकाशित हो जाएगी-प्रतीक्षा कीजिए।)

लेखकः– प्रियव्रत शर्मा,

(गर्भाधान, पुंसवन, नामकरण, मुण्डन, उपनयन एवम् विवाहादि मुहूर्त्तों के साधन का सरल भाषा/शैली में विस्तृत प्रतिपादन)

वशिष्ठादि संहिताओं, मुहूर्तमार्त्तण्ड, मुहूर्त्तचिन्तामणि आदि ग्रन्थों में दिया गया मुहूर्त्त का साधनप्रकार संस्कृत के विद्वान् दैवज्ञों को भी उलझाने वाला है। इस पुस्तक में सभी आवश्यक विभिन्न मुहूर्त्तों के ग्राह्य एवम् वर्ज्य काल आदि का विशद विवेचन किया गया है, जिसे पढ़कर कोई भी व्यक्ति पंचांग में दिए गए तिथ्यादि के अनुसार अभीष्टकाल में अभीष्ट मुहूर्त्त का शुद्धकाल एवम् लग्न जान सकता है। किस मुहूर्त्त में कौन–सा मास–तिथि–वार–नक्षत्र–योग ग्राह्य हैं, कौन–सा काल लग्नमुहूर्त्त के लिए शास्त्रोक्त है, मृताशौच, जननाशौच जैसी प्रतिकूल स्थिति आ पड़ने पर मंगलकृत्य का विधान कैसे हो–इत्यादि मुहूर्तसम्बन्धी अनेक उलझे प्रश्नों के सुस्पष्ट समाधान मुहूर्तशास्त्रोक्त प्रमाणों द्वारा सुलझाए गए हैं।

शुभकृत्य के मुहूर्त को दूषित करने वाले अधिकमास, भद्रा, गुरु–शुक्रास्त, मासान्त–संक्रान्ति, ग्रहणशूल, क्रान्तिसाम्य आदि सभी दोषों का विस्तृत विवरण तथा उनके सम्भव परिहार भी सप्रमाण दिए गए हैं।

देवप्रतिष्ठा, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, वधूप्रवेश, राज्याभिषेक, विपणि, यात्रा, पुनर्विवाह, मन्त्रदीक्षा, पशु आदि का क्रय–विक्रय आदि अनेकों आवश्यक कृत्यों के शुभमुहूर्त्त–ज्ञान का विस्तृत विवेचन शास्त्रीय प्रमाणवाक्यों–सहित किया गया है। सभी उद्धृत संस्कृत–प्रमाणवाक्यों को हिन्दी में सुस्पष्ट किया गया है।

भारतीय पंचांगों में दिए गए विवाहादि लग्न केवल भारत के लिए ही होते हैं। इन्हें भारत से अन्य देशों में प्रयोग में लाना अपराध है। इस पुस्तक में अनेक उदाहरणों द्वारा समझाया गया है कि– किसी अभीष्ट विदेशी नगर में प्रयोग में लाने के लिए इन विवाहादि लग्नों में कौन–कौन से संस्कार कैसे करने चाहिएं। विगत एक वर्ष का पूरा तिथ्यादि पंचांग भी दिया गया है। जिसकी मदद से विभिन्न मुहूर्त्तों के शुद्धकाल एवं लग्न के निर्णय–प्रकार अनेक उदाहरणों द्वारा बालबोध शैली में समझाए गए हैं।

मुहूर्त्तशास्त्रों में उपलब्ध जाति, धर्म, लिंग एवं प्रादेशिक परम्पराओं पर आधारित मतभेदों का पूर्वाग्रहमुक्त विश्लेषण किया गया है। अनेक शोधलेख, जो मुहूर्त्तसम्बन्धी अज्ञात रहस्य उद्घाटित करते हैं, इसमें आपको मिलेंगे।

यमघण्ट, क्रकच आदि कुयोग, सर्वार्थसिद्धि, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर आदि सुयोग तथा गृहप्रवेश, गृहारम्भादि में अपेक्षित वृषवास्तु, भूशयन तथा कलशशुद्धि–ज्ञापक आदि बीसों मौलिक कोष्ठक दिए गए हैं।

भारत के प्रसिद्ध 200 नगरों में मेषादि लग्नों की प्रारम्भ–समाप्ति जानने के लिए दो कोष्ठक दिए गए हैं। जिनसे मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही किसी भी दिन इन नगरों में मुहूर्त्तकालिक लग्न का प्रारम्भ–समाप्तिकाल वस्तुतः 30 सेकण्ड में ही जाना जा सकता है। ध्यान दें– गतवर्षीय विज्ञापन में इस पुस्तक की पृष्ठसंख्या केवल 120 लिखी गई थी, लेकिन विषयवृद्धि के कारण इसकी पृष्ठसंख्या अब 200 के लगभग हो गई है। अतः अब इसका संशोधित मूल्य Rs. 375/– निर्धारित किया गया है।

पुस्तक का डाकव्ययसहित मूल्य नीचे लिखे पते पर M.O. द्वारा अथवा "अभिजित् प्रकाशन" के नाम बनवाए गए D.D.(D.D. drawn in favour of 'Abhijit Prakashan') द्वारा भी भेजा जा सकता है। पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजी जाती हैं। V.P.P. नहीं की जाती।

मूल्य Rs. 375/– + डाकव्यय Rs. 50/–

ध्यान दें– हमारी पुस्तकों को बेचने का अधिकार केवल "अभिजित् प्रकाशन" कोठी नं. 59, सेक्टर–6, P.O. पंचकूला को ही है, अन्य किसी भी विक्रेता को इन्हें बेचने का अधिकार नहीं है।

पता– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर–6, P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303